सीता

सूचना

यह पुस्तक इंटरनेट आर्काइव द्वारा EPUB प्रारूप में तैयार की गई है।
पुस्तक के पृष्ठों को स्कैन करके स्वचालित रूप से EPUB प्रारूप में परिवर्तित किया गया है। यह प्रक्रिया ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) पर आधारित है और इसमें कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। पुस्तक में पढ़ने का सही क्रम नहीं हो सकता है, और इसमें कुछ अटपटे अक्षर, शब्दहीन शब्द और संरचना का गलत अनुमान हो सकता है। स्कैन किए गए पृष्ठ से कुछ पृष्ठ संख्याएँ और शीर्षक/पादक रह सकते हैं। छवियों की पहचान करने वाली प्रक्रिया में पृष्ठ पर कुछ ऐसे निशान मिल सकते हैं जो वास्तव में पुस्तक की छवियां नहीं हैं। आपके ई-रीडर पर दिखाई देने वाली छिपी हुई पृष्ठ संख्या मुद्रित संस्करण में क्रमांकित पृष्ठों से मेल खाती है, लेकिन यह पूरी तरह से मेल नहीं खाती है; पृष्ठ संख्याएँ मुद्रित संस्करण के समान दर से बढ़ेंगी, लेकिन हो सकता है कि हमने मुद्रित पुस्तक की दिखाई देने वाली पृष्ठ संख्याओं से पहले ही क्रमांकन शुरू कर दिया हो। इंटरनेट आर्काइव स्कैनिंग प्रक्रिया और परिणामी पुस्तकों को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहा है, लेकिन इस बीच, हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपके लिए उपयोगी होगी।
इंटरनेट आर्काइव की स्थापना 1996 में एक इंटरनेट लाइब्रेरी बनाने और सभी प्रकार के ज्ञान तक सार्वभौमिक पहुंच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। आर्काइव का उद्देश्य शोधकर्ताओं, इतिहासकारों, विद्वानों, दिव्यांगजनों और आम जनता को डिजिटल प्रारूप में मौजूद ऐतिहासिक संग्रहों तक स्थायी पहुंच प्रदान करना है। इंटरनेट आर्काइव में टेक्स्ट, ऑडियो, चलचित्र और सॉफ्टवेयर के साथ-साथ संग्रहित वेब पेज भी शामिल हैं, और यह दृष्टिबाधित और अन्य दिव्यांगजनों के लिए सूचना तक पहुंच हेतु विशेष सेवाएं प्रदान करता है।
hocr-to-epub (v.1.0.0) के साथ बनाया गया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान मात्र **0.00%** है।
[बुखार]

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **45.00%** है।
[I 4

यात्री
इसी लेखक द्वारा, वर्तमान खंड के समान, एन से एड ए नोबल क्वीन: ए रोमांस ऑफ इंडियन हिस्ट्री। नया संस्करण, मुखपृष्ठ सहित। क्राउन एसवीओ। टीपू सुल्तान: ए टुल ऑफ द मैसूर वॉर। नया संस्करण, मुखपृष्ठ सहित। क्राउन 8वाईवीओ। राल्फ डार्नेल। नया संस्करण, मुखपृष्ठ सहित। क्राउन वीओ। द कन्फेशंस ऑफ ए ठग। नया संस्करण, मुखपृष्ठ सहित। क्राउन बाय। तारा: ए मराठा टेल। नया संस्करण, मुखपृष्ठ सहित। क्राउन ¥वीओ। एनई 5 एपीवाई पीएम लोक्सनोर: केओन पाउत, टैक्सन, इक्स्टारक्सिया एंड कंपनी, एलआर® टेस एनएन ईई ओई एर ऑन सीटर

2a मीडोज टेलर द्वारा (e 0 oo 8 St. C4.1., MBDA, MBA, KIC. “CONFRSSIONS OF & THEG,” “crata,” “RALPH DARNELL,” ETO के लेखक। @ मुझे उस प्रकार के विवाह में बाधा न डालने दें जो प्रेम को बदल

देता है, जो बुडा में परिवर्तन के साथ बदलता है, या हटाने वाले के साथ नवीनीकृत होने के लिए बेवकूफ है; नहीं; यह एक शाश्वत चिह्न है, जो उन पर नज़र रखता है, और कभी नहीं हिलता | यह हर भटकते हुए दिल का प्रतीक है, जिसका मूल्य अज्ञात है, भले ही उसकी ऊंचाई मापी गई हो। e e e e Ld यदि यह त्रुटि है, और मुझ पर सिद्ध हो जाती है, तो मैं न तो किसी पुरुष को कभी प्यार करता हूँ, न ही किसी पुरुष को।” Ss nrsreaRs, Sonnmel CINE, नया संस्करण लंदन केगन पॉल। ट्रेंच, ट्रूबनर एंड कंपनी, लेफ्टिनेंट पैटरनोस्टर हाउस, चारिंग क्रॉस कोड

यानी (465 SEGKED 22.8 TAY 73° सालार जुआग लाइब्रेरी में | पश्चिमी खंड। (निष्पादन और पुनरुत्पादन के अधिकार सुरक्षित हैं।)

मेरी प्यारी बेटियों, एलिस और एमी को, उनके समर्पित प्रेम और बहुमूल्य धैर्य, सहायता के लिए, यह पुस्तक समर्पित है।

प्रस्तावना। मेरे पाठकों के लिए। यह वर्तमान खंड, जो 1857 से संबंधित है, उस श्रृंखला को पूरा करने के उद्देश्य से लिखा गया है जिसे मैंने 1863 में "तारा" (1657) से शुरू किया था और 1865 में "रत्प दर्नेल" (1757) के साथ जारी रखा था। इन सभी कृतियों की नींव रखने वाली ऐतिहासिक घटनाएँ न केवल अत्यंत महत्वपूर्ण और रुचिकर हैं, बल्कि लगभग सौ वर्षों के सटीक अंतराल पर घटित होने के कारण, भारत

के इतिहास में किसी भी अन्य घटना की तुलना में नाटकीय शक्ति में बेजोड़ हैं। पहली कहानी, 'तारा', 1657 के उस असाधारण युग का चित्रण करती है, जब मराठों ने, जो पहले दक्कन की मुस्लिम सरकार की साधारण प्रजा के रूप में ही जाने जाते थे, अपनी निष्ठा त्याग दी, राजा शिवाजी भेषा के नेतृत्व में सत्ता में आए और पहले छल से बीजापुर की सेना को परास्त किया। इस प्रकार राष्ट्रीय स्वतंत्रता की नींव स्थापित करने के बाद, मराठों ने सम्राट औरंगजेब के साथ सोलह वर्षों तक चले एक लंबे और कष्टदायक युद्ध के बाद 1707 में उसे परास्त कर दिया; और उसी वर्ष हुई औरंगजेब की मृत्यु और उसके बाद मुस्लिम साम्राज्य में हुई उथल-पुथल ने उन्हें अपने विजय क्षेत्र का विस्तार करने में सक्षम बनाया, और 1757 तक वे भारत के सबसे शक्तिशाली राज्य संघ बन गए और उन्होंने कभी विशाल रहे दक्कन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

प्रस्तावना। उस यादगार वर्ष में अंग्रेजों में एक नई राजनीतिक शक्ति का उदय हुआ, जो अब तक केवल व्यापारी और कारोबारी थे। 23 जून, 1757 को लॉर्ड क्लाइव ने प्लासी का युद्ध जीता और वर्तमान अंग्रेजी साम्राज्य की नींव रखी। हालांकि, उस समय एक विचित्र ज्योतिषीय भविष्यवाणी दर्ज की गई थी कि अंग्रेजी कंपनी का शासन केवल सौ वर्षों तक चलेगा, यानी हिंदू युग के संवत 1814 से संवत 1914 तक। भारत के इतिहास और जनता की स्थिति के संदर्भ में, 1757 का युग 1657 के युग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। एक सदी की प्रगति के दौरान, नई शक्ति हिंदुओं और मुसलमानों दोनों पर समान रूप से हावी हो गई। इसने मराठों और मुसलमानों दोनों को स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व और प्रभाव से वंचित कर दिया था, इसने पश्चिमी सभ्यता के नए और शक्तिशाली तत्वों को पेश किया था, और 1857 का संघर्ष खोई हुई चीजों को पुनः प्राप्त करने का एक संयुक्त प्रयास था। इस संघर्ष में बंगाल की मूल सिपाही सेना ने अपने विद्रोह और साहस से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेरी वर्तमान कहानी में मेरा उद्देश्य इतिहास लिखना नहीं है; बल्कि एक प्रसंग के रूप में उस समय का एक सामान्य आभास देना है, जो भारत के इतिहास में अन्य सभी समयों की तुलना में अंग्रेजी पाठक के लिए सबसे अधिक आकर्षक और रुचिकर है। मैंने जानबूझकर निर्मम नरसंहार और पीड़ा के उन भयावह विवरणों से परहेज किया है, जिनका वर्णन कई लेखकों द्वारा पहले ही किया जा चुका है और जिन्हें सर जॉन केय के इतिहास में दोहराना आवश्यक है। इसलिए मैंने इन कष्टदायक घटनाओं

को छोड़ दिया है और उनका उल्लेख केवल वहीं किया है जहाँ उन्हें टाला नहीं जा सकता था। कुछ लोगों को लगता है कि उन्होंने संबुत 1914, 887.58 की घटनाओं के संबंध में भविष्यवाणी पर अधिक जोर दिया है, जो उचित नहीं है। लेकिन जो लोग उस समय उन लोगों के बीच रहते थे—जैसा कि मैं रहता था—उन्होंने महसूस किया कि इसने धीरे-धीरे मूल निवासियों के मन पर, सभी स्थानों पर, कितना प्रभाव डाला था।

प्रस्तावना। भारत के विभिन्न इलाकों में हुई घटनाओं और असंतोष, विद्रोह और बगावत के अन्य कारणों के अलावा, मैंने हमेशा इसे उस वर्ष में आम एकजुटता और कार्रवाई के सबसे प्रमुख और प्रेरक कारणों में से एक माना है, और मानता रहूंगा। इससे पहले किसी ने भी खुले तौर पर यह कहने या परिभाषित करने का साहस नहीं किया था कि क्या होने वाला है। ग्रहों की युति से ज्योतिषीय निष्कर्ष के रूप में की गई भविष्यवाणी एक सदी से प्रत्येक हिंदू पंचांग में दोहराई जाती रही थी; और जैसे-जैसे वह घातक वर्ष निकट आता गया, अंग्रेजों को, जो जनता के बीच लोकप्रिय थे या जिनके निजी मित्र थे, कई मामलों में आने वाली मुसीबतों और खतरों के बारे में चेतावनी दी गई, उनसे भारत छोड़ने या कम से कम पत्नियों और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया। ऐसी चेतावनियाँ अशांति के वास्तविक स्थल से दूर स्थित इलाकों तक भी पहुँचीं; यहाँ तक कि स्वयं सरकार को भी अत्यंत गंभीर और प्रभावशाली सूचनाएँ और सलाह देना नहीं भूला गया। संबुत वर्ष 1914, 25 मार्च 1857 को शुरू हुआ और 19 मार्च 1858 को युद्ध समाप्त होने से पहले ही समाप्त हो गया। इससे पहले घातक महामारियाँ और विनाशकारी बाढ़ आई थीं, और इनके अलावा, जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, अशांति और नरसंहार ने इसके मार्ग को चिह्नित किया था। अंततः, ईस्ट इंडिया कंपनी को सत्ता से बेदखल करना, जिसे भारत से अंग्रेजों के निष्कासन का प्रतीक माना जाता था, अक्षरशः पूरा हुआ। लेकिन, कंपनी के पतन के साथ ही, इंग्लैंड की रानी ने उसके स्थान पर शासन किया। | अज़रील पांडे में * मैंने उस समय के विद्रोही और राजद्रोही दूतों के चरित्र को चित्रित करने का प्रयास किया है। द्वेषपूर्ण और दृढ़ निश्चयी, वे अंध घृणा और धार्मिक कट्टरता से प्रेरित होकर, ऐसे अपराधों को उकसाने और अंजाम देने के लिए प्रेरित हुए, जिनसे मानवता कांप उठती है; और अज़रील ने बैरकपुर में सिपाही प्रतिनिधिमंडल को दिए अपने संबोधन में, मुझे लगता है कि मैंने उन सभी "अन्यायों" को शामिल कर लिया है

जिनके तहत बंगाल के सिपाही पीड़ित होने का दावा करते थे। * पुंडे, जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, एक उपनाम नहीं है। यह अवध और बुखारा के ब्राह्मणों के कई वर्गों में से एक है, जैसे डूबे, चौबे, लेवर्री, मिसार, आदि, जो संख्या में बहुत अधिक हैं।

x | प्रस्तावना। मेरी कहानी जिस डकैती के मामले से शुरू होती है, वह एक वास्तविक मामला था, जिसकी सुनवाई मैंने 1855 में अपने जिला न्यायालय में की थी। मेरे पाठकों को न तो मानचित्र में नूरपुर और न ही शाहगंजे को खोजने की आवश्यकता है, न ही नागरिक या सैन्य सूचियों में मेरे अंग्रेजी पात्रों को, क्योंकि वे उन्हें नहीं पाएंगे। मीडोज टेलर।

विषय-सूची। परिचय ° ; ° ; ° पहला भाग, गपशप » ... आंटी यूआ की काउंसलर वह “]टी उसे बहुत सुरक्षित रखेगी” द नवाप की शिकायत। ‘ एक त्रुटि . . ‘ . अज़राएल पांदे ‘ . ब्ल्याटोम : ‘ ° व्यापार और आनंद . . पृष्ठ VII 14 23 31 38 47 56 67 79 82 88 97 105 114 121 129 133 142 145 152 161.

हाँ} सामग्री। 2 हां ए एन, मैंने सुना है: क्रैप्टर पेज XXIII□ तीन गूरू की सजा एफ; : आर 171 XXIV. Ma.ecuo काटना : ' : ; 180 XXV. थ्रफ़ेटेनिंग्स : , . , . 188 एक्सवीएल,.. लेप्रोव्स डिस्टियूमेंट: ; ' :- 197 XXVIII. गाओ मुओक्सकु ' : ; '; ' . 206 भाग मंगल तृतीय। XXVIII. नूरूर में शोक'; ': : 215 XXIX. वास्तव में एक अजीब बात है। ' : 223 XXX. संघर्ष और विजय : : 231 XXXI. ट्यूअर क्लूप ने गॉप्सीआईट्व" एफ} इलेवी » 242 XXXII पर समझौता किया। ट्यूअर मिशन या एज़रेल पांडे: ' 250 XXXIIL लेट अस रिटर्न 4 ; ' । 260 XXXIV□ ए ल्यूट बिफोर ए बायोस: ; . ; 269 XXXV XXXVI. "तैयारी" ; ' : पी , 290 XXXVII□ स्कोरोनन, पुट न किललेप एफ ; « 297 AXXVIII□ : ‘ : - 868 भाग चौदह. 16. “एक क्राउन या लीरा” , ‘ ‘ 7 : 879 अलविल “शान गुनये” , oe @ - ° - 888 अलविल नवास के आतंक को मोड़ते हुए, . ; ‘ ‘ 398 अलिक्स. झांसी की रानी : ‘ ; ‘ - 407 एल. . विदाई

पृष्ठ अ. भाग प्रथम. अध्याय 1. पवित्र भूमि पर. लगभग आधी रात हो चुकी थी। हल्की फुहार अभी-अभी गिरी थी, और लगभग पूर्ण चंद्रमा अपनी तेज रोशनी से एक ऐसे दृश्य को जगमगा रहा था जो एक साथ बेहद सुंदर और प्रभावशाली था। मध्य भारत के पठार से पश्चिम की ओर उतरने वाली लंबी घाटियों में से एक के शीर्ष पर एक गहरी, सुनसान घाटी थी, जिसका ऊपरी सिरा बेसाल्ट की उन खड़ी चट्टानों में से एक से घिरा हुआ था, जो हर जगह ऊपर के पठार की सीमा को चिह्नित करती हैं, और जिसके ऊपर से एक छोटी सी धारा, बरसात के मौसम की बारिश से अपनी सामान्य गति से कुछ अधिक उफान पर, अब एक बड़ी मात्रा में पानी को एक नीरस निरंतर गर्जना के साथ बहा रही थी। चंद्रमा की रोशनी सीधे चट्टान और झरने पर पड़ रही थी, और उन्हें जीवंत प्रभाव से रोशन कर रही थी। जैसे ही पानी नीचे की ओर तेज़ी से बहने लगा, पहले चट्टान की चोटी पर एक संकरी खाई से गुज़रते हुए, वह लगातार बदलती हुई फुहारें उछालता रहा, जो प्रकाश पड़ने पर पल भर के लिए पिघले हुए चाँदी की तरह चमकती थीं और फिर गायब हो जाती थीं। फिर, जैसे ही धारा लगभग सीधी चट्टान पर फैलती गई, वह चमकदार झाग की चादर बन गई, जब तक कि वह झरने के तल पर एक गहरे, अंधेरे कुंड तक नहीं पहुँच गई, और उसके किनारे से उग्र रूप से घाटी में बहने लगी। चट्टान का नीरस रंग लताएँ, जंगली झाड़ियाँ और फूल से ढका हुआ था, जिनमें से कई अब पूरी तरह खिल चुके थे, जिससे हवा में मनमोहक सुगंध फैली हुई थी। ऊपर, और घाटी के दोनों ओर नीचे की ओर, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियाँ काफी ऊँचाई तक उठी हुई थीं, और घाटी में आसानी से पहुँचने का एकमात्र रास्ता झरने के पास एक पथरीला रास्ता था। झरने के तल पर और तालाब के एक हिस्से से सटे हुए, एक खुला स्थान था, जो अब नरम हरी घास से ढका हुआ था, घाटी में कुछ मील तक यही एकमात्र समतल स्थान था।

2. सीता, इसका मार्ग, जहाँ वर्ष में एक बार आसपास के लोग एक प्रकार का मेला लगाते थे, तालाब के जल में स्नान करते थे और स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा करते थे, जिन्हें यह पवित्र माना जाता था। अन्य समयों में, वास्तव में, इस स्थान की बदनामी थी और लोग इससे सावधानीपूर्वक बचते थे। इस समतल स्थान के पीछे, एक

विशाल पीपल का वृक्ष उगा हुआ था, जो आकार में बहुत बड़ा और देखने में विचित्र होने के बावजूद बेहद सुंदर था। इसका आधा भाग अभी भी भरपूर फलता-फूलता था, और इसकी गहरी चमकदार पत्तियाँ, जो अभी भी बारिश से भीगी हुई थीं और हवा के हर झोंके से काँप रही थीं, तेज रोशनी में चमक रही थीं। पेड़ का शेष भाग सूख चुका था; और इसकी लंबी, पतली शाखाएँ, जो कई शताब्दियों के सूर्य और हवा से सफेद हो गई थीं, चट्टान की ओर और आंशिक रूप से तालाब के ऊपर, विचित्र, भयानक आकृतियों में फैली हुई थीं। जैसा कि भारत के अधिकांश भागों में होता है, इस वृक्ष को पवित्र माना जाता था; और शायद किसी श्रद्धालु ने, बहुत पुराने समय में, इसके साथ उगने वाले नीम के पेड़ को लगाया होगा और बड़े धूमधाम से दोनों का विवाह कराया होगा। कम से कम किंवदंती तो यही कहती है। हालांकि, यह केवल आधुनिक हिंदू प्रथा थी, और इस वृक्ष का पवित्र महत्व इससे कहीं अधिक था, उस समय से जब संभवतः इसकी पूजा की जाती थी, साथ ही इसके चरणों में रखी हुई खुरदरी नक्काशीदार सांपों की मूर्ति की भी, देश की प्राचीन वृक्ष और नाग पूजा करने वाली जनजातियों द्वारा। नाग की मूर्ति के पास ही, सिंदूर और जाम्प्लंक से रंगे पत्थरों का ढेर भी था। यह ढेर प्राचीन काल से, नाग पूजा करने वालों के समय से भी पहले से मौजूद था; और हिंदुओं में आज भी मौजूद धुंधली, आदिम आस्था के एक भाग के रूप में, इसे उस स्थान के देवताओं के समान श्रद्धा से पूजा जाता था - वे आत्माएं जिनकी कृपा वार्षिक बलिदानों और आहुतियों से प्राप्त की जाती थी, और जिनकी उपेक्षा करने पर बीमारी और फसल की विफलता जैसे गंभीर दंड मिलते थे। यह स्थान अन्य प्राचीन धार्मिक मान्यताओं से भी रहित नहीं था। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व, बौद्ध भिक्षुओं या भक्तों के एक समुदाय ने, सैकड़ों अन्य स्थानों की तरह, इस स्थान को इसकी प्राकृतिक सुंदरता और पूर्ण एकांत के कारण चुना था, और अथक परिश्रम से चट्टान को खोदकर एक छोटा विहार या मठ बनाया था, जो अपने आप में पूर्ण था, यद्यपि उसका निर्माण और अलंकरण अधूरा था। इसमें एक चौड़ा वर्गाकार हॉल था, जिसके अंत में, एक छोटे से कक्ष में, चट्टान से तराशी गई बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा बैठी हुई मुद्रा में थी, जिसकी खुली हथेलियाँ उसकी जांघों पर टिकी थीं; और ऐसा प्रतीत होता था मानो सौम्य, शांत चेहरे से सुंदर घाटी और नदी के चमचमाते जल पर कृपा दृष्टि बनी रहती हो। हॉल के दोनों ओर छोटे-छोटे अंधेरे कक्षों की पंक्तियाँ थीं, जो कभी

पवित्र भूमि पर। * 3 वहाँ रहने वाले भिक्षुओं के निवास स्थान थे: और मूर्ति के चेहरे में कुछ विकृति और चट्टानी तल पर मिट्टी की एक मोटी परत को छोड़कर, गुफा-मंदिर पहले की तरह ही परिपूर्ण था। प्रवेश द्वार बनाने वाले दो विशाल स्तंभों के पास इसकी दहलीज पर खड़े होकर, घाटी की ओर देखते हुए, दिन के समय दृश्य अत्यंत सुंदर था, जब एक हल्की नीली धुंध दूर तक फैली हुई थी, ऊँची, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों के आकार को प्रकट कर रही थी, जो लकड़ी से ढकी हुई थीं, एक के ऊपर एक फैली हुई थीं और धुंधले क्षितिज में विलीन हो रही थीं; जबकि सूर्य के प्रकाश की चमक घाटी के खड़ी ढलानों और चट्टानी चोटियों पर टिकी हुई थी, और नीचे की ओर बहते हुए साफ पानी पर चमक रही थी, जो झरनों और उभरी हुई चट्टानों पर से होकर नीचे की ओर बह रहा था। रात में, शायद, नरम चांदनी में, दृश्य और भी सुंदर था, क्योंकि इसका प्रभाव अधिक कोमल था; चित्र के भव्य रूप निकटवर्ती हिस्सों में दिन के उजाले की तुलना में लगभग कम स्पष्ट नहीं थे, हालांकि वे काफी धुंधले हो गए थे, जबकि दूर के हिस्से धीरे-धीरे एक मंद, रहस्यमय धुंध में विलीन होकर आकाश में घुलमिल गए। इस स्थान की रात और दिन दोनों समय बदनामी होना स्वाभाविक था। पुराने बौद्ध मंदिर के अंदर आग की राख थी, जिसके चारों ओर टूटे हुए मिट्टी के बर्तन बिखरे पड़े थे; और इनमें मोटे मिट्टी के बर्तन भी थे जिनमें पिंडारी हमलों या डकैतियों से लूटा गया माल पिघलाया गया था। कभी-कभी देर से लौटने वाले चरवाहों ने आधी रात के उत्सव की कर्कश आवाजें और धधकती आग की रोशनी देखी और सुनी थी; और हालांकि ऐसी कहानियों पर आस-पास के कस्बों और गांवों में विश्वास किया जाता था, लेकिन उनमें किसी की विशेष रुचि नहीं थी, क्योंकि वे शायद ही कभी दोहराई जाती थीं। ऐसा ही एक अवसर था यह घटना। गुफा के अंदर अब एक धधकती आग थी, जिसका धुआँ नीची छत से टकराकर चट्टान के किनारों पर घने छल्ले की तरह ऊपर उठ रहा था, और उसके चारों ओर लगभग बीस आदमी बैठे थे, जिनका बर्बर रूप एक कठोर, अराजक जीवन का संकेत दे रहा था। आग को समय-समय पर सूखी लकड़ियों और कांटों से जलाया जा रहा था, और जैसे ही लपटें ऊंची उठतीं, कभी-कभी लगभग छत तक, वे आसपास के क्रूर चेहरों और पीछे स्थित विशाल प्रतिमा को रोशन कर देतीं, जिसके कोमल, शांत चेहरे एक दूसरे के साथ अजीब विरोधाभास पैदा कर रहे थे। कुछ आदमी तांबे के प्याले से कच्ची शराब पी रहे थे, जिसे चारों ओर घुमाया जा रहा था, और उनमें से कई पहले से ही आंशिक नशे के लक्षण दिखा रहे थे, जो अशिष्ट

गीतों के टुकड़ों में प्रकट हो रहा था; जबकि, उनके बीच चल रही बातचीत और लूट के बंटवारे की आनंदमय प्रत्याशा से, इकट्ठे हुए लोगों के काम के बारे में कोई संदेह नहीं था। अंत में, एक झगड़ा हुआ।

4. सीता। दो आदमियों के बीच झगड़ा हो गया था, और उससे उत्पन्न शोर और गड़बड़ी झरने की नीरस गर्जना के ऊपर भी सुनाई दे रही थी; और, जब झगड़ा करने वाले अभी भी बहस कर रहे थे, अचानक मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक लंबा व्यक्ति प्रकट हुआ, जिसकी उपस्थिति से तुरंत सन्नाटा छा गया, और कुछ लोग अंधेरे में पीछे हट गए। "फिर से शराब पीकर झगड़ा कर रहे हो?" नए आने वाले ने अपने हाथ में पकड़े चौड़े भारी भाले की छड़ी को ज़मीन पर पटकते हुए कहा। "क्या मैं तुम पर एक घंटे के लिए भी भरोसा नहीं कर सकता? मुझे शराब लाओ;" और दो आदमियों ने एक अंधेरे कोने से तांबे का बर्तन उठाया और उसके सामने रख दिया। एक तरफ हटकर, उसने उसे अपने पैर से उलट दिया, और कुछ सामग्री आग में गिर गई, जिससे आग भयंकर रूप से भड़क उठी। "देखो क्या पी रहे हो, हे मूर्खों!" उसने तिरस्कारपूर्ण भाव से कहा। 'आग से आग, और इस प्रकार झगड़ा, और अक्सर विश्वासघात। लेकिन आज रात और नहीं; हमें शायद और भी काम करना हो। क्या मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ?" इसका एकमात्र जवाब था "जय काली!" "काली की विजय!" की गूँज, जो अभी-अभी हुई ही थी कि दो आदमी जल्दी से अंदर आए और अपने सरदार को झुककर प्रणाम करते हुए बोले, "वह यहाँ हैं, मालिक; हम उन्हें सुरक्षित ले आए हैं।" "और पैसे?" "जी मालिक, थैले उनके टट्टू पर लादे गए थे और हम उन्हें रास्ते से नीचे ले आए। वे उस पेड़ के पास हैं जहाँ वह बैठे हैं।" "और वह अकेले हैं?" "हाँ; वह एक नौकर लाना चाहते थे, लेकिन हमने उन्हें अनुमति नहीं दी। वह अकेले हैं।" "तो धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करो, मेरे बेटों," सरदार ने कहा, "मैं जल्द ही लौटूँगा। मेरे पीछे कोई न आए; मुझे इस व्यक्ति से स्वयं बात करनी है।" हम अपने इतिहास में इस व्यक्ति का बहुत कुछ देखेंगे। लंबा, प्रभावशाली कद-काठी, चौड़ी छाती और मजबूत अंगों वाला, जो निरंतर खेलकूद के अभ्यास का प्रमाण था। उसके चेहरे की बनावट सुस्पष्ट थी और वह सुंदर होता, सिवाय उसके मुंह के, जो बोलते समय टेढ़े-मेढ़े, अनियमित दांत दिखाता था; और निचले जबड़े के कुछ उभार के साथ, उत्तेजित होने पर उसका चेहरा किसी जंगली जानवर जैसा लगता था। उसकी कोयले जैसी काली आंखें बड़ी, गहरी और उग्र भाव वाली थीं। उसके ऊंचे और चिकने माथे पर अक्सर झुर्रियों का

एक अजीब सा गुच्छा अचानक उभर आता था, और जो लोग उसे सबसे अच्छी तरह जानते थे, वे इन झुर्रियों के दिखने पर उससे सबसे ज्यादा डरते थे। भारत के मूल निवासी के हिसाब से उसका रंग गोरा कहा जा सकता है—चमकीला जैतून जैसा, जो कभी-कभी गहरे लाल रंग में बदल जाता था। उसकी घनी मूंछें
पवित्र भूमि पर। °* | 5 4 एक व्यक्ति के बाल सफ़ेद हो गए थे और उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष थी, जबकि उसका बलवान शरीर और सिपाही जैसा हावभाव उसके जीवन के सर्वांगीण काल में भी शक्ति में किसी कमी का संकेत नहीं दे रहा था। वह जाति से ब्राह्मण था और हिंदू धर्मग्रंथों का ज्ञाता था; और जब वह अपनी शक्तियों का प्रयोग करना चाहता था, तो भ्रमण के दौरान ग्राम सभाओं में उसके पाठों का उत्साहपूर्वक स्वागत किया जाता था और उन्हें अच्छा प्रतिफल मिलता था। उसके कुछ साथी उसे मूलराज के नाम से जानते थे, अन्य अज़र्देल के नाम से। उसका असली नाम कभी प्रकट नहीं हुआ था, लेकिन वास्तव में वह अज़र्देल पांडे था। उसके पूर्वजों के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था; लेकिन उसके साथियों में उसे डकैती के नेताओं का सरताज माना जाता था, जो योजनाएँ बनाने में सबसे निरंतर और उन्हें क्रियान्वित करने में सबसे निर्दयी था। दक्कन, मध्य भारत और बंगाल में समान रूप से उसके जघन्य अपराध हुए थे, और अंग्रेज मजिस्ट्रेट और पुलिस, और कुछ मामलों में देशी राजकुमार भी, अपराधियों का पता लगाने में समान रूप से असहाय थे। ऐसा ही एक मामला हाल ही में हुआ था। पश्चिमी भारत के एक सुदूर जिले में, कुछ ही दिन पहले, एक शाम जैसे ही सूरज ढलने लगा, कुछ लोग एक शांत गाँव में घुस गए, एक धनी बैंकर के घर पर कब्जा कर लिया, उसकी और उसके परिवार के कई सदस्यों की हत्या कर दी, और कुल्हाड़ी से उसकी मजबूत कोठरी तोड़कर उसमें रखी सभी कीमती चीजें जानबूझकर लूट लीं। गाँव में कोई पुलिस नहीं थी, और आम चौकीदार भी बाहर आने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। डाकुओं को एक अजीब भाषा में बोलते हुए सुना गया था, और उनका कोई सुराग नहीं मिला। हालांकि, तुरंत अलग होकर, गिरोह अकेले या दो-दो के समूह में उस स्थान की ओर बढ़ गया जहाँ हम उन्हें पाते हैं। बाद में बैंकर के परिवार को याद आया कि ऊपरी भारत का एक ब्राह्मण, जैसा कि उसने बताया, रमेशवर जा रहा था, उसे पुराणों का कुछ अंश पढ़ने की अनुमति दी गई थी और वह दो दिन तक बिना किसी को शक हुए उनके साथ रहा था। सौभाग्य से, भारत में ऐसे भयानक अपराध पहले की तुलना में अब कम होते जा रहे हैं; और ब्रिटिश

सरकार के मानवीय प्रयास, डकैती के उन्मूलन में उतने ही सफल रहे हैं जितने कि ठगी जैसे और भी जघन्य अपराध के दमन में। इस बार बांटी जाने वाली राशि काफी बड़ी थी। लूट का कुछ सबसे कीमती हिस्सा सरदार ने अपने पास छिपा रखा था; लेकिन बाकी माल उसके आदमियों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त था। ऐसे लेन-देन सहयोगियों के बिना पूरे नहीं हो सकते थे, और उनमें से एक राम दास था, जो अभी-अभी आया था। यह व्यक्ति गोकुलपुर गांव का साहूकार या धन व्यापारी था, जो घाटी से लगभग चार मील दूर स्थित था, जिसके साथ अजरील पांडे का लंबे समय से लेन-देन चल रहा था।

6 सीता। राम दास नियमित थे, और अपने समझौते के तहत, अब वे पिछले सौदे से प्राप्त धन को बाँटने के लिए लाए थे। हालाँकि, राम दास की अपनी एक योजना थी, जिस पर उन्होंने लंबे समय से विचार-विमर्श किया था और उसे डाकुओं के सरदार से चर्चा करने के लिए व्यवस्थित किया था, जिस पर इस इतिहास का बहुत कुछ निर्भर करेगा। अध्याय II. एक सौदा और एक अपशगुन। “राम! राम! महाराज! आपका स्वागत है, हालाँकि आप देर से आए हैं। हम आपका लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे,” अजरैल ने उस व्यक्ति से कहा, जो उस कालीन से उठा जिस पर वह बैठा था। “बैठ जाइए— आपको क्या रोक रहा था?” “नहीं, आप भी बैठ जाइए, जमादार,” दूसरे ने उठकर उत्तर दिया और सरदार को उस उपाधि से संबोधित किया जिससे केवल वही उन्हें जानता था; और जैसे ही अजरैल लापरवाही से कालीन पर गिरा, उसने अपनी एड़ियों को नीचे करके और हाथों को घुटनों पर जोड़कर अधिक औपचारिक मुद्रा में बैठ गया। “क्या आपके आने पर बारिश हुई थी? आप ज़रूर भीगे होंगे,” अजरैल ने बातचीत शुरू करते हुए कहा। “नहीं, मैं तब तक घर से नहीं निकला जब तक मौसम साफ़ नहीं हो गया और चाँद चमकने लगा; और मुझे कुछ काम भी करना था। मुझे पता था कि मेरा जॉर्ड मेरे बिना नहीं जाएगा। ही! ही! ही!” “बिल्कुल नहीं,” अज़रील ने जवाब दिया; “मेरे साहूकार (बैंकर) कभी-कभी मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं; और सच कहूँ तो मैं उन पर बहुत कम भरोसा करता हूँ। और अब, मित्र, तुम क्या लाए हो? मेरे पास तुम्हारा भेजा हुआ ज्ञापन है।” “आह! जमादार!” उस आदमी ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, “मूल्यांकन करना तो ठीक है, लेकिन उन्हें कौन पूरा कर सकता है? और मेरे पास बहुत कम समय था, महाराज को बहुत जल्दी थी। मेरे इस छोटे से गाँव में इतना सारा सोना-चांदी कौन बेच सकता है? और मोती तो

अभी भी बचे हैं।" "अच्छा, अच्छा," अज़रील ने तेज़ी से कहा, "तुम क्या लाए हो? मेरे लोग अधीर हैं, और उन्होंने शराब पीकर अपना आपा खो दिया है, और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। जल्दी करो, दोस्त।" 3 व्यापारी ने अपने साथी के शांत व्यवहार को गलत समझा और हंसमुख उत्साह तथा थोड़ी सी हंसी के साथ उत्तर दिया — "जी हाँ, जमादार साहब, यह रहा हिसाब और पैसा थैलों में है; क्या आप इसे गिनवाना चाहेंगे?"

 "बस करो!" दूसरे ने अधीरता से चिल्लाते हुए व्यापारी के हाथ से कागज़ छीन लिया, "मुझे यकीन है कि तुम इसे दिल से जानते हो, आगे बढ़ो।" "अच्छा, तो फिर, जमादार," राम दास ने एक विवरण के बाद उत्तर दिया, जिसका वर्णन करना आवश्यक नहीं है; "देखो, जो चीजें बेची गईं उनसे कुल मिलाकर दो हज़ार छह सौ चालीस रुपये निकले, जो इन चार थैलों में हैं।" "अरे, झूठे और चोर!" अज़रील चिल्लाया, जिसने बिक्री का विवरण सुनाए जाने के दौरान बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से को काबू में रखा था। "तुम्हारे अपने हिसाब से तो एक हज़ार रुपये से ज़्यादा होने चाहिए थे, और वह तुमने चुरा लिया है। अब, मुझे तुम्हें ऐसे ही उस तालाब में फेंकने या अपने लोगों को सौंपने से क्या रोकता है, ताकि वे तुमसे जो कुछ भी ले सकें? मुझे लगता है कि यह एक हज़ार नहीं होगा, न ही उसका दुगुना; क्या तुम उनके साथ सौदे का जोखिम उठाओगे, या हम उनके बिना ही सौदा कर लें?" "हे जमादार—महाराज! हे मेरे स्वामी! मुझे डराइए मत," उस व्यक्ति ने कहा; "मैं तो एक दीन-हीन प्राणी हूँ, जो दान-पैसे कमाकर अपना पेट भरता हूँ, और आप एक महान नेता हैं, जिनसे सब डरते हैं। मैं अपने बच्चों की, कृष्ण की, आपके गर्दन और चरणों की कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने जो कहा है वह सत्य है। अपने उस दास पर संदेह न कीजिए जो सदा इतना वफादार रहा है।" "अब, राम दास, सुनो," अज़रील ने कहा, "मेरी बातें ध्यान से सुनो। मैं संक्षेप में ही बोलूँगा, क्योंकि तुम जैसे पर कुछ भी व्यर्थ करना व्यर्थ है, और तुम भली-भांति जानते हो कि मैं जो कहता हूँ वही करता हूँ। इस बार मुझे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए। ये लोग अच्छे से पेश आए हैं, और यहाँ जो कुछ भी है, वह सब उन्हें मिल जाएगा, लेकिन मुझे एक हजार रुपये का नोट और जो सामान नहीं बिका है, उसकी रसीद चाहिए।" "मेरे स्वामी!" "मेरे स्वामी, मेरी गरीबी पर विचार कीजिए, ज़रा सोचिए। मेरे पास जो सामान है, उसकी रसीद ये रही," अज़र्देल की बेचैनी देखकर वह तेज़ी से बोला। "हे मेरे जमादार! मुझ पर दया

कीजिए और मेरी गरीबी पर रहम कीजिए।" "धोखा मत खाइए, मेरे मित्र," अज़र्देल ने शांत भाव से उत्तर दिया। "मुझे वह जगह याद है जहाँ आप अपना खजाना रखते हैं, और मैं उसे आज रात ले जा सकता हूँ, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, जब आप उस तालाब के तल में लेटे होंगे। क्या आप कलम और कागज़ लाए हैं?" "ये यहीं हैं, मेरे स्वामी," व्यापारी काँपते हुए बोला और उसने अपनी जेब से एक कलम निकाली। "तो फिर, एक हज़ार रुपये का वचन पत्र लिख दीजिए। जब मुझे ज़रूरत होगी, मैं इसे लेने आऊँगा।" "मेरे स्वामी, दया कीजिएगा: ज़रा सोचिए मैं कितना बड़ा जोखिम उठा रहा हूँ। अगर अंग्रेज़ पुलिस को पता चल गया कि मैंने क्या किया है, तो क्या हो सकता है।"

8. सीता! "मुझे इस काले पानी से बचाओगी?" रामदास भय से कांपते हुए बोला। "या शायद मुझे फांसी से बचाओ," अज़रील ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया; "लेकिन जब तक हम अच्छे दोस्त हैं और हमारे छोटे-मोटे काम हैं, हमें एक-दूसरे को जितना हो सके कम धोखा देना चाहिए। इसलिए जमानत लिख लो और इस बारे में ज्यादा झंझट मत करो। वरना," और उसने अपनी गहरी निगाहें उस आदमी पर क्रूर गुस्से से घुमाईं, "मुझे जाकर अपना सहारा खुद लेना पड़ेगा, जबकि मछलियाँ तुम्हें उस काले पानी की तलहटी में खा जाएंगी। हा! क्या तुम्हें इससे कोई तकलीफ है! हे चोर और कंजूस!" राम दास समझ गया था कि वह एक जाल में फंस गया है, और उसे लगा कि किसी भी तरह का प्रतिरोध या देरी उसके लिए घातक साबित होगी। उसके साथी का निर्दयी स्वभाव उसे ज्ञात था, और वह जानता था कि उसके लिए किसी भी इंसान की जान की कोई कीमत नहीं है। फिर भी, सिक्कों और हार की जमा राशि ही उसकी सुरक्षा थी, और बिक्री से उसे भारी मुनाफा हुआ था। न केवल उसकी सारी दौलत और उसकी जान दोनों ही लुटेरे के रहमो-करम पर थीं, बल्कि उसे अपनी निजी योजनाओं का भी खुलासा करना था, जो उसे पता था कि लुटेरी को मंजूर होंगी। "इसे पाँच सौ कर दो, जमादार," उसने कागज़ निकालते हुए कहा, क्योंकि इस खतरे में होने के बावजूद भी वह अपने धंधे की आदत को नहीं रोक सका। कोई जवाब नहीं आया। "छह सौ—छह सौ पचास, मांगने पर धारक को देय; यह बेहतर होगा, और इस पर अपना नाम लिखने से ज्यादा सुरक्षित होगा। मेरे नोट हर जगह जाने जाते हैं, और कोई भी बैंक इस ऑर्डर को भुना लेगा।" "मुझे लगता है मैं एक नादान मूर्ख हूँ," अज़रील हँसते हुए बोला; "और अब देखो मैं कितना दयालु हो सकता हूँ। सात सौ पचास

लिखो, जो वाहक को देय हो। अरे यार, मोती तो इससे कहीं अधिक मूल्यवान हैं।” रामदास ने अब और संकोच नहीं किया; उसकी कलम तेज़ी से कागज़ पर चली और आदेश उसी तरह लिखा गया जैसा अज़रील ने कहा था; लेकिन उसका हाथ अभी भी काँप रहा था; दस्तावेज़ उतना सुव्यवस्थित नहीं था जितना उसके किसी क्लर्क ने लिखा होता, और अगर उसकी लिखावट ज्ञात न होती तो इसे अस्वीकार भी किया जा सकता था। लेकिन फिलहाल, यह खतरे को टाल देगा। जब यह पूरा हो गया, तो उसने कालीन के पास पड़ी सफेद रेत की एक चुटकी उठाई, उसे सुखाया और उस पर फिर से छिड़का। “और अब, तुम्हारी क्या इच्छा है, मित्र?” अज़रील ने चुपचाप कागज़ समेटते हुए कहा। “तुम जीवित हो, तुम्हारे लिए अच्छा है; बोलो, भले आदमी, और मैं सुनूँगा।” व्यापारी ने दाएं-बाएं, आगे-पीछे, घने अंधेरे में चारों ओर देखा, यह देखने के लिए कि कहीं कोई उसकी बात सुन तो नहीं रहा है। उसके सामने मुलायम हरी घास थी, जो चांदनी में चमक रही थी।

एक सौदा और एक अपशगुन... 9 प्रकाश; उसके बगल में वह गहरा तालाब, जिससे वह शायद बाल-बाल बचा था, मलाईदार झाग से ढका हुआ था। पीछे, पीपल के पेड़ों की पत्तियाँ थीं, जिनके बीच से झरने का पानी चमक रहा था। उसने किसी को नहीं देखा; फिर भी, पेड़ के खोखले तने में छिपे हुए, गिरोह के दो लोग दुबके बैठे हर बात सुन रहे थे। उन्हें अपने नेता की व्यापारी के साथ निजी बातचीत का शक था, और वे पहले ही एक महत्वपूर्ण रहस्य जान चुके थे। आगे क्या होने वाला था? 'अरे! लगता है तुम सुनने वालों से डरते हो, राम दास? लेकिन हिम्मत रखो, यार; मेरे लोगों में से कोई भी हमारे पास आने की हिम्मत नहीं करता, सिवाय मेरे बुलाने के,' अजरदेल ने कहा; 'और झरना सभी आवाजों को दबा देता है। मैं तुमसे कहता हूँ कि हमारे पास कोई नहीं है, सिवाय शायद वहाँ के पत्थरों की आत्माओं के। वे सुन सकती हैं; कौन जानता है? बोलो!' व्यापारी स्पष्ट रूप से काँप उठा क्योंकि उसने अपने पास के ढेर पर एक चोरी-छिपे नज़र डाली, क्योंकि वह उन आत्माओं में विश्वास करता था जिनके लिए वे पवित्र थे; लेकिन वह अपने दिल में बसे लक्ष्य को पाने के साधनों पर लंबे समय से विचार कर रहा था, और अज़रील पांदे की मदद से वह अपने शैतानी उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता था। "शैतान चाहें तो सुन सकते हैं, और अगर वे कर सकते हैं तो मेरी बात में मदद कर सकते हैं," उसने पत्थरों के प्रति श्रद्धा का भाव दिखाते हुए उत्तर दिया; "लेकिन तुम मेरी ज़्यादा मदद कर सकते हो, जेमादार; बस मुझसे वादा करो कि तुम

मेरा राज़ रखोगे। मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझसे वादा करो।" "मैं कभी भी सच बोलने की कसम नहीं खाता, क्योंकि मैं कभी भी कंजूस व्यापारी की तरह झूठा नहीं होता, और मेरी इज़्ज़त मेरी अपनी है," अज़रील ने तिरस्कारपूर्वक कहा; "लेकिन अगर तुम ऐसा चाहते हो, तो मैं तुम्हारे सिर की कसम खाता हूँ कि मैं सच बोलूँगा। अब खुलकर और संक्षेप में बोलो, क्योंकि रात बीत रही है, और हमें सुबह होने से पहले यहाँ से दूर जाना होगा।" "यह पारिवारिक मामला है, और अगर मैं सब कुछ बता दूँ, तो रात शायद ही काफ़ी होगी; लेकिन इन सब बातों से आपको कोई लेना-देना नहीं है," उस आदमी ने जवाब दिया। "सुनिए, मेरे चाचा राम दास गोकुलपुर के पुत्वारी पद पर आसीन थे, जिसके वे जमींदार भी थे, और अब उनका निधन हो चुका है। उनके पुत्र हरी दास ने पद और उससे जुड़ी संपत्ति पर उनका उत्तराधिकार संभाला है, और उन्होंने शाहगंज के बैंकर और सुनार नरेंद्र की पोती सीता से विवाह किया है, जो मुझे मिलनी चाहिए थी। अब विरासत में मेरा एक बड़ा हिस्सा है; लेकिन हरी दास मुझे एक कौड़ी भी देने से इनकार कर रहे हैं: और इसके अलावा, बहुमूल्य पारिवारिक गहने, अन्य जमीनें और वह पद भी है, जिसमें मेरा वर्तमान हिस्सा नगण्य है। मैंने अदालतों में अपना दावा पेश किया है, और व्यर्थ में बहुत पैसा खर्च किया है; लेकिन मुकदमा मेरे खिलाफ तय हुआ है। वे कहते हैं कि मेरे पास अब केवल एक ही मौका बचा है - कलकत्ता की अदालत में अपील करना;
10 सीता। लेकिन इसमें हज़ारों रुपये खर्च हो जाएँगे। मैं गरीब हूँ, और मेरा चचेरा भाई अमीर और समृद्ध है, और मैं उससे नफ़रत करता हूँ—मैं उससे नफ़रत करता हूँ, जमादार—मौत तक, और तुम मेरा बदला ले सकते हो।" "अच्छा," अज़रील ने शांत भाव से उत्तर दिया; "लेकिन देखो, मैं कभी हत्या नहीं करता। तुम उसे मामूली रकम में मरवा सकते हो; लेकिन अगर वह मर गया, तो क्या तुम सफल हो पाओगे?" "नहीं। उसका एक बेटा है, जो अभी छोटा है; और जब तक वह जीवित रहेगा, मैं उतना ही असहाय रहूँगा जितना अभी हूँ।" "तो फिर उन दोनों का एक ही तरीके से निपटारा क्यों नहीं करवाते? अगर तुम उदार होते, मेरे दोस्त, जो तुम नहीं हो, तो मुझे लगता है कि मेरे कुछ बहादुर साथी तुम्हारी मदद कर सकते हैं। मान लो एक हज़ार रुपये, अभी; यह इसके लायक होगा। क्या मैं उनमें से कुछ को बुला लूँ, या तुम उनके पास जाकर अपनी मर्ज़ी से सौदा करोगे?" "अरे नहीं, नहीं!" व्यापारी ने गिड़गिड़ाते हुए और अपने जुड़े हुए हाथ फैलाते हुए कहा, "यह तो हत्या होगी। अंग्रेज़ पुलिस को

इसका पता ज़रूर चल जाएगा, और तुम्हारे लोग और मैं खुद भी ज़रूर फांसी पर चढ़ जाएंगे।" लेकिन... "देखो," सरदार ने उसे रोकते हुए कहा, "तुम कायर हो! उन शैतानों के नाम पर यहाँ से चले जाओ जो तुम्हारी बातें सुन रहे हैं, और शुक्र मनाओ कि मैंने हुरे दास को वह नहीं बताया जो तुमने मुझे बताया है। दफ़ा हो जाओ! मैं तुम्हारी हत्या की किसी भी साज़िश में शामिल नहीं होना चाहता।" "मैं कायर नहीं हूँ, जमादार," व्यापारी ने जवाब दिया, "वरना मैं आज रात तुम्हारे पास नहीं आता। अगर तुम बाकी का काम करोगे तो मैं अपना काम कर सकता हूँ। क्या तुम इतने मंदबुद्धि और अच्छे माल के प्रति इतने लापरवाह हो कि मेरी बात समझ नहीं पा रहे?" "तुमने अपने दुश्मन के घर में कितना माल होने की बात कही थी?" अज़रील ने लंबी चुप्पी के बाद पूछा। "वह भी तुम्हारी तरह ही साहूकार है, है ना?" "जी हाँ," दूसरे ने उत्सुकता से जवाब दिया, "और वह एक सुनार भी है, और अपने काम में माहिर है। कितना? खैर, अभी एक हफ़्ते पहले ही उसे शादी के गहने बनवाने के लिए दो हज़ार रुपये का चाँदी-सोना मिला था, और उसके पास कुछ और काम भी है। उसके घर के गहने दस हज़ार रुपये के हैं; और उसकी पत्नी सीता एक हज़ार रुपये के सोने के कंगन और पायल पहनती है। प्रार्थना कक्ष में सोने-चाँदी के अलावा, कीमती तांबे के बर्तन और कीमती कपड़ों से भरे संदूक भी हैं। इसके अलावा...।" "बस करो!" अज़र्देल चिल्लाया। "अगर यह सब सच है, तो यह एक दुर्लभ लूट होगी, और पिछली बार से भी बेहतर। लेकिन जो बात मुझे समझ नहीं आ रही है, वह यह है कि तुम, अपने कंजूस स्वभाव के साथ, मुझे इसे लेने दोगे, क्योंकि तुम्हें कुछ भी वापस नहीं मिलेगा, मित्र। और अगर मैं इसे ले भी लेता हूँ, तो तुम विरासत के उतने ही करीब हो जाओगे जितना अभी हो।"

+ एक सौदा और एक अपशगुन। — 11 "लेकिन—लेकिन—अगर उसने विरोध किया तो वह मारा जा सकता है," व्यापारी ने कर्कश फुसफुसाहट में कहा और आगे झुक गया; "और मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि क्या होगा। क्या वह विरोध करेगा?" "मुझे लगता है नहीं; नहीं, मुझे यकीन है। वह एक बलवान, फुर्तीला आदमी है, खेलकूद में निपुण, पहलवान है और तलवारबाजी में माहिर है।" "हा! ऐसा?" "तुम्हारे सिर और आँखों की कसम, जेमादार, मैं सच कह रहा हूँ। हर कोई उसे जानता है। तब, सचमुच," अज़्रियल ने गहरी साँस लेते हुए कहा, जबकि उसके माथे पर झुर्रियों का गुच्छा इकट्ठा हो गया, "वह मर सकता है। काली मेरे जैसे चुने हुए भक्तों

के प्रतिरोध को बर्दाश्त नहीं करती। जो उसका विरोध करते हैं वे मर जाते हैं; वह उन्हें कभी नहीं छोड़ती। इसलिए, उसके नाम पर, मैं किसी को नहीं छोड़ता—न पुरुष को, न स्त्री को। "और न ही बच्चे को, जेमादार?" "चुप रहो! वरना मैं तुम्हें मार डालूँगा," अज़्रियल क्रूरता से चिल्लाया। क्या बच्चे लड़ते हैं या हथियार उठाते हैं कि मुझ जैसे व्यक्ति उन्हें मार डाले? और फिर भी—और फिर भी—," वह सोचते हुए आगे बोला, "हो सकता है कि उस हाथापाई में वह बच्चा भी मारा जाए।" "हाँ, हाँ," व्यापारी ने उत्सुकता से फुसफुसाते हुए कहा; "उसे मार डालो, जेमादार; उसे मार डालो, या किसी को ऐसा करने के लिए कहो;" और वह आगे झुका और अपने साथी के पैर छुए। "अगर तुम कायर न होते," उसने कड़वी घृणा से जवाब दिया, और अपने पैर ऐसे खींच लिए जैसे वे अपवित्र हो गए हों— "तो तुम तलवार उठाकर खुद ही उसे मार डालते; किसे पता चलता? हम व्यस्त होते, और हत्या का इल्जाम डाकुओं पर लग जाता; और फिर तुम्हें विरासत का पूरा अधिकार मिल जाता।" "अच्छा विचार है, अच्छा विचार है," वह आदमी दांत भींचते हुए खुद से बुदबुदाया। "ज़रूर आऊंगा, क्योंकि मुझे ही तुम्हारे लिए द्वार खोलना है; इसे जबरदस्ती नहीं खोला जा सकता। सुनो! हमारे घर सटे हुए हैं, और उनके बीच एक दरवाजा है। मैं कभी-कभी शाम को उसके घर जाता हूं, और मेरी पत्नी उसके घर जाती है। मैं उस रात जाकर बाहरी आंगन में तब तक छिप सकता हूं जब तक मुझे संकेत न मिल जाए; फिर मैं तुम सबको अंदर आने दूंगा। एक और आंगन और एक दरवाजा है, लेकिन वह कमजोर है: उसके बाद, कुछ नहीं; घर खुला है। बताओ, यह कब हो सकता है?" "मुझे तो शाम का समय सबसे अच्छा लगता है, सूर्यास्त के समय; लेकिन मेरे कुछ आदमी नए और अनुभवहीन हैं, और वे अंधेरा पसंद करेंगे। कल पूर्णिमा होगी, और अमावस्या से पहले की रात सबसे अच्छी हो सकती है, हालांकि इंतजार लंबा होगा। मान लो अमावस्या की पहली रात, और हमें चांद निकलने से पहले यह काम पूरा कर लेना चाहिए। मैं खुद जगह देखने आऊंगा; इस बीच अपने साथ दो अच्छे आदमियों को ले जाओ, उन्हें अच्छे से खिलाओ।"

12 सीता, और उन्हें सब कुछ दिखाओ, लेकिन उन्हें शराब मत दो। क्या गाँव में पुलिस या चौकीदार हैं?" "कोई पुलिस नहीं है, केवल दो चौकीदार हैं, जमादार, जो हानिरहित हैं। गड़बड़ी या रुकावट की कोई संभावना नहीं है, और कामगारों के जाने के बाद घर में कोई नहीं है। आओ!" "मैं आऊँगी, मित्र। काली मुझे यह करने के लिए

बुला रही है, और जब 'माँ' नेतृत्व करती है तो मैं कभी नहीं डगमगाती। मैं हिम्मत नहीं कर सकती; मैंने स्वयं को उनके प्रति समर्पित कर दिया है। क्या तुम भी उतने ही आश्वस्त हो?" "ताम," व्यापारी ने उत्तर दिया। "मैं अपने घर के गहने खो दूँगा, यदि तुम दया करके मुझे हिस्सा न दो; लेकिन यह बेहतर है कि सब कुछ तुम्हारे पास हो, बजाय इसके कि वह जीवित रहे और उन्हें रखे।" "जैसा 'माँ' चाहती हैं," अज़रील ने गंभीरता से उत्तर दिया; "और अब, मित्र, चले जाओ। जो कुछ करना बाकी है वह मेरे और मेरे लोगों के बीच है, और इसे अनभिज्ञ नहीं देख सकते। हो! गोविंदा!" उसने चिल्लाकर कहा, "इधर आओ।" और जैसे ही वह आदमी प्रकट हुआ, उसने उससे कहा, "तुम और जयराम, जैसे आए हो, इस भले आदमी के साथ जाओ। तुम दोनों उसके साथ रहो और जो कुछ वह तुम्हें दिखाए, ध्यान से देखो। परसों मैं स्वयं आऊंगा। तब तक सब कुछ ध्यान से देखते रहो और अपना कर्तव्य निभाओ। तुम्हारा हिस्सा मेरे पास सुरक्षित रहेगा और अगर तुम्हें एक-दो दिन के लिए पैसे की ज़रूरत हो, तो वह तुम्हें दे देगा। मुझे गले लगाओ, महाराज," उसने व्यापारी से आगे कहा; "और अब जाओ और खुश रहो।" जो लोग छिपे हुए थे, वे उस छेद से निकल गए जिससे वे अपने छिपने की जगह में दाखिल हुए थे और चुपके से अपने साथियों से मिल गए; और कुछ ही मिनटों में उनके नेता ने सभी को लूट के बंटवारे के लिए बुलाया, क्योंकि उसने पिछले मामले में हर किसी के कार्यों के आधार पर पहले ही हिस्से तय कर लिए थे। इस मामले में अजराइल को अपने आदमियों पर पूरा भरोसा था; और अब, कालेक को दी गई भेंट और अपने लिए उतनी ही राशि को छोड़कर, बाकी सब धीरे-धीरे बाँट दिया गया जब तक कि थैले खाली नहीं हो गए। फिर, खड़े होकर, वह चिल्लाया, "कुल्हाड़ी लाओ, मुनोहर।" "आह, स्वामी, यह तो खुशखबरी है," उस व्यक्ति ने कहा, जो वास्तव में पेड़ पर बैठे श्रोताओं में से एक था। "आशा है कि देश भर में इतनी लंबी यात्रा नहीं करनी पड़ेगी; और फिर भी हम सभी स्वामी के लिए द्वारका या रमेशवर तक भी चले जाएँगे। 'जय काली!'" एक ने उत्तर दिया: लेकिन इसके बजाय, आह्वान को एक ज़ोरदार चीख में दोहराया गया जो घाटी में गूंज उठा, चट्टानों से बार-बार प्रतिध्वनित होता रहा, मानो उस स्थान की आत्माओं ने इसे ग्रहण कर लिया हो और दोहरा रही हों। यह एक अच्छी शुरुआत थी।

~ रे -.2 4ए सौदा और एक शगुन। — 13 शगुन। और अब पवित्र कुल्हाड़ी—एक बड़ा, भारी ब्लेड, जिसकी धार उत्तम रूप से तपी हुई थी—उसके रक्षक द्वारा निकाली

गई; और उसके विभिन्न आवरणों को खोलकर, उसे आदरपूर्वक सोने के कपड़े पर रखा गया। उसी आदरपूर्वक उसे पत्थरों के ढेर पर रखा गया, जो एक वेदी का काम करता था, जिस पर पिघला हुआ मक्खन, हल्दी और सिंदूर लगा हुआ था—और उस पर कुछ फूल, जल्दी से इकट्ठा करके, रखे गए थे। फिर नेता उसके पास याचना करते हुए मुद्रा में आया, और एक उग्र संस्कृत मंत्र दोहराते हुए, ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, "देखो, देखो! मैं उसे देख रहा हूँ। भाइयों, पवित्र माँ आ रही हैं! उनका स्वागत करो, और उनसे प्रार्थना करो कि वे हमें हमारे कार्यों में सुरक्षा प्रदान करें, और हमारा मार्गदर्शन करने के लिए शगुन दें!" जैसे ही उसने बोलना बंद किया और पूरी तरह सीधा खड़ा हो गया, उस पर निर्मल चाँदनी पड़ रही थी, उसके हाथ में पकड़े हुए विशाल भाले की चौड़ी, चमकदार धार से रोशनी चमक रही थी। उसके अनुयायी उसे शक्ति का अवतार और परम पूजनीय देवी की इच्छा का उचित क्रियान्वयन मानकर उसकी पूजा कर सकते थे; तभी पुरुषों के मुँह से एक और चीख निकली, "जे काली!", जो एक चट्टान से दूसरी चट्टान तक गूँजती हुई शांत हो गई। ठीक उसी समय, ऊपर की सूखी टहनियों में से एक पर बैठा एक विशाल गिद्ध, चीख से भयभीत होकर, अपनी नींद से जाग उठा और कर्कश चीखों और ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए तालाब के पार दाहिनी ओर उड़ गया और खाई के उस पार एक शिखर पर बैठ गया; और एक पल के लिए वह वृक्ष वहाँ बसेरा करने वाले पक्षियों की अवर्णनीय चहचहाहट से भर गया। लेकिन फिर सन्नाटा छा गया, क्योंकि किसी ने कुछ नहीं कहा। "एक बार फिर उत्तर दो, पवित्र माँ!" नेता ने आकाश की ओर बाहें फैलाते हुए पुकारा; "उत्तर दो, और हमें जाने का आदेश दो।" जैसे ही उसने बोलना शुरू किया, दाहिनी ओर झरने के ऊपर जंगल में सियार के झुंड में से एक, रात के आखिरी पहर में भौंकने की अपनी आदत के अनुसार, अचानक एक छोटी, तीखी आवाज़ में भौंका, जिसे उसके साथ मौजूद बीस अन्य सियारों ने भी दोहराया, और यह एक भयानक कोलाहल में बदल गया, जिसने घाटी और जंगल को भर दिया, और झरने की नीरस गर्जना के साथ एक अजीब विरोधाभास पैदा किया। "यह पूरा हो गया है, भाइयों," उनके नेता ने एक आनंदित मुस्कान के साथ कहा; "माता ने सेवा स्वीकार कर ली है, और हम उनकी महिमा तक इसका पालन करेंगे। 'जय काली!'" जब फिर से सन्नाटा छा गया, तो उसने कहा: "ज्यादा दूर मत जाओ; आस-पास के गांवों में रहो। मैं बुलदेव और कुछ अन्य लोगों से मिलने शाहगंज जाऊंगा। मेरा नाम ब्राह्मण 'नर्तैन दास' होगा,

और मैं शहर के बाहर कृष्ण मंदिर में रहूंगा। अब प्रस्थान करो। तुम्हारे पास बहुत धन है; सावधान रहो; शराब मत पियो; घमंड मत करो, और सतर्क रहो।
14 सीता। विवेकशील। मुझे जल्द ही तुम्हारी आवश्यकता होगी, और तुम सभी को किसी न किसी रूप में तुम्हारी आवश्यकता होगी। आदेशों का पालन किया गया; और भोर होने से बहुत पहले ही घाटी अपनी सामान्य एकांत सुंदरता में लौट आई। अध्याय III. सुनार का घर। गोकुलपुर के सुनार, पुतरवारी और बैंकर हुरी दास के पारिवारिक मामले समृद्ध थे, जैसा कि उनके चचेरे भाई और कट्टर शत्रु राम दास ने डकैत सरदार को बताया था, और जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णित किया गया है। उनके पिता और उनके चाचा, राम दास के पिता, दोनों की मृत्यु हो चुकी थी; और उन्हें और उनके चचेरे भाई को भाइयों द्वारा छोड़ी गई संपत्ति का अपना-अपना हिस्सा विरासत में मिला था। उनके दादाजी के जीवनकाल में, वृद्ध और दुर्बल होने के कारण, उन्होंने अपनी संपत्ति अपने दोनों बेटों के बीच समान रूप से विभाजित कर दी थी, और उसके बाद कोई विवाद नहीं हुआ था। हालाँकि, अपने चाचा की मृत्यु के बाद, राम दास ने जिला न्यायालय के एक देशी वकील से सलाह ली, जिसने उन्हें अपने चचेरे भाई हुरी दास के खिलाफ उनकी आधी संपत्ति के लिए मुकदमा दायर करने की सलाह दी, इस आधार पर कि यह उनके दादाजी द्वारा किए गए पहले विभाजन से प्राप्त धन का हिस्सा था। अब हुरी दास और राम दास के पिता दोनों ही खानदानी पेशे से बैंकर और सुनार थे, साथ ही गोकुलवूर और अन्य गांवों के पुतवारी, यानी वंशानुगत लेखाकार और रजिस्ट्रार भी थे; लेकिन उनकी संपत्ति असमान थी, और दोनों में से हुरी दास के पिता ने खूब तरक्की की और धनवान बन गए, जबकि उनके भाई, एक आलसी और फिजूलखर्ची करने वाले व्यक्ति ने न केवल अपनी संपत्ति से कुछ नहीं कमाया, बल्कि अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा फिजूलखर्ची, धार्मिक उत्सवों और तीर्थयात्राओं में लुटा दिया। हालांकि, पैतृक जमीनों से उन्हें अच्छी आमदनी होती थी, और राम दास के पिता की मृत्यु तक परिवारों में सौहार्द बना रहा। अपने पिता की मृत्यु के बाद ही राम दास को पता चला कि संपत्ति कितनी खराब हो चुकी थी; कितने भारी गिरवी चुकाने थे; और उनके पिता का संयमित बैंकिंग और व्यापार किस हद तक ठप हो गया था; और उन्होंने इस उपेक्षा को सुधारने के लिए पूरी लगन से काम करना शुरू कर दिया। वह एक बेईमान व्यक्ति थे। व्यापार में, और अक्सर जोखिम भरे कदम उठाते थे: टूटी हुई ज़मीनों के भूस्वामियों को अत्यधिक ब्याज पर ऋण देते थे।

दौलत। उसने देश के उत्पादों में गहन निवेश किया और धीरे-धीरे डाकुओं और अन्य पेशेवर लुटेरों के साथ जुड़ गया, जो दूर-दूर से उसके लिए गहने और कीमती कपड़े लाते थे और बिना किसी के पकड़े जाने के डर के उन्हें बेच देते थे। अपराध की ऐसी ही कमाई से उसने अज़राएल पांडे के साथ लेन-देन किया था, और सभी लेन-देन बेहद लाभदायक थे। हालाँकि, उसका चचेरा भाई, हुरे दास, उससे अधिक धनी और सम्मानित था; और समृद्धि हर काम में उसका साथ देती प्रतीत होती थी। हुरे दास ने शाहगंज के सुनार बैंकर नरेंद्र की पोती सीता से विवाह किया था, जो जिले में एक प्रतिष्ठित धनवान, उच्च प्रतिष्ठा और प्रभाव वाला व्यक्ति था। वास्तव में, दोनों चचेरे भाई अपने पिता के माध्यम से सुंदर सीता के हाथ के लिए दावेदार थे; लेकिन हुरे दास को प्राथमिकता दी गई, और विवाह संपन्न हुआ और उचित समय पर संपन्न हुआ। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि चचेरे भाइयों के बीच अनेक मतभेद उत्पन्न हो गए थे, भले ही स्पष्ट शत्रुता न हो—जो रामदास की ओर से घोर घृणा में तब्दील हो गई थी। वह अपने चचेरे भाई से उसकी बढ़ती संपत्ति और समृद्धि, सभी वर्गों से प्राप्त होते सम्मान, उसके दान और आतिथ्य सत्कार, और सीता के स्वामित्व के कारण घृणा करता था; और जब उसका बड़ा मुकदमा विफल हो गया, तो घृणा का प्याला छलक पड़ा। मैं अपने पाठकों को हिंदू कानून के उन जटिल बिंदुओं की व्याख्या से परेशान नहीं करूंगा, जिन पर यह मुकदमा टिका था। संक्षेप में यह कहना पर्याप्त होगा कि नूरपुर के अंग्रेज न्यायाधीश श्री मोस्टिन, जिन्होंने इस मामले का फैसला किया था, सही निष्कर्ष पर पहुंचे थे; लेकिन उनके द्वारा दिया गया फैसला, जिसमें खर्च भी शामिल था, निराश वादी के लिए असंतोष का एक अतिरिक्त कारण था, और उसके मन में प्रतिशोध की गहरी, घातक इच्छा घर कर गई थी, जो उसे दिन-रात सताती रहती थी। वह अक्सर अजड्रेल पांडे के बारे में सोचता था, जिसे वह देश के सबसे कुख्यात और खतरनाक व्यक्तियों में से एक मानता था; लेकिन वह बहुत कम आता था, और उसके लौटने में सालों लग सकते थे। पर ऐसा नहीं हुआ। कुछ ही दिन पहले, उसे रामदास से संदेश मिला था कि वह जो कुछ लाया है उसे लेने आए, और रामदास चुपके से घाटी में चला गया था। गिरोह द्वारा लाए गए गहने ऊपर पहुंचा दिए गए थे, नीचे रख दिए गए थे, और सोने के सिक्कों के साथ रामदास को बेचने के लिए दे दिए गए थे। रामदास अपनी पहली मुलाकात में ही अपना घिनौना प्रस्ताव रख सकता था, और उसने ऐसा करने का इरादा भी किया था, क्योंकि उसने इस मुद्दे पर

पूरी तरह से मन बना लिया था; लेकिन कोई अवसर नहीं मिला। बीते कुछ दिनों में उसके इरादे में कोई बदलाव नहीं आया था, और एक भयानक बदला लेने की निश्चितता उस पर और भी गहरी होती जा रही थी, जबकि वह जानता था कि वर्तमान ही उसका एकमात्र समय है।

16 सीता. ओ नीस सी ई ई रे ई ई ई ई ई ई ई ई ई एसएस ईआर चांस. अज्रिक्ल पांडे को पूरा यकीन था कि वह जहां था वहां नहीं रुकेगा, भले ही वह भेस बदलकर आया हो; और उसके लौटने की कोई निश्चितता नहीं थी। उसे लगा था कि उसके चचेरे भाई के घर का लूटा हुआ माल एक ऐसा लालच था जिसे डाकू ठुकरा नहीं सकता था; और बाकी के लिए, उसे कोई संदेह नहीं था कि उसका चचेरा भाई विरोध करेगा और मारा जाएगा, और अगर वह बच भी गया, तो कम से कम वह अपनी घृणित संपत्ति का अधिकांश हिस्सा खो देगा। आगे जो हुआ उसका विस्तृत वर्णन किया गया है; क्या कोई आशंका, कोई पछतावा, कोई दया नहीं थी? बिल्कुल नहीं। इसके बजाय, केवल मिलन की तीव्र इच्छा थी। सचमुच एक घिनौनी और शैतानी साजिश; लेकिन ऐसी साजिश जिसे कई भारतीय न्यायाधीशों को इसके सभी घिनौने विवरणों के साथ सुलझाना पड़ा है, जबकि वे उस मानसिक जासूसी पर कांपते रहे हैं जिसका उन्होंने खुलासा किया। इस मामले में दो अलग-अलग चरण थे। एक व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति की घोर घृणा और ईर्ष्या पर निर्भर था जो देखने में भले ही सम्मानित और निर्दोष प्रतीत होता हो; दूसरा एक ऐसे बदमाश का शांत, दृढ़ निश्चय था जो अपने घृणित पेशे और पूजा-पाठ के प्रति समर्पित था— लूट को अपना इनाम मानता था, चाहे अपनी जान की परवाह न करता हो या किसी और की, और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जरूरत पड़ने पर हत्या करने को भी तैयार रहता था। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, गोकुलपुर गाँव छोटा था। दो बड़े पत्थर के मकान केंद्र में थे, और उनके चारों ओर किसानों और कारीगरों के कई छोटे-छोटे घर थे, जो उस छोटे समुदाय के लिए आवश्यक थे। सुनार परिवार के एक पूर्वज द्वारा निर्मित एक साधारण मंदिर ही एकमात्र धार्मिक स्थल था। हालाँकि, सुनारों के घर उस जगह के हिसाब से कुछ दिखावटी थे। वे आंशिक रूप से चौकोर आकार के बेसाल्ट पत्थर से और आंशिक रूप से लाल ईंटों से बने थे; उनमें ज्यादा अंतर नहीं था। वे भारी-भरकम इमारतें थीं, जिनमें बाहर की ओर कोई खिड़की नहीं थी; लेकिन भीतर से आंगनों की ओर खुलते थे, जिनके चारों ओर परिवार के रहने के कमरे थे। इमारतों के आधार पर विधवा बाड़े थे,

जिनमें अनाज और भूसे के ढेर, मवेशियों और सामान के लिए शेड और नौकरों के लिए कमरे थे। प्रत्येक के सामने एक संकरा प्रवेश-आंगन था, जिसकी ऊंची दीवार घर से जुड़ी हुई थी, और इससे जुड़ा हुआ नक्काशीदार पत्थर का एक सुंदर गलियारा था, जिसके पीछे एक खुला पहरेदार कक्ष था। गेट खुद ठोस लकड़ी का बना था, लोहे की भारी छड़ों से बंधा हुआ था, और अगर पीछे से बंद होता तो इसे तोड़ा नहीं जा सकता था। गेट के ऊपर, और घर की दीवार के ऊपरी हिस्से के चारों ओर, पत्थर की प्राचीरों में बंदूक चलाने के लिए छेद किए गए थे, जो दर्शाता है कि इन्हें 'मुश्किल समय में' बनाया गया था, जब हर वह व्यक्ति जिसके पास कीमती सामान था, उसकी रक्षा के लिए अपने सर्वोत्तम साधनों का उपयोग करता था। घरों के बीच दो संकरे आंगन थे, और एक आम दरवाजा एक से दूसरे को जोड़ता था। पुराने समय में यह हुआ करता था

सुनार का घर। 17 इसका इस्तेमाल रोज़ाना होता था; लेकिन अलगाव शुरू होने के बाद से यह शायद ही कभी खुला था। यह नियोजित डकैती की शाम थी, जिसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं हुआ था। जासूसों ने हुरे दास के घर का मुआयना किया था, और किसी न किसी बहाने से कई बार उन्हें घर के अंदर भेजा गया था। उन्होंने जो बाहरी द्वार देखा, वह कुल्हाड़ी से भी टूट सकता था, लेकिन राम दास ने उन्हें दिखाया था कि इसे अंदर से कैसे खोला जा सकता है, और खोलने वाले उपकरण कहाँ छिपे हो सकते हैं। घर के मुख्य भाग में जाने वाला भीतरी दरवाजा कमजोर था, और उसे जबरदस्ती खोला जा सकता था। अज़रील पांडे, जो चार मील दूर शाहगंज के एक मंदिर में रह रहे थे, शहर में पाठ कर रहे थे, और उन्हें हुरे दास और राम दास दोनों ने गोकुलपुर आने का निमंत्रण दिया था। वह बाद वाले स्थान पर गया था, हुरे दास से मिला था, और घर के प्रार्थना कक्ष की स्थिति का जायजा लिया था, जहाँ, जैसा कि राम दास ने उसे बताया था, परिवार के गहने और सारा नकद धन वेदी के पास, फर्श के नीचे दबा हुआ था, जिस पर घर के देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रखी थीं। इस प्रकार, अब तक सब कुछ तैयार था; और शाम ढलते ही गिरोह को वर्णित घाटी में इकट्ठा होना था। उस समय सुनार हुरे दास का घर पूरी तरह शांत और सुकून भरा था। दिन का काम समाप्त हो चुका था, और एक बड़े दीपक की रोशनी में हुरे दास अपने मुख्य सहायक के साथ दिन के हिसाब-किताब की जाँच कर रहे थे। यह काम समाप्त होने पर, मालिक उठा और एक बाहरी बरामदे में गया, जहाँ उसके कई प्रशिक्षु अभी भी

कुछ चांदी के आभूषणों पर काम कर रहे थे, जिनका ऑर्डर दिया गया था। हालाँकि काम गुरुजी को संतोषजनक नहीं लगा, इसलिए उन्होंने जलते हुए कोयले के तवे से एक युवक को दूर धकेल दिया, जिसके सामने वह काम कर रहा था, और खुद उसकी जगह बैठकर, चल रहे काम को फिर से शुरू कर दिया। उन्होंने बड़ी कुशलता से एक मजबूत चांदी के तार को पायल के लिए जटिल पैटर्न में ढालना शुरू कर दिया, जबकि शिष्य उनकी कुशलता को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। “देखो, गोविंद, ऐसे करते हैं,” उन्होंने कहा। “यहाँ हल्का सा झटका दो, वहाँ चिमटे से मोड़ दो, फिर दोनों सिरों को इस तरह जोड़ दो, और जोड़ तैयार हो जाएगा। लो, यह कल के लिए तुम्हारे लिए एक नमूना होगा; और यदि आवश्यकता पड़ी, तो मैं तुम्हारी और मदद करूँगा; लेकिन खराब काम से हमारी बदनामी होगी, बेटा, और तुम सभी को अपने गुरु के सम्मान और प्रतिष्ठा का उतना ही ध्यान रखना चाहिए जितना अपने स्वयं का।” “आप तो हमेशा दयालु हैं, स्वामी,” लड़के ने उत्तर दिया, “और मुझे लगता है कि मैं अब यह कर सकता हूँ; लेकिन अगर आप देखते रहे तो नहीं।” “ठीक है, कोशिश करो; मैं अभी लौट आता हूँ,” और वह उन्हें छोड़कर घर के भीतरी हिस्से में चला गया। उसके जाने के कुछ ही पलों में

18 सीता। ——— कुछ कदम चलने के बाद, उसे वापस बुला लिया गया; एक कारीगर को दरबार के द्वार पर बुलाया गया था, और वह यह कहते हुए लौटा कि राम दास अंदर आना चाहता है। “वह आपसे बात करना चाहता है, स्वामी,” उस आदमी ने कहा, “परन्तु वह आ सकता है, परन्तु अधिक देर नहीं रुक सकता। क्या वह आ सकता है?” “ज़रूर,” सुनार ने कहा; “यद्यपि,” उसने मन ही मन कहा, “काश वह दूर ही रहता; उसका आना कष्टदायक और व्यर्थ है। मैं इस मामले में क्या कर सकता हूँ? यह तो उसकी अपनी ही इच्छा रही है। हाँ,” उसने ज़ोर से कहा, “उसे यहाँ ले आओ।” सुनार अपने हिसाब-किताब की किताबों और दीपक के पास रखे तकिये पर बैठ गया, और कुछ ही पलों में उसका चचेरा भाई अंदर आया। वह उससे मिलने के लिए उठा और दोनों साथ बैठ गए। दोनों में ज़बरदस्त अंतर था। हुरी दास लंबा-चौड़ा और ताकतवर आदमी था, और साल भर दिन की शुरुआत और अंत में नियमित रूप से किए जाने वाले व्यायामों ने उसके सुगठित शरीर को पूरी तरह से विकसित कर दिया था, जो एक बड़े तकिये पर आंशिक रूप से टिके होने पर पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। उसके चेहरे की बनावट मज़बूत थी, और शायद खुरदरी भी हो सकती थी;

लेकिन उसकी अभिव्यक्ति मर्दाना, ईमानदार और निडर थी, और उसकी चमकदार आँखें किसी स्त्री की तरह कोमल और सौम्य थीं। उसका चचेरा भाई दुबला-पतला था, और उसने जो मोटी रजाईदार जैकेट पहनी थी, उससे उसका शरीर और भी भारी लग रहा था। उसके हाथ पतले और हड्डियों वाले थे, और चेहरे के हाव-भाव कठोर और डरावने थे, जिन पर लालच और छल का स्पष्ट भाव था। उसकी आँखें छोटी, कोयले जैसी काली और सिर में धँसी हुई थीं, जो घनी भौहों से ढकी हुई थीं, और बेचैन और छुप-छुप कर देखने वाली थीं। बैठते ही उसने मुस्कुराने की कोशिश की; लेकिन मानो उसका मुँह मुस्कुराने से रोक रहा हो। प्रयास जारी था, कोने नीचे की ओर झुके हुए थे, और होंठ मानो दबी हुई घृणा से कांप रहे थे, जबकि वह हमेशा की तरह हर दिशा में देख रहा था कि कहीं कोई आस-पास तो नहीं है। “आस-पास कोई नहीं है,” हुरेओ दास मुस्कुराते हुए बोला। “डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, भाई। क्या आज रात मुझसे कुछ कहना है?” “मुझे खेद है कि मैंने आपके काम में बाधा डाली, क्योंकि उन्होंने मुझे बताया था कि आप पुराने काम पर हैं; इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।” “वे गलती कर रहे थे, और मैंने उन्हें कुछ देर के लिए सुधार दिया, भाई; लेकिन उन लड़कों पर नज़र रखने की ज़रूरत है, और जैसा कि आप जानते हैं, मैं अपना हाथ रखता हूँ। मैं यह नहीं कहूँगा कि आपका स्वागत है, राम दास; फिर भी, क्यों नहीं? अगर आपका दिल मेरे जैसा है, तो क्यों नहीं? मेरे मन में कोई द्वेष नहीं है, और जो हुआ है उसे सुधारा जा सकता है।” “हाँ, भाई, अगर आप मेरी बात सुनेंगे। हालाँकि मैं एक अदालत में अपना मामला हार गया हूँ, लेकिन दूसरी अदालतें हैं, और अंत में अंग्रेज न्यायप्रिय हैं।” सुनार का घर - 19 “हाँ, वे न्यायसंगत हैं; और मैं अपना मामला कलकत्ता तक भी ले जाऊँगा,” उत्तर आया। “तुमने मुकदमा जीत लिया है, और तुम्हें पूरा भरोसा है; अगर तुम हार भी गए तो क्या होगा?” “तो मुझे तुम्हारी माँग पूरी चुकानी पड़ेगी; और मैं बिना किसी शिकायत के एक-एक पैसा चुका दूँगा।” “अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम्हारे घर की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी,” रामदास ने व्यंग्य करते हुए उत्तर दिया। “यह मेरी देखरेख में है, भाई, और इस पर आज तक कभी शक नहीं हुआ। तुम्हें तो इस पर शक करने का ज़रा भी कारण नहीं है।” “बिल्कुल भी नहीं? तो फिर ये झगड़े क्यों, और मैं आज रात क्यों आया हूँ?” “मुझे नहीं पता; तुम्हारे विचार तुम्हारे अपने हैं, मेरे नहीं। मैंने तुम्हें नहीं बुलाया था, और मैं चाहता था कि तुम दूर ही रहते; या, अगर तुम्हें कोई प्रस्ताव रखना हो, तो अपने प्रतिनिधि को भेज देते। अब, खुलकर

बोलो, और मैं भी खुलकर जवाब दूँगा।" "इन सबको भेज दो, फिर मैं बात करूंगा।" "सब! कौन?" "मजदूरों को। मैं नहीं चाहता कि हमारी बातचीत का एक शब्द भी कोई सुन ले। हो सकता है यह हमारे बीच आखिरी बातचीत हो।" "उम्मीद नहीं, भाई; लेकिन जैसा आप चाहें। उन्होंने आज कड़ी मेहनत की है, और वे जा सकते हैं। आपके जाने के बाद मैं बाकी काम संभाल लूंगा।" और वह उठकर बाहरी बरामदे में गया और मजदूरों को विदा कर दिया, अपने काम के लिए एक चूल्हा जलता छोड़ दिया। लौटकर वह पहले की तरह बैठ गया। उसके जाने के दौरान रामदास गहराई से सोच रहा था। हो सकता है कि उसके मन में दया की एक किरण जागी हो, क्योंकि उसने जो समय तय किया था वह नजदीक आ रहा था, और उसे अपने चचेरे भाई को बचाने के लिए प्रेरित किया हो; लेकिन ऐसा शायद ही हो, जब तक कि उसके विचार का एक और बिंदु इसकी पुष्टि न कर दे। वह अपने चचेरे भाई को समझौते का एक और स्पष्ट प्रस्ताव देगा, और उसके सामने वे सभी तर्क रखेगा जिनके आधार पर उसके चालाक वकील ने उससे इतना पैसा ऐंठ लिया था। अगर यह सफल रहा, तो डकैती को टाला जा सकता है। लगभग दो मील दूर एक गाँव से कुछ पुलिसकर्मियों को बुलाया जा सकता था और उन्हें घर में तैनात किया जा सकता था। बाहरी द्वार को ताला लगाकर बंद किया जा सकता था। हुरे दास को उसके खतरे के बारे में बताया जा सकता था और वह उसे अपना रक्षक मानकर धन्यवाद दे सकता था। तभी उसके मन में अजरदील पांडे के प्रतिशोध, पकड़े जाने और पुलिस द्वारा सूचना मिलने पर निश्चित रूप से दोषी ठहराए जाने का भय उभरा और वह बैठे-बैठे कांप उठा, मानो किसी ठंडी हवा ने उसे छू लिया हो। उसके विचार उलझन में इधर-उधर भटक रहे थे, उन्हें कोई शांति नहीं मिल रही थी: लेकिन जैसे ही उसका चचेरा भाई फिर से बैठ गया और उसकी आँखों में आँखें डालकर उसे आगे बढ़ने के लिए कहा, .

20 सीता. ओई ई ई ——— तभी अंदर के कमरे से एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई और उस आदमी के सबसे बुरे भाव भड़क उठे। "यह एक कमज़ोर मूर्ख था," वह बुदबुदाया; "एक पल के लिए कमज़ोर मूर्ख; चलो इस मामले को वैसे ही चलने दो जैसे भयानक माँ चाहती है।" "मैंने तुम्हें पहले ही बताया था, भाई,," उसने हुरी दास के नीचे उतरते ही कहा, "कि मैं इस मुकदमे को अंत तक लड़ूंगा। तुमने मेरे साथ अन्याय किया है, और अंग्रेज़ न्यायाधीश, जिसे हमारे कानून की कोई जानकारी नहीं है, ने तुम्हारी मदद की है। नहीं, धैर्य रखो और सब सुनो;" क्योंकि उसके चचेरे भाई के

हाव-भाव और अधूरी बातें स्पष्ट थीं। “मेरे वकील ने कलकत्ता के एक प्रतिष्ठित सलाहकार से परामर्श किया है, जिन्होंने इस मामले को अपने से भी अधिक बुद्धिमान लोगों के सामने रखा है, और वे सभी इस बात पर सहमत हैं कि अपील पर नूरपुर न्यायालय के फैसले को पलटना होगा। ये रहे उनके पत्र, अगर तुम उन्हें पढ़ोगे।” “मैं तुम्हें एक बार फिर साफ-साफ बता देता हूँ, राम दास, मैं उनसे या तुमसे खुले दरबार के अलावा किसी और तरह से कोई वास्ता नहीं रखूँगा; और तुम अपने शब्द व्यर्थ कर रहे हो,” हुरे दास ने अधीरता से कहा। “नहीं, भाई, मेरी बात सुनो। मेरे वकील की सलाह के अलावा, मैं तुम्हें एक और प्रस्ताव देता हूँ, और वह यह है। मुकदमे का खर्च हम आपस में सौहार्दपूर्वक बाँट लें; और क्या तुम मुझे विवादित जमीनें, जो तुम्हारे पिता ने आम संग्रह से खरीदी थीं, और गहने वगैरह सौंप दोगे?” “और अगर मैंने ऐसा किया, भाई,” हुरे दास ने घमंड से बीच में ही रोकते हुए कहा, “तो क्या मैं खुद को धोखेबाज साबित नहीं कर दूँगा? क्या मैं उस मामले को दबाने के लिए पूरे देश में हंसी का पात्र नहीं बन जाऊँगा जिसमें मैं सही साबित हुआ हूँ? कोई और कायर ऐसा कर सकता है; लेकिन मैं, भले ही सिर्फ एक सुनार हूँ, कायर नहीं हूँ; और मेरे पिता की स्मृति पर उनके बेटे की वजह से कोई कलंक नहीं लगेगा!” “मैंने समझौता तैयार कर लिया है, अगर आप इस पर हस्ताक्षर कर दें तो मैं ले आऊंगा,’’ दूसरे ने ज़िद की। “सौहार्दपूर्ण समझौते में कोई बदनामी नहीं होगी, और किसी को इसके बारे में पता चलने की ज़रूरत भी नहीं है, क्योंकि यह मामला सिर्फ़ आपके और मेरे बीच का है। इसे पढ़िए; आप देखेंगे कि मैं आगे कोई दावा नहीं कर रहा हूँ, और हार की शर्म, अगर कोई है, तो वह मेरी ही है; बाकी का मामला हम खुद सुलझा लेंगे। देखिए, दस्तावेज़ मुहरबंद कागज़ पर है।” “भाई, मैंने तो इसे ऐसे ही पढ़ा है,” हुरे दास ने क्रोध से कहा, “ऐसे ही;” और उसने कागज को दो टुकड़ों में फाड़ दिया। राम दास ने उन्हें हाथ में पकड़े हुए उनसे छीनने की कोशिश की, लेकिन उसकी ताकत अपने चचेरे भाई के सामने एक बच्चे जैसी थी। उसके चचेरे भाई ने उसे एक हाथ से कसकर पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से उसे पीछे धकेलते हुए कागज में आग लगा दी। राम दास ने क्रूरता से कहा, “तो हमारी बिरादरी भी जलकर राख हो जाए; हुरे दास, यह काम तुझे शोभा ही दिया।”

सुनार का घर। 21 “तेरी ज़बान बहुत गंदी है, राम दास, और सावधान रहना कि तू इसे कैसे इस्तेमाल करता है,” हुरी दास ने अपने चचेरे भाई को छोड़ते हुए कहा। “मैं

तुम्हारी बदतमीज़ी बर्दाश्त करने के मूड में नहीं हूँ।" "मैं भी नहीं," दूसरे ने जवाब दिया; "जैसा तू अभी कर रहा है, हुरी दास, वैसा ही तेरा और तेरे घर का अंजाम होगा। मैंने कह दिया," और वह जल्दी से चला गया। "ओह, पतिदेव," हुरी दास के पास से एक मीठी, धीमी आवाज़ आई, जब वह अभी भी अपनी जानी-पहचानी जगह पर उदास बैठा था, "तुमने उस भयानक आदमी को क्यों उकसाया? वह तुमसे क्या चाहता था? उसके आखिरी शब्द—मैंने उन्हें दरवाजे से गुजरते हुए सुना—धमकी जैसे लग रहे थे। उसका क्या मतलब हो सकता है?" "मैंने भी यही सोचा था, अपनी जान की कसम," उसने जवाब दिया; "और मैं यह भी सोच रहा था कि उनका क्या मतलब हो सकता है, तभी तुम्हारी मीठी आवाज़ ने उसके घिनौने शब्दों को मेरे विचारों से सुखद रूप से निकाल दिया। अगर वह धमकी देना चाहता है तो दे दे; मैं उससे या उसके मुकदमे से नहीं डरती, और वह इससे ज़्यादा क्या कर सकता है? उसका आखिरी दांव काफी तर्कसंगत था; लेकिन मैं उसे वो नहीं दे सकती जो हमारे बेटे सीता का हक है। नहीं! न्याय के न्यायालय में निष्पक्ष लड़ाई होती है, और अगर वह चाहे तो इसे जारी रख सकता है। मैंने वह कागज़ जला दिया जो वह मुझे हस्ताक्षर करने के लिए लाया था, और वह नाराज़ हो गया, बस इतना ही। "नहीं, लेकिन मैं उससे डरती हूँ, पतिदेव; क्या द्वार बंद हैं?" "मुझे कभी-कभी लगता है कि तुम थोड़ी नासमझ हो, सीता, अपनी सारी विद्या के बावजूद; एक भोली नासमझ," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "जाने दो; उसमें कोई बुराई नहीं है; चचेरे भाई-बहन हमेशा झगड़ते हैं, तुम्हें पता है, और फिर सुलह कर लेते हैं; और मैं तो किसी से कोई द्वेष नहीं रखती। जब उसके दिमाग से ये सारे मुकदमे निकल जाएंगे, तो मैं उसे फिर से खड़ा कर दूंगी; उसे हाल ही में नुकसान हुआ है, और इससे उसका स्वभाव कड़वा हो गया है। अरे, हम तो बचपन से ही झगड़ते रहे हैं, पत्नी; और फिर भी हम यहाँ बूढ़े हो रहे हैं।" "मैं देवताओं से प्रार्थना करती हूँ कि ऐसा ही हो," उसने कहा; "और मैं मूर्ख हो सकती हूँ, पतिदेव, लेकिन मुझे उससे डर लगता है, और सबसे ज़्यादा आज रात से;" और वह स्पष्ट रूप से काँप उठी। "जाओ अपने बिस्तर पर, पत्नी," उसने हँसते हुए उत्तर दिया, "और इन सभी कल्पनाओं को भुलाकर सो जाओ। मैं थोड़ी देर काम करने जाता हूँ, ताकि उसके बुरे शब्दों की आवाज़ मेरे कानों से और उसका दुष्ट चेहरा मेरी आँखों से ओझल हो जाए। मैं देर नहीं करूँगा, और काम खत्म होने पर यह सुनिश्चित करूँगा कि द्वार बंद हों। बच्चे के पास जाओ; वह तुम्हारे लिए रो रहा है, और मैं कल उसके आँगन का द्वार

बनवा दूँगा; क्या यह मेरी सीता को प्रसन्न करेगा?" सीता चली गई; लेकिन उसके पति के शब्दों ने उसे प्रसन्न नहीं किया था, और उसके विचार पूरे दिन भारी रहे थे। जब से वह अजनबी ब्राह्मण पाठ करने आया था, और बेचैन जिज्ञासा से हर जगह झाँकता हुआ प्रतीत होता था, उसका मन संदेह से भर गया था—डाकुओं के वेश बदलने की कहानियों से, और

22 सीता। देश में भयानक अपराध हो रहे थे। फिर भी उसे एक ब्राह्मण पर शक क्यों होता—एक पवित्र व्यक्ति पर जो इतना महान पाठकार था? वह जानती थी कि उसने जो कुछ भी इतने जोश से सुनाया था, वह उसे कंठस्थ था। "सावित्री" उसकी सबसे प्रिय कविता थी, और उसने उसे तब तक सुनाया था जब तक कई लोग रो नहीं पड़े, क्योंकि सभी पड़ोसी सुनने आए थे। फिर भी उसका मन शांत नहीं था। उसने कुछ देर तक अपने पति को निहाई पर चांदी की छड़ें पीटते हुए सुना, फिर वह बाहर गया और दरवाज़े बंद कर दिए, और उसके पास आया। "सीता, मेरा बिस्तर सामने वाले बरामदे में बिछा दो," उसने कहा, "बहुत गर्मी है।" और जब वह ऐसा कर रही थी, उसने उसे प्रार्थना कक्ष में शाम की प्रार्थना करते हुए सुना। फिर वह अपने व्यायाम कक्ष में गया, और कुछ मिनटों तक अपने क्लबों का अभ्यास किया। वह अपने बच्चे के साथ थी, और उसने उसे अपने बिस्तर पर लेटते हुए सुना। तब लगभग दस बज रहे होंगे, और उसे नींद नहीं आ रही थी। बाहर, राम दास व्यस्त था। जब वह घर से बाहर निकला, तो रात पूरी तरह से अंधेरी थी, और जैसे ही उसने अपने दरवाजे पर दस्तक दी, उसने देखा कि दो जासूस उसके पीछे खड़े थे, जहाँ उसने उन्हें अपने आने का इंतज़ार करने के लिए कहा था। फिर उसने दरवाजा बंद कर दिया और अंदर से ताला लगा दिया, और तीनों आदमी चुपचाप बैठ गए। थोड़ी देर बाद उन्होंने हुरे दास को बाहरी द्वार पर ताला लगाते सुना; जिसके बाद उसके कदम निजी दरवाजे की ओर बढ़े, जिसे उसने जोर से धक्का दिया और हिलाया, लेकिन उसे बंद पाकर वह चला गया, और भीतरी आंगन में लौट आया, जिसे उसने अपने पीछे बंद कर लिया। थोड़ी देर बाद राम दास उठा, और आदमियों को फुसफुसाकर अपने पीछे आने का इशारा किया, धीरे से ताला हटाया, दरवाजा खोला, और वे अंदर चले गए। प्रवेश द्वार के पास स्थित बड़ा पहरेदार कक्ष, जो आंगन की ओर खुलता था, कपास और कुसुम की गांठों से भरा हुआ था, और इनके पीछे वे दरवाजे के पास छिप गए और इंतज़ार करने लगे। दो-तीन बार ड्यूटी पर तैनात गांव के पहरेदार द्वार पर आए, और उसे बंद पाकर चले गए। तो वे

संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे, जासूस अनुभवी लुटेरों की उदासीनता और असाधारण रूप से समृद्ध लूट की भयावह उम्मीदों के साथ; दूसरा हृदय की सुस्त सुन्नता के साथ, हालांकि वह भयानक रूप से धड़क रहा था, और जीवन भर के प्रतिशोध की निष्क्रिय प्रत्याशा के साथ। “देवी की इच्छा जो होगी वही होगी। जय काली!” बस यही वह सोच सकता था, और वह यंत्रवत रूप से इन शब्दों को स्वयं से दोहराता रहा, हालांकि उसके होठों से कोई ध्वनि नहीं निकली।

अध्याय IV. बैंकर का घर, गोकुलपुर गाँव से लगभग चार मील (शायद इतना भी नहीं) दूर शाह गंज नामक एक कस्बा बसा था, जो काफी बड़ा और प्रांत के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में से एक था। लगभग तीन शताब्दी पूर्व, एक मुस्लिम राजा—चाहे वह दिल्ली का सम्राट हो, या खानदेश या मालवा का राजा, किसी को याद नहीं था और नाम भी भुला दिया गया था—अपनी सेना के साथ देश से गुजरते हुए उस स्थान के पास डेरा डाला था, जहाँ चारा और अच्छा पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था, और वहाँ अनाज और आपूर्ति का एक गोदाम स्थापित किया था, जिसे बाद में “शाह गंज” यानी “राजा का बाज़ार” कहा जाने लगा और वर्षों के दौरान यह एक समृद्ध शहर बन गया। इसमें एक चौक या बाज़ार था, जो धनी बैंकरों और व्यापारियों के घरों से घिरा हुआ था; वहाँ साल भर हर शुक्रवार को लगने वाले साप्ताहिक बाज़ारों में आसपास के इलाकों की सारी उपज मिलती थी—मवेशी और भेड़ें, अनाज, तरह-तरह के मसाले, मौसम के अनुसार कपास और कुसुम; जंगलों से मोम, शहद और गोंद, जो वहाँ रहने वाली जंगली जनजातियाँ लाती थीं; हर तरह के कपड़े, देसी और अंग्रेज़ी; कुछ अंग्रेज़ी हार्डवेयर, और आसपास के कस्बों और गाँवों के कारीगरों द्वारा बनाए गए तांबे और पीतल के बर्तन। मिठाई और खिलौने बेचने वालों, जूते और चप्पल बेचने वालों, भुने हुए चावल और दाल बेचने वालों, कुछ छोटे सुनारों और मुद्रा विनिमय करने वालों, मोचियों, कांच बेचने वालों और सूती धागे के गुच्छे लिए महिलाओं के बड़े-बड़े स्टॉल मिलकर बिक्री के लिए वस्तुओं का एक विविध लेकिन दिलचस्प संग्रह बनाते थे, जबकि फूलों, फलों और सब्जियों की मनमोहक खुशबू इन सबमें घुलमिल जाती थी। दृश्य भी चहल-पहल भरा रहता था; क्योंकि वहाँ लोगों की भीड़ लगी रहती थी—शायद कुछ दर्शक भी होते थे; लेकिन अधिकतर खरीदार और विक्रेता अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने होते थे। साफ़, चमकीले या सफ़ेद रंग की पगड़ी और सफ़ेद सूती कुर्ते पहने पुरुष; साड़ी या चटख रंगों के कपड़े, जैसे सफ़ेद, लाल, नीला, नारंगी या

हरा, पहने महिलाएं; कई महिलाएं अपने बच्चों को गोद में लिए एक स्टॉल से दूसरे स्टॉल तक जाती थीं या अपने सामान के पीछे गंभीरता से बैठी रहती थीं। खिलौने बेचने वालों के स्टॉल शायद बाज़ार के सबसे आकर्षक स्थान थे, और कई हट्टे-कट्टे लड़के उस रात गर्व से अपनी कमर में लकड़ी की तलवार और बांह पर ढाल लेकर घर लौटे; वहीं लड़कियों के लिए गुड़ियों, मिट्टी से बने बाघों, गायों और बकरियों की असीमित संख्या में मूर्तियां थीं, जिन पर रंग तो रंगे थे, लेकिन दिखने में भद्दे थे। 24 सीता रूप; और सभी के लिए, विभिन्न देवी-देवताओं की मिट्टी की मूर्तियाँ, लाल और पीले रंगों से इतनी सजी हुई थीं जैसे गुड़िया या गुड़िया। यहाँ-वहाँ हिंदू लोकगीत गाने वालों के समूह थे, विचित्र वस्त्र पहने हुए, विष्णु, या सीता, या कृष्ण की स्तुति गाते हुए, जो उनके प्रिय प्रतीत होते थे; मुसलमान भिखारी, जो ईश्वर और पैगंबर की स्तुति में दोहे गाते थे, और ऐसा प्रतीत होता था कि वे सभी वर्गों के अपने हिंदू साथी भिखारियों के बराबर ही भीख मांगते थे; एक शांत कोने में, कमर तक नंगे, लंबे घने बाल कंधों पर बिखरे हुए, एक हट्टे-कट्टे ब्राह्मण अपने सामने बैठे श्रोताओं को रामायण का एक प्रसंग सुना रहे थे, और समय-समय पर श्रोताओं द्वारा उनके सामने रखी चादर पर फेंके जा रहे तांबे के सिक्के, कौड़ियाँ और कभी-कभार एक रुपया उठा रहे थे। उनके साथ केवल दो ही व्यक्ति थे, जिनमें से एक अपने गुरु की प्रशंसा कर रहा था; दूसरा, एक विशालकाय, उदास व्यक्ति, जो तलवार लिए हुए एक सैनिक प्रतीत होता था, मुख्य रूप से अपनी मूंछें मरोड़ने और अपने आस-पास के लोगों को घूरने में व्यस्त था। वह ब्राह्मण अजरील पांडे था, जो अब गीले चंदन के लेप से बनी, सूखकर फीकी सफेद हो चुकी, जाति के सबसे जटिल चिह्नों से सुशोभित था। उसके माथे पर विष्णु का चौड़ा त्रिशूल बना हुआ था, जो काली के उपासक के सिंदूर से भरा हुआ था; उसकी चौड़ी छाती और मांसल भुजाओं पर उसी पदार्थ की अन्य धारियाँ और चिह्न थे, जो उसके रूप की विशालता और शक्ति में वृद्धि हुई; और, कुछ क्षण के लिए मौन विश्राम करते हुए, उसने अपने शरीर को पूरी ऊँचाई तक उठाया, और मिट्टी के ढेर पर खड़े होकर, लोगों से ऊपर उठ गया, और आकर्षण और श्रद्धा दोनों का केंद्र बन गया। उसके साथ उपस्थित दो पुरुषों में से बुलदेव अधिक सक्रिय था; दूसरा, पवित्र कुल्हाड़ी का वाहक और रक्षक, जो उपयोग के समय को छोड़कर, शायद ही कभी उसके पास से दूर होती थी। वह उसकी कमर के पीछे, उसकी पीठ के खोखले भाग में, अपने आवरणों के साथ रखी रहती थी; और उसने अपने हाथों में उसका मूठ पकड़ रखा था,

जिसे तुरंत उसमें फिट किया जा सकता था, लेकिन जो अब एक मजबूत छड़ी से अधिक कुछ नहीं लग रहा था। “आओ, मेरे मित्रों,” बुलदेव ने अपनी तीखी आवाज में जोर से चिल्लाया, “आओ और मेरे गुरु का स्वागत करो। कृष्ण प्रेम अगला पाठ होगा। आओ सभी, पुरुष और महिलाएं, और यह आनंदमय कहानी सुनो। आओ और विद्वान शास्त्री को सुनो, जो बोनारस से आए हैं और रमेशवर के पास जाओ और अपनी दानशीलता से उनकी मदद करो। पवित्र ब्राह्मण को दान दो! दान दो! दान दो!” “अपना नकाब उतारो,” अज़रील ने धीमी आवाज़ में कहा। “क्या तुमने घर की रखवाली की?” “मैंने की, स्वामी, जब आप शास्त्री के काम में व्यस्त थे।” बैंकर का घर। 25 लोगों ने इस पर ध्यान दिया। मैंने हुरे दास को अपने टट्टू पर सवार होते देखा, और फाटक पर एक पालकी ले जाई जा रही थी। वे घर चले गए हैं।” “अच्छा!” नेता ने उत्तर दिया; “और उनके साथ कोई सेवक नहीं था?” “बैंकर के दो गार्डों के अलावा, जिन्हें मैं जानता हूँ, और वे सूर्यास्त तक वापस आ जाएँगे।” “तो फिर यह पूरा हो गया, हे काली!” उसने मन ही मन कहा, “और बाकी काम हो जाएगा। क्या तुम्हें आस-पास कोई आदमी दिखाई दे रहा है?” उसने ज़ोर से कहा। “वे हर जगह हैं, स्वामी, और कोई भी पेड़ के पास तुम्हें नहीं छोड़ेगा। मैं उन्हें इकट्ठा करूँगा और ले आऊँगा;” और ऐसा कहते हुए, बुलदेव ने अपना नारा फिर से शुरू किया, “आओ और शास्त्री जी की प्रार्थना सुनो, आओ और दान करो! जो ब्राह्मण को दान देता है वह नरक से बच जाता है। दान करो! दान करो!” और इसी तरह, जब तक पाठ फिर से शुरू नहीं हुआ, और अपने नेता को एक निजी संकेत देकर, बुलदेव चला गया। जैसे-जैसे सूरज ढलता गया, बाज़ार धीरे-धीरे कम होने लगा, दुकानें और ठेले हटाए जाने लगे और बिना बिका सामान पैक किया जाने लगा। परिवार और नागरिक अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े, या अपनी छोटी-छोटी गाड़ियों पर सवार होकर चले गए; और सूरज डूबने से पहले, उस भीड़-भाड़ वाली भीड़ में से कुछ ही लोग बचे थे। जो बचे थे, वे भी जाने की तैयारी कर रहे थे; लेकिन चूंकि वे ज्यादातर शहर के लोग थे, इसलिए उन्हें कोई खास जल्दी नहीं थी। जैसे ही घरों और दुकानों में पहली बत्तियाँ जलीं, जगह खाली हो गई; और घास, जलाऊ लकड़ी और सब्जियों के कुछ दैनिक विक्रेताओं के अलावा, अगले शुक्रवार तक जगह खाली ही रहेगी। हालांकि इस बाज़ार में कई मजबूत घर थे, लेकिन सुनार और बैंकर नरेंद्र का घर सबसे प्रमुख था। इसका एक हिस्सा, पीछे की ओर, दो मंजिला था, जो लाल ईंट और पत्थर से खूबसूरती से

बना था और काफी ऊंचा था। यह रहने का स्थान था; और ऊपरी मंजिल की कुछ संकरी खिड़कियों को छोड़कर, यह बाहर से बंद था। अंदर की ओर, कमरे या गैलरी एक आंगन की ओर खुलती थीं, और भीषण गर्मी में आंगन को ठंडा रखने के लिए एक मजबूत कपड़े का शामियाना अगल-बगल फैलाया जा सकता था। सामने एक और बड़ा आंगन था, जो एक बरामदे से घिरा हुआ था, जो नक्काशीदार सागौन की लकड़ी के खंभों पर टिका हुआ था, जो झालर और मेहराबों पर की गई नक्काशी के साथ-साथ उच्च स्तर की कारीगरी को दर्शाता था। इन बाहरी कमरों के मध्य भाग में बाकी हिस्सों की तुलना में एक गहरा हिस्सा था, जो एक तहखाने पर बना था जिस पर कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं; और इसके ऊपर, ऊपरी मंजिल पर, एक विशाल कमरा था जिसमें लकड़ी की एक बड़ी नक्काशीदार खिड़की थी, जो दीवार से बाहर निकली हुई थी, जिससे परिवार की महिला सदस्य न केवल सभी को देख सकती थीं। 26 सीता। यह कमरा बाज़ार से होकर गुज़रता था, लेकिन यहाँ से कई मील तक फैले ग्रामीण इलाके का शानदार नज़ारा दिखता था। हालाँकि, अब इस कमरे का इस्तेमाल बहुत कम होता था। यह कमरा हरी दास की पत्नी सीता का पसंदीदा ठिकाना हुआ करता था, जब तक कि वह अपने पति के घर नहीं चली गई। वह दिन का ज़्यादातर समय अपनी बड़ी चाची एला के साथ बालकनी में बैठकर अपने प्यारे बेटे के साथ खेलती रहती थी, जिस पर दोनों को बहुत गर्व था। बूढ़ा बैंकर वहाँ बहुत कम आता था। वह हमेशा निचले हॉल के शीर्ष पर अपने सामान्य कार्यस्थल पर बैठता था, एक अच्छी तरह से भरे गद्दे पर, जिसके पीछे एक मोटा तकिया होता था, दोनों बेदाग सफेद मलमल से ढके होते थे; और जैसे ही दीपक जलते थे, वह अपनी अभ्यस्त जगह पर होता था। सड़क की ओर, और उसमें खुलता हुआ, दोहरे दरवाजों वाला एक बड़ा प्रवेश द्वार था, जिनमें से एक में एक छोटा सा विकेट था; और द्वार के ऊपर, एक और छोटा कमरा था जिसमें एक छोटी खिड़की थी, लेकिन वह हॉल के ऊपर वाले कमरे जितना बड़ा या सुंदर नहीं था। मेहराब के दोनों ओर पहरेदारों के कमरे थे; और बाहर, चौक में, द्वार के दोनों ओर सता या ढके हुए शेड थे, जहाँ आगंतुकों के परिचारक विश्राम कर सकते थे। घर के अंदर और बाहर का हिस्सा अत्यंत स्वच्छ और पवित्र था, और उसमें कोई सजावट नहीं थी, सिवाय बाहरी द्वार के मेहराब पर चमकीले पीले अक्षरों में खुदे संस्कृत पाठ "श्री गोविंद प्रुषुन" के, और स्वामी के आसन के ऊपर दीवार पर सुंदर रंगों और पैटर्न में उकेरे गए एक सुव्यवस्थित आले के।

घर के मालिक, नरेंद्र, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पेशे से सुनार और एक प्रतिष्ठित बैंकर थे। अब उनकी उम्र साठ वर्ष से अधिक थी, लेकिन वे अब भी स्वस्थ और ऊर्जावान थे, और उम्र का उन पर कोई प्रभाव नहीं था। उनका सुगठित शरीर उतना ही सीधा था, उनकी आँखें उतनी ही स्पष्ट और कोमल थीं जितनी बीस—हाँ, तीस—वर्ष पहले थीं, और उनकी अपार समृद्धि ने उनके चेहरे पर चिंता या धन के लालच का कोई निशान नहीं छोड़ा था। कोई यह नहीं कह सकता था कि वे सुंदर थे; लेकिन पहली नज़र में ही, उनके चेहरे की दयालु, हंसमुख और स्वाभाविक गरिमा को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था, और उनके स्वभाव के बारे में जानने से उनके चरित्र और उसकी दृढ़ता के प्रति प्रशंसा और भी बढ़ जाती थी। सद्गुण। यदि उन्हें कोई दुःख था, तो वह यह था कि उनके पास कोई पुत्र नहीं था जो उनकी संपत्ति और उनके द्वारा स्थापित व्यवसाय का उत्तराधिकारी बन सके, जो अब भारत के कई हिस्सों में फैला हुआ था; उनके दो पुत्र युवावस्था में ही मर गए थे, और उनकी पहली पत्नी भी उनके बाद लंबे समय तक जीवित नहीं रहीं। उन्होंने पुनर्विवाह किया था, लेकिन दूसरी पत्नी भी मर गईं; और उनके पास केवल उनके सबसे बड़े पुत्र की पुत्री श्वेता ही शेष रह गईं, जिनकी माता उनके पुत्र की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद तक जीवित रहीं, लेकिन उनकी भी मृत्यु हो गई। उनके साथ "आंटी एला" रहती थीं, जैसा कि उन्हें आमतौर पर सभी लोग - यहां तक कि उनके भाई भी - इसी नाम से पुकारते थे - एक विधवा, जिनके बारे में हमें धीरे-धीरे पता चलेगा; और

बैंकर का घर। सीता, जो घर की लाडली और सबकी आँखों-दिलों की रोशनी थी, उन्हीं के बीच पली-बढ़ी। वह दिन सबके लिए बहुत दुखद था जब सीता को उन्हें छोड़कर अपने पति के पास जाना पड़ा। आंटी एला ने बड़ी विनती की कि हरी दास, जिनसे उन्हें बहुत स्नेह था, गोकुलपुर छोड़कर उनके साथ रहने आ जाएँ। क्या वे अपनी मर्जी से वहाँ नहीं जा सकते थे—वह जगह इतनी पास थी—और अपना काम नहीं कर सकते थे? सीता ने भी अपनी पूरी कोशिश की; लेकिन उसके पति अडिग रहे और उन्होंने सीता से कहा कि उसे उन सभी की माँ बनना है जो उस पर निर्भर हैं, और अपना कर्तव्य निभाना है, और इस तरह मामला टल गया। सीता को अक्सर शाहगंज जाने की अनुमति मिलती थी; और उसके बच्चे के जन्म से पहले आंटी एला उसके साथ रहने और उसकी इस कठिन परीक्षा को सुरक्षित रूप से पार कराने के लिए आई थीं। फिर, जब बच्चे को शाहगंज ले जाया गया, तो वहाँ खूब खुशी मनाई गई। सभी

जाति के लोगों को दावत में आमंत्रित किया गया था; सीता की सभी सहेलियाँ उत्सव में शामिल हुईं और बच्चे के पालने पर स्तुति गीत गाए; और मुझे यह बताने में कोई शर्म नहीं है कि विभिन्न घरों की सभी गुड़ियाएँ रेशमी वस्त्रों से सजी-धजी दावत में लाई गई थीं, और उनमें से कुछ असली सोने के आभूषणों और असली मोतियों से सजी थीं। शायद कुछ गुड़ियाएँ इतनी संपन्न नहीं थीं, और इससे उनके युवा स्वामियों के मन में कुछ ईर्ष्या उत्पन्न हुई; लेकिन मुझे यह कहना ही होगा कि सभी ने दावत का आनंद लिया, सभी ने बच्चे को दुलार कर उसकी प्रशंसा की और बहुत प्रसन्न होकर घर लौट गईं। अब भी, पत्तों और फूलों की मालाएँ, जो बाहरी द्वार पर, आँगन के खंभों के चारों ओर और दादाजी के आसन पर लटकी हुई थीं, अभी भी वहीं हैं, हालाँकि वे बहुत पहले मुरझा चुकी थीं। सीता उस दिन वहाँ थीं और खिड़की के पास अपने पुराने आसन पर बैठी थीं। वह और आंटी एला बाज़ार का जायज़ा ले रही थीं, और उन्होंने अपने कुड़कुड़ाते बच्चे को उठाकर बाज़ार दिखाया और दिल की खुशी से उससे कहा: “लालू, एक दिन तू यहाँ बैठेगा और मालिक बनेगा। ओह! भगवान करे कि मरने से पहले मैं यह देख सकूँ।” नरेंद्र का दिन व्यस्त रहा था। उसने बहुत कुछ खरीदा और बेचा; उसने उन किसानों से भुगतान प्राप्त किया था जिन्हें उसने मवेशी, बीज या उपज के लिए अग्रिम दिया था, और उसने दूसरों को पैसा उधार दिया था। उसे मिर्ज़ापुर, बनारस, कलकत्ता, बंबई, नागपुर, उमरावती और अन्य दूर-दूर के स्थानों से पत्र मिले थे। उसे बड़ी रकम (लिल्लों में) और कुछ नकद में भी मिली थी, और दिन का काम खत्म होने से पहले सभी का हिसाब-किताब और पंजीकरण करना था। हालाँकि, दिन-प्रतिदिन की डायरी तैयार हो चुकी थी, और उसने अभी-अभी उस पर हस्ताक्षर किए थे; और कैशियर ने अपनी कलम कान के पीछे रखते हुए और अपने चश्मे को अपनी पगड़ी की तह में फंसाते हुए, उसे दैनिक हिसाब-किताब की पुस्तिका देने ही वाला था, जिस पर वह हस्ताक्षर करेगा।

28 सीता। जैसे ही बूढ़ा आदमी उठा, उसने अपनी उंगली से तराजू की ओर इशारा किया, जो काफी भारी था, और अपने मालिक के आकलन की प्रतीक्षा में बैठ गया। नरेंद्र ने जल्दी से हिसाब लगाया और पाया कि रकम सही है। उठकर खजाने के कमरे में जाकर, उसने एक-एक हजार रुपये के थैलों का वजन किया, तराजू को गिना और रात के लिए कमरा बंद कर दिया। तब तक लगभग आठ बज चुके थे। नीचे बरामदे में चांदी के आभूषणों में व्यस्त कुछ कारीगरों को काम पर लगाया गया और वे एक-एक

करके क्लर्कों के साथ चले गए। फिर नरेंद्र स्नान करने और शाम का भोजन करने गया और थोड़ी देर बाद लौटकर अपनी पुरानी कुर्सी पर बैठ गया। उसका दिन अपने मित्र पुजारी के साथ शतरंज खेले बिना पूरा नहीं होता था, जो उसका इंतजार कर रहा था। “नमस्कार, महाराज!” पुजारी को अपने तकिये के पास बैठे देखकर नरेंद्र ने ब्राह्मणों को दिए जाने वाले सामान्य अभिवादन के साथ कहा। “मैं आपको प्रणाम करता हूँ! क्या मैंने आपको बहुत देर कर दी?” “नहीं, मित्र,” दूसरे ने उत्तर दिया। “जब आप स्नान और भोजन करने गए थे, तब मैं अंदर आया था; लेकिन मैंने नौकरों को आपको परेशान न करने के लिए कहा था। और आपका दिन कैसा बीता? आशा है, अच्छा रहा होगा?” “बिल्कुल अच्छा,” व्यापारी ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, “जैसा आपने आज सुबह कहा था। मैंने हरी दास और उनकी पत्नी को देखा; मैंने उनके बच्चे को अपनी गोद में लिया और मैंने उस पर झुके हुए सबसे सुंदर, सबसे प्रसन्न चेहरे को मेरी ओर देखते हुए देखा, जैसा कि पहले कभी नहीं देखा गया था।” “वह इंद्र के स्वर्ग की अप्सरा जैसी लग रही हैं,” पुजारी ने उत्साहपूर्वक कहा; “उनसे सुंदर स्त्री कभी नहीं हुई: और उनकी सबसे अच्छी बात यह है कि वह अभी भी पढ़ती और अध्ययन करती हैं। उन्होंने मुझे कल गोकुलपुर आने और कालिदास के एक नाटक के एक अंश को समझने में उनकी मदद करने के लिए कहा है, जिसे वह समझ नहीं पा रही हैं। मुझे लगता है, वह समझ जाएंगी।” “अगर तुम जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा,” बैंकर ने कहा। “मैं देखना चाहता हूँ,” उसने थोड़ी देर रुककर कहा, “कि क्या हम दोनों चचेरे भाइयों के बीच का वह झगड़ा सुलझा सकते हैं, जो सुलझने के बजाय और बिगड़ता जा रहा है।” “मुझे लगा था कि मामला खत्म हो गया है,” पुजारी ने जवाब दिया। “हुरे दास ने मुझे बताया था कि वह मुकदमा जीत गया है।” “हाँ, मेरे दोस्त; लेकिन राम दास ने उसे अपील का नोटिस भेज दिया है, और सारा मामला फिर से शुरू हो जाएगा।” “तो वह मूर्ख है,” पुजारी ने कहा। “मैंने उसे चेतावनी दी थी कि उसके वकील की सलाह गलत है, लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। अरे, कानून में ऐसा नहीं हो सकता।” “खैर, मैं कानून की बातें नहीं सुनना चाहता, और मैं इस पूरे मामले से तंग आ चुका हूँ,” बैंकर ने कहा। “मैं बस इतना चाहता हूँ कि यह मामला खत्म हो जाए, और अगर राम दास अपना खर्चा उठाना चाहे तो मैं खुशी-खुशी उठा लूँगा।”

बैंकर का घर। 29 “मुझे लगता है कि वह इन्हें नहीं लेगा,” पुजारी ने कहा। “उसे

ज़मीनें, पद और गहने चाहिए, और वह कुछ भी खोने से संतुष्ट नहीं होगा।" "शायद हम हरी दास से कुछ कर सकते हैं?" बैंकर ने कुछ देर रुककर कहा। "वह भी उतना ही जिद्दी है जितना दूसरा," पुजारी ने उत्तर दिया, "और मुझे नहीं लगता कि वह ज़रा सा भी कुछ छोड़ेगा। लेकिन देखते हैं सितारे क्या कहते हैं। मामला शनि के प्रभाव में है"— और उसने अपनी जेब से पंचांग निकाला—" आज रात शनि चंद्रमा के साथ युति बना रहा है। देखते हैं: मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, फिर—" उसकी आवाज़ धीमी हो गई, जैसे ही उसने ऊपर देखा और अपनी उंगलियों पर गणना की। "मैं इसे ठीक से समझ नहीं पा रहा हूँ," उसने फिर कहा, " लेकिन गणना से यह निष्कर्ष निकलता है कि मामला तुरंत सुलझ जाएगा, बल्कि शायद आज रात ही।" मुझे परेशान करने वाला तत्व समझ नहीं आ रहा है, और जब तक मैं घर जाकर अपनी किताबें नहीं देख लेता, तब तक मैं नहीं बता सकता कि यह क्या हो सकता है। "मुझे लगता है," बूढ़े ने उत्तर दिया। "आज जब उसने मुझसे इस मामले पर बात की, तो मैंने हर्स दास को संयमी समझा, और वास्तव में वह तर्कसंगत प्रतीत हुआ; शायद उसने राम दास को बुलवाया हो, और उन्होंने किसी तरह यह सब तय कर लिया हो। वह बुरा आदमी नहीं है।" "मैं कहता हूँ कि वह बहुत बुरा आदमी है, मेरे पुराने मित्र," पुजारी ने जवाब दिया। "मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, और मुझे उसमें कभी कोई अच्छाई नहीं मिली। शायद उसका नया सलाहकार वह ब्राह्मण है, जो उस मंदिर में ठहरा हुआ है, और जो आज बाजार में पाठ कर रहा था। आह! वह एक शक्तिशाली ब्राह्मण है, नरेंद्र। वह काली के सबसे भयानक रहस्यों को जानता है; उसे सभी पवित्र ग्रंथ ज़ुबान पर हैं; उसे कहीं भी बस एक इशारा दे दो, और वह तीर की तरह दौड़ पड़ता है। लेकिन मैंने इतना दुष्ट चेहरा कभी नहीं देखा। छी! यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं; और कुछ ऐसे बदमाश सेवक भी थे। खैर, भगवान का शुक्र है, वह चला गया: जब मैं मंदिर से निकला तो वह अपने घोड़े पर सवार हो रहा था, और भगवान करे मैं उसका चेहरा फिर कभी न देखूँ! अरे, उसे तो पूरी मिताक्षरा कंठस्थ थी, और उसकी ज़बान शहद जैसी मीठी थी। "आह, हाँ," बूढ़े ने उदासीनता से उत्तर दिया। "श्वेता ने मुझे बताया कि वह उसके घर मिताक्षरी सुनाने आया था, और सावित्री की कहानी सुनाकर उसे रुला दिया था; लेकिन वह उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, क्योंकि वह बहुत बदसूरत था। लेकिन हम शतरंज पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और आज मैं भाग्यशाली रहा हूँ कि मुझे आज रात तुम्हें हराना ही है; और दूसरे भी आ सकते हैं।

लेकिन तुम थके हुए लग रहे हो; क्या तुम खेलना नहीं चाहते?" "मैं तुम्हारे साथ एक खेल खेलूँगा, और तुम मुझे ज़रूर हरा दोगे, क्योंकि मेरा दिल सितारों में है," पुजारी ने कहा। "काश मैंने उन्हें न देखा होता; लेकिन मैं सब पता लगा लूँगा। मुझे लगता है कि मैं

380 SLETA. seo कि ब्राह्मण ही अशांति फैलाने वाली शक्ति है; लेकिन मुझे इतने महान शास्त्री की बुराई नहीं करनी चाहिए, और हो सकता है मैं गलत हूँ।" और वे खेलने लगे। कई दोस्त धीरे-धीरे आते गए, और, जैसा कि रिवाज है, दोनों तरफ खड़े होकर बारी-बारी से सलाह देने लगे; लेकिन अंत में बैंकर ही विजयी हुआ, जैसा कि उसने कहा था। "क्या तुमने खबर सुनी?" पड़ोसी और बैंकर अंबा दास ने कहा। "आजकल चीजें अजीबोगरीब चल रही हैं।" "नहीं," नरेंद्र ने कहा, "मैं इतना व्यस्त था कि किसी खबर पर ध्यान नहीं दे पाया। क्या बात है? उम्मीद है कोई नया युद्ध नहीं है। अंग्रेजों के पास अब हराने के लिए कोई नहीं बचा है।" "नहीं, कोई युद्ध नहीं, दोस्त," दूसरे ने जवाब दिया; "लेकिन बनारस स्थित मेरी फर्म लिखती है, और मुझे आज रात एक्सप्रेस द्वारा पत्र मिला है, कि अवध के राजा को अंग्रेजों द्वारा पदच्युत किया जाना है, और देश पर कब्जा किया जाना है। वे रोजाना आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और लोगों के मन व्याकुल हैं।" "क्या सच में?" बैंकर ने उदास होकर कहा। "उन्होंने नागपुर और झांसी पर कब्जा कर लिया है; क्या इतना काफी नहीं है? वे सर्वशक्तिमान हैं, और मुख्य रूप से न्यायप्रिय भी हैं; लेकिन इतने लालची क्यों? क्या किसी को भी नहीं छोड़ा जाएगा?" "अब जब आपने इसका जिक्र किया है," पुजारी ने कहा, "ब्राह्मण ने मुझे बताया कि अवध में अंग्रेजों के हस्तक्षेप की अफवाहें हैं, और मुझसे पूछा कि क्या शहर में कोई खबर है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर वे देश पर कब्जा कर लेते हैं तो मुसीबत होगी, और मुझे लगता है कि वह उनकी ज्यादा तारीफ नहीं कर रहे थे।" "उनके मित्र भी हैं, और शत्रु भी," नरेंद्र ने कहा, "और अगर वे समझदार होते तो उनके मित्र शत्रुओं से अधिक होते। लेकिन वे अपना काम जानते हैं, और हम, जो उनकी सुरक्षा में रहते और फलते-फूलते हैं, उनके खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोल सकते।" "एक नया भूमि मूल्यांकन भी होने वाला है, और वे कहते हैं कि किराया बढ़ाया जाएगा," पास बैठे एक जमींदार ने कहा; "यह अत्याचार होगा।" "मैंने इसके बारे में कुछ नहीं सुना," पुजारी ने उत्तर दिया। "यह समझौता अभी कुछ समय तक चलेगा, और जब नया समझौता आएगा, जैसा कि आना ही है, तो हम इस बारे में

बात करेंगे। अब अलविदा दोस्तों; मुझे काम है, और मुझे जाना होगा।" "कल याद रखना," बैंकर ने कहा। "मैं याद रखूंगा," पुजारी ने जवाब दिया, "और मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।" मुझे नहीं लगता कि बाकी बातचीत का वर्णन करने की आवश्यकता है। विनिमय दरें, मुद्रा, उपज और एक भारतीय ग्रामीण कस्बे की गपशप में मेरे जैसे किसी व्यक्ति की शायद ही कोई रुचि हो। हालाँकि, मेहमान देर रात तक बैठे रहे, और जब वे चले गए, तो बूढ़ा बैंकर अपने बिस्तर पर गया और गहरी नींद सो गया, जबकि उसके घर के सभी लोग, द्वार पर तैनात पहरेदारों को छोड़कर, आराम कर रहे थे। अध्याय V. सौदे की पूर्ति, रात बीत गई। श्वेता ने अपने पति के कालीन और तकिए बाहरी बरामदे में सँवारने के बाद अपने बच्चे के पालने के पास लेटकर थोड़ी देर झपकी ली, फिर जाग गई और उसे नींद नहीं आई। वह घबराई हुई और बेचैन थी, और उसे इसका कोई कारण समझ नहीं आ रहा था। शाह गुंजे से उसकी मुलाकात सुखद रही थी, और उसके दादा और बुआ एला हमेशा की तरह स्नेहपूर्ण थे, जबकि बूढ़े ने बच्चे को अपनी गोद में लेकर आशीर्वाद दिया था। उसे डरने की क्या ज़रूरत थी? उसके चारों ओर सब कुछ सुरक्षित था; कमरे में दो नौकरानियाँ सो रही थीं, बच्चा भी शांति से सो रहा था, और दूर के कमरे में कुछ अन्य नौकरों के खर्राटे ही घर में सुनाई दे रहे थे। अब उसे अपने पति के चचेरे भाई से डर नहीं लग रहा था, क्योंकि क्या उनके बीच बार-बार झगड़े नहीं हुए थे, और जैसा कि उसके पति ने कहा था, वह इससे ज़्यादा क्या कर सकता था? उनके कोई और दुश्मन नहीं थे, और उसका पति सम्मानित और प्रिय था। हाँ, वह उसके दादाजी की तरह होंगे, और यह सोच उसे उस दूर के समय में ले गई जब उसका बेटा संघ का मुखिया होगा और उसके बुढ़ापे में उसकी देखभाल करेगा। एक दीपक जल रहा था, और उसने शेल्फ से अपनी एक किताब उतारी और सावित्री पढ़ना शुरू किया। कितनी भव्य कहानी थी, जिसमें युवा दुल्हन अपने पति की आत्मा का अनुसरण करती है, जिसे मृत्यु के देवता यम ने ले लिया था, और दो दिन पहले ब्राह्मण ने कितने कोमल भाव से यह पाठ सुनाया था! फिर भी वह कितना भयानक व्यक्ति था! ऐसा लग रहा था मानो वह अब उसके बिल्कुल पास ही हो; और वह कांप उठी और चारों ओर देखने लगी। उस व्यक्ति के विचार ने आगे पढ़ने का विचार ही त्याग दिया, क्योंकि उसके हृदय में एक उदास, भारीपन का भाव उसी के कारण उत्पन्न हुआ प्रतीत हो रहा था। क्या ऐसा हो सकता है कि उसने उस पर बुरी नज़र डाली हो? फिर वह उठी और भीतरी बरामदे में स्थित

वेदी पर गई जहाँ पवित्र अग्नि सुलग रही थी, उसने अग्नि को हल्का सा जलाया और कुछ पवित्र राख अपने माथे और छाती पर मली और प्रार्थना की कि बुरी आत्मा उससे दूर हो जाए। उसने अपने पति के हिलने-डुलने की आवाज़ सुनी और धीरे से दरवाजे पर जाकर उसे देखा। वह नींद में बस करवट बदल रहा था, और दीवार के आले और प्रार्थना कक्ष में रात की बत्तियाँ जल रही थीं। "मैं बच्चे को यहाँ लाकर उसके पास बैठती हूँ," उसने मन ही मन कहा, और अपने बेटे को लेकर लौटी और कालीन के किनारे पर बैठ गई। रात काफी बीत चुकी थी; उसका पति, हालांकि वह कभी-कभी नींद में बड़बड़ाता था, जैसा कि उसकी आदत थी...

32 सेल्टा। वह अच्छी तरह से आराम कर रहा था, और उसने अपने रूमाल से उसके चेहरे पर मच्छरों को भगाने के लिए धीरे से हवा की। ऐसा लग रहा था मानो उसकी आँखों में कभी नींद नहीं आएगी। वह थकी हुई नहीं थी, उसे नींद नहीं आ रही थी; उसने अपने बच्चे को दूध पिलाया और उसे अपने पास लिटा दिया, जहाँ वह मीठी नींद सो रहा था। उसकी सारी इंद्रियाँ अजीब तरह से जागृत हो गई थीं, और अब जब वह अपने पति के पास थी, तो उसे जकड़े हुए अवर्णनीय भय का अंत हो गया था। घर में कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी; सन्नाटा लगभग असहनीय था। बाहर, गाँव में, कुत्ते कभी-कभी भौंकते थे, और सियार चिल्लाते थे; लेकिन ये रात की सामान्य आवाज़ें थीं, और वह इनसे अभ्यस्त थी। हालाँकि, अचानक, उसने गाँव के अंत में, एक छोटी सी गली में दूर से एक आवाज़ सुनी, जैसे किसी को चुनौती दी जा रही हो, जिसके बाद एक कराह सुनाई दी, और वह सीधी बैठ गई, और धड़कते दिल से सुनने लगी; लेकिन वह आवाज़ दोबारा नहीं आई, और फिर से सन्नाटा छा गया। वह खुश थी कि उसने अपने पति को नहीं जगाया था, हालांकि वह लगभग जगा ही चुकी थी, और वह अभी भी गहरी नींद में सो रहा था। इस समय तक, धुंधला चाँद निकल आया था। उसने उसकी रोशनी को भीतरी आँगन की दीवार पर पड़ते देखा, और उसे फैलते हुए देखा, जिससे द्वार और उसके आसपास की परिचित वस्तुएँ हल्की रोशनी से जगमगा उठीं। गाँव के कुत्ते अभी भी भौंक रहे थे, और उत्तेजित लग रहे थे; संभवतः वे चाँद को देखकर भौंक रहे थे। जब वह ऐसा सोच रही थी, तभी उसने सुना—अब इसमें कोई संदेह नहीं था—बाहरी द्वार हिलने की आवाज़, मानो उसे हिलाया गया हो, लेकिन वह आवाज़ लगभग पल भर में बंद हो गई। इससे वह घबराई नहीं, क्योंकि वह जानती थी कि गाँव के पहरेदारों का कर्तव्य है कि वे अपने गश्त के दौरान द्वार को

हिलाएँ, और उसने जो आवाज़ सुनी उससे उसे कुछ अधिक सुरक्षित महसूस हुआ; लेकिन यह आश्वासन अचानक टूट गया, क्योंकि बाहरी आँगन से हल्के कदमों की आहट सुनाई दी; और जब वह अपने पति को जगाने के लिए हाथ फैलाए सुन रही थी, तभी दीवार के ऊपर एक आदमी का सिर दिखाई दिया, जिस पर धुंधली चाँदनी एक पल के लिए टिकी रही, और उसने उसका धुंधला चेहरा साफ-साफ देखा। वह बोल नहीं सकी; वह चिल्ला नहीं सकी; ऐसा लग रहा था जैसे वह सम्मोहित हो गई हो और हिलने-डुलने में असमर्थ हो। उसने उस आकृति को तेजी से उठते, दीवार पार करते और पहरेदार कक्ष की छत पर गिरते देखा, फिर हल्के से जमीन पर कूदते हुए, कुल्हाड़ी के कई तेज वारों से लकड़ी के लोहे के तख्ते को तोड़ते देखा। तभी अचानक कई मशालों की रोशनी से उसकी आँखें चौंधिया गईं, और चौड़े भालों से लैस पुरुषों की भीड़ आंगन में घुस आई। उसने लगभग व्यर्थ ही अपने पति को जगाने की कोशिश की; लेकिन वह देर से जागा, और केवल तभी जब वारों की आवाज से उसकी आँखें खुलीं।

सौदे की पूर्ति। 33 कुल्हाड़ी की गूँज पूरे दरबार में गूंजी, जिससे उसे खतरे का आभास हुआ और वह उठ खड़ा हुआ, दीवार पर टंगी तलवार को झट से नीचे उतारा, उसे निकाला और अपनी पत्नी से बच्चे को बचाने की गुहार लगाते हुए डाकुओं का सामना करने के लिए आगे बढ़ा। वह उनमें से किसी का भी चेहरा नहीं देख सका, क्योंकि वे ढके हुए थे; लेकिन उनकी निगाहें उस पर बेरहमी से टिकी रहीं, जबकि उनमें से कोई नहीं बोला। एक पल के लिए वे अनिश्चित प्रतीत हुए, जब सुनार सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचा, लेकिन केवल एक पल के लिए। एक लंबा, बलवान आदमी, कई अन्य लोगों के साथ, उस पर टूट पड़ा; सुनार ने उस पर जो वार किया, उसे उसने चतुराई से रोक दिया, और कई भालों के वार से वह बुरी तरह घायल हो गया; फिर भी हरी दास, अपने विरोधियों से भिड़ते हुए, बहादुरी से संघर्ष करता रहा, और प्रार्थना कक्ष के द्वार की ओर पीछे हट गया, जिसमें वह शक्तिहीन और मरणासन्न होकर गिर पड़ा। सीता ने सब कुछ देखा था, और फिर भी उस भयावह दृश्य के बावजूद उसने अपनी चेतना को बचाए रखा। वह पहले अपने बच्चे के साथ प्रार्थना कक्ष में भाग गई थी, लेकिन वहाँ से निकल नहीं पाई; और अब, एक ऐसी हताशा से प्रेरित होकर जिसका वह बाद में कभी हिसाब नहीं दे सकती थी, वह अपने पति के शव के ऊपर से गुजरी और अपने बच्चे को अपनी कमर पर बिठाए हुए बाहर आई, और अपने सिर से

साड़ी का किनारा खींचकर दोनों हाथों में पकड़े हुए डाकुओं के सामने फैला दिया। उसकी अपार सुंदरता, इस कार्य में साहस और भक्ति, शुद्ध सफेद मलमल में लिपटी उसकी मधुर उपस्थिति ने उन्हें एक क्षण के लिए रोक दिया, जब उसने धीमी, मधुर आवाज में कहा, जो लगभग कांप नहीं रही थी: "उसे मुझे दे दो; हे मेरे पति को मुझे मेरे विवाह उपहार के रूप में दे दो! यदि तुम पुरुष हो, तो पत्नी और माँ की विनती को अस्वीकार मत करो, और आने वाले वर्षों में तुम और तुम्हारे बच्चे इसके लिए धन्य होंगे। घर में जो कुछ भी है, ले लो, मैं तुम्हें दिखाऊंगी; लेकिन हे मेरी विनती सुनो, और मेरे पति को छोड़ दो!" लेकिन उसकी सरल लेकिन भावुक अपील का कोई जवाब नहीं मिला। लंबा आदमी और कई अन्य लोग, अपने भाले उठाए हुए, आगे बढ़े, और पीछे से एक बर्बर ने अपने भाले से लड़की पर जानलेवा हमला किया, जिससे उसे तुरंत लगा कि वह और उसका बच्चा दोनों घायल हो गए हैं, क्योंकि उसका गर्म खून उसकी बांह पर बह निकला, और वह बीमार पड़ गई और गिर पड़ी। फिर उसने एक कर्कश आवाज वाले आदमी को दूसरे से कहते सुना, जिसने उस पर फिर से वार करने के लिए अपना हथियार उठाया था, "बच्चा मर चुका है, और औरत मर चुकी है, तुम उन पर फिर से वार नहीं करोगे।" अन्य लोग उस छोटे से कमरे में आ गए थे, और जब उसने उन्हें अपने पति को बार-बार घायल करते सुना, तो वह जान गई कि उसके लिए सारी उम्मीदें खत्म हो गई हैं। उसे लगा कि उसका घाव जानलेवा नहीं है, और उसका बच्चा अभी भी सांस ले रहा है: और वह मानो मृत पड़ी थी, नौकरों की चीखों और लूटपाट के शोर को सुन रही थी। एक आदमी, उसका पैर खींचते हुए, उसके एक डंडे को खोलने में सफल हो गया था।

34 सीता। उसने उसके सोने के पायल तो खींच लिए, लेकिन दूसरे को नहीं खोल सका। दूसरे ने उसके सीने से उसका सोने का हार और कलाई से चूड़ियाँ छीन लीं; जबकि कमरे के भीतर, वेदी के पास कुल्हाड़ी की धीमी धमक से यह साबित हो गया कि लुटेरे जानते थे कि गहने कहाँ हैं और उन्हें ले जा रहे थे। तभी गाँव में अचानक कई गोलियों की आवाज सुनाई दी और एक जोरदार कोलाहल मच गया; और कई लोग चिल्लाते हुए आंगन में दौड़ पड़े, "भागो! भागो! पुलिस हमारे पीछे है; भागो और अपनी जान बचाओ!" अज़रील पांडे प्रार्थना कक्ष में व्यस्त थे। उसने कई जगहें तलाशी लीं और सुनार के शव से बस कुछ ही कदम दूर था, जो वास्तव में उस जगह पर पड़ा था जहाँ कीमती सामान दफ़न था, तभी उसने बाहर शोर सुना। एक पल रुककर उसने

अपनी कुल्हाड़ी नीचे गिराई और आदमियों की चीखें और गोलियों की आवाज़ सुनी: “वे हमसे भिड़ने की हिम्मत नहीं करते,” उसने कहा, “कायर; लेकिन हमें जाना होगा; चलो!” जैसे ही वह बाहर निकला, उसने सीता के शव पर अपना भाला उठाया; लेकिन सीता ने देखा कि उसके पास खड़े एक आदमी ने उसका हाथ पकड़ रखा था और उसी कर्कश आवाज़ ने उससे कहा, “मालिक, मरी हुई औरत पर वार मत करो, मैंने उसे खुद मारा है,” और वे निकल गए। लुटेरों ने अपनी मशालें बुझा दी थीं और बाहर चारों ओर अंधेरा था; लेकिन प्रार्थना कक्ष में दीपक अभी भी जल रहा था और उसकी रोशनी में जब वह सीता के ऊपर से गुजरा, तो सीता को ब्राह्मण के साहसी चेहरे और भयंकर आँखों को पहचानना आ गया। उसके तेज़ कानों ने भी उसके साथियों से कही गई बातों को सुन लिया था, क्योंकि वह घबरा गया था और फुसफुसाहट से ऊँची आवाज़ में बोला था। हाँ, शायद वही हो, उसने सोचा; लेकिन उसका दिमाग सुन्न और भ्रमित था, और उसका दिल ऐसे धड़क रहा था मानो फट जाएगा। उसका पति उसके बगल में मृत पड़ा था, फिर भी वह हिलने की हिम्मत नहीं कर रही थी; वे शायद अभी भी वहीं छिपे हों, जब तक कि हलचल शांत न हो जाए। उनकी मदद के लिए कौन आएगा? तभी उसका बच्चा हिला और धीरे से रोया, और उसने उसे अपनी छाती से लगा लिया। कम से कम वह तो बच गया था। उसे लगा कि किसी के आने में बहुत समय लग गया। उसने बंदूक की गोलियों और शोर की आवाज़ें सुनीं; पहले पास से, फिर दूर जाती हुई। वह आंगन का दरवाजा देख सकती थी, और लोग अंदर झाँकते हुए लग रहे थे; लेकिन कोई अंदर नहीं आया। तभी एक डरे हुए चेहरे वाली नौकरानी हाथ में दीपक लिए अंदर से आई और बरामदे में चारों ओर देखकर खून देखकर चीख पड़ी और वापस घर के अंदर भाग गई। सीता उठने की कोशिश करने लगी, लेकिन खून की कमी से कमजोर हो चुकी थी; उसने जोर से उस महिला को पुकारा, “भीम! भीम!” लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। यह एक भयानक समय था। क्या उसे अपने पति के साथ वहीं मर जाना चाहिए था? हाँ, वह अकेले ही मर जाती।

सौदे की पूर्ति। 35 उसे; लेकिन जिस बच्चे को देवताओं ने बचा लिया था, उसके लिए वह जीवित रहेगी, उसने सोचा, अगर वे उसे भी बचा लें। लेकिन उसका इंतज़ार ज़्यादा देर तक नहीं चला। बाहरी आँगन में अचानक खुशी भरी आवाज़ों का शोर गूंज उठा, और कई मशालों की रोशनी में, पुलिस का दारोगा, उसके कुछ आदमी और

हथियारबंद ग्रामीणों की भीड़ भीतरी आँगन में दाखिल हुई। कई विनम्र महिलाओं ने दयालु हाथों से उसे उठने में मदद की, और उसे खून से लथपथ जगह से दूर ले गईं, उसके घाव को धोया और उसके कपड़े बदले। घाव उसकी पसली में था, और बहुत खून बह रहा था, और उसी वार से उसके बच्चे की जांघ में भी चोट लगी थी; लेकिन बुलाए गए नाई ने कहा कि उसे कोई डर नहीं है, और उसके अपने घाव को कुशलता से बांध दिया गया। उसने अपने पति के लिए सारी उम्मीद खो दी थी, और वह भयानक भाले के वारों से बुरी तरह घायल पाया गया था, जिनमें से एक भी वार शरीर में होता तो जानलेवा हो सकता था। तभी राम दास की पत्नी सीता के पास आई और उसे देखते ही चीखते हुए उसके पैरों पर गिर पड़ी। “उन्होंने उसे पकड़ लिया है,” उसने कहा। “हमारे घर चलो और उसे बचाओ,” लड़की ने धीमी आवाज़ में पूछा। “कौन?” “मेरे पति! क्या वह आ सकते हैं?” “नहीं!” सीता बोली। “मैं नहीं जाऊंगी। उन्हें मुझसे दूर रखो।” और महिला के अपराध से इनकार करने के बीच, पुलिस दारोगा कमरे में दाखिल हुआ। “मैं अंदर नहीं आ सकता, महोदया,” उसने आदरपूर्वक कहा, “लेकिन मैं राजपूत हूं, और कोई अपवित्रता नहीं होगी। मैंने आपके दादा और चाची को बुलवाया है, और वे अभी यहां होंगे। मैंने राम दास को गिरफ्तार कर लिया है, जिस पर मुझे शक है, और मेरा कर्तव्य है कि यदि आप बयान दे सकें तो मैं आपका बयान लूं। मैंने एक जांच बुलाई है, और वह अभी चल रही है; और यदि आप घटना का ब्यौरा देने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम हैं, तो मेरे साथ एक मुंशी है जो इसे लिख लेगा।” “और लुटेरे?” सीता ने पूछा, “क्या वे चले गए?” वह अब बहुत कमजोर हो चुकी थी और स्वप्निल होकर अपनी आँखों पर हाथ फेरने लगी। “जी, महोदया,” दारोगा ने कहा। “मुझे बस इस बात का अफसोस है कि हम केवल तीन आदमी थे, और उनमें से एक घायल हो गया था, इसलिए वे हम पर भारी पड़े। आपके घर पर हमला करने से पहले उन्होंने एक पहरेदार को मार डाला था; दूसरा पहरेदार हमें तब मिला जब हम रात की गश्त पर गाँव के पास पहुँच रहे थे। शुक्र है कि हम समय पर पहुँच गए। हालाँकि, एक आदमी बंदूक की गोली से मर रहा है और बोल नहीं पा रहा है; बाकी लोग ऊँचे ज्वार के खेतों में छिप गए और हम उनका पता नहीं लगा सके। अब क्या आप अपनी कहानी सुनाएँगी; क्या आप इतनी मजबूत हैं?” “बताऊँगी,” उसने कहा; “मैं सब कुछ बताऊँगी जो मुझे पता है, लेकिन मुझे यहाँ से मत ले जाइए। मेरा बच्चा मेरे साथ है, और वे जल्द ही शाहगंज से आ जाएँगे।”

36 सीता। “आप यहीं ठहरेंगी, महोदया,” अधिकारी ने उत्तर दिया; “जांच समिति के सदस्य बाहर बैठकर आपकी बात सुन सकते हैं। नहीं, कोई आपको यहाँ से नहीं हटाएगा, महोदया। निश्चिंत रहें, सब ठीक होगा। आपके कई मित्र हैं और लोग आपसे प्रेम करते हैं।” फिर वह बाहर चला गया; और सीता ने गलियारे में पूछताछ दल के सदस्यों के कदमों की आहट सुनी, और जैसे ही वे बैठे, उनमें से कई ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। उसने शांत और स्पष्ट रूप से अपना बयान दिया—जैसा कि आगे विस्तार से बताया जाएगा—और अपने सीखे हुए सुंदर अक्षरों में दृढ़ता से कागज़ पर हस्ताक्षर किए। जब यह समाप्त हो गया, तो सदस्य अंदर आए और चुपचाप उसके पैर छुए। वे अधिकतर घर के किराएदार थे, और उसके पति के कुछ कामगार थे जो गृहस्थ थे। उनमें से कोई भी बोल नहीं सकता था; लेकिन सीता ने उनकी दयालु और घरेलू सहानुभूति को महसूस किया और इससे उसे बहुत सांत्वना मिली। फिर वे बाहर बैठ गए और अपना फैसला इस प्रकार सुनाया:— “हम, जिनके नाम दर्ज किए गए हैं, गोकुलपुर गाँव के सभी गृहस्थ हैं, उन्हें पुलिस के दारोगा राम सिंह द्वारा 15 अगस्त, 1855 की रात को, लगभग तीसरी पहर, उक्त गाँव के जमींदार, सुनार और बैंकर हुरे दास के घर पर पूछताछ के लिए बुलाया गया था। उनकी मृत्यु का कारण। हमने संलग्न साक्ष्यों का अध्ययन किया है और मृतक के शरीर की जाँच की है; और हमने पाया है कि उक्त हुरी दास की हत्या डाकुओं ने भाले के तेईस घावों से की थी। “और हमने पाया है कि घर में लूटपाट हुई थी; लेकिन लूटी गई संपत्ति का अभी तक पता नहीं चल पाया है। “और हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि घाव करने वाले या संपत्ति चुराने वाले डाकू कौन थे: लेकिन हम सर्वसम्मति से घोषणा करते हैं कि हमें उपरोक्त गाँव के जमींदार राम दास पर इन अपराधों की जानकारी और उनमें सहभागिता का संदेह है; और हमने सलाह दी है कि सरकार का निर्णय आने तक उन्हें पुलिस हिरासत में रखा जाए। “बाकी के लिए गुना राम, किसान, ने अपने हाथ से हस्ताक्षर किए। “हुरपत, मुंशी द्वारा लिखित।” जब तक ये संक्षिप्त कार्यवाही समाप्त हुई, भोर हो रही थी। उस दुर्भाग्यपूर्ण सुनार के शव को धोकर रख दिया गया था और नौकरों ने यथासंभव खून के धब्बे मिटा दिए थे। सीता सो नहीं पाई थी, लेकिन वह शांत थी और उसके पड़ोसी बारी-बारी से उसे देख रहे थे। पुलिस ने घर की सुरक्षा कर रखी थी और प्रार्थना कक्ष को छोड़कर सभी कमरों पर मुहर लगा दी गई थी, जिसके सामने दो आदमी पहरा दे रहे थे।

* सौदे की पूर्ति। 37 घायल डाकू बिना कुछ बोले मर गया था। वह जाहिरा तौर पर बूंदेला था, और इसलिए यह माना गया कि डाकू बुंदेलखंड या उससे सटे प्रांतों से आए थे; और हुरसे दास के घर से निकलने के बाद, जांच दल ने डाकू और दुर्भाग्यपूर्ण चौकीदार के शवों की आगे की जांच की। इस प्रकार, भोर होने से पहले, दारोगा ने अपना सारा कर्तव्य पूरा कर लिया था, और अपने वरिष्ठ अधिकारी को इस प्रकार रिपोर्ट दी:— "सूरपुर के कार्यवाहक दारोगा राम सिनाऊ की याचिका। "आपका सेवक 15 अगस्त की रात को दो आदमियों के साथ सूरपुर से गोकुलपुर जा रहा था। यह शाहगंज का बाजार दिवस था, और यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि सड़कें सुरक्षित हों। हम लगभग गोकुलपुर पहुँच ही गए थे कि गाँव के चौकीदारों में से एक सिद्दू हमसे मिला और उसने बताया कि एक अन्य चौकीदार, रामा, को डाकुओं ने भाले से मार डाला है और वे जमींदार हुरे दास के घर को लूट रहे हैं। जब हम गाँव में दाखिल हुए, तो डाकुओं ने बड़ी संख्या में हमारा विरोध किया, लेकिन सरकार की कृपा से उनमें से एक को गोली लग गई और उसके पास से एक सौ तेईस रुपये बरामद हुए; बाकी भाग गए। जब हम हुरे दास के घर पहुँचे, तो हमने पाया कि उनकी हत्या कर दी गई थी और उनकी पत्नी सेक्टा बाय और उनके नवजात बेटे गोपदेल्डास घायल थे। घर से कुछ सामान ले जाया गया था, लेकिन वह ज्यादा कीमती नहीं था। मेरे एक साथी, शेख इमाम, को मामूली चोट आई थी, लेकिन इससे उन्हें अपना कर्तव्य निभाने में कोई बाधा नहीं आई। "आपका सेवक, कुछ ग्रामीणों के साथ डाकुओं का पीछा करता रहा, लेकिन वे अंधेरे में ज्वार के खेतों में भाग निकले; इस बारे में आपका सेवक असहाय है। वह इस जांच और बयानों के फैसले का समर्थन करता है और आदेशों का अनुरोध करता है। राम सिनान, कार्यवाहक दारोगा के हस्ताक्षर।" ® अजरील पांडे की योजनाएँ, हालांकि उन्होंने हमेशा की तरह कुशलता से बनाई थीं, विफल हो गईं। शाहगंज के बाजार से निकलते ही वह मंदिर गए और पुजारी से विदा लेकर कहा कि उन्हें उस शाम नागपुर की ओर प्रस्थान करना है; और दो आदमियों के साथ प्रस्थान किया। फिर वह घाटी में गए और अपने आदमियों को मंदिर में छिपा हुआ पाया। रात होने तक वहीं विश्राम करते हुए, उन्होंने पवित्र कुल्हाड़ी के लिए विधिवत अनुष्ठान किए—एक मुर्गे की बलि दी गई और उसका खून हथियार पर छिड़का गया। सुनार के पारिवारिक झगड़े में उनकी क्या रुचि थी? बिलकुल भी नहीं; लेकिन लूट के माल में कोई संदेह नहीं था। यह दस हो सकता था,

38 सीता। या बीस हजार रुपये भी, और उससे क्या नहीं किया जा सकता था? अंत में उसने अपने आदमियों को जगह और समय बताया, और आधी रात तक सभी को गोकुलपुर के पास आम के बाग में इकट्ठा होना था। वह उन्हें इतनी अच्छी तरह जानता था कि उसे किसी के अनुपस्थित होने का संदेह नहीं था; और सुनसान खेतों से होते हुए, दो-तीन के समूहों में, वे सभी नियत समय पर वहाँ पहुँच गए। बाकी हम जानते हैं। खूनी काम हो चुका था; और जैसे ही सुबह हुई, गिरोह और उनका नेता फिर से झरने पर थे, नहा रहे थे और अपनी आँखों और हथियारों से खून के धब्बे धो रहे थे। लूट का माल बहुत कम था, और जो कुछ मिला था उसे मौके पर ही बाँट लिया गया था; और जब विभाजन समाप्त हो गया, तो अजरादेल ने उनसे कहा: "भाइयों, मैं कहाँ जा रहा हूँ, यह जानने की आपको आवश्यकता नहीं है। जब मैं आपसे दोबारा मिल सकूँगा, तो मैं संदेश भेज दूँगा। यह प्रयास असफल रहा है: क्यों, मुझे नहीं पता; हमें आत्मसमर्पण करना होगा। तुम सब अलग-अलग हो जाओ और जंगलों में चले जाओ। कई हफ्तों तक यह क्षेत्र सबके लिए खतरनाक रहेगा। मैंने जो कुछ था उसे बाँट लिया है, और अपने लिए कुछ नहीं लिया है; लेकिन तुम सब समृद्ध हो, और तुम्हें केवल सावधान रहने की आवश्यकता है। अब जाओ।" फिर गिरोह अलग हो गया। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने भाले से ब्लेड निकाला और उसे अपनी कमरबंद में छिपा लिया; और घने जंगलों के उन रास्तों से, जिन्हें केवल वे ही जानते थे, वे जल्द ही पीछा करने वालों से बहुत दूर निकल गए। जहाँ तक उनके नेता की बात है, उसके पास रक्षक थे जिन्होंने उसे शरण दी, और जो इस इतिहास में अपनी भूमिका निभाएंगे। अध्याय VI. विधवा और माँ, चाची एला अपने भाई के घर में हमेशा सबसे पहले जागती थीं, क्योंकि उन्हें बहुत सारे काम करने होते थे। सबसे पहले, पवित्र अग्नि को तौलना और अपने भाई के सुबह के बलिदान के लिए प्रार्थना कक्ष तैयार करना; फिर आलसी महिला नौकरानियों को जगाकर काम पर लगाना, सभी कमरों और आंगन की सफाई करना, और फर्श को तरल मिट्टी से धोना, जो जल्दी सूख जाती थी और उन्हें ठंडा रखती थी; पानी लाना, रसोई का ध्यान रखना और अपने भाई के स्नान के लिए गर्म पानी तैयार करना; संक्षेप में, सुबह का समय शायद दिन का सबसे व्यस्त समय होता था। आंटी एला विलासिताप्रिय नहीं थीं; उनका बिस्तर नंगे फर्श पर कालीन के ऊपर बिछी एक ठंडी चटाई थी, और गर्म मौसम में उनका आवरण एक चादर थी; सभी सादी साज-सज्जा, और जब वह उठती थीं,

विधवा और माँ। 39 ये सब लपेटकर रख दिए गए थे। जब सीता उनके साथ होती थीं, तो वे ऊपरी मंजिल के एक कमरे में सोती थीं; लेकिन अपने पति के साथ चले जाने के बाद, आंटी एला ने निचली मंजिल के एक कमरे में अपना ठिकाना बना लिया था, जो आंगन में खुलता था। जैसे ही वह उठीं, उन्होंने अपने पास सो रही नौकरानी को पुकारा, जो उठी और उनके लिए पानी लाई, और फिर धीरे-धीरे घर में हलचल मच गई। अब लगभग सुबह हो चुकी थी, और आसपास के घरों में मुर्गे एक-दूसरे को जोर-जोर से बांग दे रहे थे; पवित्र अग्नि को ठीक कर दिया गया था, और आंगन के बीच में स्थित वेदी से सुबह की पूजा के लिए तोलसी के पत्ते इकट्ठा कर लिए गए थे। थोड़ी देर बाद माली फूलों की अपनी छोटी टोकरी लाता, और फिर वह अपने भाई को जगातीं, और सुबह की रस्म शुरू हो जाती। लेकिन अचानक द्वार पर बहुत शोर हुआ, और उन्हें पहरेदार राठौर जमादार बाला राम की कर्कश आवाज सुनाई दी, जो जल्दी-जल्दी सवाल पूछ रहे थे। तभी अचानक द्वार खुल गया, और जैसे ही वह सुबह-सुबह इतने असामान्य शोर का कारण जानने के लिए आगे बढ़ी, उसने देखा कि शहर का पुलिस प्रमुख, फुतेह रियान, जो उसके भाई का करीबी था, अपने घोड़े से उतर रहा है, और उसके साथ उसके कई आदमी भी हैं। आखिर क्या हो सकता है? क्या हुआ होगा? अभी भोर ही हुई थी, लेकिन धुंधली चाँदनी में उसने उसे बाला राम के साथ आँगन में आगे बढ़ते देखा, और सीढ़ियों के ऊपर उससे मिलने गई। आंटी एला ऐसी नहीं थीं जो खुद को छिपाती हों या आने-जाने वाले लोगों को देखकर घबराती हों, और उनकी घबराहट इतनी तीव्र थी कि अब उन्हें रोकना असंभव था। “क्या बात है, महोदय?” उसने जल्दी से पूछा; “आप इतनी जल्दी क्यों आ गए?” “आपका भाई कहाँ है?” उसने उसके प्रश्न का उत्तर दिए बिना पूछा; “उसे जगाओ और यहाँ लाओ।” वह अभी मुड़ी भी नहीं थी कि बैंकर, अपने नंगे सिर और कंधों पर जल्दी से शॉल डालते हुए, आँगन के द्वार पर प्रकट हुआ। “अरे, खान साहब! क्या हुआ है?” वह चौंक उठा। “बोलना?” “उसे भेज दो,” उसने आंटी फ्ला की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया, “यह बात सिर्फ तुम्हारे लिए है।” “जाओ, बहन,” बैंकर ने कहा; “यह निजी मामला है।” “मैं नहीं जाऊंगी, भाई,” वह हांफते हुए बोली; “मुझे डर लग रहा है, ओह! मुझे सीता और बच्चे के लिए डर लग रहा है। उसे बोलने दो। मैं नहीं जाऊंगी।” और वह अपना चेहरा ढककर बैठ गई। “आगे बढ़ो,” बैंकर ने कहा: “अच्छा हो या बुरा, सुख हो या दुख, मेरी बहन सब कुछ साझा करती है; और अगर यह खबर मेरे बच्चों से

संबंधित है तो...” और बूढ़े आदमी की आवाज टूट गई।
40 सीता, “यह बुरी खबर है,” अधिकारी ने उत्तर दिया; “बहुत बुरी। आज सुबह हर्स दास के घर पर डकैती हुई और वह मारा गया।” “और उसकी पत्नी, श्रीमान? हे मेरी बच्ची! मेरी बच्ची!” एला ने व्यथित स्वर में कहा। ‘क्या वह भी मर गई?’ “नहीं, महोदया, वह सुरक्षित है। मैंने सुना है कि उसे थोड़ा ज़ख्म लगा है, लेकिन वह सुरक्षित है। मेरे साथ आइए; उसे आपकी और उसके दादाजी की ज़रूरत है। मैंने पहले ही कुछ सैनिकों को भेज दिया है और आप दोनों को लेने आया हूँ। जल्दी कीजिए और तैयार हो जाइए।” चाची एला ने अपना धैर्य नहीं खोया। वह उठी और अपने भाई का हाथ पकड़कर उसे अपने साथ ले गई। वह रो नहीं सकती थी, वह मुश्किल से बोल पा रही थी; लेकिन वह जानती थी कि उन्हें क्या करना है, और तुरंत करना है। “सीता जीवित है,” उसने अंत में कहा; “ईश्वर का धन्यवाद कीजिए, भाई, कि वह और बच्चा सुरक्षित हैं। मुझे पालकी और आपके टट्टू को मंगवाना होगा। मैं उसे चला सकती हूँ और आप पालकी में जा सकते हैं; जल्दी कीजिए और कपड़े पहन लीजिए।” और ये रहे पुजारी भी: ये हमारे साथ चलेंगे; क्या आप नहीं चलेंगे, महाराज?” “ओ वामुन भूत! हे मित्र!” नरेंद्र रोते हुए बोला। ‘आपका आना बड़ी कृपा है; हम पर क्या विपत्ति आ पड़ी है? इतनी जवान, इतनी सुंदर, और पहले से ही विधवा! हे सीता!” “नहीं, रोओ मत, पुराने मित्र; बस ईश्वर का धन्यवाद करो कि वह और उसका बच्चा तुम्हारे पास सुरक्षित हैं,” पुजारी ने गंभीरता से कहा। ‘आओ, समय बर्बाद मत करो, बहुत काम है। हम उसे यहाँ लाएँगे, और तुम्हें घर में तुम्हारा पुराना सुख मिलेगा; आओ। आह! काश मैंने सितारों से पहले ही मार्गदर्शन ले लिया होता, तो यह सब रोका जा सकता था; लेकिन हम, जो उन्हें सबसे अच्छी तरह जानते हैं, अंधे मूर्ख हैं। मैंने घर जाकर कोशिश की, लेकिन गणना बहुत जटिल थी, और मैंने हार मान ली।” “तो क्या यह आखिरकार ब्राह्मण ही था?” बैंकर ने पूछा; “तुम्हें उस पर शक था।” “टीजे अभी कुछ नहीं कहेगा, दोस्त; कई लोग चिंतित दिख रहे थे, और इस बारे में मेरे अपने विचार हैं। चलो, समय बर्बाद हो रहा है। वह हमारा इंतज़ार कर रही होगी।” अगर एक ताज़ा, सुहावनी सुबह, जब दिन उजाला हो रहा था और घास और खेतों पर ओस की बूँदें थीं, सुबह की सवारी को सुखद बना सकती थी, तो ऐसी स्थिति थी; लेकिन सभी शोक और चिंता से ग्रस्त थे, और चुपचाप आगे बढ़ते रहे। चाची एला ने अपने भाई को सवारी करने की अनुमति नहीं दी। अपने वस्त्रों को समेटते हुए, वह दृढ़ता से उसके लंगड़ाते टट्टू पर

सवार हुईं, और उसकी पालकी के पास रहीं, जबकि पुजारी और पुलिस अधिकारी आगे-आगे चल रहे थे। उनके चारों ओर बाला राम के नेतृत्व में घर के रक्षक थे, जबकि दो आदमी पालकी के खुले दरवाजों के पास दौड़ रहे थे, अपने आदरणीय स्वामी को खुश रहने की शुभकामनाएँ दे रहे थे।

विधवा और माँ। 42 और अपने घरेलू तरीके से उसे सांत्वना देने की कोशिश कर रही थीं। और इस तरह वे गोकुलपुर पहुँचे, जब सूरज अभी-अभी निकला था, और गाँव वालों ने रोते-चिल्लाते उनका स्वागत किया। हुरे दास के खेतों में प्रवेश करते ही वे काँप उठे, जो हाल ही में हिंसा का स्थल था। सब कुछ अस्त-व्यस्त लग रहा था। लुटेरों द्वारा गिराई गई घरेलू वस्तुएँ आँगन में बिखरी पड़ी थीं। जाँच के बाद लोहार का शव हटा दिया गया था और अंतिम संस्कार के लिए उसे नहलाया जा रहा था; लेकिन खून के धब्बे मुश्किल से ही मिट पाए थे, और हालाँकि औरतें फर्श धो रही थीं, घर में एक हल्की, दुर्गंध फैली हुई थी। सीता और उसके दादा और चाची के बीच एक दुखद मुलाकात हुई। वह बहुत कमजोर थी। वह डरी हुई और खोई-खोई सी लग रही थी, मानो वह उन्हें मुश्किल से पहचानती हो, और बहुत कम बोल पा रही थी; लेकिन जैसे ही वे उसके बिस्तर के पास घुटने टेककर बैठे और उसे बाहों में भर लिया, उसने अपने बच्चे से, जो उसकी गोद में लिपटा हुआ था, अपना वस्त्र हटाया और उसे उन्हें दिखाया। "वह सुरक्षित है," उसने कहा; “मुझे लगा था कि वह मर गया है, लेकिन वह जीवित है और स्वस्थ है। उसे परेशान मत करो; देखो, वह शांति से सो रहा है।” “और तुम, हे मेरी प्यारी,” बूढ़े ने कहा; “निश्चित रूप से देवताओं ने तुम्हें बचा लिया?” “हाँ,” सीता ने धीमी आवाज़ में कहा; “लेकिन वह—मेरा पति—मर गया है। उन्होंने मुझे बताया नहीं है, लेकिन मुझे कोई उम्मीद नहीं है।” “कोई उम्मीद नहीं है, सीता,” उसकी चाची ने कहा। “उसके बारे में मत सोचो, मेरी प्यारी, बल्कि अपने और उस लड़के के बारे में सोचो।” “मुझे यहाँ से ले जाओ!” लड़की अपनी चाची के गले में बाहें डालते हुए चिल्लाई; “मुझे ले जाओ! मेरी आँखें खून से भरी हैं; मुझे हर जगह खून की गंध आ रही है; मुझे ले जाओ!” “मेरे पास आओ, मेरी प्यारी,” बूढ़ी औरत सिसकते हुए बोली; “मेरे हृदय में आओ, जहाँ तुम कई दिन लेटी रही हो;” और उसने लड़की के कोमल शरीर को अपने सीने से लगा लिया। “अब मत सुनो, सीता। इतनी कम उम्र में तुम्हारे लिए यह बहुत बड़ा दुख है; लेकिन मुझे पता है तुम इसे बहादुरी से सह लोगी।” फिर उसने नरेंद्र को जाने को कहा; वह वहाँ कुछ नहीं कर सकता था,

और बेहतर होता कि वह देखे कि क्या करना है; और वह मान गया और उन्हें छोड़कर चला गया। बैंकर सामने वाले कमरे में गया और बैठ गया। जब उसने चारों ओर देखा, तो उसने पाया कि फर्श से खून के धब्बे हटा दिए गए थे; लेकिन प्रार्थना कक्ष के चौखटों पर खून के छींटे पड़े थे, और अंदर एक काला तालाब था, जिस पर उसकी नज़र डालने की हिम्मत नहीं हुई। राम दास अब वहाँ बैठा था, और दो पुलिसकर्मियों और कुछ ग्रामीणों द्वारा उसकी सुरक्षा की जा रही थी। उसने सुरक्षा की गुहार लगाई। "मुझ पर शक क्यों किया जा रहा है, मुझे क्यों कैद किया गया है?" वह भावुक होकर चिल्लाया। "क्योंकि जो वहाँ मृत पड़ा है"—और उसने शव की ओर इशारा किया, जिसे पहले ही दाह संस्कार के लिए तैयार कर लिया गया था—"और मेरा पारिवारिक झगड़ा था, क्या मुझे उसका हत्यारा माना जाना चाहिए? क्या मेरी इज्जत को मिट्टी में मिला दिया जाना चाहिए?

42 सीता। क्या मैं कल रात उसके पास जाकर उसे समझौता करने का विनम्र प्रस्ताव नहीं रख सकता था? उसकी पत्नी यह जानती है; उसे बोलने दो।" "शांत रहो," शाहगंज के पुलिस अधिकारी ने कहा; "इतना ही काफी है कि यह हत्या का मामला है, और न तो राम सिंह और न ही मैं अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर सकते हैं। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, राम दास, हमसे कुछ मत कहना; अपना बचाव मजिस्ट्रेट के लिए बचाकर रखो, अब तुम खुद को दोषी ठहरा सकते हो। सावधान रहो और चुप रहो।" "कम से कम," उसने उदास स्वर में कहा, "मुझे रस्में निभाने दो। मैं उसका सबसे करीबी रिश्तेदार हूँ, और उन्हें निभाने वाला कोई और नहीं है।" "बेशक, हम इसमें बाधा नहीं डालेंगे," राम सिंह ने कहा; "ऐसा ही होने दो; वे तैयारियाँ कर रहे हैं, और यह जल्द ही हो जाएगा। तुम यहाँ स्नान कर सकते हो और तैयार हो सकते हो।" "मैं नहीं कर सकता," उसने चिड़चिड़े स्वर में उत्तर दिया; "मैं खून से लथपथ घर में पवित्र नहीं रह सकता; मुझे घर जाना होगा।" "असंभव," दोनों अधिकारियों ने एक स्वर में कहा, "और चाहे तुम जाओ या रहो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; काम करने के लिए ब्राह्मण हैं, और वामुन भूत उन्हें निर्देश दे रहे हैं।" लेकिन रामदास का ध्यान अब विरासत और खानदानी गहनों पर केंद्रित था, और वह समारोह न होने से अपने दावे का एक अंश भी खोना नहीं चाहते थे। "मैं कहीं भी स्नान कर लूंगा," उन्होंने कहा; "मैं तैयार रहूंगा।" इस प्रकार समारोह चलता रहा। गोकुलपुर के पास बहने वाली धारा के किनारे चिता पहले से ही तैयार थी। आसपास के गांवों से कई ब्राह्मण एकत्रित हुए

थे और पवित्र ग्रंथों का पाठ कर रहे थे। महान बैंकर नरेंद्र के दामाद के अंतिम संस्कार में बड़ा दान होगा और वे उत्सुकतापूर्वक इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात थी भीतर का दुख और पीड़ा—विधवा और उसका नन्हा पुत्र! कुछ देर बाद शववाहक आए और कहा कि सब कुछ तैयार है और उन्हें शव ले जाना चाहिए; फिर शव को उठाया गया, फूलों और जाति चिह्नों से सजाया गया और अर्थी पर रखा गया। नरेंद्र उठे और शव को देखा। पुरुषत्वपूर्ण चेहरे पर कोई विकृति नहीं थी; लेकिन उस पर उस संघर्ष की गंभीर अभिव्यक्ति थी जिसमें हरी दास की मृत्यु हुई थी। फिर हरे रंग की लकड़ियों के टुकड़ों को बांधकर बनाई गई अर्थी को उठाया गया और आसपास जमा हुए लोग चले गए, उनमें राम दास भी था, जिसकी पहले की तरह ही पहरेदारी की जा रही थी। तभी वामन भूत नरेंद्र के पास आया और फुसफुसाते हुए बोला, “हमें बच्चे को अग्नि देने के लिए ले जाना चाहिए।” “चिता; वह कहाँ है?” “सीता उसे कभी नहीं छोड़ेगी,” बैंकर ने कहा। “अगर मैं उससे पूछूँ तो वह मान जाएगी,” दूसरे ने जल्दी से जवाब दिया; “वह कहाँ है?” | नरेंद्र ने भीतरी प्रांगण की ओर इशारा किया, और पुजारी अंदर चला गया।

विधवा और माँ। — 43 और उन्होंने वह कमरा ढूँढा जिसमें सीता लेटी हुई थीं। वह जाग रही थीं, हालाँकि थोड़ी देर सोई थीं। “हमें बच्चे को उसके पिता के साथ ले जाना होगा,” उन्होंने संक्षेप में कहा; “वह कहाँ है?” | “यह असंभव है,” चाची फिला ने कहा; “बच्चा खून की कमी से कमजोर है।” “उसे आना ही होगा; हे सीता, दृढ़ रहो, मेरी बेटी, और उसे भेज दो,” पुजारी ने चिंता से कहा; “वरना रामदास रस्म अदा करेंगे, और तुम्हारा बच्चा विरासत खो देगा।” “क्या आप ऐसा नहीं कर सकते, गुरुजी?” सीता ने उठते हुए कहा। “मैं कर सकता हूँ,” उन्होंने उत्तर दिया, “यदि लड़का वहाँ न हो, अन्यथा नहीं; जल्दी करो, उसे मुझे दे दो।” “उसे ले जाओ, चाची,” सीता ने दृढ़ता से कहा; “मेरे बारे में यह नहीं कहा जाना चाहिए कि मैंने मूर्खतापूर्ण कमजोरी के कारण अपने बच्चे के अधिकार खो दिए। उसे ले जाओ, उसे धूप और हवा से बचाओ। आप ज्यादा देर तक दूर नहीं रहेंगी।” “बस दस कदम ही तो हैं,” पुजारी ने कहा; “जब बच्चा बड़ा होकर जवान होगा, तो वह अपनी बहादुर माँ को इसके लिए धन्यवाद देगा। आइए, देवी, वे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।” आंटी एला इस नतीजे के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थीं। उन्होंने हमेशा सेक्टा को दृढ़ निश्चयी समझा था, लेकिन उन्हें अपनी भतीजी के चरित्र की मज़बूती का अंदाज़ा नहीं था:

और अक्सर ऐसा होता है कि कुछ चरित्रों का विकास केवल विकट परिस्थितियों में ही होता है! उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह जानती थीं कि पुजारी सही कह रहे हैं; और उन्होंने बच्चे को गोद में उठाया और अपने सिर पर साड़ी डालकर उसे ढक दिया। वह गहरी नींद में सो रहा था, और बाहर ले जाते समय भी नहीं जागा। “ओह, मेरी बेटी, मेरी प्यारी बच्ची, कितनी महान है,” पुजारी ने नरेंद्र से कहा, जब वे बाहर जा रहे थे; “अगर कोई मुझे हज़ारों भी दे देता, तो भी वे इस जीत के सामने धूल के समान होते। अब तुम देखोगे!” शववाहक अर्थी को आगे ले आए थे, और शव—जिसके कई गहरे घाव अब सभी को दिखाई दे रहे थे—को चिता पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके रखा गया था। जब वामुन भूत और बैंकर पहुँचे, तो अंतिम संस्कार की रस्में चल रही थीं; और चावल और चीनी के पवित्र गोले को अन्य मसालों के साथ शव को अर्पित किया गया, और राम दास के पुत्र हुरे दास का नाम जोर से पुकारा गया। जैसे ही ये शब्द बोले गए, राम दास अपने हाथों में जलती हुई भूसी का एक टुकड़ा लेकर चिता को प्रज्वलित करने के लिए आगे बढ़े, क्योंकि वे कानूनी उत्तराधिकारी और निकटतम संबंधी थे, लेकिन वामुन भूत ने उन्हें पीछे खींच लिया। उन्होंने सख्ती से कहा, "जब तक उनका पुत्र यहाँ है, इस मामले में तुम्हारा कोई स्थान नहीं है।" और जैसे ही चाची एला ने बच्चे को गोद में लेकर उसे खोला, तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी; और उन्होंने उसे एक गोंड की तरह ग्रहण किया।

44 सीता। शगुन के संकेत पर लड़के ने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और खुशी से चिल्लाया। तब वामन भूत ने उसे अपनी बाहों में उठाया और चिता के चारों ओर तीन चक्कर लगाए; और लड़के के नन्हे हाथ में भूसे का एक टुकड़ा थमाकर उसे उसके पिता के चेहरे तक ले गए और चिता के एक कोने पर लगा दिया; जबकि अन्य लोग संकेत की प्रतीक्षा करते हुए चिता के चारों ओर आग लगा दी। जैसे ही चिता तेज़ी से भड़क उठी, राम दास पीछे हट गया, और जो कुछ हुआ उसे देखते हुए उसकी घृणा भरी नज़र को देखने वाले कभी नहीं भूले। तब वामन भूत ने अग्नि के देवता से प्रार्थना की, और समारोह पूरा हुआ। चाची एला नहीं रुकीं; वह विजयी होकर बच्चे को उसकी माँ के पास ले गईं और उसे उसकी बाहों में लिटा दिया, और बच्चा मुस्कुराते हुए अपनी माँ के चेहरे की ओर देखकर चिल्लाया। शायद तभी, और केवल तभी, सीता को होश आया था। उसकी आँखें टकटकी लगाए, धुंधली और भयानक चमक से जगमगा रही थीं। उसका मुंह सूख गया था और शरीर बुखार से झुलस रहा था। तभी,

जब उसने अपने बेटे को अपने दिल से लगा लिया और उसके ऊपर झुकी, तो उसकी आंखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा और उसे राहत मिली। चाची एला इतनी समझदार थीं कि उन्होंने अपने आंसुओं को नहीं रोका। “रोती रहो, मेरी बच्ची,” उन्होंने कहा; “वह लड़का एक हीरो था, सचमुच एक बहादुर था, और उसे देखकर सभी लोग खुशी से चिल्ला उठे! सीता, मैं तुम्हें दिलासा देती हूं; आज तुमने उसकी विरासत बचा ली है। वामन भूत सही थे; अगर उन्होंने हमें चेतावनी न दी होती, तो रामदास कानूनी वारिस के रूप में चिता को आग लगा देते।” सीता ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसके आंसू अब चुपचाप बह रहे थे। वे ज्यादा देर तक नहीं रुके; सीता ने घर में खाना नहीं खाया, लेकिन उसे थोड़ा दूध दिया गया था, और वह चलने लायक हो गई थी। आंटी एला ने पालकी को नरम तकियों से आरामदायक बनाया, और सीता को बरामदे में ले जाकर उसमें बिठा दिया गया। घर के पहरेदारों के साथ पालकी शाहगंज के लिए रवाना हुई, आंटी एला अपने भाई के टट्टू पर उसके पीछे-पीछे गईं। लेकिन नरेंद्र वहीं रुका रहा, क्योंकि बहुत काम था। उसने ठान लिया था कि घर में कोई भी कीमती सामान नहीं छोड़ेगा; और उसकी और दो पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में, प्रार्थना कक्ष का फर्श खोदा गया, और वहां जमा की गई हर चीज, खजाने और अधूरे बने गहनों सहित, गांव के रजिस्ट्रार द्वारा तैयार की गई सूची में दर्ज की गई, जिस पर इस कार्यवाही के गवाह कई लोगों ने हस्ताक्षर किए। केवल राम दास ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उसने कहा, “यह संपत्ति मेरी है, और आज की सारी चालाकी का बदला मैं लेकर रहूंगा। तब तक, यह तुम्हारे पास सुरक्षित है, नरेंद्र।” इसके बाद, घर में जो भी चल-फिर सकने वाला सामान था, उसे गाड़ियों में भरकर शाहगंज भेज दिया गया। बाहर कपास और अन्य व्यापारिक वस्तुओं के गट्ठे थे, साथ ही एक अन्न भंडार भी था जो भरा हुआ था।

विधवा और माता। 45 एक सौ अनाज, और ये पुलिस के हवाले कर दिए गए। फिर घर के दो कमरों को सील कर दिया गया, भीतरी आंगन के द्वार पर मुहर लगा दी गई, और घर को उसके हाल पर छोड़ दिया गया। नरेंद्र का अंतिम कार्य वह दान था जिसकी पहले से योजना बनाई गई थी, और यह उदार और भरपूर था; जबकि डाकुओं द्वारा मारे गए चौकीदार की विधवा को एक बड़ी राशि दान में मिली। मजिस्ट्रेट का फैसला कुछ दिनों बाद संदेशवाहक द्वारा आया। जो कुछ भी किया गया था, उसे स्वीकार कर लिया गया; लेकिन मजिस्ट्रेट को राम दास को कैदी के रूप में रखने का

कोई कारण नहीं दिखा, और उसे भारी रकम की जमानत पर रिहा कर दिया गया। वह एक धनी व्यक्ति था, और नरेंद्र के अलावा उसके कई मित्र थे; और जब जमानत दी गई, तो पुलिस उसके घर से चली गई। अगली रात, जब वह अकेले बैठकर अपने खातों का हिसाब-किताब कर रहा था, तो एक नौकर ने कहा, "बाहर से एक आदमी आपसे बात करना चाहता है; वह अंदर नहीं आना चाहता।" राम दास का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। “यह ब्राह्मण है,” उसने बुदबुदाया; “मैं इससे बच नहीं सकता। हाँ,” उसने नौकर से कहा, “उसे बता देना कि मैं आ रहा हूँ।” जैसे ही वह अपने द्वार से बाहर निकला, उसने अँधेरे में एक आकृति को सीढ़ियों में से एक पर बैठे देखा। “मुझे पाँच सौ रुपये चाहिए, राम दास,” अज़रेअल ने कर्कश फुसफुसाहट में कहा; “वह मामला सफल नहीं हुआ, और मेरे पास पैसे नहीं हैं। जल्दी करो, पुलिस के रहते मैं आने की हिम्मत नहीं कर पाया, और अब मेरी जान कहीं सुरक्षित नहीं है। मैं इधर-उधर छुपता रहा और अक्सर रात में यहाँ आता रहा, लेकिन तुम्हें देखने का कोई मौका नहीं मिला। जल्दी करो, सोने में पैसे लाओ।” “लेकिन मुझे मेरा बॉन्ड दो,” राम दास ने कहा। “नहीं,” अज़रेअल ने उत्तर दिया; “उस पर और भी बकाया है।” “लेकिन—” “मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिए एक शब्द भी व्यर्थ नहीं करूँगा। मुझे पैसे दो।” मैं हताश हूँ—और अगर तुम नहीं मानोगे, तो मजिस्ट्रेट को नोट भेजना और उसमें लिख देना आसान होगा कि यह हुरे दास की हत्या की कीमत है। हा! समझे? “मैं दे दूँगा,” राम दास ने विनम्रता से कहा। उसने तुरंत समझ लिया कि वह कोई समझौता नहीं कर सकता। चाहे अच्छा हो या बुरा, वह डाकू के हाथों में था। “अगर तुम अंदर गए, तो मेरे मुँह पर दरवाजा बंद हो जाएगा,” ब्राह्मण ने कहा। “मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। वहाँ कोई नहीं है?” “कोई नहीं, तुम्हारी आँखों की कसम; आओ!” “तुम जानते हो,” डाकू ने गंभीर स्वर में कहा, “मैं जानता हूँ कि कहाँ

46 सीता, खजाने तो हैं, पर तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। पिछली बार जैसा एक काम कुछ समय के लिए काफी है, और मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।” वे दोनों साथ गए, और अज़र्डेल पांडे ने सोने के सिक्कों में मांगी गई रकम लेकर प्रस्थान किया। लेकिन अगली रात, व्यापारी ने एक दूर के आंगन में एक और गड्ढा खोदा, और उसमें अपना खजाना गाड़ दिया। (भाग एक का अंत)

भाग द्वितीय, अध्याय 7, सीता की पायल। एक वर्ष से अधिक समय बीत चुका था; लेकिन डकैती के संबंध में कोई सुराग नहीं मिला था, और यह अपराध पुलिस प्रशासन

पर एक कलंक बना हुआ था। इससे पहले भी कई अन्य घटनाएं हुई थीं, जिनका कोई सुराग नहीं मिला था, और एक और घटना बाद में हुई थी, हालांकि वह इतनी गंभीर नहीं थी। फिर भी, यह स्पष्ट था कि डकैती इस प्रांत का एक सामान्य अपराध था—जैसा कि वास्तव में कई अन्य प्रांतों में भी था। हालांकि, गोकुलपुर कांड, जिसमें हुरे दास की हत्या हुई थी, इतनी उल्लेखनीय घटना थी कि एक उच्च अधिकारी ने पुलिस अधिकारियों को अत्यधिक सतर्कता और सावधानी बरतने का निर्देश दिया था, जिन्होंने जिला पुलिस और विशेष रूप से अंग्रेज मजिस्ट्रेटों के बारे में बेहद नकारात्मक राय दर्ज करने में कोई संकोच नहीं किया। यदि इससे अत्यधिक झुंझलाहट हुई और यह पूरी तरह से अनुचित था, तो भी इसने अपराधियों तक पहुंचने के अथक प्रयासों को और भी प्रेरित किया। विशेष रूप से राम दास का मामला, जिससे सुराग मिलने की उम्मीद थी, की गहन जांच की गई थी। जैसा कि पहले ही दर्ज किया जा चुका है, जांच में उस पर संदेह जताया गया था और लगभग उसे दोषी ठहराया गया था; हालांकि यह साबित हो गया था कि उसने दो अजनबी लोगों को अपने यहाँ पनाह दी थी और उन्हें डकैती वाले दिन तक अपने पास रखा था—फिर भी वह अपनी किताबों से यह साबित करने में सक्षम था कि उसे बरार के एक संवाददाता से सिक्कों में एक बड़ी रकम मिली थी, जिसे पेशेवर लूटेरों या खजाना ढोने वालों द्वारा लाया गया था, जो देश के लिए अजनबी थे, और जिन्हें उसने आराम करने के बाद वापस भेज दिया था। गोली मारकर मारे गए डाकू के शव पर काफी धन मिला था, जो लूट के हालिया बंटवारे का संकेत था; और सिक्कों में व्यापारी के निजी सांचे से चिह्नित कई रुपये भी थे। हालांकि, यह मिलीभगत या अपराध का कोई सबूत नहीं था, क्योंकि उसके पैसों के लेन-देन काफी अधिक थे, और उसके द्वारा जारी किए गए सिक्के हमेशा चिह्नित होते थे। ये रुपये आम प्रचलन में होने के कारण देश के किसी भी बाजार में मिल सकते थे। फिर भी, इन्हें अन्य रुपयों से अलग करके रख लिया गया।

48 सीता. राम दास ने अपने चचेरे भाई के साथ हुई आखिरी मुलाकात का स्पष्ट विवरण दिया और उन सभी बातों का ब्योरा दिया जो हम पहले से जानते थे। उन्होंने कलकत्ता स्थित अपने कानूनी सलाहकार के पत्र भी प्रस्तुत किए और उनके विरुद्ध पिछले फैसले के खिलाफ दायर अपील का नोटिस स्थानीय अदालत में दर्ज था। शाहगंज के प्रमुख स्थानीय अधिकारी द्वारा पुनः पूछताछ किए जाने पर सीता ने राम दास के स्पष्टीकरण की पुष्टि की; लेकिन स्वीकार किया कि जब राम दास ने उनके

पति को छोड़ा तो उनकी धमकी से वह भयभीत हो गई थीं। हालांकि, उन्होंने यह भी माना कि उनके पति ने कठोर शब्दों का प्रयोग किया था; और चूंकि इससे स्वाभाविक रूप से तीखी प्रतिक्रिया उत्पन्न होती, इसलिए राम दास के शब्दों को आवेश में कही गई बात माना गया और उन्होंने इसके लिए खेद व्यक्त किया। अंत में, जिले के प्रत्येक कस्बे और गांव में गिरोह का पता लगाने वाले किसी भी व्यक्ति को पांच सौ रुपये का इनाम और हत्या न करने वाले किन्हीं दो प्रतिभागियों को क्षमादान देने की घोषणा की गई। नरेंद्र ने भी इसी प्रकार की राशि देने की पेशकश की। एक अनुभवी जासूस अधिकारी के नेतृत्व में ठगी और डकैती पुलिस की एक टुकड़ी को प्रांत में भेजा गया, और अपराध के दोषियों का पता लगाने के लिए यथासंभव हर संभव प्रयास किया गया। इस प्रकार महीने बीतते गए; और शायद घटना में जो प्रारंभिक आकर्षण था, वह धीरे-धीरे धूमिल होने लगा। न केवल प्रांत के ब्रिटिश हिस्से से सूचना प्राप्त करने के लिए छानबीन की गई, बल्कि दो प्रमुख देशी गणमान्य व्यक्तियों, जिनके पास बड़ी संपत्ति थी, को भी सहायता करने के लिए प्रेरित किया गया; और उन्होंने बड़े उत्साह और सौहार्द के साथ ऐसा करने की अपनी तत्परता व्यक्त की। नवाब दिल खान बहादुर ने न्यायाधीश और आयुक्त से मुलाकात की, डकैती के अस्तित्व पर खेद व्यक्त किया, और घोषणा की कि यदि उनके किसी भी प्रजाजन का गोकुलपुर मामले से संबंध पाया गया, तो उन्हें पूरी उम्मीद है कि उन्हें तोपों से उड़ा दिया जाएगा या फांसी दे दी जाएगी। उन्होंने स्वीकार किया कि उनके सैनिक असभ्य और कभी-कभी उनके प्रति भी अनुशासनहीन थे; और यह स्वीकार करना होगा कि अंग्रेज नागरिक अधिकारियों की उनके प्रति किसी भी अर्थ में कोई अच्छी राय नहीं थी। राजा हुरपेल सिंह एक असभ्य और कठोर स्वभाव के व्यक्ति थे, जिनके बारे में माना जाता था कि वे जंगली गोंडों के वंशज थे और गोंड जंगलों की सीमा पर रहते थे; लेकिन वे युवा सैन्य अधिकारियों के बीच कुछ हद तक लोकप्रिय थे, क्योंकि वे हमेशा उनके शिकार और निशानेबाजी अभियानों में उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे और आतिथ्य सत्कार में उदार थे; और बदले में, वे भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार हर संभव सहायता देने का वादा करते थे। सीता अब शाहगंज में बस गई थीं। वह कभी गोकुलपुर नहीं लौटी थीं, और उनके घर और उनके पति के मामलों से संबंधित सभी कार्य उनके दादा और उनके एजेंटों द्वारा संभाले जाते थे। नरेंद्र ने उनके पति की संपत्ति का हिसाब-किताब अपने हिसाब-किताब से अलग रखा था; और इससे उन्हें

काफी लाभ हुआ।
सीता की पायल। 49 a ee ee oe oe E07 ed aL CO ee आय, जिसे उन्होंने सीता के उपयोग के लिए रखा था। उन्होंने न्यास के तहत यह प्रभार स्वीकार किया था और अपने साथ पुजारी वामुन भूत, एक सम्मानित जमींदार और शहर के दो बैंकरों को जोड़ा था; इस प्रकार पाँच व्यक्तियों की एक पंचायत या बोर्ड का गठन किया गया, जो मासिक खातों का लेखा-जोखा करता था। बाहरी रूप से सीता में कोई परिवर्तन नहीं आया था; बल्कि, वह और भी सुंदर हो गई थी। उसकी बढ़ती सुंदरता ने वास्तव में उसकी चाची और दादाजी को लगभग व्याकुल कर दिया था। उसे यह सुंदरता क्यों मिली थी? एक विधवा को इतना आकर्षण क्यों दिया गया था? वे बेसब्री से देखते रहे कि क्या उसके पति की पुण्यतिथि आने पर वह विधवा के सभी कर्तव्यों और अनुष्ठानों को पूरी तरह से निभाना चाहेगी—अपने सुंदर बाल मुंडवाना चाहेगी और अपने आभूषण उस स्थान पर तोड़ना चाहेगी जहाँ उसके शरीर को जलाया गया था—लेकिन इसका कोई संकेत नहीं था। एक बार जब आंटी एला ने इस तरह के समारोह की उपयुक्तता पर सवाल उठाया, तो वह सजग हो उठी और गर्व से बोली— “चाची एला, न तो मुंडा सिर और न ही भद्दा वस्त्र किसी को सदाचारी विधवा बनाता है! मैं जैसी हूँ वैसी ही रहूँगी। क्या मैं अपने बेटे को बड़ा होकर सदमा पहुँचाने के लिए खुद को कुरूप करूँ? नहीं! अगर उसके पिता की मृत्यु का बदला लिया गया, तो शायद—शायद—इस बारे में सोचा जा सकता है; लेकिन तब तक, इसका ज़िक्र न हो।”
इसलिए उसके दादा और चाची ने बात वहीं छोड़ दी और उसे देखने लगे। वह अब वैसी भोली-भाली लड़की नहीं रही थी जैसी वह उन्हें छोड़कर जाने से पहले थी, जहाँ वह उनके प्रभाव में ढलती थी। अब उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प का एक अजीब सा भाव था जो उनके लिए नया था, हालाँकि इसके साथ ही उसकी मधुरता में कोई कमी नहीं आई थी। वह निर्णय लेने में तेज़ और बोलने में अधिक धाराप्रवाह थी; चर्चाओं में, विशेष रूप से पुजारी के साथ, जिसकी वह फिर से शिष्या बन गई थी—पहले से कहीं अधिक उत्सुक थी; और वह भी अक्सर उसकी क्षमताओं से चकित और हैरान रह जाता था, जो उसकी अपनी क्षमताओं की कड़ी परीक्षा लेती थीं। अपने बच्चे के लिए उसका प्यार एक भावुक भक्ति के समान था, जो उसे देखने वाले हर व्यक्ति को बहुत गहराई से प्रभावित करता था। वह लगभग उसकी इकलौती परिचारिका थी, उसकी हर ज़रूरत का पहले से ही ध्यान रखती थी और उसे कभी अपनी नज़रों से ओझल

नहीं होने देती थी। इस समय तक, छोटा बच्चा चलना-फिरना और एक-दो शब्द बोलना भी सीख चुका था; और वह बहुत सुंदर था, क्योंकि उसकी माँ के कोमल, सुडौल चेहरे और प्यारी आँखें उसके पिता के अधिक मर्दाना चेहरे के साथ मिश्रित प्रतीत होती थीं। सीता—कौन सी भारतीय माँ नहीं होती?—बुरी नज़र से डरती थी, और उसने अपने बेटे को चाँदी और सोने से जड़े ताबीजों का एक हार पहना रखा था, जो उसके घुटनों तक पहुँचता था। जब वह उसे किसी भी समारोह के लिए मंदिर ले जाती थी, तो घर से निकलने से पहले ही अपनी पालकी के दरवाजे बंद कर लेती थी और पवित्र परिसर में पहुँचने तक उन्हें कभी नहीं खोलती थी।

सीता अपने शिक्षक के मंदिर में समय बिताती थीं। किताबों और बच्चे के बीच, सीता का समय सुखद रूप से बीतना चाहिए था; लेकिन क्या ऐसा हुआ? मुझे नहीं लगता। अगर उनके दादा ने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति न दी होती, और अगर उनकी शिक्षा उस स्तर तक न पहुंची होती, जिस स्तर तक वह पहुंची थी—जिसके कारण अक्सर चाची एला, जो अक्षर पढ़ना नहीं जानती थीं, बहुत परेशान होती थीं—तो सीता हिंदू जीवन की नीरस, सामान्य विधवा जीवन में रम जातीं; धार्मिक, घरेलू कामों में लीन, दानशील और धैर्यवान, भविष्य के लिए कोई आशा न रखतीं, और प्रार्थना करतीं कि जब उनका बच्चा बड़ा होकर अपने जीवन में काम शुरू करे, तो यह नीरस यांत्रिक जीवन समाप्त हो जाए। लेकिन सीता ऐसी नहीं थीं: उनके भीतर का उच्चतर उत्साह दूसरों में जो कुछ देखती थीं, उससे संतुष्ट होने से इनकार करता था, जिनमें उनकी प्रिय चाची एला एक प्रतीक थीं। वास्तव में उनके कोई बच्चे नहीं थे; और उन्हें कोई चिंता या आकांक्षाएं नहीं थीं। यदि उसके भाई को नियमित रूप से भोजन मिलता, नौकर-चाकर व्यस्त रहते, गरीबों को भोजन मिलता, घर के मसाले, विशेष रूप से सेवई, अच्छे से तैयार होते, भैंस और गायों का दूध दुहा जाता, मक्खन को घी में उबाला जाता, और कोई भी रस्म, चाहे सामान्य हो या घरेलू, अधूरी न रहती—तो वह संतुष्ट रहती; और यदि कहीं कोई गलती होती, तो उसे ठीक किए जाने तक वह दुखी रहती। सीता ये सब काम अपनी चाची की तरह ही अच्छे से कर सकती थी, और कुछ मामलों में तो वह उनसे भी आगे थी। उसके दादाजी सेवई तभी खाते थे जब वह सीता के हाथों से बनी होती थी, और जब भी वे बीमार होते, सीता के सिवा कोई भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाता था। घर के कामों के प्रति पहले की तरह ही समर्पित सीता में बाकी सब कुछ बदल गया था। हालाँकि वह केवल पवित्र ग्रंथ और कुछ कविताएँ और

नाटक ही पढ़ती थी, फिर भी उनमें दर्ज कुछ विचार उसके मन में उभरते हुए प्रतीत होते थे, जो उसके मस्तिष्क को व्याकुल और हृदय को प्रज्वलित कर देते थे, न केवल उस दिव्य रहस्योद्घाटन के कारण, जैसा कि वह मानती थी, बल्कि उस भाषा के कारण भी जिसमें विचित्र आध्यात्मिक तर्क व्यक्त किए गए थे। कभी-कभी वह उन्हें समझ नहीं पाती थी; और जब वह अपने गुरु से सहायता मांगती, तो अक्सर उसे मना कर दिया जाता था! "ये रहस्य हैं जिन्हें केवल एक ब्राह्मण ही जान सकता है," वह उससे कहते थे; “वे महिलाओं के कोमल मन के लिए उपयुक्त नहीं थे,” और इस प्रकार उन्होंने उनकी विनती को टाल दिया; लेकिन सेक्टा संतुष्ट नहीं थीं। हालाँकि, कुछ अन्य अंश भी थे जिनमें उन्हें आनंद आता था; कालिदास और बाबा भूत द्वारा प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, महाभारत और रामायण के समृद्ध प्रसंग, उनके लिए नए अनुभवों के समान थे। वह कविताओं में बहती हवाओं और जलधाराओं को सुन सकती थीं, चमकते आकाश को देख सकती थीं और सुंदर फूलों की सुगंध को महसूस कर सकती थीं। ये वास्तविकताएँ थीं, कल्पनाएँ नहीं; और अक्सर, जब वह अपने घर की खिड़की पर बैठी होती थीं जबकि उनका बेटा खेलता रहता था, तो वह इन अंशों को पढ़ती थीं।

सीता की पायल। 51 अपने पास, वह अपनी किताब रख देती और दोपहर के सूरज में चमकते हुए, घने जंगलों वाली पहाड़ियों, उपजाऊ खेतों, भव्य उपवनों और दूर के गांवों को उमड़ते दिल और नम आँखों से निहारती रहती। और प्रेम भी था। प्राचीन ऋषि-मुनि और योद्धा प्रेम करते थे, और स्त्रियाँ प्रेम करती थीं; वरना प्रेम के बारे में किसने लिखा था? उन लोगों की तरह महसूस करना कैसा होता जिन्होंने इसे लिखा और वर्णित किया?—उसके दिल में कोई भावना नहीं थी। सीता ने कभी प्रेम नहीं किया था। वह अपने पति का सम्मान करती थी; उसे उस पर गर्व भी था, और वह उससे प्यार करता था— वह उसकी प्रियतमा थी! लेकिन यह किताबों वाला प्रेम नहीं था। उसका जीवन सीता का जीवन नहीं था, न ही सीता का। फिर भी, ऐसा प्रेम कवि का प्रेम नहीं था— प्रेम का वह शुद्ध आदर्श जो केवल स्वर्ग में ही पूर्ण हो सकता था! आह! उसने इसे कभी नहीं जाना था; अब भी नहीं जान पाएगी; उसके साथ कभी जान ही नहीं सकती थी! वह धीरे-धीरे सीता को अपने बौद्धिक स्तर तक नीचे खींच लेता, और उसका मन विकास की कोशिश में ही अवरुद्ध हो जाता। अब वह स्वतंत्र थी! फिर भी, वह जिन लोगों को जानती थी, उनमें से कौन ऐसा था जिसमें वह दिव्य

प्रेम की कोई वास्तविक झलक देख पाती? वास्तव में, उसकी प्रकृति की तीव्र, शक्तिशाली बुद्धि, जिसे जगाना बहुत कठिन था, और एक बार जागृत होने पर अनियंत्रित, उसे उसके सामान्य जीवन की सीमा से परे विचारों में बहका रही थी, और वह उन्हें रोक नहीं सकती थी। इन सपनों और अवास्तविक अटकलों के बीच सीता का जीवन व्यतीत हुआ; और अक्सर जब अच्छे पुजारी को उनकी झलक मिलती, जिनका वह अनुसरण करने का साहस नहीं करते थे, तो वे मन ही मन बुदबुदाते, “काश मैंने उसे न सिखाया होता! और फिर भी, उसके प्रखर मन को कौन रोक सकता था? अब उसे अपने लाभ का अनुसरण करना होगा, और मुझे उसे अच्छाई की ओर ले जाना होगा, और बुराई को उससे दूर रखना होगा।” लेकिन उनके जीवन का नीरस और स्थिर क्रम अचानक उनके पति के भाग्य से जुड़ी एक घटना से बदल गया, जो इस प्रकार थी: नूरपुर एक बड़ा प्रांतीय केंद्र था, जो प्रांत के सभी प्रशासन का मुख्यालय था। वहाँ न्यायाधीश और सिविल कमिश्नर रहते थे; इसके अलावा वहाँ अंग्रेज़ सैनिक और उनके अधिकारी थे, और एक बड़ा शहर था जहाँ खूब व्यापार होता था। शाहगंज के किसी भी निवासी के लिए वहाँ जाना जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी, और यहाँ तक कि उनके दादा भी बहुत कम ही वहाँ जाते थे; फिर भी नूरपुर की खबरें पत्रों और आगंतुकों के माध्यम से शाहगंज तक पहुँचती थीं; और दोनों शहरों के बीच ऐसे सार्वजनिक और निजी संबंध थे जो जीवन के सामान्य मामलों से संबंधित होते हैं। शाहगंज की तरह नूरपुर में भी साप्ताहिक बाज़ार लगता था; और अगस्त 1856 के अंत में एक ऐसी घटना घटी जिसने गोकुलपुर की डकैती की कहानी को तीव्र और भयावह रुचि के साथ फिर से जीवित कर दिया।

§2 सीता। एक दिन बाजार में, एक छोटा सुनार अपनी दुकान के पीछे बैठा था, जिस पर सोने-चांदी के कुछ साधारण गहने सजे थे। तभी तलवार और ढाल लिए एक सिपाही जैसा दिखने वाला आदमी उसके पास आया और पूछा कि क्या वह कुछ सोना खरीदेगा। रूपा नाम का वह आदमी गरीब और बूढ़ा था। उस दिन उसकी कमाई बहुत कम हुई थी, और बाजार मूल्य न जानने वाले व्यक्ति से सोने का सौदा करने का लालच वह नहीं छोड़ सका। दूसरी ओर, सिपाही ने बूढ़े सुनार को सबसे गरीब सुनार के रूप में चुना था; क्योंकि भले ही उसे उससे सोने का उचित हिस्सा मिल जाता, लेकिन वह दूसरे सुनार की तुलना में सौदे का खुलासा करने की संभावना कम रखता। रूपा ने कहा, "ज़रूर, महाराज, यह मेरा धंधा है, और मैं बाजार के किसी भी सुनार के

बराबर उचित कीमत दूंगा। आपके पास बेचने के लिए क्या है?" सुनार ने कहा, "अगर हम गोपनीयता बनाए रखें तो बेहतर होगा।" “मुझे अपने पारिवारिक गहने सबके सामने दिखाना पसंद नहीं है। अगर आप अपनी दुकान छोड़कर मेरे साथ आएँ, तो मैं आपको उन्हें यहाँ से ज़्यादा शांत जगह पर दिखाऊँगा।” रूपा ने इधर-उधर देखा कि क्या उसके कोई दोस्त खाली हैं; लेकिन उसकी दुकान सचमुच सुनसान थी और उसके आस-पास कोई नहीं था। “मैं अपना सामान यहाँ नहीं छोड़ सकता,” उसने जवाब दिया; “और मुझ पर भरोसा करने वाला कोई नहीं है। शर्मिंदा मत होइए: ‘सुनार और धोबी पर घर में भरोसा करना चाहिए,’” और उसने एक जानी-मानी कहावत दोहराई। “ठीक है,” उस आदमी ने कहा, “मुझे पैसे चाहिए, क्योंकि मेरा किराया बकाया है और मुझे उसे चुकाना ही होगा; तो देखिए।” और अपनी पगड़ी की कुछ तहें खोलकर उसने एक बेहद खूबसूरत सोने की पायल निकाली और उसे आगे बढ़ाया। सुनार ने उसे लिया और ध्यान से देखा। “अगर आपके घर में इससे भी ज़्यादा गहने हैं,” उसने कहा, “तो वह औरत खुश है जो उन्हें पहनती है।” “अरे हाँ,” उस आदमी ने लापरवाही से जवाब दिया; “पुराने ज़माने में ये अच्छी चीज़ें बनाते थे, और अगर मेरे घराने का भाग्य अच्छा होता, तो मुझे इसे बेचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। बताओ, इसके लिए तुम क्या दोगे?” “सोना तो अच्छा है,” रूपा ने कहा, “और पायल भारी है,” उसने उसे हाथ में उछालते हुए कहा; “लेकिन इसमें मिलावट है। मुझे चश्मे से देखने दो।” ऐसा करते ही रूपा चौंक गई और उसकी साँस फूल गई। पीछे किनारे के नीचे, शाहगंज के नरेंद्र और गोकुलपुर के हुरे दास के निजी निशान थे, और दोनों बिल्कुल साफ़ थे; लेकिन उसने काफ़ी कुछ देख लिया था, और जल्दी से पायल को पलटकर दूसरी तरफ देखने लगा।

 “तुम्हें क्या तकलीफ है?” उस आदमी ने पूछा; “तुम क्यों कांप रही हो? क्या सोना खराब है?” “महोदय,” रूपा ने उत्तर दिया, “इस नम मौसम में मुझे बुखार और खांसी हो गई है, बस इतना ही। क्या आप सैनिकों को इसकी कोई दवा पता है?” ‘हम कभी-कभी मारते हैं, लेकिन इलाज कम ही करते हैं,” वह हंसते हुए बोला; “लेकिन पहले इस मामले को सुलझा लेते हैं।” “ठीक है, बिल्कुल,” सुनार ने कहा, “मैं यही करने वाला हूँ। क्या तुम पायल रखोगे और मेरी छोटी सी दुकान पर तब तक रुकोगे जब तक मैं तराजू और कसौटी ले आता हूँ? मैं एक पल में वापस आ जाता हूँ; मुझे पता है कि गुनपुट दास के पास वे हैं।” “तो देर मत करो,” उस आदमी

ने उत्तर दिया; 'अगर तुम देर करोगे, तो मैं खुद ले लूँगा।' "अरे, महाराज! वे लेने लायक नहीं होंगे; मैं पलक झपकते ही लौट आऊँगा।" तो सैनिक दुकान पर रुका रहा; रूपा, पाँच सौ रुपये के इनाम के लालच में, जो उसके लिए धन के समान होता, अपने साथी कारीगर की दुकान की ओर तेज़ी से बढ़ा। भीड़ में दो पुलिसकर्मियों को पार करते हुए, उसने अपने परिचित एक पुलिसकर्मी से फुसफुसाकर कहा, "गोकुलपुर मामले का एक डकैत अभी मेरी दुकान पर है। धीरे से उसके पास जाओ, और जब मैं उसका सोना तौल रहा हूँ, तो उसे पकड़ कर बाँध दो। उसके पास हथियार है।" फिर वह गया और तराजू और कसौटी लेकर वापस अपनी दुकान पर आ गया। "देखो, साहब, मुझे ज़्यादा देर नहीं लगी," उसने कहा, "और मैं तेज़ी से भागा हूँ। पहले मैं सोने को कसौटी से तौल कर देख लूँ, और जब मेरा हाथ स्थिर हो जाएगा तब तौलूँगा; इसमें कोई शक नहीं कि सोना बहुत शुद्ध है," उसने आगे कहा। "वाह, वाह! देखो!" और उसने कसौटी उस आदमी के चेहरे के सामने कर दी। "इसका निशान उससे बेहतर है: लेकिन इसमें काफी मिलावट और आरा मिलावट है जिसे घटाना पड़ेगा। पंद्रह रुपये प्रति तोला का क्या ख्याल है?" "सोलह कहो," उस आदमी ने कहा; "तुम सुनार सब धोखेबाज़ हो। अगर मुझे इसे खरीदना होता तो तुम मुझसे बीस या उससे ज़्यादा मांगते।" "बेशक, बेशक, मेरे दोस्त," सुनार हंसते हुए बोला, "नहीं तो हम कैसे जी पाते, महोदय? कैसे जी पाते? लेकिन सोलह तो फिर भी बहुत बड़ी कीमत है।" "इसे तौल लो," उस आदमी ने अधीरता से कहा, "और जल्दी करो; तुम बहुत ज़्यादा बोलते हो।" रूपा जानबूझकर बोल रहा था और समय बिताने के लिए सोने से पत्थर को रगड़ रहा था। अब उसने देखा कि पुलिस आ रही है और उसका ग्राहक स्पष्ट रूप से बेचैन हो रहा है। "मुझे ये लोग पसंद नहीं हैं; क्या ये कभी तुम्हारे काम में दखल देते हैं?" उस आदमी ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

54 सीता। "कभी नहीं," सुनार ने उत्तर दिया। "उनके साथ मेरा अच्छा रिश्ता है, और वे कभी मेरे कामों की जाँच नहीं करते। देखिए, महोदय, सोना ठीक साढ़े पंद्रह तोला है;" और उसने तराजू को अपनी उंगली और अंगूठे के बीच उठाया। "साढ़े पंद्रह तोला: आप खुद देख लीजिए। मेरा हाथ स्थिर है, और एक बाल भी तराजू को हिला देगा। क्या आप संतुष्ट हैं?" आदमी का ध्यान पूरी तरह से तौलने की प्रक्रिया में लगा हुआ था। सुनार ने तराजू में एक लाल बीज डाला, उसे निकाला, फिर दो डाले, उन्हें निकाला, और इस तरह उसने इस प्रक्रिया को यथासंभव लंबा खींच दिया था। "हाँ,"

आदमी ने कहा, “यह ठीक लगता है; अब पैसे की बारी।” जैसे ही उसने ये शब्द कहे, उसे पीछे से ज़बरदस्ती पकड़ लिया गया; एक पुलिसकर्मी ने उसकी बांहें पकड़ीं, दूसरे ने उसके हाथों में हथकड़ी पहना दी और उसकी तलवार छीन ली। उसने दोनों को गुस्से से देखा, लेकिन कोई हलचल नहीं मचाई। “अगर मैं तुम दोनों को खुले मैदान में पाता, तो मैं तुम्हारा हिसाब लेता,” उसने दांत पीसते हुए कहा; “अब मैं बेबस हूँ!” “और ये रही सीता बाय की पायल, जो हरी दास की पत्नी है,” सुनार ने विजयी भाव से कहा। “देखो, ये रहा उसका और नरेंद्र का निशान; मैं इन्हें पहचानता हूँ। उससे इसके बारे में पूछो। इसे ले लो, महोदय, और इनाम के लिए मेरा दावा दर्ज कर लो।” “तुम्हें हमारे साथ थाने चलना होगा,” उनमें से एक ने कहा, “और इस बात की कसम खानी होगी;” अपनी संगीनें निकालकर वे आगे बढ़ गए। बाज़ार में दो पुलिसकर्मियों द्वारा एक कैदी को ले जाने की बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि यह एक बहुत ही सामान्य घटना थी; लेकिन भीड़ से सुरक्षित निकलते हुए अन्य लोग भी उनके साथ शामिल हो गए। पूछताछ तेजी से आगे बढ़ी, लेकिन कैदी के कबूलनामे से अचानक रुक गई। "यह सब सच है," वह अचानक चिल्लाया, "और सवाल पूछने या लिखने का कोई फायदा नहीं है। मैं सब बता दूंगा। मैं गोकुलपुर के धंधे में शामिल था, लेकिन मैंने कोई हत्या नहीं की; जिसने यह किया है वह बाज़ार में है, अगर आपमें उसे पकड़ने का साहस है।" "वह कौन है और क्या है?" बयान दर्ज कर रहे पुलिस अधिकारी ने पूछा। "कोई बात नहीं कि वह कौन है या उसका नाम क्या है," बदमाश ने जवाब दिया; "ज़रूरी बात यह है कि उसके पास सौ हैं। गोसाईं भीमगीर के मठ में जाओ, और तुम्हें अवध का एक लंबा ब्राह्मण शिक्षा देता हुआ दिखाई देगा: वही आदमी है, उसे मेरे पास लाओ।" तुरंत एक योजना बनाई गई और दो दल रवाना हुए। गली के बीचोंबीच स्थित एक छोटा सा मंदिर, मठ, दोनों दलों के बीच में आ जाएगा; और मठ की सीढ़ियों पर खड़े किसी भी व्यक्ति को केवल एक ही दल दिखाई देगा। सीता की पायल। 55 लोगों ने ब्राह्मण को पहले ही देख लिया था और उसकी बातें सुन भी ली थीं। वे जानते थे कि उन्हें क्या करना है। अजरील पांडे मठ की सीढ़ियों पर बैठे थे, कमर तक रंग लगाए हुए, जैसा कि हमने उन्हें शाहगंज में देखा था, और उपदेश दे रहे थे। उन्होंने चार पुलिसकर्मियों को अपनी ओर आते देखा और एक पल के लिए असमंजस में पड़ गए कि क्या करें; लेकिन बाज़ार में गश्त कर रहे ऐसे ही दल दोपहर भर में कई बार उनके पास से गुज़रे थे, और ये दल भी निस्संदेह ऐसा ही

करेंगे। लेकिन जैसे ही वे लोग उनके पास पहुँचे, उनमें से दो अन्य लोगों की मदद से उन पर टूट पड़े, दूसरी तरफ से गश्ती दल उनके पीछे आ गया; उन्हें नीचे गिरा दिया गया और उनकी कलाईयों में हथकड़ी लगा दी गई। उन्होंने ज़ोरदार संघर्ष किया और उनकी साँस फूल रही थी। हाँफते हुए वे चिल्लाए, "देखो! फिरंगियों का अत्याचार। कौन एक गरीब ब्राह्मण का यह अपमान देखेगा और इसका बदला नहीं लेगा?" और फिर वे डर से छटपटाने लगे, लेकिन उन्हें नीचे दबाए रखा गया। "चुप रहो," दल के मुखिया कॉर्पोरल ने कहा, "शांत रहो; अगर नहीं चुप रहे तो बाजूबंद तुम्हें चोट पहुँचाएँगे। चुपचाप आओ।" "मुझे किसलिए गिरफ्तार किया गया है?" उसने पूछा। "गोकुलपुर के सुनार हुरे दास की हत्या के आरोप में," जवाब मिला। अज़रील पांडे ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह तुरंत खड़ा हो गया, और जैसे ही दल उसके चारों ओर जमा हुआ, उसे सावधानीपूर्वक पहरा देते हुए आगे ले जाया गया। पुलिस दारोगा बेसब्री से परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थी; और कैदी ने एक बार तीखे स्वर में कहा, "अगर उसे अपना भाला तैयार करने का समय मिला, तो वह उनमें से कुछ को मार डालेगा।" लेकिन अज़रील को समय नहीं मिला था। भाले का डंडा उसके पास एक साधारण लाठी की तरह पड़ा था, और भाले की नोक उसकी कमरबंद में मिली; लेकिन सबसे पहले उस तक पहुँचने वाले पुलिसकर्मी ने, जो उसके जितना ही शक्तिशाली था, तुरंत उसकी भुजाएँ जकड़ लीं, और वह असहाय हो गया। 'सलाम, जमादार!' जब अज़र्डेल को लाया गया, तो कैदी ने कहा, "मैं आपके सामने उपस्थित हूँ, और मैं सब कुछ बताऊँगा। दोहाई फेरिंगी का!" वह ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, "अंग्रेज़ों से न्याय! मैं, बीरबुल, घोषणा के अनुसार अपने जीवन की माँग करता हूँ, और मैं सब कुछ बताऊँगा। दोहाई! दोहाई!" लेकिन पहले उससे उसका भाला छीन लो," उसने आगे कहा; "अगर उसका हाथ छूट गया, तो तुममें से कुछ मारे जाएँगे। यह उसकी कमरबंद में है।" एक पुलिसकर्मी ने उसे टटोला और भाले की धार निकाली। चौड़ा और एक लंबे, नुकीले सिरे वाला, भाले के किनारे रेज़र की तरह तेज़ थे, और निचले सिरे पर जड़े हुए सोने के दो छल्ले थे, जिनके बीच बिंदु बने थे। "अब इसे लाठी पर लगा दो," कैदी ने आगे कहा, "और तुम 6 किलो कैलोरी अल आईआरपी आर्डी
56. सीता। देखोगी कि किस हथियार से सुनार हुरे दास और कई अन्य लोगों की हत्या हुई। सचमुच वह एक भयानक हथियार था, और उसे एक तरफ रख दिया गया। फिर सब पर सन्नाटा छा गया, क्योंकि कैदी ने साफ आवाज में अपनी कहानी सुनाना

शुरू किया। अध्याय 8. सीता की गवाही। डकैत की गवाही पहले से दर्ज तथ्यों से पूरी तरह मेल खाती थी। पुलिस अधिकारी ने उसे चेतावनी दी थी कि वह जो कुछ भी कहेगा, उसका इस्तेमाल उसके खिलाफ किया जाएगा, और उसके पास खुद उसके मामले में घोषणा की पुष्टि करने का कोई अधिकार नहीं है; लेकिन वह आदमी उत्तेजित था, और केवल और अधिक चिल्लाया, “दोहाई! दोहाई! मुझे बोलने दो! मुझे बोलने दो!” ये अफवाहें और उनके परिणाम बाज़ार में तुरंत फैल गए। कई बेहतरीन सुनारों को पायल की जांच करने के लिए बुलाया गया, और सभी ने न केवल नरेंद्र और हरी दास के निशान पहचाने, बल्कि एक व्यक्ति ने गवाही दी कि इसके धागे नरेंद्र के अपने हाथों से बने हैं, और उनके अलावा कोई और ऐसा नहीं बना सकता। सारी कार्यवाही सुनने के बाद, नूरपुर में नरेंद्र के संवाददाता ने उन्हें पूरी घटना का विस्तृत विवरण लिखा और आगे की जानकारी देने का वादा किया। नरेंद्र इस खबर से बहुत आहत हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो यह दुखद घटना फिर से शुरू हो गई हो, और उन्हें सीता पर इसके प्रभाव का डर था। पत्र निजी डाक से बहुत जल्दी आया था; और यह लगभग असंभव था कि शहर में उनके अलावा किसी और को इस घटना की जानकारी मिली हो। वह नहीं चाहते थे कि सीता को यह बात किसी और से पता चले; और यद्यपि कमरे में बैठे उनके क्लर्क, कैशियर और बुककीपर, खबर सुनने के लिए बहुत उत्सुक थे, नरेंद्र ने उन्हें कुछ नहीं बताया और तुरंत ऊपर अपने कमरे में चले गए। पोती। जब वह उसके कमरे में दाखिल हुआ तो उसके हाथ में पत्र था, और सीता, जो अपने बेटे के साथ खेल रही थी, कुछ हैरानी से ऊपर देखने लगी। "तुम्हें मुझे इस हालत में नहीं देखना चाहिए," उसने जल्दी से अपने सुंदर बालों को समेटते हुए और अपनी साड़ी सिर पर ओढ़ते हुए कहा। "हे दादाजी, क्या बात है? और आपने खबर नहीं भेजी? क्या मैं आपके पास नहीं आती?" और वह उठी और उसके पैर छुए। "मैं नहीं चाहता कि तुमसे पहले किसी को पता चले, मेरी बच्ची," उसने कहा।
सीता की गवाही। | 67 ने उसके बगल में बैठते हुए कहा; “यह पत्र नूरपुर से है, और इसमें लिखा है कि तुम्हारी पायल वाले व्यक्ति को ढूंढ लिया गया है।” “मिल गया!” वह चिल्लाई, “और इसे लेने वाले लोग?” “सभी नहीं,” उसने उत्तर दिया, “अभी तक केवल दो ही पकड़े गए हैं; एक के पास पायल थी, और उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। दूसरा…” “ब्राह्मण!” सीता ने कहा; “मैं जानती हूँ, मैं पहले से ही जानती हूँ,” उसने उत्साह में ताली बजाते हुए कहा; “मैंने सोचा था, मैंने उसे अपने सपनों में

देखा है। आह! देवता न्यायप्रिय हैं, और बहादुर अंग्रेज उससे वैसे नहीं डरेंगे जैसे हमारे लोग डरते हैं। न्याय होगा! दोहाई! दोहाई!" "शांत हो जाओ, बच्ची," बूढ़े व्यक्ति ने धीरे से कहा; "यह एक गंभीर मामला है। मैं अंग्रेजों से प्यार करता हूँ, लेकिन वे किसी का लिहाज़ नहीं करते; और अगर मैं मजिस्ट्रेट को यहाँ तुम्हारी गवाही लेने के लिए नहीं बुला सका, तो तुम्हें उसके सामने पेश होना पड़ेगा।" "नहीं!" "यहाँ नहीं, यहाँ नहीं," सीता ने उत्तेजित होकर कहा; "मुझे अदालत जाने दो। विधवा, मजिस्ट्रेट मेरे साथ क्या करेगा? क्या सभी पुरुष उसकी प्रशंसा और प्रेम नहीं करते? जब मैं ब्राह्मण से मिलने उसके शव के ऊपर से गुजरी थी, तब मुझे उससे डर नहीं लगा था।" यादों का सैलाब इतना प्रबल था कि सीता फूट-फूटकर रोने लगी और सिसकियाँ लेने लगी, जिससे आंटी एला जल्दी से कमरे में आ गईं। उन्हें देखकर सीता संभल गईं। "मैं जाऊंगी," उन्होंने शांत भाव से कहा; "मुझे कोई नहीं रोक सकता!" "कहाँ?" बूढ़ी औरत ने अचंभित आँखों से एक से दूसरे की ओर देखते हुए कहा; "कहाँ? यह सब क्या है? सीता, क्या हुआ है?" कुछ ही शब्दों में सब कुछ स्पष्ट हो गया; और आंटी एला, जिनका साहस किसी भी चीज़ से नहीं डगमगाता था, ने तुरंत कहा, "हाँ, वह सही कह रही है; उसे जाना ही होगा, भाई, और उसे जाना चाहिए। उसके जैसी स्त्री के लिए, जिसने कभी अपना चेहरा नहीं छिपाया, न्याय के लिए अपना चेहरा दिखाना कोई शर्म की बात नहीं है— अपने बच्चे के लिए न्याय! "अच्छा," नरेंद्र ने कहा, "तुम दोनों मेरे खिलाफ हो, और मैंने अपना काम कर दिया है; लेकिन सोचो कितने लोग उसे देखेंगे; और अगर वह डर गई, और टूट गई, तो हमारे घर का क्या होगा? "मुझे किसी बात का डर नहीं है, दादाजी," सीकता ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "बिल्कुल नहीं। ऐसे समय में, और अपने दिल की बात किसी ऐसे व्यक्ति से कहने के लिए जो मेरी बात पर विश्वास करे, मैं कलकत्ता तक चली जाऊंगी! "अरे! इसकी कोई चिंता नहीं है," नरेंद्र ने कहा; "मामला नूरपुर या यहीं कहीं तय हो जाएगा; हमें जल्द ही पता चल जाएगा।" अगर मुझे कोई समन मिलता है, तो क्या मैं मान जाऊं कि आप मुझे एक नाशपाती भेजेंगे? "अगर यह मेरे नाम पर है तो इसे मुझे भेज दीजिए," सीता ने उत्तर दिया, "मुझे इस पर हस्ताक्षर करने में कोई डर नहीं है।"

58 सीता। और जब यह पत्र अगले दिन आया, तो उसने इस पर हस्ताक्षर किए, "सीता, हुरे दास की विधवा।" समन में उसे शाहगंज स्थित नूरपुर के कार्यवाहक उपायुक्त माननीय सिरिल ब्रैंडन की अदालत में 15 सितंबर को गवाह के रूप में पेश

होने के लिए कहा गया था। अब 26 अगस्त का दिन था। नूरपुर में पूछताछ तेजी से चल रही थी। गवाह बीरबुल सिंह का पूरा बयान दर्ज कर लिया गया था; और नवाब और राजा के इलाकों में रहने वाले कुछ डाकुओं को पकड़ने के लिए डकैती पुलिस की टुकड़ियाँ भेजी गई थीं, जिन्होंने एक-दो दिन में उनमें से दस को पकड़ लिया। वे खतरनाक बदमाश लग रहे थे; और उन्हें भारी हथकड़ी पहनाई गई थी और कड़ी सुरक्षा में रखा गया था, और एक-दूसरे से अलग रखा गया था। थाने के प्रभारी सहायक आयुक्त श्री नोबल एक युवा थे, जिन्होंने हाल ही में सेवा में भर्ती हुए थे। उन्होंने अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था और उन्हें नूरपुर में नियुक्त किया गया था; लेकिन इतने महत्वपूर्ण मामले में उन्हें अपनी राह स्पष्ट नहीं दिख रही थी, इसलिए उन्होंने न्यायाधीश श्री मोस्टिन से सलाह ली। मोस्टिन ने उन्हें सलाह दी कि वे मामले की प्रारंभिक जांच के लिए कार्यवाहक उपायुक्त (जो उस समय एक दूरस्थ दौरे पर अनुपस्थित थे) को भेजें और उन्हें शाहगंज में कैदियों से जल्द से जल्द मिलने के लिए तैयार करें। इन सभी आधिकारिक व्यवस्थाओं को शीघ्र ही पूरा कर लिया गया; और कैदियों को दो गाड़ियों में नूरपुर में पुलिस की एक टुकड़ी और अनियमित घुड़सवार सेना के एक दल की देखरेख में रवाना किया गया। उनमें अजरील पांडे भी थे, जिन्होंने सभी पूछताछों में घमंडी और अड़ियल रवैया अपनाया था और अपने भाग्य के प्रति उदासीन प्रतीत होते थे। उन्होंने डकैती में अपनी संलिप्तता से स्पष्ट रूप से और कुछ हद तक आक्रामक ढंग से इनकार किया था। उन्होंने कहा कि वे अवध से आए एक अजनबी थे—एक ब्राह्मण, जो व्रत के पालन में रमेशवर की तीर्थयात्रा पर गए थे और रास्ते में शास्त्रों का उपदेश और व्याख्या करते थे। लेकिन इस स्पष्टीकरण का अधिकारियों पर कोई असर नहीं हुआ, और उसकी कैद में ढील देने से भी उसे भागने का कोई मौका नहीं मिला। हालाँकि, पहले मार्च के अंत में, उसका एक पुराना साथी, जो अब पुलिस में था, उसकी सुरक्षा में तैनात था; और अगर संभव हो तो उसकी भागने की योजना बनाने के लिए आसानी से राजी हो गया। अज़राएल ने कहा कि वे जंगलों को सुरक्षित रूप से पार कर सकते हैं, और उसके कई दोस्त हैं जो उन दोनों को शरण देंगे; लेकिन मौका नहीं मिला, पहरेदार बहुत सतर्क थे, और कुछ ही दिनों में दल शाहगंज पहुँच गया, और अपने कैदियों को सुरक्षित सौंप दिया, और उन्हें वापस लौटने के लिए रोक लिया गया। 10 सितंबर की सुबह, जब स्केता खिड़की से शहर को देख रही थी, तो उसने देखा कि

सीता की गवाही। 59 पुजारियों के मंदिर के पास के उपवन में, पेड़ों के नीचे धीरे-धीरे एक सफेद तंबू खड़ा हो रहा था, और सीता जानती थी कि उसकी परीक्षा का समय निकट आ रहा है। उसने पहले भी कितनी बार अंग्रेज मजिस्ट्रेट के तंबू वहाँ लगे देखे थे, बिना उसके या उसके काम के बारे में सोचे? वह निश्चित समय पर आता-जाता था, अपने सार्वजनिक मामलों को निपटाता था, लोगों से मिलता था और जैसे आता था वैसे ही चला जाता था; लेकिन अब स्थिति बिल्कुल अलग थी। उसे उससे सीधा जुड़ाव महसूस हो रहा था। क्या वह उसके साथ दयालु और विचारशील होगा, या वह कठोर और अभिमानी होगा, जैसा कि उसने कई अंग्रेजों के बारे में सुना था? लेकिन उसने उसके बारे में अच्छा ही सोचा। वह जानती थी कि हर कोई उसके बारे में अच्छा बोलता और सोचता था, और कई लोग उसकी प्रशंसा में तड़पते थे। उसने अक्सर सुना था कि वह विनम्र और न्यायप्रिय था, और किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता था। निश्चित रूप से वह न्याय करेगा और एक विधवा और उसके बच्चे की मदद करेगा! यदि वह खुली अदालत में पेश होने के विचार से उत्तेजित थी, तो उसने इसे छिपा लिया; और जब उसकी मौसी उसके पास आईं और उसे तैयार होने को कहा, तो वह खुशी-खुशी उठी और उनकी बात मान ली। “मैं अपने बच्चे को अपने साथ ले जाऊंगी,” उसने धीरे से कहा। “मुझे मजिस्ट्रेट को उसका घाव दिखाना ही होगा।” मौसी एला ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पर सब व्यर्थ। भला उस पर बुरी नज़र कैसे न पड़ सकती थी? वह भयानक ब्राह्मण उसे, उन दोनों को श्राप दे सकता था; लेकिन सीता दृढ़ थी। “हम भगवान के हाथों में हैं,” उसने कोमल स्वर में कहा। “हे मौसी एला, मेरी मदद कीजिए; लेकिन मुझे डराने या मुझे मेरे इस कर्तव्य और मेरी पवित्र प्रतिज्ञा से विचलित करने की कोशिश मत कीजिए, मैं नहीं भटकूंगी।” ग्यारह बजे का समय तय हो चुका था और सीता तैयार थी। उसकी मौसी और दादाजी ने उसे इतना सुंदर कभी नहीं देखा था, जब वह अपने बच्चे को गोद में लिए सीढ़ियों से नीचे उतरी और तहखाने में पहुँची। मौसी एला बहुत भावुक हो गईं और उसे आशीर्वाद देने के लिए उसके सिर पर हाथ रख दिया। “मेरे सिर पर हाथ रखिए,” उसने अपने दादाजी से विनम्रता से कहा, जो भी तैयार थे। “मुझे और बच्चे को आशीर्वाद दीजिए, कोई बुराई हमारे पास नहीं आ सकती।” नरेंद्र ठीक से बोल नहीं पा रहे थे, लेकिन उन्होंने सीता की इच्छा के अनुसार ही किया और उनके लिए उनकी प्रार्थना सच्ची और भावपूर्ण थी। उन्होंने आगे कहा, “पुजारी यहाँ हैं, और वे तुम्हें भी आशीर्वाद देंगे,

सीता, और हम सब साथ चलेंगे।" तभी वामुन भूत आगे आए और सीता और बच्चे के सिर पर हाथ रखकर दोनों को आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा, "निडर रहो, बेटी; कोई तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा या परेशान नहीं करेगा, और श्री ब्रैंडन तो बिलकुल भी नहीं।" तम्बुओं तक ज़्यादा दूर नहीं था। कैदी अभी तक नहीं पहुँचे थे, बल्कि रास्ते में थे, और पालकी को छाया में रख दिया गया, जहाँ सभी लोग एक बड़े तंबू के नीचे बैठ गए।

सीता थोड़ी दूरी पर एक आम के पेड़ के पास खड़ी होकर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी। सीता का बच्चा अत्यंत प्रसन्न था, क्योंकि शिविर उसके लिए एक नया दृश्य था। ताज़ी हरी घास छोटे-छोटे जंगली फूलों से ढकी थी; सफेद तंबू, उनके आसपास घूमते लोग; घोड़े, ऊंट और एक विशाल हाथी ने बच्चे को लगभग चकित कर दिया था; लेकिन वह बहादुर और निडर दिख रहा था, और उसकी माँ ने गर्व से उसे अपने सीने से लगा लिया। तभी उन्हें भारी लोहे की खड़खड़ाहट सुनाई दी, और कैदी और उनके रक्षक धीरे-धीरे उस टीले की ढलान पर चढ़ने लगे जिस पर तंबू लगे थे। सीता की नज़र ने ब्राह्मण की लंबी आकृति को तुरंत पहचान लिया; लेकिन वह उसके चेहरे के हाव-भाव नहीं देख पाई। रक्तपात का दृश्य एक बार फिर उसकी आँखों के सामने आ गया, जिससे वह कांप उठी; लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उसका हौसला बढ़ता गया। घर पर, और बुलावा आने के बाद से, वह अक्सर चिंतित और घबराई रहती थी; लेकिन जैसे-जैसे उसकी परीक्षा का समय निकट आया, सारी आशंका दूर हो गई। वह मजिस्ट्रेट के सामने शर्मिंदा हो सकती थी; लेकिन उनका एक गंभीर कर्तव्य था, और वे निडर थीं। तभी उन्होंने मजिस्ट्रेट को देखा, एक लंबा, गोरा युवक, तेज और मजबूत कदमों से अपने निजी तंबू से सार्वजनिक कुचेरी में आया; और उनके बीच लगभग सन्नाटे के बाद, एक संदेशवाहक आगे आया और जोर से चिल्लाया, "सीता, हुरे दास की विधवा, अदालत में पेश हों और अपना बयान दें!" और दल उठकर उसके पीछे चल दिया। पहले कुछ बयान और अन्य दस्तावेज़ पढ़े जा चुके थे, जैसे कि जांच का फैसला, गोकुलपुर की पुलिस रिपोर्ट, नूरपुर के सुनारों के बयान, और अन्य; और मजिस्ट्रेट सीता के समन पर हस्ताक्षर की उत्सुकता से जांच कर रहे थे। अक्षर, "सीता, हुरे दास की विधवा," बहुत ही नाजुक और सुंदर थे; उन्होंने पहले कभी ऐसे अक्षर नहीं देखे थे, और उन्हें आश्चर्य हुआ कि कोई महिला इन्हें कैसे लिख सकती है। "निश्चित रूप से ये उसके अपने नहीं हैं," उन्होंने अपने सेरिष्टदार, या प्रमुख अधिकारी

से कहा। “कोई महिला इस तरह नहीं लिख सकती।” “वह एक अजीब लड़की है,” उसने उत्तर दिया, “और लोग कहते हैं कि वह बहुत पढ़ी-लिखी है। हाँ, हस्ताक्षर निस्संदेह उसी के हैं; कोई पुरुष इस तरह नहीं लिख सकता।” यह सुनकर सिरिल ब्रैंडन और भी आश्चर्यचकित हो गया। “वह कैसी होगी?” उसने मन ही मन यह निष्कर्ष निकाला था कि सीता अपने वर्ग की अन्य महिलाओं से किसी भी तरह से अलग नहीं होगी; शांत, विनम्र और संकोची, फिर भी किसी भी तरह से दिलचस्प नहीं; और उसे अंदर बुलाने का आदेश देकर उसने चारों ओर देखा। तंबू बड़ा था। उसके एक तरफ कैदी जमीन पर बैठे थे, जिनकी पहरेदारी पुलिस सिपाही कर रहे थे।
सीता का बयान। पृष्ठ 61 दूसरी ओर, अदालत के मुंशी और अधिकारी बैठकर लिख रहे थे। श्री ब्रैंडन के पास उनके सेरिष्टदार, बयान लिखने में माहिर मुंशी, और नूरपुर से आए एक वकील थे, जो आम तौर पर कैदियों और विशेष रूप से ब्राह्मण की ओर से उपस्थित थे। सिरिल ब्रैंडन एक छोटी मेज के सामने बैठे थे, जिस पर लिखने का सामान और संदर्भ के लिए एक किताब रखी थी। जब सीता और उनकी चाची पुजारी और अपने दादा के साथ अंदर आईं, तो तम्बू का दरवाजा कुछ अंधेरा था; लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी निर्धारित जगह ली, बाहर से आती रोशनी उन पर पूरी तरह पड़ी, और युवा मजिस्ट्रेट ने सोचा कि उन्होंने इतनी सुंदर स्त्री पहले कभी नहीं देखी थी। वास्तव में, वे आश्चर्य से अपनी बात कहने से खुद को मुश्किल से रोक पाए; लेकिन उन्होंने खुद को संभाला और समन दिखाते हुए धीरे से कहा, "सीता, हुरे दास की विधवा, क्या यह आपके हस्ताक्षर हैं?" "यह मेरे हैं," उन्होंने विनम्रता से कहा, अपनी आँखें उनकी ओर उठाते हुए। "मैंने इसे अपने हाथों से लिखा है, और मैं अपनी मर्जी से आई हूँ।" बड़ी-बड़ी नम आँखें कोमल और विनती भरी थीं, लेकिन उनमें कोई संदेह नहीं था, और लड़की बिल्कुल शांत थी। सीता ने हरे रंग की, गहरे लाल रंग की, रेशमी साड़ी पहनी थी, जिसके किनारों और सिरों पर सुनहरे धागे की कढ़ाई थी, और साड़ी का वह सिरा, जिसे उसने अपने सिर के ऊपर से निकाला था, उसके दाहिने हाथ पर पड़ा था और उसके गोरे रंग और गोल आकृति के साथ एक अलग ही आभा बिखेर रहा था। यदि उसके चेहरे के भाव बिल्कुल एक जैसे नहीं थे, तो भी वे बहुत प्यारे और भावपूर्ण थे; उसकी आँखें बड़ी और कोमल थीं, उस साफ गहरे भूरे रंग की, जो कुत्ते की आँखों की तरह हमेशा प्रेमपूर्ण और सच्ची होती हैं। यदि मुँह का रंग थोड़ा सा भी समरूपता से परे था, तो भी वह गतिशील और भावपूर्ण था, और ऊपरी होंठ की

वक्रता लगातार बदलती रहती थी। सिरिल ब्रैंडन ने किसी भी देशी महिला को इतना गोरा या इतने कोमल रंग का कभी नहीं देखा था। उन्हें याद आया, टिटियन के चित्रों में कई सुंदर महिलाएं ऐसी ही थीं - एक समृद्ध सुनहरा जैतून रंग, जिसकी त्वचा के नीचे एक चमकीला लाल रंग उभरता था - और सीता का रंग भी उन्हीं जैसा था। एक छवि विशेष रूप से उनकी स्मृति में कौंध गई - लूव्र संग्रहालय में ड्यूक डी'अवालोस की पत्नी; या बर्लिन में टिटियन की बेटी, फल और फूल लिए हुए। वह सीता के शरीर को ठीक से नहीं देख पा रहे थे; लेकिन छोटा, सुडौल सिर, गोल भुजा, नन्हा पैर, गर्दन की सुंदर गति और तम्बू में प्रवेश करते समय उसके लचीले और फुर्तीले कदम ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि यह चेहरा से कम सुंदर नहीं हो सकता। यह भी विचित्र था कि दरबार में सभी का आक्रोश भड़क उठा था, और यहाँ तक कि कुछ कैदियों के मुँह से भी, जो अभी भी ज़मीन पर बैठे थे, मानो एक गहरी साँस ली हो।

62 सीता। “आपकी माँ, आपको दुखद परिस्थितियों के बारे में बोलने के लिए बुलाया गया है; लेकिन डरिए मत, आप कानून की शरण में हैं और कोई आपको नुकसान नहीं पहुँचा सकता। आपको ईश्वर की उपस्थिति में यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि आप बिना किसी भय और पूर्वाग्रह के सत्य बोलेंगी। आपकी आयु क्या है और आप कहाँ रहती हैं?” “मैं देवताओं और आपके सामने सत्य बोलूँगी,” उसने शांत भाव से कहा। “मुझे कोई भय नहीं है। मैंने जो देखा है, मैं बताऊँगी। मेरी आयु सत्रह वर्ष है और मैं अभी अपने दादाजी के साथ रहती हूँ, जो यहाँ उपस्थित हैं।” “क्या आप बैठेंगी?” उन्होंने पूछा, जब यह सब रिकॉर्ड किया जा रहा था। “नहीं,” उसने कहा, “मैं थकी नहीं हूँ और खड़ी रहना पसंद करूँगी,” और उसे बोलने के लिए कहा गया। हम पहले से ही इतना कुछ जानते हैं कि उसने क्या कहा था, इसलिए इसे दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। स्केता ने बताया कि कैसे उसने शाहगंज में दिन बिताया, कैसे उसके पति ने उसे पालकी में घर भेजा, और कैसे वह शाम तक काम में लगी रही, जब रामदास अंदर आया। उसने रामदास की सारी बातें नहीं सुनीं; लेकिन उसने देखा कि उसके पति ने एक कागज़ फाड़कर उसमें आग लगा दी; और रामदास ने उसे उससे छीनने की कोशिश की, लेकिन उसे रोक लिया गया, और थोड़ी हाथापाई हुई, जिसके बाद रामदास गुस्से में उठकर चला गया। उसने कहा कि वह परेशान और चिंतित थी, क्योंकि उनके बीच पहले ही कई बार कहा-सुनी हो चुकी थी; लेकिन उसके पति ने इसे हल्के में लिया, उसे आराम करने को कहा और कुछ ज़रूरी गहने बनाने में लग गया;

और शायद आधी रात हो चुकी थी जब उसने काम बंद किया। उसकी इच्छा के अनुसार उसने उसका बिस्तर बाहरी बरामदे में रख दिया, जहाँ वह दिन में बैठता था; लेकिन वह कुछ समय तक उसके पास नहीं गई, क्योंकि वह अपने बच्चे की देखभाल कर रही थी। “जे.टी. इसका कारण नहीं बता सका,” उसने आगे कहा; और अब हम उसके बयान का अनुसरण कर सकते हैं। मैं उदास थी और सो नहीं पा रही थी; मैंने लड़के को गोद में लिया और अपने पति के पास बैठ गई, और मच्छरों को उससे दूर रखती रही। मुझे नहीं पता रात कैसे गुज़री; लेकिन मैं पूरी तरह जाग रही थी, और नींद आने का इंतज़ार कर रही थी। कुछ देर बाद मुझे दूर से एक चीख और कराहने की आवाज़ सुनाई दी, और मैंने लगभग अपने पति को जगा ही दिया था, लेकिन कुछ नहीं हुआ, और मैं फिर से शांत हो गई। तब तक चाँद निकल चुका था, फिर भी ज़्यादा रोशनी नहीं थी। तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जैसे बाहरी द्वार हिल गया हो; लेकिन मैंने मन ही मन सोचा, ये तो बस पहरेदार हैं, रामा और बूटू, और मुझे ज़रा भी डर नहीं लगा। फिर से सन्नाटा छा गया, शायद पाँच मिनट के लिए। फिर कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने सोचा कि शायद हमारे लोग खेतों में पहरा देकर लौट रहे होंगे; लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। “फिर आवाज़ पास आती गई—पास, पास!” लड़की ने अजीब हाव-भाव और ज़ोर से कहा; “मैंने अपने |
सीता की गवाही। 63 मेरे पति ने करवट बदली, लेकिन वह केवल करवट बदलकर बोले, 'मुझे सोने दो, सीता,' और जागे नहीं। तभी मैंने अचानक दीवार के ऊपर से एक आदमी का सिर देखा, लगभग उतना ही ऊँचा जितना कि!”—और उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया—“ मेरे ऊपर और मेरे सामने। मैंने चीखने की कोशिश की, लेकिन मेरी जीभ सूख गई थी, मेरा मुँह सूख गया था। मैं न बोल सकती थी, न चीख सकती थी, न प्रार्थना कर सकती थी। मैं जैसे गूंगी हो गई थी। मैंने अपने पति को और ज़ोर से खींचा, और उन्होंने मेरा हाथ झटक दिया। फिर वह आदमी, जिसने मुझे ज़रूर देखा होगा, पहरेदार के शेड की छत पर कूदा, फिर ज़मीन पर, और अपनी कुल्हाड़ी से दरवाज़े की लकड़ी की छड़ को दो टुकड़ों में काट दिया; और तभी, और केवल तभी, मेरे पति जागे और उठे। ‘दूर हटो, संप्रदाय!’ उसने अपनी तलवार झट से नीचे उतारते हुए चिल्लाया, ‘बच्चे को बचाओ;’ और जैसे ही उसने ये कहा, जलती हुई मशालें लिए चार आदमी अंदर घुस आए, उनके पीछे और भी लोग थे, सभी के चेहरे विकृत थे। मुझे नहीं पता कितने थे। मेरे पति सीढ़ियों के ऊपर तलवार हाथ में लिए उनका

सामना करने के लिए खड़े हुए और सबसे आगे वाले आदमी पर वार किया, जो बहुत लंबा और उन्हीं की तरह हट्टा-कट्टा था; मशालें लिए आदमी सीढ़ियों के दोनों ओर थे। मैं प्रार्थना कक्ष में भाग गई, जिसका दरवाजा बंद नहीं था, और मुझे सब कुछ ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे दिन हो। मेरा बेटा मेरी बाहों में था और गहरी नींद में सो रहा था; वह मेरी कमर पर टिका हुआ था, जैसा कि वह अब भी है। एक पल में ही मैंने देखा कि मेरे पति को उस लंबे आदमी ने सीने में भाले से मारा और दूसरों ने भी उन पर वार किया। वह खून से लथपथ पीछे लड़खड़ाए और मेरी ओर गिर पड़े। मैंने उन्हें पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत भारी थे, और मुझे लगता है कि मैं भी उनके साथ गिर पड़ी। मुझे लगता है, महोदय, कि तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी, क्योंकि जहाँ तक मुझे याद है, वे हिले-डुले नहीं थे। वह कुछ देर रुकीं, और सिरिल ब्रैंडन ने उनसे विनम्रतापूर्वक पूछा कि क्या उन्हें पानी चाहिए? “नहीं, महोदय,” उन्होंने कहा; “मुझे और कुछ नहीं कहना है, और लेखक मुझे भ्रमित नहीं करता। वह ठीक वही लिखता है जो मैं कहती हूँ, है ना?” “बिल्कुल,” उन्होंने उत्तर दिया: “आप जो बोलती हैं, शब्दशः।” फिर उसने आगे कहा, “मुझे लगा कि वह मरा नहीं है, बल्कि बेहोश हो गया है, और पता नहीं मेरे मन में यह विचार कैसे आया, लेकिन मैंने अपनी साड़ी इस तरह ली—और उसका एक सिरा अपने सिर से नीचे लटकाकर हाथों में थाम लिया—और अपने पति के ऊपर से गुज़रते हुए उन पुरुषों से विनती की कि वे उसे मुझे दहेज के रूप में दे दें, उनकी माताओं और उनके बच्चों की खातिर। ओह, मैंने उनसे अपने बच्चे की खातिर मेरी बात सुनने की गुहार लगाई! आप जानते हैं, महोदय, मैं इससे अधिक गंभीर अपील नहीं कर सकती थी, और हमारे पिता ने हमें बताया है कि इसे कभी अस्वीकार नहीं किया जाता। आह, महोदय! उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया—उन्होंने मेरी पुकार को अनसुना कर दिया!” और पहली बार ब्रैंडन ने उसकी आँखों से आँसू बहते देखे।

64 सीता। “लंबा आदमी बड़बड़ाते हुए गाली देते हुए आगे बढ़ा, और उसने और दो अन्य लोगों ने मेरे पति के शरीर पर कई बार भाले से वार किया; इससे पहले कि मैं बोलना बंद कर पाती, एक डाकू—एक और आदमी—ने अपने भाले से मुझ पर हमला किया, जिससे मेरी कमर में और मेरे बेटे के पैर में चोट लगी। देखिए, महोदय, ये मेरे घाव का निशान है,” और उसने बियानडन को दिखाने के लिए अपनी साड़ी अपनी बांह से ऊपर उठाई; “और ये मेरे बेटे का घाव भी है; इसे देखिए, महोदय। मैं आपके

और ईश्वर के सामने केवल सच बोल रही हूँ।" "फिर मैं मानो मरी हुई सी पड़ी रही, हालाँकि मैंने सब कुछ होते हुए देखा। एक आदमी आया और उसने मेरे सीने से मेरा हार छीन लिया; दूसरे ने मेरी पायल ढीली करने की कोशिश की और एक पायल ले ली। मैं उसे अभी मेज पर देख रही हूँ, और ये दूसरी है;" और वह नीचे झुकी और अपने टखने से एक पायल ढीली की। "इनकी तुलना कीजिए, महोदय। मेरे दादाजी ने मुझे ये पायलें दी थीं, और उन्होंने और मेरे पति ने इन्हें अपने हाथों से बनाया था और इन पर निशान लगाए थे।" फिर, जब वह आदमी दूसरी पायल खींच रहा था, तो मैंने बाहर से एक गोली चलने की आवाज़ सुनी और बहुत शोर हुआ; और अंदर से लंबा आदमी बाहर आया: और जैसे ही वह हिला, उसने अपना खून से सना भाला मुझे फिर से मारने के लिए उठाया, मैं पूरी तरह होश में थी, और मैंने उस पर एक सोने का किनारा रोशनी में चमकता हुआ देखा, और उस पर सोने के बिंदु थे। "क्या आप इसे फिर से देखने पर पहचान पाएंगी?" ब्रैंडन ने पूछा। "मुझे लगता है; नहीं, मुझे यकीन है कि मैं पहचान लूंगी," उसने दृढ़ता से कहा; "उसमें दो सोने के छल्ले और उनके बीच कुछ बिंदु थे; और मैंने उन्हें तब देखा था जब वह आदमी कुल्हाड़ी से ज़मीन खोद रहा था और उसने अपना भाला नीचे रख दिया था; भाले की धार मेरे पास ही थी।" "क्या यही है, मैडम?" ब्रैंडन ने पूछा। "तुममें से कोई एक उसे दिखाओ।" सीता स्पष्ट रूप से कांप उठी; लेकिन, नूरपुर में असर्देल पांडे के पास मिले हथियार, उसके भाले को देखकर, उसने दृढ़ और स्पष्ट आवाज़ में कहा, "यही वह भाला है; ये रहे भाले के चारों ओर सोने के किनारे, और उनके बीच सोने के बिंदु। हाँ, इसी से मेरे पति की हत्या हुई थी। "और क्या आपको इससे चोट लगी थी?" "नहीं, श्रीमान, वह एक लंबा, पतला ब्लेड था; लेकिन अगर मैंने उसे देखा होता, तो मैं उसे पहचान लेती, मुझे पूरा यकीन है।" "इस हथियार को मंगवाया जाए," ब्रैंडन ने कहा; "उन सभी को यहाँ होना चाहिए था। क्या आपको और कुछ बताना है?" उसने सीता से पूछा; "अगर हाँ, तो बताओ।" "मैंने कहा था कि उस लंबे आदमी ने मुझ पर अपना भाला उठाया," उसने आगे कहा; "लेकिन जैसे ही उसने ऐसा किया, उसके बगल में खड़े एक आदमी ने फटी हुई, कर्कश आवाज में कहा, 'मालिक, एक मरी हुई औरत पर वार मत करो; मैंने उसे खुद मारा है;' और वे आगे बढ़ गए। मैं अपनी जान की शुक्रगुजार हूँ।"

66 सीता। "अदालत में सन्नाटा छा जाए!" ब्रैंडन चिल्लाया; क्योंकि आश्चर्य और प्रशंसा की एक हल्की सी आवाज़ गूंज उठी थी। "यहाँ कोई बोलना या प्रदर्शन नहीं

होना चाहिए। गवाह का बयान पढ़कर सुनाया जाए, और उसे उस पर हस्ताक्षर करके जाने दिया जाए; यानी," उसने वकील से कहा, "यदि आपके पास कोई प्रश्न नहीं हैं।" "इस गवाह से मेरा कोई प्रश्न नहीं है," उसने उत्तर दिया; "मैं मुकदमे के दौरान उससे जिरह करूँगा।" फिर सीता का बयान उसे पढ़कर सुनाया गया, और उसने कहा कि यह सही है; और बैठकर, उसने कागज़ लिया, और पहले जैसी ही लिखावट में लिखा, "सीता, हर्स दास की विधवा। यही सत्य है।" "आप उसे घर ले जा सकते हैं, नरेंद्र," श्री ब्रैंडन ने कहा, "और जीवन भर उस पर गर्व करें। मैंने अपने अनुभव में पहले कभी इतनी स्पष्टता, इतने दृढ़ संकल्प और इतने विस्तार से गवाही देते हुए नहीं सुना। मैं उसका सम्मान करता हूँ, महोदय, और इस अदालत में हर कोई उसके और आपके साथ सहानुभूति रखता है।" बूढ़ा आदमी लगभग टूट गया; लेकिन अंत में उसने कहा, "महोदय, आपकी कृपा के लिए आभार व्यक्त करना कम है। काश हम जानते कि इसे कैसे प्रकट करें। महोदय, मैं अपनी पोती की ओर से आपको अत्यंत विनम्रतापूर्वक धन्यवाद देता/देती हूँ।" और जैसे ही बूढ़े व्यक्ति ने ये कहा, ब्रैंडन को लगा कि लड़की के चेहरे और आँखों में कृतज्ञता का एक कोमल भाव दिखाई दिया, जो उसने पहले कभी नहीं देखा था, जब वह वहाँ से चली गई। क्या वह उसे फिर कभी देख पाएगा? शायद कभी नहीं; क्योंकि मुकदमा नूरपुर में होना था, और वह शायद बहुत दूर होगा। उसे अभी बहुत कुछ करना था, और कई अन्य गवाहों से पूछताछ करनी थी। इनमें से, शायद वामुन भूत, जिसने कैदी अज़रील के सामने स्पष्ट रूप से शपथ ली थी कि वह डकैती की दोपहर तक पास के मंदिर में रहा था, और बुलदेव और तीन अन्य लोगों के सामने, जो उस समय उसके साथ थे—सबसे महत्वपूर्ण था। इस प्रकार अगले दिन मामला समाप्त हो गया, और गिरोह के ग्यारह सदस्यों को नूरपुर अदालत में मुकदमे के लिए भेज दिया गया। बुलदेव को गवाह के तौर पर रोक लिया गया और शाहगंज में मामला बंद कर दिया गया; लेकिन श्री ब्रैंडन अपनी ज़िंदगी के आखिरी दिन तक सीता की गवाही को नहीं भूले। "मैंने दादाजी और चाची एला से कहा था कि मैं असफल नहीं होऊंगी," सीता ने चमकती आँखों से बाहर जाते हुए कहा; "और अब यह हो गया है, और वह मेरे प्रति दयालु थे। क्या वह लड़का हीरो नहीं था? क्या वह मुकदमे से डर गया था?" लेकिन वे इतने भावुक थे कि जवाब नहीं दे सके।

अध्याय 9. नूरपुर का समाज। माननीय सिरिल ब्रैंडन इस समय नूरपुर जिले के

कार्यवाहक उप आयुक्त थे। वास्तव में वे प्रथम सहायक थे; लेकिन उनके वरिष्ठ अधिकारी, मेजर ग्रांट, लंबी बीमारी से अस्वस्थ होकर कलकत्ता में अवकाश पर गए थे और उन्होंने पत्र लिखकर कहा था कि यदि अनुमति दी जाए तो वे बीमारी की छुट्टी पर इंग्लैंड जाएंगे। अतः श्री ब्रैंडन के पास एक लंबे कार्यकाल की संभावना थी। वे एक प्राचीन परिवार से थे जिसके पास काउंटी में काफी संपत्ति थी; और हिल्टन हॉल, परिवार का मुख्य निवास, ट्यूडर शैली की वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना था और काउंटी के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक था। महारानी ऐनी के शासनकाल में, जॉर्ज हिल्टन, अपनी निष्ठा और महत्वपूर्ण स्थानीय सेवाओं के लिए प्रसिद्ध, को हिल्टन के बैरन हिल्टन की उपाधि से सम्मानित किया गया था। परिवार की प्राचीनता और स्थानीय स्तर पर उसके गौरवशाली स्थान को देखते हुए कई लोगों का मानना था कि कुलीन उपाधि स्वीकार करना अनावश्यक और अपमानजनक था, और इससे बचा जा सकता था या इसे अस्वीकार किया जा सकता था; लेकिन जिसे यह उपाधि प्रदान की गई वह एक कट्टर वफादार था, और मानता था कि अपने संप्रभु की इच्छा का पालन करना ही उसके कर्तव्य की सच्ची कसौटी है। सिरिल ब्रैंडन के पिता, सिरिल, दो भाइयों में सबसे छोटे थे; सबसे बड़े भाई, जॉन, के पास उपाधि और जागीरें थीं, जो उनके पिता और दादा के जीवनकाल में भारी गिरवी के बोझ तले दबी होने के कारण आय में काफी कम हो गई थीं, और सबसे छोटे भाई, सिरिल को केवल अपेक्षाकृत कम भत्ता मिलता था। बार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद, सिरिल को अच्छी तरह से संपत्ति विरासत में मिली, और वह अपनी जागीर और पत्नी की संपत्ति से मिलने वाले भत्ते के साथ बारी-बारी से लंदन और महाद्वीप में आराम से जीवन व्यतीत करता था। जॉन, लॉर्ड हिल्टन ने शादी की थी; लेकिन उनकी पत्नी कमजोर थीं, और अंततः उनकी कोई संतान नहीं हुई। इस इतिहास के लिखे जाने से लगभग चार वर्ष पहले, लॉर्ड हिल्टन का भी निधन हो गया था, और उनके भाई सिरिल ने उनका स्थान लिया था। यदि इस घटना का पूर्वाभास किया जा सकता, तो संभवतः उन्होंने अपने दूसरे पुत्र के लिए हैलीबरी कॉलेज भेजने और उसे भारत की सिविल सेवा में प्रवेश देने के बजाय कुछ और व्यवस्था की होती; लेकिन युवा सिरिल ने जानबूझकर यह पेशा चुना था। भारत, उसका इतिहास और वहां के लोग हमेशा से ही उनके लिए आकर्षण का केंद्र रहे थे; उन्होंने वहां प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले महान व्यक्तित्वों का अध्ययन किया और उनका अनुकरण करने की तीव्र इच्छा रखी। इंग्लैंड में आजीवन संघर्ष के अलावा

कोई और विशिष्टता की संभावना नहीं दिख रही थी।
सीता ने अपने पिता से वार्षिक भत्ता लेने और वकालत, सेना या चर्च में अपना भाग्य आजमाने का प्रस्ताव रखा। उन्हें इनमें से किसी भी पेशे में मदद की पेशकश की गई थी; लेकिन उन्होंने सभी को तरजीह देते हुए भारतीय सिविल सेवा को चुना, और अपनी माँ के कुछ विरोध के बाद, उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार करने की अनुमति मिल गई। लगभग दो साल पहले, उनके पिता, जो हमेशा से कुछ हद तक दुर्बल थे, अचानक कमजोर पड़ गए और उनका निधन हो गया; और उनके बाद उनके सबसे बड़े बेटे जॉन, वर्तमान लॉर्ड हिल्टन, उत्तराधिकारी बने, जो अपनी माँ और बहनों, फ्लोरेंस और ऑगस्टा के साथ परिवार के सदस्य थे। फ्लोरेंस सिरिल से बड़ी थीं और उनकी शादी जल्दी हो गई थी, वास्तव में भारत जाने से पहले ही। ऑगस्टा, जो उनसे कई साल छोटी थीं, अभी भी अविवाहित थीं। सिरिल और उनके दो बच्चे थे, जिनमें से एक लड़का, बचपन में ही मर गया था; दूसरी, जूलिया, सुंदरता और प्रतिभा की अपार संभावनाओं के बावजूद, तपेदिक से पीड़ित हो गई और अपने पिता से कुछ समय पहले ही मर गई, और कई लोगों का मानना था कि इस घटना ने उनके अंत को शीघ्र कर दिया। इस प्रकार, सिरिल ब्रैंडन भारत आए; आरंभ में साधारण श्री ब्रैंडन के रूप में, लेकिन अपने पिता के पदभार ग्रहण करने पर, रिवाज़ के अनुसार उन्होंने मानद उपाधि धारण कर ली। भारत में उनकी प्रगति का वर्णन करना मेरे लिए आवश्यक नहीं है। यदि वे कुलीन वर्ग से संबंधित न भी होते, तो भी उनकी प्रतिभा उन्हें शीघ्र ही एक उच्च पद दिला देती। उन्होंने हैलीबरी विश्वविद्यालय में गहन अध्ययन किया था; संस्कृत में, जिसके वे अत्यंत प्रिय थे, और फ़ारसी, विधि तथा महाविद्यालय के अन्य विषयों में उन्होंने अनेक पुरस्कार जीते; और बचपन में अपने पिता के पेरिस, फ्लोरेंस और रोम में बार-बार रहने के कारण उन्हें फ्रेंच और इतालवी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया था, जिससे उन्हें आधुनिक भाषाओं के मामले में अपने सहपाठियों पर बहुत लाभ मिला। ग्रीक और लैटिन में उनकी कुछ कमियाँ अवश्य थीं; लेकिन उन्होंने दोनों भाषाओं का इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि वे पूरी तरह असफल नहीं हो पाए। वह एक उत्कृष्ट चित्रकार और कलाकार थे; और उनकी माँ, जो स्वयं एक प्रशंसनीय संगीतकार थीं, ने उन्हें फ्लोरेंस में वादन और गायन दोनों की अच्छी शिक्षा दिलाई थी। कलकत्ता में सफल परीक्षा, कई असाधारण प्रतिभाओं, एक सुखद और हंसमुख स्वभाव और व्यक्तित्व, तथा पारिवारिक संबंधों के मजबूत प्रभाव के कारण, युवा ब्रैंडन को अपने

सेवा क्षेत्र का चुनाव करने का अवसर दिया गया; और एक उच्च पदस्थ मित्र की सलाह पर, उन्होंने गैर-विनियमित प्रांतों को चुना, क्योंकि यह उनके प्रयासों के लिए सर्वोत्तम क्षेत्र था। उनके मित्र ने लिखा, "अपने लिए सोचो, अपने लिए कार्य करो; जिम्मेदारी से कभी मत डरो, और जब तुम्हें सुधार का मार्ग दिखाई दे, तो उसे निडरता से व्यक्त करो।"

नूरपुर में समाज। 69 और आप निश्चिंत हो सकते हैं कि सरकार का वर्तमान प्रमुख आपका समर्थन करने में असफल नहीं होगा, और जब आपको इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं होगी तब वह आप पर ध्यान देगा।" सिरिल ब्रैंडन को भारत में आए अब छह साल हो चुके थे। वह दुबले-पतले और कमज़ोर युवक थे, जिनकी माँ के अनुसार उनका स्वास्थ्य नाज़ुक था। दरअसल, अगर वह इंग्लैंड में ही रहते तो उनकी माँ को उनकी सेहत की चिंता सताती थी। भारत में सेवा करने की सिरिल की प्रबल इच्छा को स्वीकार करने का सबसे बड़ा कारण यही था कि उन्हें गर्म जलवायु में रहने का मौका मिलेगा। अब वह संकट से उबर चुके थे और शुरू से ही उनका स्वास्थ्य उत्तम था। वह लंबे, बेहद सुगठित और चलने-फिरने में आकर्षक थे। उनके चेहरे की बनावट शायद पूरी तरह से सुगठित न हो, फिर भी वह निसंदेह बेहद सुंदर थे। उनकी शक्ल देखते ही जो चीज़ नज़र आती थी, वह थी उनका चौड़ा, सफ़ेद माथा, जिस पर उनके चमकदार भूरे बाल घनी लहरों की तरह गुच्छों में थे, उनकी घनी भौहें, बेहद स्पष्ट और गंभीर नीली आँखें, लंबी काली पलकों से घिरी हुई, उनका प्यारा मुँह, चमकदार रंगत, बेहद सफ़ेद दाँत और एक भरी हुई ठुड्डी, जिसमें और उनके पूरे चेहरे में दृढ़ता और दृढ़ संकल्प झलकता था। उन्होंने गहरे भूरे रंग की, मुलायम और घुंघराली मूंछें और दाढ़ी रखी हुई थी; और उनका रंग हमेशा पीला रहता था। इंग्लैंड, अब स्वस्थ और तंदुरुस्त था। जिस ऊंचे पठार पर उसका जिला स्थित था, वहां की जलवायु भारत के हिसाब से स्फूर्तिदायक और सुखद थी, और उसे पूरी तरह से रास आई थी। उसने शुरू से ही खेल-कूद में बड़ी लगन दिखाई थी, और बंदूक या राइफल से उससे बेहतर निशानेबाज और उससे अधिक साहसी घुड़सवार पूरे देश में कोई नहीं था। अपने जिले के मूल निवासियों के बीच वह पहले से कहीं अधिक लोकप्रिय हो चुका था। उसकी कभी न खत्म होने वाली मिलनसारिता और अच्छा स्वभाव, उसका हंसमुख धैर्य, सबसे विनम्र लोगों के लिए भी उसकी सहज सुलभता, सभी वर्गों के उत्थान और उन्नति के लिए उसकी स्पष्ट इच्छा, और आधिकारिक जीवन की कठोर यांत्रिक प्रक्रियाओं और नियमों

को नरम करने के लिए उसके यथासंभव प्रयास—ने उसे, जैसा कि मैंने कहा है, सामान्य से कहीं अधिक लोकप्रियता दिलाई थी; और जैसे-जैसे वह साल दर साल अधिक प्रसिद्ध होता गया, उसके चरित्र के उत्तम गुणों की और अधिक सराहना होती गई। उसे पता नहीं था, लेकिन कई महिलाएं, चाहे वे कितनी भी विनम्र क्यों न हों, हर रात अपने धर्म के साधारण मंदिर के सामने दीपक जलाते समय और अपने बच्चों को शिक्षा देते समय अपने घर के देवी-देवताओं के साथ उसका नाम दोहराती थीं। यह कहना गलत नहीं होगा कि कई असभ्य ग्रामीण कवियों ने गाथागीत लिखे थे, और गाँव के उत्सवों में गायकों ने उनकी प्रशंसा में उन्हें गाया था। उन्होंने अपने प्रांत की आम बोलचाल की भाषा को पूरी तरह से सीख लिया था और लगभग आम लोगों की तरह ही बोलते थे; और वे अपने साधारण पत्रों को बिना किसी कठिनाई या त्रुटि के पढ़ और उत्तर दे सकते थे। सिरिल ब्रैंडन के सभी वर्गों के कई स्थानीय मित्र थे। सीता ने उनके रीति-रिवाजों और परंपराओं का गहन अध्ययन किया था, इसलिए लोग उनके साथ सहज महसूस करते थे; लेकिन वे अपने कर्तव्यों के प्रति इतने सख्त और निष्पक्ष थे कि किसी ने भी कभी मनमानी करने का सपना नहीं देखा। उन्होंने चापलूसी की कभी अनुमति नहीं दी, जिसकी हिम्मत कुछ ही लोग करते थे। शायद सिरिल का उच्च कुल और परिवार, जिसके बारे में जिले में उनके आगमन के तुरंत बाद सभी को पता चल गया था, ने उनकी काफी मदद की; क्योंकि वास्तव में भारत के मूल निवासियों में इससे अधिक जिज्ञासा का विषय कोई और नहीं है, और अन्य गुणों के साथ मिलकर कोई भी गुण इतनी जल्दी या इतनी पूरी तरह से लोगों की राय को प्रभावित नहीं करता जितना कि कुलीन वंश; और सिरिल का न्याय और उदारता, और उनके व्यवहार का मधुर आकर्षण, जो वास्तविकता और आदर्श का मिश्रण था, ने सभी का दिल जीत लिया। उनके शत्रु भी थे, इसमें कोई संदेह नहीं, क्योंकि उनके शत्रुओं के शत्रु भी थे, क्योंकि उन्होंने अपराध को अपनी दृढ़ता से, जहाँ तक संभव हो सका, कुचल दिया था; और वे सभी प्रकार की छोटी-मोटी वसूली, उत्पीड़न और गबन को दबाने में भी उतने ही कठोर थे। हालांकि वे लोगों के बीच जीवन के अनेक संबंधों में सादगीपूर्ण आदतों, दानशीलता, भक्ति और एक-दूसरे के प्रति विश्वास की प्रशंसा करते थे, फिर भी उनकी कमियां भी उन्हें उतनी ही स्पष्ट दिखाई देती थीं; और यद्यपि उनके आधिकारिक कर्तव्यों ने स्वाभाविक रूप से छल और अपराध के सबसे मजबूत पहलुओं को उजागर किया, फिर भी वे अपने आसपास मौजूद उच्च गुणों की कभी न

चूकने वाली सराहना के साथ ओर मुड़ जाते थे। काश, मैं दिल से चाहता हूँ कि सिरिल ब्रैंडन जैसे और भी लोग होते, हालांकि अभी भी बहुत से लोग हैं। उनके जैसे लोगों ने भारतीय प्रशासन के सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किए थे, लाखों लोगों के शासक रहे थे, सेनाओं का नेतृत्व किया था और विजय प्राप्त की थी, और आज भी सभी धर्मों और वर्गों के लोगों के विचारों और स्मृतियों में उनके नाम बसे हुए हैं। लेकिन ऐसे लोग नहीं हैं जो भारत को "नरक का गड्ढा" घोषित करते हैं। जो लोग अपने लोगों के बारे में गलत सोचते और बोलते हैं, जो उन्हें सहानुभूति और मदद से वंचित रखते हैं, जो उन्हें "नीग्रो" और "काले लोग" कहकर पुकारते हैं, मानो वे नीग्रो जंगली हों, जो उन पर घमंड से हावी होते हैं, जो उनके साथ रहने से कतराते हैं और उनकी दोस्ती का प्रयास तक नहीं करते, और उनके तौर-तरीकों या पुरानी परंपराओं के प्रति किसी भी तरह की रियायत को अपना अपमान समझते हैं। क्या इन लोगों को समझा नहीं जा सकता? निश्चित रूप से उन्हें समझा जा सकता है, और तिरस्कृत भी किया जा सकता है! और अफसोस! कि इन दिनों ऐसे बहुत से लोग पैदा हो गए हैं, जो अपने अहंकार में खुद को उन अच्छे और महान पुरुषों से अधिक बुद्धिमान समझते हैं, जिन्होंने अपने समय पर ऐसी छाप छोड़ी है जो भारत के इतिहास में हमेशा के लिए अमर रहेगी। यदि पाठक सिरिल ब्रैंडन का जो संक्षिप्त विवरण मैंने दिया है, उसे समझ पाए—और यह कोई आदर्श चित्र नहीं है—तो शायद वह समझ पाएगा कि नरेंद्र और उनकी पोती उनकी सरल विनम्रता और दयालुता से कैसे प्रभावित हुए थे, और कैसे, जैसे-जैसे वे नूरपुर का समाज। घर लौटने पर उन्होंने दिन भर की घटनाओं पर चर्चा की। नरेंद्र और आंटी एला को अपने बच्चे पर कितना गर्व था! सीता को अपने बेटे पर कितना गर्व था! आंटी एला उसे बीच-बीच में उसकी माँ से ले लेती थीं और उसका मनोरंजन करने की कोशिश करती थीं; लेकिन छोटा बच्चा यही सोचता था कि उसकी जगह उसकी माँ के पास है, और जब तक वह वापस अपनी माँ के पास नहीं पहुँच जाता, तब तक वह बेचैन रहता था। नरेंद्र ने मजिस्ट्रेट को पहले कभी इतना नहीं देखा था। कभी-कभार, अपने समूह के अन्य सदस्यों के साथ, वह औपचारिक रूप से उनसे मिलने जाता था, लेकिन तब ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। अब वह वामुन भूत से उनके बारे में खुलकर बात कर सकता था; और मुझे लगता है कि शाम को शतरंज का खेल, जिसमें सीता उनकी बातें सुन रही थीं, दोनों ने ही बुरी तरह खेला। पुजारी नरेंद्र से ज्यादा लोगों के बीच रहा था और उससे ज्यादा सुना था। अब, वह सिरिल के न्याय के

कई सुखद किस्से सुनाता था, और डाकुओं के गिरोहों का पीछा करने और उन्हें पकड़ने में बहादुरी की कई घटनाओं और बहादुर युवा मजिस्ट्रेट द्वारा बाघों के वध का वर्णन करता था। सभी वर्गों में उनके प्रति सम्मान और प्रेम के अनेक प्रमाण भी थे। सीता आश्चर्य से सुन रही थीं। वे एक विद्वान भी थे; और सेरिष्टदार बाबा साहब ने उन्हें बताया था कि कैसे उन्होंने अपने गुरु को रात के समय तक "भुग्वत गेक्टा" और अन्य संस्कृत पुस्तकें पढ़ते हुए पाया था, और अक्सर उन्हें उनकी मदद करनी पड़ती थी या किसी पंडित को बुलाना पड़ता था। यह सब सीता के हृदय में उतर गया। अगले दिन, उन्हें फिर से कुचेरी जाना पड़ा, और सीता ने हथियारों के ढेर में से एक संकरा भाला चुना, जिसकी दोधारी धार लंबी थी, और उसे उस हथियार के रूप में बताया जिससे वह घायल हुई थी। यह हथियार कैदियों में से एक की संपत्ति बताया गया था और उसके घर में मिला था। नरेंद्र और पुजारी से वकील को पूछताछ करनी पड़ी, जिसने उन्हें धमकाने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। और शाहगंज में अज़रदील पांडे की घटना वाले दिन और उससे पहले की उपस्थिति की कई गवाहों ने शपथ लेकर पुष्टि की थी। संक्षेप में, प्रारंभिक साक्ष्य पूर्ण थे। गिरोह के कई अन्य सदस्यों को तब से गिरफ्तार कर लिया गया था और वे नूरपुर जेल में थे: सीता और अन्य को औपचारिक रूप से पेश होने के लिए बाध्य किया गया था, और मामले को औपचारिक रूप से नूरपुर में सुनवाई के लिए सौंप दिया गया था। लेकिन राम दास कम से कम फिलहाल के लिए बच निकला था। नूरपुर का समाज काफी हद तक उसी श्रेणी के अन्य अंग्रेजी स्टेशनों जैसा था जहाँ नागरिक और सैन्य बल संयुक्त होते हैं; और हम भविष्य में इसका कुछ अंश देख सकते हैं। इंग्लैंड से हाल ही में आई एक युवती, मिस होम, के आगमन से काफी हलचल मच गई थी, जो अपने माता-पिता के साथ रहने आई थी, डॉ. होम स्टेशन के मुख्य सर्जन थे।

72 सीता। देशी पैदल सेना के एक दल ने उनके स्वागत के लिए एक भोज का आयोजन किया था; और सिरिल को भी निमंत्रण मिला था, जिनका शिविर अब स्टेशन से ज़्यादा दूर नहीं था—कम से कम आसानी से घोड़े पर सवार होकर पहुँचा जा सकता था। इसलिए, सिरिल ने अपने मित्र मोस्टिन को पत्र लिखकर कहा कि वह एक-दो दिन उनके साथ रुकें। भोज की सुबह सिरिल नूरपुर पहुँचे, नाश्ते के बाद अपने कुछ मित्रों से मिले और भोज में अपना दोपहर का भोजन किया; लेकिन उन्हें कुछ ही महिलाएँ दिखाई दीं, जो संभवत: अपने-अपने श्रृंगार में मग्न थीं। लेकिन ऐसा भी नहीं

था कि वहाँ बहुत सी महिलाएँ थीं, और उनमें से केवल कुछ ही नृत्य कर रही थीं; लेकिन दो अविवाहित महिलाएँ उपस्थित थीं, और उनके परिवार वालों ने उन्हें भोज में सिरिल ब्रैंडन के आने की पुष्टि बड़े ज़ोर से की। “मेरी प्यारी,” सिरिल के घर से निकलते ही श्रीमती होम अपनी सुंदर बेटी के कमरे में दौड़ते हुए बोलीं, “वह बॉल में आ रहा है, मैंने उसे तुम्हारे पिता से कहते सुना है; अब, ध्यान रखना।” “किस बात का, माँ?” लूसी ने चारों ओर देखते हुए पूछा—वह घरेलू दर्जी की मदद कर रही थी, जो इंग्लैंड से आने के बाद भी सिकुड़ी हुई ग्रेनेडाइन ड्रेस की सिलवटें निकाल रहा था। “क्यों, मेरे प्यारे मिस्टर ब्रैंडन का,” उसने जवाब दिया; “आप जानती हैं कि वह एक माननीय हैं, लॉर्ड हिल्टन के भाई हैं, और उनकी माँ लेडी हिल्टन हैं।” “ठीक है, मुझे लगता है कि वह हैं,” लड़की हँसते हुए बोली; “मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है? काश आप इस बेवकूफ आदमी को समझा देतीं कि मैं नहीं चाहती कि ड्रेस को कोई छुए, और मैं उसे समझा नहीं पा रही हूँ।” “पोशाक की चिंता मत करो, लूसी; वहाँ सबसे अच्छी पोशाक वही होगी, और तुम सबसे सुंदर लड़की लगोगी। अगर—अगर मिस्टर ब्रैंडन तुम्हें देखें, लूसी, तो उन्हें मत रोकना, उन्हें नज़रअंदाज़ मत करना—मुझे लगता है कि तुम्हें नौजवानों को नज़रअंदाज़ करने का बहुत शौक है, यहाँ तक कि जब वे स्टाफ ऑफिसर हों, माँ!” उसने विनम्रता से और झुककर कहा, “जैसा कि आपने मुझे उस दिन बताया था। अरे नहीं! मैं ‘माननीय सिरिल’ के साथ ऐसा करने के बारे में सोच भी नहीं सकती; लेकिन मुझे यकीन है कि वह भी उनमें से किसी की तरह ही उबाऊ है, केवल ‘हमारे’ सैनिकों के काम, उनके घोड़ों, भोजन, बाघों और सूअरों के बारे में ही बात करता रहता है; लेकिन अगर वह अच्छा हो, तो क्या मैं उसके साथ दो-तीन बार नाच सकती हूँ?” “तुम दो बार नाच सकती हो, लेकिन पहली बार में इससे ज़्यादा नहीं, मेरी प्यारी,” उसकी माँ ने जवाब दिया; “इसलिए सावधान रहना।” लेकिन लूसी होम को सिरिल ब्रैंडन अपने बाकी पुरुष परिचितों से बहुत अलग लगा: और वह भी उसे काफी आकर्षित करती थी। वह बहुत सुंदर थी, उसका व्यक्तित्व बहुत दिलचस्प था,

नूरपुर का समाज। 73 कोमल, भावपूर्ण चेहरा और सुडौल कद-काठी। वह एक सभ्य महिला की तरह दिखती थी और कमरे में सबसे अच्छे कपड़े पहने हुए थी; सच कहूँ तो, मुझे कई महिलाओं के कपड़ों की फीकी और अस्त-व्यस्त हालत का वर्णन करने में शायद ही कोई आपत्ति हो, कहीं मुझे बदमिजाज न कह दिया जाए। सिरिल ब्रैंडन ने

बारह जोड़ों वाले पहले क्वाड्रिल नृत्य में भाग लेना ज़रूरी नहीं समझा—बारहवाँ जोड़ा रेजिमेंट के दो युवकों का था—इसलिए वह खड़े होकर मोस्टिन से बातें करते रहे। मुझे लगता है कि वे दोनों कुछ महिलाओं के बारे में कुछ ज़्यादा ही खुलकर बोल रहे थे। हालाँकि, क्वाड्रिल समाप्त होने पर, सिरिल श्रीमती होम के पास गए और उनकी बेटी से परिचय कराने का अनुरोध किया—जिससे श्रीमती होम को बहुत प्रसन्नता हुई। वह लूसी के अच्छे अंदाज़ से आकर्षित हुए थे और उन्होंने उनसे पहले वाल्ट्ज़ नृत्य के लिए कहा। लूसी ने झुककर सहमति दी और वे दोनों साथ चले गए। श्रीमती होम उन्हें गंगल के बेहतरीन वाल्ट्ज़ में से एक की धुन पर कमरे में इधर-उधर भागते हुए देख रही थीं; और वाकई वे बेहद खूबसूरत जोड़ी थे। यहाँ तक कि मोस्टिन, जो उन्हें देख रहा था, मन ही मन सोच रहा था, "वह उसे पाने से बुरा भी कर सकता है, और अगर वे उसे उसके सिर पर फेंकने की कोशिश नहीं करते हैं, तो शायद वह उसे पा भी ले।" नाचते समय उन्होंने ज़्यादा बातचीत नहीं की; लेकिन जब वाल्ट्ज़ नृत्य समाप्त हुआ, तो सिरिल लूसी को उसकी माँ से दूर एक कुर्सी पर ले गया और उसके पास बैठ गया। फिर वे आम बातों, साधारण किताबों, चित्रों और संगीत के बारे में बातें करने लगे। मुझे 'वे' की जगह 'वह' लिखना चाहिए था, क्योंकि सिरिल ने उसे रुचिकर या उत्साहित करने की उम्मीद में हर संभव विषय पर चर्चा की थी; लेकिन उसने बहुत कम उत्तर दिया, इतना कम कि उसने इसे उसकी स्वाभाविक शर्म का कारण माना; और जब लूसी ने अनियमित घुड़सवार सेना के एक कप्तान के साथ एक और क्वाड्रिल नृत्य समाप्त किया, तो सिरिल ने उससे अगले गैलप नृत्य के लिए कहा और उसके साथ नृत्य किया। निश्चित रूप से, उस समय तो वह रुचि ले रहा था, और लड़की के मीठे और विनम्र चेहरे ने उसे बताया कि उसने उसमें रुचि पैदा कर दी है; लेकिन उसे लगा कि उसने जिन बातों का ज़िक्र किया था, उनमें से किसी का भी कोई अर्थ नहीं था—बिल्कुल भी नहीं। उसने कहा कि उसने ज़्यादा नहीं पढ़ा है, केवल स्कूली किताबें पढ़ी हैं। वह चित्र नहीं बनाती थी। उसने कभी तस्वीरें नहीं देखी थीं, सिवाय तब जब अंकल जॉन उसे एक बार लंदन में प्रदर्शनी दिखाने ले गए थे, लेकिन उसे उनमें से कोई भी याद नहीं थी। उसने कहा कि उसे संगीत सुनना बहुत पसंद था, लेकिन वह बहुत कम बजाती थी और कभी भी कठिन धुनें नहीं सीख पाती थी या सुरों में गा नहीं पाती थी। हाँ, उसने क्लैरिबेल और अन्य लोगों के कुछ लोकगीत सीखे थे, जो बहुत मधुर थे; लेकिन उनसे उसे कुछ और सीखने को नहीं मिला, और शायद

संगीत के प्रति उसकी उतनी रुचि ही नहीं थी कि वह खुद कुछ सीख सके। उपन्यास? बिलकुल नहीं; उसकी चाची उसे घर पर कभी उपन्यास नहीं पढ़ने देती थीं; लेकिन स्कूल में लड़कियों के पास कुछ उपन्यास थे, जो बहुत अच्छे थे, और उसने स्टेशन की लाइब्रेरी में भी कुछ पढ़े थे। शायद हमें इस पर और विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

76 सीता। बहुत सुंदर, सचमुच; एकदम शालीन और परी की तरह नाचती है। एक-दो गाने ठीक-ठाक गा सकती है, और वाल्ट्ज़ या क्वाड्रिल बजा सकती है, लेकिन संगीतकार नहीं है; और कसम से, मुझे लगता है बस इतना ही। जाहिर है, उसकी कलात्मक समझ नहीं है, लेकिन ऊनी बुनाई और क्रोशिया में वह माहिर है, क्योंकि मैंने खुद उसका काम देखा है। वह बहुत अच्छे स्वभाव की भी लगती है, और अपनी उस भयानक बूढ़ी माँ को प्यार से सहन करती है। शायद जब उसका विवाह होगा तो वह अपने पति की कमीज़ों पर बटन सिलने में कोई आपत्ति नहीं करेगी, और इसलिए उसे लंबे समय तक कुंवारे रहने का डर नहीं होगा। "तुम तो हद से ज़्यादा व्यंग्य कर रहे हो, फिलिप।" "मैं तो बस सच बोल रहा हूँ," उसने जवाब दिया। "अगर भारत के सभी पुरुष तुम्हारी तरह कलात्मक होते—यही सही शब्द है, है ना?—तो इंग्लैंड में लड़कियों को उनके लिए विशेष रूप से शिक्षित करना पड़ता, और हर डाक से पढ़ी-लिखी महिलाओं की कतारें आती रहतीं।" लेकिन वे नहीं हैं, आप जानते हैं; और इसीलिए लूसी होम जैसी लड़कियाँ खूब तरक्की करती हैं और अच्छी पत्नियों के रूप में बस जाती हैं। आपको और क्या चाहिए?" “ठीक है, मुझे कुछ और चाहिए, ज़रूर। लेकिन देखते हैं मेरे स्वामी क्या कहते हैं। मुझे उम्मीद है कि उनकी आवाज़ मेरी माँ की तरह कर्कश नहीं होगी। देखो,” उन्होंने कुछ देर बाद कहा, “यह किसी बीमार आदमी का पत्र नहीं लगता।” और उन्होंने उसे मेज पर फेंक दिया। “फिलिप, तुम इसे पूरा पढ़ लो।” यह एक शानदार शिकार और उसके भरपूर आनंद का रिकॉर्ड था। लॉर्ड हिल्टन ने अगस्त में मूर्स में अच्छा शिकार किया था और हिल्टन में तीतरों के अच्छे शिकार की उम्मीद कर रहे थे। वहाँ बहुत सारे तीतर भी होंगे और वे सब मिलकर एक खुशनुमा पार्टी करेंगे। पिछली सर्दियों में उन्हें सर्दी लग गई थी और खांसी भी बहुत थी, इसलिए उनकी माँ चिंतित थीं और चाहती थीं कि वे नीस जाएँ! लेकिन यह सब बेतुका था और वे शिकार का भरपूर आनंद लेने के लिए उत्सुक थे। एक वाक्य में उन्होंने कहा, "जहाँ तक आपके घर आने की बात है, जिसके बारे में मेरी पत्नी हमेशा

सोचती रहती हैं, मेरे लिए ऐसा मत सोचिए; और जब तक आपको आने की इच्छा न हो या बहुत ज़रूरत न हो, वहीं रहिए जहाँ आप हैं। मुझे लगता है कि आप एक महीने में ही इंग्लैंड से ऊब जाएँगे और अपने लोगों के बीच वापस जाने के लिए तरसेंगे। काश मैं आपके साथ एक सर्दी का मौसम बिता पाता और बाघों का शिकार कर पाता!" "बहुत अच्छा पत्र है," मोस्टिन ने पत्र लौटाते हुए कहा, "और इसमें स्वास्थ्य बिगड़ने का कोई संकेत नहीं है। लेकिन मुझे उम्मीद है, सिरिल, आप इंग्लैंड जाने के बारे में नहीं सोच रहे होंगे; यहाँ अपना मौका गंवाना मूर्खता होगी। मुझे कल कलकत्ता से एक पत्र मिला था, और मेरे मित्र ने बताया कि उसने ग्रांट को स्टीमर पर सवार होते देखा था, उसकी जान की कोई उम्मीद नहीं थी, बस थोड़ी सी ही उम्मीद थी, और आप निश्चित रूप से उसकी जगह लेंगे।" "मुझे पूरी उम्मीद है कि वह ठीक हो जाएगा," सिरिल ने कहा;
घर से पत्र। 77 "लेकिन जब वह फिर से बाहर आएगा, तब मेरे लिए घर लौटने के बारे में सोचने का सही समय होगा। तब तक, कोई भी चीज़ मुझे जाने के लिए प्रेरित नहीं करेगी; और अगर बेचारे ग्रांट को कुछ हो गया, और मुझे नियुक्त किया गया, तो वास्तव में करने के लिए बहुत कुछ है। नहीं, मैं आज अपनी माँ को पत्र लिखूँगी और उन्हें बताऊँगी कि मैं नहीं आ सकती।" "यह मिस लूसी से मिलने जाने से बेहतर होगा," मोस्टिन ने जवाब दिया; "लेकिन मुझे कुचेरी जाना है, और मैं आपको मेरी मालकिन के साथ आपकी बातचीत के लिए छोड़ता हूँ। बेशक आप उन्हें बताएँगे कि आपने कल रात सबसे खूबसूरत लड़की के साथ छह नृत्य किए।" = "क्या आप चुप रहेंगे?" सिरिल चिल्लाया। लेकिन मोस्टिन अपनी आखिरी गोली चलाकर भाग गया था। सिरिल कुछ देर सोचने के बाद लिखने के लिए अपने कमरे में चला गया। उसने एक सिगार जलाया और बरामदे में हमेशा मौजूद रहने वाली आलीशान कुर्सियों में से एक पर जाकर शांति से बैठ गया। उसे अपने भाई की कोई चिंता नहीं थी, जिसकी सशक्त, मर्दाना लिखावट और हंसमुख लहजा उसने फिर से पढ़ा और कृतज्ञता की आह भरते हुए पत्र को अपनी जेब में रख लिया। उसने कहा, "मैं उससे कहूंगा कि वह शादी कर ले और घर बसा ले, क्योंकि हम सब उसे खुश देखना चाहते हैं; और अब जब जागीर का बोझ हल्का हो गया है, तो वह ऐसा कर भी सकता है।" फिर ऑगस्टा का पत्र पढ़ना था; और उस चंचल युवती ने कुछ पार्टियों और समारोहों का विवरण देने के बाद, भारत में शादी न करने के लिए अपनी माँ की सलाह को दोहराते हुए

लिखा था:— "मैं तुम्हें घर आने के लिए मजबूर नहीं कर रही हूँ, सिरिल; तुम जहाँ हो वहाँ बहुत खुश और बहुत उपयोगी हो; और यद्यपि हमें आपको पाकर अत्यंत प्रसन्नता होगी, मैं और जॉन दोनों ही इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि यदि आप घर लौटकर अपना काम छोड़ दें, जबकि आपका मन उसमें लगा हुआ है, तो हमें बहुत दुख होगा। फिर भी, मुझे और माँ को कुछ आशंकाएँ हैं; और मैं भी आपकी शादी और वहाँ बसने को लेकर उनकी आशंकाओं से पूरी तरह सहमत हूँ। हम समझते हैं कि आप कितने अकेले होंगे, आपके आस-पास केवल स्थानीय लोग ही होंगे; और हमें डर है कि कहीं नूरपुर आने वाली कोई सुंदर युवती आपको मोहित न कर ले और हमसे छीन न ले। इस बात के लिए मुझसे नाराज़ मत होना, क्योंकि माँ सचमुच इस बारे में चिंतित हैं और बहुत परेशान हैं, मेरे प्यारे भाई! नहीं, मेरे प्यारे भाई! एक दिन आप घर लौटेंगे और अपनी पसंद का चुनाव करेंगे। मैंने आपकी पत्नी की सहेलियों में से एक बनने का पक्का इरादा कर लिया है, और मैं धैर्यपूर्वक उस समय का इंतज़ार करूँगी। यदि आप वहाँ शादी करते हैं, तो हमें वहाँ के लोगों के बारे में क्या पता चलेगा? वे भयानक हो सकते हैं, आप जानते हैं। लेकिन अब इस बारे में और बात नहीं। मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मैं चाहूँगा कि आप बाहर घूमने वाली किसी भी युवती की बजाय किसी भारतीय राजकुमारी से शादी करें—यदि आप चाहें तो प्यारी रानी गौरीपूली से, जो निस्संदेह महान पंजंद्रम की चचेरी बहन हैं।

78 सेकेटा। तो सिरिल ने सिगार खत्म करके अपने कमरे में लिखने के लिए चले गए, और हम, जो सौभाग्यशाली हैं, उनके पत्रों को देख सकते हैं और उनकी माँ को लिखे उनके पत्र का कुछ अंश देख सकते हैं:— "मैं घर नहीं आ सकता," उन्होंने कहा, "और अगर आपको पता होता कि मुझे क्या-क्या करना है, और ऐसा कदम मेरे भविष्य पर कितना प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, तो आप मुझे देखना भी नहीं चाहतीं। बेचारे ग्रांट ने अपनी खराब सेहत के कारण यहाँ के कामों को बहुत अधूरा छोड़ दिया है। अधिकारी मुझसे उन्हें ठीक करने के लिए आग्रह कर रहे हैं, और मैं करूँगा, मुझे करना ही होगा। हज़ार चीज़ों की ज़रूरत है: सड़कें, पुल, स्कूल, औषधालय, पुलिस सुधार और राजस्व सुधार; लेकिन मैं आपको विस्तार से नहीं बताऊँगा, क्योंकि आप समझ नहीं पाएँगी। अगर बेचारे ग्रांट की मृत्यु हो जाती है—और मैंने उनके बारे में सबसे बुरी बातें सुनी हैं—तो मुझे लगता है कि मैं उनका उत्तराधिकारी बनूँगा, क्योंकि मेरे दोस्त मुझे नहीं भूलेंगे, और मुझे पता है कि लॉर्ड

डलहौज़ी ने मेरे नाम के आगे अच्छी छाप छोड़ी है। वैसे भी, ईश्वर की कृपा से, मैं दो साल तक ग्रांट के लिए काम कर रही हूँ और इस दौरान मैं काफी कुछ कर सकती हूँ—शायद वो सब नहीं जो मैं चाहती हूँ, लेकिन काफी कुछ। और अगर वो लौट आए, और फिर करने को कुछ न हो, तो हम इस विषय पर फिर से बात कर सकते हैं—उससे पहले नहीं। मैं खुद अपने पहले दस साल पूरे होने तक वापस नहीं लौटना चाहूँगी, ताकि मैं अपनी छुट्टी मांग सकूँ। और कुल मिलाकर, जब आप इस मामले पर विचार करेंगी, तो मुझे यकीन है कि आप मुझसे सहमत होंगी। जॉन की बात करें तो, उसने मुझे अब तक का सबसे हार्दिक पत्र लिखा है, और उसमें निराशा का कोई निशान नहीं है; इसलिए मैं प्रार्थना करती हूँ कि वो हमें कई वर्षों तक जीवित रहे, और उसकी जल्द ही शादी हो और वो सुखी रहे। प्रिय माँ, इस बारे में चिंता न करें। नूरपुर जैसे स्टेशन में लड़कियाँ आती-जाती रहती हैं—कई आई और चली गईं; लेकिन मुझे उनमें से किसी की ज़रूरत नहीं है। मेरे लिए मेरा काम ही पत्नी और बच्चे हैं। मैं यहीं रहता हूँ, यहीं से प्यार करता हूँ, और मेरे मन में पत्नी के लिए कोई जगह नहीं है—न मेरे कामों में, न मेरी योजनाओं में। इस उबड़-खाबड़ इलाके में लगातार यात्राओं के दौरान मैं पत्नी के साथ क्या कर सकता हूँ? उसे या तो नूरपुर में अकेले रहना होगा, या पहाड़ों पर भेज दिया जाएगा। मैंने ऐसे दुखद अलगाव इतने देखे हैं कि मैं खुद ऐसा करने की कोशिश नहीं करूँगा, न ही अपने किसी प्रियजन को ऐसे हालातों में डालूँगा। मैं यही बात ऑगस्टा को भी लिखूँगा, जिसने मुझे अपने अंदाज़ में उपदेश दिया है, और कहा है कि अगर मैं चाहूँ तो किसी रानी से शादी कर सकता हूँ—आपकी उन डरावनी युवतियों में से किसी से नहीं; और मैं उसकी राय से पूरी तरह सहमत हूँ, बस मुझे यह नहीं पता कि रानी कहाँ से आएगी, या उसका चचेरा भाई, महान पंजांद्रम, कहाँ रहता है; वरना मैं उसके लिए एक कार्ड छोड़ देता। मेरी इस मूर्खता पर नाराज़ मत होना, प्यारी माँ, बस मेरी इस बात से संतुष्ट हो जाना कि मैं भी उन कल्पनाशील युवतियों से उतना ही डरता हूँ जितना आप डरती हैं!

घर से पत्र: 79 “काश आप देख पाते कि इस समय मेरा इलाका कितना सुंदर है। मौसम बिल्कुल इंग्लैंड की वसंत ऋतु जैसा है, और मैं किसी भी समय घुड़सवारी या शिकार कर सकता हूँ। लेकिन मैंने हाल ही में शिकार नहीं किया है। मुझे अपने जिले के एक दूरदराज के हिस्से में जाना पड़ा, एक भयानक हत्या और डकैती के मामले की जाँच के लिए, जिसने एक असामान्य सनसनी पैदा कर दी है, क्योंकि हत्यारा एक

बहुत ही सम्मानित और धनी व्यक्ति था। मैं पहले कभी वहाँ नहीं गया था, क्योंकि वह इलाका गरीब ग्रांट के अधीन था; लेकिन मुझे वहाँ बहुत आनंद आया, और दृश्य अवर्णनीय रूप से सुंदर हैं। यहाँ पठार से नीचे उतरती हुई गहरी घाटियाँ हैं, जो जंगलों से ढकी हैं, और दूर के निचले इलाकों के सबसे सुंदर दृश्य प्रस्तुत करती हैं। यहाँ झरने और चट्टानें हैं, ऐसे जंगल हैं जिनकी कोई सीमा नहीं लगती; और जहाँ देश खुला है, वहाँ ऐसे उपजाऊ मैदान और लहरदार ज़मीन हैं, जो फलते-फूलते कस्बों और गाँवों से भरी हुई हैं! काश मैं आपको ये सब दिखा पाता! और वास्तव में कुछ समय के लिए मेरा जंगली जीवन आपको सुखद लगता।" हालाँकि आप जल्द ही इससे ऊब जाएँगे। मुझे जल्द ही वहाँ फिर जाना होगा, क्योंकि मुझे शाहगंज में एक सड़क बनानी है, और एक औषधालय और अस्पताल का निर्माण करवाना है; और आप जानते हैं कि मुझे अपना सर्वेक्षक, सिविल इंजीनियर, वास्तुकार और न जाने क्या-क्या काम खुद ही करने पड़ते हैं। मुझे वहाँ खूब शिकार करने का मौका भी मिलेगा, क्योंकि अभी तक किसी ने भी वहाँ बाघों को परेशान नहीं किया है, और वहाँ उनकी संख्या बहुत अधिक है, साथ ही भालू, तेंदुआ और हिरण भी हैं; और अगर समय मिला तो शायद मैं बाइसन तक भी पहुँच सकूँ। मैं आपको हॉल के लिए एक बाइसन की खाल और एक सिर भेजना चाहूँगा। मेरी सेहत को लेकर चिंता मत कीजिएगा। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मैं एक बड़ा, तगड़ा, मजबूत आदमी हूँ, जिसके गाल गुलाबी हैं, घनी दाढ़ी है और भूख भी बहुत है; और मैं जितना ज्यादा शिकार के लिए बाहर जाता हूँ, उतना ही मेरे लिए अच्छा है। किसी दिन मैं एक दिन के सभी कामों का हिसाब रखूँगा, और जब समय मिलेगा तो उन्हें आपके लिए लिखूँगा। मुझे लगता है कि वे आपको बहुत पसंद आएँगे। अभी मैं और नहीं लिख सकता। मुझे जॉन और ऑगस्टा के पत्रों का जवाब देना है, और इसके अलावा कई अधिकारियों को भी जवाब देना है। मैं स्टेशन पर पूरी तरह से नहीं रुका हूँ, केवल एक दिन के लिए, और सुबह अपने शिविर के लिए निकल जाऊँगा, जो तीस मील दूर है। मैं तो बस एक बॉल पार्टी के लिए आया था, और आज सुबह दो बजे तक नाचता रहा—वह भी एक बहुत ही सुंदर साथी के साथ! नूरपुर में ऐसे मौज-मस्ती भरे कार्यक्रमों के बारे में आपका क्या कहना है?"
"अच्छा, क्या आपने अपने पत्र लिख लिए?" मोस्टिन ने दोपहर में अपनी कुचेरी से लौटते हुए पूछा। "मुझे उम्मीद है कि आपका दिन शांति से बीता होगा, और आपको परेशान करने वाला कोई नहीं था। अब मैं बैठूंगा और सिगरेट पीऊंगा, ताकि मेरा मन

शांत हो जाए। आइए बात करते हैं; आपने काफी कुछ लिख लिया है।" "मैंने उन सभी को पत्र लिख दिया है, और माँ को भी बता दिया है कि
 सीता। मैं सुबह दो बजे तक एक बहुत सुंदर लड़की के साथ नाच रहा था। क्या यह बहादुरी नहीं थी?" "बहुत," मोस्टिन ने कहा। "और तुम उससे मिलने चुपके से नहीं गए— तुम्हें पता है ना, अलविदा कहने के लिए?" "नहीं," सिरिल ने हंसते हुए उत्तर दिया, "मैं यह काम कल के लिए तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। जाओ, मेरे प्यारे दोस्त, और उसे काम, काम, काम की तरह-तरह की कहानियां सुनाओ; और यह भी कि मैं कई दिनों के लिए उसकी नजरों से ओझल हो गया हूँ—उस जंगली भारतीय जीवन में चला गया हूँ जिसके बारे में मैंने उसे बताया था। और मुझे उम्मीद है कि मेरे लौटने से पहले कैप्टन हॉब्सन और वह सब कुछ सुलझा लेंगे।" "मुझे भी यही उम्मीद है," मोस्टिन ने कहा। "हॉब्सन बहुत अच्छा और दयालु आदमी है, और उसके लिए उससे बेहतर कोई विकल्प नहीं हो सकता। अगर मेरी पत्नी अभी यहाँ होती, तो वह पल भर में सब कुछ निपटा देती। हाँ, मैं कल जाऊँगा और आपसे माफ़ी माँग लूँगा। मुझे लूसी से डर नहीं लगता; लेकिन मुझे पता है कि माँ मुझसे हमेशा के लिए नफरत करेगी। 'हमेशा के लिए मैं हरा लबादा पहनता हूँ,'" उसने उदास स्वर में गाया। "अरे बाप रे! अरे बाप रे! और तुम सच में कल जा रहे हो, सिरिल?" "हाँ, मैंने अपने घोड़े को चार बजे तैयार रहने का आदेश दिया है," उसने उत्तर दिया। "और कृपया अपने खानसामन से कहो कि मेरे लिए एक कप कॉफ़ी तैयार रखे।" "ज़रूर, ज़रूर, और कुछ गरमा गरम टोस्ट भी। वे तैयार होंगे। लेकिन मुझे उम्मीद थी कि तुम उस गोकुलपुर मुकदमे के लिए रुकोगे। मैं आज अखबार पढ़ रहा था। हे भगवान, क्या मामला है! और उस लड़की सीता ने क्या गवाही दी! मैंने ऐसा पहले कभी नहीं पढ़ा। मुझे उम्मीद है कि वह मुकदमे में आएगी।" "मुझे ऐसा ही लगता है," सिरिल ने कहा; "नहीं, मुझे पूरा यकीन है; और अगर वह आपके सामने भी वही गवाही देती है जो उसने मेरे सामने दी थी, तो आप भी उतने ही हैरान होंगे जितना मैं हुआ था। मैं उसकी पहली पूछताछ की वह सुबह कभी नहीं भूलूंगा। बूढ़े बाबा साहब भी रो पड़े थे, और मैं अपनी आँखों से तो कुछ कह ही नहीं सकता।" "सचमुच! अच्छा, मैं चाहता हूँ कि आप आकर देखें कि मामला कैसे चलता है। मैंने सुनवाई अगले दिन के लिए तय कर दी है; और नोबल ने मुझे बताया है कि उस बदमाश गिरोह के एक-दो और लोग पकड़े जा सकते हैं।" "फिलिप, मेरी बस यही आशा है कि इस सुनवाई से जिले में डकैती का धंधा टूट

जाए। आम अपराध तो शायद रोका जा सकता है; लेकिन ये संगठित गिरोह, ठगी की तरह, तोड़ना मुश्किल है। नोबल आ रहा है," उसने आगे कहा; "हो सकता है वह हमें कुछ बताए।" "मैंने उनमें से चार और लोगों को पकड़ लिया है!" वह युवक सीढ़ियाँ चढ़ते हुए चिल्लाया। 'हुर्रे!' "'कहाँ?'" "ओह," उसने कहा, "यहाँ छिपे हुए हैं; एक कस्बे में, दूसरा में
घर से पत्र। 81 पास के एक गाँव में, और नवाब के दो और खास बदमाश। ऐसा लगता है कि वे पहली चेतावनी मिलते ही भाग गए थे; लेकिन गवाह ने कहा कि वे वापस आ जाएँगे, और कल रात कुछ डकैती पुलिस ने बड़ी चालाकी से उन्हें पकड़ लिया। फिर वे उस मामले और ज़िले के सामान्य मामलों पर चर्चा करने लगे, जिनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं है; लेकिन मेरे पाठकों को श्री मोस्टिन के बारे में कुछ जानना अच्छा लग सकता है, और मैं उन्हें वह सब बताऊंगा जो मुझे पता है। फिलिप मोस्टिन प्रांत के न्यायाधीश थे—दीवानी और आपराधिक मामलों के न्यायाधीश, और कुछ मामलों में अपील न्यायाधीश भी। वे भी एक अच्छे अंग्रेज़ परिवार से थे, लेकिन कुलीन परिवार से नहीं। उनके बड़े भाई, एडवर्ड, मोस्टिन की जागीरों के मालिक थे और पारिवारिक निवास, मॉर्टन हॉल में रहते थे, जो हिल्टन परिवार के ही ज़िले में था, लेकिन दोनों के बीच कुछ दूरी थी। उनके दो और भाई थे; एक चांसरी बैरिस्टर थे और उनका अच्छा अभ्यास था; दूसरे, मॉर्टन के शांत पल्ली के रेक्टर थे, जिसका पद परिवार के स्वामित्व में था। श्री मोस्टिन सेवा में सिरिल ब्रैंडन से कम से कम दस साल बड़े थे, शायद उससे भी ज़्यादा; लेकिन एक ही ज़िले के निवासी होने के कारण वे पहले एक-दूसरे के करीब आए, और विचारों की एक निश्चित समानता ने उनके बीच एक ऐसी घनिष्ठता को जन्म दिया जो अब भाईचारे जैसी थी। मोस्टिन के पास कोई उनकी उपलब्धियों की बात करें तो, वे अपनी रुचियों या शौक में बहुत कलात्मक नहीं थे। वे न तो बजा सकते थे और न ही चित्र बना सकते थे, हालांकि वे थोड़ा-बहुत गा सकते थे; और न ही उनमें वह परिष्कार था जो महाद्वीपीय शिक्षा ने सिरिल को प्रदान किया था। वे शब्द के एक महत्वपूर्ण अर्थ में खिलाड़ी नहीं थे। उनके मुख्य मनोरंजन और व्यायाम के साधन थाने के मैदान में रैकेट का एक शुरुआती खेल और कुचेरी से आने के बाद नूरपुर में बल के जितने भी युवा उनके साथ बिलियर्ड्स खेलने के लिए तैयार होते थे, उतने ही खेल वे अपनी सुंदर टेबल पर खेलते थे। लेकिन अपने आधिकारिक कार्यों से संबंधित सभी मामलों में, मोस्टिन एक मूल्यवान और उत्कृष्ट

अधिकारी थे। एक अच्छे भाषाविद, और हिंदू और मुस्लिम कानून के साथ-साथ इंग्लैंड के कानून में भी अच्छी तरह से पढ़े-लिखे, उनके अत्यंत न्यायिक दिमाग ने उन्हें स्पष्ट और व्यावहारिक रूप से सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया, और उनके निर्णयों के विरुद्ध अपीलें अधिकांश अन्य अधिकारियों की तुलना में कम थीं। उनका काम कभी भी लंबित नहीं रहता था, और उनके उच्च स्वतंत्र चरित्र, क्षमता और गहन कानूनी ज्ञान के कारण, यह बात सच थी कि जब भी सर्वोच्च न्यायालय में कोई पद रिक्त होगा, उन्हें वहाँ स्थानांतरित कर दिया जाएगा। मोस्टिन को अपने प्रांत के लोगों का पूरा सम्मान और विश्वास प्राप्त था; लेकिन वे लोकप्रिय नहीं थे। शायद वे लोकप्रिय हो सकते थे, यदि उन्होंने उस विविध विभाग में सेवा की होती जिससे सिरिल संबंधित थे; लेकिन जी

§2 सीता। उन्होंने शुरू से ही न्यायिक मार्ग अपनाया था, और इसी वजह से वे दूसरों की तुलना में जनता से अधिक दूर रहे; फिर भी वे सभी के प्रति विनम्र और अत्यंत धैर्यवान थे, और ये ऐसे गुण हैं जिनकी भारत के हर वर्ग द्वारा गहरी सराहना की जाती है। पूरे प्रांत में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो यह न मानता हो कि न्यायाधीशों के न्यायालय में सभी उनकी दृष्टि में समान थे; कि देशी वकीलों की चालाकी उनके लिए स्पष्ट थी; कि अनुचित प्रभाव का प्रयोग असंभव था; और प्रत्येक मामले की सुनवाई उसके गुणों के आधार पर ही की जानी चाहिए। फिलिप मोस्टिन विवाहित थे। सिरिल के भारत आने से पहले ही, मोस्टिन ने अपनी छुट्टी ले ली थी और इंग्लैंड में अपने भाई के पड़ोसी की बेटी से शादी कर ली थी, और वे तुरंत भारत आ गए थे। जब सिरिल वहाँ पहुँचे तो वे नूरपुर में थे, और उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया, जो बाद में स्नेह में बदल गया। श्री मोस्टिन को अपनी पत्नी से उस पत्र के माध्यम से संदेश मिला था; लेकिन सिरिल के पूछने पर कि वह कैसी है और कब आ रही है, उसने बस इतना कहा कि वह ठीक है और उसे अपना प्यार भेजा है, इसके अलावा उसने कुछ नहीं कहा था। असल में, एक समझौता हो चुका था, जिस पर काफी समय से विचार-विमर्श चल रहा था, जिसके अनुसार उसकी पत्नी को अपनी सौतेली बहन ग्रेस को अपने साथ लाना था, जो उसके पिता की दूसरी शादी से इकलौती संतान थी और अब लगभग अठारह साल की थी। मिस होम के बारे में अपनी हंसी-मजाक के कारण मोस्टिन ने इसका जिक्र नहीं किया। उसे लगा कि शायद इसे गलत समझा जा सकता है; लेकिन श्रीमती मोस्टिन ने लिखा था कि वह अगली डाक से आ रही हैं, और उनके

पति चाहते थे कि डकैती का मुकदमा जल्द से जल्द खत्म हो जाए, इससे पहले कि उन्हें उनसे मिलने के लिए कलकत्ता जाना पड़े। अध्याय 11. एक चर्चा और एक सिद्धांत। डकैती के मुकदमे का दिन आ गया था, और इस मामले ने इसमें शामिल पक्षों के कारण जनता की इतनी दिलचस्पी पैदा कर दी थी कि सभा के समय से बहुत पहले ही कोर्ट हाउस खचाखच भर गया था, जबकि सैकड़ों लोग जानकारी जुटाने के लिए बाहर जमा हो गए थे। फतेहपुर के नवाब दिल खान बहादुर पहले ही न्यायाधीश की कुर्सी के पास बैठ चुके थे, और उनके दबंग साथी बाहर शान से घूम रहे थे। प्रवेश द्वार के सामने सिपाहियों का एक मजबूत दस्ता तैनात था, और अंदर व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल तैनात था। सिरिल ब्रैंडन सुबह-सुबह अपने शिविर से घोड़े पर सवार होकर आ गए थे, और

एक चर्चा और एक सिद्धांत। नाश्ते के बाद दोनों मित्र, श्री नोबल के साथ, अदालत के लिए रवाना हुए। सिरिल के मन में इस बात को लेकर कुछ दुविधा थी कि उसे मुकदमे में उपस्थित होना चाहिए या नहीं; लेकिन, विचार करने पर, उसने सोचा कि उसकी उपस्थिति उस लड़की को समर्थन और प्रोत्साहन दे सकती है जिसने उसे इतना आकर्षित किया था, और वह बहुत चिंतित था कि वह असफल न हो। इस कुख्यात गिरोह और उसके सरगना की दोषसिद्धि और सजा पर—क्योंकि उसके पूर्व जीवन के कई विवरण सामने आ चुके थे—प्रांत में डकैती का दमन काफी हद तक निर्भर था, और यह एक ऐसा प्रश्न था जो उसके दिल के बहुत करीब था। इसलिए वह आया था, जैसा कि उसने मोस्टिन से वादा किया था, और उससे अलग बैठ गया, ताकि कार्यवाही को किसी भी तरह से प्रभावित करने का आभास न हो। थोड़ी देर में कैदियों की बेड़ियों की खनखनाहट बाहर सुनाई दी, और सोलह लोगों को कटघरे में खड़ा किया गया, जिनकी तलवारें खींचे हुए पुलिसकर्मियों द्वारा कड़ी सुरक्षा की जा रही थी। भारतीय कार्यवाही के रीति-रिवाजों से अनभिज्ञ एक अंग्रेज को जूरी में जगह नहीं मिलती, क्योंकि श्री मोस्टिन ने पूरा मुकदमा स्वयं लड़ा था। औपचारिक प्रारंभिक कार्यवाही के बाद, जिसका विस्तृत वर्णन आवश्यक नहीं है, उद्घोषणा की सुरक्षा का दावा करने वाले पहले गवाह, बीरबुल सिंह को अदालत में लाया गया। उनकी हथकड़ियां हटा दी गई थीं, लेकिन फिर भी उन पर कड़ी निगरानी रखी जा रही थी। उन्हें ईश्वर के समक्ष सत्य की पुष्टि करने के लिए कहा गया, अभियोग पत्र उन्हें पढ़कर सुनाया गया, और उन्होंने अपने पूर्व साथियों के विरुद्ध स्पष्ट और निडरता से गवाही

दी, जिसमें गोकुलपुर डकैती में प्रत्येक को सौंपे गए कर्तव्यों का विवरण दिया गया था। उन्होंने स्वयं एक मशाल उठाई थी, और एक अन्य मशालवाहक उपस्थित था, जिसकी ओर उन्होंने इशारा किया; दो अन्य अभी तक गिरफ्तार नहीं हुए थे, लेकिन उन्होंने बताया था कि वे कहाँ मिल सकते हैं। उन्होंने घोषणा की कि नेता अजरील ने ही सबसे पहले हुरे दास को कई बार भाले से मारा था; और यह भी कि उसने स्वयं सीता से पायल ली थी और उसे वापस नहीं दिया था। उसने सरदार के भाले की ओर इशारा करते हुए कहा कि गिरोह के अलग होने से पहले जब वे झरने में नहाए थे, तब उसने भाले को धोया था। बचाव पक्ष के वकील ने गवाह से थोड़ी पूछताछ की, और अज़रील ने भी काफी देर तक पूछताछ की; लेकिन उसकी गवाही में कोई संदेह नहीं रहा और वह काफी हद तक पुष्ट हुई। शाहगंज में सीता और ब्रैंडन की दया पर जी उठने वाला, तीखी आवाज वाला बुलदेव अगला गवाह था। उसे भी क्षमादान मिल चुका था और उसने बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारी दी थी, जिसके माध्यम से डकैती में लूटी गई संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा विभिन्न स्थानों से बरामद किया गया था और अब अदालत में प्रदर्शित किया गया था। उसने अपने पास मौजूद पवित्र कुल्हाड़ी को उसके आवरण सहित प्रस्तुत किया।

84. सीता ने अपने घर में दफनाई गई पायल के बारे में बताया और उन डकैतियों की संख्या बताई जिनमें इसका इस्तेमाल किया गया था; गोकुलपुर कांड से पहले वाली डकैती पश्चिमी भारत में हुई थी। उससे जिरह करने का कोई प्रयास नहीं किया गया; और उसके हर शब्द में सच्चाई की झलक थी। हरचे दास की हत्या की पूरी घटना, घाटी में हुई मुलाकात से लेकर उसके घर पर हुए हमले तक, उसने एक भी बात गलत नहीं बताई; और सीता के बारे में उसके बयान से अदालत में हलचल मच गई, जिसे दबाना पड़ा। इसके बाद बूढ़े सुनार रूपा की गवाही हुई, जिसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है; उसने अपने और बीरबुल सिंह के बीच हुए लेन-देन की शपथ ली और फिर से पायल को पहचान लिया। अगली गवाह सीता थी, जिसे उसके आदरणीय दादाजी अपने बेटे को गोद में लेकर अदालत में लाए थे। उसे बैठने के लिए कुर्सी दी गई, लेकिन उसने साफ मना कर दिया; उसने कहा कि उसे बैठने की आदत नहीं है और वह खड़ी रहना पसंद करेगी। न्यायाधीश उसकी असाधारण सुंदरता और शालीनता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। सिरिल की तरह, उसने भी पहले कभी ऐसी भारतीय महिला नहीं देखी थी, और शाहगंज में पूछताछ के बाद सिरिल द्वारा लिखे गए पत्र में

उसके बारे में किए गए स्नेहपूर्ण वर्णन को वह पूरी तरह समझ सकता था। सीता ने सिरिल को देखा, क्योंकि वह उससे ज़्यादा दूर नहीं थी, कि वह उसे गंभीरता और प्रोत्साहन से देख रहा था; लेकिन उसकी उपस्थिति ने उसे बहुत भरोसा दिलाया, और उसकी पूछताछ आगे बढ़ी। वह अपनी पहली गवाही के समय की तुलना में बहुत कम उत्तेजित थी, और उसने गोकुलपुर में हुई सारी घटना को कोमल दृढ़ता और स्पष्टता के साथ बताया, जिसने श्री मोस्टिन और उसे सुनने वाले सभी लोगों को गहराई से प्रभावित किया; और जब उसने गिरोह के सरगना को अपने पति का हत्यारा बताया, और अन्य पुरुषों को, जिन्हें उसने पहली बार देखा था, अपने पति पर भाले से हमला करने वाला बताया, तो अदालत में सन्नाटा छा गया। उसने पायल और अपने हार के कुछ हिस्सों को अपनी संपत्ति बताया, और टीड्यू के बर्तनों को वह हथियार बताया जिससे उसके पति की हत्या की गई थी; और उसने अपना और अपने बच्चे का घाव दिखाया। कैदी के वकील द्वारा उनसे जिरह करने का प्रयास कुछ मामूली सवालों के बाद विफल हो गया, और अंत में श्री मोस्टिन ने उनसे कहा कि वे जा सकती हैं। उन्होंने भावुक होकर कहा, “आपने एक कठिन कर्तव्य निभाया है, महोदया; लेकिन आपने यह अपने सम्मान के लिए किया है। अगर मैं अब आपके चरित्र के प्रति अपने सम्मान को व्यक्त कर पाता तो अवश्य करता: लेकिन यह वह स्थान नहीं है। आप जा सकती हैं। आपको दोबारा उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं होगी।” यदि अदालत में उत्तेजना अब तक दबी हुई थी, तो अब वह अनियंत्रित हो गई थी। न्यायाधीश के संबोधन ने माहौल को पूरी तरह से बदल दिया था।

एक चर्चा और एक सिद्धांत। सीता का दृढ़ संकल्प टूट गया और वह फूट-फूट कर रो रही थी; जब उसके दादा उसे ले जा रहे थे, तब दर्शकों की दया और प्रशंसा भरी चीखें उसके कानों में गूंज रही थीं। उसने सोचा कि सिरिल ब्रैंडन ने उसे दयालुता से देखा होगा, और वास्तव में उसने देखा भी था; लेकिन हालांकि वह उसे जाते समय बधाई का एक शब्द कहना चाहता था, वह चुप रहा। फिर अन्य सभी सबूतों पर विचार किया गया, जिसमें न्यायाधीश शाम तक व्यस्त रहे, और जैसे ही सूरज डूबने वाला था, वकीलों को कैदियों का बचाव करने के लिए बुलाया गया; लेकिन वह टूट गया। "मेरे पास कहने या तर्क देने के लिए कुछ नहीं है," उसने कहा; "माननीय न्यायाधीश साक्ष्यों के अनुसार न्याय करें;" और श्री मोस्टिन अपने फैसले में संक्षिप्त और कठोर थे। “अज़र्डक्ल पांडे,” उन्होंने कहा, “तुम पहले 34वीं नेटिव इन्फैंट्री में एक सिपाही थे

और अनुशासनहीनता के कारण तुम्हें बर्खास्त कर दिया गया था। तुम्हारे शरीर पर मिले निशान और तुम्हारा विवरण, जो मैंने तुम्हारे पुराने रेजिमेंटल रजिस्टर से प्राप्त किया है, पूरी तरह मेल खाते हैं। बाद में, तुम बुंदेलखंड के विद्रोह में गंगा सिंह के नाम से एक कुख्यात नेता थे, जहाँ से तुम भाग निकले थे। तब से तुम एक डकैत रहे हो और तुम पर हत्या और हिंसा के साथ डकैती के कई आरोप लगाए जा सकते हैं; लेकिन अभी का समय ही काफी है। तुमने जघन्य अपराधों का निर्दयी जीवन व्यतीत किया है और इसके लिए, इस अदालत का फैसला है कि तुम्हें नूरपुर की जेल में फांसी पर लटका दिया जाए जब तक तुम्हारी मृत्यु न हो जाए।" कैदी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे कुछ अस्पष्ट बुदबुदाते हुए सुना गया। फिर दो को मौत की सजा सुनाई गई; और बाकी को, कुछ को आजीवन कारावास, और अन्य को अलग-अलग अवधि के कारावास की सजा सुनाई गई। फिर अदालत उठ खड़ी हुई और प्रसिद्ध मुकदमा समाप्त हो गया। यह शायद अजीब था कि अपराध का मूल अपराधी पकड़ में नहीं आया; लेकिन इसके कुछ कारण थे, जिनका उचित समय पर पता चलेगा। मोस्टिन ने थाने के कुछ अधिकारियों को रात के खाने पर आमंत्रित किया था, लेकिन मुझे लगता है कि वह मुकदमे में इतना व्यस्त था कि वह अपने मेहमानों का वैसे स्वागत नहीं कर पाया जैसा वह आमतौर पर करता था; वास्तव में, वह थका हुआ लग रहा था, और पार्टी जल्दी ही समाप्त हो गई। हालाँकि, श्री नोबल ने मेज के अपने छोर पर सीता के व्यवहार और साक्ष्य के बारे में काफी दिलचस्पी दिखाई; और उन्हें कई बार सिरिल और मोस्टिन से अपनी बात की पुष्टि करने के लिए कहना पड़ा; और इस तरह यह हुआ कि थाने में सभी पक्षों, और विशेष रूप से अधिकांश अंग्रेज़ महिलाओं के बीच मुकदमे की घटनाओं पर चर्चा होने लगी, जिनकी सीता से मिलने की अनुमति के लिए मोस्टिन से की गई निवेदनें हास्यास्पद रूप से आग्रहपूर्ण हो गईं। हालाँकि, सीता अपने दादा के साथ—क्योंकि चाची एला को घर की देखभाल के लिए छोड़ा गया था—मुकदमे के अगले दिन सुबह नूरपुर को बुनकर घर वापस जा रही थीं।

86 सीता। जब मेहमान चले गए, तो मोस्टिन ने कहा कि उसे नींद नहीं आ रही है, और उसने सिरिल को सुझाव दिया कि वे थोड़ी देर टहल लें। वह एक सुहावनी, चांदनी रात थी, और बगीचे के फूल, और बरामदे और खंभों पर लिपटी लताएँ एक मनमोहक सुगंध बिखेर रही थीं। "मैं तुम्हें जगाए रख रहा हूँ, सिरिल," उसके दोस्त ने कहा, "कल तुम्हारी लंबी यात्रा को देखते हुए यह शर्म की बात है; लेकिन अभी सुबह है, और मुझे

नींद नहीं आ रही है। मैं उस लड़की को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहा हूँ। वह कितनी प्यारी है, और कितनी विनम्र, फिर भी कितनी दृढ़ और गरिमामय! क्या तुमने कभी ऐसा उदाहरण सुना है?" "कभी नहीं," सिरिल ने उत्तर दिया, "जैसा कि मैंने तुम्हें अपने पत्र में बताया था। लेकिन पहली बार वह उत्तेजित थी; आज वह शांत थी, और अगर हो सकता है, तो और भी सुंदर थी। हाँ, तुम सही हो, उसमें सच्ची और वास्तविक गरिमा थी। वह जानती थी कि वह कहाँ है। वह जानती थी कि उसे क्या करना है;" और अगर दुनिया में कभी आत्मसंयम था, तो उसने इसे दृढ़ता से प्रदर्शित किया, न केवल अपने व्यवहार में, बल्कि अपनी वाणी में भी। “क्या आपने यह गौर नहीं किया?” “हाँ, सिरिल; लेकिन यह बहुत अजीब लगता है।” “नहीं,” उसने उत्तर दिया; “यह केवल यह साबित करता है कि हम देशी महिलाओं के बारे में कितना कम जानते हैं, और इस तरह के मामले को छोड़कर, जो चुप्पी तोड़ता है, उनके बारे में और कुछ जानना कितना असंभव है। यह एक ऐसी लड़की है, जिसके बारे में मैंने सुना है, कि वह अच्छी तरह से पढ़ी-लिखी है; वह संस्कृत की अच्छी विद्वान है, और आप तुरंत देख सकते हैं कि उसकी बुद्धि का विस्तार हुआ है। उसके जैसी कितनी होंगी, यह हम कभी नहीं जान पाएंगे। हम उसके दादाजी को रात के खाने पर नहीं बुला सकते,” वह हंसते हुए बोला; “और न ही सीता किसी पार्टी में जा सकती है। फिर भी, अगर वह किसी पार्टी में होती, तो मैं उस माहौल की कल्पना कर सकता हूँ।” “और सचमुच,” मोस्टिन ने आगे कहा, “मेरी कसम, अगर रोज़ यहाँ होती, तो मैं उसे सीता के पास जाने के लिए कहता, और ‘ “तुम ऐसा नहीं करोगे, फिलिप। क्या! अपने पति के हत्यारे पर मुकदमा चलाने और उसे मौत की सजा सुनाने के बाद, सीता को अपने घर बुलाओगे? क्या लोगों को यह अजीब नहीं लगेगा?” “पेरहाजिस,” उसने कहा; “और मैं रोज़ को उसके बारे में समझाने तक इंतज़ार कर सकता हूँ। वह शाहगंज को तो नहीं छोड़ेगी।” “ऐसा संभव नहीं है, फिलिप; और हिंदू विधवाओं में ऐसी कल्पनाशील लड़कियाँ अक्सर धार्मिक तपस्या करती हैं, तीर्थयात्रा पर जाती हैं या दान-पुण्य के कार्यों में खुद को समर्पित करती हैं। अगर सेक्टा ऐसा कुछ करे तो मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं होगा; क्योंकि उसे अपने भावुक स्वभाव की भावनाओं को व्यक्त करने का कोई न कोई तरीका तो चाहिए ही।” “हाँ,” मोस्टिन ने जवाब दिया। “तुम देखते हो कि वह दोबारा शादी नहीं कर सकती; और फिर भी वह कर सकती है, क्योंकि वह केवल एक शूद्र है। लेकिन मुझे संदेह है कि ऐसी लड़की, जिसकी बौद्धिक समझ

जागृत हो रही है, अपनी जाति के किसी सुस्त, अज्ञानी लड़के से स्वेच्छा से शादी करेगी।”

एक चर्चा और एक सिद्धांत। 87 वास्तव में, मैं अक्सर सोचता हूँ कि अगर इसके प्रति हमारे भयानक सामाजिक पूर्वाग्रह न होते, तो हममें से कई लोग अपने ही लोगों की तुलना में ऐसी पत्नी से अधिक खुश होते। मुझे लगता है कि उस लड़की जैसी कोई लड़की अधिक रोचक, अधिक उपयोगी, अधिक आसानी से संतुष्ट होने वाली और... "लेकिन उनकी शादी नहीं हो सकती," सिरिल ने बीच में ही टोकते हुए कहा; "और ऐसी लड़की रखैल नहीं हो सकती। यह तो सरासर शर्मनाक होगा!" "नहीं, बिल्कुल नहीं; लेकिन मुझे शादी के बारे में इतना यकीन नहीं है," उसने जवाब दिया। “ज़रा सोचिए, अगर कोई अंग्रेज किसी हिंदू या मुसलमान लड़की से उसके संप्रदाय के रीति-रिवाजों और मान्यताओं के अनुसार, इस विश्वास के साथ विवाह करे कि ऐसा विवाह उसके लिए बाध्यकारी होगा— तो हमारे कई पुराने प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने ऐसा किया है और जीवन भर सुख-शांति से रहे हैं। और—और—और कई अन्य। अकबर का राजपूत राजकुमारी से विवाह जनता पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा था! उस समय के सभी परस्पर विरोधी हितों में यह कितना सामंजस्य स्थापित कर पाया था! इससे अकबर को देश और उसके स्नेह पर कितना गहरा अधिकार प्राप्त हुआ था!” “और क्या आपको लगता है, फिलिप, कि कोई राजपूत राजकुमार या मुसलमान नवाब अपनी बेटी का विवाह किसी ‘फिरंगी’ से करेगा?” “हाँ, बिल्कुल,” मोस्टिन ने उत्तर दिया, “यदि विवाह हमारे समाज के रीति-रिवाजों और विधानमंडल द्वारा पूर्णतः मान्यता प्राप्त हो। पारिवारिक मामलों की बात करें तो, हममें से किसी को भी, चाहे हम कितने ही अभिमानी अजनबी क्यों न हों, उनके परिवारों से शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है, जो हमारे अपने परिवारों की तरह ही प्राचीन, महान और प्रतिष्ठित हैं।” “तुम तो बड़े साहसी नवप्रवर्तक बनोगे,” सिरिल हँसते हुए बोला; “पर सारी कुंवारी औरतें तुम्हारे खिलाफ़ मोर्चा खोल देंगी।” “हाँ! और उनकी माताएँ भी,” मोस्टिन ने जवाब दिया; “पर तुम जानते हो कि मैं यह बात सिर्फ़ काल्पनिक रूप से कह रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि ऐसा कभी होगा; लेकिन फिर भी सीता जैसी कई हिंदू लड़कियाँ हैं, जो किसी भी पुरुष और उसके परिवार के लिए एक आभूषण और आशीर्वाद होंगी; हालाँकि, शायद यही बेहतर है कि यह संभव न हो।” “क्यों, फिलिप?” “क्योंकि हमारे सामाजिक पूर्वाग्रह हैं, जिन पर हम दोनों काबू नहीं पा

सकते। क्योंकि बूढ़ी श्रीमती ग्रंडी, जो यहाँ भी उतनी ही शक्तिशाली हैं जितनी दुनिया में कहीं और—शायद उससे भी ज़्यादा। क्योंकि हमारी धारणाएँ हमारी अलग-थलग स्थिति के कारण संकुचित हो गई हैं और विस्तार करने में असमर्थ हो गई हैं; और क्योंकि, अगर हममें से कोई पुरुष किसी देशी महिला से शादी कर ले—शादी, मैं कह रहा हूँ—तो उसे समाज से अलग होना पड़ेगा, जिसके लिए एक मजबूत दिमाग की आवश्यकता होगी; और अगर वह इसमें प्रवेश करता है तो उसे प्रलोभन का सामना करना ही पड़ेगा, जिसका विरोध करने के लिए और भी अधिक शक्ति की आवश्यकता होगी। "तो फिर यह बात असंभव है, फिलिप?"
88 शेटा, ~ “मैंने ऐसा नहीं कहा,” उसने हंसते हुए जवाब दिया। “मैंने पक्ष और विपक्ष में तर्क यथासंभव अच्छे से बता दिए हैं, और अब इन्हें आप पर छोड़ता हूँ। वैसे भी, इनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। अगर कभी ये सवाल उठता भी है, तो कई सालों बाद ही उठेगा। अब आप और मैं दोनों सो जाइए। वैसे, क्या मैंने आपको बताया था कि रोज़ आ रही है, और मेरी छोटी बहन ग्रेस उसके साथ आएगी?” “नहीं, आपने नहीं बताया,” सिरिल ने कहा; “लेकिन मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई, और मुझे उम्मीद है कि वह अपने साथ एक नया पियानो और बहुत सारा नया संगीत लाएगी। क्या आप उसे ऐसा करने के लिए लिख सकते हैं?” “नहीं; मुझे उम्मीद है कि वह अगले महीने के बाद डाक से कलकत्ता पहुँच जाएगी, और मैंने उससे मिलने के लिए तीन महीने की छुट्टी के लिए आवेदन किया है; और वह पियानो ला रही है, और निस्संदेह, ढेर सारा संगीत भी।” “मुझे नहीं लगता कि मैं तब तक आपसे मिल पाऊँगा जब तक वे नहीं आ जाते,” सिरिल ने कहा, “और सुबह मत उठना। तो अलविदा। आप सभी को सुखद मुलाकात की शुभकामनाएँ, और जब आप व्यवस्थित हो जाएँगे तो आपसे मिलने आऊँगा। अलविदा, और ईश्वर आप पर कृपा करें।” अध्याय XII. कोई अंग्रेज़ी अनुवाद नहीं। अदालत से अज़्रिएल पांदे को जेल में एकांत कारावास कोठरी में ले जाया गया, और पहले से कहीं अधिक कड़ी निगरानी में रखा गया। अंततः न्याय ने उसे पकड़ लिया था, और उसकी सज़ा की पुष्टि होते ही उसे फाँसी दी जानी थी। उसे सज़ा कम होने की कोई उम्मीद नहीं थी, बिलकुल भी नहीं; और वास्तव में वह किसी अनजान देश में काले पानी—समुद्र—के पार निर्वासन झेलने के बजाय मृत्यु को गले लगाना पसंद करता। वह जानता था कि जब सज़ा सुनाई जाएगी तो मजिस्ट्रेट उससे मिलने आएगा और उसे दो दिन, या ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन में

फाँसी की चेतावनी देगा; फिर, जब समय आएगा, तो वह अपने गले में उस अछूत जल्लाद के हाथ महसूस करेगा, और वह मर जाएगा, अपवित्र होकर मरेगा, और उसे कुत्ते की तरह दफनाया जाएगा। उसकी आत्मा के लिए आवश्यक अनुष्ठान करने वाला कोई भी पुरुष उसके अपने ही जाति का नहीं होगा, जिसे उसके धर्म के सबसे बुरे नरक, नूर्रुक में नष्ट होना होगा, या वहाँ हमेशा के लिए रहना होगा; और वह चुड़ैल सीता ही इन सब की वजह थी। अगर वह न होती, तो कौन उसे सुनार को मारते हुए देखता? कौन उसे उसके अपराध का एहसास करा पाता? हे भगवान, उस पर बदला लेने के लिए, उन विश्वासघाती साथियों से बदला लेने के लिए जिन्होंने उसे धोखा दिया! हे भगवान, एक बार फिर आज़ादी के लिए, और गद्दारों को मार गिराने के लिए अनुयायियों का एक बेहतर समूह पाने के लिए; और लोग अभी भी उसके नाम से कांपते रहें, जबकि
कोई अंग्रेज़ी नहीं। — 89 ई गर्वित सीता उसकी दासी होनी चाहिए—पूर्वी देशों में दूर, वह मरने तक उसकी दासी होनी चाहिए। जैसे ही उसका मन उसकी सुंदरता में मग्न हुआ, वह रात में बड़बड़ाने लगा; और उसके भयानक सपने और प्रतिशोध की चीखें कोठरी के चारों ओर जमा हुए पहरेदारों और जेलरों ने कांपते हुए भय से सुनीं, जब तक कि उसके जागने से वे रुक नहीं गए। उसने फिर सोचा कि क्या उसके सभी अपराधों की स्वीकारोक्ति, उसके सभी पुराने साथियों की निंदा, उसकी लूटी हुई सारी संपत्ति की वसूली उसकी जान बचा सकती है; और सबसे बढ़कर, क्या गोकुलपुर सौदे में मुख्य सूत्रधार की निंदा की जा सकती है! क्या इससे उसकी जान बच जाएगी? अभी नहीं; उसे घोषणा की क्षमा में कोई हिस्सा नहीं मिल सकता था। नहीं, वह मर जाएगा; और शायद इस बदमाश के दुष्ट स्वभाव में, सम्मान की एक कच्ची भावना, उसके द्वारा अपनाए गए भयानक पेशे के प्रति उसकी पहली प्रतिज्ञाओं और शपथों की याद—अभी भी बाकी थी। दिन बीतते गए, एक सुबह उसने सहायक मजिस्ट्रेट श्री नोबल को जेल के दारोगा के साथ अपनी कोठरी की ओर आते सुना, उनके साथ अंगरक्षक भी थे, और वह समझ गया कि उसका समय आ गया है। उसका नाम पुकारा गया, और वह आगे आया, और उसे बताया गया कि उस पर सुनाया गया फैसला पुष्ट हो गया है, और चौथे दिन सुबह छह बजे उसे फांसी दे दी जाएगी। क्या उसकी कोई अंतिम इच्छा थी? उसने अपनी मूंछें समेटते हुए बड़े गर्व से कहा, "नहीं, मैं अंग्रेजों को श्राप दूंगा। अगर वे मुझे मरने से पहले कुछ गरमा गरम जुलेबी (मिठाई)

खाने को दे दें, तो यही मेरी आखिरी विनती होगी।" लेकिन तब भी अज़ियल निराश नहीं था। उपस्थित पहरेदारों में उसका पुराना साथी, गोकुल तिवारी भी था, जिसने उसे अर्थपूर्ण ढंग से देखा; और उस पूरे दिन अज़ियल बेसब्री से उसके आने का इंतजार करता रहा। जैसे ही रात हुई, उसने संतरी को ड्यूटी से मुक्त होते सुना; और कुछ क्षण बाद उसने अपनी कोठरी की सलाखों की ओर एक हाथ उठते हुए देखा, जिससे कुछ नीचे गिरा। घबराकर उसने उस कपड़े को खोला जिसमें वे लिपटे हुए थे, तो उसे दो छोटी फाइलें और एक पत्ते में लिपटा मक्खन का टुकड़ा मिला, और वह समझ गया कि उसका दोस्त वफादार है। बिना शोर किए अपनी बेड़ियों के रिवेट्स को फाइल से काटना आसान था, और जब उसने यह काम पूरा कर लिया, तो उसने उस कपड़े को, जिसे उसने पहले अपने पैर में चुभने वाली बेड़ी को ढकने के लिए मांगा था, रिवेट्स पर फिर से बांध दिया, और उसे दिए जाने वाले किसी भी संकेत का पालन करने के लिए तैयार था; लेकिन, जैसे ही तीसरी सुबह हुई, उसने लगभग उम्मीद छोड़ दी थी। हालांकि, उस दिन गोकुल तिवारी सुबह जल्दी ही उसकी रखवाली कर रहे थे, और उन्होंने उसे बताया कि क्या किया जा सकता है। जेल में कुछ काम चल रहा था, और कामगारों को शाम को भुगतान कर दिया जाएगा। अगर उसने भागने की कोशिश की, तो उसे जाना ही होगा।

90 सीता। फिर उनके साथ निकल जाओ। वे साथ मिलकर किसी पुराने अज्ञात ठिकाने पर उड़ जाएंगे और जल्द ही पीछा करने वालों से सुरक्षित हो जाएंगे। “अगर तुम पकड़े गए,” उसने आगे कहा, “तो तुम्हें कल सुबह मरना होगा, क्योंकि फाटक पर फांसी का तख्ता लगा दिया गया है और जल्लाद यहीं है—मैंने अभी उसे देखा है।” अज़रील पांडे को अपने रास्ते को लेकर कोई संदेह नहीं था। अगर वह अपने पुराने साथी का प्रस्ताव ठुकरा देता, तो उसे मरना पड़ता, और एक ब्राह्मण के रूप में, जो उसके लिए सबसे घिनौना चरित्र था, अपवित्र होकर मरना पड़ता। अगर वह बच जाता, तो उसे अपनी पुरानी बेफिक्री और आज़ादी मिलती, और उन सभी से बदला लेने का पक्का मौका मिलता, जो नफ़रत भरे अंग्रेज़ों, सीता, अपने विश्वासघाती गद्दारों—उन सभी से जो उसकी गिरफ्तारी और सज़ा में शामिल थे। एक और बात यह थी कि बहुत कुछ करना था और समय बहुत कम था; और वह जानता था कि उसका इंतज़ार उन जगहों पर और उन लोगों द्वारा किया जा रहा है जिनके बारे में अभी तक कुछ भी पता नहीं है। अगर वह पकड़ा गया, तो मौत उसका इंतज़ार कर

रही थी; लेकिन इसके लिए वह तैयार था। ये विचार उसके मन में आए भी नहीं थे कि गोकुल तिवारी फिर से दरवाजे पर आया और उससे पूछा कि उसने क्या करने का फैसला किया है। उसने कहा, "तुम्हारी कोठरी की डुप्लीकेट चाबी मेरे पास है, और शाम को फिर से तुम्हारी निगरानी में मेरी ड्यूटी है। समय आने पर, मैं कोठरी खोलकर तुम्हें बाहर ले आऊंगा; सूरज ढलने के तुरंत बाद तैयार रहना।" "कैदी से बात मत करो," गश्त लगाते हुए दारोगाह ने कहा। "वह बेचैन था और शोर मचा रहा था," उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं उसे जल्दी करने के लिए कह रहा था, बस इतना ही।" दारोगाह ने कोठरी का दरवाजा हिलाकर अपने रास्ते चला गया। शाम होते-होते, अज़र्डेल पांदे ने अपनी हथकड़ियां खुलवा ली थीं और भागने के लिए तैयार था; जैसे ही शाम ढलने लगी, उसने अपनी कोठरी की चाबी ताले में धीरे से घूमते हुए सुनी। एक पल बाद वह जेल के प्रांगण में था और कोठरी का दरवाजा उसके पीछे बंद हो गया। अपने साथी द्वारा दिए गए मोटे काले कंबल को अपने चेहरे को छिपाने के लिए अपने सिर पर डालकर, वह आगे बढ़ा और जेल के द्वार से बाहर निकल रहे मजदूरों की भीड़ में शामिल हो गया। उसने यह भी देखा कि उसका साथी उसके ठीक पीछे था। प्रवेश द्वार पर पुलिस का पहरा था, जिसे उसे पार करना था। लेकिन उन्होंने मजदूरों के काम में कोई दखल नहीं दिया, और बिना किसी चुनौती के, और किसी का ध्यान खींचे बिना, वह निकल गया और फिर से आज़ाद हो गया। एक पल के लिए गोकुल तिवारी को गार्ड के कॉर्पोरल ने रोक लिया, यह पूछने के लिए कि वह कहाँ जा रहा है; लेकिन उसने उस अधिकारी को संतुष्ट कर दिया था, और अब अज़र्डील के पीछे चल पड़ा; और जैसे ही वह उससे मिला, दोनों आदमी तेज़ी से गिरते अंधेरे में खुले मैदान की ओर चल पड़े, और जल्द ही उनका पीछा करना असंभव हो गया। उन्होंने बहुत कम बात की; एक बार गोकुल तिवारी ने पूछा कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए, और अज़र्डील ने फुट्तेहपुर का नाम बताया, और वे फिर से चुप हो गए। अंग्रेजी नहीं। | 91 कभी दौड़ते हुए, कभी तेज़ी से चलते हुए, और सभी बस्तियों से बचते हुए, वे नूरपुर से लगभग सात मील दूर अपने गंतव्य पर पहुँच गए, इससे पहले कि उनके भागने का पता चलता। फतेहपुर नवाब दिल खान के छोटे से राज्य की राजधानी थी, जहाँ वह हमेशा रहता था और अपने साथ उपद्रवी अनुयायियों का एक दल रखता था, जो कई मायनों में, और अच्छे कारणों से, देश में आतंक का कारण थे। नूरपुर के न्यायाधीश और मजिस्ट्रेट सर्वसम्मति से इस राय के थे कि वे सभी डाकू

और आम चोर थे; और अज़री पाण्डे के गिरोह के अधिकांश सदस्यों को वहाँ और आसपास के गाँवों में पकड़े जाने से पहले के संदेह और भी पुख्ता हो गए थे। नवाब ने घोर आक्रोश व्यक्त किया था और तुरंत ही अपने आदमियों को सौंप दिया था—वास्तव में, वे इनकार करने का साहस ही नहीं कर पाए थे—और जैसा कि हम जानते हैं, उन्होंने डकैत के मुकदमे में उपस्थित होने की अनुमति मांगी थी और उनके नेता को मौत की सजा सुनाए जाने की खबर सुनकर—शायद कुछ हद तक संतुष्ट हुए थे। इस सिद्धांत पर कि मरे हुए लोग कुछ नहीं बताते, वे डकैत की लूट में हिस्सा लेने और उसे कई कुख्यात अपराधों को अंजाम देने के लिए उकसाने के आरोप में पकड़े जाने की किसी भी संभावना से मुक्त होना चाहते थे; और इस मामले में श्री मोस्टिन के न्याय की शुद्धता और गरिमा की प्रशंसा करने के बाद, वे विदा हो गए थे। हालाँकि, डकैत की सजा की पुष्टि की खबर उन तक पहुँचने तक नवाब का मन शांत नहीं हुआ था; लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि उसकी फांसी का दिन तय हो गया है, वे फिर से शांत हो गए। इसलिए नवाब बहुत आश्चर्यचकित और व्याकुल हो गए, जब अज़रील और उसके साथी के भाग जाने के बाद, सुबह-सुबह एक सेवक ने उन्हें जगाकर बताया कि नूरपुर के मजिस्ट्रेट किले के द्वार पर हैं और उनसे तुरंत बात करना चाहते हैं। यह निर्विवाद था कि यह एक आधिकारिक दौरा था, जो स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह एक असामान्य समय और प्रकृति का था; नवाब जल्दी से उठे और श्रीमान नोबल को अंदर आने देने का अनुरोध करते हुए, अपने कंधों पर एक शॉल डाला, अपने सिर पर बेतरतीब ढंग से एक मलमल का दुपट्टा बांधा और बाहर जाकर उस बरामदे में बैठ गए जो एक छोटे से आंगन में खुलता था। नवाब को देखना अब बिल्कुल भी सुखद नहीं था; चेचक से सूजे हुए उनके चेहरे पर गहरे गड्ढे पड़ गए थे, और उन पर भय और थकावट का मिलाजुला भाव था; उनकी आँखें भारी और लाल थीं, क्योंकि उन्होंने रात में ली गई अफीम की खुराक का असर पूरी तरह से नहीं खोया था। वह बिना दाढ़ी बनाए और बिना नहाए था, और उसके बड़े कामुक मुंह पर रात भर खाए गए मांस के लाल धब्बे थे। उसकी मोटी, बैल जैसी गर्दन ढीली और गंदी लग रही थी, और शॉल के नीचे से निकले हुए मोटे, बालों वाले हाथ और भुजाएँ मिलकर एक ऐसा रूप बना रहे थे जो वास्तव में बेहद डरावना था। कुछ ही क्षणों में मिस्टर नोबल बूट और स्पर्स पहने हुए अंदर आए।

आशंका से देखा; लेकिन वे अपने आगंतुक से मिलने के लिए उठे और उन्हें गले लगाने के इरादे से बाहें फैलाकर एक-दो कदम आगे बढ़े। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ; श्रीमान नोबल को जाहिर तौर पर इतने अस्वस्थ दिखने वाले व्यक्ति के साथ निकट संपर्क का कोई अंदाजा नहीं था, इसलिए उन्होंने झुककर पीछे हट गए। वे दुबले-पतले, गोरे रंग के युवक थे, जिनका चेहरा पीला और आंखें कुछ लाल थीं; और बहुत कमज़ोर दृष्टि होने के कारण वे आमतौर पर नीले रंग का चश्मा पहनते थे। इसलिए, रिवॉल्वर होने के बावजूद उनका रूप-रंग बहुत डरावना नहीं था, और नवाब ने उन्हें सिर से पैर तक देखा, फिर अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए और अपने आगंतुक से विनम्रतापूर्वक बैठने का अनुरोध किया। “मैं बैठ नहीं सकता, नवाब साहब,” उसने उत्तर दिया, “और मैं इंतज़ार भी नहीं कर सकता,” और नवाब फिर उठ खड़ा हुआ। “मैं आपसे डाकू अज़रील पांडे को चाहता हूँ, जिसके बारे में हमें पता है कि वह फतेहपुर में है।” “अज़रील पांडे? हे भगवान! भगवान!” नवाब चिल्लाया; “अरे, मुझे लगा था कि आपने उसे आज सुबह ही फाँसी दे दी थी!” “वह कल रात जेल से भाग गया,” मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया, “और हमें शक है कि उसके साथ उसका एक पुराना साथी, एक पुलिसवाला भी है। पीछा करने वाले हमें यहाँ तक लाए हैं, और निशान आगे नहीं जाते; या तो आपको उसे पेश करना होगा या उसकी ज़िम्मेदारी लेनी होगी।” नवाब सचमुच घबरा गया। उसके मन में अप्रिय विचारों की एक लहर दौड़ गई। उसने सुनिश्चित किया था कि सूरज उगते ही अज़रील को फाँसी दे दी जाएगी, और अब वह भाग गया था, और उसका पीछा करते हुए उसके पुराने ठिकाने तक पहुँच गया था। अब क्या किया जाए? “भाग गया!” वह अचंभित हुआ, “पहरेदार कहाँ थे? दारोगा क्या कर रहा था? भाग निकला! और वह भी फांसी की कोठरी से! अहा! अद्भुत! मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा! फिर भी आप यहाँ हैं, श्रीमान नोबल।” “जी हाँ,” नोबल ने शांत भाव से कहा, “मैं यहाँ हूँ, और जब तक उस आदमी को सौंप नहीं दिया जाता, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। याद रखिए, नवाब साहब, उसके कितने ही लोग आपके बीच पाए गए थे; उसे मुझे सौंपकर आप सरकार की नज़रों से बच जाएँगे।” दिल खान अगर हिम्मत करता तो डींगें मारता; लेकिन वह बहादुर नहीं था, और उसे डर था कि कहीं वह उस नौजवान अंग्रेज के शांत दृढ़ संकल्प को न भड़का दे, जिसके साथ अनियमित घुड़सवार सेना का एक देशी अधिकारी खड़ा था, और बाहर बीस सैनिक थे, जिनके घोड़ों के चलने की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। “मैं अंग्रेज़ सरकार का

एक गरीब सेवक हूँ," उसने कहा, "और मेरा जीवन और मेरी संपत्ति उनके अधीन है। मैंने अज़रील पांडे को उसके मुकदमे के अलावा कहीं नहीं देखा है। उसने मुझसे मिलने की हिम्मत नहीं की है।"
अंग्रेजी भाषा नहीं। - 93वां खंड। महोदय, अपने खोजी दल को शहर में भेजें और हर घर की तलाशी लें, जिसमें मेरा यह छोटा-सा महल भी शामिल है। अगर अज़रील पांडे मिल जाए, तो उसे तुरंत पकड़कर फांसी पर लटका दें, और दुनिया एक दुष्ट और हत्यारे से छुटकारा पा लेगी। क्या मैं आपके साथ चलूँ?" "जी हाँ," श्रीमान नोबल ने कहा, "आइए। आपको अपनी ईमानदारी पर किसी भी संदेह को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।" और नवाब ने अपने जूते मंगवाए, उन्हें पहना और अपने आगंतुक के पीछे महल से बाहर निकल गए। उन्होंने हर जगह तलाशी ली, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ; और पीछा छुड़ाने के लिए अपने शहर से बेहतर जगह और क्या हो सकती है? "अगर वह अपने पुराने ठिकाने पर ही चला गया है," नवाब ने सोचा, "तो आज तक का कोई भी खोजी उसे नहीं ढूंढ पाएगा; काश अंग्रेजों ने उसे फांसी पर लटका दिया होता।" इसलिए दोपहर तक श्री नोबल और उनके आदमी वहीं रुके रहे। आख़िरकार, खोजी दल को शायद कोई ग़लती हुई हो। जिस अद्भुत सूझबूझ से उन्होंने दो आदमियों के पैरों के निशानों का पीछा किया, खेतों में, घास के मैदानों में और घने जंगलों से होते हुए—कभी खोते, कभी फिर पाते—ने नोबल को आश्चर्यचकित कर दिया; लेकिन नवाब के एक बगीचे के पास, उस पहाड़ी के नीचे जिस पर उनका महल बना था, वे अंततः उन्हें खो बैठे और फिर कभी नहीं पा सके। नवाब ने कोई बाधा नहीं डाली; इसके विपरीत, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से सहायता की हो: और जब महल से उनके लिए हल्का नाश्ता भेजा गया, तो उन्होंने अपने हाथ धोए और नोबल को भी उसमें से कुछ खाने के लिए आमंत्रित करते हुए उनकी सेवा की। "यह तो बस एक शिकार अभियान है," उन्होंने हंसते हुए कहा, "और आपको उपवास नहीं करना चाहिए।" "मैं कुछ डकैती पुलिस को यहाँ छोड़ रहा हूँ," श्री नोबल ने जाते हुए कहा, "और मुझे यकीन है कि आप उनकी मदद करेंगे।" "जी हाँ, मैं ही करूँगा; मैंने सौ रुपये का इनाम घोषित कर दिया है, और अगर वह आदमी पकड़ा गया, तो मैं उसे खुद नूरपुर ले आऊँगा और वहाँ तब तक इंतज़ार करूँगा जब तक उसे फाँसी पर चढ़ते हुए न देख लूँ। ज़रा सोचिए, उसने आपको इतनी परेशानी दी!" "अगर वह नहीं पकड़ा गया, तो मरने से पहले और भी परेशानी खड़ी

करेगा," नोबल ने कहा। "और आप जज साहब और कर्नल साहब को मेरा प्रणाम करना न भूलें, और मेरे किए पर गवाही दें। माशाल्लाह! अगर मैं उस आदमी को पकड़ लूँ, तो मेरा नाम रोशन होगा। आपकी यात्रा मंगलमय हो, जी," और वे अलग हो गए। नवाब को ज़रा भी अफ़सोस नहीं हुआ, क्योंकि वह महल की अपनी पसंदीदा खिड़की पर बैठा था, जब उसने सैनिकों के हथियार और भाले चमकते हुए देखे, जो फतेहपुर घाटी की ढलान पर चढ़ते हुए उसकी चोटी के ऊपर गायब हो गए। "अब वे चले गए हैं, मुझे देखना होगा कि अज़राइल वहाँ है या नहीं," उसने मन ही मन कहा, "और जितना हो सके उससे छुटकारा पाना होगा।"

04 सीता। पहले उल्लेखित उद्यान तक, महल के भीतरी भाग से चट्टान को काटकर बनाई गई सीढ़ियाँ नीचे उतरती थीं। ये सीढ़ियाँ ज़नाना की महिलाओं के लिए बनाई गई थीं और वे इनका उपयोग ताज़ी हवा लेने के लिए करती थीं; इनके द्वारा किलेबंदी और शहर के चक्कर से बचा जा सकता था। उद्यान में एक बड़ा कुआँ था जिससे ये सीढ़ियाँ जुड़ी हुई थीं; क्योंकि ये दो भूमिगत कक्षों में खुलती थीं, जो हमेशा साफ-सुथरे रहते थे और जिनका उपयोग महिलाएं भीषण गर्मी में करती थीं। ये कक्ष कुएँ की गैलरी से एक मार्ग द्वारा जुड़े हुए थे जो अब झाड़ियों से भरा हुआ है। ये कक्ष पहले अक्सर डाकुओं के छिपने की जगह रहे थे और अज़रील पांडे भागने के बाद सीधे इन्हीं कक्षों में गए थे। रात में वहाँ पहुँचते ही उन्होंने सूखी लकड़ियों को तोड़कर रास्ता बनाया था और सूर्योदय से पहले उन्होंने और उनके साथी ने उन्हें सावधानीपूर्वक वापस लगा दिया था। यदि बाहर से मार्ग का पता भी चल जाता, तो नवाब के किले में सीढ़ियों से ऊपर जाने का एक सुरक्षित रास्ता उन्हें भागने में सक्षम बना देता। जब अज़रील पांडे अपने साथी के साथ वहाँ लेटे थे, तब उन्होंने तलाशी दल की आवाज़ें सुनीं और नवाब की आवाज़ भी पहचान ली; लेकिन वे जा चुके थे और चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। दिल खान कम से कम सच्चा तो था, और अज़रैकल बेसब्री से उसके आने का इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि वह जानता था कि वह आएगा। शाम को नवाब सीढ़ियों से नीचे उतरे और पहले कमरे में दाखिल हुए। उन्होंने कुछ समय पहले एक रिवाल्वर खरीदी थी, उसका इस्तेमाल करना सीख लिया था, और उसे अपनी कमर में सावधानी से ढककर रखा था, फिर भी इस तरह से कि वह पल भर में उसका इस्तेमाल कर सकें। उन्होंने देखा कि लोग आग के अंगारों के सामने बैठे थे, और ऊपर एक ताक में रखी छोटी सी जम्प से उनके चेहरों पर टिमटिमाती रोशनी पड़

रही थी। अज़रैकल ने नवाब के कदमों की आहट सुनी थी, लेकिन जब वह अंदर आए तो वह उठे नहीं। "और तुम बच निकले और यहाँ हो, मेरे दोस्त," नवाब ने कहा। "हाँ, मैं बच निकला हूँ, और मैं यहाँ हूँ," यही एकमात्र जवाब था। “और आज मैंने तुम्हें बचा लिया, अज़रील। वरना वे ज़मीन में इस छेद का भी पता लगा लेते,” नवाब ने आगे कहा। “दिल खान, तुम्हारे भले के लिए, मेरे लिए नहीं। अगर वे मुझे भी उन दो बेचारे लोगों की तरह फाँसी पर लटका देते, जो आज मर गए, तो तुम्हें ज़्यादा खुशी होती।” “और मेरे भले के लिए क्यों?” “क्योंकि मैं उनसे ज़्यादा जानता हूँ। नवाब, मैंने तुम्हें सुरक्षा के लिए कई बार पैसे दिए हैं, और अब तुम्हें मेरी सुरक्षा के लिए पैसे देने होंगे। क्या तुम समझते हो?” दिल खान काँप उठा; और उसने एक पल के लिए सोचा कि क्या डाकू को आते ही गोली मार देना और उसके साथी के साथ मौका लेना बेहतर नहीं होगा; लेकिन वह उस आदमी से बहुत डरता था।

कोई अंग्रेज़ी नहीं। : 95 बहुत कुछ। अगर गोली चूक जाती, तो उसकी जान पल भर के लिए भी नहीं बचती। “गुस्से में मत रहो, मेरे दोस्त,” उसने कुछ देर रुककर कहा; “हमने एक-दूसरे की सेवा की है, और अब तक हम बराबर हैं। अगर तुमने मुझे पैसे दिए हैं, तो मैंने तुम्हारी जान बचाई है; और अब मुझे लगता है कि मुझे सबसे अच्छा हिस्सा मिला है। तुम्हें क्या चाहिए?” “मुझे यात्रा के लिए पैसे चाहिए,” अज़राएल ने जवाब दिया; “और तुम्हें इसे मना नहीं करना चाहिए। मुझे दूर देशों में जाना है—अपने लोगों के पास जाना है; और बहुत कुछ करना है जिसके बारे में तुम्हें बाद में पता चलेगा। हाँ! और अगर तुम वफ़ादार हो, तो मैं भी इसमें हिस्सा लूँगा।” “पैसे!” नवाब रोते हुए बोला, “तुम जानते हो कि मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी ज़मीन का हर टुकड़ा नूरपुर के बैंकों के पास गिरवी रखा है; किराए का एक-एक रुपया ज़ब्त हो चुका है, और मेरे घर के गहने भी गिरवी हैं। मैं और मेरे लोग दिन-प्रतिदिन कैसे गुज़ारा करते हैं, यह मैं खुद भी नहीं जानता, और मेरे नौकरों का बकाया इतना भयानक है। जो कुछ मेरे पास है, उससे मैं अपनी दयनीय इज़्ज़त कैसे कायम रखूँ?” “तुम्हारे पास कभी बड़ी ज़मीनें थीं, और अंग्रेजों ने उन्हें तुमसे छीन लिया।” “हाँ,” उसने उत्तर दिया; “और मेरा और मेरे घर का श्राप उन पर हो, जिन्होंने लगभग सब कुछ छीन लिया और मुझे भिखारी बना दिया।” “हम अपना बदला ले सकते हैं, दिल खान, अभी,” अज़रील ने कहा, “अगर हम धैर्य रखें। मैं, जो उनसे बच निकला हूँ, मेरे मन में बस एक ही विचार है; पहले उन्हें नष्ट करना जिन्होंने मुझे इस हालत में पहुँचाया, और फिर

बाकी सबको। हाँ, वह दिन जल्द ही आएगा, और हज़ारों आदमियों को भी; लेकिन मुझे अभी पैसे चाहिए।" मुझे एक हजार रुपये दे दो, और मैं सुबह होने से पहले इस जगह से निकल जाऊंगा। | ऐसा ही कुछ और भी है। कुछ लोग कहते हैं, "मेरे खजाने में सौ रुपये भी नहीं हैं, और मुझसे पूछना बेकार है, अजरदेल। क्या कुछ नहीं किया जा सकता—कोई काम नहीं?" "अपने पुराने तरीके से?" उसने पूछा, उसके चेहरे पर एक भयंकर मुस्कान फैल गई। "हाँ, अगर मेरे पास आदमी होते। मेरे पास जो सबसे अच्छे आदमी थे, वे चले गए, बेचारे।" "बैंकर नरेंद्र और सुंदर सीता ने तुम्हारे खिलाफ गवाही दी थी, और सीता तुम्हें फांसी पर लटका देती। हे मनुष्य, क्या तुम मूर्ख हो गए हो?" नवाब ने उत्तर दिया। "नहीं," अजरदेल ने उत्तर दिया, "लेकिन यह एक भयानक जोखिम है; और फिर भी— उनसे बदला लेना वाकई मीठा होगा।" और एक पल के लिए वह सीता की सुंदरता और जेल की कोठरी में अपने खुद के दृश्यों की याद में तड़प उठा! "लेकिन आदमी," वह चिल्लाया; "आदमी!" "अच्छा," नवाब ने कहा, "तुम मेरे लोगों में से जितने भी लोग हो, उन्हें जानते हो जो
96 सीता। और कुछ करना होगा वरना भूखे मर जाओगे, और कुछ लोग हैं। तुम्हें बहुतों की ज़रूरत नहीं है। "नहीं, बहुतों की नहीं; लेकिन ये सब अप्रशिक्षित हैं, और नरेंद्र का घर अखरोट नहीं है जो मुट्ठी के एक वार से टूट जाए। और कुल्हाड़ी की कमी है; फिरंगियों के पास है। "कौन सी कुल्हाड़ी? अगर तुम्हें चाहिए तो मेरा लोहार तुम्हारे लिए बीस बना देगा। "अगर मैं तुम्हें बताऊँ तो तुम मुझे समझ नहीं पाओगे," अज़रील ने उत्तर दिया। "रहने दो, दूसरों के पास एक हो सकती है। 'गोकुलपुर मामले में तुम्हारी कुल्हाड़ी ने तुम्हारे लिए कुछ खास नहीं किया, मेरे दोस्त," नवाब ने उपहास करते हुए कहा; "पर तुम अपना काम सबसे अच्छे से जानते हो। याद रखना, अगर तुम चतुर हो तो नरेंद्र के घर से तुम्हें कम से कम दस हजार रुपये मिल जाएंगे। बल्कि इससे भी ज्यादा: वो आदमी तो लाखों का मालिक है। अब सुनो; मैं तुम्हें पचास रुपये दे सकता हूँ और लाकर दूंगा। उस रकम से तुम रायना या जनपुर जा सकते हो और वहाँ अपने लोगों के साथ सुरक्षित रह सकते हो, जब तक कि सब कुछ व्यवस्थित न हो जाए। मेरे पास देने के लिए और कुछ नहीं है, और रात होते ही तुम्हें निकलना होगा।" "तो जाओ," अजरैल ने कहा, "और ले आओ।" "क्या उस पर भरोसा किया जा सकता है? हे भाई," गोकुल तिवारी ने गंभीर स्वर में कहा, "चलो चलते हैं और दूसरे काम के लिए अपने लोगों के पास चलते हैं। समय हो गया है, और हमें यहाँ

रुककर खतरा क्यों मोल लेना चाहिए?" "जब तक मैं सीक्ता को लाकर अपनी दासी न बना लूँ," अजरैल ने उदास स्वर में कहा। "वो लड़की मेरी किस्मत है। उसने गोकुलपुर में मुझे धोखा दिया, उसने परीक्षा में मुझे धोखा दिया, और वो फिर से मुझे धोखा देगी;" और वह चुप हो गया। "क्या तुमने इस बारे में सोच लिया है, मेरे मित्र?" नवाब ने कमरे में दोबारा प्रवेश करते हुए कहा, "ये लो तुम्हारा पैसा।" अज़राइल ने चुपचाप उसे गिना। "जी हां," उसने कहा, "मैं यह करूंगा, सिर्फ उस लड़की से बदला लेने के लिए; और आपको पहले की तरह आपका हिस्सा मिलेगा। इससे आपको बैंक का कर्ज़ चुकाने में मदद मिल सकती है।" "अच्छा," नवाब ने जवाब दिया। "धन्यवाद, क्योंकि आप मुझ पर भरोसा करते हैं; लेकिन मुझे पैसे नहीं चाहिए; बस लड़की श्वेता को मेरे पास ले आओ, और जो भी मिले उसे आप अपने दूसरे काम में इस्तेमाल कर सकते हैं, चाहे वह कोई भी काम हो। क्या आप ऐसा करेंगे?" "अगर हो सकता है, तो मैं उसे यहां ले आऊंगा," अज़राइल ने उत्तर दिया; "यहां—और आप इसके बाद जो चाहें कर सकते हैं। क्या इससे आपको संतुष्टि मिलती है?" "मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि मैं आप पर भरोसा करता हूं, और यही काफी है। यहां मत रुको, यह जगह दोबारा तलाशी से सुरक्षित नहीं हो सकती। और वे दो आदमी?" "उन्हें अपने पास रखो," अज़राइल ने उत्तर दिया। "उन्हें तब तक सुरक्षित रखो जब तक कोई अंग्रेज न बचे।"

चेतावनी और बचाव। 97 "अंग्रेज़ी नहीं? क्या तुम पागल हो गए हो, दोस्त?" "मैं पागल नहीं हूँ, नवाब साहब," जवाब आया। "मैं फिर कहता हूँ, जब कोई अंग्रेज़ नहीं बचेगा, मैं उन्हें रिहा कर दूँगा।" "अंग्रेज़ी नहीं," नवाब सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मन ही मन बुदबुदाया। 'अंग्रेज़ी नहीं! काश कोई न होता! लेकिन इसका क्या मतलब है? अंग्रेज़ी नहीं! यह पागल है!' अध्याय XIII. चेतावनी और बचाव। पिछले अध्याय में वर्णित घटना के लगभग दो सप्ताह बाद, एक शाम सिरिल ब्रैंडन दिन भर का काम समाप्त होने के बाद अपने तंबू के द्वार के सामने आरामकुर्सी पर बैठे ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे और अपने शांत स्वभाव से विश्राम कर रहे थे, जब तक कि उनके नौकर उनका भोजन न ले आएं; जिसके बाद वे यथासंभव अनुवाद कार्य में लगे रहेंगे। अज़राएल पांदे के भाग जाने से वे बहुत नाराज़ थे। निश्चित रूप से दो सबसे खूंखार कैदियों को फांसी दी जा चुकी थी, कई को निर्वासित किया जाना था और अन्य को कैद किया जाना था, और अब तक, उस खतरनाक गिरोह का भंडाफोड़ हो चुका था; लेकिन नेता

एक बार फिर फरार था। मुकदमे में उसके सभी पूर्ववृत्त सामने आ गए थे, और यह साबित हो गया था कि वह उन निर्दयी राक्षसों में से एक था जो काली के प्रति भक्ति की आड़ में आदतन हत्याएं करते थे; और जिन्हें कोई सतर्कता नहीं रोक सकती थी, और कोई कानून डरा नहीं सकता था। वह अगला वार कहाँ करेगा? वह अपने भयानक कृत्यों को छोड़ देगा, चाहे कितनी भी चेतावनी क्यों न दी जाए। जिस खतरे से वह बच निकला था, उसे देखते हुए सिरिल को यह बेहद असंभव, बल्कि नामुमकिन सा लगा; क्योंकि काली की उपासक, अपने सबसे भयानक रूप में भी, उसके प्रतिशोध के विचारों से प्रेरित होकर सबसे खतरनाक कारनामों को अंजाम देती थी, यह वह जानता था। उसे बहुत सावधान रहना होगा, और पुलिस को भी बहुत सतर्क रहना होगा। उसके अपने अधिकार क्षेत्र में यह सब संभव था; लेकिन उसके निकटवर्ती स्वतंत्र राज्यों के मामले में, वह सचमुच लगभग असहाय था। लेकिन ठगी के अपराध को सख्ती से दबा दिया गया था, और डकैती पर व्यवस्थित रूप से प्रहार किया गया था, और उन्हें भी इसी तरह परास्त किया जा सकता था, हालांकि इसमें अधिक समय लगेगा। खैर, किसी भी स्थिति में, वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेगा। नवाब और राजा हुरपाल सिंह पर कड़ी नजर रखनी होगी; क्योंकि उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि दोनों डाकुओं को पनाह देते थे और उनकी लूट में हिस्सा लेते थे; और दोनों में से, हालांकि बाहरी तौर पर सबसे विनम्र दिखते थे, वह नवाब को सबसे बुरा मानता था। 98 सीता। मुकदमे के दौरान, उसने सीता को कैसे घूरा था! वह उसकी सुंदरता पर कैसे इतरा रहा था! “खैर,” सिरिल ने मन ही मन कहा, “अगर हम अंग्रेज और कुछ न भी करें, तो कम से कम ऐसे लोगों पर लगाम तो लगा सकते हैं। पुराने जमाने में, या अगर नवाब शासक होते, तो क्या वह बेचारी लड़की सुरक्षित रहती? नहीं, मुश्किल से एक दिन के लिए।” ऐसा सोचते हुए और अपने मन में ऐसे कई विषयों पर विचार करते हुए, सिरिल ने एक आदमी को अपने कंधों पर एक मोटा कंबल और हाथ में एक छड़ी लिए तेजी से पास आते देखा। वह जमीन पर लेट गया, और फिर उठकर उसने छड़ी आगे बढ़ाई, जिसके कटे हुए सिरे में एक कागज मजबूती से बंधा हुआ था और उस पर एक पंख लगा हुआ था। यह संदेश भेजने का एक असभ्य तरीका था, जो अक्सर ग्रामीण इलाकों में प्रचलित था। छड़ी एक गाँव से दूसरे गाँव जाती थी; आमतौर पर बहुत तेजी से, और चिट्ठी कटे हुए सिरे में बंधी होने के कारण पूरी तरह सुरक्षित रहती थी। उस आदमी ने इनाम के लिए पुकारा, और सिरिल ने उसे कुछ तांबे

के सिक्के देने का आदेश देकर अपने तम्बू में चला गया, जहाँ उसका भोजन अब तैयार था। उन्हें पहले भी ऐसे असभ्य संदेश अक्सर मिलते रहे थे, और इस बार उन्होंने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई, क्योंकि संदेशवाहक ने कहा था कि उसे नहीं पता कि यह कहाँ से आया है; लेकिन चूंकि छड़ी उनके पास पड़ी थी, इसलिए वे उसे बार-बार उठाते और लिफाफे की बारीकी से जांच करते। पत्र पर सीलिंग वैक्स के साथ-साथ गोंद भी लगा हुआ था, जो असामान्य था। यह उन्हें संबोधित था, और पीछे लिखा था, 'अत्यावश्यक, शीघ्र पहुँचाएँ! शीघ्र शीघ्र!' और जब उन्होंने अपना भोजन समाप्त कर लिया, और मेज पर पैर रखकर (भारत में इतना विलासितापूर्ण भोजन करने वाला भला इसे कैसे भूल सकता है?), एक मशाल जलाई, तो उन्होंने फिर से छड़ी उठाई। उन्होंने अपनी कलम से उस धागे को सावधानीपूर्वक काटा जिससे वह बंधा था, और पत्र को भी उतनी ही सावधानी से खोला। अक्षर बड़े और खुरदुरे थे, लेकिन वे पूरी तरह से पठनीय थे। विषयवस्तु इस प्रकार थी:— “माननीय श्री ब्रैंडन को, उनके दास का अभिवादन, और ईश्वर की शांति।” “इसके अलावा। ईश्वर की कृपा से मैं ठीक हूँ, और आपका दास आशा करता है कि आप भी ठीक होंगे। इसके अलावा। शाहगंज के बैंकर नरेंद्र के घर पर अमावस्या की तीसरी रात को दुरारा होगा। यह आपको ज्ञात हो। इसके अलावा। नूरपुर की जेल से भागा हुआ व्यक्ति यह कर चुका है, और वह स्वयं भी करेगा, और उसके साथ कई और लोग भी होंगे। इसके अलावा। बैंकर को मार डाला जाएगा और उसका सारा खजाना लूट लिया जाएगा, और सीता को अगवा कर लिया जाएगा। ऐसा तय है। इसके अलावा। अपना ध्यान रखें। जो यह लिख रहा है वह एक
चेतावनी और बचाव। 99 मित्र, और सच लिख रहा है। आपका नाम रोशन है, और आपको खतरे से आगाह किया जाना चाहिए। आगे। बैंकर और सीता को बचाने के लिए पुख्ता इंतजाम करें, क्योंकि आप इसमें सर्वशक्तिमान हैं। पुलिस पर भरोसा न करें। सेना भेजें—वे डाकुओं के सामने कायर नहीं हैं। सीता को बचाएँ; उसे एक बार बचाया गया था। “आपके दास और शुभचिंतक द्वारा लिखा गया। आपकी समृद्धि बढ़ती रहे। मैंने सच लिखा है।” इस अजीब दस्तावेज़ पर कोई हस्ताक्षर नहीं थे, बस एक खंजर का मोटा-मोटा चित्र बना हुआ था। सिरिल ने इसे बार-बार पढ़ा, और उसकी जिज्ञासा बढ़ती गई। यह चेतावनी किसने लिखी होगी? इसका कोई सुराग तो नहीं था, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि यह एक चेतावनी थी, और बहुत ही

गंभीर चेतावनी थी। चांद के अंधेरे पहर की तीसरी रात? वह हिंदू तिथियों के नियमों से भली-भांति परिचित था, और यह पहली रात थी, और उसके पास काफी समय था। "अरे! तो तुम जल्दी ही अपने पुराने काम पर लौट आए हो, अज़रील पांडे," उसने मन ही मन कहा, "और मैं तुमसे मिलूंगा। इस मामले को दूसरों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता।" फिर उसने मन ही मन सोचा कि वह किस पर सबसे ज्यादा भरोसा कर सकता है; उसके शिविर की सुरक्षा करने वाली पुलिस टुकड़ी में चार आदमी थे, जिनमें से दो सिख थे, जिन्होंने कई मौकों पर अच्छा व्यवहार किया था, और बाघों और भालुओं के खिलाफ अभियानों में उसके साथ हमेशा रहते थे। शाहगंज पच्चीस मील दूर था; लेकिन अगर वह अगली सुबह जल्दी शिविर से निकल जाता, तो वह समय पर पहुंच जाता। फिर उन्होंने अपने भरोसेमंद सहायक, बाबा साहब, सेरिसलीतादार, जिन पर वे पूरी तरह भरोसा कर सकते थे, को बुलाने के लिए एक सेवक भेजा; और कुछ देर बाद वे आ गए। "इसे पढ़ो," सिरिल ने कागज़ उन्हें देते हुए कहा; और बूढ़े ने उसे पढ़ा और आह भरी। "इतनी जल्दी!" उन्होंने कहा। "भगवान और तुम्हारे सिवा कोई उनकी मदद नहीं कर सकता। तुम क्या करोगे?" "मैं जाऊँगा," सिरिल ने उत्तर दिया। "इस पर मैं पूरी तरह दृढ़ निश्चयी हूँ; और वह दुष्ट मुझसे बच नहीं पाएगा। मेरे लिए एक पगड़ी और एक साधारण देसी पोशाक लाओ जो मुझे ठीक लगे। मेरी अपनी पोशाक ध्यान आकर्षित करेगी।" "मेरी पुरानी गद्दीदार कमीज़ शायद ठीक रहेगी, महोदय," उन्होंने उत्तर दिया; "यह मेरे लिए बहुत छोटी है; और यह रही मेरी पगड़ी। मैं बाकी मंगवाता हूँ।" वह जल्दी आ गई, और सिरिल ने उसे पहन लिया। बाबा साहब एक लंबे, हट्टे-कट्टे बूढ़े व्यक्ति थे, और वह पोशाक सिरिल को बिल्कुल फिट आई। इस प्रकार, अब तक एक व्यवस्था हो चुकी थी। "मेरा लंगड़ा टट्टू भी ले जाओ," उन्होंने कहा; "यह आपको आराम से ले जाएगा, और आपके अपने घोड़े और काठी को पहचान लिया जाएगा। क्या आपके साथ कोई सुरक्षाकर्मी होगा?"

100 सेल्टा। "जेटी चारों अर्दली को ले जाएगा," उसने कहा; "उन्हें कल सुबह शिकार पर जाने की सूचना दे देना; और उन्हें अपनी वर्दी नहीं पहननी है। मैं सभी नौकरों को यहीं छोड़ रहा हूँ, और मुझे लगता है कि बैंकर मुझे खाना देगा।" "हाँ, और उसका सारा खजाना भी, अगर तुम सीता को उस बदमाश से बचा लेते हो," बूढ़े ने प्रसन्न स्वर में कहा। बाबा साहब को अपने स्वामी पर गर्व था, और उनकी ऊर्जा और दृढ़ संकल्प का यह नया प्रमाण उनके लिए बहुत संतोषजनक था। "काश सब उसके जैसे

होते!" घर जाते हुए उसने कहा। "भगवान उसे आशीर्वाद दें और उसकी रक्षा करें!" अनुवाद का काम एक तरफ रख दिया गया था, और सिरिल सोने चला गया था। वह तुरंत नहीं सोया; उत्तेजना बहुत अधिक थी; लेकिन थोड़ी देर बाद वह गहरी नींद सो गया, और सुबह उसके नौकर द्वारा जगाए जाने तक नहीं जागा, जिसने उसे बताया कि बाबा साहब का घोड़ा आ गया है, और आदमी तैयार हैं। "क्या मैं उन्हें बंदूकें दे दूँ?" उसने पूछा। "केवल छोटी तोपें, कासिम, और कुछ गोलियां। जब तक मैं नहाकर कपड़े पहनता हूँ, नाश्ता तैयार कर लो।" और जब उनके स्वामी बाबा साहब की कमीज़ और पगड़ी पहने अपने तंबू से बाहर निकले, तो नौकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। साइरिल को तैयार होने में देर नहीं लगी। उसने सावधानी से अपनी रिवॉल्वर भरी और उसे एक बड़े से कमरबंद में छिपा लिया। उसके लंबे, पतले घुड़सवारी के जूते उसके पैरों को ढके हुए थे; और जब वह बाबा साहब के फुर्तीले घोड़े पर सवार हुआ, तो थोड़ी दूरी से देखने पर वह एक साधारण यात्री ही लग रहा था। उसके चार अर्दली शिकार अभियान के लिए तैयार हुए थे और उन्होंने कोई वर्दी नहीं पहनी थी। "हमें कहाँ जाना है, साहब?" सिखों में से एक, गुलाब सिंह ने पूछा। "मैं अभी बताता हूँ," साइरिल ने उत्तर दिया; और वे उसी दिशा में चल पड़े जहाँ उसने इशारा किया था। वे धीरे-धीरे यात्रा करते रहे, बीच-बीच में नदी के किनारे विश्राम करते रहे, और उन्होंने किसी का ध्यान आकर्षित नहीं किया। शाहगंज जाने वाली सड़क पर हर गाँव से एक गाइड लिया गया था। जैसे ही दल गोकुलपुर पहुँचा, सिरिल ने उन्हें अपने गंतव्य के बारे में बताया। फिर, जैसे ही रात होने लगी, वे शहर में दाखिल हुए और सीधे बैंकर के घर चले गए। इतने अजीब समय पर दल को अंदर आने देने में कुछ हिचकिचाहट हुई; और जब राम सिंह, बूढ़े राठौर और उनके आदमी उन्हें जाने के लिए कह रहे थे, तो नरेंद्र खुद झगड़े का कारण जानने के लिए आगे आए। सिरिल अपने घोड़े से नीचे झुके और बैंकर के कान में फुसफुसाते हुए जल्दी से बोले, "मैं श्री ब्रैंडन हूँ। मुझे अंदर आने दीजिए इससे पहले कि कोई मुझे देख ले। मैं अभी आपको सब कुछ बता देता हूँ।" फिर बड़ा द्वार खोला गया और उन्हें अंदर जाने दिया गया। नरेंद्र बहुत हैरान थे, और स्वाभाविक भी थे।

चेतावनी और उपाय। 101 कमिश्नर साहब वहाँ किस कारण से आए थे, और वो भी ऐसे कपड़ों में? लेकिन वे ज़्यादा देर तक असमंजस में नहीं रहे; और जब सिरिल ने उन्हें बताया कि वे क्यों आए हैं, तो बूढ़े ने अपना सिर झुकाया और फूट-फूटकर रोने

लगे। “मैं इसके लायक नहीं हूँ,” उन्होंने कहा। “महोदय, मैं आपके लिए क्या हूँ कि आप मेरे और मेरे परिवार के लिए अपनी जान जोखिम में डालें? जाइए, पुलिस को आने दीजिए; वे काफ़ी होंगे।” “ऐसा नहीं,” सेसिल ने उत्तर दिया; “ब्राह्मण के भाग जाने के बाद से मुझे उन पर पूरा भरोसा नहीं है। यह मेरा निजी मामला है। क्या आप अपने आदमियों पर भरोसा कर सकते हैं? आपके पास कितने आदमी हैं?” “छह,” बैंकर ने कहा; “सभी राजपूत, और मृत्यु तक वफ़ादार।” “तो हमें उन्हें व्यवस्थित करना होगा,” सिरिल ने कहा। “मुझे डर है कि हम घर में असुविधा पैदा कर सकते हैं, और शायद उसे अपवित्र कर सकते हैं; लेकिन इसका कोई उपाय नहीं है। मेरे पास अपने चार आदमी हैं, और दस काफ़ी हैं; लेकिन मेरे साथियों ने दिन भर उपवास किया है। क्या आप उन्हें खाना खिला सकते हैं?” “जी हां,” बैंकर ने कहा। “मेरे घर का खाना बन रहा है, और उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।” तैयारियों, राम सिंह और उसके आदमियों के साथ हुई बैठक और हर किसी के अपने-अपने पदों पर बैठने में कुछ समय लग गया; और ऊपर के कमरे में मौजूद आंटी एला और सीता, इस असामान्य शोर-शराबे को देखकर उत्सुक हो गईं। “क्या बात है?” सीता ने कहा। “लड़के को जगाने मत दो। जाकर देखो।” आंटी एला नीचे गईं, लेकिन उनके भाई ने उन्हें कुछ रूखेपन से रोक दिया। “यह औरतों के लिए जगह नहीं है,” उसने कहा। “एक मेहमान आया है, और उसके आदमी इधर-उधर घूम रहे हैं। सीता के पास जाओ और उसके साथ रहो।” लेकिन आंटी एला बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं हुईं; और वह चुपचाप देखती रहीं। उन्होंने एक लंबे कद के व्यक्ति को भूरे रंग के रजाईदार कुर्ते और बड़े बूट पहने हुए देखा, जो आदमियों को इधर-उधर व्यवस्थित कर रहा था, और ये आदमी हथियारबंद थे। “वे सब लगभग फुसफुसाते हुए बात कर रहे थे, और वह सुन नहीं पा रही थीं कि क्या कहा जा रहा है; लेकिन उन्होंने अपने भाई को भी उनसे बात करते देखा, इसलिए उन्हें उससे कोई डर नहीं था।” फिर उसका भाई आया और उसे पुकारा—वह दरवाजे के पीछे छिपी हुई थी—और उससे जल्दी खाना लाने को कहा, क्योंकि मेहमान भूखा था और उसे जलपान की ज़रूरत थी। एला अब पहले से कहीं ज़्यादा हैरान थी; और एक नौकर को ज़रूरी निर्देश देकर सीता के पास गई, जो उत्सुकता से सुन रही थी। “मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा,” चाची एला लगभग रोते हुए बोलीं; “तुम्हारे दादाजी नाराज़ हैं, वे खाना तैयार होने से पहले ही खा लेंगे; और नीचे अजनबी लोग हैं, सब हथियारबंद हैं, और एक बड़ा, गोरा आदमी आदेश दे रहा

है। वह बिल्कुल अंग्रेज़ जैसा गोरा है; लेकिन मुझे रसोई में जाना होगा, और तुम चुप रहो।"

102 सीता। सीता का दिल ज़ोर से धड़कने लगा और वह लगभग साँस लेने में असमर्थ होकर बैठ गई। "ज़रूर वही होगा," उसने सोचा, "वही जो इतना दयालु था, और मैं उसे एक बार फिर देखूँगी;" और वह उठी और नीचे चली गई। वहाँ कोई पुरुष नहीं था, और सामने के हॉल में देखते ही उसने स्पष्ट रूप से देखा कि उसके चाचा की कुर्सी पर बैठा अजनबी वास्तव में सिरिल ब्रैंडन ही था: यही काफी था। वह क्यों आया था, यह वह नहीं जानती थी; लेकिन उसके दिल में एक सुखद सुरक्षा का भाव उमड़ आया, जिससे उसकी आँखों में आँसू आ गए। "मैं जाकर शाम के भजन गाऊँगी," उसने मन ही मन कहा, "और उसके लिए प्रार्थना करूँगी;" और तभी सिरिल ने एक भीतरी कमरे में शाम के हिंदू भजन गाती हुई एक मधुर आवाज़ सुनी। "यह कौन गा रहा है?" उसने पूछा। "यह सीता है," बैंकर ने कहा; "मुझे खुद 'भुजु' गाना चाहिए, लेकिन मैं बूढ़ा हो गया हूँ और वह हमेशा गाती है; मुझे उसे सुनना अच्छा लगता है।" आवाज़ वाकई मधुर थी, और टुम्बोरा की हल्की संगत ने उसके प्रभाव को और बढ़ा दिया। सिरिल भजन समाप्त होने तक बिना कुछ बोले सुनता रहा; भजन समाप्त होते ही उसने कहा, "नरेंद्र, उन्हें बता देना चाहिए और जो कुछ भी हो सकता है उसके लिए तैयार कर देना चाहिए; क्या तुम ऐसा करोगे और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दोगे?" "मुझे लगता है," नरेंद्र ने कहा, "अगर उन्हें पता होता कि तुम यहाँ हो तो उन्हें तसल्ली मिलती; हाँ, उन्हें पता होना चाहिए।" और वह उनके पास गया, और आंटी एला और सीता भी उसके साथ अंदर आईं। दोनों में जरा भी बदलाव नहीं आया था; और दोनों की जिज्ञासा ने, अगर संभव हो तो, सीता के चेहरे की सुंदर अभिव्यक्ति को और भी बढ़ा दिया। जब सिरिल उठा और दोनों को प्रणाम किया, तो महिलाओं ने झुककर उसके पैर छुए, फिर अलग जाकर बैठ गईं, जबकि सिरिल ने बताया कि वह क्यों आया था। दोनों बहादुर महिलाएं थीं; और, हालांकि वे बहुत परेशान थीं, फिर भी अपेक्षाकृत शांत थीं। सिरिल ने कहा, प्रतिरोध हो सकता है, रक्तपात हो सकता है; लेकिन कोई डर नहीं था, और अगर वे ऊपरी कमरों में चुपचाप रहें, तो सब ठीक रहेगा। लेकिन सीता ऐसा नहीं चाहती थी; और वह उठी और विनम्रता से, हाथ जोड़कर बोली - "जब ब्राह्मण आया था तब मैं खतरे से जरा भी नहीं डरी थी और अब भी नहीं डरूंगी। हे मेरे स्वामी! मुझे रहने दीजिए, मैं अकेले नहीं रह सकती"—और वह

आई, और फिर से उसके पैर छुए— “आंटी एला मेरे बेटे की देखभाल करेंगी।” सिरिल ने देखा कि वह बिल्कुल शांत थी; उसकी कोमल भूरी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं, लेकिन उनमें कोई कमी नहीं थी; आंटी एला सिसक रही थीं और अपना सीना पीट रही थीं, और अंत में वह उठीं और चली गईं; और सिरिल ने कहा, "जैसा तुम चाहो, लेकिन आँगन के अंदर ही रहना, क्योंकि कुछ कठिन काम हो सकता है।" फिर सीता अपने बच्चे के पास गई; और धीरे-धीरे, जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, घर में सन्नाटा छा गया, और पुरुषों ने अपने-अपने काम शुरू कर दिए।

चेतावनी और बचाव। 103 कई स्थितियाँ। बाहरी द्वार थोड़ा खुला छोड़ दिया गया था, मानो उसे लापरवाही से बंद किया गया हो; पहरेदार कक्ष में लकड़ी के लट्ठों पर कुछ कंबल डाले गए थे, मानो सोते हुए पहरेदारों का आभास हो रहा हो, और सारी तैयारी हो चुकी थी; सिरिल ने सीता को ऊपर से सीढ़ियों से नीचे आते सुना, और शाम के धुंधलके में उसे आंगन के बरामदे में बैठते देखा, लेकिन वह उससे ज़्यादा दूर नहीं थी। आधी रात बीत गई, और नगर के पहरेदार अपने रोज़ाना के चक्कर लगाने लगे, ढोल बजाते और सींग बजाते हुए, और चिल्लाते हुए, “दूसरा पहर बीत गया, चैन से सो जाओ!” फिर नगर में सन्नाटा छा गया, सिवाय कभी-कभार कुत्तों के भौंकने की आवाज़ के, और फिर से खामोशी छा गई; लेकिन समय निश्चित रूप से निकट था। लगभग दो घंटे बाद, जब सभी पहरा दे रहे थे, सीता अचानक उठी और ब्रैंडन से बोली, “मुझे उनकी आवाज़ सुनाई दे रही है, वे पास हैं; तैयार रहो!” जब वह आदमियों को चुप रहने की चेतावनी दे रहा था, तभी उन्होंने कुल्हाड़ी के वार से बाहरी द्वार के टूटने की आवाज़ सुनी, भीतरी प्रांगण में आदमियों के भागने की आहट सुनी और जलती हुई मशालों की रोशनी देखी। सिरिल सीढ़ियों के पास आगे खड़ा था, और जैसे ही रोशनी उस पर पड़ी, सीता ने उसकी सुगठित आकृति को गर्व से तनी हुई और तैयार देखा। यह अजीब था कि डाकुओं ने उसे तुरंत नहीं देखा, लेकिन वह लकड़ी के एक मोटे खंभे के पीछे छिपा हुआ था। सिरिल ने उन्हें घबराकर अंदर आने दिया और सीढ़ियों पर चढ़ने दिया। उसने नेता की लंबी आकृति को पहचान लिया, हालाँकि उसका चेहरा ढका हुआ था, और अपनी पिस्तौल से उसे भेदकर गोली चलाई; एक आदमी गिर गया, लेकिन वह अज़रील नहीं था। ब्रैंडन ने बार-बार तेज़ी से गोलियाँ चलाईं, और उस अफरा-तफरी में, जो चारों ओर फैल गई थी—क्योंकि छिपे हुए आदमी अपने छिपने के स्थानों से निकलकर प्रांगण में कूद पड़े थे और डाकुओं पर

हमला कर दिया था—एक आदमी के दाहिने हाथ में भाला घुस गया, और वह बेजान होकर उसके बगल में गिर गया। यह सब एक मिनट से भी कम समय में हुआ था। पांच डाकू घायल या मृत पड़े थे; कई पकड़े गए थे, और बाकी ने अपनी मशालें बुझाकर अंधेरे में भाग निकले, जैसे वे आए थे। सीता ने सिरिल के हथियार के सामने दो आदमियों को गिरते देखा; फिर उसने उसे घिरे हुए देखा; और लेटे हुए, उमड़ते हुए लोगों ने उसे उसके पास जाने से रोक दिया, लेकिन केवल एक पल के लिए। उसने उसे घायल होते देखा, और खून का फव्वारा जो बहकर उसकी ओर आया। “चले जाओ! चले जाओ!” वह चिल्लाई, और उसे भीतरी आंगन में खींचने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे धीरे से एक तरफ कर दिया। “मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ,” उसने कहा। “घाव की चिंता मत करो, यह तो बस एक खरोंच है, और मुझे अपने लोगों के पास जाना है।” जब वह पानी लाने गई, तो सिरिल ने चारों ओर देखा। किसी ने एक डाकू की मशाल फिर से जला दी थी, और सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था; और उसके सिख साथियों में से एक ने उठकर अदालत की ओर इशारा करते हुए कहा, "उनमें से तीन मर चुके हैं, एक..."

104 सीता। "सब मर रहे हैं, और कोई नहीं बचेगा; हममें से किसी को चोट नहीं आई है। क्या हम पुलिस को बुलाने के लिए थाने चलें?" "हाँ," उसने कहा; "जिन आदमियों को हमने पकड़ा है, उन्हें सुरक्षित रखो।" और वह बैठ गया, क्योंकि उसे कमजोरी और बेहोशी महसूस हो रही थी। "यह पीजिए, श्रीमान," सीता ने कहा, जो अब ठंडे पानी से भरा एक चांदी का प्याला लेकर लौटी थी, और सिरिल ने उत्सुकता से पानी पिया। उसने सोचा कि इससे स्वादिष्ट पेय उसके होठों से कभी नहीं गुजरा था, और उसने कृतज्ञता से लड़की की ओर देखा; लेकिन फिर भी वह बेहोश था, क्योंकि घाव से बहुत खून बह रहा था, और सीता ने देखा कि उसका सिर उसके कंधे पर गिर गया। "जल्दी!" उसने सिख को पुकारा, जो कुछ निर्देश दे रहा था; "अपने मालिक के पास आओ, वह घायल है! जल्दी, उसे मेरे पीछे ले आओ।" कई आदमी सिरिल की ओर दौड़े और उसे धीरे से उठाकर भीतरी आंगन के बरामदे में ले गए और एक नीची चारपाई पर लिटा दिया; वह बेहोश और कमजोर महसूस कर रहा था, लेकिन पूरी तरह होश में था। नरेंद्र उसके पास खड़ा था और सीता चारपाई के पास घुटनों के बल बैठी थी। उसका एक आदमी कुर्ते की गांठें खोल रहा था और उसे जल्दी से उतार दिया गया। “हमें घाव तक पहुंचना होगा,” उसने कहा, “और खून बहना रोकना होगा, नहीं

तो वह फिर बेहोश हो जाएगा;" और घाव खुल गया। यह कोहनी के ऊपर था, और भाला बांह के मांसल हिस्से से आर-पार हो गया था। "इसके लिए हमें एक अच्छे नाई की ज़रूरत होगी," सिख ने आगे कहा; "यह कोई मामूली खरोंच नहीं है, महोदय; लेकिन कोई बात नहीं, यह जल्दी ठीक हो जाएगा।" "वह इसे धो देगा, महोदय," सीता ने विनम्रता से सिख से कहा; "मुझे जो करने दीजिए।" "ठीक है," उस आदमी ने उत्तर दिया, "आपके हाथ मेरे हाथों से हल्के हैं; "इसे अच्छे से धो लो, मैं बाहर के काम देख लेता हूँ," और वह चला गया। चाची इला, जो अब आ चुकी थीं, गर्म पानी लेकर आईं, और दोनों ने मिलकर घाव को जल्दी से धोकर पट्टी बाँध दी; और बूढ़ी औरत को ज्ञात जड़ी-बूटियों का एक सेंका तैयार करके रसोई में उबालने के लिए रख दिया गया। हालाँकि, सिरिल को पहले से ही ताज़गी महसूस हो रही थी, लेकिन घाव बहुत दर्दनाक था। उसने बाहर पुलिस दारोगा की आवाज़ सुनी, जो निर्देश दे रहा था, और कुछ मिनट बाद वह अंदर आया, जो कुछ हुआ था उससे बहुत चिंतित था। "क्या आपके पास उनमें से और भी हैं?" सिरिल ने पूछा। "अभी मुझे परेशान मत करो; मैं सुबह सब कुछ देख लूँगा।" "नहीं, अभी तक नहीं," अधिकारी ने उत्तर दिया; "कोई भी डकैत नहीं मिला। वे तुरंत अलग हो गए होंगे, लेकिन आदमी उनका पीछा कर रहे हैं; और हमें एक पालकी मिली है, और उसके साथ अठारह कुली भी हैं, जो एक गली में थी। इसका क्या उद्देश्य हो सकता था? मैंने उन सभी को पकड़ लिया है।"
तबाह तंबू। 105 सिरिल अच्छी तरह जानता था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। जब उसने स्केटा को देखा, जो अपना चेहरा छुपाए बिस्तर के पास बैठी थी, तो उसे इस बात का शुक्रगुजार महसूस हुआ कि उसने उसे बचा लिया था; और फिर उसने सोचा कि डकैती की योजना कितनी दुस्साहस से बनाई गई थी। पुलिस स्टेशन काफी दूर था, और कोई अलार्म बजने से पहले ही लुटेरों की पूरी योजना को अंजाम दिया जा सकता था। तभी चाची एला अपनी सिकाई लेकर आईं, जिससे दर्द कम हुआ और खून बहना बंद हो गया; और एक बूढ़े नाई ने बड़ी चतुराई से घाव पर टांका लगाया और उसे कोमलता से बांध दिया; और इससे काफी राहत पाकर सिरिल सो गया, जबकि औरतें उसके पास बैठी रहीं और बारी-बारी से उसे पंखा करती रहीं, और उसके आदमी बाहर बैठे धीमी आवाज़ में आपस में बातें करते रहे। अध्याय XIIY. तबाह तंबू। सिरिल ब्रैनपोन सुबह होते ही जाग गया और कमज़ोर महसूस कर रहा था, क्योंकि वह बहुत कम सोया था। पहले तो उसे मुश्किल से ही समझ आया कि वह

कहाँ है; लेकिन पिछली रात की घटनाएँ उसके मन में बड़ी स्पष्टता से कौंध गईं। उसके पास उसके दो सहायकों के अलावा कोई नहीं था, दोनों सो रहे थे; और घर में धीमी, मधुर आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ नहीं थी, वैसी ही जैसी उसने पिछली रात सुनी थी। सीता सुबह का भजन गा रही थी, जबकि नरेंद्र और उसकी चाची पूजा में लीन थे, और वास्तव में, बड़े खतरों से बच जाने के लिए कृतज्ञता की प्रार्थना भी कर रहे थे। | इसके समाप्त होने के बाद, मुझे लगता है, तीनों इस बात को लेकर परेशान थे कि सिरिल के बारे में क्या किया जाए। वह क्या करना चाहता होगा? क्या उसने स्नान किया, और वह क्या खाएगा? आखिरकार आंटी एला ने दृढ़ता से कहा कि उनके लिए हल्की खिचड़ी और इमली का पानी सबसे अच्छा रहेगा; और सीता ने कहा कि वह इन्हें बनाएंगी और तैयारी करने चली गईं। इस बीच ब्रैंडन ने अपने आदमियों को जगा दिया था, और बड़े कद के दाढ़ीधारी सिख गुलाब सिंह ने उनके घाव के बारे में पूछते हुए उन्हें धीरे से उठाया; और जैसे ही ब्रैंडन उठे, वह उनके लिए सुराही और बेसिन लाए, जो एक महिला नौकरानी ने तैयार रखे थे, और उनके हाथों पर पानी डाला। तब सिरिल को ताजगी महसूस हुई, और अपने सेवक की मदद से वह बाहर गए और बाहरी हॉल में बैठ गए। आंगन साफ कर दिया गया था, हॉल का फर्श नया प्लास्टर किया गया था, और बैंकर के कुशनों पर एक नया सफेद कपड़ा बिछाया गया था, जिस पर सिरिल बैठ गए। सब कुछ साफ-सुथरा और सुखद लग रहा था, और सुबह

 सीता। हवा ताज़ी और स्फूर्तिदायक थी। नरेंद्र ने अपने मेहमान को वहाँ बैठे हुए पाया और उनके सामने झुक गया। पहले तो वह कुछ बोल नहीं सका; बूढ़े का दिल शब्दों से इतना भरा हुआ था कि वह कुछ कह नहीं पा रहा था। अंत में उसने कहा, “जो कुछ हमारे पास है, वह आपका है; आपने अपनी जान जोखिम में डालकर हमारे घर और हमारी जान बचाई है, और हमारे लिए अपना खून बहाया है। काश, हम अपनी मृत्यु तक अपने दिल की बात कह पाते!” “जाने दो,” सिरिल ने कहा; “यह तो मेरा कर्तव्य था। मैं एक ही उद्देश्य से आया था, और उसमें मैं असफल रहा; लेकिन शायद पुलिस भी इससे बेहतर नहीं कर पाती। अजरील पांडे मुझसे बच निकला।” “हाँ,” बैंकर ने कहा, “और अब हम उसके बारे में लंबे समय तक कुछ नहीं सुनेंगे; लेकिन वह एक दुष्ट ब्राह्मण है, और जब ब्राह्मण बुरे होते हैं, तो वे दूसरों से भी बदतर होते हैं। वह सीता को ले जाना चाहता था, महोदय, और आपने उसे बचा लिया।” “तो फिर

आपको यह कैसे पता?" ब्रैंडन चिल्लाया। "हाँ," बूढ़े ने गंभीरता से उत्तर दिया; "मुझे पता है। वरना पालकी वहाँ क्यों थी? और डाकुओं में से एक ने कल रात, आपके लेटने के बाद, मरने से पहले सब कुछ कबूल कर लिया।" "चूँकि आप इतना जानते हैं," सिरिल ने जवाब दिया, "तो आपको सब पता चल जाएगा। कल मैंने जो कुर्ता पहना था, उसकी जेब में आपको एक पत्र मिलेगा; उसे मेरे पास ले आइए। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इसे किसने लिखा है?" उसने पूछा। "हाँ," नरेंद्र ने उसे पढ़ने के बाद जवाब दिया। "मुझे लगता है कि यह बुलदेव ही होगा, वही आदमी जिसे सेक्टा ने आपके दरबार में बचाया था। मुझे किसी और का नाम याद नहीं आ रहा।" "शायद," सिरिल ने कहा; "और हम देखेंगे कि दारोगा इसके बारे में क्या कहता है। आह! वह यहाँ है। आपका स्वागत है, अब्बास अली; क्या खबर है?" बूढ़ा अधिकारी सीढ़ियों से ऊपर आया, अपनी तलवार कमरबंद से निकाली, और दुखी चेहरे और झुके हुए प्रणाम के साथ उसे सिरिल के सामने रख दिया। "जब तक आप मुझे नहीं बताएंगे, मैं इसे दोबारा नहीं उठाऊंगा," उसने आदरपूर्वक कहा, लेकिन उसकी आँखों में आँसू थे; "मुझे कल रात आपके साथ होना चाहिए था, और मेरे स्वामी घायल हैं; लेकिन अनुपस्थित रहने के कारण मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं कायर हूँ।" "ऐसा एक पल के लिए भी मत सोचो," सिरिल ने चिंतित होकर उत्तर दिया; "और अब मैं खुद को कोस रहा हूँ कि मैंने तुम्हें क्यों नहीं बुलाया। मुझे लगता है कि तुम इस मामले को मुझसे बेहतर संभाल लेते, और अज़रील पांडे बच नहीं पाता। अपनी तलवार उठाओ, और उसे हमेशा की तरह सम्मानपूर्वक धारण करो; और तुम्हारे पदक इस बात की गवाही देते हैं कि तुमने ऐसा किया है।" "मैं विनम्रतापूर्वक और कृतज्ञतापूर्वक आपका धन्यवाद करता हूँ, महोदय," उसने अपनी तलवार रखते हुए कहा; "लेकिन नहीं, अज़रील के जासूस शहर में रहे होंगे, और उन्हें पता चल गया होगा कि मैं यहाँ आया हूँ। मैंने सुना है कि तुम भेस बदले हुए थे, और वे तुम्हें पहचान नहीं पाए। उनमें से एक, जिसे पकड़ा गया था, ने वास्तव में यही स्वीकार किया है। तुम क्षतिग्रस्त तंबू। 107 एक क्ला ए ग्रीन, लेकिन पहचाना नहीं गया, और उन्होंने सोचा कि आप नरेंद्र के आगंतुक हैं।" "और डकैती कहाँ से आई?" सिरिल ने पूछा। "जनपुर से," दारोगा ने उत्तर दिया; "नवाब दिल खान बहादुर की जागीर में; लेकिन आदमी कुछ दिनों से इसके पास ही हैं, जंगलों में छिपे हुए, अपने नेता का इंतजार कर रहे हैं।" "आह! मुझे भी नवाब पर शक है। हमें उसे देखना होगा, मेरे दोस्त।" "जब आप

बयान सुन सकेंगे, महोदय," दारोगा ने आगे कहा, "मैं उन्हें आपके पास लाऊंगा; लेकिन आज नहीं। आपको आराम की जरूरत है। क्या आप उसके लिए यहाँ कोई शांत कमरा उपलब्ध करा सकते हैं," उसने नरेंद्र से पूछा, "क्या उसके तंबू और नौकर आ सकते हैं? मैंने उन्हें बुलवाया है।" "मेरा पूरा घर उसका है," बैंकर ने उत्तर दिया, "और वह इसे अच्छी तरह जानता है। हाँ, ऊपर वाला कमरा है—मेरे बच्चे का कमरा। मैं तुरंत इसका इंतजाम कर दूंगा।" फिर पुजारी वामुन भूत आए, अपने साथ कस्बे के एक स्थानीय चिकित्सक को लाए, जिन्होंने सिरिल की नब्ज़ जाँची और बताया कि उन्हें बहुत तेज़ बुखार है। उन्होंने कहा कि घाव पर दोबारा पट्टी बाँधनी होगी और उन्हें आराम देने वाली दवा पिलानी होगी। "मैं अभी वापस आता हूँ," उन्होंने कहा; "इस बीच, उन्हें यहाँ से ले जाया जाए। यहाँ बहुत ज़्यादा खुलापन है।" जब नरेंद्र लौटे, तो उन्होंने कहा कि सब तैयार हैं; और पुजारी की मदद से, सिरिल को सीढ़ियों से ऊपर विशाल कमरे में ले जाया गया। सीता और आंटी इला वहाँ कुछ समय से काम में लगी हुई थीं, और उन्होंने उनके लिए एक कालीन बिछाया था और एक नीचा पलंग लगाया था, जो अपने बर्फ़ जैसे सफ़ेद चादरों और तकियों के साथ बहुत आकर्षक लग रहा था, और वह लेट गए और आराम महसूस किया। "कितने दयालु और विचारशील हैं ये सब!" उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक सोचा। सीता वहाँ नहीं थीं; लेकिन आंटी इला थोड़ी देर में एक ढका हुआ बर्तन और इमली के पानी से भरा एक चाँदी का प्याला लेकर आईं। "हमारी नादानी के लिए क्षमा करें," उन्होंने कहा; "हमें नहीं पता कि आप क्या खाते हैं; लेकिन यह सादा खाना है, और इससे आपको फायदा होगा, और सीता ने इसे आपके लिए बनाया है; और यह एक अंग्रेजी चम्मच है जो हमारे पास था, आप इससे खा सकते हैं; हम जानते हैं कि आप अंग्रेज अपनी उंगलियों का इस्तेमाल नहीं करते।" सिरिल को हंसी भी आई और वह खुश भी हुआ: और उसे सादा खिचड़ी स्वादिष्ट लगी, और इमली का पानी भी। उसने बूढ़ी औरत को संतुष्ट करने के लिए खाया, हालांकि वह सारा खत्म नहीं कर सका। "क्या सीता मुझे देखने आएगी?" उसने पूछा; "शायद डॉक्टर के आने पर वह मेरे घाव पर पट्टी बांध दे।" "अगर वह हमें इजाज़त देंगे," उसने जवाब दिया, "तो हम मिलकर करेंगे; लेकिन हो सकता है कि उन्हें औरत के हाथों से पट्टी बांधने में आपत्ति हो। वैसे भी वह आपको धन्यवाद देने आएगी। हे भगवान!" वह रोते हुए बोली, "आपने हमारी बच्ची की जान बचाई है, तो हम आपके लिए क्या नहीं कर सकते?"

 सीता। फिर थोड़ी देर बाद डॉक्टर आए और पट्टियाँ खोलीं। उन्होंने महिलाओं को घाव छूने नहीं दिया; उन्होंने कहा कि वे हमेशा पवित्र नहीं होतीं और ऐसे मामलों के बारे में कुछ नहीं जानतीं। लेकिन वह एक कुशल डॉक्टर थे; और जब ऑपरेशन पूरा हो गया, और बांह पर जड़ी-बूटियों की ठंडी पट्टी फिर से लगा दी गई, तो सिरिल को आराम मिला, और उन्हें दी गई सुखदायक दवा ने उनके बुखार और प्यास को शांत कर दिया, और वह कई घंटों तक चैन से सोए। एक बार उन्हें लगा कि सीता अपने बच्चे को गोद में लिए अंदर आई थीं, और उनके ऊपर झुककर रो रही थीं; लेकिन वह बिना कुछ बोले चली गईं। शायद उन्होंने यह सपना देखा था; फिर भी यह छाप इतनी प्रबल थी कि इसे भुलाया नहीं जा सका, और वह फिर से आ सकती थीं। और वह आईं भी। शाम के समय वह ऊंघ रहे थे, और उन्होंने सीता को अंदर आते देखा; और उन्हें सोता हुआ समझकर, सीता आईं और उन्हें देखकर आह भरी। “मैं सोया नहीं हूँ,” उन्होंने कहा। “डरो मत, बैठो और मुझसे बात करो।” “मैं डरा नहीं हूँ; “लेकिन आपको बोलना नहीं है,” उसने जवाब दिया; “डॉक्टर ने ऐसा कहा है। शायद कल मैं आऊं। मैं चाहती हूं कि आप मेरे बेटे को देखें, और मैं उसे ले आऊंगी। वही मेरा एकमात्र सहारा है, और वह आपसे नहीं डरेगा।” “अभी क्यों नहीं लाते?” “नहीं,” उसने कहा, “आपको एकदम चुप रहना है, और अब और कुछ नहीं बोलना है;” और वह कमरे से चली गई। “कितनी अजीब लड़की है!” सिरिल ने सोचा, “और कितनी सुंदर!” और वह फिर से सो गया, और उसके बारे में उलझे हुए सपने देखने लगा, जिन्हें वह समझ नहीं पा रहा था। फिर शाम को दयालु चाची किला फिर से खाना लेकर आईं, लेकिन वह ज्यादा नहीं खा सका, और नरेंद्र और पुजारी भी आए, और थोड़ी देर बैठे रहे, और दो-तीन और लोग भी; और डॉक्टर भी आए, जिन्होंने उसे एक और दवा दी; इसलिए वह अकेला नहीं था, और उस रात वह अच्छी तरह सोया। जब वह जागा तो सिरिल बेहतर और मजबूत महसूस कर रहा था, हालांकि अभी भी कमजोर था। वास्तव में, उसका बहुत खून बह गया था। रात भर उसके सहायक बारी-बारी से उसकी रखवाली करते रहे, और अब सिख गुलाब सिंह चुपचाप खिड़की पर बैठकर बाहर देख रहा था। "आपको नहाना है," उसने कहा, जैसा कि सिरिल ने उसे पुकारा था; "डॉक्टर ने कहा है; और पानी तैयार है। मैं आपको नहलाऊँगा, और पानी कमरे में है। उठिए, महोदय। मैंने बैंकर से कुछ साफ कपड़े उधार लिए हैं, और आप आराम से रहेंगे।" और उसने सिरिल को उठने में मदद की। क्या उस गर्म स्नान और

उस खुरदुरे सिख के हाथों से रगड़ने से ज़्यादा सुखद कुछ हो सकता था? सिरिल उसके हाथों में निष्क्रिय था, और उसे अपनी मर्ज़ी से करने दे रहा था। जैसे-जैसे उसके शरीर पर गर्म पानी डाला जाता गया, उसका सारा दर्द और बेचैनी दूर होती चली गई, और अंत में उसे एक गर्म सूखी चादर में लपेट दिया गया। फिर एक मलमल का कुर्ता उसके ऊपर डाल दिया गया।

क्षतिग्रस्त तंबू। उसे 109 बैंकर का कपड़ा और एक बढ़िया कमरबंद पहनाया गया, उसकी घायल बांह की आस्तीन काटकर खोली गई; और उसे वापस उसके बिस्तर पर ले जाया गया, और वह अब तक की सबसे ताज़गी भरी नींद में सो गया। जब वह जागा और खाना खा लिया, तो दोपहर हो चुकी थी। “स्केटा थोड़ी देर में तुम्हारे पास आएगी,” चाची एला ने कहा था। “डॉक्टर ने कहा है कि तुम थोड़ा बोल सकते हो, लेकिन किसी से कोई काम-काज नहीं करना है। अगर तुम चाहो तो वह तुम्हें पढ़कर सुनाएगी या तुम्हारे लिए गाएगी।” और इसलिए वह इंतज़ार करता रहा। थोड़ी देर में सीता अपने बच्चे को गोद में लिए कमरे में दाखिल हुई। सिरिल ने एक नज़र में ही देख लिया कि बच्चा बहुत बदल गया था। उस छोटे बच्चे की आँखें बड़ी लग रही थीं, और वह पीला और मुरझाया हुआ था; उसकी गर्दन और हाथ-पैर सिकुड़े हुए लग रहे थे, और वह भारी साँसें ले रहा था। फैली हुई पुतलियाँ और भारीपन सिर की किसी बीमारी का संकेत दे रहे थे। "मैं इसे आपके पास लाई हूँ," उसने कहा। "इसे देखिए। अंग्रेज़ सब कुछ जानते हैं, और शायद आप इसकी मदद कर पाएँ; कोई और नहीं कर सकता।" सिरिल ने अपना बायाँ हाथ बढ़ाया, और बच्चा आगे झुककर उसके पास गया, और बिस्तर पर बैठे हुए उसके चेहरे को बड़ी उम्मीद से देखने लगा। "यह आपसे डरता नहीं है, श्रीमान," उसकी माँ ने कहा, "सामान्य है। यह बहुत अजीब है।" "क्यों?" सिरिल ने पूछा। "सभी बच्चे बिना डरे मेरे पास आते हैं।" "हाँ, अब मैं समझ गई," उसने सपने में खोए हुए अंदाज़ में कहा। "क्योंकि आप अच्छे हैं। बच्चे जानते हैं कि कौन उनके साथ अच्छा व्यवहार करता है;" और मैं तो बस एक बच्ची हूँ, क्योंकि मुझे आपसे कोई डर नहीं लगता—मैंने कभी नहीं लगाया; और यह अजीब बात है। आप अंग्रेज़ हैं, और लोग आपसे डरते हैं; लेकिन मैं नहीं डरती।” “मैं चाहूँगी कि वे मुझसे प्यार करें, न कि मुझसे डरें।” “हाँ, बहुत से लोग आपसे भी प्यार करते हैं,” उसने गंभीरता से उत्तर दिया,* लेकिन यह डर के साथ प्यार है, और हमें कोई डर नहीं है। न दादाजी से, न आंटी एला से, न मेरे बेटे से, न मुझसे। हम केवल आपसे प्यार करते हैं

और आपकी पूजा करते हैं, जैसे हम अपने देवताओं की करते हैं।" "नहीं, महोदया, ऐसा मत कहिए," सिरिल ने कहा। "मनुष्य को देवता के रूप में पूजना, हम अंग्रेज़ पाप मानते हैं; लेकिन सभी के लिए प्रेम है, और ईश्वर के लिए भी, और इसमें हम अलग नहीं हैं। उन्होंने कल रात मेरी जान बचाई। क्या मैं आभारी नहीं हूँ? बुलदेव ने एक बार आपकी जान बचाई थी; फिर भी आप उनकी पूजा नहीं करतीं!" "नहीं," उसने उत्तर दिया, "उनकी नहीं, हालाँकि मैं आभारी हूँ। लेकिन आप बहुत अलग हैं। उन्होंने हमारे लिए अपनी जान जोखिम में नहीं डाली, और आपने स्वेच्छा से, और बिना किसी विचार के, केवल हमारी रक्षा करने के लिए ऐसा किया।" सिरिल ने धीरे से कहा, "तुम मुझसे कहीं बेहतर हो।"

110 सीता, आप ईश्वर की शक्ति का अवतार हैं, इसलिए हम आपसे प्रेम करते हैं और आपकी पूजा करते हैं। देखिए, बच्चा भी आपके सामने नतमस्तक है!" और सचमुच यह सच था, क्योंकि वह छोटा बच्चा सिरिल के पास दुबक गया था और अपनी बड़ी-बड़ी जिज्ञासु आँखों से उसे देख रहा था, और कभी-कभी प्रेम से उसके चेहरे और दाढ़ी को सहला रहा था, जिसे सिरिल ने अस्वीकार नहीं किया। लेकिन उसने विषय बदल दिया। "तुम्हारे पास एक किताब है," उसने कहा; "लोग कहते हैं कि तुम पढ़ सकती हो। क्या तुम मुझे पढ़कर सुनाओगी?" "यह संस्कृत है," उसने विनम्रता से उत्तर दिया, "और आप इसे समझ नहीं पाएँगे; लेकिन मैं इसे पढ़ते हुए समझा सकती हूँ।" "मैं इसे थोड़ा-बहुत समझता हूँ," उसने कहा। "मैंने इसे इंग्लैंड में सीखा है, और मैं इसे अक्सर पढ़ता हूँ। वह कौन सी किताब है?" "सावित्री," उसने उत्तर दिया; "यह महाभारत का एक भाग है। क्या आप इसे जानते हैं?" "जी हाँ, महोदया," उसने कहा। "पढ़ते रहिए, मैं सुनूँगा।" उसने धीरे-धीरे पढ़ा; लेकिन सीता की मधुर, सुरीली आवाज़ में पुराने हिंदू कवि के सुंदर दोहे ऐसे सुनाई दिए जैसे उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे। सिरिल ने उन्हें केवल पंडितों द्वारा आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले नाक से निकलने वाले लयबद्ध स्वर में ही सुना था; लेकिन यह बिल्कुल अलग था। सीता अपने विषय में और भी अधिक उत्साहित होती गईं, और उनकी आवाज़ के उतार-चढ़ाव उस उत्कृष्ट कहानी के अनुसार बदलते गए। यह भविष्यवाणी की गई थी कि सावित्री के पति की मृत्यु होने वाली है; और जब वे जंगल में थे, तो उन्हें मृत्यु का आभास हुआ, और वे रोए, "प्रियतम, मैं अब और सहन नहीं कर सकता!" तब वह ज़मीन पर बैठ गईं, उनका सिर अपनी छाती पर रखा, और उस

प्रेममयी, दयालु महिला ने अपने सत्यवान को लोरी सुनाई। “आगे पढ़ो,” सिरिल ने कहा; ‘एक सुंदर अंश आगे है। या मुझे पढ़ने दो। मैं कोशिश करूँगा; लेकिन मुझ पर हँसना मत।’” उन्होंने आश्चर्य से पुस्तक उन्हें सौंप दी। “ओह! मैं सुनूँगी,” उन्होंने कहा। सिरिल ने ध्यान से पढ़ा। यह पाठ महाविद्यालय में उनका पसंदीदा अभ्यास था और उन्हें यह कंठस्थ था; भारत में उन्होंने कविता की उचित लय और उच्चारण का काफी ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मृत्यु के देवता यम, एक भयानक उपस्थिति के रूप में आते हैं और सावित्री के पति की आत्मा ले जाते हैं; परन्तु वह भयभीत नहीं होती:— जहाँ कहीं भी मेरे पति जाते हैं, जिस मार्ग पर उनका निधन होता है, वहाँ सावित्री, सदा निष्ठावान, अविचलित होकर चलती रहेंगी। “हाँ,” सीता ने उन्हें रोकते हुए, अपनी बड़ी, कोमल आँखों में चमकते आँसुओं के साथ कहा, “वह गईं, पत्नी अपने पति के साथ —मृत्यु में। उन्हें मृत्यु का कोई भय नहीं था। इसलिए मैं भी जाती।”
पीड़ित तंबू। 111 एक बार, अपने कर्तव्य के लिए, जब उसकी मृत्यु हुई; लेकिन मुझे इससे वंचित कर दिया गया, और बच्चा जीवित है।” “अपने कर्तव्य के लिए,” सिरिल ने कहा, “अपने प्रेम के लिए नहीं?” “यह एक ही बात है,” लड़की ने उत्तर दिया। ‘प्रेम के बिना कोई कर्तव्य नहीं हो सकता। लेकिन आपको पढ़ना नहीं चाहिए। क्योंकि, आप पहले से ही लाल हो चुके हैं, और यह आपके लिए अच्छा नहीं है। मैं किताब खत्म कर दूंगी, क्योंकि अंत में वे खुश होते हैं। मैं आपको उदास विचारों के साथ नहीं छोड़ूंगी। इतना काफी है कि मेरे पास अपने विचार हैं।” और वह पढ़ती रही। “क्या तुम मेरे लिए कुछ गाओगी नहीं?” उसने कहा, जब वह पढ़ चुकी थी। ‘मैं संस्कृत दोहों की बजाय तुम्हारी आवाज़ को अपने कानों में गूंजते देखना पसंद करूंगा, चाहे वे कितने भी महान क्यों न हों!’ “मैं गाऊंगी,” उसने उत्तर दिया। “मुझे ज़्यादा गाने नहीं आते, मैं केवल भजन गाती हूँ; लेकिन मुझे एक याद है जो एक गायक ने एक बार गाया था, और मैंने वामन भूत से उसे सीखा था। क्या आप उसे सुनेंगे?” और वह उठी और कमरे के एक कोने में रखे अपने तुम्बूरा को उठाया; और उसे एक सुर में बजाकर एक पुराना हिंदी गीत गाया, जिसका अनुवाद इस प्रकार है:— मैं उससे वो प्यारे शब्द नहीं कह सकी जो मैंने संजो कर रखे थे। मेरी बहती आँखें आँसुओं से धुंधली थीं, जो फिर, हाय! अनसुने ही बह गए। कठोर हवा चल रही है, ठंडी बारिश हो रही है, मेरे पास रहने की कोई जगह नहीं है; हाय! उनसे मुझे कोई दया का शब्द नहीं मिला, न ही कोई प्यार। “मैं और नहीं गा सकती,” वह रोते हुए बोली। “मैं इसे किसी और समय पूरा

करूँगी, शायद, अगर आपको पसंद आए। अब, आओ, लालू, हमें जाना होगा।" बच्चे ने अपनी बाहें उसकी ओर बढ़ाईं, लेकिन फिर भी सिरिल को देखता रहा, जो नीचे झुका और उसे चूमा। "जाओ," उसने कहा, "अपनी माँ के पास। उससे मत डरो," उसने उससे कहा; "वह बहुत शांत लगता है।" "आह!" सीता ने कहा, "मुझे इसी बात का डर है; जब तक हम मुकदमे के लिए नहीं गए थे, वह बहुत शोर मचाता था; मुझे लगता है कि मुझे उसे वहाँ नहीं ले जाना चाहिए था।" "क्यों?" "'उस ब्राह्मण और उसकी बुरी नज़र की वजह से, महोदय; लेकिन मुझे डरने की ज़रूरत नहीं है, भगवान मुझ पर बहुत मेहरबान हैं।" इस तरह तीन और दिन बीत गए, और जैसे-जैसे वे एक-दूसरे को बेहतर जानने लगे, सीता ने अपनी झिझक काफी हद तक छोड़ दी। वह दिन-प्रतिदिन अपनी किताबें लाती और वे बारी-बारी से "मेघ दत्ता" या "बादल संदेशवाहक" के अंश और नाटकों के दृश्य पढ़ते और उन पर कई सुखद बहसें करते। 112 सीता। वामुन भूत को यह मामला सुलझाना पड़ा, सीता की तरह ही वह भी इस बात पर आश्चर्यचकित था कि सिरिल को इतना ज्ञान कैसे हो गया। चाची एला ने सिरिल से कहा कि वह ईश्वर का भेजा हुआ पुत्र है, और उसे आज्ञाकारी होना चाहिए; और वह तुरंत आज्ञाकारी हो गया, और जो कुछ भी वह उसे देती, वह खाता था, और वह अच्छे बूढ़े जैडी की विचित्र, स्नेही सादगी का उतना ही आनंद लेता था जितना कि बैंकर और पुजारी की सच्ची दयालुता और शिक्षाप्रद बातचीत का। वह उन दोनों के साथ शतरंज खेलता था, और अच्छी तरह से खेलता था, और बैंकर के कई मित्र उससे मिलने आते थे; इस प्रकार वह कभी अकेला नहीं रहता था, सिवाय तब जब वह चाहता था। उसके तंबू और नौकर आ गए थे, लेकिन उसे नौकरों की आवश्यकता नहीं थी, और चूंकि वे मुसलमान थे, इसलिए उन्हें घर में काम पर रखने में संकोच करते थे; तंबुओं के बारे में तो भला डॉक्टर ने सुनने से भी इनकार कर दिया। घाव का बुखार अभी तक नहीं उतरा था, और सिरिल को ऐसा ही लग रहा था; वह अपने दाहिने हाथ से ज़्यादा लिख नहीं पाता था, और हालाँकि वह बाबा साहब को स्वीकार करता था और ज़रूरी मामलों पर आदेश देता था, मुझे नहीं लगता कि कोई खास काम हुआ होगा; और चूंकि मोस्टिन नूरपुर छोड़कर जा चुका था, सिरिल ने नोबल को बस कुछ पंक्तियाँ लिखीं, यह बताने के लिए कि उसे मामूली चोट लगी है और वह कुछ दिनों में काम पर लौट आएगा। लेकिन एक हफ़्ता भी नहीं बीता था कि बैंकर के घर में उसका सुखद प्रवास समाप्त हो गया। नरेंद्र के विरोध, अच्छी चाची एला की डांट और सीता

की स्पष्ट चिंता और अनिच्छा के बावजूद, उसे अपने काम पर जाना ही था; और जब डॉक्टर ने कहा कि घाव अब ठीक है और जल्द ही भर जाएगा, तो वह चला गया। यह हमेशा के लिए विदाई नहीं थी, क्योंकि शाहगंज में बहुत काम था, और किसान अपने वार्षिक राजस्व निपटान के लिए पहले ही इकट्ठा हो चुके थे। सिरिल ने कहा था कि वे सब किसी दिन उसके तंबू देखने आएंगे; लेकिन सीता के लिए यह बहुत दुखद था, और जब वह उसके पास से गुज़रा और कुछ उत्साहवर्धक बातें कहीं तो वह दरवाजे पर खड़ी सिसक रही थी। "वह मुझे भूल जाएगा," उसने मन ही मन कहा, जब वह सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था; "और मैं... हे भगवान, मैं अब उसे भूल नहीं सकती।" लेकिन साइल को अपने तंबू अच्छे नहीं लगे, और इस बदलाव से उसके घाव में कोई सुधार नहीं हुआ था। रात की ठंड से उसका घाव और बढ़ गया था, और डॉक्टर ने कहा कि उसे वापस लौट जाना चाहिए; फिर भी यह असंभव था। उसे कितना प्यार और स्नेह मिला था! वह सीता को एक बार फिर पढ़ते हुए सुनने या अपनी उस मीठी, धीमी आवाज़ में उसे पुराने भारतीय लोकगीत सुनाते हुए सुनने के लिए कितना तरस रहा था, जिनसे उसे इतना लगाव हो गया था! लेकिन सब कुछ खत्म हो गया था, उसने सोचा; यह एक सुखद सपना था जिसे उसके जीवन की वास्तविकताओं ने तोड़ दिया था, लेकिन जिसे वह कभी नहीं भूल सकता था। नरेंद्र उस रात की याद में साइल को क्या दे, इस बारे में बहुत असमंजस में था, लेकिन वह जानता था कि साइल कुछ भी कीमती स्वीकार नहीं करेगा, और न ही कर सकता है; और उसने बाबा से सलाह ली थी।

k क्षुद्र तंबू। 113 इस विषय पर साहिब ने सुझाव दिया था कि एक छोटी चांदी की थाली जिस पर डकैती का दिन और वर्ष, तथा स्वयं, आंटी एला और सीता का नाम खुद खुद लिखा हो, पर्याप्त होगी और सहर्ष स्वीकार की जाएगी; नरेंद्र ने तुरंत इसे बनवाना शुरू करवाया और सारी नक्काशी स्वयं पूरी की; सीता ने उस पर अक्षर लिखे और उनके दादाजी ने उन्हें उकेरा। तो जब यह तैयार हो गई, तो नरेंद्र एक शाम काम खत्म होने के बाद इसे शिविर में ले गए और अपनी इस हरकत के लिए क्षमा मांगते हुए इसे आदरपूर्वक भेंट किया। मुझे लगता है कि सिरिल इस सरल और दयालु कार्य से बहुत प्रभावित हुए। वे बहुत कम बोल पाए; वास्तव में, जब उन्होंने थाली को थाली से लिया और सीता द्वारा इस अवसर के लिए पिरोई गई फूलों की माला को ग्रहण करने के लिए हाथ बढ़ाया, तो उनके गले में एक गांठ सी आ गई जिसे वे मुश्किल से

दबा पाए; लेकिन उन्होंने कहा, "नरेंद्र, मैं इसे और फूलों को आप सबकी याद में सुरक्षित रखूंगा, और जब मैं इंग्लैंड जाऊंगा तो वहां अपने प्यारे दोस्तों को इसके बारे में बताऊंगा: मेरी मां इस उपहार को उतना ही महत्व देंगी जितना मैं देता हूं।" उस दिन सीता ने चाची एला के साथ बच्चे के लिए प्रसाद चढ़ाने के लिए मंदिर जाने का इंतजाम किया था, और उनके दादाजी भी उनके साथ गए थे। यह साफ दिख रहा था कि बच्चा दिन-ब-दिन कमजोर होता जा रहा था और कम खाना खा रहा था; लेकिन घर के सरल विश्वास को प्रार्थनाओं के अलावा केवल एक ही सहारा मिला, वामुन भूत के मंदिर में प्रसाद चढ़ाने में, और वे बच्चे को वहां आशीर्वाद दिलाने और भगवान के सामने रखने के लिए ले गए थे। इस समारोह के बाद नरेंद्र थाली लेकर सिरिल के पास गए; और लौटते समय उन्होंने उन्हें बताया कि उन्होंने क्या किया था और सिरिल ने क्या कहा था। "नहीं, अब वह हमें नहीं भूलेगा," उन्होंने आगे कहा, "और अकेले रहकर वह हमें और भी याद रखेगा। देखो! ऐसे आदमी को अकेला देखना बहुत दुखद है।" उन्होंने उस ओर देखा जहाँ उसने इशारा किया था, और यद्यपि शाम ढल रही थी, वे सिरिल को अपने तम्बू के सामने अपनी कुर्सी पर अकेले बैठे देख सकते थे, सिवाय उसके छोटे कुत्ते मफ के, जो उसके पैरों के पास लेटा हुआ था; और सीता की आँखों से आँसू बह रहे थे, क्योंकि वह चुपचाप प्रार्थना कर रही थी, "हे भगवान! उसे सुरक्षित रखें, उसे सुरक्षित रखें, उसकी माँ और उन सभी के लिए जो उससे प्यार करते हैं।" अगले दिन उन्हें संदेश मिला कि उसे व्यापार के सिलसिले में जाना पड़ रहा है; और जब सीता ने उसके अगले दिन सुबह अपनी खिड़की से देखा, तो उसने पाया कि सफेद तम्बू गायब हो चुके थे।

114 शेता. अध्याय 15. अनिश्चितता. शाहगंज से साइरिट ब्रैनपॉन की अनुपस्थिति ने उनके मन की परेशानी को कम नहीं किया था। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह हिंदू लड़की उनके विचारों में क्यों छाई रहती है; रातों को उनके सपने क्यों आते हैं; और दिन भर उसका विनती भरा, उदास चेहरा और नम आँखें उनके और उनके काम के बीच क्यों आती रहती हैं—'वह उनके लिए क्या थी, या वह उसके लिए क्या था?' मानो अजीब परिस्थितियों के चलते, उनके लिए इतनी खूबसूरत, इतनी दिलचस्प और अब तक देखी गई किसी भी महिला से इतनी अलग महिला में गहरी दिलचस्पी न लेना नामुमकिन था। अब उन्हें वह बात पता चल गई थी, जो उन्हें पहले कभी नहीं पता थी, कि सीता जैसी महिलाएं लोगों के बीच मौजूद हो सकती हैं, और होती भी हैं।

उन्होंने अक्सर महसूस किया था कि सीता जैसी लड़की की बौद्धिक क्षमता उनकी अपनी बौद्धिक क्षमता के बराबर या उससे भी कहीं अधिक थी, जब वे उन किताबों पर चर्चा करते थे जो सीता उन्हें पढ़कर सुनाती थीं; और वे सुखद साक्षात्कार—जब प्राचीन हिंदू कवियों के ग्रंथों की सुंदरता या कठिनाइयों की आपसी सराहना के आगे सीता का संकोच टूट जाता था—अब उनके मन में अदम्य शक्ति के साथ लौट आए थे। सीता फिर से उनके सामने बैठी हुई प्रतीत हो रही थीं, उनकी गोद में किताब थी, उनकी उंगली किसी पसंदीदा अंश की ओर इशारा कर रही थी, और उनका चेहरा उनकी ओर था, जबकि वे रुचि और उत्साह से भरे हुए लेटे थे: उनकी आंखें चमक रही थीं, उनका प्यारा मुंह थोड़ा खुला हुआ था, जिसमें उनके छोटे मोती जैसे दांत दिख रहे थे, और उनके गाल उस मनमोहक टिटियन जैसी रंगत से दमक रहे थे, जिस पर वे बहुत मोहित हो गए थे। उसे पहली बार देखकर, उसके गहरे लहराते बाल (जो काले नहीं थे) ढीली बंधी हुई गांठ से निकलकर उसकी गर्दन और कंधे पर कोमल घुंघराले होकर गिर रहे थे, जहां रोशनी पड़ रही थी वहां सुनहरे धागे जैसे लग रहे थे। मुझे लगता है कि सिरिल को अपने अकेलेपन से जो शांति और संतोष मिलता था, उसके लिए ऐसा दृश्य अक्सर मौजूद रहता था: "काश मैं उसका चित्र बना पाता," वह अक्सर कहता था, "मैं उसे कितना संजो कर रखता!" फिर एक बड़ा प्रलोभन आता; और मुझे खेद होगा यदि मेरे पाठक यह सोचें कि मैं उन्हें सिरिल ब्रैंडन की कोई 'पूर्णता' दिखाना चाहता हूँ। वह, सभी मनुष्यों की तरह, प्रलोभनों के अधीन था; और यद्यपि वह एक नेक, मर्दाना, दयालु, विचारशील और चतुर व्यक्ति था, फिर भी गलती करने की संभावना से मुक्त नहीं था। वह इन संघर्षों को स्वयं अच्छी तरह जानता था, और स्वभाव से ही धार्मिक होने के कारण, वह हर बात में सही मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करता था; लेकिन वर्तमान परीक्षा उसके लिए अब तक की सबसे कठिन परीक्षा थी। अनिश्चितता। 115 क्या होगा अगर वह लड़की उससे प्यार करती हो? और ऐसा हो सकता है, या हो सकता है—क्या वह उसके साथ नहीं रह सकती? वह विधवा थी, और अपने परिवार के लिए उसका कोई महत्व नहीं था; वह शायद फिर कभी शादी न करे, बल्कि मरने तक एक बेकार, अकेली ज़िंदगी जिए; या वह एक भक्त बन सकती है—अपने सुंदर बाल कटवाकर—विकृत होकर—और भारत भर में दरगाह भटकते हुए, सबसे भद्दे वस्त्र पहनकर, और घोर अभावों को सहते हुए अपने दिन बिताए। उसके साथ वह अपने तरीके से खुश रहेगी: उसे जीवन में एक नया उद्देश्य मिलेगा,

और अब उसे अपने घर से क्या लगाव रह गया था? उसका बच्चा मर चुका था। बाबा साहब ने शाह गुंजो छोड़ने के कुछ दिनों बाद उसे बताया था कि बच्चा अचानक उसकी बाहों में गिर गया था, और चुपचाप अंतिम सांस ली थी, और वह घोर शोक में थी। वास्तव में, वह जानता था कि उसका जीवन उस बच्चे से कैसे जुड़ा हुआ था, और अब उसके प्यार के लिए कोई दूसरा रास्ता या लक्ष्य नहीं था। लेकिन अगर वह उसके पास आ जाए तो वह उसे फिर से खुश कर देगा: और उसके जैसे कितने अच्छे लोगों ने ऐसे रिश्ते बनाए थे, कुछ जीवन भर के लिए और कुछ शादी तक? सिरिल जितना इस योजना पर विचार करता गया, यह उतनी ही संभव लगने लगी; और उसने सीता को पत्र लिखकर उसे अपने साथ रहने के लिए कहने का निश्चय किया। मुझे लगता है कि उसे पूरा विश्वास था कि वह आ जाएगी; और शायद, हिंदू चरित्र के बारे में आम धारणा के कारण, जो आमतौर पर प्रचलित है, उसने लड़की के मान-सम्मान और आत्म-सम्मान जैसे उच्च उद्देश्यों को ध्यान में नहीं रखा जो उसे प्रभावित कर सकते थे। और एक रात, जब वह अकेला था, और उसका प्रलोभन उसके मन में चल रहा था, वह बैठ गया और लिखने लगा—ऐसे शब्द लिखे जिन्हें वह निश्चित रूप से जानता था कि सीता गुप्त आनंद और उल्लास के साथ पढ़ेगी, और उसे फटकार नहीं लगाएगी। लेकिन—और मैं इसे अनादरपूर्वक नहीं कह सकता—जैसे ही उसने इसे पढ़ा, उसके मन ने तुरंत अपने लिखे को अस्वीकार कर दिया; इसे अपमानजनक और निंदनीय मानते हुए अस्वीकार कर दिया, और उसने अपने प्रलोभन से मुक्ति पाने के लिए प्रार्थना की; और जैसे ही वह रोया, 'हे प्रभु, मैं डूब रहा हूँ; मुझे बचाओ, इससे पहले कि मैं मर जाऊं!" उसने पत्र को छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दिया और उन्हें जला दिया। श्रुता के साथ अपने संवाद में उसने याद किया कि उसने कभी भी उसमें हल्केपन का कोई अंश नहीं देखा था, और उसे लगा कि वह उस पर विश्वास करती है, जैसा कि उसने उसे एक बार बताया था, पवित्र और अच्छा। जीवन में उसकी स्थिति, भले ही उसका भविष्य निराशाजनक प्रतीत हो रहा था, उसके दादा की संपत्ति और सम्मानजनक पद ने उसे ऐसे किसी भी अपमान के विचार से ऊपर उठा दिया होगा, जैसा कि उसने लगभग प्रस्तावित किया था। उनके लिए कोई भी अपमान उसे, उसके वरिष्ठों और देश के सभी लोगों को अपनी चपेट में ले लेगा; और इन सबको खोना पागलपन होगा। सबसे बढ़कर, यह पाप होगा—ईश्वर के समक्ष जानबूझकर किया गया पाप, और इसे दूर करना ही होगा। ऐसा सोचते हुए, देर रात तक, सिरिल सोने

चला गया, और कई दिनों की तुलना में अधिक शांति से सोया।
116 सीता। एक रात बीत गई; और जब वह सुबह उठा तो तरोताज़ा था, और उसने दिन भर अपना काम किया, जिससे बाबा साहब बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसके पूर्ण स्वस्थ होने पर उसे बधाई दी। “अब जब आप पूरी तरह से ठीक हो गए हैं, महोदय,” उन्होंने कहा, “मुझे लगता है कि आपको शाहगंज जाना चाहिए और वहाँ का काम पूरा करना चाहिए। मैंने तब आपको ज़्यादातर बातें नहीं बताई थीं, क्योंकि आप वास्तव में काम करने में असमर्थ थे; और यह करना ही होगा, जैसा कि आप और मैं दोनों जानते हैं। यहाँ अब कोई महत्वपूर्ण काम नहीं बचा है।” “ठीक है,” सिरिल ने उत्तर दिया; “मेरा हाथ अब ठीक है, और मैं जब चाहें जा सकता हूँ। हाँ, मुझे पता है कि कई मामलों की सुनवाई करनी है, और राजस्व संबंधी मामलों को पहले ही बहुत लंबे समय से टाला जा चुका है। सभी पर शीघ्र ध्यान देना होगा।” “तो मैं लोगों को सूचित कर दूँगा, और कल हम यहाँ का सारा काम निपटा सकते हैं। शाहगंज केवल बीस मील दूर है, और हम बीच में एक दिन रुक सकते हैं। क्या परसों आपको ठीक रहेगा?” “ज़रूर,” सिरिल ने उत्तर दिया; “मैं पूरी तरह तैयार हूँ; और हम नरेंद्र से फिर मिलेंगे। काश हम उसे बता पाते कि हमने अजरिक पांडे को पकड़ लिया है; लेकिन पुलिस अभी भी दोषी है। मुझे लगता है कि वह देश छोड़कर चला गया होगा। हमें शाहगंज में ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए।” “ज्यादा देर नहीं, महोदय; बस कुछ दिन।” शायद सिरिल को शाहगंज में अपना शिविर स्थानांतरित करने में खतरा महसूस हुआ होगा, लेकिन काम तो करना ही था; और यद्यपि वह बैंकर से मिल सकता था और सीता के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर सकता था, उसे यह महसूस हुआ, और उसने कृतज्ञतापूर्वक महसूस किया, कि जिस प्रलोभन ने उसे घेर रखा था और उसे परेशान कर रखा था, वह कृपापूर्वक उसके मन से दूर हो गया था। हालाँकि, शाहगंज में सीता की हालत बहुत खराब थी। जैसा कि हम जानते हैं, उसका जीवन उसके बच्चे से जुड़ा हुआ था। वही उसके और उसके जीवन के अब नीरस विधवापन के बीच एकमात्र सहारा था। उसके साथ ही, पिता की संपत्ति और कारोबार का उत्तराधिकारी बनने की उम्मीद भी खत्म हो गई थी, क्योंकि अब सारी पैतृक संपत्ति राम दास को मिलनी थी, जिसने वास्तव में इस पर और नरेंद्र के पास मौजूद धन पर अपना दावा जताने में जरा भी देर नहीं की थी; और वह सब कुछ हासिल करना चाहता था, सिवाय उस छोटे से हिस्से के जो विधवा के रूप में उसे विरासत में मिलता। संभवतः वह किसी

उत्तराधिकारी को गोद ले सकती थी; लेकिन यह एक दूर की संभावना थी, और शायद इसकी अनुमति न मिले। लेकिन अगर वह ऐसा करती भी, तो वह उसके लिए उसके बेटे—उसके बच्चे—की तुलना में क्या होता, जिसे एक बार बचाया गया था, और जिसके अस्तित्व पर उसका अपना जीवन टिका हुआ प्रतीत होता था? मुझे उसके असहनीय दुख का विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग इन पंक्तियों को पढ़ेंगे, वे शायद इसका अंदाजा मुझसे बेहतर लगा पाएंगे, और समझ पाएंगे कि उस लड़की का प्रेममय हृदय उसके गहरे दुख से कैसे टूट गया था। अनिश्चितता। 117 दिन-ब-दिन वह उस बालकनी में चुपचाप बैठी रहती थी, कभी-कभार रोती, मंदिर की ओर देखती रहती जहाँ उसने अपने बेटे को जीवन के स्वामी के सामने रखा था, जिसने उसकी आवाज़ नहीं सुनी थी, और जिसके पास ही उसे दफनाया गया था। न तो वहाँ सफेद तंबू थे, न ही उसे उनके आने की सूचना मिली थी। अच्छी चाची एला पूरी तरह से हताश थीं। उन्होंने सीता को जगाने और उसे आम घरेलू मामलों में रुचि दिलाने की कोशिश की थी। उन्होंने अपने कई पुराने साथियों को अपने पास बुलाया था, और वे आए भी थे, और अपने सरल तरीके से उनके साथ रोए और उन्हें सांत्वना देने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। उन्होंने वामुन भूत से समझाने के लिए कहा था, और उस भले पुजारी ने अपनी पूरी कोशिश की थी; उन्होंने सीता को पवित्र ग्रंथों के वे अंश पढ़कर सुनाए थे जिनमें त्याग और विश्वास का उपदेश था, और उन्हें बताया था कि कैसे सभी सांसारिक चीजें केवल भ्रम हैं, और अब उन्हें वास्तविकता को प्राप्त करने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए। और उन्होंने उन्हें उनके पुराने अध्ययन के कुछ अंश भी पढ़कर सुनाए; लेकिन एक दिन जब उसने यह सोचकर "सावित्री" शुरू की कि इससे उसे रुचि होगी और उसका विश्वास मजबूत होगा, तो उसने उदास होकर उसकी ओर देखा और उसे रोकने के लिए अपना हाथ किताब पर रख दिया। “मैं दो बार मृत्यु को गले लगाना चाहती थी,” उसने कहा; “एक बार उसके प्रति अपने कर्तव्य के लिए, और एक बार लालू के प्रति अपने प्रेम के लिए; लेकिन मृत्यु के देवता ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। हे भगवान, क्या वह जल्द ही मेरे पास आ सकते हैं, ताकि मैं भी उनके पीछे चल सकूँ? अब मुझे क्यों जीना चाहिए? कोई मुझे याद नहीं करेगा, और आप सब मुझे याद रखेंगे।” धीरे-धीरे, जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उन्हें लगा कि वह शांत हो रही है, और वह अक्सर रोती थी, जिसे आंटी एला ने एक अच्छा संकेत समझा। “इससे उसका दिल हल्का होगा,”

उसने मन ही मन कहा, “और उसका दिल अभी भी बहुत भारी है। जब मैं विधवा हुई तो मैं अपने पति के लिए बहुत रोई और फिर मुझे शांति मिली; लेकिन मेरी कोई संतान नहीं थी—सिर्फ उसकी, और अगर वह चली गई तो मुझे भी मरना पड़ेगा!” रात-दर-रात, प्यारी बुढ़िया सीता के बिस्तर के पास पहरा देती, उसे धीरे से पंखा करके सुलाती और फिर उसके बगल में कालीन पर लेट जाती। वह अक्सर सीता को नींद में बड़बड़ाते सुनती और उसे अपने बच्चे को पुकारते हुए सुनती; और उठकर उसे धीरे से थपथपाकर शांत करती। लेकिन एक रात सपना बदल गया; बच्चे के नाम की जगह, उस अंग्रेज सज्जन का नाम मधुरता से बुदबुदाया गया जिसने उन्हें बचाया था, और जब आंटी एला ने देखा तो लड़की के चेहरे पर एक कोमल मुस्कान फैल गई, कठोर भाव नरम पड़ गए, पीला चेहरा रंग से खिल उठा, होंठ सफेद और सूखे की जगह लाल और नम हो गए, और बंद आँखों से एक आँसू टपक गया; जबकि लड़की का सीना ऊपर-नीचे हो रहा था और वह आह भर रही थी, लेकिन दर्द में नहीं। पहले तो आंटी एला ने इसे केवल बीते हुए कल का सपना और सीता की कृतज्ञता समझा; लेकिन बार-बार, रात-दर-रात, यह सपना आता और उन्हें परेशान करता। वह अपने बच्चे से इसका जिक्र करने की हिम्मत नहीं कर पातीं; लेकिन उसे धीरे-धीरे यह बात अधिक स्पष्ट होती जा रही थी कि

 सीता दिन में शायद ही कभी खिड़की से बाहर निकलती थी, और उसकी उदास, स्वप्निल निगाहें उस उपवन पर टिकी रहती थीं जहाँ सफेद तंबू लगे होते थे। क्या पता वे फिर से लग जाएँ? और एक दिन, जैसा कि हम जानते हैं, जब सीता उठी और हमेशा की तरह बाहर देखा, तो पेड़ों के नीचे तंबू लग रहे थे। चाची एला उसके पास ही थीं, और अचानक इस आवाज़ से चौंक गईं, “देखो, चाची, देखो! तंबू लग रहे हैं, और वह आएगा!” और उनकी आँखों में एक चमक थी और उनके लाल चेहरे पर एक गंभीर भाव था जो उस भली महिला ने महीनों से नहीं देखा था। क्या वह इसे देखकर खुश थीं? उस कारण से नहीं, जिसने उन्हें रात के सपनों का रहस्य बताया था। इसलिए नहीं कि जिस व्यक्ति का वे सभी सम्मान और प्रेम करते थे, वह अब उनके बच्चे के दिल के सबसे करीब हो। आह, हाँ! बच्चे के लिए शोक भयानक था; इसके संकट का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा था; सीता का जीवन या मृत्यु अधर में लटकी हुई प्रतीत हो रही थी; लेकिन यह नई खुशी आंटी एला के लिए बच्चे की मौत से भी बड़ा दुख थी। फिर भी वह देखती रहीं। नरेंद्र अपने आने के अगले दिन

सिरिल से मिलने गए और उनकी लंबी बातचीत हुई। बैंकर ने बच्चे की मौत की सारी परिस्थितियाँ और उसकी माँ को सांत्वना देने के उनके व्यर्थ प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, “मुझे लगता है, अगर आपने लिखकर बताया होता कि आप ठीक हैं और घाव भर गया है, तो इससे उनका ध्यान भटक जाता; क्योंकि कल से ही, यह जानकर कि आप ठीक हैं, वह पहले से ज़्यादा खुश हैं। क्या आप उनसे मिलने नहीं आएँगी? आप जानती हैं, मैं उन्हें और उनकी आंटी को यहाँ नहीं भेज सकता; और मुझे यकीन है कि आपके एक शब्द से उन्हें हमारे सारे उपदेशों से ज़्यादा सुकून मिलेगा।” “शायद,” सिरिल ने कहा, “जाने से पहले एक बार; लेकिन मैं अपने काम के लिए कई दिन रुकूँगा, और उसे पता चल जाएगा कि मैं काम कर सकता हूँ। मैं उसके लिए शुभकामनाएँ देता हूँ, नरेंद्र, और बेचारे छोटे लालू के निधन की खबर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। वह वहाँ मुझसे कितना प्यार करने लगा था! उसे बताना कि मैं उसे और उसे, और तुम्हारे साथ बिताए समय को नहीं भूला हूँ; वह और आंटी एला मुझे कुछ मिठाई और अचार भेजें—वे बहुत स्वादिष्ट थे।” नरेंद्र ने अपना संदेश दिया, और शायद—क्योंकि यह स्वाभाविक ही था—कमिश्नर साहब की कृपा से कही गई सभी बातों को सरल शब्दों में विस्तार से बताया। सीता का दिल ये शब्द सुनकर खुश हो गया, और वह और आंटी एला उन सभी चीजों को तैयार करने में जुट गईं जो उन्हें लगता था कि सिरिल को उनके साथ रहते हुए सबसे ज्यादा पसंद थीं; सीता ने फूलों की कुछ मालाएँ बनाईं और आंटी एला से कहा कि उन्हें अपने हाथों से उसके गले में पहनाएँ। फिर एक शाम, जब सब कुछ तैयार हो गया, और आंटी एला जानती थीं कि सिरिल अकेला होगा, तो वह उन्हें उसके पास ले गईं। अब, अच्छी चाची एला ने अकेले जाने पर जोर दिया था; पहले,
अनिश्चितता। 119 क्योंकि स्केता को अपने साथ जाने देना अशोभनीय होता; दूसरा, वह पुजारी को नहीं चाहती थी, जिसने अपना साथ देने की पेशकश की थी। वह सिरिल से नहीं डरती थी, और उसे अपने भाई या पुजारी के समर्थन की आवश्यकता नहीं थी। और तीसरा, क्योंकि, केवल अपने ही ज्ञात कारणों से, वह स्केता को लेकर चिंतित थी, और उसके बारे में सिरिल से बात करना चाहती थी। इसलिए चाची एला शिविर में गईं और अच्छी चीजों से भरी अपनी टोकरियाँ पहुँचाईं, और सिरिल के नौकर को निर्देश दिए कि वह उन्हें अपने स्वामी के लिए कैसे तैयार करे; और जब वह चला गया तो उसने कहा, “क्या आस-पास कोई नहीं है, महोदय? जो मुझे आपसे

कहना है, वह किसी को नहीं सुनना चाहिए; यह हमारे बीच की बात है।" बहुत आश्चर्यचकित होकर, सिरिल उठा और चारों ओर देखा; लेकिन वहाँ कोई नहीं था। उसके हमेशा की तरह कमरबंद पहने हुए सेवक, काफी दूर उसके तंबू के सामने बैठे थे और बैंकर के आदमियों से बातें कर रहे थे, जो आंटी एला के साथ आए थे। जैसे ही डकैती की कहानी दोबारा सुनाई गई, सभी को उसमें दिलचस्पी हो गई। "नहीं," सिरिल ने लौटते हुए कहा; "यहाँ कोई नहीं है—तुम्हें क्या कहना है? खुलकर बोलो।" आंटी एला जहाँ अब तक खड़ी थीं, वहाँ से उठकर उनकी कुर्सी के पास बैठ गईं; और अपने शब्दों में गंभीरता लाने के लिए उन्होंने अपना हाथ धीरे से उनके हाथ पर रख दिया। आंटी एला स्वभाव से विचित्र और सीधी-सादी थीं, और इस अवसर पर वे अधिक शब्दों का प्रयोग करने या प्रशंसा करने के लिए तैयार नहीं थीं। "आप हमारी ज़रूरत के समय हमारे पास आए, महोदय," उन्होंने कहा, "आपने अपनी महान दयालुता से हमारी जान, हमारी संपत्ति और हमारी प्रतिष्ठा बचाई। आपने हमारे लिए अपना खून बहाया, और यदि आप हमारे अपने रिश्तेदार होते तो भी आप इससे अधिक नहीं कर पाते। इसके लिए हम प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर आपको इसका फल दे, और वह ऐसा करेगा। हम साधारण लोग हैं, महोदय, और जब आप घायल हुए और बीमार पड़े थे, तब आप घर के बेटे की तरह थे, और किसी ने भी आपसे अपना चेहरा नहीं छिपाया। हम आपके लिए अपनी जान दे देते; और हमें कोई संकोच नहीं था। सीता और मैं आपके साथ बैठे थे, और वह आपको पढ़कर सुना रही थी—और —" लेकिन यहाँ आंटी एला की आवाज़, जो अब तक कांपती हुई, अब टूट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। "जी हां," सिरिल ने कहा, "मैं सब कुछ मानता हूं, आंटी एला, और आप जानती हैं कि मैं जो कुछ हुआ उसे और आपकी सारी दयालुता को कभी नहीं भूलूंगा; लेकिन आपको रोना नहीं चाहिए।" "अरे नहीं!" बूढ़ी औरत ने अपनी आंखें पोंछते हुए कहा; "रोने का कोई फायदा नहीं! आप इसे कभी नहीं भूलेंगे... लेकिन काश सीता इसे भूल जाती—काश उसने आपको कभी न देखा होता।" "क्यों?" सिरिल ने पूछा, हालांकि सवाल पूछते समय उसका दिल दुख रहा था। "क्यों? क्योंकि वह आपसे प्यार करती है, श्रीमान; क्योंकि रात में वह 120 सेल्टा, तुम्हारे सपने देखती है, तुम्हारा नाम बुदबुदाती है, और प्यार भरे ऐसे शब्द कहती है जिन्हें दोहराने की हिम्मत मैं नहीं करता। उसे यह पता नहीं है, और दिन में वह शांत रहती है; लेकिन मैं जानता हूँ कि ये शब्द उसके दिल में दबे हैं। जब से तुम

आए हो, वह बेचैन और उत्तेजित है; ऐसा लगता है जैसे वह बच्चे को भूल गई हो; वह मुझसे दिन में बीस बार पूछती है कि तुम ठीक हो—क्या कर रहे हो—क्या तुम्हारा घाव भर गया है—जब तक कि मैं उससे पूरी तरह चिढ़ न जाऊँ। तुम उसके लिए क्या हो? यह दुस्साहस है—यह बेशर्मी है कि वह पूछ रही है। क्या तुमने—क्या तुमने, श्रीमान," उसने अचानक उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "उसे भ्रष्ट किया है? क्या तुमने मेरे बच्चे को बहकाया है?—अगर तुमने—नहीं, मत बोलो—उसे ले जाओ, और उसके साथ जो चाहो करो। वह हमारे लिए मर चुकी होगी, और बदनामी तुम्हारे साथ होगी, हमारे साथ नहीं। हे श्रीमान! हमने तुम्हें बहुत प्यार किया, हमने तुम्हें इतना प्यार किया कि तुम हम पर यह विपत्ति नहीं लाते; यह मेरे और नरेंद्र के लिए असहनीय है, और हमारे लिए मर जाना ही बेहतर होता।" साइरिल ने जो सुना उससे वह बेहद प्रभावित हुआ। उसने कहा, "मैं निर्दोष हूँ, और वह भी निर्दोष है—एक बच्ची होने के नाते, वह ईश्वर के सामने निर्दोष है, जैसा आप सोच रही हैं।" "तो फिर अपने ईश्वर और अपनी माँ की कसम खाकर मुझसे कहो कि तुम जो कह रहे हो वह सच है," आंटी एला उसके सामने घुटने टेकते हुए, आँखों से आँसू बहाते हुए बोलीं। "ओह, मुझसे यह कसम खाओ, और मैं तुम्हारे साथ शांति से चली जाऊँगी।" उसने गंभीरता से उत्तर दिया, "ईश्वर और अपनी प्यारी माँ की कसम खाकर मैं तुमसे कहता हूँ कि यह सच है।" "मैं संतुष्ट हूँ," उसने उत्तर दिया; "और आभारी भी, श्रीमान। मुझे क्षमा करें कि मुझे संदेह हुआ—हाँ, संदेह हुआ, और डर भी लगा, क्योंकि वह बहुत सुंदर है, और आप दोनों बहुत छोटे हैं। अब, श्रीमान, मैं हम सबके भले के लिए, और सबसे बढ़कर सेक्टा के भले के लिए, एक वरदान माँगती हूँ। चले जाइए। जितनी जल्दी हो सके अपना काम खत्म करके जाइए; देर मत कीजिए। यहाँ से बहुत दूर चले जाइए।" हमारे बीच ऐसा ही रिश्ता बना रहे मानो हम कभी मिले ही न हों, जैसा हुरी दास की मृत्यु से पहले था। अगर ऐसा न होता, तो हम आपको कभी जान ही न पाते। इस साल वापस मत आना, या जब तक संभव हो, अनुपस्थित मत रहना; या किसी और को अपनी जगह आने देना। हमारा हालचाल मत पूछना, न ही हमसे संपर्क करने की कोशिश करना; हम अपने पुराने तरीके से ही चलते रहेंगे, और सीता समय के साथ इसकी आदी हो जाएगी, जैसे मैं हो गया हूँ; अगर नहीं, तो वह मर जाएगी। क्या आप ऐसा करेंगे?" "मैं करूँगा," सिरिल ने उत्तर दिया। "आपने मुझे बताकर अच्छा किया, और मैं अपनी जान की कीमत पर भी आपके घर पर बदनामी की एक बूंद भी नहीं

पड़ने दूँगा। जाइए, आप मेरी प्रतिष्ठा पर भरोसा कर सकते हैं।" "हाँ, मुझे भरोसा है, मुझे पूरा भरोसा है; और अगर मैंने सम्मान की सीमा से बाहर कुछ कह दिया हो तो मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं अब बूढ़ा और मूर्ख हो गया हूँ, और जो मैंने कहा उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था। मैं सीता को बता दूँगा कि आप उसकी मिठाई ले गए हैं, और इससे वह संतुष्ट हो जाएगी।"
आंटी एला की सलाह। 121 "अब, श्रीमान," वह गंभीर स्वर में बोलीं, उठते हुए, अपने हाथ ऊपर उठाए और उनके सिर पर रख दिए; "एक बूढ़ी औरत का आशीर्वाद लीजिए, जो आपको बेटे की तरह प्यार करती है। इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा; इसे अपनी माँ के आशीर्वाद की तरह लीजिए, और मैं खुशी-खुशी घर जाऊंगी। आप हमें नहीं भूलेंगे!" सिरिल कुछ बोल नहीं सका, क्योंकि बूढ़ी औरत के अचानक किए गए कार्य और शब्दों ने उसे इतना भावुक कर दिया था कि उसकी आँखों में आँसू आ गए थे! "ईश्वर आप सभी को सुरक्षित रखे!" उसने अंत में कहा, उनके हाथों को अपने सिर से हटाकर चूमते हुए। "अब मुझे अकेला छोड़ दो," कहकर वह चली गई। हाँ, सीता संतुष्ट लग रही थी जब उसने सुना कि सिरिल ने उसका छोटा सा उपहार स्वीकार कर लिया है, और वह दिन-प्रतिदिन अकेले बैठकर, अपनी आदत के अनुसार, उस व्यस्त शिविर को देखती रहती थी जहाँ उसके विचार थे; लेकिन आंटी एला के आने के चौथे दिन, जब वह सुबह की पूजा के लिए औषध के पत्ते इकट्ठा करने के लिए घर की छत पर बने वेदी पर गई, तो उसने फिर से शिविर के उपवन की ओर देखा, लेकिन वहाँ सफेद तंबू नहीं थे। अध्याय 16. आंटी एला की सलाह। सिरिल बियानडन का मन पहले शाहगंज छोड़ते समय अशांत था, कारण को देखते हुए, यह शायद ही संभव था कि आंटी एला के खुलासे के बाद उसमें कोई सुधार होगा। यदि संभव होता, तो वह अगली सुबह अपने जिले के दूसरे छोर पर चला जाता और वहीं रहता, लेकिन यह संभव नहीं था; और वह तीन दिन वहीं रहा, जब उसने बाबा साहब को, जो वास्तव में उसके बारे में चिंतित थे, बताया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है, कि... वह जगह उसे रास नहीं आ रही थी और उसे बदलाव के लिए कहीं और जाना ही था। बाबा साहब ने उसे तुरंत नूरपुर जाकर वहाँ के डॉक्टरों से सलाह लेने की सलाह दी; लेकिन वह यह मानने को तैयार नहीं था। कुछ दिनों में वह ठीक हो जाएगा और लौट आएगा; अगर नहीं, तो वह नूरपुर जाकर सलाह लेगा। सिरिल के मन में यह बात स्पष्ट थी कि वह अब और अधिक समय तक इस तनाव को सहन नहीं कर

सकता। इसमें कोई संदेह नहीं था कि वहाँ की हिंदू लड़की उससे प्यार करती थी, और यह भी उतना ही निश्चित था कि वह बहुत दुखी थी। बार-बार प्रलोभन उसके पास आता, सीता पर अपना अधिकार जताने और उसके साथ जीवन का आनंद लेने के लिए लुभावने तर्क देता; और बार-बार, बेचैन विचारों से भरी रातों में, वह लगभग हार मान चुका था। लेकिन उसका दृढ़ मन अभी तक विचलित नहीं हुआ था, और उसने हिम्मत नहीं हारी थी।

122 सीता। वह अच्छी तरह जानता था कि कैसे। क्या उसे अपना पद त्याग कर घर चले जाना चाहिए? यह वास्तव में अंतिम उपाय था; लेकिन क्या वह वहाँ यहाँ से बेहतर होगा? उसने ऐसा नहीं सोचा; और कई कारणों से, जिनके बारे में हम जानते हैं, उसका अब इस्तीफा देना अव्यावहारिक और असंभव था। उसने सोचा कि कुछ दिनों की अनुपस्थिति उसके दिल से बोझ हल्का कर देगी: और वह चला गया। लेकिन उसका बूढ़ा सेरिश्तदार किसी भी तरह से संतुष्ट नहीं था। उसके मालिक ने लगभग बिना किसी चेतावनी के अपना शिविर स्थानांतरित कर दिया था, और एक बार भी उसे अपने भरोसे में नहीं लिया था। कई जमींदार अभी भी शाहगंज में थे, अपने निपटान की अवधि की प्रतीक्षा कर रहे थे; और श्री ब्रैंडन इसे उतनी ही अच्छी तरह जानते थे जितना वह; और अन्य जगहों पर बहुत काम करना बाकी था। अगर वह वास्तव में बीमार था, तो ठीक होने के लिए नूरपुर क्यों नहीं चला गया? नहीं, कुछ और भी था जो वह नहीं जानता था; कुछ तो होना ही चाहिए, अन्यथा यह दुविधा क्यों? - उसके मालिक के चरित्र का एक ऐसा पहलू जो बूढ़े ने पहले कभी नहीं देखा था। शाहगंज से यह अनियमित परहेज क्यों? क्या इंग्लैंड से कोई परेशान करने वाली खबर आई थी? बाबा साहब अपने स्वामी के वहाँ के मामलों के बारे में लगभग उतना ही जानते थे जितना स्वयं स्वामी; लेकिन उन्होंने उनके बारे में कुछ भी नहीं बताया था, हालाँकि पिछले कुछ समय से उन्हें नियमित रूप से डाक से पत्र मिलते रहे थे। तो फिर क्या बात हो सकती है? बाबा साहब कुछ देर तक इसी तरह सोचते रहे, तभी अचानक उनके मन में एक विचार आया; और जैसे ही यह विचार उनके मन में उठा, बूढ़े बाबा साहब के गाल दर्द और चिंता से लाल हो उठे। जब चाची एला सिरिल से मुलाकात के बाद घर लौट रही थीं, बाबा साहब उनसे मिले और उन्होंने देखा कि वह बहुत परेशान थीं और उनकी आँखें रोने से सूजी हुई थीं; और उन्होंने कुछ विनम्र शब्दों के साथ उनका अभिवादन किया। उनकी मुलाकात का क्या उद्देश्य हो सकता था? क्या उनके

स्वामी ने सीता के साथ कुछ बुरा किया होगा? शायद बाबा साहब को हिंदू शूद्र विधवाओं के गुणों पर, विशेषकर सीता जैसी सुंदर और विद्वान विधवाओं पर, कम विश्वास था; और मुझे इस बात पर भी संदेह है कि क्या उन्होंने कभी सोचा होगा कि ऐसे लोगों को शिक्षित किया जाना चाहिए और ब्राह्मणों की तरह पवित्र ग्रंथों को पढ़ना सिखाया जाना चाहिए। लेकिन नहीं। फ्लिस के स्वामी, जिन्हें वह सम्मान की मूर्ति मानते थे, प्रलोभन या बहकावे में नहीं आ सकते थे। वह नरेंद्र के अतिथि थे, उनके द्वारा खाए गए नमक का सेवन कर चुके थे, और प्यार और कोमलता से उनकी देखभाल की गई थी; वह उन्हें धोखा नहीं दे सकते थे! इसलिए बाबा साहब ने तुरंत उस विचार को मन से निकाल दिया, इस बात से नाराज़ होकर कि उन्होंने कभी उस विचार को मन में आने ही क्यों दिया। फिर भी, वह विचार मन में बना रहा, और उन्होंने सोचा कि वह अपने स्वामी के सम्मान की रक्षा उसी तरह करेंगे जैसे अपने सम्मान की। शाहगंज में समय नीरसता से बीत गया। चाची एला, हालांकि उन्होंने सीता से अपने साक्षात्कार के विषय पर बात नहीं की थी,
आंटी एला की सलाह। 123 ब्रैंडन के साथ मुलाकात के दौरान, सीता अभी भी लड़की पर कड़ी नज़र रख रही थी और उसकी हालत देखकर निराश थी। अब जब शिविर समाप्त हो चुका था, सीता बेहद सुस्त और उदास लग रही थी और कोई भी चीज़ उसे उत्साहित नहीं कर पा रही थी। घर के जो भी काम उसे करने पड़ते थे, वह उन्हें यंत्रवत और बिना रुचि के करती थी। उसकी कभी हंसमुख रहने वाली आवाज़ लगभग खामोश हो गई थी और उसकी चाची अक्सर उसे रोते हुए पाती थीं। किताबें भी एक तरफ रख दी गई थीं और उसके सभी छोटे-मोटे मनोरंजन भी उपेक्षित थे। नरेंद्र भी उसे किसी भी काम के लिए प्रेरित नहीं कर पा रहे थे; और शतरंज के दैनिक खेलों में भी, जिनमें बूढ़े को हमेशा आनंद आता था, कोई संतुष्टि नहीं मिल रही थी, क्योंकि सीता बेसुध और लापरवाह थी, उसे शायद ही पता था कि वह क्या खेल रही है और लगातार गलतियाँ कर रही थी, जिससे वह लगभग क्रोधित हो जाते थे। न ही वह उसे गोद लेने की आवश्यकता के बारे में समझा पा रहे थे, यह एक ऐसा विषय था जिस पर अक्सर उनके और उनकी बहन के बीच चिंता से चर्चा होती थी। क्योंकि नरेंद्र ने पहले सीता के बच्चे को गोद लिया था और अब उनकी मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए एक और उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी। इस उद्देश्य के लिए दूर के रिश्तेदारों के बच्चों के अलावा कोई और बच्चा उपलब्ध नहीं था, और किसे चुनना है, यही मुश्किल

सवाल था। उन्हें उम्मीद थी कि सीता फैसला करेंगी; लेकिन सीता ने कहा कि वे जो चाहें कर सकते हैं, और उन्हें उनके चुनाव से कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने कहा कि वे किसी और बच्चे से प्यार नहीं कर सकतीं; और चूंकि उनका अपना बच्चा अब इस दुनिया में नहीं है, इसलिए बेहतर होगा कि इस मामले को अनिश्चित ही रहने दिया जाए, या इस पर विचार करने से पहले कुछ समय बीतने दिया जाए। भले पुजारी ने सीता को इस मामले में कर्तव्यबोध दिलाने की बहुत कोशिश की, लेकिन सब व्यर्थ था; सीता बेहद उदास और उदासीन थीं, और इस विषय पर उनके और नरेंद्र के बीच कई बार चिंताजनक बातचीत हुई। वे बस यही सोच पा रहे थे कि उनके बच्चे की मृत्यु ने उन्हें इतना गहरा आघात पहुँचाया है: और वे इस बात पर सहमत हुए कि सबसे समझदारी भरा उपाय यही होगा कि उन्हें उबरने के लिए और समय दिया जाए। पुजारी ने यह भी संकेत दिया कि उन्हें लगता है कि बोनारेस की यात्रा और उनके निर्देशानुसार कुछ अनुष्ठान करने से सीता को जगाने का सबसे कारगर तरीका होगा; और वातावरण और माहौल में बदलाव से उन्हें नई ऊर्जा मिलेगी। अगर आंटी एला ने अपनी जानकारी बता दी होती, तो शायद मामला और जल्दी गंभीर हो जाता; लेकिन उन्हें इस बात से तसल्ली थी कि ब्रैंडन जा चुका है, और जितना उन्होंने सुना था, उससे लगता नहीं था कि वह इतनी जल्दी वापस आएगा। हालांकि, इस मामले में उन्हें निराशा हुई। ब्रैंडन के लिए अपने कर्तव्य की उपेक्षा करना या शाह गुंजो में अपने काम को टालना नामुमकिन था। लगभग एक महीना बीत चुका था जब वह पहले वहाँ गया था। बाबा साहब ने बहुत ध्यान से देखा था, लेकिन हंकर के घर से न तो चिट्ठी से और न ही संदेश से कोई संपर्क दोबारा शुरू हुआ था, और वह वहाँ से चला गया था। 124 सीता। इस निष्कर्ष पर पहुँची कि उसका स्वामी पूरी तरह सुरक्षित है। इसलिए, जब उसने काम पर लौटने का प्रस्ताव रखा, तो ब्रैंडन ने सहर्ष सहमति दे दी। फिर, एक सुबह, जब सीता छत पर बने वेदी पर औषध के पत्ते इकट्ठा करने गई, तो उसने देखा कि शिविर में खुजली हो रही है। उसे उम्मीद नहीं थी कि वह फिर से लौटेगा। किसी ने भी उसे ऐसी संभावना के बारे में नहीं बताया था। जिन लोगों से भी उसने इस विषय पर पूछने की हिम्मत की थी, उन सभी ने उसे बताया था कि कमिश्नर साहब साल भर के लिए चले गए हैं, प्रांत के एक दूरदराज के हिस्से में हैं, और वापस नहीं लौटेंगे; और उसके दादाजी ने तो उससे यह भी कहा था कि वे श्री ब्रैंडन के पास जाकर गोद लेने का मामला उनके सामने रखेंगे और इस संबंध में उनकी सलाह लेंगे।

जब उसे अब उनके लौटने का आश्वासन मिला तो सीता को जो खुशी हुई, वह इतनी स्पष्ट थी कि आंटी एला ने उसे अनदेखा नहीं किया; और सीता सीढ़ियों से नीचे दौड़ते हुए चिल्लाई, "आओ और देखो—आओ और देखो; तंबू फिर से वहाँ हैं!" और उनके दमकते चेहरे ने उनकी भावनाओं को ज़ाहिर कर दिया—उस सम्मानित बुज़ुर्ग महिला को, उनके मन में, अपने सभी संदेहों की सबसे पुख्ता पुष्टि मिल गई थी। लेकिन अब कोई चारा नहीं था। वह मिस्टर ब्रैंडन को जाने के लिए नहीं कह सकती थीं; वह केवल उनके दिए गए वादे पर ही भरोसा कर सकती थीं, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। इस तरह कई दिन बीत गए; और सिरिल के उनके हालचाल पूछने वाले एक विनम्र संदेश के अलावा, शिविर और बैंकर के घर के बीच कोई संपर्क नहीं हुआ था। आंटी एला अब तक पूरी तरह संतुष्ट थीं; और चूंकि मंदिर में होने वाले वार्षिक समारोहों में से एक होना ही था, इसलिए उन्हें सीता को अपने साथ ले जाने में कोई आपत्ति नहीं थी, जैसा कि वह हमेशा करती आई थीं। जैसा कि मैंने पहले बताया है, मंदिर उस उपवन के पास था जिसमें सिरिल का शिविर लगा हुआ था। पुराने समय में किसी ने इस ऊँची जगह को इसकी सुंदरता के कारण चुना था, वहाँ मंदिर बनवाया था और आम और इमली के पेड़ों का एक बड़ा बाग लगाया था, जो खूब फले-फूले थे, और उनकी सुखद छाया में अंग्रेज़ सिविल अधिकारियों के शिविर हमेशा लगे रहते थे। पहाड़ी से एक लहरदार, समृद्ध कृषि और वनों से आच्छादित देश का शानदार दृश्य दिखाई देता था; और दूर प्रांत के कुछ ऊंचे पहाड़ थे, जो सूर्य की किरणों के साथ अपने बदलते रंगों से दृश्य को घेर रहे थे। किसी भी औपचारिक धार्मिक अनुष्ठान के बिना भी, मंदिर की छत और उसके पुजारी वामुन भूत के छोटे से कमरे में—जहां सीता अक्सर उनके साथ अध्ययन करती थीं—सीता को एक अलग ही आकर्षण महसूस होता था, जिसका आनंद वह उठाती थीं। ताजी, स्वच्छ हवा, स्वतंत्रता का एहसास, देश का मनमोहक दृश्य, शहर के घर और उसकी अपरिहार्य कैद से एक सुखद बदलाव था; और

 यह अवसर पहले से कहीं अधिक आनंददायक था। सीता और आंटी एला वहाँ जल्दी पहुँच गई थीं और उन्होंने शाम तक रुकने का निश्चय किया था। उन्होंने अपनी पूजा-अर्चना की, मूर्ति के सामने अपनी साधारण भेंट रखी और शहर-गाँव के लोगों की भीड़ को देखा जो प्रांगण से गुज़र रहे थे या चबूतरे पर समूहों में बैठे थे, दृश्य का उतना ही आनंद ले रहे थे जितना वे स्वयं ले रहे थे और

अपने साथ लाए हुए मिठाई या अन्य भोजन का आनंद ले रहे थे। दूसरी ओर सिरिल ब्रैंडन का शिविर था और लोगों की चहल-पहल थी - याचिकाकर्ता, लाल बेल्ट वाले संदेशवाहक, पेड़ों के नीचे बैठे ग्रामीणों के समूह, जबकि उनके मुंशी उनकी याचिकाएँ लिख रहे थे या उनके हिसाब-किताब कर रहे थे। आगे, श्री ब्रैंडन के घोड़े, उनके पुलिस दल के घोड़े, ऊँट और उनका इकलौता हाथी, सभी मिलकर सीता के लिए एक अनोखा दृश्य बना रहे थे, जो इससे पहले शायद ही कभी इतनी करीब आई थी। ब्रैंडन के बारे में वे कुछ नहीं जानती थीं; लेकिन सीता जानती थी कि वह कहाँ है, और उसे वह बड़ा सफेद तंबू अच्छी तरह याद था जिसमें उसने उसे पहली बार देखा था, अब एक साल से भी अधिक समय हो गया था, और पूरा दृश्य उसकी याद में इतना ताजा था मानो कल ही हुआ हो। फिर, जैसे ही सूरज ढलने लगा, और तंबुओं के पीछे एक बड़े पेड़ की छाया घास पर फैल गई, उन्होंने देखा कि नौकरों ने एक बड़ा कालीन बिछाया और एक कुर्सी रखी, जबकि चारों ओर से लोग इकट्ठा हो गए, कुछ बैठ गए, जबकि अन्य समूहों में खड़े होकर आपस में बातचीत करने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने सिरिल और बाबा साहब को अपने लेखकों के साथ तंबू से बाहर आते देखा, और जैसे ही सिरिल ने भीड़ का अभिवादन स्वीकार किया और उन्हें जवाब दिया, वह बैठ गया और शाम का काम शुरू हो गया। कभी सीता उसे देख पाती थी, कभी लोग उसे देखने से रोक देते थे; लेकिन उसने इतना देख लिया था जिससे उसे यकीन हो गया कि वह ठीक है, उसके घाव के बाद जो पीलापन आ गया था वह अब उसके सामान्य लाल रंग में बदल गया था, और वह अपने घायल हाथ का स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकता था। क्या वह कभी उससे फिर बात कर पाएगी? काश, बस एक शब्द भी, यहाँ तक कि वह उससे पूछ ले कि वह कैसी है—इतना ही काफी होता, और अब वह बस यही उम्मीद कर सकती थी। घर में, अपने कमरे में, वे एक-दूसरे से दूर नहीं लगते थे; लेकिन उसके शिविर और व्यस्त जीवन में, वह उसे कैसे याद रखेगा? मुझे लगता है, अगर सीता इन विचारों के साथ घर लौट जाती, तो वह अपने भाग्य से अधिक संतुष्ट हो जाती, और समय के साथ, वह उतना शोक करना बंद कर देती जितना उसने किया था: और उसे यह बात और भी निश्चित रूप से समझ में आ जाती कि सिरिल और उसके बीच एक ऐसी खाई है जिसे पाटा नहीं जा सकता। लेकिन ऐसा नहीं होना था। सिरिल की याचिकाकर्ताओं की अदालत, जैसा कि इसे कहा जाता था, एक विचित्र और दिलचस्प दृश्य था। उसके पहले कुछ उदाहरण थे।

126 सीता। प्रांत में आने पर, परिचारकों और संदेशवाहकों द्वारा याचिकाओं को रोक लिया जाता था, या याचिकाकर्ताओं से उनके मामलों पर ध्यान देने से पहले रिश्वत की मांग की जाती थी: और इसे रोकने के लिए, सिरिल ने एक याचिका पेटी स्थापित की थी, जिसे उनके तम्बू से कुछ दूरी पर स्थापित किया गया था, और जिसके पास किसी भी सरकारी कर्मचारी को रहने की अनुमति नहीं थी। पेटी में ताला लगा हुआ था, और ढक्कन में एक चौड़ा छेद था जिसके माध्यम से याचिकाएँ डाली जा सकती थीं। शाम को जब सिरिल बाहर अपनी सीट पर बैठते थे, तो पेटी उनके सामने रखी जाती थी और उसे खोल दिया जाता था; और एक मुंशी, जैसे ही कागज आते थे, उन्हें निकाल लेता था, याचिकाकर्ता का नाम पुकारा जाता था, और दस्तावेज़ उनकी उपस्थिति में पढ़ा जाता था, और पृष्ठांकन या अन्य किसी प्रकार से तुरंत निपटाया जाता था। यह कहना मुश्किल है कि क्या महज़ यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या हो रहा है—और आंटी एला को अपने तरीके से रोमांच पसंद था, जातिगत सभाओं, ब्राह्मणों के पाठ, नाटकों और अन्य सार्वजनिक समारोहों का शौक था—या ब्रैंडन को एक बार फिर देखने की इच्छा, शायद उनसे कुछ बात करने की इच्छा, जिसने उन्हें सीता से यह कहने के लिए प्रेरित किया—वे मंदिर की छत पर बैठी थीं—"मैं तुम्हें यहीं छोड़ देती हूँ, और जाकर देखती हूँ कि वहाँ क्या हो रहा है। एक बूढ़ी औरत पर किसी का ध्यान नहीं जाता, और मैं यह जानना चाहती हूँ कि गोकुलपुर की ज़मीनों के लिए इतम दास की याचिका पर क्या आदेश दिए गए हैं, क्योंकि मुझे पता है कि वह एक याचिका पेश करने वाले हैं। मुझे ज़्यादा देर नहीं लगेगी, फिर हम घर जा सकते हैं। तुम्हारे दादाजी यह जानना चाहेंगे कि श्री ब्रैंडन ने इस मामले में क्या आदेश दिया है;" और इस तरह आंटी एला चली गईं, और सीता, उनकी जगह होने की लालसा में, उन्हें याचिकाकर्ताओं और उनके दोस्तों की भीड़ में प्रवेश करते हुए देखती रही, और फिर वह उनकी नज़रों से ओझल हो गईं। आंटी एला की उत्सुकता शांत हो गई। ब्रैंडन ने राम दास की याचिका को रिपोर्ट के लिए स्थानीय जिला कार्यालय भेजने का आदेश दिया, यह सुनकर वह वापस जाना चाहती थी; लेकिन उसे यह सब सुनना अच्छा लग रहा था, यह जानना कि हर कोई क्या चाहता है, और यह देखना कि उसका बेटा—क्योंकि वह हमेशा अपने दिल में सिरिल को इसी नाम से पुकारती थी—कितने धैर्य से अपना काम कर रहा था, और कितनी विनम्रता से सबसे बात कर रहा था। अंत में वह जाने के लिए मुड़ी, और मंदिर की ओर कुछ ही कदम चली थी कि लाल वस्त्रधारी

दूतों में से एक, जिसे वह जानती थी, उसके पास आया और आदरपूर्वक कहा कि उसे दरबार के उठने तक इंतजार करना होगा, क्योंकि उसके स्वामी उससे बात करना चाहते हैं। "सिरिल ने उसे कैसे देखा होगा?" चाची एला ने सोचा; वह उससे क्या कह सकता था? सीता उसकी अनुपस्थिति के बारे में क्या सोचेगी? वह बहुत उलझन में थी, और इस बात से नाराज़ थी कि वह चली ही क्यों गई; लेकिन उसने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की, भीड़ को तितर-बितर होते देखा, मंत्री अधिकारी को विदा लेते देखा, और श्री ब्रैंडन को अपने निजी तम्बू में जाते देखा; और फिर वह आदमी, जिसने उसे नहीं छोड़ा था, ने कहा कि जाने का समय हो गया है, और वह धड़कते दिल के साथ चली गई।

आंटी एला की सलाह। पृष्ठ 127: तंबू में सिरिल के सिवा कोई नहीं था। वह अपने छोटे से पलंग के किनारे बैठा था, उठा, उसका हाथ प्यार से पकड़ा और उसे अपने बगल में कालीन पर बिठा दिया। तंबू में अंधेरा होने के कारण वह उसका चेहरा ठीक से नहीं देख पा रही थी; लेकिन उसे लगा कि वह उत्तेजित स्वर में बोल रहा है, और वह वहाँ से भागने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। आखिर वह क्या कहना चाहता था? लेकिन वह एक पल भी असमंजस में नहीं थी। “आंटी एला,” उसने कहा, “मैंने आपको बुलवाया है ताकि आप मेरे भाई नरेंद्र को मेरा संदेश दे दें। मैं शायद एक-दो दिन इंतज़ार कर सकता था, लेकिन भीड़ में आपकी नज़र पड़ते ही मैंने तय कर लिया कि अब देर नहीं करूँगा। मैंने सीता को भूलने की कोशिश की है—नहीं, भूलना नहीं, क्योंकि यह मुमकिन ही नहीं था; बल्कि यह सोचना कि वह मेरे लिए कभी भी उससे ज़्यादा नहीं हो सकती जितनी वह रही है—पर यह नामुमकिन रहा है, क्योंकि मैं उससे इतना प्यार करता हूँ जितना मैं आपको बता नहीं सकता, और उसके बिना मेरा जीवन सूना है। मैं चाहता हूँ कि आप अपने भाई को बताएँ कि अगर आपकी जाति के नियम इसकी इजाज़त देते हैं, तो मैं उससे शादी करूँगा; अगर वह मुझे स्वीकार करती है, तो मैं पूरे सम्मान के साथ उससे अपनी कानूनी पत्नी के रूप में शादी करूँगा। अगर यह मुमकिन नहीं है, तो वह मुझे बिना किसी झिझक के बता दे; और मैं चला जाऊँगा, और जब तक ज़िंदा रहूँगा, कभी यहाँ वापस नहीं आऊँगा। मैं आपका अपमान नहीं करना चाहता, और सीता के प्यार का सबसे बड़ा बदला मैं यही दे सकता हूँ कि मैं उसे अपनी पत्नी बना लूँ। क्या आपने यह सब सुना?” यह कहना मुश्किल था कि आंटी एला ने यह सब सुना था या नहीं। उसने उसे सीता और विवाह के बारे में कुछ

कहते सुना था, और वह आश्चर्य से मुँह खोलकर, बड़ी-बड़ी आँखों से उसे घूर रही थी। जैसे ही उसने आखिरी सवाल पूछा, वह उसके हाथों पर गिर पड़ी, जैसे ही उसने अपने हाथ फैलाए थे— हाँफ रही थी, लेकिन कुछ बोल नहीं पा रही थी; लेकिन वह बेहोश नहीं हुई, और थोड़ी देर बाद होश में आ गई, और अपनी आँखों के सामने हाथ फेरते हुए सपने जैसी नज़र से ऊपर देखा। "तुमने मेरी बात नहीं सुनी, चाची। एला, तुमने वह नहीं सुना जो मैंने तुमसे कहा," सिरिल ने उसके सूखे हाथों को सहलाते हुए कहा। "कहना तो मामूली है, और मैं तुम्हें फिर से बता रहा हूँ, कि अगर तुम और नरेंद्र सीता को मुझे दे दोगे तो मैं उससे शादी करूँगा।" "मुझे नहीं पता, मैं कुछ नहीं कह सकती," उसने जवाब दिया; "और मैं अपने भाई को बताने की हिम्मत नहीं कर सकती; उसे बुलवाओ, उसे खुद बताओ, उसे अभी बताओ। या रुको," वह उठते हुए बोली; "तुम वामुन भूत को जानते हो, वह हमारे पुजारी हैं—वह सब कुछ जानते हैं जो किया जा सकता है—तुम उनसे वैसे ही बात कर सकते हो जैसे नरेंद्र से करते हो। तुरंत आओ!" और उसने उसे तंबू के दरवाजे की ओर खींच लिया; वह अपनी घबराहट में सीता को भूल गई थी। मंदिर के द्वार तक बस कुछ ही कदम थे, और प्रांगण में कोई नहीं था, सभी श्रद्धालु जा चुके थे। आंटी एला ने सिरिल को वहीं रुकने का इशारा किया और मंदिर के अंदर चली गईं, और थोड़ी देर बाद वामुन भूत के साथ वापस आ गईं।

128 सीता। सही निर्णय लो, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है, और हम सब बातों में उस पर भरोसा रखते हैं। पुजारी ने अचरज से एक-एक करके देखा, पर सीता के ख्याल से उसका दिल घबरा गया। आखिरकार ब्रैंडन बोला— "इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि चाची किला से जो कहा गया था, वह पहले ही दर्ज हो चुका है। वे सब आप पर भरोसा करते हैं," उसने पुजारी से आगे कहा, "और मेरी और उनकी इज़्ज़त आपके हाथों में है। अगर यह हो सकता है, तो इसे तुरंत कर दीजिए; अगर नहीं, तो मुझे बता दीजिए, और मैं चला जाऊंगा, और फिर कभी वापस नहीं आऊंगा।" सीता पुजारी के छोटे से कमरे में बैठी थी, सुंदर नज़ारे को निहार रही थी—उसने सुनहरे और लाल बादलों की आभा में सूरज को डूबते देखा था, और अब शाम की बैंगनी-भूरी परछाइयाँ उसके सामने के दृश्य पर छा रही थीं—वह सोच रही थी कि चाची एला क्यों नहीं आईं, फिर भी उसे उम्मीद थी कि सिरिल ने उन्हें रोक रखा होगा, और उनके ज़रिए कोई अच्छा संदेश भेज रहा होगा। उसने अपनी चाची को पुजारी को पुकारते

सुना था, उन्हें किसी से बात करते सुना था, और घर जाने के लिए अपनी चाची से मिलने दरवाजे की तरफ बढ़ी थी, तभी उसने पास में तीन आकृतियाँ देखीं। उसके इतने करीब कि वह उन्हें छू सकती थी, उसने ब्रैंडन के आखिरी शब्द सुने, “मैं जा रहा हूँ और फिर कभी वापस नहीं आऊँगा।” शायद उसे पता भी नहीं था कि वह क्या कर रही है; लेकिन जैसे ही शब्दों का उदास स्वर उसके कानों में पड़ा, उसने उन्हें सच मान लिया, और अपनी भावनाओं को काबू में न कर पाने के कारण, जल्दी से आगे बढ़ी, और खुद को सिरिल के चरणों में गिराकर, उसके घुटनों को थाम लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। “तुम मुझे छोड़ जाओगे, तुम मुझे छोड़ जाओगे!” बस यही वह कह पाई। उसने उसे धीरे से उठाया, और उसे अपने दिल से लगा लिया: “कभी नहीं, सीता; अगर वे तुम्हें मुझे देंगे,” उसने कहा: “जहाँ मैं जाऊँगा तुम भी जाओगी, अगर तुम मेरी पत्नी बनोगी। उनके सामने बोलो, नहीं तो मुझे जाने दो, और मैं हमेशा के लिए चला जाऊँगा।” सीता उस ज़ोरदार स्पर्श से काँप उठी थी, और अपनी भावनाओं से लगभग अभिभूत हो गई थी। वह जवाब में एक शब्द भी नहीं बोल पाई, और उसकी जीभ उसके मुँह के ऊपरी हिस्से से चिपक गई थी; लेकिन उसके अंतिम दिनों का सपना पूरा हो गया था, और वह जानती थी कि वह प्यार करती थी। अगर उसकी मृत्यु तब हो जाती जब उसने उसकी बांह को अपने करीब महसूस किया और उसका सिर उसकी छाती पर झुक गया, तो वह खुशी से मरती। "बोलो!" चाची एला और पुजारी ने लगभग एक ही सांस में कहा। "तुम क्या चाहती हो, सीता?" "मैं उसके साथ जाऊंगी, अगर आप मुझे उसे सौंप दें," उसने मुश्किल से कहा; "हाँ, मैं जाऊंगी!" और उसने धीरे से खुद को सिरिल से अलग किया, और चाची एला के गले में अपनी बाहें डालकर, फूट-फूटकर रोने लगी जब वह उन्हें अपने साथ ले गईं।

“मैं उसे बहुत सुरक्षित रखूँगा।” 129 “आप बेहतर होगा कि आराम करें, महोदय,” पुजारी ने कहा; “हममें से कोई भी अब और बात करने के लिए शांत नहीं है; मैं आज रात नरेंद्र से मिलूँगा और भविष्य के बारे में उससे सलाह लूँगा—और—और—” उसने हिचकिचाहट के साथ जोड़ा, “यदि आपको मेरा पत्र मिले, तो तुरंत चले जाना; आप देखेंगे कि यह उनके सम्मान और आपके अपने सम्मान के लिए आवश्यक है।”

अध्याय 17वीं। “मैं उसे बहुत सुरक्षित रखूँगा।” अगले दिन कार्यालय समय से पहले, बाबा साहब ने सिरिल को संदेश भेजा था कि उन्हें कुछ महत्वपूर्ण बात बतानी है, और उन्हें जल्द से जल्द आने के लिए कहा गया था। उनकी अपनी चिंताएँ फिर से बढ़ गई

थीं, क्योंकि उन्होंने पिछली शाम चाची एला को सिरिल के तम्बू में ले जाते हुए देखा था, और उन्होंने विरोध करने का निश्चय किया था। दूसरी ओर, सिरिल भी अपने निर्णय के बारे में बताने और अपने वफादार मित्र से सलाह लेने के लिए उतना ही उत्सुक था; जैसे ही बाबा साहब बैठे, ब्रैंडन ने तुरंत बात शुरू कर दी। "मैंने आपसे सलाह नहीं मांगी, बाबा साहब," उसने कहा, "क्योंकि ऐसे मामले में कोई भी व्यक्ति दूसरे से सलाह नहीं मांग सकता; उसे वही करना चाहिए जो उसका दिल कहता है, ईश्वर की इच्छा के अनुसार। मैंने सोचा था कि मैं सीता को अपने विचारों से निकाल दूंगा, लेकिन यह असंभव था, और मैंने उनसे सीता का विवाह मुझसे कराने के लिए कहा है।" "कब?" बूढ़े ने उत्सुकता से पूछा। "कल शाम," ब्रैंडन ने उत्तर दिया, "मैंने भीड़ में आंटी हला को देखा, और उनसे रुकने को कहा; फिर मैंने उनसे सीता के बारे में पूछा। वह मुझे मंदिर में पुजारी से मिलने ले गईं। मैंने सीता को वहाँ पाया, और उन्हें बताया।" "भगवान का शुक्र है, महोदय! मैं विनम्रतापूर्वक ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि आपकी प्रतिष्ठा सुरक्षित है, क्योंकि लोग आपके आने-जाने के बारे में खूब बातें कर रहे थे। क्या आपको कोई जवाब मिला?" बाबा साहब ने पूछा। "अभी तक नहीं," सिरिल ने कहा। "पुजारी ने कहा कि वे जितनी जल्दी हो सकेगा पत्र लिखेंगे; वास्तव में, वह व्यक्ति जो उधर से आ रहा है, शायद उनका संदेशवाहक हो।" ऐसा ही हुआ, और उन्होंने साथ मिलकर पत्र पढ़ा। संस्कृत में कुछ पंक्तियाँ थीं, जिनका अर्थ इस प्रकार था: "नरेंद्र आज रात मेरे साथ मंदिर चलेगा; वहाँ हमसे मिलना, और बाबा साहब को भी साथ लाना।" "मैं आपको निराश नहीं करूँगा, महोदय," उन्होंने कहा, "इस मामले में या किसी भी मामले में।"

130 स्लेटा। "कम से कम," उसने सोचा, "यह मामला किसी न किसी तरह खत्म तो हो जाएगा।" शाम को वे मंदिर के प्रांगण में स्थित पुजारी के कमरे में मिले। काफी अंधेरा था, लेकिन एक ताक में एक छोटा सा दीपक जल रहा था। सिरिल के लिए एक छोटा सा कालीन और एक तकिया रखा गया था; और जैसे ही वह अंदर आया, उसने ब्राह्मणों को प्रणाम करते हुए अपने जूते उतारे और बैठ गया। पुजारी ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। "मैंने नरेंद्र को बताया," उसने कहा, "और एला ने भी वही बताया जो आपने पूछा था। मैंने उसे बताया कि आपने सीता से क्या कहा था, और उसकी इच्छा है कि वह सब कुछ आपके मुंह से सुने।" और ब्रैंडन ने ज़रा भी संकोच नहीं किया। शुरू से अंत तक उसने सब कुछ बता दिया—अपना आश्चर्य, प्रशंसा,

सम्मान; फिर कैसे सीता के लिए उसका प्रेम दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया, जबकि वह अब तक चुप रहा था; उसके संघर्ष क्या थे, और शाहगंज छोड़ने से पहले उसका अंतिम और दृढ़ संकल्प कि वह एकमात्र सम्मानजनक मार्ग अपनाएगा। “इसका उत्तर आपको देना है,” उसने कहा। “आप उसके बड़े और संरक्षक हैं; और यदि यह संभव नहीं है, तो मुझे समर्पण करके चले जाना होगा; और मुझे लगता है—मुझे आशा है—कि सीता भी समर्पण कर देगी।” “और आप मुझे यह सब बता रहे हैं, महोदय! अपनी मर्ज़ी से, परिणाम पर विचार करते हुए, और असफल नहीं होंगे?” नरेंद्र ने घबराकर कहा। “किसी ने मुझे प्रभावित नहीं किया है,” सिरिल ने उत्तर दिया, “और मैं अपनी मर्ज़ी से और अपने सम्मान के अनुसार करने के लिए स्वतंत्र हूँ। मैं असफल नहीं होऊंगा। हममें से कई लोगों ने ऐसा ही किया है, और मैं उनसे बेहतर नहीं हूँ। यदि आप कर सकते हैं, तो अपने बच्चे की खातिर मुझ पर विश्वास करें।” “एफ आप पर भरोसा करेगा,” बैंकर ने गंभीरता से उत्तर दिया। “मुझे आपके उच्च सिद्धांतों का और कोई प्रमाण नहीं चाहिए। यह तो वही है जो सभी लोग आपके बारे में कहते हैं। अब सुनो, मित्रों,” उसने दूसरों से कहा, “और अगर मेरी बात सुनने के बाद आपको लगता है कि मैं सीता को सम्मानपूर्वक उसे सौंप सकता हूँ, तो आप निर्णय लेना। आप ब्राह्मण हैं, और मुझसे कहीं अधिक जानते हैं। कई वर्ष पहले—सदियों पहले—जब बीजनगर के हिंदू राजकुमार दक्षिण भारत पर शासन करते थे, और मुसलमान गुलबर्गा पर शासन करते थे, तब हमारे शिल्प की एक बेटी के कारण एक बड़ा युद्ध हुआ, जो सीता की तरह ही बहुत सुंदर और विद्वान थी। बीजनगर के राजा ने उसे मूडगुल से, जहाँ वह रहती थी, ले जाना चाहा और उसे पकड़ने के लिए अपने घुड़सवारों को भेजा; लेकिन मुसलमानों ने इसे रोक दिया, और एक भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें मुसलमान विजयी हुए। तब मुस्लिम राजा ने सुनार की बेटी को बुलवाया, जिसे उसके बेटे ने गुप्त रूप से देखा और प्यार किया था, और उसका विवाह उससे कर दिया; और उसने उसे संतानें जन्म दीं, जो बीदर के राजगद्दी पर बैठे। हम, महोदय, उसी परिवार के वंशज हैं, और जो कुछ हुआ उससे हमारी जाति पर कोई कलंक या कलंक नहीं लगा। अब इस राज्य के राजाओं में से एक

“वह उसे बहुत सुरक्षित रखेगा।” 131 — अगर कोई फिर से हमारे घर की बेटी के साथ यौन संबंध बनाता है, तो हम सीता को उसे दे सकते हैं, क्योंकि शूद्र होने के नाते हमारी स्त्रियाँ दूसरी बार विवाह कर सकती हैं; लेकिन अगर मैं गलत हूँ, तो आप, जो

कानून जानते हैं, मुझे बताएँगे और समय रहते मेरी गलती सुधारेंगे।" दोनों ब्राह्मणों ने इस प्रश्न पर लंबे समय तक और चिंतापूर्वक बहस की, और दोनों ही विद्वान थे। शूद्र स्त्री का दूसरी बार विवाह करना निर्विवाद था; परन्तु किसी ईसाई से विवाह करना संदिग्ध था, क्योंकि इसका कहीं कोई प्रावधान नहीं था। फिर भी, जब तक स्त्री अपनी जाति बनाए रखती थी, विवाह उसके लिए बाध्यकारी था; और यदि वह अपने पति के धर्म में परिवर्तित हो जाती, तो यह प्रश्न हिंदू धर्म से पूरी तरह बाहर निकलकर एक ऐसे नियम में परिणत हो जाता, जिसके बारे में दोनों में से कोई भी कुछ नहीं कह सकता था। ब्रैंडन ने अपनी स्थिति स्पष्ट की। उनका विवाह उनकी अपनी रीति-रिवाजों के अनुसार तभी हो सकता था जब उनकी पत्नी ईसाई हो। यदि वह किसी भी समय अपनी इच्छा से उनके धर्म में परिवर्तित हो जाती, तो वे अपने रीति-रिवाजों के अनुसार उसका पुनः विवाह कर लेते; परन्तु यदि वह अपने धर्म में बनी रहती, तो वे उसे प्रभावित करने या उसकी जाति को किसी भी प्रकार से विचलित करने का प्रयास नहीं करते। यदि उनके बच्चे होते, तो वे ईसाई बन जाते, क्योंकि वे हिंदू नहीं हो सकते थे। जहाँ तक सेक्टा की बात है, यदि अंग्रेज लोग उसे जानना और उसका सम्मान करना चाहते, तो यह अच्छी बात होती; परन्तु यदि नहीं, तो उसे उनकी कमी नहीं खलेगी, और वह उनके साथ प्रसन्न रहेगी। उस रात नरेंद्र और पुजारी, मेरे ख्याल से, पिछले कुछ महीनों की तुलना में कहीं अधिक प्रसन्न थे, और मैं यह भी कह सकता हूँ कि बाबा साहब भी। उनकी एकमात्र चिंता ब्रैंडन के कुलीन परिवार को लेकर थी। इस खबर का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? लेकिन उनके स्वामी ने उन्हें संतुष्ट करने का वचन दिया था, और यही पर्याप्त था। सभी के बीच यह सहमति बनी थी कि समारोह जितनी जल्दी संपन्न हो जाए उतना अच्छा है; और वामुन भूत ने अपनी तालिकाओं का अवलोकन करके पाया कि लगभग एक सप्ताह में शूद्र विधवाओं के विवाह के लिए एक उत्तम दिन आएगा; और यदि प्रारंभिक रस्में बैंकर के घर पर संपन्न हो जाएँ तो उनका विवाह मंदिर में हो सकता है। ब्रैंडन ने निर्धारित दिन से पहले स्केटा से मिलने की अनुमति देने के लिए बहुत विनती की, लेकिन नरेंद्र ने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। उन्होंने कहा, "अपनी पत्नी को पूरे सम्मान और आदर के साथ अपने साथ ले जाओ। उसके बाद वह तुम्हारी है, हमारी नहीं, और उसका सुख तुम्हारे साथ है। हम उसे निःस्वार्थ भाव से देते हैं, और हम तुम पर भरोसा कर सकते हैं कि तुम उसकी हर उस सुविधा का प्रबंध करोगे जिसकी उसे आवश्यकता है।" फिर सिरिल ने एक बार

फिर अपना शिविर समेटा और कुछ दिनों के लिए चला गया; लेकिन, जैसा कि सीता अब जानती थी, वह केवल लौटने के लिए ही गया था। वह समय अवश्य आएगा जब उसे उन परिवर्तनों में व्यक्तिगत रुचि होगी; इस बीच, उसका पूरा भरोसा उस व्यक्ति पर था जिसने उसे चुना था और उसे अपने बीच से बाहर आने के लिए कहा था।
 सीता। लोगों से शादी करके उसकी पत्नी बनना। वह बहुत खुश थी—इतनी खुश कि ज्यादा बोल नहीं पा रही थी। अगर वह अपने दादाजी के आदरणीय चेहरे पर चिंता की झलक देखती, और उनकी आँखों में अक्सर आँसू काँपते देखती, तो उन्हें सहारा और सांत्वना देने वाली आशाएँ उमड़तीं; और यह आश्वासन मिलता कि वह अब कभी ज्यादा दूर नहीं रहेगी। जहाँ तक प्यारी चाची एला की बात है, वह सचमुच बहुत हैरान थीं। यह सोचकर कि सीता उनके बेटे से शादी करेगी—जिस बेटे को उन्होंने अपने दिल में गोद लिया था; कि वह अंग्रेज़ महिलाओं में से एक होगी—पूरे प्रांत की रानी—वह छोटी सीता जो उनकी गोद में पली-बढ़ी थी—और उसे डर नहीं लगेगा! वह जानती थी कि वह हरी दास से डरती थी, लेकिन वह कठोर था; और वह सिरिल से नहीं डरती थी। नहीं; सीता डरी नहीं थी। 'सचमुच, उसके लिए एक ऐसी प्यास थी, जो कई दिन-रात उसका पीछा करती रही थी, और उस प्रचंड भावना ने लगभग उसके अस्तित्व को सुखा दिया था। सिरिल की दया और प्रेम पर उसे कोई संदेह नहीं था। अब वह उसकी अपनी "सावित्री" होगी, न केवल कर्तव्य से, बल्कि प्रेम से भी—मृत्यु तक एक निष्ठावान पत्नी। अब विधवापन के नीरस भय का कोई डर नहीं; अकेलेपन भरे निरर्थक दिन और रातों की बेचैनी और संदेह नहीं। मैं यह नहीं कहूँगी कि उसके मन में अनिश्चितताएँ नहीं थीं; परन्तु, अधिकतर, भविष्य उसके सामने उज्ज्वल, बहुत उज्ज्वल दिखाई दे रहा था; यद्यपि उसके पुराने साथी उसे बिल्कुल नहीं समझ पा रहे थे, न ही यह कि अंग्रेज कमिश्नर साहब देश की सबसे धनी और सुंदर लड़की को क्यों ले जा रहे थे। अंततः वह दिन आ गया, और अच्छी चाची एला की मेहमाननवाज़ी की तैयारियाँ समाप्त हो गईं। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कितने लोगों को भोजन कराया गया, कितनी उदारता दिखाई गई; सेक्टा के लिए कितना विशाल दहेज दिया गया, जितना वह ले जा सकती थी उससे कहीं अधिक; और यह कि उसके नए पायल और आभूषण उसके पुराने से कहीं अधिक सुंदर थे। मुझे खेद है कि हिंदू विवाह की उबाऊ रस्में मेरे पाठकों को शायद ही रुचिकर लगेंगी, इसलिए मैं उन्हें छोड़ रहा हूँ। जो कुछ किया जा सकता था, वह सब किया

गया था। यह सच है कि राम दास और कुछ अन्य लोग अनुपस्थित थे; लेकिन फिर भी कई मित्र नरेंद्र के साथ खड़े थे, और किसी ने भी उस विवाह को रोकने का प्रयास नहीं किया जिसे ब्राह्मणों ने मंजूरी दे दी थी। सिरिल ने नीता के लिए सब कुछ सहा था। उसने लाल दुल्हन का वस्त्र और पगड़ी पहनी थी, और बाबा साहब ने उसे जो भी करने को कहा था, उसने सब कुछ किया था। जब शाम ढलते ही मशालों और ब्राह्मणों का जुलूस मंदिर की ओर बढ़ा, और रास्ते में आतिशबाजी छोड़ी गई, तो वह अपनी पालकी में सीता के साथ गया था। मंदिर में उसने सीता को, और उसकी चाची एला को, मंदिर के तीन चक्कर लगाते देखा, और समारोह समाप्त हो गया; और जब दर्शक और मित्र चले गए, तो वह उस पालकी में गया जिसमें नरेंद्र और उसकी बहन बैठे थे। "मैं उसे बहुत सुरक्षित रखूंगा।" 133 "काम हो गया," बूढ़े आदमी ने कहा। "अब उसे भगवान के सिवा कोई अलग नहीं कर सकता। उसे ले जाओ, श्री ब्रैंडन, उसे ले जाओ, और उसके साथ अच्छा व्यवहार करना।" "मैं करूंगा, नरेंद्र," उसने उत्तर दिया; "और वह थोड़ी देर बाद खुद आएगी, और आपको बताएगी कि वह खुश है। अब उसका हाथ मेरे हाथ में दो, तुम और आंटी एला, और मुझे ऐसा लगेगा जैसे तुमने सचमुच उसे मुझे सौंप दिया हो।—हाँ, बस इतना ही काफी है, और मैं आप दोनों का धन्यवाद करता हूँ। मैं उसे बहुत सुरक्षित रखूंगा, चिंता मत करो। क्या तुम तैयार हो, सीता?" वह जवाब नहीं दे सकी। इसलिए सिरिल ने पालकी के दरवाजे बंद कर दिए, और पालकी उठाने वालों को उसे उठाने के लिए कहकर, मुड़कर उसके बगल में चलने लगा। अध्याय 18वीं। नवाब की शिकायत, शायद कुछ शर्मिंदगी के कारण ही सिरिल ब्रैंडन ने अपने मित्र मोस्टिन को निम्नलिखित पत्र लिखा था। जीवन में होने वाले अधिकांश महत्वपूर्ण परिवर्तनों पर अपने मित्रों की अपेक्षा स्वयं को संतुष्ट करना कहीं अधिक आसान होता है, विशेषकर तब जब कोई असाधारण कार्य, विश्व की दृष्टि में, दृढ़ विश्वास और गहन विचार-विमर्श का परिणाम हो। विश्व, जिसमें मित्र भी शामिल हैं, इन भौतिक बिंदुओं में से किसी एक को भी तब तक स्वीकार करने को तैयार नहीं होता जब तक कि यह निश्चित न हो जाए कि वे हुए थे; और चूंकि इसका ज्ञान प्राप्त करना असंभव है, और कारणों की जानकारी के बिना निष्कर्ष अनिवार्य रूप से घटनाओं से ही निकाले जाते हैं, इसलिए सिरिल ब्रैंडन के मामले में भी, उन्होंने सोचा, और उनका विचार सही था, कि विश्व पहले से ही व्यस्त होगा। शायद इसलिए, यह इस आशा के साथ था कि... जनता के फैसले का अनुमान लगाते हुए उन्होंने अपने

मित्र को लिखा, और इस संबंध में मेरे पाठकों को स्वयं निर्णय लेना होगा: - "कैंप, 10 नवंबर, 1851। मेरे प्रिय महोदय/महोदया, आपको मुझसे उन बातों के बारे में सुनने का अधिकार है जिन्हें आम अफवाहों द्वारा गलत तरीके से प्रस्तुत या बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा सकता है, और मैं उनका अनुमान लगाने का प्रयास करूंगा। आप शाहगंज के सुनार बैंकर नरेंद्र की पोती सीता को नहीं भूले होंगे, न ही मुकदमे के बाद शाम को हमारी बातचीत को। मैं आपके मत को अपने किए का कोई बहाना या औचित्य नहीं बनाऊंगा - बिलकुल भी नहीं; बल्कि अपने स्वयं के विवेक का हवाला दूंगा।

134 सीता। हार्दिक प्रेम और आदर के साथ, मैंने कल उनसे उनके अपने धर्म के रीति-रिवाज से विवाह किया, जिसे 'गंधर्ब' कहा जा सकता है, और मैं उन्हें अपनी सच्ची और वैध पत्नी के रूप में आपके समक्ष घोषित करता/करती हूँ। यदि भविष्य में कभी वह अपनी इच्छा से हमारे धर्म में शामिल होना चाहें, तो मैं उनसे ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह करूँगा/करूँगी; फिलहाल, भले ही वे रीति-रिवाज गैर-ईसाई हों, वे कानून और उनकी जाति की प्रथा के अनुसार मेरी हैं, जो विधवाओं के विवाह को वर्जित नहीं करती। मुझे उम्मीद है कि आप अपनी पत्नी को इस बारे में बताएँगे, और मुझे आशा है कि समय आने पर मुझे उनकी बधाई मिलेगी। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह सामान्य बदनामी और नूरपुर में इस मामले पर चर्चा करने वाली कुछ महिलाओं (मैं जैडीज़ नहीं लिखूँगा) की राय से परे हैं। आप दोनों को मेरी पत्नी को जानने से पहले यह समझना होगा कि वह वास्तव में कैसी हैं। मैं उनका वर्णन नहीं करने जा रहा हूँ, क्योंकि अभी मैं उनके मन के बारे में जितना जानता हूँ, वह उस ज्ञान के आगे कुछ भी नहीं है जो समय धीरे-धीरे मुझे प्रकट करेगा; और उनकी सुंदरता की बात करें तो, आप, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में इसे देखा है, जानते हैं कि यह कितनी अद्भुत है। श्रीमती मोस्टिन और आपकी बहन के साथ आपके आने की खबर मिलते ही मैं जितनी जल्दी हो सके नूरपुर आऊँगा; लेकिन बेचारे ग्रांट का बकाया इतना अधिक है कि इसे एक दिन के लिए भी अनदेखा नहीं किया जा सकता, और मुझे छुट्टी के बारे में सोचने से पहले इसे ठीक करना होगा। अगर संभव हो तो मैं क्रिसमस पर आपके साथ रहना चाहूँगा, और मुझे उम्मीद है कि सीता की कुटिया तब तक तैयार हो जाएगी। मुझे उम्मीद है कि आप कलकत्ता में नहीं रुकेंगे, इसलिए कृपया मुझे अपनी गतिविधियों की सूचना देने के लिए एक पत्र भेजें।

"श्रीमती मोस्टिन को मेरा हार्दिक प्रणाम और आपकी बहन को मेरी शुभकामनाएँ, यदि मैं उन्हें दे सकूँ, तो विश्वास करें..." आपका स्नेही मित्र, "साइरिट ब्रैनपॉन।" जब यह पत्र कलकत्ता के लिए रवाना हुआ, तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें निहित समाचारों पर नूरपुर में खूब चर्चा हुई होगी। फतेहपुर के नवाब को सबसे पहले यह सूचना मिली, क्योंकि उन्होंने साइरिल ब्रैनपॉन के प्रतिष्ठान के एक कनिष्ठ लेखक को मामूली वेतन पर आयुक्त साहब के शिविर और जीवन की दैनिक घटनाओं का विवरण लिखने के लिए नियुक्त किया था। ये बहुमूल्य अभिलेख देशी दरबारी समाचार पत्रों या 'अख़बारों' के सामान्य स्वरूप के थे और इनमें यह सूचना थी कि "आयुक्त साहब सूर्योदय के समय उठे और शिकार पर गए। वे लौटकर नाश्ता करने के बाद बाबा साहब सेरिश्तदार से मिले और उनसे निजी बातचीत की। कुचेरी सुबह दस बजे खुली और चलती रही।"
नवाब की शिकायत। 17 से पाँच बजे तक, जब कमिश्नर साहब गरीबों की याचिकाएँ सुनने के लिए बाहर दरबार लगाते थे। उसके बाद वे भोजन करने चले गए थे," इत्यादि। ये विवरण प्रतिदिन थोड़े-बहुत बदलते रहते थे, और नवाब अक्सर इनसे ऊब जाते थे; लेकिन उनके समाचार पत्र पढ़ने और लिखने वाले को उनकी पदवी का इतना सम्मान था कि वे एक शब्द भी नहीं छोड़ते थे, और प्रत्येक संदेश को अंत तक ध्यान से पढ़ा जाता था। हालाँकि, सिरिल के विवाह के दिन, शिविर के समाचार पत्र लेखक के पास टिप्पणी करने के लिए एक शानदार विषय था, और उन्होंने निम्नलिखित लिखा, "अख़बार" के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं नवाब को एक याचिका के रूप में, जिस पर "मूनशी साहब, विद्वान सैयद अली द्वारा निजी तौर पर पढ़ा जाए" अंकित था, और उन्होंने इसे एक्सप्रेस द्वारा भेजा:— "उच्च पदस्थ, उच्च प्रतिष्ठा वाले, गरीबों के रक्षक, नवाब दिल खान बहादुर को, उनके दास का प्रणाम, सर्वशक्तिमान के नाम पर। "एक घोर अत्याचार किया गया है, एक गंभीर अन्याय हुआ है, जिसका वर्णन करने में मेरी कलम लज्जित है। अंग्रेजों का वह सम्मान, जिस पर कभी इतना गर्व किया जाता था, अब कलंकित हो गया है और मैला हो गया है। ईश्वर की स्तुति हो और हज़ार धन्यवाद, कि ऐसा कोई अपराध सच्चे आस्तिक की पवित्रता को कभी कलंकित नहीं कर पाया! जब महान नवाब मेरी लिखी बातें पढ़ेंगे, तो उनकी आँखें खुल जाएँगी, उनके कान उत्पीड़ितों की कराहों से भर जाएँगे, उनका जिगर क्रोध से जल उठेगा। आमीन, और आमीन! "शाहगंज के बैंकर नरेंद्र, मेरे स्वामी के बीच एक

उच्च साख और सम्माननीय व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। उनकी एक पोती सीता थी, जो बुद्धिमान और विद्वान थीं। उनकी सुंदरता का वर्णन केवल दुर्लभतम कवि ही कर सकते हैं, और आपका दास इसका वर्णन करने का साहस नहीं करता, कहीं ऐसा न हो कि प्रयास का अहंकार असफलता की निराशा में परिणत हो जाए। उनके पूर्व संबंध क्या थे, यह केवल सर्वज्ञ और वे स्वयं ही जानते हैं।" कल रात शिविर के पास मंदिर में पूजा थी, और ब्रैंडन साहब वहाँ गए और सुंदर सीता को जबरदस्ती ले गए। बैंकर और उसकी बहन उनके पीछे-पीछे चीखते-चिल्लाते और सीना पीटते हुए गए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ: घिनौना काम हो चुका था। शाहगंज में बहुत हलचल है, और बैंकर के लिए बहुत दया है। सुनार सब उत्तेजित हैं, और न्याय की गुहार लगा रहे हैं; लेकिन कौन सुनेगा? भेड़ों की रखवाली करने वाला कुत्ता भेड़िया बन गया है, और उन्हें खा रहा है। "मैं और क्या लिखूँ?" "भयानक! घिनौना!" नवाब चिल्लाया, अपने कानों में उंगलियाँ डालते हुए, जब उसकी मूंजी चिट्ठी पढ़ रही थी। "और मत पढ़ो, मीर साहब; बहुत हो गया। देखो..."

136 सीता। इन अंग्रेजों का घिनौना पाखंड! हर कोई मानता था कि ब्रैंडन साहब यूसुफ की तरह पवित्र और गुणी थे। यहां तक कि इलिनदूस भी उन्हें अपने देवताओं का अवतार कहते थे। अब तुम जान गए हो, मेरे दोस्त, कि वह असल में क्या है। चोर की दाढ़ी में हमेशा तिनका होता है, और अब हम उसे देख रहे हैं। तौबा! तौबा! शर्म करो! शर्म करो! इंशाअल्लाह! मैं इन गरीब लोगों के लिए न्याय दिलाऊंगा; और उन्हें मेरे पास आने दो—मेरे पास!" वह अपनी छाती थपथपाते हुए बोला। "मैं उन्हें न्याय दिलाऊंगा, चाहे इसके लिए मुझे—कलकत्ता जाना पड़े। मुझे उस ब्रैंडन से नफरत है। क्या वह हमेशा मेरे खिलाफ अदालतों के फैसले लागू करने, मेरी जागीरें जब्त करने, मुझे भिखारी बनाने की धमकी नहीं देता रहता? इंशाअल्लाह! अब मेरी बारी है, और न्याय होगा। पहले मैं उसके लोगों को बता दूं और इस पाखंड का पर्दाफाश कर दूं। हां, मेरे दोस्त, मैं ब्रिगेडियर के पास जाऊंगा। मेरे दल-पतियों, मेरी राजसी पालकी को बुलाओ। इंशाअल्लाह, मैं देखूंगा कि इन दिनों में मेरा भी कुछ रुतबा है।" "खुदावुंद, महाराज," नवाब के दीवान के किनारे आदरपूर्वक बैठे सचिव ने उत्तर दिया, "मैं—मैं डरता हूँ।" "किस बात का डर?" दिल खान ने अपनी मूंछें मरोड़ते हुए कहा। "डर! मुझसे डर की बात मत करो।" "भगवान न करे!" सचिव ने विनम्रता से कहा; "लेकिन महाराज पालकी में नहीं जा सकते, क्योंकि कोई कुली नहीं है; वे कल अपने गाँव चले

गए और उन्होंने घोषणा की कि जब तक उन्हें उनका बकाया वेतन नहीं मिल जाता, वे वापस नहीं लौटेंगे।" "अरे हाँ, यह सच है!" नवाब ने आह भरते हुए कहा; "लेकिन हाथी को बुलाओ।" "क्षमा करें," सचिव ने उत्तर दिया; "लेकिन मैंने कल सारथी को कहते सुना कि वह बेचारे हाथी पर हौदा नहीं डालेगा, वह इतना दुबला है।" इसके अलावा, वह उसे नूरपुर से ले जाते हुए नहीं दिखना चाहता, ताकि सारे लड़के उस पर हंस न सकें। "क्या उसने ऐसा कहा? क्या उसने ऐसा कहा?" नवाब गुस्से में चिल्लाया; लेकिन हम पाठक को उन अपशब्दों से बचाना चाहते हैं जो उसने कहे। "उसे तुरंत जानवर को तैयार करने दो, वरना उसकी पीठ पर तब तक कोड़े मारे जाएंगे जब तक उसकी खाल न रह जाए। क्या तुम सुन रहे हो? जाओ और आदेश दो। आज मुझसे खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। क्या मैं न्याय के लिए नहीं जा रहा हूँ, इंशाल्लाह?" "अपने सेवक को बोलने की धृष्टता के लिए क्षमा करें," सचिव ने विनम्रता से कहा और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया; "लेकिन महाराज का शुभचिंतक सोचता है—" "तुम क्या सोचते हो?" नवाब ने अधीरता से कहा; "तुम क्या सोचते हो, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है?" "अगर मैं कहूँ, महाराज, तो बात यह है कि ब्रिगेडियर इस खबर के लिए शायद ही आपका शुक्रिया अदा करेंगे। क्यों न उस शापित को जाने दिया जाए..."

नवाब की शिकायत। "क्या अंग्रेज अपने मामले खुद संभालते हैं और जितना चाहें उतना गंदगी खाते हैं?" नवाब गुस्से से चिल्लाए, "मैं इसे काफिरों के गले में ठूंस दूंगा। जल्दी जाइए, मीर साहब। आदमियों को तैयार कीजिए। मैं अभी यहाँ से जा रहा हूँ।" सचिव ने धीरे से कहा, "लेकिन आदमियों ने कल कहा था कि जब तक उन्हें कुछ वेतन नहीं मिलेगा, उनमें से कोई भी एक कदम भी नहीं उठाएगा।" "अरे, ऐसा है क्या? अच्छा, उन्हें बता दीजिए कि नूरपुर में उन्हें ढेर सारी मिठाइयाँ मिलेंगी—शायद वे ललचा जाएँ," नवाब ने अपने सचिव के जाने के लिए मुड़ते ही कहा। "बेचारे! बेचारे! अगर वे फरमान न होते, तो मैं और उधार ले सकता था; और अज़राकल पांडे मेरी मदद करने के लिए यहाँ नहीं है। मुझे आश्चर्य है कि उसका क्या हुआ होगा? उसे अब तक लौट आना चाहिए था। कोई अंग्रेज नहीं, कोई अंग्रेज नहीं," उन्होंने कहा; "उसका क्या मतलब रहा होगा? अगर अंग्रेज नहीं होते, तो मैं जल्द ही बैंकरों के साथ हिसाब-किताब कर लेता।" तो, तमाम बाधाओं के बावजूद, नवाब ने अपनी पीली साटन की कमीज़ पहनी, कंधों पर शॉल डाली और अपने दल के तैयार होते ही

निकलने के लिए तैयार हो गए। जैसे ही वे अपने हाथी पर सवार हुए, उन्होंने देखा कि उनके राजदंड धारकों के पास राजदंड नहीं हैं, और नवाब दिल खान अपनी दो चांदी की छड़ियों के बिना अपनी गरिमा खो देंगे। "तुम्हारे राजदंड कहाँ हैं?" उन्होंने अपने साथियों से कहा, "जाओ और ले आओ।" उनमें से एक ने बेशर्मी से कहा, "हमने उन्हें भोजन के बदले गिरवी रख दिया है, नवाब साहब; आपके पास पर्याप्त भोजन है, जबकि हम और हमारे बच्चे भूखे मर रहे हैं! "तुम दोनों आगे जाओ," उन्होंने ताने पर ध्यान दिए बिना उत्तर दिया, "कर्नल साहब को मेरा प्रणाम कहना और कहना कि मैं उनसे किसी महत्वपूर्ण कार्य से मिलने आया हूँ।" जैसा कि हम जानते हैं, नूरपुर ज़्यादा दूर नहीं था, और दोपहर से पहले ही ब्रिगेडियर को सूचना मिल गई कि नवाब का काफिला आ रहा है। "अरे, इस आदमी को तो छोड़ो!" उसने अपने स्टाफ ऑफिसर, कैप्टन हिल से कहा, जो अपने प्रमुख के साथ रोज़मर्रा के कामकाज निपटा रहा था, "उसे क्या चाहिए? मुझे उसकी चापलूसी भरी बातें पसंद नहीं हैं, और मुझे शक है कि वह भी मुझे नापसंद करता है; लेकिन मुझे असभ्य होने की ज़रूरत नहीं है। हिल, बेहतर होगा कि तुम रुक जाओ और उसकी खबर सुन लो।" और तभी नवाब आ गया, उसके सेवक उसके सामने ज़ोर-ज़ोर से उसकी उपाधियाँ पुकार रहे थे, और उसका शालीनता से स्वागत किया गया। "तुम्हें कुछ कहना है, कुछ महत्वपूर्ण बात बतानी है?" ब्रिगेडियर ने कुछ अजीब सी चुप्पी तोड़ते हुए कहा; और जैसे ही नवाब अपनी कुर्सी पर बेचैन हुआ, "क्या बात है; क्या मैं आपकी किसी तरह मदद कर सकता हूँ?" दिल खान ने घबराकर कैप्टन हिल की ओर देखा, और फिर
 जो स्थिति को समझ गए थे, ने कुछ घमंड से कहा, "मेरे मित्र कैप्टन हिल से मेरा कोई राज़ नहीं है, और आपको भी नहीं, नवाब साहब; खुलकर बोलिए।" नवाब ने मन ही मन सोचा, "दोनों को धूल चटा दें; क्यों नहीं? मैं उन्हें नहीं छोड़ूंगा।" "अरे, कुछ नहीं हुआ, कुछ खास नहीं, साहब," उन्होंने ज़ोर से कहा। "क्या आपको श्री ब्रैंडन के बारे में कोई खबर है?" "श्री ब्रैंडन? नहीं। क्या आपने कुछ सुना है, टिल? क्या वह डाकुओं द्वारा फिर से घायल तो नहीं हो गए, नवाब साहब?" "नहीं, कर्नल साहब, नहीं, डाकुओं द्वारा नहीं, लेकिन वह घायल हो गए हैं— वह—वह—हो!—इस बार प्यार से, जैसा कि हममें से अधिकांश अपने समय में घायल हुए हैं, साहब, और वह जवान और सुंदर हैं; लेकिन उन्होंने कोई गलत काम नहीं किया होगा—उन्हें एक न्यायप्रिय अंग्रेज होने के नाते यह अत्याचार नहीं

करना चाहिए था! या, अल्लाह!" नवाब ने आंखें और हाथ ऊपर उठाते हुए और ऊंची आवाज में कहा, "मुझे एक अंग्रेज से, उस महान, न्यायप्रिय राष्ट्र के एक व्यक्ति से, जिनके लिए हमारी पत्नियां और बेटियां पवित्र हैं, यह सब सुनना कितना दुखद है।" "क्या कहना है, नवाब?" कर्नल ने गुस्से से फुफकारा। "श्री ब्रैंडन का जिक्र करके आपका क्या मतलब है? सावधान! आप अंग्रेज सज्जनों की सुनने की सीमा से अधिक बोल सकते हैं और सम्मान की सीमा का उल्लंघन कर सकते हैं।" "भगवान न करे!" दिल खान ने श्रद्धापूर्वक कहा। "जो मुझे कहना है, उससे मुझे बहुत दुख होता है, और आपको भी होगा, महोदय। श्री ब्रैंडन ने शाहगंज के बैंकर नरेंद्र की पोती को बहला-फुसलाकर अगवा कर लिया है, जो सर्वत्र आदर और सम्मान का पात्र है। उसने उसे वापस लाने की कोशिश की, लेकिन कमिश्नर के शिविर से उसे पीट-पीटकर निकाल दिया गया, और पूरा देश उसके लिए विलाप कर रहा है।" "यह बिल्कुल असंभव है!" कैप्टन हिल ने कहा, "मैं सिरिल ब्रैंडन को अपने सगे भाई की तरह जानता हूँ, और आपने जो सुना है वह एक धूर्त झूठ है। यह अजीब बात है, नवाब साहब, कि आप, जो खुद को उनके मित्र कहते हैं, ऐसी बात पर एक पल के लिए भी विश्वास कर लें।" नवाब ने विनम्रता से उत्तर दिया, "यह झूठ नहीं है! इंशाल्लाह! मैं झूठ और फरेब में फर्क कर सकता हूँ; और आपको जल्द ही इसकी पुष्टि मिल जाएगी। अगर आप कल बाजार के बैंकरों से पूछेंगे, तो मुझे यकीन है कि वे आपको इसके बारे में बता देंगे। घिनौना!" उन्होंने आगे कहा, "विश्वासघात! क्या आप अंग्रेजों में इस तरह के अत्याचार के लिए कोई न्याय नहीं है? पुराने जमाने में तो होता था, लेकिन अब नहीं।" "चुप रहो!" ब्रिगेडियर ने उन्हें रोकते हुए कहा, "आप भूल रहे हैं कि आप किससे बात कर रहे हैं: यह हद से बाहर है।"

नवाब की शिकायत। 139 a A सम्मान का ध्यान रखें, और बेहतर होगा कि आप चले जाएं, महोदय, इससे पहले कि मैं आपको भूल जाऊं और आपको अपने घर से निकाल दूं। आपको जाने की अनुमति है," वह उठते हुए बोले, "और चले जाओ!" दिल खान उठे और दोनों अधिकारियों को गुस्से से घूरने लगे। "जब अंग्रेज नहीं रहेंगे!" वह अपने दांतों के बीच बुदबुदाए, "जब अंग्रेज नहीं रहेंगे! इस अपमान का बदला लिया जाएगा।" "क्रोधित न हों, कर्नल साहब," वह जोर से बोले, "और अपने विनम्र मित्र को उसकी कठोर भाषा के लिए क्षमा करें; मैंने केवल यह सोचा कि आम अफवाहों से इसे बढ़ा-चढ़ाकर सुनने से पहले आपको इसके बारे में बताना अच्छा

होगा, और मैं जानबूझकर आया था।" "आपने जो भी सोचा हो," ब्रिगेडियर ने रूखेपन से जवाब दिया, "आपको इस तरह की बदनामी लेकर मेरे पास आने का कोई अधिकार नहीं था; आपको बर्खास्त किया जाता है;" और दिल खान चले गए, और उनके हाथी की घंटियों की आवाज शहर की दिशा में सुनाई दी। "हे भगवान!" ब्रिगेडियर ने अपने दोस्त से कहा, "अगर यह सच हो तो क्या होगा? ज़रा सोचो, वह शांत स्वभाव का ब्रैंडन ऐसा कर सकता है, और वह भी ज़बरदस्ती!" "जे.टी इस पर विश्वास नहीं कर सकता और न ही करेगा," कैप्टन हिल ने जवाब दिया। "मुझे यकीन है कि ब्रैंडन हममें से ज़्यादातर लोगों से बेहतर नहीं है; लेकिन किसी भी तरह की क्रूरता या अपमानजनक हरकत पर मैं विश्वास नहीं कर सकता और न ही करूंगा। मैंने उस लड़की के बारे में सुना है। उसने डकैती के मुकदमे में यहाँ गवाही दी थी, और मुझे याद है कि मोस्टिन ने उसकी सुंदरता की इतनी तारीफ की थी कि शायद उसकी पत्नी को सुनना पसंद नहीं आया होगा; और जब ब्रैंडन घायल हुआ था, तो मुझे लगता है कि उस लड़की ने उसकी देखभाल की थी।" "वाह!" ब्रिगेडियर ने सीटी बजाई, "क्या यह 50 है? हे भगवान! वह नवाब शायद सही हो, और ब्रैंडन उसे अगवा कर ले गया हो! वाह! नौजवानों की नादानियों को हम रोक नहीं सकते। मैं बस यही उम्मीद करता हूँ कि उसे अपनी इस शरारत की सज़ा न भुगतनी पड़े, क्योंकि मैं उसे हमेशा से पसंद करता आया हूँ; उसमें कभी भी वह घिनौना नागरिक घमंड नहीं था, चाहे वह माननीय सिरिल ही क्यों न हो। "अपने खून की आखिरी बूंद तक माननीय," दूसरे ने जोश से कहा; "और, जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे इस मामले की एक भी बात पर विश्वास नहीं है। लेकिन आप देखेंगे, थाने की महिलाओं को वह खबर मिल जाएगी जिसे नवाब ने जाहिर तौर पर फैलाने के लिए भेजा है, और यह उनके लिए एक बड़ा घोटाला साबित होगा।" "अच्छा! हमें इन कागजों को निपटाना होगा, हिल। एडजुटेंट-जनरल का पत्र आपके पास है, बस मुझे दे दीजिए," ब्रिगेडियर ने कहा, और सामान्य कामकाज आगे बढ़ा। हालाँकि, कैप्टन हिल सही थे; मामला, चाहे जो भी हो, फैल चुका था, और श्रीमती स्मिथ की आया, जो बाजार से पान खरीदने गई थीं, ने घर आकर अपनी मालकिन को इसके बारे में बताया। पान बेचने वाली, चूड़ी बेचने वाली, दर्जी की पत्नी,

 सीता। सुनार की पत्नी और उसकी सहेलियाँ, सभी एक ही कहानी पर सहमत थीं; और सुनार की पत्नी रो रही थी, क्योंकि नरेंद्र जैसा महान व्यक्ति अपमानित हुआ

था। हाँ, यह सब बिल्कुल सच था; और जैसे ही सभी ने नवाब की कहानी में अपनी-अपनी बातें जोड़ दीं, मामला जल्द ही बहुत बड़ा और यहाँ तक कि खूनी रूप ले चुका था। श्रीमती सिनिथ एक मेहनती महिला थीं। कैप्टन स्मिथ ने तीन बच्चों को घर भेजने के लिए आगरा बैंक से पैसे उधार लिए थे; और उत्तराधिकार में अस्थायी विराम होने के कारण, श्रीमती स्मिथ अकेली थीं। क्या वह खुद का गुजारा कर सकती थीं, या स्मिथ के सहारे, जो एक शांत और मेहनती किस्म का आदमी था, जो हमेशा बड़ी-बड़ी फारसी और हिंदी शब्दकोशों में डूबा रहता था, या नाक से बोलने वाले किसी पंडित से विटुल पुचेस्से या प्रेम सग्त्र के बारे में बातें करता रहता था? स्मिथ जल्द ही एक उच्च स्तरीय परीक्षा देने की योजना बना रहा था, और उसे किसी सरकारी या राजनीतिक पद की उम्मीद थी; और उन्होंने कभी अपनी पत्नी के कामों में दखल नहीं दिया, न ही उन्होंने उनके कामों में। मैंने कहा है कि वह मेहनती थीं, लेकिन एक खास तरह से। उन्हें कभी सिलाई करते नहीं देखा गया, वह ज्यादा पढ़ती भी नहीं थीं, और स्टेशन लाइब्रेरी में उपन्यास बहुत पुराने थे। उनमें कोई हुनर नहीं था, और उन्होंने थोड़ा-बहुत जो संगीत सीखा था, उसे भी भुला दिया था; क्योंकि जैसा कि उन्होंने कहा, 'बच्चों ने मुझे अभ्यास करने से रोक दिया था।' इसलिए, इन कामों की कमी के कारण, श्रीमती स्मिथ ने अपने पड़ोसियों के मामलों का अध्ययन करने में खुद को लगन और दृढ़ता से लगा दिया, और उन्हें इसमें पूरी तरह से सफलता मिली। यह सच है कि नूरपुर में कोई घोटाला नहीं था, और न ही वहाँ के सुस्त और नीरस लोगों के बीच ऐसी कोई बात थी। 'पहाड़ियों जैसा कुछ नहीं था, मेरी प्यारी; वहाँ ऐसी बातें सुनने को मिलती थीं;' लेकिन कम से कम यह पता लगाना सुखद था कि कसाई से सबसे अच्छे मांस के टुकड़े किसे मिलते हैं; किसने इंग्लैंड से एक नई टोपी, या पोशाक का एक नया पैटर्न (जिसे वह 'मस्टर' कहती थी) मस्टर्ड, या गैरीबाल्डी का भेजा हुआ कपड़ा मंगवाया था; कैप्टन जोन्स ने कल अपनी पत्नी से झगड़ा क्यों किया था और सुलह क्यों नहीं की थी; ब्राउन परिवार ने अपने खानसामन को क्यों निकाल दिया था - वे तो हमेशा अपने नौकर बदलते रहते थे; किसने उनके लिए विशेष रूप से बेर का केक बनवाया था; या नवाब से किसे फलों की थाली मिली थी, और क्यों? शायद मुझे इस महिला की इन विचित्र जाँचों को और आगे बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये मेरे पाठकों की पसंद से कहीं अधिक गंदी जगहों तक पहुँच गई थीं। हालाँकि, कहीं भी उसकी मेहनत में कोई कमी नहीं थी; और उसकी आया और सफाईकर्मी में अथक

सहायक थीं, जिन्हें समय-समय पर मिलने वाले छोटे-मोटे उपहारों से काम करने की प्रेरणा मिलती थी, और निस्संदेह उन्होंने, कम से कम हम यही उम्मीद कर सकते हैं, नवीनतम विवरणों में से बहुत कुछ मनगढ़ंत बनाया होगा। तो फिर, यह नया घोटाला कितना आनंददायक था! कितना सच्चा और
नवाबों की शिकायत... ये तो कितना संयोगवश लग रहा था! श्रीमती होम बगल वाले परिसर में रहती थीं, और दोनों घरों के बगीचों से होकर एक निजी रास्ता जाता था। श्रीमती स्मिथ ने तुरंत अपना छुट्टा उठाया और अपनी सहेली के पास दौड़ पड़ीं। मिस लूसी दिन भर टिल्स के साथ बिताने गई थीं, और शाम को एक पार्टी भी थी, इसलिए वो वहाँ नहीं थीं। डॉक्टर अपने दफ्तर में थे, और श्रीमती होम अकेली थीं। "ओके, मेरी प्यारी," उन्होंने बेडरूम में प्रवेश करते हुए कहा, जहाँ श्रीमती होम मच्छरदानी के पर्दों के नीचे शांति से लेटी हुई थीं, "मेरे पास तुम्हें सुनाने के लिए एक बहुत ही मजेदार कहानी है, और वो बिल्कुल सच है। मारिया को बुला लेना"—ये श्रीमती जोन्स थीं। "जब तक वो नहीं आतीं, मैं एक शब्द भी नहीं बोलूँगी।" हालाँकि, उसने यह सब कुछ मैट्रन के आश्चर्य से भरे कानों को बता दिया, और थोड़ी देर बाद श्रीमती जोन्स को भी यह बात दोहराने का उसे बड़ा आनंद मिला। हम इन सहेलियों की आपस में हुई बातों को बिना शर्मिंदगी के सुन या रिकॉर्ड नहीं कर सकते थे, इसलिए बेहतर यही था कि पर्दा खींच लिया जाए; लेकिन श्रीमती होम के अंतिम शब्द, जो सिसकते हुए और अपने आँसू पोंछते हुए सुनाई दिए, वे थे: 'शर्मनाक—शर्मनाक! और मैंने—मैंने—ऐसा सोचा था—कि वह लूसी को पसंद करता है। क्या आपको बॉल की रात याद नहीं है?' और क्योंकि पर्दा मुझे और सुनने से रोकता है, इसलिए बेहतर यही होगा कि मैं इस अध्याय को यहीं समाप्त कर दूँ। लेकिन नूरपुर में नवाब के मिशन का परिणाम यह हुआ कि स्टेशन की मैट्रन ने श्री सिरिल ब्रैंडन के खिलाफ एक सामूहिक गठबंधन बना लिया, और उन्हें अपने समाज से बाहर करने का निश्चय कर लिया। मुझे नहीं लगता कि हिल और पादरी को छोड़कर बाकी पुरुषों को इसकी ज़्यादा परवाह थी; और उन दोनों ने यह खबर सुनी—जैसे ही यह पता चला कि स्कॉटा वास्तव में श्री ब्रैंडन के साथ थी, और एक बड़ी रकम जोड़ी जा रही थी। उनके घर जाना—दिल को बहुत छू लेने वाला था। हालाँकि, मामला इस बात पर निर्भर करता प्रतीत होता था कि मोस्टिन परिवार इस मामले को किस नज़रिए से देखता है—कि सिरिल ब्रैंडन का सभी लोगों द्वारा किस प्रकार स्वागत किया जाएगा; और उनके आने तक, लोग "संबंध" पर, जैसा

कि श्रीमती स्मिथ ने इसे नाम दिया था, अत्यंत स्पष्ट और नेक आक्रोश के साथ चर्चा करते रहे। श्रीमती होम ने श्रीमती स्मिथ से कहा, "वह हमारे बीच फिर से कैसे आ सकता है, मेरी प्यारी?" और श्रीमती स्मिथ और श्रीमती जोन्स— नूरपुर की श्रीमती ग्रुंडी का प्रतिनिधित्व करने वाली तीनों सहेलियों—ने एक ही बात दोहराई, "वह कैसे आ सकता है?"

142 सीता. अध्याय XIX. एक समीक्षा. अफ़गान युद्ध की समाप्ति के बाद, बंगाल की देशी सेना में काफी असंतोष प्रकट हुआ। खैबर दर्रे का नरसंहार अभी भी लोगों को बुरी तरह याद था, और अवध और बहार के लोग अंग्रेज़ सरकार को कबूल से दयनीय वापसी में मारे गए हज़ारों परिवारों के नुकसान और तबाही के लिए ज़िम्मेदार मानते थे। यदि इससे सेवा में तैनात अधिकांश सैनिकों पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा कि वे शिकायत या विद्रोह का आधार बन सकें, तो एक और मुद्दा था जो उनके मन में प्रतिदिन अत्यंत महत्वपूर्ण होता जा रहा था; एक ऐसा मुद्दा जो समय के साथ और ब्रिटिश सत्ता के बढ़ते प्रभुत्व के साथ बढ़ता गया। बंगाल के सिपाही अब तक, कुछ मामूली अपवादों को छोड़कर, केवल भारत में और मुख्य रूप से उन प्रांतों में ही तैनात थे जहाँ उनके घर थे। यह सच है कि वे उतने ही उत्साह से अफगानिस्तान में दाखिल हुए थे जितना राजपूत मुगल सम्राट अकबर के समय में हुए थे, और वह परंपरा अभी भी कायम थी; लेकिन यह एक अस्थायी और असाधारण सेवा थी, जिसके लिए उन्हें पर्याप्त वेतन मिला था, और यह माना जाता था कि ऐसा दोबारा नहीं होगा। हालाँकि, 1843 में सिंध ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बन गया था, और पहले यह तय किया गया था कि बंगाल से देशी सैनिकों को वहाँ तैनात किया जाएगा। इसलिए, पंजाब की सीमा पर स्थित रेजिमेंटों में से कुछ को इस कार्य के लिए चुना गया; और उनमें से एक, चौंसठवीं रेजिमेंट, जब दक्षिण की ओर मार्च कर रही थी, तो उसने युद्ध वेतन की मांग को लेकर विद्रोह कर दिया। सैनिकों को लगा कि उनके अनुबंध के अनुसार, उनके लिए एक विदेशी भूमि में, बढ़े हुए वेतन के ठोस इनाम के बिना सेवा करना उचित नहीं था; और सेना भर में अपने सभी साथियों की सहानुभूति के तहत, चौंसठवीं रेजिमेंट ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अंततः, अपने कर्नल द्वारा किए गए एक अनुचित वादे पर भरोसा करते हुए, उन्होंने कूच किया और सिंध पहुँचे, जहाँ उन्हें सच्चाई का पता चला। तब उन्होंने फिर से विद्रोह किया; लेकिन बाद में लखनऊ में पश्चाताप किया, और केवल विद्रोह के प्रमुख लोगों को ही दंडित किया गया। इसी

तरह की भावना और उद्देश्य वाला विद्रोह उसी वर्ष पंजाब सीमा पर तैनात चौंतीसवीं रेजिमेंट का था। गहरे असंतुष्ट इस विद्रोह में वफादारी के प्रति कोई स्वीकृति या संभावना नहीं थी: और उन्हें मेरठ ले जाया गया, जहाँ देशी अधिकारियों और सैनिकों, दोषी और निर्दोष दोनों को, एक सार्वजनिक परेड में, उनकी वर्दी उतारकर फेंक दिया गया।

एक समीक्षा। - 143, बदनामी के साथ भटकते हुए, उस उपद्रव से भी कहीं अधिक उपद्रव का कारण बने जो पहले से ही व्याप्त था। उस समय कई लोगों ने इस कृत्य की बुद्धिमत्ता पर सवाल उठाए, जैसा कि बाद के वर्षों में भी हुआ; लेकिन अधिकारियों ने यह निर्णय लिया था कि देशी सेना में अनुशासन लागू करना अत्यंत आवश्यक था, और कुछ समय के लिए चौंतीसवीं रेजिमेंट का भाग्य वांछित उद्देश्य को पूरा करता हुआ प्रतीत हुआ। रेजिमेंट का क्या हुआ, यह कोई नहीं जानता था, या शायद किसी को जानने की परवाह भी नहीं थी; सैनिकों पर न तो नज़र रखी गई और न ही उनका पता लगाया गया, और ऐसा प्रतीत हुआ कि वे उस विशाल जनसंख्या में गुम हो गए जिससे वे संबंधित थे। हालाँकि, एक के बारे में हम जानते हैं; एक बेचैन, प्रतिशोधी आत्मा, जो बारह वर्षों तक देश भर में घूमता रहा, जहाँ भी गया, अपनी रेजिमेंट का प्रभाव फैलाता रहा, ऐसी कुशलता और दृढ़ता के साथ जो किसी बेहतर उद्देश्य के योग्य थी। मेरठ की घटना के तुरंत बाद, अज़राएल पांडे बुंदेलखंड के जंगलों में चले गए थे। इसके बाद हुए स्थानीय विद्रोह में वह एक नेता बन गया था; बाल-बाल पकड़ा गया था; और यद्यपि सैनिकों द्वारा उसका हमेशा स्वागत किया जाता था और उसकी वाचन प्रतिभा का भी उसे समर्थन प्राप्त था, फिर भी काली से प्रतिज्ञा लेकर वह उस डाकू नेता के रूप में उभरा जिसका वर्णन इस कहानी में मिलता है। इस व्यक्ति ने पंजाब का भ्रमण किया, जहाँ 1849 और 1850 में विद्रोह की भावना व्याप्त थी, जिसे बड़ी मुश्किल से दबाया गया था और जो 1844 की स्थिति के समान थी। तब वह एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन, एक रेजिमेंट से दूसरी रेजिमेंट में संदेश और पत्र लेकर जाता रहा, सभी को प्रेरित करता रहा, उकसाता रहा और प्रोत्साहित करता रहा। वह दिल्ली, उम्बाला और मेरठ भी गया, जहाँ उसे हर जगह वही भावना मिली; लेकिन, जहाँ कई लोग एकमत थे, वहीं अधिकांश लोग हिचकिचाते रहे और पीछे हटते रहे। कहीं भी कोई आम सहमति नहीं थी और न ही कोई निश्चित उद्देश्य था। सभी के बीच सवाल केवल धन का था; कि क्या वास्तव में उन्हें पंजाब में सामान्य वेतन पर सेवा

करनी चाहिए या युद्ध भत्ते की मांग करनी चाहिए और उसे प्राप्त करना चाहिए। यदि वह विद्रोह के लिए संयुक्त आंदोलन का आह्वान करता, तो वरिष्ठ अधिकारी सिर हिलाकर उसे समझाते कि कुम्पानी बहादुरों का नमक अभी भी मीठा है, और जब तक वह उनके मुंह में कड़वा न हो जाए, वे इंतजार करेंगे। दिल्ली दरबार की अधिकांश छोटी-मोटी साजिशें उसे ज्ञात थीं; लेकिन उनके साथियों में उनके प्रति कोई रुचि या सहानुभूति नहीं थी, और इसलिए पंजाब का उत्साह धीरे-धीरे शांत होता प्रतीत हुआ। रेजिमेंटें बारी-बारी से आईं और सामान्य रूप से चली गईं; और, छियासठवीं रेजिमेंट के विघटन के उदाहरण के बाद, आगे के विद्रोह का विचार समाप्त होता प्रतीत हुआ। जब अजराइल पांडे नूरपुर से भागा, तो उसने अपने पुराने रास्ते अपना लिए; क्योंकि वह सिपाहियों के बीच व्यावहारिक रूप से अधिक सुरक्षित था।

144 SLETA. देश के अन्य हिस्सों की तुलना में। फिर वह मेरठ, दिल्ली और अन्य बड़े शहरों की ओर गया और अपने मित्रों से उत्साहपूर्वक सुना कि असंतोष, जो कुछ समय के लिए शांत प्रतीत हुआ था, पहले से कहीं अधिक प्रबल हो गया है; और उसने शीघ्र ही यह भी जान लिया कि सुलगती हुई आग को भयंकर प्रलय में बदलने के लिए बस एक साँस की आवश्यकता थी जो पूरे देश को अपनी चपेट में ले लेगी। क्या वह इस मामले में अकेला था? बिलकुल नहीं। वह जहाँ भी गया, उसने अपने समान सक्रिय और गंभीर अन्य लोगों को पाया; जो यदि ठीक उसी उद्देश्य के लिए नहीं, तो कम से कम उसी दिशा में काम कर रहे थे। उसने पाया कि सामान्य ब्राह्मण पुरोहित अपने धर्म को खतरे में डालने वाले खतरों के प्रति तेजी से जागरूक हो रहे थे और धर्म प्रचार के सक्रिय प्रचारक बन गए थे। उसने मुसलमानों के बारे में सुना जो अधिक साहसी विचारों के साथ अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने, मुस्लिम संप्रभुता की पुनर्स्थापना और अपने धर्म की शुद्ध अभिव्यक्ति के लिए साधन संगठित कर रहे थे; लेकिन ऐसे स्रोतों से कोई वास्तविक सहायता नहीं मिल सकती थी। ब्राह्मण राजद्रोह का प्रचार कर सकते थे, लेकिन वे जनता को जागृत नहीं कर सकते थे; मुसलमान दिल्ली की गद्दी को पुनः स्थापित करने का लक्ष्य रख सकते थे, लेकिन इससे हिंदुओं को कोई राहत नहीं मिलती; बल्कि शायद इसका उल्टा ही होता। यदि दोनों मिलकर, जिसकी कोई संभावना नहीं थी, विद्रोह भड़काने में सफल भी हो जाते, तो अपने ही देशवासियों को लूटने पर तुली असभ्य भीड़ क्या कर सकती थी? जब तक उसके पुराने साथी अब तक खाए गए नमक के प्रति वफादार थे, वह जानता था कि कोई भी

विद्रोह बढ़ने से पहले ही कुचल दिया जाएगा। इसलिए, अंग्रेजों का कोई भी विनाश उन लोगों के संयुक्त प्रयासों पर निर्भर था जिनसे वह संबंधित था, जो अब, जैसा कि उसका मानना था, हर जगह उस संकल्प पर पहुँच रहे थे जो परिणाम को निर्विवाद बना देगा। हर जगह, नए आंदोलन के एजेंट उमड़ते हुए प्रतीत हो रहे थे। सैकड़ों—नहीं, हजारों हो सकते थे—उसी की तरह व्यस्त थे। कुछ उसके चौंतीसवें रेजिमेंट के पुराने साथी थे, अन्य छियासठवें रेजिमेंट के सैनिक थे, जो भंग हो चुकी थी; फिर से, सेना और लोक सेवा से मुक्त हो चुके असंतुष्ट लोग, और देशद्रोही राजाओं और नवाबों के एजेंट, जोगी, बैरागी, फेरीवाले—ये सभी मिलकर एक विशाल समूह बना रहे थे। क्या यह संभव था कि उनके द्वारा बोए गए बीज फल न दें? पुराने असंतोष वास्तव में समाप्त हो गए थे, और उनका प्रभाव भी खत्म हो गया था; लेकिन उनकी जगह कहीं अधिक शक्तिशाली और उत्तेजक असंतोष ने ले ली थी। जैसे-जैसे वह पूर्व की ओर यात्रा करता गया, उसे असंतोष की एक ऐसी लहर का सामना करना पड़ा जो केवल असंतोष ही नहीं थी, बल्कि पूर्ण आतंक का रूप ले चुकी थी, जो बंगाल से उठकर पूरे देश में दूर-दूर तक फैल रही थी। उसने केवल एक ही पुकार सुनी, "अपवित्रता!" न केवल हिंदुओं में बल्कि मुसलमानों में भी। सच है, अभी तक कुछ भी निश्चित नहीं था, लेकिन भय का माहौल बना हुआ था।

अज़राएल पाण्डे. 145 अस्तित्व में था, और उसकी प्रगति के हर कदम पर बढ़ता जा रहा था। पुजारी, व्यापारी, कारीगर, किसान और सैनिक—सभी समान रूप से प्रभावित थे। यह एक भयानक यंत्र था; लेकिन उसके उद्देश्य के लिए इससे अधिक प्रभावी कोई नहीं हो सकता था। अपवित्रता का आतंक हर जाति के हर लिंदू और सभी मुसलमानों के मन में समान रूप से भयावह रूप से घर कर गया। अपवित्रता से बचा नहीं जा सकता था; इसका कोई उपाय नहीं था। इसने साहसी और डरपोक दोनों को प्रभावित किया; और यहाँ तक कि सबसे डरपोक भी इस नए और संभावित खतरे के प्रभाव में साहसी हो गए। 'अब जो उत्तेजना व्याप्त थी, वह पहले की किसी भी उत्तेजना से अलग और अधिक तीव्र थी। क्या वह समय आ गया था जब अंग्रेज, इस नई तानाशाही के रचयिता और योजनाकार, नष्ट हो जाएँगे—एक विशाल जन उपद्रव में नष्ट हो जाएँगे, जिससे कोई बच नहीं सकता? ठीक से नहीं आया था, और शायद बहुत निकट था; और 1914 के भयानक संवत की वह भविष्यवाणी, जिसकी ओर सभी एक समान दृष्टि से देख रहे थे और जिस पर सभी विश्वास करते थे, शायद पूरी

हो जाए। मुझे लगता है, और आशा है, कि बीते वर्षों की कुछ घटनाओं के इस संक्षिप्त अवलोकन को क्षमा कर दिया जाएगा; क्योंकि मेरे पाठकों के लिए यह आवश्यक है कि वे किसी न किसी रूप में उस समय की भावना और मिजाज को समझें जो इस कहानी से संबंधित है, और उन अनेक लोगों के इरादों को भी समझें जो उन घटनाओं में शामिल थे जिन्होंने इतिहास में एक यादगार स्थान बना लिया है, और भविष्य में लिखने वाले प्रत्येक भारतीय इतिहासकार द्वारा उनका अनुसरण किया जाएगा। लेकिन इस पुस्तक में इतिहास को दर्ज करना मेरा उद्देश्य नहीं है। मैंने पहले ही पाठक के सामने कुछ पात्रों को प्रस्तुत कर दिया है जो अपनी भूमिका निभा रहे हैं, और जैसे-जैसे कथानक आगे बढ़ेगा, अन्य पात्र भी सामने आएंगे। अध्याय XX. अज़राएल पांडे। 10 नवंबर, 1856 की रात को, कलकत्ता के पास बैरकपुर में तैनात चौंतीसवीं नेटिव इन्फैंट्री की "पंक्तियों" में एक बैठक हुई। जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में उल्लेख किया है, पुरानी चौंतीसवीं रेजिमेंट को 1844 में मेरठ में भंग कर दिया गया था; और वर्तमान रेजिमेंट, जिसका गठन कुछ वर्षों बाद हुआ था, ने अपने पूर्ववर्ती रेजिमेंट की परंपराओं को काफी हद तक बरकरार रखा। अज़िउएल पांडे अधिकांश सैनिकों को जानते थे; उन्होंने सेना के कई स्टेशनों पर उनके प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी। वे पहले भी कई बार उनसे मिलने जा चुके थे, और वे जानते थे कि वे उस नए उद्देश्य के प्रति वफादार थे जिसमें इतने सारे लोग शामिल हुए थे। वे एक तेज़ यात्रा के बाद कलकत्ता पहुँचे थे।

146 सेहेता। यात्रा के दौरान, वह अपने साथ कई रेजिमेंटों के पत्र और संदेश लाए थे, जिन्हें पहले ही रुचिपूर्वक पढ़ा जा चुका था। उस रात उन्हें कलकत्ता से फिर से प्रस्थान करना था; और उन्हें विदाई देने और उनके अंतिम निर्देश और सलाह सुनने के लिए एक अंतिम मुलाकात का आयोजन किया गया था। भारत में सिपाही रेजिमेंट की "पंक्तियाँ" मानो गाँवों का रूप धारण कर लेती हैं, जिनमें घरों या झोपड़ियों के बीच चौड़ी सड़कें होती हैं, जो सभी एक ही प्रकार की होती हैं। इनमें एक पर्याप्त आकार का कमरा होता है, जिसे आवश्यकता पड़ने पर विभाजन द्वारा विभाजित किया जा सकता है; दीवारें मिट्टी या धूप में सुखाई गई ईंटों से बनी होती हैं, और छतें फूस की होती हैं। प्रत्येक कंपनी की अपनी अलग पंक्ति या क्षेत्र होता है; और प्रत्येक व्यक्ति का अपना घर होता है, सिवाय इसके कि जब एक ही जाति के दो लोग एक साथ रहना चाहें। ये "पंक्तियाँ" आम तौर पर पेड़ों से भरी होती हैं, और देखने में सुंदर और

आरामदायक लगती हैं। देशी कमीशंड और गैर-कमीशंड अधिकारियों के घर सैनिकों के घरों से बेहतर होते हैं, और कुछ मामलों में उनके लिए अलग बाड़े या बगीचे भी होते हैं। चौंतीसवीं रेजिमेंट के अंतर्गत आने वाले इन अलग-अलग घरों में से एक, जो अब बैठक का स्थल था, रेजिमेंट के एक जोमादार (स्थानीय लेफ्टिनेंट) का था, जिसके साथ मुंगुल पांडे, उसका चचेरा भाई और अजराएल का भतीजा, जो रेजिमेंट में एक सिपाही था, रहता था। उसने रात में धार्मिक ग्रंथों के पाठ के लिए और "रोशनी और गायन" की अनुमति के लिए आवेदन किया था, जो असामान्य नहीं था और जिस पर किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया था। अजराएल पांडे पाठकर्ता था, और पाठ देर रात तक चलता रहा। एक-एक करके श्रोता चले गए, और केवल वे ही रह गए जो एक विशेष उद्देश्य से आए थे। जोमादार ने कमरे में चारों ओर ध्यान से देखा कि कहीं कोई ऐसा व्यक्ति तो मौजूद नहीं है जिसे गुप्त सूचना न हो, और यह सुनिश्चित करने के लिए बाहर गया कि सब सुरक्षित है; और वापस अंदर आकर, उसने सावधानीपूर्वक सभी बत्तियाँ बुझा दीं, सिवाय एक छोटे से दीपक के जो एक आले में जल रहा था, और यदि वह बाहर से दिखाई भी देता, तो भी किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करता। फिर उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया और कहा, “भाइयों, अब हम खुलकर बात कर सकते हैं; अज़र्देल पांडे हमें बताएं कि उन्होंने क्या सुना है और वे हमसे क्या करवाना चाहते हैं। उनके पास इकट्ठा हो जाओ, ताकि उन्हें अपनी आवाज ऊंची न करनी पड़े।” वहाँ लगभग बीस आदमी थे, लंबे और मजबूत, जैसे अवध और बहार के लोग हमेशा होते हैं; सुंदर, सुडौल चेहरे और गोरी चमड़ी वाले, बीते युगों के आर्य योद्धाओं के वंशज। वे सभी चौंतीसवीं रेजिमेंट के नहीं थे, क्योंकि स्टेशन पर अन्य रेजिमेंट भी थीं जिन्होंने सलाह लेने और व्यवस्था करने के लिए प्रतिनिधि भेजे थे। ये सभी लोग अब मिट्टी के फर्श पर एक साथ बैठ गए; और उनके शिक्षक, अज़र्देल पांडे, अज़राएल पांदे. 147 कमर तक नग्न, सिर खुला, लंबे, मुलायम, लहराते बाल कंधों पर बिखरे हुए, और माथे, छाती और भुजाओं पर उनके धर्म के पवित्र चिह्न चित्रित, उनके ऊपर एक ऊंचे आसन पर बैठा था, जिस पर उसका मेज़बान आमतौर पर सोता था। दीपक की रोशनी टिमटिमा रही थी और कमरे में अजीबोगरीब, बदलती हुई परछाइयाँ बना रही थी, और कभी-कभी उस पर चमकती हुई पड़ती थी, जिससे उसका चौड़ा, मांसल शरीर दिखाई देता था और उसके कठोर, जंगली चेहरे की चमक उभरती थी; लेकिन उसके सामने बैठे लोगों के चेहरे गहरे साये में थे: और उनके चेहरे

इतने ढके हुए थे कि उनमें से केवल उनकी चमकती आँखें ही दिखाई दे रही थीं, जब वे अपने शिक्षक के भाषण के सबसे रोमांचक हिस्सों में एक-दूसरे की ओर मुड़ते थे।
"भाइयों!" जब सब चुप और शांत थे, तब उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारे लिए अनजान नहीं हूँ। पुराने चौंतीसवें में मैंने जो भूमिका निभाई, वह तुम भली-भांति जानते हो, और मुझे तुम्हें याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने उसके बाद क्या किया, यह तुम नहीं जानते; परन्तु बारह वर्षों तक, जहाँ कहीं भी मुझे फिरंगी सत्ता के विरुद्ध प्रहार करने का अवसर मिला, मैंने ऐसा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जहाँ कहीं भी मैंने अपने लोगों में संकोच, संदेह या लालच देखा, मैंने उन्हें उपदेश दिया, आग्रह किया, उनसे विनती की कि वे अतीत को न भूलें, बल्कि अपने सम्मान और अपनी जाति के लिए एकजुट रहें, उस समय में जिसके आने की बात पवित्र माता काली ने मुझे बताई थी। मैंने स्थान-स्थान भटकते हुए भूख-प्यास, गरीबी और थकावट सहन की है। मुझ पर मुकदमा चला और मुझे मृत्युदंड दिया गया: और मुझे अपवित्रता में फाँसी दी जाती, यदि वह बेचारा जो तुम्हारे बीच बैठा है, जिसने अपनी जान जोखिम में डालकर मेरी जान न बचाई होती। एक गोसाईं के रूप में, एक बैरागी के रूप में, एक जोगी के रूप में, एक तीर्थयात्री के रूप में जो अपने कंधों पर गंगाजल ढोता है। सैकड़ों मील—एक ब्राह्मण के रूप में, जो मेरे सामने इन पवित्र ग्रंथों का पाठ कर रहा है, मैंने देश के कोने-कोने की यात्रा की है। मैंने मेलों, बाजारों और पवित्र तीर्थस्थलों में भाग लिया है। मैं महान राजाओं और नवाबों का भी सम्मानित अतिथि रहा हूँ; और—हे भाइयों, सुनो!—मैंने केवल एक ही पुकार सुनी है—जनता की आत्मा से निकली पुकार—अंग्रेजों से मुक्ति! "ऐसा क्यों है? सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ। हममें से कौन ऐसा है जिसने यात्रा के दौरान, किसी भी पवित्र नदी में कदम रखते ही, 'जय गंगा माता!' और फिर 'जय कूम्पनी बहादुर!' की पुकार नहीं लगाई? ऐसे ही नारों के साथ हमारे पूर्वज युद्ध में गए और हजारों विजय प्राप्त कीं। लेकिन वह समय बीत चुका है। 'कूम्पनी' अब वैसी नहीं रही जैसी पहले थी; वह अब हमारे देवताओं का अवतार नहीं रही। वह एक नीच, धोखेबाज लुटेरे में बदल गई है, जो इंग्लैंड सरकार से हमारे इस महान हिरण को लूटता है और उससे सब कुछ छीन लेता है। वे विशालकाय जहाज कपास, नील और रेशम कहाँ ले जाते हैं?
 गरीब किसानों ने बहुत कुछ पैदा किया, लेकिन इंग्लैंड को? क्या वे बदले में हमें कुछ देते हैं? नहीं! कुछ नहीं, सिवाय उसके जो हमें खरीदना पड़ता है, और वह

भी बहुत महंगे दामों पर; और पुराने मुगलों ने भी हमारे नमक और अफीम पर कर नहीं लगाया। जब 'कूम्पनी' राजकुमार थे, तब हमने उनकी सेवा की; और उनके लिए निष्ठा और सम्मान के साथ अपना खून बहाया। वे हमारे पिता और माता थे। लेकिन अब?— सुनो उन्होंने क्या किया है। "तीन साल पहले मैं नूरपुर में था। राजा, जो मुझ पर मेहरबान थे, का निधन हो गया। उनके अंतिम संस्कार के लिए किसी को भी अनुमति नहीं दी गई, और उनकी आत्मा अब नरक में भटक रही है। फिर अंग्रेजों ने उनके राज्य पर कब्जा कर लिया, उनकी संपत्ति, यहाँ तक कि उनकी पत्नियों के कपड़े और गहने भी जब्त कर लिए; और ये सब, उनके घोड़े, हाथी, उनके बैल, सब नीलाम कर दिए गए, और 'कूम्पेंस' ने पैसा ले लिया। आगे सुनो। उसी वर्ष झांसी के राजा का निधन हो गया, एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपने किले पर अंग्रेजी झंडा फहराया था। उन्होंने अपने छोटे से राज्य को अपने वंशजों के लिए अंग्रेजों के भरोसे छोड़ दिया था; लेकिन उन्होंने उस पर खुद कब्जा कर लिया और उसे अपने कब्जे में रखा। पश्चिम में उन्होंने सत्तरा पर कब्जा कर लिया, और शिवजे का परिवार भिखारी बन गया है। खैर, ये सब राजकीय कार्य थे, और दूर के लोगों से संबंधित हैं। आपने उनकी आहें और चीखें मेरी तरह नहीं सुनी हैं; और उन्हें सुनने दो। लेकिन प्रभुत्व का लालच तुम्हारे करीब आ गया है। यह तुम्हारे करीब आ गया है। अंत में अवध में हमारे घर, जहाँ हमारे लोग हजारों वर्षों से स्वतंत्र रूप से रहते आए हैं; और अवध नागपुर और झांसी की तरह फिरंगी बन गया है। क्या यह सब सच नहीं है, और क्या इसका बदला लेना आवश्यक नहीं है? "बड़बड़ाओ मत," उन्होंने उत्तेजित पुरुषों पर हाथ फैलाते हुए कहा। 'वह समय आ गया है—नहीं, यह आ गया है—जब तुम मेरे साथ 'जय अलई' चिल्ला सकते हो, और अपने हाथों को अंग्रेजों के गर्म खून में धो सकते हो। बड़बड़ाओ मत, मेरे बेटों, बल्कि सुनो। क्या मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है? नहीं, अगर ऐसा होता, तो इन राज्यों के नुकसान से तुम्हें कोई चिंता नहीं होती। जिन्होंने इन्हें खोया है वे रो सकते हैं और विलाप कर सकते हैं, लेकिन इससे तुम्हारी तनख्वाह के एक रुपये या तुम्हारी जमीन के एक गज पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा। 'अंग्रेज इतने बुद्धिमान हैं कि वे इनमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे। लेकिन क्या अब और कुछ नहीं बचा है? मैंने दो दिन पहले ही धुरमा सुभा की सभा में लोगों को क्या कहते सुना था? मैंने कालेचे के मंदिर में ब्राह्मणों को क्या कहते सुना था, जब मैं आज वहाँ पूजा करने वाले लोग आपस में और हम अजनबियों से क्या कहते हैं? 'यहाँ फिर कभी मत आना!' वे

चिल्लाए। 'नए भगवान साहब का आदेश आ गया है कि सभी हिंदुओं को ईसाई बनना होगा, क्योंकि इंग्लैंड की रानी ने ऐसा ही निश्चय किया है। फिर कभी मत आना!' वे मुँह और छाती पीटते हुए चिल्लाए; 'आज—किसी भी दिन—पवित्र मंदिर अज़राएल पांडे। 149 जिस माता की हम सेवा करते हैं, वह गाय के रक्त से अपवित्र हो सकती है!' आह, हाँ; वे बुद्धिमान वृद्ध पुजारी इस पर विश्वास करते थे, तो हम क्यों न करें, मेरे पुत्रों?" फिर धीमी, कर्कश आवाज़ में फुसफुसाहट हुई, 'हमने सुना है: हम इस पर विश्वास करते हैं!' "हाँ," उन्होंने आगे कहा, "तुम इस पर विश्वास करते हो, क्योंकि अन्याय तुम्हारे स्वयं के हाथों में आ रहा है। लेकिन और सुनो। हम सैनिक यह महसूस करते थे कि हम समुद्र पार जाने से सुरक्षित हैं। अब मैं हर ओर निराशा की आह सुन रहा हूँ कि तुम अब सुरक्षित नहीं हो; कि जब आदेश आएगा, तो तुम्हें उस काले पानी को पार करना होगा, जो जाति के सभी निशानों को मिटा देता है। तुममें से प्रत्येक जो अब मुझे सुन रहा है—प्रत्येक ब्राह्मण और राजपूत जिसने आज रात मुझे सुना—सेना में सेवा करने वाले दसियों हज़ारों—को जाना होगा—कल जाना होगा, यदि भगवान साहब की इच्छा हो—समुद्र पार। यदि तुम संयोगवश इस भाग्य से बच जाते हो, तो तुम्हारे पुत्र नहीं बच सकते। जो भी व्यक्ति अब सेना में भर्ती होता है, उसे गंगा जल और पवित्र औजारों की कसम खानी पड़ती है, ताकि वह अपनी जाति का विनाश सुनिश्चित कर सके! यह कितना घिनौना मजाक है! फिर भी वे तुम सबको, जवान और बूढ़े, जाने के लिए कहेंगे, वरना वे तुम्हें अपनी तोपों से उड़ा देंगे। "तुम चुप क्यों हो? तुमने यह सब क्यों सहन किया? यह आदेश लगभग आधा साल पुराना है, फिर भी तुमने कुछ नहीं किया! तुम्हारा सम्मान कहाँ है, तुम्हारी जाति कहाँ है? क्या मैं ब्राह्मणों और राजपूतों से बात कर रहा हूँ, या अछूत म्लेच्छों और चमड़ा कारीगरों से? क्या यह बात तुम्हारे दिलों तक नहीं पहुँचती? जब तुम जेल से लौटोगे, क्या तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हें गले लगाएंगी? क्या वे तुम्हारे बच्चों को तुम्हारी गोद में देंगी? क्या तुम्हारे बलवान पुत्र तुम्हें अपने घरों में प्रवेश देंगे? मैं तुमसे कहता हूँ, वे ऐसा नहीं करेंगी, वे ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेंगी! वे तुमसे कहेंगी, 'चले जाओ! तुम अपवित्र हो गए हो।' वे तुम्हें एक प्याला पानी भी नहीं देंगी, चाहे तुम प्यास से मर रहे हो। वे तुम्हारी ओर देख भी नहीं सकतीं; वे तुम पर चिल्लाएँगी, 'तुमने अपनी जाति खोकर कायरता दिखाई, इससे अच्छा तो तुम मर ही जाते!' "अरे हाँ!" वह अपने होठों से झाग पोंछते हुए चिल्लाया; "तुम वहाँ तड़प सकते हो, बड़बड़ा सकते हो और रो सकते हो; लेकिन

आप, जो ब्राह्मण हैं, जानते हैं कि यह सच है, ठीक वैसे ही जैसे मैं, एक ब्राह्मण, जो आपको यह बता रहा हूँ। लेकिन सुनिए, मुझे अभी और भी कुछ कहना है। क्या मैं आपको डराने के लिए मनगढ़ंत कहानियाँ बना रहा हूँ? नहीं। अंग्रेज जो करते हैं, उसे वे फैलाते हैं कि सब जानते हैं; और देखो, मेरे पुत्रों, हिंदू धर्म और पवित्रता की नींव को खोखला करने के लिए उनके हथकंडे कितने घिनौने हैं। अब कानून आ गया है कि हिंदू विधवाएँ दोबारा शादी कर सकती हैं—ब्राह्मण, षष्ठी, शूद्र सभी!—सोचो, आप में से कोई भी, अगर आपकी विधवा किसी दूसरे पुरुष से शादी कर ले तो आपकी इज्जत कहाँ रहेगी?

150 सीता। क्या वह पुराना आदर और प्रेम, जिसने सती प्रथा द्वारा जीवन की भक्ति को मुहरबंद किया था, अब भी कायम रहेगा? अब, हर स्त्री, जो चाहे, वेश्या की तरह नया पति ले सकती है। इस पर तरस खाओ: इस पाप पर विचार करो! भाइयों! वह कांपते हाथों को फैलाए और आँखों में चमक लिए रोया, "तुम्हारी पत्नियाँ अब ऐसी ही हैं, तुम्हारी माताएँ या बहनें ऐसी ही हैं, क्योंकि अंग्रेजों ने उन्हें ऐसा बना दिया है। मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि इस जाति ने मुझे बचा लिया, मेरी जाति तो वर्षों पहले ही मर गई, और मेरा कोई बच्चा नहीं है जिसे अपवित्रता सहनी पड़े। ऐसे भी समय थे जब ब्राह्मण और राजपूत अपनी पत्नियों के दिलों में तलवारें और भाले घोंप देते थे, जब उन्हें अपमान का जरा सा भी संदेह या भय होता था। जब मैं राजपूतों के बीच घूम रहा था, मैंने कई पुरानी लोकगीत सुनीं जिनमें ऐसी बातें बताई गई थीं—क्योंकि वे यादें कभी मिटती नहीं—और मैं उन्हें तुम्हें सुना सकता था; लेकिन नहीं! तुम उन्हें महसूस नहीं कर सकते: तुम मर चुके हो—इज्जत के लिए मर चुके हो—शर्म के लिए मर चुके हो—अपने धर्म के लिए मर चुके हो! तुम्हारी कोई जाति नहीं है, तुम उन लोगों के विचारों या सम्मान को कैसे समझोगे जो अब भी इसे धारण करते हैं? क्या तुम चुप हो?" वे चुप थे, क्योंकि अधिकतर सिसक रहे थे, कुछ अपने दांत पीस रहे थे, और मुश्किल से साँसें ले रहे थे। "मेरे बेटों, मैं बस कुछ और शब्द कहना चाहूंगा," उन्होंने आगे कहा; "और तुम इस आखिरी अपमान को मुझसे बेहतर जानते हो। ये नई बंदूकें क्या हैं जो तुम्हारे बीच भेजी गई हैं? क्या पुरानी बंदूकों ने अंग्रेजों के लिए पूरे हिंद को नहीं जीता था? अपने पूर्वजों के खून से, जो स्वेच्छा से बहाया गया था, उसे जीता था। क्या हमारे हजारों लोग खैबर में बर्फ और ठंड के बीच नहीं मरे थे—जिनका खून बदला लेने के लिए पुकार रहा है? क्या ये लोग अपने जमे हुए हाथों में पुरानी

बंदूकें लिए नहीं मरे थे? पुराने समय में, हमें इनके लिए गायों और सूअरों की चर्बी की जरूरत नहीं थी: हमारी भुजाएँ इतनी मजबूत थीं कि हम जिन कारतूसों का इस्तेमाल करते थे, उन्हें ठोक सकते थे, और हमारी गोलियाँ तब भी उतनी ही घातक थीं जितनी ये; भला कौन उनका सामना कर पाया? अब, फिरंगियों को नए कारतूस और नई बंदूकें चाहिए, जिनके लिए गायों और सूअरों की चर्बी की जरूरत होती है। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसमें कोई मतलब नहीं है, कोई तर्क नहीं है। हिंद में लड़ने के लिए कौन बचा है? हम, अवध और बहार के लोगों ने, सिखों से भी सब कुछ जीत लिया है। हाँ, देखो भाइयों! सिख और गोरखाओं को चर्बी से कोई आपत्ति नहीं है, और वे हजारों-हजारों की संख्या में तुम पर टूट पड़ेंगे, तुम्हें तोपों से उड़ा देंगे, या तुम्हें घर भेज देंगे जहाँ तुम अपना चेहरा ढककर औरतों की तरह रोओगे। इसलिए हथियार बदलने की कोई ज़रूरत नहीं है; लेकिन यह निश्चित है कि एक बार इन चर्बी से सने कारतूसों को छूने और चबाने के बाद, बेहतर होगा कि तुम तुरंत पादरी साहब के पास जाओ और बपतिस्मा ले लो। बेचारे! तुम्हारी कोई जाति नहीं बचेगी, और गंगा माता का सारा जल भी तुम्हारी अशुद्धता को नहीं धो पाएगा। फिर क्या अर्थ होगा यदि तुम सबको एक साथ भोजन कराया जाए, जैसे कि
अज़राइल पांडे। 151 श्वेत सैनिक ऐसा करेंगे? और फिर तुम्हारे पास गायों और सूअरों की चर्बी बहुतायत में होगी, और ईसाई और म्लेच्छक तुम्हारा खाना पकाएँगे। जेलों में पहले से ही इस बारे में आदेश जारी हो चुका है, और तुम कैदियों से बेहतर क्या हो? इन अंग्रेजों ने धरती पर जंजीरें डाल दी हैं। दिल्ली तक लोहे की सड़कें और लोहे के तार बिछे हुए हैं, और अब पेशावर तक जा रहे हैं, धरती और उसके लोगों पर। जब वे सिंधु नदी तक पहुँचेंगे, तो तुम्हारे लोग भी उनके पीछे-पीछे आएँगे। तुम और तुम्हारी जाति, जो हिंदुओं की रक्षा करते, अब हिंदू नहीं रहोगे, बल्कि ईसाई गुलाम बन जाओगे—उनकी रक्षा करने में असमर्थ! “भाइयों, रोओ मत, विलाप मत करो! यह रोने का समय नहीं है। उठो! दृढ़ रहो! प्रहार करो! अपनी इज्जत, अपने धर्म और अपनी जाति की रक्षा के लिए। जब अंग्रेज नहीं रहेंगे, तब तुम आज़ाद हो जाओगे। मेरी तरह बनो, जिसने आज काली माता के सामने यह प्रतिज्ञा की है कि प्रत्येक फिरंगी पुरुष, स्त्री या बच्चा मरेगा, और वह उनका खून चाटेगी। ओह! मैं उसे बहुत सारा खून पिलाऊँगा, और वह मीठा होगा—मीठा!—क्योंकि वे उसके सबसे बड़े दुश्मन हैं। कुछ मत बोलो!” उसने उसी फुफकारते और उपहास भरे लहजे में बोलना

जारी रखा, जिस लहजे में उसने पुरुषों को संबोधित किया था। “मैं तुम्हारे दिलों को जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो। लेकिन एक काम करो। अगर तुम मर्द हो, अगर तुममें अब भी आस्था और जाति है, तो अपने हाथ एक दूसरे के ऊपर रखो, और इन किताबों को छुओ!” और पुरुष अपने पैरों पर खड़े हो गए और उसने जैसा कहा था वैसा ही किया। “अब शपथ लो,” अज़राइल ने गंभीरता से कहा, “इस पवित्र गीता की, गाय के पाँचों उत्पादों की, और मेरी कसम, कि जब समय आएगा, तुम और तुम्हारे प्रतिनिधि, अपने धर्म के लिए लड़ोगे! तुम मृत्यु के अंतिम क्षण तक भी कारतूस नहीं उठाओगे और समुद्र पार नहीं जाओगे!” “हम शपथ लेते हैं!” पुरुषों ने कर्कश फुसफुसाहट में उत्तर दिया, “जय काली माता, हम मृत्यु तक तुम्हारे प्रति वफादार रहेंगे!” “शाबाश, मेरे पुत्रों!” अज़राइल ने आगे कहा; “माता हम सबकी शपथों में हमारी सहायता करेंगी। अब उनके अंतिम शब्द सुनो: ‘सावधान रहो! संकेत की प्रतीक्षा करो! किसी भी मूर्खतापूर्ण जल्दबाजी से इसे पहले मत करो, जो हम सब पर विनाश लाएगी। यह थोड़े समय के लिए ही है; अंग्रेज बहुत संकट में हैं, उनका देश छोटा है, और उनके पास कम सैनिक हैं। वे अभी यूरोप में रूसियों के साथ युद्ध में हैं, और फारस में युद्ध में हैं, और जल्द ही चीन में भी युद्ध होगा। उन्हें भारत से और अधिक सैनिक भेजने होंगे, और उनके पास पहले से ही सामान्य संख्या के आधे भी नहीं हैं, फिर भी वे हम पर भरोसा करते हैं। हा! हा! हा! अच्छा! अगर उन्होंने अपना पुराना विश्वास बनाए रखा होता तो वे ऐसा सुरक्षित रूप से कर सकते थे! अब प्रस्थान करो: मैं कानपुर, आगरा, दिल्ली, अंबाला जाता हूँ; गोकुल तुम्हारे पत्रों के साथ दीनापुर जाएगा। यहाँ जो कुछ भी हुआ है, उसे सेना के प्रत्येक शिविर को सावधानीपूर्वक लिखो; और

152 SLETA. जब संबट 1914 शुरू होगा, तो संकेत में ज़्यादा देरी नहीं होगी। अब जाओ! मैं अपने भाई के बेटे, मुंगल पांडे को तुम्हारे साथ छोड़ रहा हूँ; उसका वैसे ही ख्याल रखना जैसे अपने किसी बेटे का। फिर वे लोग चुपचाप एक-एक करके उसके पास से गुज़रे, आदरपूर्वक उसके चेहरे को अपने हाथों से छुआ, फिर अपने माथे और सीने को, और इस तरह दरवाज़े से निकलकर रात के अंधेरे में चले गए। भोर होने से पहले ही, अज़रील पांडे उठे और अपने मेज़बान और भतीजे से विदा ली, उनसे वफ़ादार रहने का अनुरोध किया, और उत्तरी ट्रेन में अपनी जगह लेने चले गए, उन लोहे की जंजीरों वाली सड़कों में से एक पर जो भारत को बांधने और उसके लोगों को

गुलाम बनाने वाली थीं! “माँ! रुको, बस थोड़ा रुको,” वह कलकत्ता की ओर हाथ बढ़ाते हुए बुदबुदाया, “और तुम्हें खून मिलेगा।” अध्याय XXI, एलिसियम। सेक्टा पर धीरे-धीरे खुलने वाला वह नया और धन्य जीवन कैसा था! ‘प्रेम करना और प्रेम पाना, जीवन में एक ऐसे साथी के साथ हिस्सेदारी रखना जो उसकी रक्षा करने में सर्वशक्तिमान हो, अपने पति के विश्वासपात्र में शामिल होना, और यह महसूस करना कि उसने अपने शासित लोगों की समृद्धि और सुख बढ़ाने के उनके प्रयासों में सहयोग दिया! साथ ही, यह दृढ़ विश्वास होना कि उनके उच्च पद ने उनके अपने पद को भी असीम रूप से बढ़ाया है, और समय के साथ—क्योंकि यह विचार अभी उनके मन में धुंधला ही था—जो लोग अब उनका आदर करते हैं, वे भविष्य में उनकी स्मृति को आशीर्वाद देंगे! यह उनके लिए एक नया जन्म था, और वह आभारी थीं, बहुत आभारी। यदि, अपनी असीम खुशी के बीच, कभी-कभी ऐसे विचार आते जिनसे वह कांप उठतीं—कि उनके पति का स्पर्श अपवित्र है, कि वह उनके लोगों में से नहीं हैं; कि दूर के अजनबी उन पर दावा कर सकते हैं और उन्हें उनसे छीन सकते हैं—तो वे विचार केवल एक क्षण के लिए ही होते, और उनकी एक उज्ज्वल मुस्कान, एक उत्साहवर्धक शब्द, यह आश्वासन कि वह उनके प्रति सच्चे हैं, उनकी आत्मा के लिए एक प्रेमपूर्ण मरहम की तरह आते, और वह संतुष्ट और प्रसन्न हो जातीं। यदि वह पहले से ही सुंदर थी, तो इस नए जीवन ने उसे और भी अधिक सुंदर बना दिया था; उसके गालों की लाली, उसकी कोमल, भावपूर्ण मुस्कान की आनंदमय चमक, उसके व्यवहार की पूर्ण भक्ति, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता था, ने सिरिल ब्रैंडन को संतुष्ट कर दिया कि न केवल उसे उसका प्रेम प्राप्त है, बल्कि उनके बीच कोई संकोच भी नहीं है; उसकी बढ़ती बुद्धि को पूर्ण रूप से विकसित होने और उसकी स्वयं की प्रकृति की तीव्र इच्छाओं को संतुष्ट करने से रोकने वाली कोई चीज नहीं है। एलिसियुन 153 शिविर में उनका जीवन सुखमय था। सेक्टा अपने साथ केवल एक ही नौकरानी, अपनी बूढ़ी भीमी को लाई थी, जिसने बचपन से ही उसकी देखभाल की थी और कभी उसका साथ नहीं छोड़ा था। अब वह कुछ कमजोर और बहरी थी, लेकिन फिर भी वह अपने साधारण कार्य करने में सक्षम थी; और यद्यपि उसे अपने प्रियतम के एक अजनबी से विवाह को लेकर कुछ आशंकाएँ थीं, फिर भी वह सिरिल से अभ्यस्त हो गई थी, जो हमेशा उसके लिए मधुर शब्द बोलता था, और वह इस बात से संतुष्ट थी कि वह सेक्टा से बहुत स्नेहपूर्वक प्रेम करता है। दिन के समय, सेक्टा

शिविर में नहीं रहती थी; गाँव के सुनार के घर में उसके लिए हमेशा रहने की व्यवस्था होती थी, चाहे वे कहीं भी हों, जहाँ वह पारिवारिक पूजा में शामिल हो सकती थी और अपने ही जाति के लोगों द्वारा तैयार किया गया सादा भोजन खा सकती थी। दिनभर वह एकांत में बैठी रहती, किताबें पढ़ती, समय-समय पर आने वाली महिलाओं की गपशप सुनती, उनके बच्चों के साथ खेलती, गरीबी और कष्ट की कई कहानियाँ सुनती और सिरिल द्वारा उपलब्ध कराए गए प्रचुर साधनों को उपहारों में बाँटती, जिनसे दुखी हृदयों को प्रसन्नता मिलती और वह स्वयं प्रसन्न होती। शाह गुंजो से निकलने के बाद शुरुआती दिनों में, सिरिल ने उसे किसी भी बहाने से याचिकाकर्ताओं को स्वीकार न करने और अन्याय की झूठी कहानियों पर ध्यान न देने की चेतावनी दी थी, क्योंकि उनका निपटारा केवल उसके अपने दरबारों में ही हो सकता था। वास्तव में, ऐसा करने का प्रयास किया गया था; लेकिन जिस घमंडी तिरस्कार के साथ इसे ठुकरा दिया गया, उससे यह प्रयास दोबारा नहीं किया जा सका। बूढ़े सेरिश्तादार को सेक्टा पर गर्व होने लगा और उसने सिरिल को बताया कि वह कितनी वफादार और समझदार है, और जहाँ भी जाती है, उसे कितना प्यार और सम्मान मिलता है। उसने कहा, "एक दिन वह आपसे भी अधिक लोकप्रिय होगी, और उसने लोगों के दिलों को आपसे इस कदर जोड़ दिया है कि मैं बता नहीं सकता। यह चापलूसी नहीं है, महोदय; यह सच है।" सीता हर दोपहर कितनी बेसब्री से सिरिल की पालकी का इंतज़ार करती थी, जो उसे उसके पास ले जाने वाली थी! पालकी उस घर के आँगन में रखी होती थी जहाँ वह होती थी, और वह उसमें प्रवेश करके दरवाज़े बंद कर लेती थी, फिर पालकी निकालकर उसे तेज़ी से शिविर तक ले जाया जाता था; और दिन का काम खत्म होने पर, वह अपने पति को उसका इंतज़ार करते हुए पाती थी; या, अपने तंबू से थोड़ी दूरी पर उससे मिलकर, वे अपने साथी, स्काई टेरियर नस्ल के कुत्ते मफ के साथ, साथ में टहलने निकल जाते थे। सिरिल अक्सर उससे मज़ाक में कहता था कि वह जल्द ही एक मुसलमान की तरह बिल्कुल एकांतवासी हो जाएगी, और वह मानती थी कि अब वह किसी साधारण गाँव के सुनार की पत्नी नहीं, बल्कि कमिश्नर साहब की पत्नी है, जिनका सभी आदर करते थे, और अगर हो सके तो उसकी ओर देखते भी नहीं। एक गाँव के सुनार की पत्नी! और अपने पति के भाग्य के कारण ही ऐसा नहीं हुआ, वह आज भी वैसी ही रहती। ऐसे में, उसकी किताबों ने भी उसके लिए क्या-क्या खुलासे किए होते, क्या-क्या बदलाव आ सकते थे?

154 सीता। अपनी मृत्यु तक? साधारण घरेलू कर्तव्यों और चिंताओं का जीवन, गोकुलपुर से परे दुनिया का कोई ज्ञान नहीं। उनके बच्चे हो सकते थे, लेकिन जीवन में कोई बदलाव नहीं आता; वह इसे बदलना नहीं चाहती थीं। कोई भी परिवर्तन असंभव होता। अब, कितना बड़ा अंतर था! उनकी सभी इंद्रियाँ कैसे जागृत हो रही थीं! उन्हें कितनी तीव्रता से एहसास हो रहा था कि अपने सारे किताबी ज्ञान के बावजूद, वह वास्तव में कितना कम जानती थीं; यहाँ तक कि उनके पुराने शिक्षक, जिन्हें वह सर्वज्ञानी समझती थीं, उनके पति की तुलना में कितना कम जानते थे! क्योंकि सिरिल धीरे-धीरे, और लगभग अगोचर रूप से, उनके मन को अपने ज्ञान के स्रोतों की ओर ले जा रहे थे। उन्होंने उन्हें अपने देश के बारे में बताया, अपने घर और उन विदेशी भूमि का वर्णन किया जहाँ वे गए थे, और जहाँ वह किसी दिन उनके साथ जा सकती थीं, यदि वह चाहतीं—किसी दिन, जब वे बूढ़े हो जाते। वह उनकी उपलब्धियों पर, उनके द्वारा बनाए गए उनके रेखाचित्रों पर कितना आश्चर्यचकित थीं, जिन्हें बनाने से वे कभी नहीं थकते थे; और वास्तव में, उनके सौम्य और सरल व्यवहार में हमेशा कुछ नया और सुंदर होता था जो उन्हें प्रभावित करता था। फिर लोगों के चित्र थे, गाड़ियों और बैलों के, गांवों और मंदिरों के; उनके दरबार के पात्रों के मोटे-मोटे स्याही से बने रेखाचित्र थे, और एक खुद का चित्र था, जब उन्होंने पहली बार गवाही दी थी, अपने हाथ फैलाए हुए, अपनी साड़ी पकड़े हुए— जिसे देखकर उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे; और मंदिर था, शिविर था, छोटी पहाड़ी के नीचे स्थित शाहगंज था, उनका घर था, और शिविर की ओर देखने वाली खिड़की थी। शायद पहले तो उन्हें ये चित्र पूरी तरह समझ नहीं आए; लेकिन जल्द ही उन्हें समझ आने लगे, और वे सोचने लगीं कि क्या वे कभी इनके जैसा कुछ बना पाएंगी। शायद बना भी लें, क्योंकि उनके दादाजी अक्सर उन्हें अपने नक्काशीदार काम के लिए पैटर्न बनाने के लिए कहते थे; और सिरिल की थाली का डिज़ाइन भी उनका ही था। धीरे-धीरे, संगीत के बारे में उनका ज्ञान भी उनके लिए एक और आश्चर्य की बात बनकर सामने आया। जब वे नूरपुर में थे, सिरिल ने कभी भी संगीत को नहीं छोड़ा, और अपने पियानो के अध्ययन को जारी रखा, जैसे वे इतालवी और फ्रेंच का अध्ययन करते थे; लेकिन शिविर में उनके पास केवल एक गिटार था, और शायद उन्हें आश्चर्य हुआ होगा जब शाम को दरवाजे के पर्दे हटाए जाने पर उन्होंने उसे उठाया होगा, यह देखकर कि उनके नौकर बाहर तंबू के चारों ओर इकट्ठा होकर उनकी मधुर, सुरीली आवाज को विस्मय से सुन रहे थे। और

इस तरह सीता भी उनकी आवाज सुनने आई थीं। उनका अपना ज्ञान, भले ही सीमित था, उन्हें उनके द्वारा गाए गए मधुर गीतों को सबसे अधिक महसूस करने और सराहने के लिए प्रेरित करता था, जो अक्सर उन्हें रुला देते थे—सुखद, कोमल आंसू, उनके दिल में उमड़ते प्यार से, जिसे नकारा नहीं जा सकता था। मैं यह भी जानता हूँ कि सीता अक्सर शाम के काम में सिरिल की एक भरोसेमंद साथी थीं। वह कार्यालय के अधिकांश लेखकों की तरह ही आसानी से स्थानीय भाषा के समाचार पत्र पढ़ सकती थीं, और कई अनुवाद किए गए थे।

एलिसियम। | 155 वह पढ़ रही थी और वह अंग्रेजी में लिख रहा था, जो उसे उतना श्रमसाध्य नहीं लगता था जितना कि किसी ऊंघते हुए क्लर्क का पढ़ना, जिसमें वह अक्सर पूरे अनुच्छेद छोड़ देता था। ये दोनों विचित्र रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए प्राणी कभी निष्क्रिय नहीं रहते थे: कभी भी एक भी घंटा नीरस नहीं बीतता था; और यद्यपि वह अक्सर दिन के काम से थका हुआ होता था, उसकी शाम की साथी सिरिल को नई ऊर्जा और जीवन देती थी, उसे तरोताज़ा करती थी और उसका इतना मनोरंजन करती थी जितना वह लगभग सोच भी नहीं सकता था। यदि वह धैर्यवान न होता, तो शायद उसके तीव्र और सक्रिय चिंतन ने उसे थका दिया होता; लेकिन उसका प्रयास लड़की के मन में जागृत हो रही ज्ञान की प्यास को उत्तेजित करने के बजाय निर्देशित और नियंत्रित करना था। 'वह जीवन भर के लिए मेरी है,' वह सोचा करता था, 'और इन सभी विचित्र गुणों को निखारने और उन्हें आकार और अभ्यास में ढालने के लिए पर्याप्त समय है। मुझे सावधान रहना चाहिए कि मैं उसे बहुत अधिक उत्तेजित न करूँ।' पुराने संस्कृत पाठ से यह भी एक बदलाव था, जब वह उन्हें इतालवी और अंग्रेजी कवियों की रचनाएँ पढ़कर सुनाते थे और यथासंभव उनका अनुवाद करते थे, यह जानते हुए भी कि मूल रचनाओं की शक्ति और सुंदरता को शब्दों में व्यक्त करना कितना असंभव था, फिर भी वह देखते थे कि वह हर कोमल विचार, हर उपमा जो उनकी प्रेमपूर्ण भावनाओं से मेल खाती थी, और प्राकृतिक सौंदर्य के हर वर्णन की कितनी गहराई से सराहना करती थीं। एक शाम उन्होंने कहा, “ओह, अब मैं जानती हूँ कि जब प्रेम होता है, तो वह यहाँ और वहाँ एक समान होता है; कम से कम हमारे कवियों के समय में तो ऐसा ही होता था। अब, यहाँ ऐसा प्रेम मृत है, सिवाय तुम्हारे।” उन्होंने उत्तर दिया, “बताओ सीता, तुमने इसे पहली बार कब महसूस किया? क्या तुम्हें मुझसे मिलने से पहले कोई प्रेम नहीं था?” उन्होंने दृढ़ता से कहा, “बिल्कुल नहीं!

जो मर गया उसने मुझे प्रेम से नहीं जीता; उसने प्रेम माँगा नहीं, और मैंने इसे महसूस नहीं किया। इफो ने एक बार कहा था, एक वेश्या से प्रेम किया जा सकता है, पत्नी से नहीं।" उसका प्रेम उसके व्यापार और धन से था: यही उसका जीवन था, जैसे उसके जैसे सभी लोगों का होता है। मैंने प्रेम के बारे में कभी सुना ही नहीं था; मैंने किताबों में इसके बारे में पढ़ा था, लेकिन मेरे भीतर इसका कोई विचार नहीं आया। क्या आपको 'मालती और महादेव' का नाटक याद है? वह तो प्रेम ही है, आप जानते हैं; और वह कितना सुंदर है! अब मैं इसे समझ सकती हूँ। फिर भी मैं ऐसे अंश बिना किसी भावना के पढ़ती थी:— प्रेम सूक्ष्म विष की तरह हर नस में फैलता है, और हवा में भड़कती आग की तरह, इस कमजोर शरीर को भस्म कर देता है,—अदम्य बुखार हर रेशे पर हमला करता है। इसका प्रकोप घातक है! अब, मैं इसे तब नहीं समझ पाई थी। आह, शायद आप मुझे मूर्ख समझेंगे, पतिदेव: लेकिन बाद में मैं बेचारी मालती जैसी हो गई:—

156 सीता। उसके मन में बस एक ही विचार है, और वह अभी भी अपने प्रेम में डूबी हुई है। उसके वस्त्र ढीले हैं, उसके कोमल होंठ कांप रहे हैं—आँखों से आँसू बह रहे हैं —उसका हृदय धड़क रहा है, आह ही, उसकी गहरी आँखें कोमल भावविभोरता में, अत्यंत सुस्त तैर रही हैं। उसकी हर नज़र और हावभाव उन प्रेम भरी इच्छाओं को बयां करते हैं जो उसकी युवावस्था को झकझोर रही हैं। "जे.टी. खुद को रोक नहीं पाई, सिरिल, लालू के जीवित रहते भी; और जब वह मर गया, आह! तब कितना भयानक था, और मैं अपना दुख किसे बताती? आंटी एला को? ओह नो! उन्होंने कभी प्रेम नहीं जाना, एक बच्चे का प्रेम भी नहीं; और उन्होंने मुझे बताया है कि उनके पति अक्सर उन्हें मारते थे। इसलिए मैंने तुम्हारे आने तक इसे सहने की कोशिश की।" * और मान लो कि मैं दूर चली गई होती, बहुत दूर, और कभी बात ही न की होती, सीता? "मुझे मर जाना चाहिए था, और किसी को मेरे दर्द का पता भी नहीं चलता। मैं अक्सर मौत के सपने देखती थी; और जब मैं खिड़की पर बैठकर तुम्हारे तंबू ढूंढती थी, तो मेरी आत्मा धुंधली, दूर जगहों में जाती हुई प्रतीत होती थी, और फिर मेरे पास लौट आती थी। मैं सोचती थी कि एक दिन वह मेरे शरीर में वापस नहीं आएगी, और उसे ले जाकर जला दिया जाएगा; और वे कुछ समय के लिए अपनी छोटी सी स्केटा को याद करेंगे, और मेरे सभी पालतू जानवर मुझे याद करेंगे, और फिर वे भी मर जाएंगे— मौसी इल्ला, और बूढ़ा आदमी, और सब हमेशा के लिए शांति में आ जाएंगे। और

तुम, सिरिल, तुमने मुझसे कब प्यार किया?" "नहीं, सेक्टा," उसने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी ही किताबों से तुम्हें जवाब दे सकता था; लेकिन मुझे नहीं लगता कि तुम कुछ ज़्यादा समझ पाओगी। मैंने अपना चुनाव इसलिए किया क्योंकि मुझे लगा कि मैं तुम्हें तुम्हारे अपने लोगों से ज़्यादा समझता हूँ। मैं आया, गया, और फिर आया: और मैंने हमेशा के लिए जाने की कोशिश भी की; लेकिन मैं नहीं जा सका, और इसलिए—और मैं तुम्हारे साथ यहीं हूँ, मेरी प्रियतमा, और तुम मुझे हर दिन और भी प्यारी होती जा रही हो। और तुम मुझ पर भरोसा करती हो, सेक्टा? तुम क्यों रो रही हो?" "हाँ, मैं तुम पर भरोसा करती हूँ," उसने गंभीरता से उत्तर दिया। "ये आँसू तो बस खुशी के हैं, और जब मेरा दिल भर आता है तो मैं इन्हें रोक नहीं पाती। तुम पर भरोसा? क्या तुम्हें वह प्यारी कहानी याद नहीं जो मैंने तुम्हें सावित्री की सुनाई थी, जिसने अपने पति के साथ मृत्यु को गले लगाया था? तुम मुझे उतने ही प्यारे हो जितने सत्यवान उसे थे; और अगर मेरे साथ भी वही होता जो सावित्री के साथ था, तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ती। क्या तुम्हें लगता है कि मैं छोड़ देती?" उसने अपना हाथ उसकी बांह पर रखते हुए और अपनी विनती भरी निगाहें उसकी ओर उठाते हुए कहा। "शायद किसी दिन मेरी भी परीक्षा हो, और तब तुम सीता पर विश्वास करोगी।" "चुप रहो!" उसने अपना हाथ सीता के मुँह पर रखते हुए कहा। "मैं तुम पर विश्वास करता हूँ, पत्नी, वरना मैं उन्हें तुम्हें मुझे सौंपने के लिए नहीं कहता; * एच. एच. विल्सन का अनुवाद।" एलिसियम... 157 लेकिन हम जवान हैं, और साथ-साथ बूढ़े होने की उम्मीद कर सकते हैं—क्या ऐसा नहीं हो सकता?" "मुझे नहीं पता," उसने स्वप्निल स्वर में कहा। "कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि मेरी आत्मा मुझसे दूर चली जाती है और तुम्हें छोड़ देती है; और यह बेहतर होगा बजाय इसके कि मैं तुम्हारे चले जाने पर भी थोड़ी देर के लिए रुकी रहूँ। मुझे लगता है—मुझे लगता है, सिरिल, कि मैं बहुत खुश हूँ, और तुम मेरे प्रति बहुत अच्छे हो। तुम कभी-कभी मेरी मूर्खता पर गुस्सा क्यों नहीं होते? ओह, तुम अभी मेरे पास हो, और मैं खुश हूँ—ओह, कितनी खुश हूँ!" मुझे इन दृश्यों पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। ये तो बस उस पुरानी कहानी के अंश हैं, जिसकी लय में अनगिनत बदलाव आते हैं, और जो दिल से दिल और होंठ से होंठ तक, उन सभी जिंदगियों में चलती रहती है जहाँ लोग प्यार करते हैं, जब तक कि दिल ठंडे और होंठ खामोश न हो जाएँ! मुझे और भी बातें करनी हैं, और मुझे उनके जीवन के इस मीठे, सुखद समय पर अधिक समय नहीं बिताना चाहिए।

क्रिसमस नजदीक आ रहा था, और सिरिल मोस्टिन परिवार के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा था, जिसके बारे में वह जानता था कि जल्द ही नूरपुर में उनका स्वागत होगा। उसे अपने मित्र से अपने पत्र के उत्तर में केवल एक ही पत्र मिला था, जो पहले ही दर्ज किया जा चुका था, और वह इस प्रकार था:— "बेनार्क्स, 25 नवंबर, 1856। "मेरे प्रिय सिरिल,— "मैं कलकत्ता से तुम्हें पत्र नहीं लिख सका। किसी न किसी तरह से इतना काम था कि मुझे अपने लिए एक पल भी नहीं मिला; और तुम्हारे पत्र की विषयवस्तु पर बहुत विचार-विमर्श करना पड़ा। मैंने तुम्हारे लिखे हुए पर बार-बार विचार किया है; और सचमुच, आप मेरे विचारों से शायद ही कभी दूर होते हैं। आपने जो कुछ भी इतने सम्मानपूर्वक और खुले दिल से किया है, उसके लिए मैं आपकी दृढ़ता की जितनी भी प्रशंसा करूं कम है। कोई और रिश्ता आपके लिए शोभा नहीं देता, और मुझे उस पर बहुत दुख होता। फिर भी, प्रिय मित्र, मैं यही चाहता हूँ कि काश ऐसा न हुआ होता, और आप और सीता कभी मिले ही न होते। यह विवाह इतना विचित्र, इतना असामान्य है कि हमारे कुछ परिचित लोग, जिन्हें आप जानते हैं, इसके बारे में हज़ारों बुरी बातें कहेंगे। मुझे यकीन है कि आप उनकी परवाह नहीं करेंगे; लेकिन वे बातें होंगी, और उनसे पार पाने के लिए आपको अपने पूरे मन की शक्ति और धैर्य की आवश्यकता होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी पत्नी वैसी ही हैं जैसा आपने लिखा है; लेकिन हम सबके भले के लिए, मैं यही चाहता हूँ कि वह एक अच्छी अंग्रेज़ लड़की होती, जो दुनिया के कामों में और आपके जीवन के सुख-दुख में आपके साथ खड़ी हो पाती। लेकिन अब ऐसा संभव नहीं है; और जहाँ तक मेरी बात है, जब तक आप सम्मानित और सुखी हैं, मैं संतुष्ट हूँ। मैं आपको यह भी आश्वासन दे सकता हूँ—जिससे आपको सचमुच बहुत खुशी होगी, मुझे पता है—कि मेरी पत्नी की ओर से आपको सहानुभूति और शुभकामनाएँ प्राप्त होंगी। मैंने उसे यह बात नहीं बताई थी।

158 सीता। एक बार, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि वह इस खबर पर कैसी प्रतिक्रिया देगी; लेकिन कलकत्ता छोड़ने के बाद से मैंने उसे सब कुछ शुरू से अंत तक बता दिया है; और मैंने उसे आपका पत्र भी दिखाया, जिससे उसे बहुत तसल्ली मिली। क्या मैं आपको बताऊँ कि पहले तो उसे यह सब बहुत बुरा लगा और वह नाराज़ थी? हाँ, ऐसा ही था; लेकिन वह बार-बार उस पत्र को पढ़ती रही और अंत में मन ही मन 'से ल'अमोर, अमोर, अमोर!' गुनगुनाते हुए बोली कि अगर आप संतुष्ट हैं तो वह भी

संतुष्ट होगी। मेरी बहन ग्रेस, जो सबसे प्यारी और मासूम बच्ची है, उसने कोई आपत्ति नहीं जताई। उसने भोलेपन से कहा, 'अगर वह किसी हिंदू महिला से प्यार करता है तो उससे शादी क्यों न करे?' और मुझे समझ नहीं आता कि आप दोनों को इस पर इतना हंगामा क्यों करना चाहिए। और इस सरल फैसले के साथ उन्होंने मामले को अपने पक्ष में खारिज कर दिया; और मुझे यकीन है कि यह आपको मेरे फैसले से कहीं अधिक संतुष्ट करेगा। “मुझे उम्मीद है कि मैं 15 दिसंबर तक नूरपुर पहुँच जाऊँगा, और आपको क्रिसमस के दिन तक वहाँ पहुँचने का प्रबंध करना होगा। इससे पहले मत आना, क्योंकि मेरी पत्नी आपके लिए सब कुछ व्यवस्थित करना चाहती है। नया पियानो एरार्ड कंपनी का है, बहुत ही प्यारा; और ढेर सारा नया संगीत भी है। मेरी पत्नी और ग्रेस गार्सिया और कैम्पाना से संगीत सीख रही हैं, और मेरे विचार से वे बहुत ही मधुर गाती हैं। उन्होंने कलकत्ता में धूम मचा दी थी, और पूरी दुनिया उनके कदमों में थी। हालाँकि, आपको खुद ही इसका फैसला करना होगा। और अब कुछ समय के लिए अलविदा। याद रखना कि आप क्रिसमस का भोजन हमारे साथ करेंगे; और मेरी पत्नी की ओर से आपको ढेर सारी शुभकामनाएँ। “आपका स्नेही मित्र, पुइलिप मोस्टिन।” और सिरिल निर्धारित दिन—क्रिसमस, 1856—से पहले नूरपुर नहीं गए। अगर मोस्टिन परिवार न होता, तो वे जाना ही नहीं चाहते थे: क्योंकि साल के इस मौसम में उनका शिविर जीवन सबसे सुखद होता था, उनका काम सुचारू रूप से चल रहा था, और उनके पूर्ववर्ती के सभी बकाया चुकाए जा रहे थे। उन्हें सब कुछ पहले से बेहतर लग रहा था, और सीता उन्हें दिन-प्रतिदिन और अधिक प्रिय होती जा रही थीं। ब्रैंडन का इरादा अपने परिचितों के बीच चर्चा का विषय बनने का नहीं था; वे नहीं चाहते थे कि महिलाओं की आयाएँ उनके घर में ताक-झाँक करें। अगर सीता किसी को जानती भी, तो श्रीमती ऑस्टिन ही एकमात्र महिला थीं जो उन्हें जान सकती थीं; और उनकी बहन ग्रेस भी, यदि वह चाहें। अपनी शर्मीली पत्नी को उन अच्छी अंग्रेज़ महिलाओं से मिलते देखना बहुत सुखद होता, जिनका—या कम से कम एक का—उन्होंने सम्मान और प्रेम किया था। और उन्होंने यह भी सुना था कि सीता की कुटिया तैयार थी। बाबा साहब स्टेशन में जाकर उसकी देखभाल भी करते थे और वहाँ एक छोटा सा प्रार्थना कक्ष भी था।

एलिसियम; 159 ब्राह्मणों द्वारा पवित्रीकृत; और सीता की अनुपस्थिति में पवित्र अग्नि की देखभाल और छोटे से पवित्र स्थान में दैनिक सेवा करने के लिए एक पुजारी

नियुक्त किया गया था। सीता को इन सब बातों की कोई जानकारी नहीं थी; सिरिल ने उसे नए कॉटेज के बारे में भी नहीं बताया था; और जैसे-जैसे नूरपुर जाने का समय नजदीक आया, उसने वहाँ अपने रहने की व्यवस्था को लेकर कुछ चिंता व्यक्त की थी, जो आसानी से दूर हो गई थी; और वह जानती थी कि नूरपुर में उसके दादा के कई मित्र, बैंकर थे, जो उसका स्वागत करेंगे। इसलिए, क्रिसमस के दिन की सुबह, सिरिल जल्दी स्टेशन पहुँचा, किसी से नहीं मिला, और सीधे अपने घर चला गया, जहाँ उसके नौकर रात भर उससे पहले ही पहुँच गए थे और सीता के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो पालकी में आने वाली थी। अपने पति के साथ यात्रा शुरू करने से पहले वह कभी भी अपने शांत ग्रामीण कस्बे और गाँव से बाहर नहीं निकली थी; और जैसे ही वह स्टेशन के पास पहुँची, उसने पालकी का दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और डरते-डरते बाहर झाँका, वह सब देखने के लिए जिसके बारे में उसने जीवन भर इतना सुना था। अपने पैतृक शहर से गुज़रते हुए—जो उसे अपने शाह गुंजो जितना पसंद नहीं था—उसने जल्द ही विशाल झील और उसके किनारे स्थित पुराना किला देखा; फिर चौड़ी सड़कें और बंगले दिखाई दिए, जैसा कि दरवाज़े के पास दौड़ रहे संदेशवाहक ने उन्हें कहा; छायादार बगीचों के बीच बने घर। “और कमिश्नर का घर अब पास ही है, महोदया,” उसने कहा; और थोड़ी देर बाद उसने देखा कि वे एक फाटक से अंदर गए, करीने से बिछे बजरी वाले रास्ते पर चले, जिसके दोनों ओर फूल लगे थे; फिर एक घर के अंत से घूमकर बगीचे के दूसरे हिस्से में पहुँचे, जो पहले वाले से भी ज़्यादा सुंदर था। फिर दरवाज़ा खुला, और उसका पति उसका स्वागत करने के लिए वहाँ खड़ा था; और जैसे ही पालकी नीचे रखी गई, उसने सुना कि वह सबको जाने के लिए कह रहा है, और उसे उठने में मदद कर रहा है। जैसे ही वह खड़ी हुई और चारों ओर देखा, सब कुछ कितना सुंदर लग रहा था! धुंधली, छायादार पगडंडियों में, जिसके पार झील चमक रही थी, करीने से बने रास्ते थे, जो चमकीले गुलाबों और ऐसे फूलों की क्यारियों को अलग कर रहे थे जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। “ये ज़रूर अंग्रेज़ होंगे,” उसने सोचा; और वास्तव में उनमें से कई अंग्रेज़ ही थे। उसके सामने करीने से कटी हुई प्रिवेट की बाड़ थी, और उसके आगे, बजरी वाली जगह पर, एक कुटिया खड़ी थी, जिसका एक सिरा घर से जुड़ा हुआ था, और सिरिल उसे वहाँ ले गया। दरवाज़े पर मालाएँ लटकी हुई थीं, और जैसे ही दरवाज़ा खुला, उसने ब्राह्मण महिलाओं को देखा। अंदर, एक महिला ने उसके और सिरिल के पैरों पर नारियल तोड़े

और सिर से पैर तक जलते हुए दीपक लहराए, स्वागत का भजन और समृद्धि एवं सुख की प्रार्थना गाई। फिर प्यारी बूढ़ी चाची एला, जिन्हें उसने पहले नहीं देखा था, बाहें फैलाए और आँखों में आँसू लिए आगे बढ़ीं, और उसे अपने सीने से लगा लिया, उसके सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया। यह सब कुछ ऐसा था मानो उसका स्वागत किया जा रहा हो।

160 सीता। घर लौट आई, और बस एक भव्य आकृति की कमी थी। अंदर दो कमरे थे जो एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, ठंडे और पवित्र; और उनके आगे एक छोटे से कमरे में एक ब्राह्मण सुबह की प्रार्थना कर रहा था। "मैं यहीं तक आ सकता हूँ, सीता," सिरिल ने कहा; "बाकी सब तुम्हारा ही है। इसे ले जाओ," उसने चाची एला और ब्राह्मण महिलाओं से कहा, "और इसे दिखाओ कि यहाँ क्या है। मैं यहीं इंतज़ार करूँगा।" सीता कुछ बोल नहीं सकी; उसका हृदय भावविभोर था। भला किसने ऐसी दयालुता, अपनी जाति की ऐसी सुरक्षा की कल्पना की होगी! जहाँ ब्राह्मण पूजा करते थे, जहाँ चाची एला थीं, वहाँ वह अवश्य रह सकती थी। वह प्रार्थना कक्ष में गई, वेदी और उसके पास बैठे दो ब्राह्मणों को प्रणाम किया, और "वेदों" से सुबह की प्रार्थना के कुछ श्लोक गाए। फिर बूढ़े भीमी ने उसे बुलाया, और वह एक आंगन में गई, जहाँ एक स्नानागार और एक रसोईघर था, और—क्या वह अपनी आँखों पर विश्वास कर सकती थी?—उसकी अपनी पालतू चींटी गंगा, जो उसे पहचानती थी, और अब उसके पास आने के लिए रस्सी खींच रही थी; और दो तोते और बूढ़ी काली मैना, अपने पिंजरों में, जो सब एक साथ चीख रहे थे और उसके पास भागने के लिए अपने पंख फड़फड़ा रहे थे। जब उसने उन सबको चूम लिया तो वह वापस चली गई; और जब सिरिल उसका इंतज़ार कर रहा था, वह उसके पैरों पर गिर पड़ी, और सिसकते हुए उसके घुटनों से लिपट गई; और जब उसने उसे उठाया और अपनी मजबूत बाहों में भर लिया, और उसे प्यार से कहा कि यह सब उसका है, और उसे मूर्ख नहीं बनना चाहिए, तो वह उससे और भी लिपट गई, और आँसुओं से भरी आँखों से ऊपर देखते हुए बोली कि वह खुद को रोक नहीं सकती, और उसे उसे माफ कर देना चाहिए। फिर उसने उसे चाची एला और भीमी के साथ अपनी व्यवस्था करने के लिए छोड़ दिया, और अपने बगीचे में चला गया। सिरिल बहुत खुश था, क्योंकि वह जानता था कि उसने अपनी छोटी पत्नी को प्रसन्न कर दिया है, और जातिगत अशुद्धता के सभी विचारों को दूर कर दिया है। इसलिए, जब वह टहल रहा था और उसका माली उसे

सभी नए फूल और हरी-भरी सब्जियां दिखा रहा था, तभी उसने मोसिन की सीटी सुनी जो अपने बगीचे से सीमा बाड़ के फाटक से आ रहा था, और वह उससे मिलने गया। दोनों ने एक-दूसरे को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और अपने प्रियजनों को ढेर सारी क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं; और मोसिन ने सिरिल के हाथों में पत्रों का एक पैकेट थमा दिया जो एक दिन पहले आया था। “जब आप अंदर आ रहे थे,” उसने कहा, “मैंने उन्हें आपको बाहर भेजने नहीं दिया।” सिरिल ने “निजी” चिह्नित एक अर्ध-सरकारी पत्र खोला, जो कुछ मायनों में असामान्य लग रहा था, और उसमें निम्नलिखित लिखा था:

व्यापार और मनोरंजन। 161 “डीन महोदय, — “मुझे —— द्वारा आपको सूचित करने का निर्देश दिया गया है कि आज आपको नूरपवर जिले का उप आयुक्त नियुक्त किया गया है, ग्रांट के स्थान पर जिनकी मृत्यु हो गई है। उन्हें आशा है कि आप अपनी उत्कृष्ट प्रतिभाओं का उपयोग उस प्रांत में करना जारी रखेंगे जो आपके मार्गदर्शन में पहले ही काफी सुधर चुका है, और उन्हें विश्वास है कि आगे भी ऐसा ही होता रहेगा। “ट्रोमेन,” इत्यादि। “यह तो शिष्टाचार है, मोस्टिन, पढ़ो। सीता! सीता! बाहर आओ, और अच्छी खबर सुनो। मैं अब असली आयुक्त हूँ,” सिरिल ने उसके दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा। ‘बाहर आओ, बच्ची। तुम्हें मोस्टिन की परवाह नहीं करनी चाहिए। क्यों, तुम्हें उसे हर दिन देखना होगा।’ सीता स्वभाव से शर्मीली थी। एक भारतीय महिला का संकोच उसका स्वभाव था, और उसकी झिझक को श्री मोस्टिन पूरी तरह समझते थे। ‘नहीं, मेरी परवाह मत करो,” उन्होंने कहा। ‘मैं भी आपके घर में आपका स्वागत करता हूँ। मुझे आशा है कि यह आपको पसंद आएगा। हमने इसके लिए अपनी पूरी कोशिश की है।’ सीता ने कृतज्ञता का भाव दिखाया; वह जवाब देने की हिम्मत नहीं कर पाई; लेकिन श्री मोस्टिन ने उसके समृद्ध, उज्ज्वल रंग, गालों की लाली और उसकी सुंदर चाल में देखा कि उसकी सुंदरता और भी बढ़ गई थी, और सिरिल ने इसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया था। "आओ, बात करते हैं," सिरिल ने कहा। "मेरा नाश्ता अभी तैयार है।" और वह मोस्टिन को अपने साथ ले गया। अध्याय XXII. काम और आनंद। "वाह, फिलिप, यह तो अच्छी खबर थी, है ना? क्रिसमस के दिन आना सुखद भी था। बेचारा ग्रांट! मुझे उसके लिए बहुत दुख है," सिरिल ने बैठते हुए कहा। "आह!" मोस्टिन ने उत्तर दिया, "मुझे नहीं लगता कि शोक करने की कोई बात है: वह दुनिया के उन लोगों में से एक था जिनके कोई रिश्तेदार नहीं होते और

जिन्हें कोई याद नहीं करता। वह लाइलाज बीमारी से भी पीड़ित था। मुझे लगता है कि मृत्यु उसके लिए बहुत बड़ी राहत रही होगी।" "तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो, फिलिप, ताकि मैं एक मरे हुए आदमी की जगह लेने की बात को छुपा सकूँ; लेकिन सच में मुझे खुशी है कि आखिरकार मैं अपनी मर्जी का मालिक बन गया हूँ और अपनी मनमर्जी कर रहा हूँ। और श्रीमती मोस्टिन कैसी हैं? और मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा, आपकी बहन कैसी हैं?

162 सीता, “शुक्रिया, दोनों खूब फल-फूल रही हैं, और दोनों की खूबसूरती बरकरार है; और आज के लिए इतना शानदार पहनावा तैयार किया गया है कि मैं उनसे कहती हूँ कि उन्हें इसे पहनकर चर्च जाने में शर्म आनी चाहिए—मुझे यकीन है कि पादरी उन पर मेहरबान नहीं होंगे। क्यों न आप नाश्ते पर आकर उनसे मिलें?” “फिलिप, आज सुबह नहीं। मुझे इस पत्र और कई अन्य पत्रों का उत्तर देना है, और घर का संदेश भी देखना है।” “लेकिन आप हमारे साथ भोजन करेंगे; यह एक पुराना निमंत्रण है?” “क्यू, बिल्कुल; मैं नए पियानो की धुन सुनने और उन्हें गाते हुए सुनने के लिए तरस रहा हूँ। क्या वे सीता के बारे में जानते हैं?” “हाँ, वे भी जानते हैं कि वह यहाँ है; लेकिन अगर रोज़ अभी उससे मिलने नहीं आती है तो आपको नाराज़ नहीं होना चाहिए, हालाँकि, सच में, वह उससे मिलने के लिए बेताब है, और वास्तव में, ग्रेस भी।” “क्यू, नहीं,” सिरिल ने जवाब दिया, “मैं तो यही चाहूँगा कि जब तक मैं यहाँ हूँ, वे न आएँ; मैं यहाँ केवल एक सप्ताह के लिए ही रहूँगा।” जब मैं हमेशा के लिए लौट आऊँगा, तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी यदि वे उसके साथ अच्छा व्यवहार करें। "और वह—सीता—मैं उसे क्या कहूँ, सिरिल? उसे बुरा नहीं लगेगा!" "इसके विपरीत, फिलिप, उसे अभी किसी का ध्यान न मिलने से बहुत राहत मिलेगी। पिछले एक हफ्ते से वह मुझसे यही विनती कर रही है कि मैं अंग्रेजों को, खासकर महिलाओं को, उससे दूर रखूँ; वह उनसे डरती है।" "और मैं भी?"— "नहीं, तुमसे नहीं; उसने तुम्हें पहले भी देखा है, याद है ना, और वह तुम्हारा पिता समान सम्मान करती है।" "ठीक है, मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही करूँगा, सिरिल," उसने उत्तर दिया; "मैं कभी-कभी उससे मिलने आऊँगा और उससे बात करूँगा, अगर वह मुझे अनुमति दे। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी पत्नी उसके बारे में तुमसे कुछ नहीं कहेगी, और तुम उससे इस विषय पर बात कर सकते हो या नहीं, यह तुम्हारी मर्जी है; लेकिन मैं वास्तव में सीता से मिलने के लिए तरस रहा हूँ। वह कितनी प्यारी हो गई है, सच में! कोई उसे उस पीली, दुबली

लड़की के रूप में मुश्किल से पहचान पाएगा जिसने उस मुकदमे में गवाही दी थी।" "जैसे-जैसे आप उसे बेहतर जानेंगे, आप उसकी और भी प्रशंसा करेंगे, जैसा कि मैं करता हूँ, फिलिप; वह सचमुच एक दुर्लभ व्यक्तित्व है।" फिर वे कलकत्ता और वहाँ के सार्वजनिक मामलों पर चर्चा करने लगे, जिससे मोस्टिन बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने कहा, "आपको अंदाज़ा नहीं है कि भर्ती संबंधी उस आदेश ने कितनी हलचल मचा दी है; हम, जो दुनिया से कटे हुए हैं, यह नहीं जानते कि वास्तव में क्या हो रहा है, और अखबार किसी भी विषय पर बोलने से डरते हैं, और शायद उन्हें ऐसा न करने का संकेत मिल गया है। फिर, हिंदू विधवाओं के विवाह; और नई ड्रिल, और एनफील्ड बंदूकें, और कारतूस; और बैरकपुर और अन्य जगहों पर सिपाही बड़बड़ा रहे हैं, और इनके बीच
व्यापार और मनोरंजन। 163 तुम और मैं, वे कभी बेवजह शिकायत नहीं करते। मैं तुमसे कहता हूँ, सिरिल, मुझे यह पसंद नहीं है, और आशा करता हूँ कि इससे कोई बुराई न हो। मुझे ये नए-नए कानून नापसंद हैं; क्या वे लोगों को अकेला नहीं छोड़ सकते? और तुम क्या सोचते हो? जब मैं बनारस में था, मेरे पुराने पंडित मुझसे मिलने आए, और उन्होंने झिझकते हुए, हकलाते हुए मुझसे पूछा कि क्या रानी की तरफ से भारत के सभी लोगों को ईसाई बनाने का आदेश नहीं आया है? बेशक मैं इस बात पर हँस पड़ा, और उनसे कहा कि ऐसी बकवास सुनने के लिए वे मूर्ख हैं: और उन्होंने कहा कि वे नहीं सुनेंगे, हालाँकि वे बाज़ारों में लोगों को बात करने से नहीं रोक सकते। अब, मुझे भी यह पसंद नहीं है; लेकिन कम से कम यहाँ अभी तक कोई हलचल नहीं दिख रही है; ध्यान रहे, मुझे पूछताछ करना पसंद नहीं है, और अगर ऐसा कुछ होता भी है, तो बंगाल की तरह कोई घोषणा जारी करना भी पसंद नहीं है, जिसके जवाब में उन्हें बड़ी चालाकी से तिरस्कार मिला था। यानी, या जिन्होंने वह पत्र लिखा था, उन्होंने बड़ी चतुराई से लिखा था, और घोषणा से ही यह साबित हो गया कि सरकार ने खेल में अपनी भूमिका दिखाई थी, और उसका इरादा बुरा था; लेकिन हमें अपनी आँखें और कान खुले रखने चाहिए। मैंने ब्रिगेडियर से बात की है, जो मेरी तरह कारतूसों या किसी भी नए सैन्य आदेश के बारे में लापरवाह नहीं हैं, और उनके अपने विचार पुराने विचारों वाले हैं; हम नव वर्ष के दिन उन्हें भोजन पर बुलाएँगे और उनसे इस बारे में जानकारी लेंगे। इस बीच, हमें अपने आप से दुखी होने की ज़रूरत नहीं है, और शायद इसमें किसी को डराने वाली कोई बात भी नहीं है। किसी ने बहुत पहले कहा था कि

हम हमेशा बारूद के ढेर पर रहते हैं, लेकिन वे अभी तक फटे नहीं हैं। "यह बहुत दुखद है," सिरिल ने उत्तर दिया, "बहुत; लेकिन मैंने सुना है।" कुछ नहीं, हालाँकि मैं सचमुच लोगों के बीच ही रह रहा हूँ; और अगर मेरी पत्नी ने ऐसी अफवाहें सुनी होतीं, तो मुझे पता है कि वह मुझे बता देती। क्या यहाँ के लोगों को इसके बारे में कुछ पता है?" "हाँ, शायद थोड़ा-बहुत," उसके दोस्त ने जवाब दिया, "लेकिन ज़्यादा नहीं। अभी तक इतना नहीं कि उन्हें बेचैनी हो, और रोज़ आसानी से डरने वाली नहीं है; उसने बस लोगों की बातें सुनीं, और सच कहूँ तो, उस पर हँसी भी आई। खैर, क्योंकि तुम नाश्ते पर नहीं आओगे, तो हम तुम्हें चर्च में मिलेंगे, मुझे पता है, और मैं तुम्हें अपनी बहन से मिलवा दूँगा।" "नहीं, मैं अभी नहीं आ सकता," सिरिल ने कहा; "मुझे रुककर इन सभी पत्रों को देखना है, और पारिवारिक बजट पढ़ना है, और कुछ और काम भी निपटाने हैं; लेकिन मैं चर्च आऊँगा, और तुम मुझे बाद में अपनी बहन से मिलवा दोगे।" "अभी के लिए अलविदा, क्रिल, और ध्यान रखना कि तुम अच्छे दिखो," और मोस्टिन चले गए। क्रिल अपने पत्रों के साथ बैठ गए और उन्हें बहुत सुखद पाया। उनके नए पदस्थापन के बारे में कई लोगों के पत्र थे जिनका वह सम्मान करते थे और आदर करते थे, न केवल उन्हें बधाई दे रहे थे।

164 सीता, सीए को उनकी पदोन्नति पर हार्दिक बधाई, जो वास्तव में उन्होंने उचित रूप से अर्जित की थी, लेकिन यह संकेत देते हुए कि उन पर इतना भरोसा है कि वे अपेक्षाकृत जल्द ही उच्च पद की उम्मीद कर सकते हैं। उनके भाई का एक उत्साहपूर्ण पत्र आया, जो पूरे मौसम में बड़े आनंद के साथ शिकार कर रहे थे, और उन्होंने कहा कि वे "घोड़े की तरह मजबूत" महसूस कर रहे हैं; और प्यारी माँ की सर्दियों के बारे में शिकायतों के बावजूद, उन्होंने नीस या मेंटोन की तुलना में कहीं अधिक सुखद सर्दी बिताई; जो उनके लिए दुनिया के सबसे नीरस स्थान थे, और उन्होंने कहा कि वे ईस्टर के बाद "हाउस" में आएंगे। उनकी माँ का एक खुशी भरा पत्र आया, और एक ऑगस्टा का। अब कोई चिंता नहीं थी, और ऐसा लग रहा था कि वे पदोन्नति की संभावनाओं के बारे में उनके विचारों को पूरी तरह से समझ गए थे; लेकिन सभी ने अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त की कि यदि उन्हें पदोन्नति मिल जाती है, तो वे यथाशीघ्र घर आकर उनसे मिलें। तो सब ठीक था, और सिरिल बहुत आभारी थे। अब केवल अत्यंत आवश्यक होने पर ही वे सीता से अलग हो सकते थे; और वह जानता था कि उसे जाने देना और एक बार फिर अपने दादा के साथ कुछ दिन बिताना सीता के लिए

बहुत कठिन होगा। उसने मन ही मन कहा, “वह ऐसा कर सकती है, लेकिन शुक्र है कि मेरी बेचारी को इतनी तकलीफ नहीं सहनी पड़ेगी।” फिर उसने ध्यान से कपड़े पहने। शिविर के भद्दे कपड़े नहीं, बल्कि उचित अंग्रेजी कपड़े, बहुत साफ-सुथरे और अपनी तरह के विशिष्ट, मौसम के अनुकूल, जो अब काफी ठंडा था, बल्कि अक्सर सर्द ही रहता था। लंबे समय से इस्तेमाल न की गई टोपी को अच्छे से साफ किया गया, हल्के पीले रंग के दस्ताने पहने गए, और इस तरह तैयार होकर वह सीता को दिखाने गया। उसने खुशी से कहा, “देखो, मैं असली अंग्रेजी कपड़ों में हूँ; क्या तुम मुझे पहचानती हो, छोटी औरत?” “ओह, मैं तुम्हें जानती हूँ,” वह हंसते हुए बोली; “या मैं तुम्हें जानती हूँ? मुझे देखने दो।” और वह उठी और उसे चारों ओर से देखा, और उसके काले ओवरकोट की कोमल चमक को महसूस किया। “तुम्हारे गले में बहुत सुंदर स्कार्फ है, और सुंदर दस्ताने हैं, लेकिन फिर भी मुझे तुम बिल्कुल पसंद नहीं हो। जब तक तुमने ये अच्छे कपड़े पहने हैं, मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हें छूने की हिम्मत नहीं कर सकती, और तुम अपने लोगों के हो, और बहुत बड़े आदमी हो; लेकिन मैं उन्हें नहीं जानती, और मुझे पुराने लोग ज़्यादा पसंद हैं, क्योंकि वे मेरे अपने हैं। क्या मैं सही नहीं कह रही, आंटी एला?” “ठीक है,” उसने जवाब दिया, “मैं कुछ नहीं कर सकता, और यह केवल कुछ दिनों के लिए है, इसलिए तुम्हें मेरे साथ ही रहना होगा। अब मैं चर्च जा रहा हूँ, और उसके बाद तुम मुझे बहुत लंबे समय तक नहीं देख पाओगी, क्योंकि मुझे कुछ लोगों से मिलना है।” “मैं आंटी एला और उन पालतू जानवरों के साथ बहुत खुश हूँ,” उसने कहा, “और, क्या आप जानते हैं, जब से उस बूढ़े काले मैना ने मुझे देखा है, तब से वह लगातार बोल रहा है। सिरिल, इस सारे आश्चर्य और खुशी के लिए मैं आपका कितना धन्यवाद करूँ? यह हम सभी के लिए खुशी का दिन है, और आप

व्यापार और आनंद। 165 ee ee ee ee आखिरकार आयुक्त बन गए हैं। “क्या आप जानते हैं, महोदय?” उसने शरारती अंदाज़ में आदर जताते हुए कहा, “क्या आप जानते हैं कि आपकी प्रजा में से एक आपसे डरती नहीं है? अब जाइए, और अपनी प्रजा के बीच खुश रहिए।” और वह अपने खूबसूरत अरब घोड़े, सुल्तान पर सवार होकर, अपने उन दोस्तों के साथ चर्च के लिए रवाना हुए जो उन्हीं की तरह घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे। लगभग आधे रास्ते में मोस्टिन की गाड़ी उनके पास से तेज़ी से गुज़री और उन्होंने अपनी टोपी उतार दी। जब वे चर्च में दाखिल हुए तो उन्होंने देखा

कि वे सभी उपदेश मंच के पास अपनी-अपनी सीटों पर बैठे थे, लेकिन उनकी अपनी सीट विपरीत गलियारे में थी और उनके बीच में पढ़ने की मेज थी। लेकिन नए आने वालों ने क्या सनसनी मचा दी थी! मैं श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के कपड़ों का वर्णन करने का प्रयास नहीं करूँगा; मैं केवल इतना जानता हूँ कि एक ने हल्के लैवेंडर रंग का कपड़ा पहना था, और दूसरी ने हल्के नीले रंग के रेशमी कपड़े पहने थे: उनके पास नवीनतम फैशन की सबसे मनमोहक पेरिस की टोपियाँ थीं, उनके घेरेदार टोपियाँ, जो उस समय अपने शुरुआती दौर में थीं, और कुल मिलाकर उनकी पोशाकें अपने अच्छे स्वाद और शालीनता के लिए उल्लेखनीय थीं। मुझे डर है कि उस दिन की सुंदर प्रार्थना सभा, मसीह उद्धारकर्ता के जन्म की खुशी का विस्फोट, और स्वर्गदूतों के समूह द्वारा गाया गया दयालु संदेश, "पृथ्वी पर शांति, मनुष्यों के प्रति सद्भावना," और संक्षिप्त, कोमल उपदेश, इन सबने मिलकर उस दिन की सुंदरता को और भी बढ़ा दिया। इसके बाद जो पादरी का प्रवचन हुआ, वह कुछ अनसुने कानों पर पड़ा, और उन लोगों के मन में इतना मग्न था कि वे शायद पेरिस की नई टोपियों और उन दो प्यारे चेहरों को देखकर ईर्ष्या कर रहे थे, जिन्हें कई लोग उनकी सीट के किनारे से देख सकते थे—कि वे आध्यात्मिक बातों पर ध्यान ही नहीं दे पा रहे थे। एक तरह से कहें तो, यह महिलाओं की सार्वजनिक उपस्थिति का पहला उदाहरण था। वे कुछ ही दिन पहले आई थीं, और अपनी लंबी यात्रा से बहुत थकी हुई थीं, और घर में सामान खोलने और सब कुछ व्यवस्थित करने में बहुत समय लगा दिया था (क्योंकि श्री मोस्टिन अपनी पत्नी के इंग्लैंड में रहने के दौरान कुंवारे की तरह रह रहे थे), और उन्होंने किसी से मुलाकात नहीं की थी। चर्च में मौजूद सभी लोगों में से, श्रीमती मोस्टिन केवल कुछ ही लोगों को जानती थीं; ब्रिगेडियर और हिल्स, डॉ. होम और उनकी पत्नी, और तोपखाने के कमांडेंट, जो अविवाहित थे; बाकी सभी नए थे, नई रेजिमेंटों के साथ आए थे, और जैसा कि श्रीमती मोस्टिन ने ग्रेस से फुसफुसाते हुए कहा, "बहुत आशाजनक नहीं लग रहे थे।" प्रार्थना सभा समाप्त हुई; लाल चेहरे वाले, तगड़े और मजबूत तोपची अपने स्पर्स और तलवारों की खनक के साथ बाहर निकले, और उनके पीछे पैदल सेना और श्रद्धालु चल रहे थे, जिनमें सिरिल और मोरलैंड्स लगभग सबसे पीछे थे। वह उनसे पहले ही निकल चुके थे और अब चर्च के बरामदे के पास खड़े होकर उनका इंतजार कर रहे थे; और जैसे ही वे बाहर आए, श्रीमती मोस्टिन ने बड़ी खुशी से मुस्कुराते हुए अपना हाथ बढ़ाया, जिसे उन्होंने गर्मजोशी से पकड़ा,

और कहा कि उन्हें उन्हें फिर से देखकर बहुत खुशी हुई। “और आप भी बहुत अच्छे लग रहे हैं, मिस्टर ब्रैंडन,” उन्होंने कहा, “साथ ही साथ
 अगर आप इंग्लैंड में होते; और अब मैं आपको अपनी बहन से मिलवाती हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप दोनों जल्द ही एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान लेंगे।” एक पल के लिए सिरिल उस युवती के खुलेपन से लगभग भ्रमित हो गया, जो उसके सामने लाली से खड़ी थी और उसने विनम्रता से अपना हाथ बढ़ाया। “मुझे लगता है कि मैं आपको पहले से जानती हूँ, श्रीमान ब्रैंडन,” उसने कहा, “मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है।” “मैं सचमुच बहुत खुश हूँ,” उसने जवाब दिया। “मुझे उम्मीद है कि आपके भाई ने मेरे बारे में अच्छी राय दी होगी, क्योंकि वह मेरे बहुत पुराने दोस्त हैं।” “जो भी हो, और अगर आप दोपहर के खाने पर आएँगे तो आपको और भी जानकारी मिलेगी; क्या आप आएँगे?” श्रीमती मोस्टिन ने गाड़ी में बैठते हुए कहा। “मना करना सचमुच असभ्य होगा,” सिरिल ने उत्तर दिया, “फिर भी कृपया मुझे आज के लिए क्षमा करें। मुझे कुछ ज़रूरी मुलाकातों में जाना है और पत्र लिखने हैं, क्योंकि काम रुकने वाला नहीं है; इसलिए कृपया मुझे शाम तक के लिए छोड़ दें।” “ठीक है,” उसने उत्तर दिया, “मुझे लगता है इसका कोई उपाय नहीं है; ध्यान रखना जल्दी आना और कुछ संगीत लाना;” और फिर वह गाड़ी, जिसे अब मोस्टिन खुद चला रहा था, तेज़ी से चली गई। और जब सिरिल अपने मेहमानों से मिल रहा था और अपने कार्ड छोड़ रहा था, तो हमें, सौभाग्य से, यह सुनने का मौका मिला कि चर्च में अन्य लोगों ने क्या देखा। “मेरी प्यारी मारिया! तुम ऐसा कैसे सोच सकती हो?” श्रीमती स्मिथ ने श्रीमती जोन्स से कहा, जो नए आने वालों के पहनावे और शैली की प्रशंसा कर रही थीं; “जहाँ तक मेरी बात है, मुझे तो वे बहुत ज़्यादा सजे-धजे लगे, बल्कि कहें तो भद्दे। उस लड़की का हल्का नीला रेशमी गाउन शायद किसी बॉलरूम के लिए ठीक हो सकता है; लेकिन दिन में ऐसा पहनने का ख्याल ही! फिर उन घेरों को देखो, कितने भद्दे हैं! मैं स्मिथ से कहती हूँ, मैं कभी भी—कभी नहीं—कभी नहीं—इतना भद्दा कुछ नहीं पहनूँगी। मैं जैसी हूँ वैसी ही संतुष्ट हूँ; मुझे भड़कीले कपड़े नहीं चाहिए।” सचमुच, बेचारी महिला को संतुष्ट रहना ही पड़ा; बैंक की मांगों और हाल ही में नूरपुर की यात्रा के कारण, स्मिथ का मासिक बकाया बहुत कम था, और श्रीमती स्मिथ द्वारा पहनी गई हरी रेशमी पोशाक, जो उनकी सबसे अच्छी पोशाक थी, पर फटे, टूटे और दाग के स्पष्ट निशान थे। श्रीमती जोन्स ने कहा, "मुझे श्रीमती मोस्टिन

के बचे हुए कपड़ों, आगे और पीछे के सुंदर शिखरों और मिस मोस्टिन की टोपी के 'सर्टर्स' चाहिए। क्या आप मेरे लिए उन्हें ला सकती हैं, प्रिय श्रीमती होम? आप उन्हें बहुत अच्छी तरह जानती हैं।" उन्होंने आगे कहा, "और लूसी उन्हें मेरे साथ साझा कर सकती है।" श्रीमती होम ने तीखे लहजे में कहा, "मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकती, मेरी प्रिय; आप जाकर खुद पूछ सकती हैं; श्रीमती मोस्टिन और मैं कभी घनिष्ठ नहीं थीं। वह बहुत ही अंग्रेज हैं, और बहुत ही
व्यापार और मौज-मस्ती। 167 विशेष, हममें से किसी जैसी बिल्कुल नहीं, और घर जाने से पहले की तुलना में अब वह दस गुना ज़्यादा घमंडी लग रही है। लेकिन क्या आपने देखा कि उसने क्या किया? मुझे उस पर बहुत शर्म आ रही थी; अगर यह चर्च जाने से पहले हुआ होता, तो मुझे यकीन है कि मैं वहाँ बिल्कुल नहीं जाती। "नहीं!" दोनों ने एक साथ कहा, "क्या हुआ, प्रिय?" "मुझे लगता है कि आप चली गई थीं," श्रीमती होम ने आगे कहा; "लेकिन मैं और लूसी गाड़ी का इंतज़ार कर रही थीं; और मेरी मालकिन ने क्या किया? अरे, वह युवा ब्रैंडन के पास गईं, जितनी हिम्मत हो, और उससे बहुत देर तक हाथ मिलाया, और फिर उसे अपनी बहन से मिलवाया। ज़रा सोचिए, कोई महिला, मिस्टर ब्रैंडन जैसे व्यक्ति को जानती हो, जिसने खुद को ऐसी स्थिति में डाल दिया हो, और उसे अपनी बहन से मिलवाए! और उन्होंने हाथ भी मिलाया। यह सरासर अपवित्रता थी। मुझे यकीन है कि मैं खुद ऐसा करने के बारे में सोच भी नहीं सकती, न ही लूसी को ऐसा करने की इजाज़त दूंगी, जैसे—जैसे!" लेकिन जब कोई उपमा उसके काम नहीं आई, तो उसने आगे कहा, “और यही वो चीज़ है जो लोग इंग्लैंड से अपने साथ लाते हैं, जहाँ हम जानते हैं कि समाज बेहद अनैतिक होता जा रहा है। यह वाकई चौंकाने वाला है, है ना?” | “लेकिन वह जज की पत्नी हैं,” श्रीमती जोन्स ने दबी आवाज़ में कहा, “और हम उनसे झगड़ा नहीं कर सकते; मैंने सुना है कि वे भी बहुत खुश रहने वाले हैं।” “हाँ,” श्रीमती स्मिथ ने तीखे लहजे में कहा; “मैं समझ गई, मारिया: तुम इन लोगों के पीछे पड़ी हो; लेकिन वह एक आम नागरिक हैं, और तुम तो बस एक गरीब नौकरानी की पत्नी हो। अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं चापलूसी नहीं करती। मुझे लगता है कि हम अगली बार दुल्हन से मिलने के बारे में सुनेंगे।” “दुल्हन! किसकी बात कर रही हो?” मारिया चिल्लाई। *“अरे, तुम्हें नहीं पता? क्या तुमने आज आने वाले दूसरे नए मेहमान के बारे में नहीं सुना?” श्रीमती स्मिथ ने आगे कहा; “सचमुच एक बहुत ही दिलचस्प इंसान।

क्या तुम अंदाज़ा नहीं लगा सकती? अरे, तुम दोनों कितनी बेवकूफ हो!" अरे, काली दुल्हन! सच में! अगर मुझे और साफ शब्दों में कहूँ तो, माननीय श्रीमती सिरिल ब्रैंडन। मेरी आया ने उन्हें आज सुबह एक खूबसूरत पालकी में आते देखा, और उनके आगे-पीछे चपरासियाँ दौड़ रही थीं, बिल्कुल भव्यता से, और उनका काला चेहरा कभी एक दरवाजे से तो कभी दूसरे से झाँक रहा था, और बाज़ार में हर कोई उन्हें सलाम कर रहा था। वाकई एक शानदार प्रवेश था, मेरे प्यारे बच्चों! अब, मारिया, तुम्हारे लिए एक मौका है; शायद श्रीमती सिरिल फैशन की राह पर चल पड़ें, और श्रीमती मोस्टिन को पीछे छोड़ दें, और तुम उनकी नाक की बालियाँ, पैर की बालियाँ, और नाचने वाली लड़कियों जैसी झनझनाती पायलें पा सकती हो। 'उनकी उंगलियों में अंगूठियाँ और पैरों की उंगलियों में घंटियाँ,' तुम्हें पता है; सब कुछ, निस्संदेह, शाहगंज के नवीनतम फैशन का है। | : "आप ऐसा नहीं कह रही हैं!" श्रोताओं ने एक साथ कहा। "हाँ, मैं कह रही हूँ; वह महिला यहाँ है, सचमुच हमारे बीच है! और यह..."
168 सीता। किसी 'जादू-टोने' से यह भी कह दिया गया है कि उसकी भी शादी हो गई है; और इसलिए वह माननीय श्रीमती सिरिल हैं," श्रीमती स्मिथ ने उत्तर दिया। "यह भयानक है, सचमुच एक घिनौनी सार्वजनिक बेहूदगी है; और हमें अपने पतियों से गवर्नर-जनरल को एक ज्ञापन भेजने के लिए कहना चाहिए, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" श्रीमती होम ने कहा। "मुझे नहीं लगता कि उन्हें ज़रा भी परवाह है," श्रीमती स्मिथ ने आगे कहा। "जब मैंने आज सुबह स्मिथ को इसके बारे में बताया, तो उसने मुझसे कहा, 'जेन, मूर्ख मत बनो; औरत का तुमसे क्या लेना-देना है या तुम्हारा औरत से? चर्च जाओ, मेरी प्यारी, और बुरी बातें सुनने से मुक्ति पाने के लिए प्रार्थना करो, —' और उसने वाक्य पूरा किया, मेरी प्यारी; उसका एक-एक शब्द, और मैं इतनी गुस्से में थी कि मैं उस पर कुछ भी फेंक सकती थी। नहीं! हमें खुद कार्रवाई करनी होगी, और मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगी जब तक हम उस भयानक दुष्ट को थाने से बाहर नहीं निकाल देते; मोस्टिन परिवार के पास, और उस प्यारे से कॉटेज में भी! मैं अपनी आया को उसके बारे में तुरंत पता लगाने का काम सौंप दूँगी।" *ओह, हमें ज़रूर बताना, प्रिय, जब तुम्हें पता चल जाए," उसके साथियों ने विदा होते हुए कहा। इस बीच, इस सारी नेक नाराज़गी की भोली-भाली लेखिका अपने नए घर में बेहद खुश थी; सब कुछ इतना परिपूर्ण, इतना उज्ज्वल और इतना सुंदर था। बगीचा मिग्नोनेट, गुलाब, संतरे और नींबू के फूलों की मनमोहक खुशबू से भरा हुआ था।

तरह-तरह के फूलों के गुच्छे रोज़ाना सब्जियों के साथ शिविर में लाए करते थे; लेकिन वे अक्सर मुरझा जाते थे। यहाँ वे अपनी पूरी हरियाली में खिले हुए थे। सिरिल ने सीता से कहा था कि झील के पानी तक सारा बगीचा उसका है; और सुबह के भोजन के बाद, चाची एला और वह कृतज्ञता और आश्चर्य से इधर-उधर घूमीं। मैना और तोते चीख-चीखकर अपना गला खराब कर चुके थे, और मैना गंभीर स्वर में अरबी में कुछ मुस्लिम प्रार्थनाएँ दोहराकर खुद को शांत कर रही थी, जो उसने अपने बचपन में सीखी थीं और जिन्हें सीता ने उसे संस्कृत श्लोक सिखाकर भुलाने की कोशिश की थी। इस तरह सब कुछ अजीबोगरीब ढंग से आपस में उलझा हुआ था, और बूढ़ा पक्षी स्पष्ट रूप से बहुत खुश था। सीता ने भी अपने दादाजी के बारे में सब कुछ सुना था; कि कैसे सिरिल ने उनसे आंटी एला और पालतू जानवरों को भेजने के लिए कहा था, और अक्सर "अपने हाथ से" लिखकर बताया था कि उनकी पत्नी स्वस्थ और खुश हैं। तो यह एक सुखद, खुशनुमा सुबह थी; और जब सिरिल घर आए, तो वे अपनी पत्नी को बड़े बंगले में ले गए, जो उसे काफी नीरस लगा; क्योंकि उसमें केवल एक कुंवारे आदमी का फर्नीचर था; लेकिन ड्राइंग रूम में कई चित्र थे, कुछ सिरिल के, कुछ पुराने उस्तादों की इतालवी कॉपिक पेंटिंग, और उनमें से एक सेन्सी की थी, जिसकी उदास आँखें सीता का हर जगह पीछा करती हुई प्रतीत होती थीं। उनकी मां, भाई और बहन के जलरंगों में बने चित्र, और कई अन्य चित्र। फिर पियानो था, जो अब बंद है। व्यवसाय और आनंद। पृष्ठ 169 जिसे सीता ने अलमारी समझ लिया था; और जैसे ही सिरिल ने उसे खोला और चाबियों पर अपनी उंगलियां फिराईं, एक तस्वीर देख रही लड़की चौंक गई और उसके पास दौड़ी। “यह क्या है?” उसने हैरानी से कहा। “जिसके बारे में मैंने तुम्हें शिविर में बताया था,” उसने कहा। “अब सुनो। मुझे आज रात मोस्टिन के यहाँ कुछ बजाना है, और क्यों न मैं इसका अभ्यास कर लूँ। मेरे पास बैठो और सुनो।” उसने उसे देखा जब उसने एक किताब खोली और मोजार्ट के एक सोनाटा को चुनकर उसे बजाया। यह कहना गलत होगा कि वह सब कुछ समझ गई थी, लेकिन बदलती धुन के कुछ हिस्सों पर उसने देखा कि उसकी उंगलियां अनायास ही ताल मिला रही थीं और उसके होंठ उत्साह से कांप रहे थे। “अच्छा,” उसने बजाना समाप्त करते हुए पूछा, “तुम्हें यह पसंद आया, छोटी बच्ची?” “आह! यह बहुत सुंदर है,” उसने आह भरते हुए कहा, “बहुत सुंदर! मुझे आज रुलाओ मत, मैं बहुत खुश हूँ।” “तो जेटी तुम्हारे लिए गाएगा,” उसने जवाब दिया। “धीरे-धीरे तुम्हें इस संगीत की

आदत हो जाएगी। हाँ, यह बहुत सुंदर है, और बजाते समय मुझे भी भावुक कर देता है, कभी-कभी तो मेरी आँखों में लगभग आँसू आ जाते हैं। मैं तुम्हें कुछ ऐसे गीत सुना सकता हूँ जिनसे तुम रो पड़ोगी, प्रिय, लेकिन आज नहीं।" इस तरह गीतों का अभ्यास करते हुए, श्रीमती मोस्टिन के लिए बजाए जाने वाले संगत का अभ्यास करते हुए, दोपहर बीत गई, और मुझे खेद है कि सभी पत्र भुला दिए गए या एक तरफ रख दिए गए। शाम ढलते ही वे बगीचे से झील और छोटे से नावघर की ओर चले गए, और सिरिल ने अपनी पत्नी को सुंदर नाव दिखाई, जिसमें उसने उसे भविष्य में कई बार सैर कराने का वादा किया। वहाँ खड़े-खड़े, सूरज अपनी पूरी महिमा में डूब गया, और गुलाबी और लाल बादल और सुनहरी चमक शांत झील में दर्पण की तरह प्रतिबिंबित हो रही थी, और उनके पास स्थित पुराने किले के विशाल बुर्ज और प्राचीर आकाश में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। कितना सुंदर दृश्य था! सीता का मन कितना प्रसन्न था! और, अपनी पुरानी आदत के अनुसार, उसकी आँखों में आँसू भर आए। "तुमने मुझे इन सब बातों के बारे में नहीं बताया," उसने धीरे से कहा। "मैं तुम्हारी बहुत आभारी हूँ, सिरिल?" "हाँ," उसने कहा, "यह बहुत सुंदर है, और मैंने इसे बहुत पहले देखा था, और कामना की थी कि कोई मेरे साथ इसे साझा करे; और अब मेरे पास वह सब कुछ है जो मैंने चाहा था।" "कैल?" उसने पूछा। "बस एक छोटी सी हिंदू लड़की।" "और वह काफी है," उसने खुशी से जवाब दिया, और उसे अपनी ओर खींचते हुए कहा; "लेकिन मुझे जाकर कपड़े पहनने हैं। मेरे पास तुम्हें दिखाने के लिए और भी नए कपड़े हैं।" और कुछ देर बाद वह अपने शाम के सूट में, सफेद जैकेट और बेदाग चमकदार बूटों के साथ आया, और उसे लगा कि वह पहले से कहीं ज्यादा सुंदर लग रहा था। "यह सुंदर है," उसने कहा। "जाओ और अपने दोस्तों के साथ खुश रहो। आज तुम्हारा त्योहार है। मैं सोने जा रही हूँ, क्योंकि मैं थक गई हूँ, और तुम आकर मुझे जगा देना।"

170 सीता। अगर सिरिल चर्च में ग्रेस मोस्टिन से परिचय होने पर उन पर मोहित हो गए थे, तो मोस्टिन के ड्राइंग रूम में प्रवेश करते ही वह अब अत्यंत सुंदर प्रतीत हो रही थीं। उन्होंने श्रीमती मोस्टिन की तरह ही सादे सफेद रेशमी वस्त्र पहने थे, जो खूबसूरती से सिले हुए थे और उनकी सुडौल आकृति को पूर्ण रूप से निखार रहे थे। शायद ग्रेस मोस्टिन जानती थीं कि वह बहुत प्यारी हैं, जैसा कि उनके भाई ने कमरे में प्रवेश करते समय उनसे कहा था। इस लड़की का वर्णन करना आसान नहीं है, जिसके

ताज़गी भरे, मासूम चेहरे पर संवेदनशीलता और शालीनता झलक रही थी। वह बहुत गोरी थीं, और शुद्ध अंग्रेजी रंग आज भी उतना ही ताज़ा था; सफेद रंग के साथ सबसे कोमल कार्नेशन का वह सौम्य मिश्रण, जिसकी सुंदरता इंग्लैंड की महिलाओं के अलावा किसी और के रंग में नहीं पाई जा सकती। उनकी बड़ी नीली-भूरी आँखें थीं; लंबी, काली पलकों से घिरी हुई, भाव में बहुत कोमल और सौम्य, लेकिन अक्सर खुशी से सिकुड़ती और चमकती हुई, एक छोटी सीधी नाक, गुलाबी, पारदर्शी नथुनों वाली; और कोमल वक्रों से बना उसका मुँह, ताज़े, नम, गुलाबी होंठों से सजा था, जो हल्के से खुले हुए थे और उसके छोटे, सफ़ेद, मोती जैसे दाँत थोड़े से दिखाई दे रहे थे। उसके हल्के भूरे बाल, इतने लहराते और मुलायम, सिर के पीछे से प्राकृतिक घुंघराले होकर गिर रहे थे और उसके चौड़े, सफ़ेद माथे पर साफ़-सुथरी चोटी में गुंथे हुए थे। ग्रेस मोस्टिन अंग्रेज़ महिलाओं के औसत कद से थोड़ी छोटी थी, और सिरिल को यह समझ नहीं आ रहा था कि ज़्यादा आकर्षक क्या था, उसके चेहरे की सुंदरता या उसकी सुडौल और गोल आकृति। एक गोरा सैक्सन चेहरा, जिसमें छल का कोई अंश नहीं था: जितना कोमल उतना ही सुंदर; हर विचार और भावना के साथ बदलता हुआ। "एक ऐसा चेहरा जिसे सर जोशुआ चित्रित करना पसंद करते, और जिसके साथ केवल वही न्याय कर सकते थे," सिरिल ने सोचा जब रात के खाने पर उसके सामने बैठे हुए प्रकाश उसके चेहरे पर खेल रहा था। उसने शुरू से ही उसके सामने ज़रा भी झिझक नहीं दिखाई थी, और उसकी हर बात ने सिरिल को उसके कोमल और उच्च कोटि की संस्कृति से प्रभावित किया। इन तीनों पुराने दोस्तों को आपस में कितनी बातें करनी थीं! श्रीमती मोस्टिन अपनी इंग्लैंड यात्रा का वर्णन करते हुए कितने खुश थीं और कितनी आभारी थीं कि वे सभी कुछ समय के लिए ही सही, सुरक्षित रूप से फिर से मिल गए! और उन्होंने सिरिल और ग्रैको दोनों को उनकी नई पदवी पर कितनी हार्दिक बधाई दी! उस रात कोई मेहमान नहीं थे, इसलिए दोनों सज्जनों ने अपनी शराब पर ज्यादा समय नहीं बिताया। मोस्टिन ने कहा, "आपको उनका गाना जरूर सुनना चाहिए;" और वे उठकर महिलाओं के साथ शामिल हो गए। "आपको शुरुआत करनी चाहिए, श्री ब्रैंडन," उनकी मेज़बान ने कहा, "पुराने समय की याद में।" "मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगा," सिरिल ने उत्तर दिया। "मैं तो जंगल में रहकर बिल्कुल घिस गया हूँ, जबकि आप अपने महान गुरुओं से सीखकर तरोताजा हैं।"

 “अच्छा, तो,” महिला ने कहा, “आओ, ग्रेस, और गाओ। क्या

गाओगे? 'सुल आरिया?'" और उन्होंने मधुर युगल गीत को बड़े ही मनमोहक ढंग से गाया। सिरिल ने ग्रिसी और पर्सियानी को भी यही गीत गाते सुना था, लेकिन उसने सोचा, इतना आनंददायक पहले कभी नहीं सुना था। फिर "जियोर्नो डी' ओरोरे" गाया गया, और कई अन्य गीत भी, जिनमें से कुछ सिरिल के लिए नए थे; और कैम्पाना का एक गीत "डिम्मी चे म' अमी" भी। "तुम्हें टेनर बनना चाहिए, तुम्हें पता है," श्रीमती मोस्टिन ने कहा। "तुम्हें यह सीखना होगा—ग्रेस के साथ गाना, और मैं पद त्याग दूंगी।" फिर सिरिल ने मोजार्ट सोनाटा बजाया, और "विवि टीएन" और उनके कुछ पुराने गीत गाए; और अंत में, उन्होंने "नोर्मा" का प्यारा तिकड़ी गीत, "ओ डी क्वाल सेई" चुना, जिसमें श्रीमती मोस्टिन के घर जाने से पहले सिरिल हिस्सा लिया करते थे। लेकिन आवाज़ें थका देती हैं, और सुहावनी शामें खत्म हो जाती हैं। दरअसल, काफी देर हो चुकी थी; और जब उन्होंने तीनों के बारे में बात कर ली, तो सिरिल ने उन्हें शुभ रात्रि कहा और घर चला गया। सीता उसके पास आने पर नहीं जागी, लेकिन जब वह उसके ऊपर झुका तो उसने सीता के होठों पर एक प्यारी सी मुस्कान देखी। आंटी एला, जो छोटे पलंग के बगल में कालीन पर लेटी हुई थीं, जाग उठीं और अंगड़ाई ली, और सिरिल ने उन्हें चुप रहने का इशारा किया। "कितनी शांति से सो रही है, मेरी प्यारी," उसने मन ही मन कहा। "कितनी प्यारी लग रही है, और फिर भी ग्रेस और वह एक-दूसरे से कितने अलग हैं! क्या वे कभी मिलेंगी?" तभी सीता जाग उठी और बोली, "ओह, मैं अपने सपनों में कितनी खुश थी, सिरिल—मैं कितनी खुश थी! और अब तुम आखिरकार आ गए, और मैंने तुम्हारा तब तक इंतज़ार किया जब तक मेरी आँखें भारी नहीं हो गईं। और वे सपने तुम्हारे लिए अच्छे थे?" "बहुत-बहुत अच्छे," उसने जवाब दिया; "वे मेरे भाई-बहनों जैसे हैं। हाँ, सब कुछ बहुत अच्छा था।" और इस प्रकार, 1856 का क्रिसमस दिवस शांतिपूर्वक समाप्त हुआ। अध्याय XXIII. गुरु का फैसला, सीता से मिलने की अपार खुशी के बावजूद, आंटी एला के मन में एक गहरा दुःख था, जिसे वह सीता को बताने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं: और जो, उनके अनुसार, न केवल उनके भाई को, बल्कि उन सभी को बहुत गहराई से प्रभावित कर रहा था; और वह दुःख यह था। सिरिल द्वारा सीता को शाह गुंजे से ले जाने के कुछ ही समय बाद, सुनार जाति के गुरु, या आध्यात्मिक निर्देशक, शहर में आए और जातिगत विवादों और अनियमितताओं की अपनी सामान्य जांच शुरू की, जिसे करना और सुलझाना उनका विशेषाधिकार था।

 मेरे अंग्रेज़ पाठकों को शायद यह जानकारी न हो कि भारत की हिंदू जातियाँ, जिनमें ब्राह्मण और राजपूत सर्वोच्च हैं, साथ ही कई निम्न वर्ग, सभी निदेशकों या पुरोहितों के मार्गदर्शन और शासन के अधीन हैं। ये पुरोहित समय-समय पर अपने-अपने क्षेत्रों का दौरा करते हैं और अपने लोगों के धार्मिक और सामाजिक मामलों का विनियमन करते हैं। ब्राह्मण स्वामी वास्तव में आध्यात्मिक राजकुमार या पोप होते हैं और केवल वही अपने और निम्न जातियों को सर्वोच्च संस्कार प्रदान कर सकते हैं। निम्न जातियों के गुरु अपने-अपने स्तर पर स्वामियों के अधिक विद्वतापूर्ण निर्देशों का पालन करते हैं और कई मामलों में उनके प्रति उत्तरदायी होते हैं। जातिगत उपेक्षा या सामाजिक अनियमितता का कोई भी कार्य इन अधिकारियों की जानकारी से नहीं बचता; और जातिगत नियमों का कोई भी उल्लंघन या जानबूझकर अवहेलना करने पर उन्हें कड़ी सजा दी जाती है। इस प्रकार प्रत्येक जाति अपनी शुद्धता बनाए रखती है और अपने अनुयायियों के लिए, सामाजिक स्तर पर चाहे जो भी स्थान हो, गौरव का स्रोत बनती है। यह समझा जा सकता है कि सीता के विवाह जैसी घटना अज्ञात नहीं रह सकती थी; गुरु ने इसे इतना महत्वपूर्ण समझा कि जब उन्हें इसके बारे में पता चला तो उन्होंने बिना विलंब किए शाहगंज जाने का निश्चय किया। उन्हें विभिन्न कस्बों और गांवों के सुनारों के संघ के सदस्यों से इस विषय पर कई पत्र मिले थे, जो परिस्थितियों से अनभिज्ञ होने के कारण बहुत चिंतित थे; लेकिन सबसे अधिक आग्रहपूर्ण पत्र शाहगंज से ही आए थे। वहां जाति के कई सदस्यों ने विवाह समारोह में भाग लिया था और भोज में भी शामिल हुए थे; ब्राह्मणों ने भी भोजन किया था और विवाह समारोह का संचालन भी ब्राह्मणों ने ही किया था, इसलिए कोई खतरा नहीं था। हालांकि, अंतर यह था कि ब्राह्मणों के लिए भोजन उनके ही वर्ग के लोगों द्वारा पकाया गया था; जबकि सुनारों के लिए भोजन नरेंद्र के अपने घर में तैयार किया गया था। संभवतः, गोकुलपुर के राम दास नामक एक व्यक्ति के बिना, बाकी लोग—जिन्हें मंदिर के ब्राह्मण पुजारी और उनके साथियों का समर्थन प्राप्त था—इस मामले में कोई कदम नहीं उठाते और इसे बिना किसी चुनौती के आगे बढ़ने देते; क्योंकि नरेंद्र सर्वत्र सम्मानित और प्रिय व्यक्ति थे, और जातिगत प्रक्रियाओं और आवश्यकताओं का उनका ज्ञान इतना गहरा था कि गुरु ने स्वयं सामान्य स्थानीय विवादों के निपटारे का जिम्मा उन्हीं पर छोड़ दिया था। हालाँकि, राम दास प्रतिशोधी थे। उन्होंने सीता से विवाह का प्रस्ताव रखा था, जिसका मैंने विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया है कि यह

कब हुआ था, और नरेंद्र और सीता दोनों ने ही उनके प्रस्ताव को तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर दिया था। उन्होंने उस समय बदला लेने की कसम खाई थी, और सीता का...

गुरुओं का फैसला। 173 विवाह ने उन्हें एक ऐसा अनमोल अवसर प्रदान किया जिसे खोना नहीं चाहिए था। यह वही थे जिन्होंने गुरु को पत्र लिखकर उनसे जाति को अपमान और तिरस्कार से बचाने का आग्रह किया था, जो कि नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के पद के कारण और भी अधिक था। उन्होंने लिखा, "यदि नरेंद्र को दंडित नहीं किया गया, तो कौन हमें अपने पुत्र या पुत्री का विवाह देगा? मैंने उनके साथ भोजन नहीं किया, जैसा कि अन्य लोगों ने किया था, जो अब ऐसा करने पर पछता रहे हैं; लेकिन ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें आपके हाथों से शुद्धि का संस्कार प्राप्त किए बिना चैन नहीं मिलेगा।" नरेंद्र और वामुन भूत ने सुना कि गुरु को शाहगंज आने का निमंत्रण दिया गया है, और इसका कारण प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा था। उनके कई पड़ोसी, जो शाम की बातचीत या शतरंज खेलने के लिए नियमित रूप से आते थे, अब नहीं आते थे। यहां तक कि जो लोग व्यापार के सिलसिले में उनसे मिलने आते थे, वे भी प्रवेश करते या जाते समय अपवित्रता का संकेत देते हुए अपने वस्त्र समेट लेते थे। उनके कई बेहतरीन कारीगर और क्लर्क किसी न किसी बहाने से अनुपस्थित रहे, जिससे भारी असुविधा और कुछ बदनामी हुई। नरेंद्र को स्पष्ट था कि संकट आना तय था; यह ऐसा संकट था जिसमें उनका मित्र वामुन भूत बचाव तो कर सकता था, लेकिन भौतिक रूप से उनकी मदद नहीं कर सकता था; अंग्रेजी कानून का सहारा लेने का कोई फायदा नहीं था, और जब उनके धर्म के संस्कारों से उन्हें वंचित किया जाएगा, तो उनके गुरु और उनकी जाति के अलावा कोई और अधिकार उन्हें बहाल नहीं कर सकता था। यदि सिरिल इस समय शाहगंज में या उसके आस-पास होता, तो उसकी उपस्थिति नरेंद्र के पक्ष में एक मोड़ ला सकती थी; लेकिन वह लगभग सौ मील दूर था, और उसके लौटने की कोई संभावना नहीं थी। मुझे संदेह है, भले ही वह वहाँ होता, क्या नरेंद्र सिरिल से सहायता मांगता या स्वीकार करता; साथ ही, क्या सिरिल किसी भी रूप में हस्तक्षेप करता या कर सकता था। यदि इस प्रश्न का उत्तर देना ही था, तो बिना देरी किए इसका निपटारा करना बेहतर था। और यदि उसने जाति के मामले में गलती की थी, तो उसे दंड भुगतना होगा और उस अनुशासन का पालन करना होगा जिसे उसने स्वयं सैकड़ों बार पहले लागू करने में सहायता की

थी। ठीक उसी समय, सिरिल ने उसे पत्र लिखकर अनुरोध किया कि आंटी एला को नूरपुर भेजा जाए ताकि वह सीता से मिल सकें, जिसे वह क्रिसमस के लिए स्टेशन ले जाए और वह अपने साथ सीता के उन सभी पुराने पालतू जानवरों को भी ले आए जिन्हें सीता अक्सर याद करती थी; और वह चाहता था कि आंटी एला उनके आने से कुछ दिन पहले आ जाएं और यह सुनिश्चित कर लें कि नई कुटिया का शुद्धिकरण पूरा हो गया है। शायद मुझे जातिगत विवाद के विवरण देने की आवश्यकता नहीं है। यदि ऐसा कोई विषय भारत में किसी अंग्रेज न्यायाधीश के समक्ष आता है, तो वह उन कानूनों के अनुप्रयोग से भ्रमित हो जाता है जिन्हें किसी भी क़ानून ने कभी परिभाषित करने का प्रयास नहीं किया है—वे कानून और मिसालें जो

 लोकप्रिय रीति-रिवाज—जो वास्तव में कुछ मामलों में लिखित कानून से अधिक शक्तिशाली होते हैं, चाहे वह हिंदू हो या मुस्लिम। कुछ मामलों में, लिखित कानून अपनी प्रबल शक्ति से दूसरे कानून को निरस्त कर देता है, और यह न्यायसंगत भी होता है; लेकिन जातिगत विवाद में, लिखित कानून जातियों के बीच खान-पान, धार्मिक अनुष्ठानों के पालन या सामाजिक व्यवस्था के नियमों का निर्धारण नहीं करता। यह कार्य जातिगत रीति-रिवाजों द्वारा किया जाता है। नरेंद्र यह भलीभांति जानता था; और जब उसने अपनी बहन को नूरपुर भेजा, तो उसने अपरिहार्य परिणाम की प्रतीक्षा करने का निश्चय कर लिया था। जाति पंचायत में मामला उसके विरुद्ध गया। पुराने मुस्लिम गठबंधन के अस्तित्व का उसका तर्क व्यर्थ था; यह कहना भी व्यर्थ था कि उसने कानून में पारंगत ब्राह्मणों की सलाह पर कार्य किया था, और यह कहना कि उनके समुदाय में द्वितीय विवाह प्रथागत थी। गुरु, जो अपने तरीके से एक नेक इंसान थे, ने नरेंद्र से कहा कि उनसे खुद ही संपर्क किया जाना चाहिए था और इस तरह के असामान्य समारोह का निर्देशन केवल उन्हें ही करना चाहिए था। हालांकि ब्राह्मणों द्वारा व्याख्या किए जाने पर सामान्य कानून इस तरह के विवाह को वैध ठहरा सकता है, फिर भी यह जातिगत रीति-रिवाज का उल्लंघन था। नरेंद्र को तुरंत बनारस जाना होगा, गंगा में दोष को धोना होगा और शुद्धिकरण का प्रमाण पत्र लाना होगा। उन्हें जाति को जुर्माना भी देना होगा, जिसका उपयोग उनके लौटने पर एक भोज में और गरीबों को दान देने में किया जाएगा; और आंटी एला को भी शुद्धिकरण करवाना होगा। आंटी एला जानती थीं कि घर पर मुसीबत आने वाली है, और उन्होंने अपने भाई के साथ रहने और इस मुसीबत को सहने की अनुमति के लिए बहुत प्रार्थना की;

लेकिन वह उनकी बात सुनने को तैयार नहीं थे, “मैं जानता हूँ कि अगर वे मुझे दोषी ठहराते हैं तो क्या होगा,” उन्होंने कहा, “मुझे बनारस जाना होगा और तुम्हें भी साथ ले जाना होगा। लेकिन हे भगवान! यह कितनी बड़ी बदनामी होगी, और रामदास और बाकी लोगों के सामने जो अपमान होगा, उसे सहना कितना मुश्किल होगा।” “और यह सब उसकी गलती थी,” उसकी बहन ने जवाब दिया; “लेकिन सीता की वजह से ही हम अब भी सम्मानित हैं।” “चुप रहो! चुप रहो, औरत,” उसने सख्ती से जवाब दिया। “जिसने हमें बचाया, उसकी वजह से ही मैं मर गया होता, और वह एक बदमाश के हाथों अपमानित हो गई होती; अब वह मिस्टर ब्रैंडन की प्रिय पत्नी है, पूरे देश में सम्मानित है, और इस छोटी सी दुश्मनी के खत्म होने के बाद भी सम्मानित रहेगी। धैर्य रखो और देखते रहो, परिणाम ईश्वर की इच्छा के अनुसार होगा। वह हमारे बीच से चली गई है, लेकिन क्या हमें उससे कम प्यार करना चाहिए, बहन?” आंटी एला को यह कठोर फटकार अच्छी तरह याद थी, और उन्होंने अपने भाई के आदेशों का अक्षरशः पालन किया था; और सीता की खुशी और सिरिल द्वारा उसकी देखभाल के भरोसे, जिसका अब उनके पास प्रत्यक्ष प्रमाण था, आंटी एला को अब कोई संदेह नहीं था। “अगर

गुरु का वाक्य। 175 “हमें भी बनारस जाना पड़ेगा,” उसने मन ही मन कहा, “‘इसका क्या मतलब है? क्या मैं हर साल वहाँ जाने की बात नहीं कहती रही हूँ, और अब अगर समय आ गया है, तो अच्छा है; अगर नहीं, तो मैं सीता के साथ रह सकती हूँ।” इन सबके बावजूद, आंटी एला की चिंता और दुख कम नहीं हुए थे। यह सचमुच हो चुका था; क्योंकि नरेंद्र ने अपने खिलाफ फैसला सुनाए जाने के बाद शाहगंज में समय नहीं बिताया था। उन्होंने कुछ ही दिनों में अपने सारे काम निपटा लिए, अपने सभी पत्राचार करने वालों को पत्र लिखे, अपने मुख्य एजेंट और प्रबंधक को निर्देश दिए, और वामुन भूत और कई अन्य ब्राह्मणों को अपने खर्च पर साथ आने का निमंत्रण देकर, वे शाहगंज से निकल पड़े। जनमानस पूरी तरह से बैंकर के पक्ष में था; और राम दास की बुरी इच्छाएँ, जिसने खुद को यह समझा लिया था कि नरेंद्र श्री ब्रैंडन या न्यायाधीश से अपील करेगा और इस तरह खुद को और अधिक जातिगत अपमान में फंसा लेगा, फिलहाल पूरी नहीं हुईं। वे साल के आखिरी दिन नूरपुर पहुँचे, और नरेंद्र ने आंटी एला और सीता को यह खबर पहुँचाना नहीं भूला। सीता खुशी से झूम उठीं और दौड़कर आंटी एला की रसोई में गईं, और उनके गले लगकर रोने लगीं, 'वह आ

गया है, वह आ गया है! हे आंटी एला, जाओ! पालकी ले आओ!' और उसे यहाँ ले आओ; अब मेरे पास उसके लिए एक घर है; और मैं बहुत खुश हो जाऊँगी।" लेकिन जब आंटी एला फूट-फूटकर रोने लगीं, और सीता अचानक उनके दुख को देखकर हैरान रह गई, तो दुख भरी कहानी को और टाला नहीं जा सका, और सिसकियों से गला रुंधते हुए आंटी एला ने सब कुछ बता दिया। यह सब कुछ नहीं था, लेकिन उनके भाई के अचानक आने का कारण बताने के लिए काफी था। सीता इतनी क्रोधित थी कि रो भी नहीं सकी; उसका हौसला, जैसा कि हमेशा आपातकाल में होता था, बढ़ गया, और उसने गुरुओं द्वारा किए गए अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। "यह सब उस एक बुरे आदमी का किया-धरा है जिसने हरी दास की हत्या करवाई," उसने कहा, "और अंग्रेज अंत में न्याय करेंगे। हम अपवित्र! खैर, वह समय आएगा—हाँ, वह आएगा, मुझे पता है—जब राम दास को वे काले पानी के पार भेज देंगे।" अगर सिरिल घर पर होता तो सीता तुरंत उसके पास उड़कर चली जाती; लेकिन वह अपनी कुचेरी में अनुपस्थित था, और चाची एला के शांत होने पर उन्हें पालकी में बिठाकर सीता दोनों के आने का इंतजार करने लगी। शुरुआती उत्तेजना शांत होने के बाद सीता सोचने लगी। क्या वे सचमुच अपवित्र हो गए थे और अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा खो बैठे थे? उसे पुराने दिनों की याद आई, जब उसके दादा, जिनका सभी सम्मान करते थे, न केवल शाहगंज में बल्कि पूरे देश में जाति के मुखिया थे। लोग अपनी परेशानियाँ कैसे लेकर आते थे।

176 सीता., उन्होंने सभी के साथ दृढ़ लेकिन दयालुता से न्याय किया। उनकी दैनिक पूजा और उनके धर्म के सभी समारोह और त्यौहार कैसे संपन्न होते थे। उनका दान कितना विशाल और उदार था! और अब उन पर कलंक का धब्बा लग गया था, जिसे केवल सार्वजनिक और महंगे प्रायश्चित से ही मिटाया जा सकता था। जब वह एक घंटे या उससे अधिक समय तक अकेले में इन सब बातों के बारे में सोचती रही, तो यह भावना, बल्कि यह निश्चितता कि उसकी अपनी मनमानी, उसके अपने आवेश ने ही इस दुर्भाग्य का कारण बनाया है, उस पर हावी हो गई, और गर्म रक्त उसके हृदय से उसके माथे, गालों और गर्दन तक आग की लपटों की तरह दौड़ गया, उसे झुलसाता हुआ, जब तक कि उसने अपना चेहरा अपने हाथों में नहीं छिपा लिया और सांस लेने के लिए हांफने लगी। कुछ समय पहले, इसी तरह की भावना ने उसे कंपकंपा देने वाला भय पैदा कर दिया था कि उसके पति का स्पर्श जहर है; कि वह उनसे अपवित्र

हो गई है; और ये विचार दुगनी ताकत के साथ उसके पास लौट आए। तब उसने उनके प्रेम पर भरोसा करते हुए, अपने विश्वास पर भरोसा करते हुए, उन्हें खुद से दूर कर दिया था; लेकिन अब वे हार मानने को तैयार नहीं थे। मानो उसकी आत्मा उसे पुकार रही हो कि उठो, और आगे के प्रलोभन और पाप से दूर भाग जाओ, तुरंत बनारस चले जाओ, और वहाँ प्रायश्चित करके अपने पापों का प्रायश्चित कर लो! यकीनन उसके दादाजी उसे ले जाएँगे, और वे सब शाहगंज लौटकर पुराने सरल जीवन में रह सकेंगे। क्या फर्क पड़ता है अगर उसे कष्ट सहना पड़े, क्या फर्क पड़ता है अगर वह मर जाए, कम से कम वह पवित्र होकर मरेगी, और उन पर कोई कलंक नहीं लगेगा। "बस वह आ जाए," वह जोर से बोली, "और मैं उसे सब कुछ बता दूँगी; सिरिल मुझे रिहा कर देगा, और मैं चली जाऊँगी, और सब कुछ अतीत का एक सपना बनकर रह जाएगा।" जैसे ही उसने ये कहा, सिरिल मुस्कुराते हुए उसके सामने खड़ा हो गया। "तुम किससे बात कर रही हो, स्केता? अतीत का सपना क्या होता है? तुम्हें ये अपनी किताबों में कहाँ मिला? क्या बात है?" वह चिंतित होकर पूछता रहा, क्योंकि अब वह उसका सफेद, डरा हुआ चेहरा और खूनहीन होंठ देख रहा था। "तुम्हें क्या हो गया है, नन्ही बच्ची? तुम बीमार तो नहीं हो?" "आंटी एला, जल्दी इधर आओ," वह चिल्लाया। "उसे मत बुलाओ," सीता ने बेमन से कहा, "वह मेरे दादाजी को लेने गई हैं; मैं अकेली हूँ।" "तुम्हारे दादाजी! अरे, वह तो शाहगंज में हैं; सीता, तुम बीमार हो या सपना देख रही हो। मेरी प्यारी, क्या हुआ है? मुझे बताओ।" और वह नीचे वाले दीवान पर बैठ गया और उसे अपनी ओर खींच लिया। कुछ देर तक उसने विरोध किया और कांपते हुए उससे दूर हट गई; लेकिन उसका प्यार इतना प्रबल था कि वह तनाव सहन नहीं कर सकी और उसकी फैली हुई बाहों में गिर पड़ी और उसकी छाती पर लेट गई, अभी भी कांप रही थी; लेकिन जैसे ही वह उसके ऊपर झुका, उसके माथे से बाल हटाए और उसे चूमा, वह और भी कसकर उससे लिपट गई। वह सच्चा, स्नेही हृदय उससे अलग नहीं हो सका।

गुरु का फैसला। 177 उसे, और जैसे-जैसे वह अपने पति से और अधिक लिपटती गई, उसके भीतर व्याप्त भय धीरे-धीरे कम होने लगा। फिर भी वह बोल नहीं पा रही थी; उसका गला रुंध गया था, और मानसिक संघर्ष की तीव्रता से उसका मुँह सूख गया था। सिरिल ने उससे बात करने, उसे बताने कि उसे क्या तकलीफ है, किस बात ने उसे डराया है, या क्या किसी ने उससे अभद्रता से बात की है, के लिए विनती की,

लेकिन सब व्यर्थ था; और उसका चेहरा उस भयानक आदमी के बारे में सोचकर लाल हो गया जो शायद आसपास घूम रहा था और उसे धमका रहा था। फिर उसने उसे अपनी बाहों में उठाया और अंदर के कमरे में ले जाकर उसके छोटे पलंग पर लिटा दिया, और भीमसे को बुलाने के लिए आंगन में चला गया। "क्या यहाँ कोई आया था?" उसने पूछा; "क्या आपकी मालकिन बगीचे में टहल रही थीं?" "नहीं," उसने कहा, "कोई नहीं, और मेरी मालकिन आज बगीचे में नहीं गईं; चाची एला के पालकी में जाने के बाद वह अकेली थीं।" मैं यहाँ खाना बना रही हूँ, क्योंकि उन्होंने कहा था कि नरेंद्र के लिए और खाने की ज़रूरत होगी। “यह तो बहुत रहस्यमय है,” सिरिल ने सोचा; “क्या हुआ होगा? अपनी मालकिन को थोड़ा ठंडा पानी लाओ,” उसने आगे कहा, “वह ठीक नहीं हैं; और वह महिला सीता का चाँदी का प्याला हाथ में लिए उसके पीछे-पीछे चली गई। “सीता,” वह चिल्लाया, “ऊपर देखो, नन्ही बच्ची, थोड़ा पानी पी लो, और मुझे बताओ कि तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है। वह यहाँ नहीं आया—वह बदमाश जो भाग गया?” सीता उठी और घबराकर इधर-उधर देखने लगी; सिरिल को लगा, जैसे ही उसने धीरे-धीरे अपने हाथों से अपनी आँखें ढकीं, कि उसे पता ही नहीं चल रहा था कि वह कहाँ है; लेकिन भीमी ने उसे प्याला दिया, और उसने कुछ घूंट पिए, जिससे उसे घुटन सी महसूस हुई। फिर उसने सिरिल को देखा, और अपनी बाहें उसकी ओर फैलाकर रोते हुए कहा: “ओह, मैं नहीं जाऊँगी, मैं नहीं जाऊँगी; उन्हें मुझे तुमसे दूर मत ले जाने दो, सिरिल, नहीं तो मैं मर जाऊँगी!” “कोई तुम्हें दूर नहीं ले जा सकता, मेरी प्यारी,” उसने कोमल स्वर में कहा। “डरो मत।” “काश वो रो पाती!” सिरिल ने सोचा। “उसके चेहरे पर वही कठोर भाव है जो मुझे तब याद है जब उसने पहली बार मुझे अपनी दुख भरी कहानी सुनाई थी; और आँसू ही उसे राहत दे सकते हैं। वो बिल्कुल बेहाल है।” इसलिए उसने उसका सिर फिर से अपनी छाती पर रख दिया और उसे ऐसे थपथपाया जैसे किसी थके और चिड़चिड़े बच्चे को थपथपाता है। तभी उसने देखा कि उसकी बंद आँखों से चुपचाप आँसू टपक रहे हैं और उसके हाथों पर गिर रहे हैं—वे मौन आँसू जो कोई दर्द नहीं देते; और फिर उसने लगभग फुसफुसाते हुए, मानो खुद से कहा, “मैं नहीं जाऊँगी। अगर मैं अपवित्र हूँ, तो मैं उसके साथ हूँ, जीने और मरने के लिए।” और उसका चेहरा शांत हो गया, कठोरता की लकीरें धीरे-धीरे गायब हो गईं, उसके गालों और माथे पर गुलाबी रंगत फैल गई, और उसने उसे धीमी आवाज़ में कहते सुना, “सिरिल, सिरिल, मेरे पास

आओ!" जाहिर है, उसे पता नहीं था कि वह कहाँ है।
178 सीता। "मैं यहाँ हूँ, सीता," उसने कहा। "ऊपर देखो, मेरी प्यारी।" और उसने उसे चूमा। उसने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं, और एक पल के लिए; उनकी अर्थहीन निगाहों ने उसे अचानक दर्द पहुँचाया, लेकिन केवल एक क्षण के लिए। जैसे ही उसकी आँखें बंद हुईं, वह बोली। "मुझे एक भयानक सपना आया है," उसने फिर से उससे लिपटते हुए और अपना चेहरा उसकी छाती में छिपाते हुए कहा, "मैंने क्या कहा, सिरिल? क्या मैंने कुछ कहा?" "तुमने कहा था कि तुम मुझे नहीं छोड़ोगी; वे तुम्हें नहीं ले जा सकते। तुम्हें किसने डराया है, सीता?" उसने गंभीरता से पूछा। "चलो, अब तुम बेहतर हो। बैठो, और मुझे सब कुछ बताओ।" "नहीं," उसने उत्तर दिया, "केवल यहीं, केवल यहीं, तुम्हारी छाती पर। अब मेरे पास इसके अलावा कोई सहारा नहीं है।" और उसने उसे वह सब बताया जो उसने अपनी चाची से सुना था। "वे अभी वापस आ जाएँगे," उसने आगे कहा, "और दादाजी आपको बाकी बातें बताएँगे।" जे ने सोचा— सिरिल, मैंने सोचा कि मुझे उनके साथ बनारस चले जाना चाहिए और कभी तुम्हारे पास वापस नहीं आना चाहिए। मैं बिल्कुल अकेली थी और कुछ भयानक ख्याल मुझे घेर रहे थे, यहाँ तक कि मैं पागल सी हो गई थी। मैंने तुम्हें आते देखा; और मुझे इसके अलावा कुछ याद नहीं है, बस इतना याद है कि मुझे लगा कि वे मुझे ले जाना चाहते हैं; और यह मूर्खता थी, सिरिल, क्योंकि क्या उन्होंने मुझे तुम्हें नहीं सौंपा था? फिर उन्होंने उसे शांत किया और उसे अपना चेहरा धोने और अपने दादाजी को घर, प्रार्थना कक्ष और बगीचा दिखाने के लिए तैयार रहने को कहा। "और मैं उन्हें बंगले में ले जाकर बाद में उनसे बात करूँगा," उन्होंने कहा। कुछ ही देर में नरेंद्र आ गए। वह और पुजारी शहर से आराम से पैदल आए थे और आंटी एला पालकी में उनके पीछे आ रही थीं। सीता और उनके दादाजी के बीच एक प्रेमपूर्ण मुलाकात हुई। मंदिर में दादाजी ने सीता का हाथ उनके पति के हाथ में दिया था और उन्हें विदा किया था, तब से वे एक-दूसरे से नहीं मिले थे। जब नरेंद्र कुटिया में दाखिल हुए और चारों ओर देखा, तो सेक्टा ने उनके चरणों में झुककर आदरपूर्वक उन्हें छुआ। शायद यह उनके लिए कुछ ज़्यादा ही अंग्रेज़ी थी, क्योंकि जब वह उन्हें प्रार्थना कक्ष में ले गईं, तो उन्होंने आह भरी। वहाँ उन्होंने वेदी के सामने सिर झुकाया और पवित्र अग्नि से कुछ राख लेकर अपने माथे पर मल ली, ठीक वैसे ही जैसे वह घर पर करते थे। फिर वह उन्हें आँगन में ले गईं और उन्हें भीमी को रसोई में व्यस्त दिखाया, और सफेद संगमरमर का सुंदर स्नानघर,

और पुराने पालतू जानवर, जो सभी उन्हें जानते थे और उनका अभिवादन करते थे; मैना कर्कश स्वर में चिल्लाई, "नमुस्कर महाराज!" "रामचुंद्रा!" ठीक वैसे ही जैसे उनके पुराने लेखाकार चिल्लाते थे, जैसे वह रोज़ कार्यालय में आते और बैठते थे। "क्या यह घर जैसा नहीं है, दादाजी?" उसने कहा। लेकिन नरेंद्र ने अपना सिर हिलाया। "तुम्हारा घर, बच्चे, अब मेरा नहीं," उन्होंने उदास होकर कहा। "मौसी एला कहती हैं कि उन्होंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है; लेकिन यह केवल हमसे संबंधित है, तुमसे नहीं, इसलिए सांत्वना लो।"

गुरु का वाक्य 179 वामुन भूत को यह सब जगह दिखाओ, और वह भविष्य में ज़रूरत पड़ने पर इससे बात कर सकेगा। अब चलो श्री ब्रैंडन के पास चलते हैं। मुझे उनसे बहुत कुछ कहना है, और मैं जल्दी लौट आऊँगी।" "और आप शाम के भोजन के लिए वापस आएँगे, दादाजी?" उसने खुशी से कहा। "नहीं," उन्होंने कहा, "अभी नहीं, सीता। जब तक मैं शुद्ध नहीं हो जाता, मैं न तो तुम्हारे साथ खा सकता हूँ, न पी सकता हूँ, न तुम्हारे घर में बैठ सकता हूँ। तुम मुझ पर और मुसीबत नहीं लाओगी, मेरी प्यारी! क्यों, मैं तुम्हें भी अपवित्र कर दूँगा।" बेचारी सीता! उसकी सारी मुसीबतें मानो फिर से ताज़ा हो गईं, और वह अपने आँसू नहीं रोक पाई। उसने बस नम्रता से कहा, "आप सबसे बेहतर जानते हैं, दादाजी। जब आप और चाची एला वापस आएँगे तो हम खुश होंगे, और मैं आपसे मिलने शाहगंज आऊँगी।" फिर, सीता को पुजारी के पास छोड़कर, और उसे दिलासा देने के लिए धीरे से कुछ कहते हुए, नरेंद्र सिरिल के पास गए। दोनों ने काफी देर तक गंभीर बातचीत की। नरेंद्र ने सिरिल को उनकी नियुक्ति पर बधाई दी, जिससे सभी लोग प्रसन्न हुए थे। उन्होंने सिरिल को बताया कि उन्होंने गुरु के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है ताकि विवाद और बड़े झगड़े से बचा जा सके; और बनारस की तीर्थयात्रा के बारे में, वे कई कारणों से प्रसन्न थे, धार्मिक कारणों से भी और मिर्जापुर में उनके बढ़ते व्यवसाय के कारण भी। उन्हें रेलमार्ग भी देखना था, जिसके बारे में हर कोई आश्चर्य की बात कर रहा था; और चाची एला ने लंबे समय से एक मन्नत मानी थी जिसे पूरा करना था—उन्हें अपनी उम्र और विधवापन के अनुरूप रीति-रिवाज निभाने थे। "लेकिन," बूढ़े ने आगे कहा, "सीता के बारे में चिंता मत करो, और उसे अपवित्रता के विचारों से परेशान मत होने दो। उसकी जाति पहले जैसी ही अच्छी है, और वह इतनी स्वाभिमानी और पवित्र है कि उसे बनाए रखेगी। पंचायत ने कभी उसका जिक्र नहीं किया, कभी मुझे उससे मिलने से

नहीं रोका; और वे हिम्मत नहीं करेंगे, महोदय, आपकी पत्नी को परेशान करने की। मैंने अभी-अभी खुद बच्चे को परेशान किया है," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "क्योंकि मैं बैठा नहीं, और न ही उसने मेरे लिए जो खाना बनाया था, उसे खाया; लेकिन नए जोखिम उठाने में कोई बुराई नहीं है। मुझे लगता है कि वह खुद यह देख रही है; और मैं आपके घर से जाने से पहले उससे फिर मिलूंगा।" "अब आप सचमुच बनारस जा रहे हैं," सिरिल ने कहा। "मैं आपसे एक बड़ा काम करवाना चाहता हूं, और मैं आपसे औपचारिक रूप से नहीं, बल्कि एक मित्र के रूप में बात कर रहा हूं। श्री मोस्टिन ने मुझे कुछ अजीब अफवाहें बताई हैं जो उन्होंने बनारस में अपने पुराने पंडित से सुनी थीं, ठीक उसी विषय के बारे में जिस पर आप जा रहे हैं—जाति।" "जी महोदय, मुझे पहले से ही पता है," नरेंद्र ने उन्हें रोकते हुए कहा; "मिर्जापुर में मेरे संवाददाता ने मुझे कुछ दिन पहले ये अफवाहें लिखी थीं।" "और क्या वे उन पर विश्वास करते हैं?" सिरिल ने पूछा।

180 सीता। "मुझसे ज़्यादा नहीं," बूढ़े बैंकर ने गुस्से से कहा। "हम, जो ब्रिटिश सरकार के अधीन अमीर हुए हैं और और भी अमीर होते जा रहे हैं, अपनी जाति को लेकर निश्चिंत हैं।" "मुझे पूरा यकीन है, मेरे दोस्त," सिरिल ने उत्तर दिया, "और हमेशा रहेंगे; लेकिन मैं चाहूँगा कि आप पता करें कि श्री मोस्टिन ने जो सुना है—वह सच है—वह सच है—वह सच है या नहीं; या कम से कम, क्या ऐसी अफवाहें कहीं मौजूद हैं। संक्षेप में, नरेंद्र, जितना हो सके पता लगाएँ; यह हमारे लिए और सरकार के लिए उपयोगी हो सकता है; और मुझे खुद लिखें—आप जानते हैं कि मैं और सीता मिलकर आपका पूरा पत्र समझ सकते हैं।" "मैं लिखूँगा," उन्होंने आह भरते हुए कहा; "मुझे केवल इस बात का अफसोस है कि इसकी आवश्यकता है। मैं कल सुबह जल्दी निकल रहा हूँ, और अब आपको विदाई देता हूँ। एक बूढ़े आदमी का आशीर्वाद फिर से लें, महोदय," उन्होंने आगे कहा, "और इस गुस्ताखी के लिए मुझे क्षमा करें।" और उन्होंने सिरिल के सिर पर हाथ रख दिया। "ईश्वर आपको और सीता को सुरक्षित रखे!" श्री ब्रैंडन, आप उनके प्रति बहुत दयालु रहे हैं, बहुत दयालु; और अब मैं और कुछ नहीं कह सकती। मुझे उनके पास जाने दीजिए, और उन्हें वह सब बताइए जो मैं महसूस करती हूँ, लेकिन आपसे व्यक्त नहीं कर सकती। अध्याय 24. मिचिंग मालेको, "मेरी प्यारी सहेलियों," श्रीमती स्मिथ ने 1 जनवरी, 1857 को नए साल की शुभकामनाओं और चुंबनों के आदान-प्रदान के बाद अपनी दो सहेलियों से कहा, "उस

औरत को पाना सचमुच नामुमकिन है; मेरी आया कई बार घर जा चुकी हैं, लेकिन मेरी मालकिन की इतनी कड़ी सुरक्षा की जाती है जैसे किसी मुसलमान की पत्नी की, और वहाँ के लोगों ने मेरी आया से साफ कह दिया है कि अगर वह फिर से इधर-उधर घूमने की कोशिश करेगी, तो वे उसे पहरे में डाल देंगे। मैंने सुना है कि मालकिन के साथ एक बूढ़ी चाची भी हैं, जो बहुत तेज दिमाग वाली हैं; लेकिन मैं अभी हार नहीं मानूंगी," उन्होंने आगे कहा, "नहीं, मेरी प्यारी सहेलियों, अगर वह मुझसे बच निकली तो बहुत तेज दिमाग वाली होगी। लेकिन क्या आप जानती हैं कि वे सब कितनी बुरी हालत में हैं? यह सचमुच बहुत मजेदार है।" “गड़बड़?” दोस्तों ने हैरानी से कहा, “तो मुझे यकीन है कि मोस्टिन परिवार ने उसे वहाँ से भगा दिया होगा; वे भला ऐसी प्राणी को अपने आस-पास कैसे रहने दे सकते हैं?” “बिल्कुल नहीं, मेरी प्यारी,” श्रीमती स्मिथ ने आगे कहा; “उन्होंने अपनी औकात खो दी है। हा! हा! हा! है ना कमाल की बात?” “और उनके साथ यही होना चाहिए,” श्रीमती होम ने कहा; “लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला, जेन?” “अरे, मेरी आया, तुम्हें पता है, शहर में एक सुनार की पत्नी की बहुत अच्छी दोस्त हैं; और उन्होंने कल उन्हें बताया था कि
मिचिंग मालेचो 181: मैडम के दादाजी, जो वास्तव में एक बड़े बैंकर हैं, उनके परिवार के सदस्य थे, लेकिन उन्हें परिवार से निकाल दिया गया है और उन्हें बनारस जाकर प्रायश्चित करना होगा और उस लड़की के कारण हुए पाप को धोना होगा। सचमुच, इतने सम्मानित व्यक्ति को ऐसी स्थिति में देखना बहुत दुखद है, और वह भी हमारे 'कमिश्नर' के कारण। स्थानीय लोग क्या कहेंगे! स्मिथ ने मुझे बताया कि सिपाही भी, जब उन्हें इसके बारे में पता चलेगा, तो बहुत हिंसक हो जाएंगे और उन्हें काबू में नहीं किया जा सकेगा; संक्षेप में, कल उसने जो कुछ कहा, उससे मैं बहुत डर गई थी। "किस बारे में?" उसके दोस्तों ने आशंका से पूछा। "ओह, नई एनफील्ड राइफलों, कारतूसों और बैराकौर और दीनापुर और आधा दर्जन अन्य स्थानों पर सिपाहियों के 'स्वभाव' के बारे में - यही शब्द उसने इस्तेमाल किया था। मुझे यकीन है कि उन्हें इसकी जरा भी परवाह नहीं है, आप जानते हैं; लेकिन स्मिथ ने ऐसा कहा था, इसलिए मैंने उस बात और बैंकर वाली बात को एक साथ जोड़ दिया, और अगर हम ऐसा करते हैं, मेरी प्यारी बहनों, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि बेचारे स्थानीय लोग नाराज हो जाएं और इससे भी बुरा करें! खैर, मैं कल रात स्मिथ के बिस्तर पर आने तक इसी बारे में सोच रही थी; आप जानती हैं कि वह आजकल खूब पढ़ रहा है और

देर रात तक जागता रहता है; और मुझे उस भयानक प्राणी से छुटकारा पाने की एक योजना सूझी, और वह यह है। लेकिन क्या मैं आप दोनों पर भरोसा कर सकती हूँ?" "बताओ तो सही!" श्रीमती टोम ने कहा। "ओह जेन! यह सोचकर दुख होता है कि तुम मुझ पर भरोसा नहीं कर सकतीं।" "अरे!" श्रीमती जोन्स ने कहा, जिन्होंने एक आंसू पोंछा; वह बहुत ही संवेदनशील महिला थीं। "ठीक है, अब तुम वादा करो, मैं तुम दोनों को बताती हूँ कि मैंने क्या सोचा; और वो ये है कि उन दोनों को अलग कर दिया जाए। मिस्टर ब्रैंडन उस लड़की के लिए चाहे जितने पागल हों (और मर्द इतने पागल हो जाते हैं, हे भगवान!), और वो उन्हें किसी भी हद तक बेवकूफ बना रही है; लेकिन अगर उनका झगड़ा हो गया, तो तुम जानती हो, वो एक तरफ जाएगा और वो दूसरी तरफ, और फिर मामला सुलझ जाएगा, और मुझे यकीन है कि लेडी हिल्टन मुझ पर, एक बेचारी छोटी सी चूहे पर, शेर का जाल काटने पर बहुत-बहुत आभारी होंगी!" "बिल्कुल भी दखल देना बहुत बुरा लगता है," छोटी मिसेज जोन्स ने कहा, जिनके मन में शायद उस अजीब प्रेम प्रसंग के लिए थोड़ी सहानुभूति थी, जो उन्हें काफी रोमांटिक लगता था। "अरे, भगवान भला करे, बिलकुल नहीं; क्या तुम्हें लगता है, प्यारी मारिया, कि मैं कोई बुरा काम करूँगी?" मिसेज स्मिथ ने ताना मारते हुए कहा: "अगर तुम ऐसी बकवास सोचती हो, तो बेहतर होगा कि मैं अभी चुप रहूँ।" "चुप रहो, जेन," मिसेज होम ने प्यार से कहा; "जेन, तुम जानती हो कि मैं तुम्हारे हर काम की बहुत सराहना करता हूँ, और अगर वह नीच आदमी चला जाए, तो हमारे बीच फिर से वही प्यारे मिस्टर ब्रैंडन होंगे जैसे वे पहले हुआ करते थे; हमने उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया है और हिल्स (मिसेज ट्लोम ने कहा) और मेसेज़ ने भी, लेकिन वह कहीं नहीं जा रहे हैं।"

182 सीता। "मेरी प्यारी, मोस्टिन परिवार को छोड़कर," श्रीमती स्मिथ ने शायद कुछ द्वेषपूर्ण ढंग से कहा; "वह हमेशा वहीं रहता है, सिवाय तब जब वह उस लड़की के साथ अभद्र तरीके से घूमता है। अगर पुरुषों को काली 'साथी' रखनी ही हैं, तो उन्हें उन्हें अपने तक ही सीमित रखना चाहिए, न कि उन्हें हमारी नाक के नीचे थोपना चाहिए। मुझे यह सोचकर ही घिन आती है। जब मैं उन्हें शीशे से देखती हूँ, और उस सुंदर युवक को उसके कंधे पर हाथ रखे और उन दोनों को बच्चों की तरह हँसते हुए देखती हूँ, तो मुझे घिन आती है।" "लेकिन मुझे लगा कि वह उसकी पत्नी है," श्रीमती जोन्स ने दबी आवाज़ में कहा। "आपने कहा था कि वह शादीशुदा है, जेन, और जोन्स

भी मुझे यही कहती है, और यह ठीक है।" "वह उतनी ही उसकी पत्नी है जितनी तुम हो, मारिया!" श्रीमती स्मिथ ने उत्तर दिया; “क्या वह है, सुसान? वह शादी तो गंगा में बह जाएगी, और इसीलिए बैंकर वहाँ जा रहा है। और सुनो, वह—वह औरत—बहुत अमीर है, मैंने सुना है, और अगर वह अपने दादा के पास वापस चली गई, तो वह उसका पैसा ले लेंगे, और अगर उसके—बच्चे हैं, तो वह उसे छू भी नहीं सकते। क्या तुम नहीं समझती?” “तो फिर क्या बात है?” श्रीमती होम ने पूछा। “ओह मारिया, यह कितना भयानक होगा! क्या तुम पता नहीं लगा सकती, जेन?” “अगर तुम दोनों थोड़ा धैर्य रखोगी, तो मैं पूरी कोशिश करूंगी; लेकिन जब उस खतरे की संभावना है तो हमें देरी क्यों करनी चाहिए? मेरी योजना यह है कि उसे बताया जाए कि उसकी शादी होने वाली है।” “शादी! और किससे?” श्रीमती होम चिल्लाईं। “मुझे यकीन है कि मैं अपनी बेचारी बच्ची को ऐसी खबर के साथ कभी नहीं जुड़ने दूंगी, और अगर ऐसा हुआ तो डॉक्टर बहुत गुस्सा होंगे।” “क्या तुम्हें लगता है कि मैं इतनी बेवकूफ हूँ, सुसान,” उसकी सहेली ने जवाब दिया, “कि मैं नाम बताऊँ? ‘दो बातें सुनो: यहाँ दो बहुत अच्छी कुंवारी लड़कियाँ हैं, प्यारी लूसी और ग्रेस मोस्टिन; जहाँ तक बेचारी हैरियट क्ले की बात है, मैंने उसे तो सवाल से ही बाहर कर दिया है; और एक बहुत अच्छा, बहुत सुंदर, बहुत योग्य नौजवान है, एक बेहतरीन लड़का, जिसके पास एक अच्छी नौकरी है, एक उपाधि है, और शायद एक दिन वह लॉर्ड बन जाए—जो, मान लीजिए, एक पत्नी चाहता है। खैर, हमें इस पर तब तक विश्वास नहीं करना चाहिए जब तक हमें पक्का पता न चल जाए; लेकिन मान लीजिए कि बाजार में यह अफवाह फैल गई कि उसकी शादी होने वाली है, किसी का नाम लेने की जरूरत नहीं है, और बेशक वह सुन लेगी!” “और अगर उसने सुन भी लिया, तो उसे क्या फर्क पड़ेगा?” श्रीमती जोन्स ने कहा। “मुझे यकीन है कि जब हम हिल्स में थे तब जोन्स के बारे में पचास अफवाहें थीं, लेकिन मुझे परवाह नहीं थी, मुझे पता था कि मैंने उसे पा लिया है —सुरक्षित, सुरक्षित—मैंने झूठ पर विश्वास नहीं किया, और अगर वह उससे प्यार करती है तो वह भी नहीं करेगी!” “लेकिन वो ऐसा करेगी, तुम देखोगे, मेरे प्यारे बच्चों! हमारे और यहाँ के लोगों में बहुत फर्क है,” श्रीमती स्मिथ ने गुस्से में जवाब दिया।

मिचिंग मेलीको। 183 आत्मविश्वास से। “मुझे यकीन है कि वह लड़की एक घमंडी, ईर्ष्यालु छोटी सी चीज़ है, और जब उसे उसके बारे में पता चलेगा, तो वह बस

उछलकर भाग जाएगी, और वह उसके लिए सीटी बजा सकता है।" "हाँ, मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ, जेन," श्रीमती होम ने कहा; "हमें उस प्यारे से नौजवान को उन चालाक आदिवासियों से बचाने के लिए कुछ भी करना चाहिए जो वह उसके आसपास इकट्ठा करेंगी।" "मुझे ऐसा नहीं लगता," श्रीमती जोन्स ने टिप्पणी की; "लेकिन बेशक तुम दोनों जो चाहो कर सकती हो। मैं इसमें कोई दखल नहीं दूंगी।" "तो मैं वही करूंगी जो मुझे पसंद है, मेरी प्यारी बच्चियों; और जब काली दुल्हन चली जाएगी, तो तुम मुझे धन्यवाद देना कि एक गोरी दुल्हन के लिए जगह होगी," श्रीमती स्मिथ ने कहा। "लेकिन वह काली तो नहीं है, है ना, जेन?" श्रीमती जोन्स ने पूछा, जो बायरन की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं और उन्हें पूरा यकीन था कि सेक्टा, हाइडी या गुलनारे जितनी ही खूबसूरत होगी। "नहीं, वह हम सब की तरह ही गोरी है, और बहुत सुंदर भी है," श्रीमती स्मिथ ने कहा; "कम से कम शीशे में तो ऐसा ही लग रहा था; लेकिन वह तो देसी है, और वे सब नीग्रो हैं, और—और—मुझे उनसे नफरत है—बस इतना ही। आज शाम मोस्टिन के घर कौन जा रहा है?" "हम वहाँ खाना खाएंगे," श्रीमती होम ने कहा, "और लूसी शाम को आएगी। मुझे लगता है कि स्टेशन के सभी लोगों को बुलाया गया है।" "और मुझे यकीन है कि वहाँ नाच भी होगा," श्रीमती जोन्स ने कहा, "क्योंकि मैंने जोन्स को बैंडमास्टर को संगीत के बारे में बताते हुए सुना था।" इसलिए मुझे लगता है कि हम इन दोस्तों को उनके हाल पर छोड़ दें और अपने कुछ अन्य लोगों की देखभाल करें। नूरपुर में वह एक सुहावना दिन था; दिन भर स्टेशन के आसपास आने-जाने वालों द्वारा गाड़ियाँ और बग्गियाँ चलाई जा रही थीं; नौजवान अपने सबसे अच्छे और साफ-सुथरे कपड़ों में "इज्जत दिखा रहे थे", जैसा कि वे इसे कहते थे; ब्रिगेडियर, श्री मोस्टिन और सिरिल ब्रैंडन जैसे अधिकारियों को उनके अधीनस्थ अधिकारियों और क्लर्कों से बधाई संदेश मिले; और बादाम और मिश्री से भरी थालियाँ, फूलों की मालाओं के साथ, दो श्विष्टदारों, बाजार के बैंकरों और छावनी के व्यापारियों द्वारा भेंट की गईं; और दानदाताओं और प्राप्तकर्ताओं द्वारा संक्षिप्त और सुंदर भाषण दिए गए। नवाब दिल खान बहादुर भी आने-जाने और बधाई देने में व्यस्त थे; और दिन भर उनके हाथियों की घंटियों की झंकार पूरे शहर और छावनी में सुनाई दे रही थी। ब्रिगेडियर ने सिरिल को उन मुलाकातों के बारे में नहीं बताया था जिनके बारे में हमें पता है, न ही नवाब की दुर्भावना के बारे में, और सिरिल ने उनका स्वागत किया। जितनी शालीनता वह जुटा सकता था, उसने कहा, और शायद उसे नवाब

सामान्य से कुछ अधिक ही उद्दंड और अभिमानी लगा, और उसके चले जाने पर उसे खुशी हुई। फिर सिरिल, मोस्टिन के बगीचे से होते हुए घर की ओर टहलते हुए गया, यह देखने के लिए कि सुबह उसने जिन सदाबहार पौधों को व्यवस्थित करने में मदद की थी, वे ठीक से लगाए गए हैं या नहीं; और श्रीमती मोस्टिन ने जोर देकर कहा कि उसे एक-दो चीजों का अभ्यास करना चाहिए।

184 सीता, उन्हें। "हम आपको टिफिन के लिए नहीं बुलाएँगे," उसने कहा, "क्योंकि हम सब बहुत परेशान हैं, और खानसामन हमें खाने की मेज नहीं दे रहा है। हम बहुत शानदार खाना खाने वाले हैं! लेकिन मुझे नहीं पता कि ये सब फूहड़ लोग एक रूसी डिनर के बारे में क्या कहेंगे। अलविदा! फिर मिलेंगे।" कितनी प्यारी ग्रेस ने सुना था! कितना मधुरता से उसने गाया!— एक शुद्ध, सुरीली सोप्रानो आवाज़, बहुत ऊँची नहीं, लेकिन बेहद कोमल और लचीली; और पूरी तरह से प्रशिक्षित होने के बावजूद, बिल्कुल भी दिखावटी नहीं। लेकिन ग्रेस चाहे तो सबसे अलंकृत ब्रावुरा भी गा सकती थी; और जिसने भी उसे मोजार्ट का "अल देसियो," या 'आह नॉन गिउंगे," या "क्वि ला वोस" गाते सुना था, वह उन्हें कभी नहीं भूलता था। जहाँ तक "डोव सोनो," या "बत्ती, बत्ती" की बात है, वे और भी आनंददायक और परिपूर्ण थे; नूरपुर में ऐसी बातें सुनकर काफी सनसनी मच जाती। सिरिल सीता के पास वापस गया और उससे कहा कि वह शाम तक उसे छोड़कर नहीं जाएगा। हंसते हुए उसने कहा, "मुझे कुछ खाने को दो; मुझे बहुत भूख लगी है। मैं यहीं खा सकता हूँ, हालाँकि तुम वहाँ नहीं खाओगी," और उसने बंगले की ओर इशारा करते हुए कहा; "और मुझे तुम्हारा सादा खाना रसोइए के सारे स्वादिष्ट पकवानों से ज़्यादा अच्छा लगता है। वे सब मोस्टिन के बड़े भोज में मदद करने गए हैं, और मैं तुम्हारे लिए एक चम्मच, एक कांटा और एक थाली भीख मांगने लाया हूँ।" सीता, हालाँकि अकेली थी, उस दिन बहुत खुश थी। उसके दादाजी पिछली शाम सिरिल को अकेला छोड़कर उसके पास आए थे और उसे सब कुछ समझाया था और कहा था कि डरो मत। उन्होंने कहा कि वामुन की झोपड़ी उसके इंतज़ाम से पूरी तरह संतुष्ट है और उन्होंने सुझाव दिया है कि उसे किसी गरीब ब्राह्मण को ढूंढ लेना चाहिए, जो उसके जाने के बाद घर की देखभाल करेगा। फिर नरेंद्र ने उसे आशीर्वाद दिया; पुजारी और आंटी एला ने भी, जो बहुत आँसू बहाते हुए अपने बच्चे को छोड़कर चली गईं। "हम बुसुंता तक लौट आएंगे," नरेंद्र ने कहा था, "लेकिन मैं लिखूंगी।" सुबह-सुबह उसने सिरिल को मोस्टिन परिवार की मेज के लिए

फूल काटने में मदद की थी और भारत के अधिकांश मूल निवासियों में पाई जाने वाली रंगों के संयोजन की उस दुर्लभ कला से खुद कई गुलदस्ते सजाए थे। “मैं श्रीमती मोस्टिन को दिखाऊंगा कि ये आपके हैं,” सिरिल ने कहा था, “और मुझे यकीन है कि उन्हें और ग्रेस को ये सबसे सुंदर लगेंगे।” अब वह उनके नामों का अर्थ जानती थी —“गुलाब” और “ग्रेस”—और उन्हें ये नाम बहुत प्यारे लगते थे! सीता अब बहुत तेजी से अंग्रेजी सीख रही थी। भाषा सीखने की उसकी प्रतिभा के कारण यह उसके लिए आसान था; और हिंदी व्याकरण और शब्दकोश, “प्रेम सागर” के अनुवाद और कुछ स्कूली किताबों की मदद से वह हर दिन प्रगति कर रही थी। यह उसके लिए बिल्कुल नया काम था, और वह उस समय का इंतजार कर रही थी जब सिरिल की तरह वह भी इंग्लैंड की कविताएँ पढ़ सकेगी। उसने लिखना भी शुरू कर दिया था; और कुल मिलाकर, मुझे यकीन है कि सिरिल को अपनी शिष्या पर गर्व था।
मिचिंग मालेको. 185 es जब सिरिल ने सीता द्वारा लाया गया थाली भर खाना खा लिया, तो सीता अपनी किताबें ले आई और अपना पाठ पढ़ना चाहती थी, लेकिन सिरिल ने उसे पढ़ने से मना कर दिया। “आज नव वर्ष का दिन है,” उसने कहा, “और सबकी छुट्टी है, इसलिए हम आराम करेंगे। मुझे अपनी प्यारी के साथ पूरा दोपहर बिताने का मौका अक्सर नहीं मिलता। थोड़ी देर में हम नाव में सैर के लिए निकलेंगे, और तुम नाव चलाओगी। मैं चाहता हूँ कि रोज़ और ग्रेस भी किसी दिन आएँ; लेकिन वे मुझसे डरती हैं, हालाँकि वे समुद्र पार करके आई हैं। मुझे आश्चर्य है कि वे वहाँ पुराने घर में क्या कर रही हैं—माँ, ऑगस्टा और हिल्टन?” “तुम्हारे बारे में सोच रही होंगी, सिरिल,” उसने कहा, “शायद; लेकिन वे मुझे नहीं जानतीं, मुझे लगता है?” “अभी नहीं,” उसने उत्तर दिया; “लेकिन वे थोड़ी देर में जान जाएँगी।” “मैं उन्हें कभी नहीं देख पाऊँगी, सिरिल। शायद यही अच्छा है, क्योंकि वे मुझसे प्यार नहीं करेंगी,” उसने डरते हुए कहा। “मुझे लगता है अगर वे तुम्हें देख लें और जान लें तो तुम्हें बहुत प्यार करेंगे, प्रिय; लेकिन तुम्हें उनसे मिलने के लिए विशाल समुद्र पार जाना होगा और अपने सारे परिवार को पीछे छोड़ना होगा।” “क्या तुम्हें लगता है कि अगर ज़रूरी हुआ तो मैं तुम्हारे लिए ऐसा नहीं करूंगी?” उसने चमकती आँखों से कहा। “मैं करूँगा,” उसने जवाब दिया, “और इससे भी ज़्यादा।” इस तरह वे सूरज ढलने तक बातें करते रहे; फिर वे झील में निकल गए, और सेक्टा नाव चला रही थी जबकि सिरिल पाल संभाल रहा था। कितना सुंदर था!—साफ़, गहरा पानी, छावनी के सुंदर बगीचे, शहर

और शानदार पुराना किला, जिसका विशाल बुर्ज झील के पानी से भीगा हुआ था। शायद श्रीमती स्मिथ की दूरबीन उन पर टिकी हुई थी। अगर ऐसा था तो उन्हें कोई परवाह नहीं थी। शाम की पार्टी के लिए तैयार होकर वह फिर उसके पास गया और उसे चूमा, और उससे कहा कि डरो मत, क्योंकि तुम्हारी अच्छी तरह से रक्षा की जा रही है, और वह जितनी जल्दी हो सकेगा वापस आ जाएगा। कुल मिलाकर चौबीस लोग रात के खाने पर आए थे, जितने श्री मोस्टिन की मेज पर आ सकते थे। निश्चित रूप से, जैसा कि श्रीमती मोस्टिन ने सिरिल को बताया था, वे काफी सजे-धजे थे। नया डिनर सेट, बैंगनी और सुनहरा; नए गिलास, चांदी का सेंटरपीस और फूलदान, और फूलों और फलों से भरी कांच की प्लेटें, चमकदार आयरिश दमास्क मेज़पोश और नैपकिन, नूरपुर में पहले कभी न देखा गया एक दुर्लभ और सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। फिर साइड टेबल पर नए लैंप थे, जो "पंखों के नीचे जलने की गारंटी" देते थे, और खाने की मेज पर छह-छह बत्तियों वाले दो कैंडल होल्डर थे; और सब कुछ शानदार और जगमगा रहा था। "मुझे आश्चर्य है कि क्या उन्हें यह पसंद आएगा, ग्रेस?" श्रीमती मोस्टिन ने अपनी बहन से कहा, जब वह फूलों को अंतिम रूप दे रही थीं। "यह 'सैडली' की पुरानी शैली से कितना अलग है।"

188 सीता. पीरो—दुर्रा खानास; इसका मतलब है सैडल और टर्की—बड़े भोज, आप जानते हैं। फिर सबसे ऊपर मटन का एक बड़ा सैडल होता था, सबसे नीचे टर्की, और एक हैम, और सभी व्यंजन किनारों पर जितनी मोटी परत में हो सकते थे, उतनी मोटी परत में सजे होते थे; और हम बेचारी औरतें ग्रेवी से लथपथ हो जाती थीं। हे भगवान! मुझे याद है एक बार एक सज्जन ने मुझे बताया था कि जब उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपना पहला भोज दिया, तो उन्होंने अपने खानसामन को सब कुछ 'ठीक से' करने का आदेश दिया; और उसने क्या किया, मेरी प्यारी, मेज पर हर चीज की दो-दो चीजें रख दीं! तो सबसे ऊपर एक टर्की और सैडल था, और वही नीचे, बीच में उबले हुए मटन का एक लेग, और उसके ठीक सामने एक और, और इसी तरह, मुर्गियाँ वगैरह। क्या यह मज़ेदार नहीं था? लेकिन मुझे जो सबसे मज़ेदार चीज़ याद है, वह मेमना था। अब सुनो। जब हम शादी के बाद बाहर आए, उसके कुछ ही समय बाद, एक गंभीर दिखने वाले बूढ़े कर्नल ने मुझे एक पार्टी देने का वादा किया, और मैंने उन्हें तब तक चिढ़ाया जब तक उन्होंने निमंत्रण नहीं भेज दिए। उनके पास एक बड़ा बंगला था, और एक शानदार दावत के लिए जगह थी। दावत से तीन दिन पहले मैं फिलिप और कैप्टन

जैक्सन के साथ उस घर के पास से गुजर रही थी, और फिलिप ने मुझे एक विशाल मेढ़ा दिखाया—एक असली लड़ाकू मेढ़ा, मेरी प्यारी, जैसा कि स्थानीय लोग आपस में सिर टकराने के लिए रखते हैं—और वह लगातार 'बा! बा!' चिल्ला रहा था, और एक रस्सी को खींच रहा था जिससे वह एक झाड़ी से बंधा हुआ था, और अकड़कर गोल-गोल घूम रहा था। फिलिप ने गंभीरता से कहा, 'हमें उस मेढ़े को खाना ही पड़ेगा, देखो अगर हमें खाना ही न पड़े। "बा! बा!" बेचारा जानवर! इससे अच्छा होता कि तुम्हारे दिमाग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते।' खैर, अपनी कहानी को संक्षेप में कहूँ तो, पार्टी की सुबह, जब हम उसे देखने गए, तो हमें वहाँ कोई मेढ़ा नहीं मिला; वह मटन बन चुका था; और शाम को, जब कर्नल ने मुझे मेरी सीट पर बिठाया, तो वहाँ, सचमुच, उस बेचारे जानवर की पीठ को काठी में बदल दिया गया था; और जब मैंने मेज पर नज़र डाली तो मुझे उसके पैर और कंधे इधर-उधर दिखाई दिए। लेकिन सबसे बुरा तो यह था कि मेरे बगल में बैठे कैप्टन जैक्सन, जो बहुत कमज़ोर नज़र वाले थे, ने अपना चश्मा लगाया और पहले काठी को देखकर मेज पर ऊपर-नीचे नज़र दौड़ाई, और फिर मेरी ओर मुड़कर फुसफुसाते हुए कहा, 'बा!' बिल्कुल उस बूढ़े मेढ़े की तरह, कि मैं हँसते-हँसते लोटपोट हो गया और समझ नहीं पाया कि क्या कहूँ; और जब कर्नल, जो थोड़े बहरे थे, ने बड़ी मासूमियत से कहा, 'जैक्सन, तुमने क्या कहा? काठी? हाँ, यह बढ़िया है, है ना? माँ का पाला हुआ, कसम से! मैं श्रीमती मोस्टिन को बाज़ार का मटन भी नहीं देता, तुम्हें पता है,' तो मैं ज़ोर से हँस पड़ा। "और क्या तुमने मेढ़े को बिल्ली की तरह खाया?" ग्रेस ने हंसते हुए पूछा। "उसका ज़रा सा भी नहीं," उसकी बहन चिल्लाई, "और मेरी पुरानी दोस्त तो इस बात से बहुत नाराज़ थी कि मैंने ऐसा नहीं किया। ओह! उस जानवर की बदबू अभी भी मेरी नाक में है! लेकिन चलो, कपड़े पहन लो, जैसे कि..."

मिचिंग मालेको. 187 प्रिय! इंशाल्लाह! जैसा नवाब कहते हैं, आज रात हम कुछ खास करेंगे।" और ऐसा ही हुआ; यह एक शानदार और आनंदमय पार्टी थी, और श्रीमती होम भी कुछ समय के लिए बेचारी सेक्टा को भूल गई थीं, और उन्होंने सुंदर डिप्टी कमिश्नर से विनम्रतापूर्वक हाथ मिलाया और उन्हें नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं, और डिनर और ला रूसे का कार्यक्रम बहुत बढ़िया रहा। व्यंजन अच्छे से परोसे गए; एक पुर्तगाली बटलर ने हैम काटा, और व्यंजन नियमित रूप से परोसे गए। फिर मेस के "अब्दार" या वाटर कूलर से वाइन लगभग जम गई थी; शैम्पेन की कोई कमी नहीं

थी, और मेहमान खुश थे। सिरिल को श्रीमती हिल्स को डिनर पर लाना पड़ा था; लेकिन वह उनके और ग्रेस के बीच बैठे थे, और दोनों पूरे समय हंसमुख और बातूनी थीं। जब सब कुछ समाप्त हो गया और नौकर चले गए, तो श्री मोस्टिन ने रानी का प्रस्ताव रखा; ब्रिगेडियर ने महिलाओं का बड़े ही शालीनता से स्वागत किया; और सिरिल, जो मेज़बान और मेज़बानी करने वाले थे, ने एक सुंदर भाषण देते हुए कहा कि श्रीमती मोस्टिन के वापस आने से सभी कितने प्रसन्न हैं। शायद ड्राइंग रूम का दरवाज़ा थोड़ा खुला रह गया था, क्योंकि उन्होंने महिलाओं को तालियों की गड़गड़ाहट पर हंसते हुए सुना। मेज़बान ने कहा, "अब, सज्जनों, चूंकि आप शराब नहीं पी रहे हैं, तो क्या हम महिलाओं के पास जाकर कुछ संगीत सुनें?" यह स्पष्ट रूप से ब्रिगेडियर से सिपाहियों के बारे में जानकारी लेने का समय नहीं था। ड्राइंग रूम अब भरा हुआ था। मैं महिलाओं के परिधानों का वर्णन करने का प्रयास नहीं करूँगा, लेकिन नए सैनिकों की गिनती न होने के बावजूद वे सभी बहुत सुंदर लग रही थीं। सुंदर लूसी होम अपने सबसे अच्छे रूप में थीं और ब्रैंडन के प्रति विनम्र थीं, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं; ऐसा लग रहा था कि वह अनियमित घुड़सवार सेना के कमांडर कैप्टन हॉब्सन को अधिक पसंद करती थीं; और कुछ महिलाओं ने केवल उन्हें प्रणाम किया, जबकि श्रीमती स्मिथ ने दूसरी ओर देखा। फिर संगीत शुरू हुआ और सभी मधुर धुनें और कुशल कलाकारों को सुनकर मंत्रमुग्ध हो गए, जो स्वाभाविक भी था। श्रीमती मोस्टिन का लूसी इलोम से यह न कहना कि उन्होंने सुना है कि वह बहुत सुंदर पियानो बजाती हैं, और उन्हें पियानो के पास न ले जाना, जहाँ उन्होंने एक स्कूली धुन बजाने की कोशिश की, यह थोड़ा बुरा था; लेकिन जैसा कि श्रीमती मोस्टिन ने बाद में ग्रेस से कहा, “मैं उसकी उपेक्षा नहीं कर सकती थी, मेरी प्यारी, नहीं तो होम परिवार का सारा स्कॉटिश खून उमड़ पड़ता।” किसी ने श्रीमती मोस्टिन को बताया कि हॉब्सन की आवाज़ बहुत ही सुरीली है, तो वह उनके पास गईं और उनसे गाने का आग्रह किया। उन्होंने बड़ी विनम्रता से गाया और ग्रेस के साथ "क्रूडेल, पर्चे फिनोरा" में शामिल हो गए। उन्हें धन्यवाद देने के बाद, श्रीमती मोस्टिन ने हंसते हुए कहा, "मैं आपको नूरपुर ओपेरा क्लब में भर्ती कर दूंगी, और आपको हमारे साथ अभ्यास करने आना होगा, है ना?" और वह बड़ी खुशी से मान गए, क्योंकि वह एक उत्कृष्ट संगीतकार थे और अपने वायलिन के प्रति समर्पित थे।

बरामदे में मौजूद बैंड ने क्वाड्रिल नृत्य शुरू कर दिया। सभी मेजें हटा दी गई थीं और नाचने के लिए पर्याप्त जगह थी। और वे सब बड़े उत्साह से नाचे। इस बार ब्रैंडन सावधान थी; लेकिन जैसा कि उसकी माँ ने लूसी से कहा था कि वह एक नृत्य कर सकती है, उसने सिरिल के साथ वाल्ट्ज नृत्य करने की अनुमति दे दी और उसका भरपूर आनंद लिया। बेचारी बच्ची को अभी तक सीता और श्रीमती स्मिथ के साथ अपनी माँ की गुप्त बातों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। फिर ब्रैंडन ने ग्रेस मोस्टिन के साथ दो गोल नृत्य किए और उन्हें बिल्कुल सही पाया, जैसा कि उन्हें पता था, और बाकी सभी के लिए चौकोर नृत्य करके अपना कर्तव्य निभाया। सुबह लगभग तीन बजे, जब तारे खूब चमक रहे थे और हवा ठंडी और लगभग सर्द हो गई थी, तो सभी मेहमान विदा हो गए, और नूरूर में बिताई गई सबसे मनमोहक शाम के लिए अपनी प्यारी मेज़बान को धन्यवाद दिया। "और यह वाकई बहुत अच्छा रहा, फिलिप, है ना - डिनर और ला रूस वगैरह, है ना, मिस्टर ब्रैंडन?" श्रीमती मोस्टिन चिल्लाईं। ‘‘सचमुच बहुत अच्छा,’’ दोनों ने जवाब दिया; और सिरिल ने अपनी उपयोगिता और अच्छे व्यवहार की प्रशंसा सुनकर सबको शुभ रात्रि कहा और घर चला गया। सीता अभी भी जाग रही थी; उसने कहा, ‘‘मैं वह मधुर संगीत सुन रही थी, पेड़ों के बीच से वह बहुत कोमल और मधुर आ रहा था; लेकिन मैं तुम्हें गाते हुए नहीं सुन पाई, बस एक बार थोड़ा सा सुना, जब तुमने अकेले गाया था। और तुम खुश थे, सिरिल? और तुमने गोमांस नहीं खाया? क्योंकि अगर तुमने खाया होता तो तुम्हें मुझे छूना नहीं चाहिए था।’’ उसने खुशी से कहा, ‘‘मैं खुश था, और मैंने गोमांस नहीं खाया, इसलिए मैं तुम्हें चूम सकता हूँ, मेरी प्यारी। वहाँ मेरी सीता जैसी कोई नहीं थी।’’ एक भी नहीं? क्या ग्रेस मोस्टिन को भुला दिया गया था? मुझे नहीं लगता। इसी तरह, उत्तरी भारत के कई स्टेशनों में, 1857 के नव वर्ष दिवस की शाम गुज़री। उनके खुशमिजाज और बेफिक्र समूहों में किसी बादल ने घबराहट या अविश्वास पैदा नहीं किया, लेकिन बादल फिर भी उग रहे थे। अध्याय XXV. धमकियाँ। हालाँकि दस दिन बीत चुके थे, सिरिल ब्रैंडन शिविर में नहीं पहुँचे थे। सेरिष्टदार पाबा साहब दो बातों को लेकर बेचैन थे: पहला, ज़िला कार्य, जो इस मौसम में सबसे महत्वपूर्ण था; और दूसरा, एक संदेह, जिसे उन्होंने दूर करने की कोशिश की, लेकिन कर नहीं सके।
धमकियाँ। 189 पूरी तरह से सफल हो गए, यह साबित करने में कि सिरिल का सीता के प्रति वास्तव में निष्पक्ष इरादा नहीं था, और जज की सुंदर बहन एक ऐसा प्रलोभन

साबित होगी जिसका विरोध करना असंभव होगा। वह सिरिल के सामाजिक रुतबे और उसके भाई के पद और उपाधि प्राप्त करने की संभावना से अवगत था। वह जानता था, क्योंकि सिरिल ने उसे यह बात बताई थी, कि लॉर्ड हिल्टन के स्वास्थ्य को लेकर चिंताएँ थीं; और उसे लगा कि एक सुंदर और गुणी लड़की को जानबूझकर, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, अब उसके सरदार के रास्ते में डाला जा रहा है। "बेशक," बाबा साहब ने मन ही मन तर्क किया, "अंग्रेज़ भी, हमारी ही तरह, जहाँ तक संभव हो, अपने बच्चों के लिए अच्छे संबंध तलाशते हैं, और यह स्वाभाविक ही है। श्री मोस्टिन अपनी बहन की शादी एक ऐसे व्यक्ति से करवाना पसंद करेंगे जो उनके अपने परिवार से हो और जिसके अच्छे भविष्य की संभावनाएँ हों, बजाय इसके कि वह उसे किसी सैन्य अधिकारी से करवाएँ; और नूरपुर में ऐसा कौन है जिसकी तुलना किसी भी तरह से मेरे प्रिय स्वामी से की जा सके?" अब तक तो कोई संदेह नहीं था; लेकिन बाबा साहब सीता को छोड़ने के किसी भी प्रयास से नाराज़ थे। सीता ऐसी नहीं थीं जिन्हें धन और जीवन भर की पेंशन देकर आसानी से छोड़ा जा सके, जैसा कि उन्होंने कई बार दूसरों के मामले में सुना था। सिरिल ने सीता को अपनी पत्नी घोषित किया था; वह स्वयं विवाह के साक्षी थे, जिसे हिंदू विधि से तोड़ा नहीं जा सकता था। फिर भी, जो कुछ उन्होंने सुना था, वह शायद सिर्फ़ अफवाह ही हो। चूड़ी बेचने वाली एक महिला, जो उनकी पत्नी की सेवा करती थी, ने उन्हें इस अफवाह के बारे में बताया था, जिससे बुढ़िया दुखी हो गई थीं, और बाबा साहब ने उनसे इसे एक बेबुनियाद कहानी बताकर खंडन करने को कहा था, और उन्होंने ऐसा किया भी। लेकिन कस्बे और छावनी के नाइयों को भी इसकी जानकारी मिल गई थी, और उन्होंने इसे उन लोगों को बताया जिनके सिर या चेहरे वे मुंडवाते थे। इस प्रकार कमिश्नर साहब और मिस मोस्टिन के संभावित विवाह की बात बाज़ारों में चर्चा और गपशप का विषय बन गई; और बाबा साहब की सावधानी के बावजूद, उन्होंने देखा कि जब कुछ प्रतिष्ठित लोगों ने भी उनसे पूछा कि क्या यह सच नहीं है, तो इस अफवाह का खूब प्रचार किया गया। "मुझे उसे यहाँ से दूर ले जाना ही होगा," बूढ़े आदमी ने मन ही मन कहा। "बिना आग के धुआँ नहीं होता, चाहे चिंगारी ही क्यों न हो। चुगली करने वालों को क्या फर्क पड़ता है? और अगर स्केटा को भेज दिया जाए तो बहुत से लोग उस पर या उसके दादा पर तरस नहीं खाएँगे; लेकिन गाँव में ऐसे बहुत से लोग हैं जो ऐसा करेंगे और विश्वासघात का विरोध करेंगे। हाँ, मुझे उसे यहाँ से दूर ले जाना ही होगा।"

लेकिन सिरिल को मनाना आसान नहीं था, और उस हफ्ते तो नामुमकिन था, उसने कहा: वह सोमवार को ब्रिगेडियर के यहाँ, मंगलवार को मेस में, बुधवार को मिस्टर मोस्टिन के यहाँ खाना खाने से मना नहीं कर सकता था, और न ही गुरुवार को फुटतेहपुर में नवाब की पार्टी में अनुपस्थित रह सकता था; लेकिन वह अगले हफ्ते इस बारे में सोचेगा। 'इसमें लगभग दो हफ्ते और लग जाएँगे, और बाबा
190 सीता। साहब ने आह भरी और शांत हो गए, और मन ही मन गंभीर स्वर में कहा, "जो होना है सो होगा।" अगर सीता को अपने पति की बहुत याद आ रही थी, जैसा कि सचमुच आ रही थी, तो यह उससे ज़्यादा कुछ नहीं था जितना उसके पति ने उसे इस "त्योहार के समय" में उम्मीद करने के लिए कहा था, जब वह शायद हर शाम घर से बाहर रहेगा; और उसने हिम्मत से इसका सामना करने की कोशिश की। लेकिन लड़की को अकेले रहने की आदत नहीं थी, और उसने अपने जीवन में कभी अकेलापन महसूस नहीं किया था। गोकुलपुर में भी लोग उससे मिलने आते रहते थे; और नूरपुर में उसकी उम्र की सहेलियाँ थीं, जिनके साथ वह गुड़ियों की दावतें, बगीचे की पार्टियाँ, मंदिर के समारोह और तरह-तरह के सादे सुखों का आनंद लेती थी। अब उसके पास बूढ़े भीमियो के अलावा कोई दोस्त या बात करने वाला नहीं था, जो दिन-ब-दिन बहरा और चिड़चिड़ा होता जा रहा था; क्योंकि बेचारा भीमियो भी गाँव की गपशप और साथी नौकरों और पुराने परिचितों की सुखद संगति के लिए तरस रहा था। सिरिल हमेशा दिन के कपड़े पहनने के बाद सीता से मिलने आता था; और उसे अपनी कुचेरी जाने से पहले उसे उसके अंग्रेज़ी के काम देता, उसे चूमता और कहता कि वह वह जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाता और उसे झील में नाव की सैर पर ले जाता। लेकिन मुझे खेद है कि वह हर बार उतनी जल्दी वापस नहीं आ पाता था। किसी न किसी तरह मोस्टिन के घर पर हमेशा कोई न कोई नया संगीत अभ्यास करने को होता था, जिसे वह मना नहीं कर सकता था, और जहाँ उसका स्वागत हर दिन और भी गर्मजोशी भरा होता जा रहा था; और ग्रेस का वह प्यारा, ताजा चेहरा और भी अधिक खुशी और बुद्धिमत्ता से चमक उठता था जब वह अपने पसंदीदा गीत चुनती और उसे गाकर सुनाती, अब बिना किसी झिझक के, और अपनी महान संगीत प्रतिभा के पूरे कौशल और उत्साह के साथ। मुझे यह भी डर है कि सेक्टा के अंग्रेजी पाठों पर भी ठीक से ध्यान नहीं दिया जाता था, और झील में नाव की सैर अक्सर छूट ही जाती थी। उसे कपड़े बदलने जाना था, और इसलिए वह उसे अकेला छोड़कर चला गया।

वह नहीं जानती थी कि उसे इतनी देर तक क्या रोके रखा, लेकिन उसने काम का बहाना मान लिया - बिना किसी संदेह या शंका के। मुझे यकीन है कि मेरे पाठक "सैडली पीरू" स्टेशन पार्टियों के विवरण के लिए मुझे धन्यवाद नहीं देंगे। एक खाना दूसरे जैसा ही था—मटन के टुकड़े, टर्की और बाकी सब कुछ—थोड़ा-बहुत ही अंतर था। वही लोग, वही गपशप और चर्चा, पल भर की घटनाएं थीं, जिनका कोई खास असर नहीं था, और सच कहें तो काफी उबाऊ भी थीं। लेकिन अपने खाने पर, और उसके बाद श्री मोस्टिन के खाने पर, ब्रिगेडियर धीरे-धीरे पुराने दिनों और स्कोन्स की बातों में, और अखबारों में एनफील्ड राइफलों, नए भर्ती अधिनियम और सैन्य महत्व के अन्य मामलों पर चल रही चर्चाओं में मशगूल हो गए। मोस्टिन के यहाँ, वास्तव में, वे सामान्य से अधिक बातूनी थे। वे लगातार बातचीत करते रहे।
धमकियाँ। | 191 सिपाही असंतोष और विद्रोह के कारणों की गहराई से पड़ताल करते हुए—उन्होंने अफ़गान युद्ध, सिख युद्ध और मुल्तान की घेराबंदी तक उनका पता लगाया, जब बंगाल की सेना को बॉम्बे की सेना के साथ काम करना पड़ा था। “और हम सभी ने, अपनी शर्मिंदगी के लिए, श्री मोस्टिन, यह अंतर देखा,” उन्होंने कहा, “वे छोटे मराठा लोग अंग्रेजों की तरह खाइयों में काम करते थे, और पहरे पर कभी भी अपने साजो-सामान नहीं उतारते थे, जैसा कि हमारे उन चहेतों ने किया था जो उनका मज़ाक उड़ाते थे। क्या आपको लगता है कि हमने अपने उच्च जाति के लोगों से ऐसा करने की हिम्मत की होगी? हम नहीं; मौके पर ही विद्रोह हो जाता। हाँ, जैकब्स के चतुर पत्र ने उस मामले और कई अन्य मामलों की जड़ तक पहुँच बनाई! लेकिन कौन इसके बुद्धिमान और व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान देगा या देने की हिम्मत करेगा?” सर चार्ल्स नेपियर ने छियासठवीं रेजिमेंट के मामले में निर्णायक कार्रवाई करते समय अपने स्वयं के निष्कर्ष निकाल लिए थे; लेकिन, जैसा कि ब्रिगेडियर ने संक्षेप में कहा, लॉयड डलहौज़ी के साथ हुई चर्चा में उन्होंने अपना आपा और आपा खो दिया था, और बहस में श्रेष्ठ कौशल के आगे हार गए थे। सच कौन बोलेगा? जहाँ तक उनका सवाल है, उनका मानना था कि अधिकांश सिपाही, भले ही कुछ निस्संदेह वफादार और सच्चे थे, अंदर से भ्रष्ट थे; और अब उनकी यह बीमारी अपने अंजाम तक पहुँचनी ही थी। इसे कौन रोक सकता था? भारत में उनके पास जो अंग्रेजी सेना थी, वह मुश्किल से ही उन चौकियों पर टिके रहने के लिए पर्याप्त थी जहाँ वे तैनात थे, और कुछ रेजिमेंटों को भी मुश्किल से ही एकजुट किया जा सकता था; और फिर भी चीन युद्ध के लिए

इसे और कम करने की बात चल रही थी, जबकि फारस का युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था! यह सब उन्हें पागलपन, सरासर पागलपन लग रहा था। एक नए गवर्नर-जनरल को उन लोगों के वास्तविक स्वभाव के बारे में क्या पता होता जिन पर उनके पूर्ववर्ती ने इतना विश्वास किया था? उन्हें वे बातें कौन बताएगा जो उन्होंने स्वयं अपने पूरे जीवन में देखी थीं? अब माना जा रहा है कि यह एक बेकाबू बाढ़ में बदल रहा है? "मुझे नहीं लगता कि मैं विश्वासघात कर रहा हूँ, सज्जनों," उन्होंने आगे कहा, "लेकिन जब मैं 1843 में एक दिन हेनरी लॉरेंस के साथ था, तो उन्होंने मुझे अपना लिखा हुआ एक लेख दिखाया, जिसे वे कहीं प्रकाशित करवाने वाले थे, और उसका एक हिस्सा मुझे भविष्यवाणी जैसा लगा, इसलिए मैंने उनसे उसकी एक प्रति माँग ली। आज मुझे यह प्रति मिली, और मैंने सोचा कि अगर आपको बोरियत न हो तो मैं इसे आपको पढ़कर सुनाऊँगा;" और जब सभी ने कहा कि ऐसा नहीं होगा, तो उन्होंने इस प्रकार पढ़ा:— "* हम भूल जाते हैं कि हमारी देशी सेना हमारे जैसे ही लोगों से बनी है, जो दूरदर्शी और अपने व्यक्तिगत हितों से संबंधित सभी मामलों में जिज्ञासु हैं, और जो हमारी श्रेष्ठता को समझ सकते हैं। ... काबुल में हमने एक सेना खो दी, और आसपास के राज्यों के साथ हमारी साख भी कम हो गई; लेकिन मेरा मानना है कि हमारी सबसे बड़ी क्षति देशी सैनिकों का विश्वास खोना था। अगर हमारी क्षत-विक्षत सेना दुश्मन पर टूट पड़ती तो हमारी प्रसिद्धि के लिए बेहतर होता।"
192 शीता और एक-एक करके मारे गए, तो बचे हुए सिपाही काबुल में जो कुछ देखा, उसकी कहानियाँ सुना सकें, यह उससे कहीं अधिक है। और फिर, सज्जनों, वह आगे कहते हैं कि किसी भी बड़े स्टेशन पर क्या प्रभाव होगा यदि देशी पैदल सेना अचानक विद्रोह कर दे और बारिश शुरू होते ही डिपो पर कब्जा कर ले; और वह अन्य आकस्मिकताओं के संदर्भ में मेरठ, दिल्ली आदि का उल्लेख करते हैं, और इस प्रकार आगे कहते हैं: - «यह सब नवंबर में अफ़गान पहाड़ों के बीच होने के बजाय 2 जून को हिंदुस्तान में हो जाए, और क्या कोई समझदार व्यक्ति इस बात पर संदेह कर सकता है कि चौबीस घंटे में सैकड़ों विद्रोही हजारों में बदल जाएंगे; और यदि हमारी ओर से ऐसा आचरण एक सप्ताह तक चलता है, तो दिल्ली रियासतों में हर हल तलवार में बदल जाएगा?' "मुझे नहीं पता, सज्जनों, कि यह कभी प्रकाशित हुआ था या नहीं; मुझे केवल आशा है कि यह प्रकाशित हुआ होगा, क्योंकि यह एक चेतावनी के रूप में बहुत सच है। लेकिन ये उनके विचार 1943 में थे, और अब 1957 है, फिर भी हम

तब की तुलना में कहीं अधिक अप्रस्तुत हैं। “उन्होंने जो तारीख—2 जून—बताई है, वह अजीब है: क्योंकि हमें पहले से ही गरज की आहट सुनाई दे रही है। 2 जून को मेरठ और दिल्ली में क्या नहीं हो सकता? मैंने पहले ही तय कर लिया है कि अगर कोई मुसीबत आती है तो मैं क्या करूँगा, सज्जनों,” उन्होंने आगे कहा; “लेकिन यह इसे प्रकट करने का न तो समय है और न ही स्थान; और न ही मैं संदेह या भय प्रकट कर सकता हूँ, जबकि सौभाग्य से अभी इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, हालाँकि भय दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। मैं यह भी जानता हूँ कि यदि दुर्भाग्यवश कार्रवाई का समय आता है तो आप सभी मेरी सहायता करेंगे। लेकिन यह टल सकता है, जैसा कि पहले भी कई मौकों पर खतरा टल चुका है, और जैसा कि मुझे ईश्वर की कृपा से विश्वास है कि अब भी ऐसा ही होगा।” शायद उस शाम संगीत उतना आनंदमय नहीं था जितना आम दिनों में होता था, क्योंकि उस अनुभवी सैनिक के भाषण को सुनने वाले सभी लोग उसके विशाल अनुभव से प्राप्त बातों पर गहराई से विचार करने से खुद को रोक नहीं पाए। लेकिन स्टेशन का उल्लास कम नहीं हुआ, और नवाब की वार्षिक पार्टी एक ऐसा आयोजन था जिसका सभी बेसब्री से इंतजार करते थे। फतेहपुर एक बहुत ही सुंदर जगह थी, नवाब सभी के प्रति बहुत दयालु और आतिथ्यवान थे, और ठंडी सुबह और सुहावनी शाम में घोड़ों पर, पालकियों में या उनके द्वारा भेजे गए हाथियों पर सवारी करना बहुत सुखद होता था। नवाब के पास अपने कोई अच्छे तंबू नहीं थे; लेकिन रेजिमेंटों के भोजनालय और उनके खास दोस्तों के निजी तंबू उनके लिए उपलब्ध थे। एक रेजिमेंट का भोजनालय प्रबंधक खानपान का काम करता था, और उसकी भोजनालय शराब की आपूर्ति करती थी; और चाहे वह अन्य ऋणों का क्या करता, नवाब हमेशा यह सुनिश्चित करता था कि इस बिल का भुगतान तुरंत हो जाए। इसलिए, हर लिहाज से, पार्टी हमेशा लोकप्रिय रहती थी। धमकियाँ - 193 और इस बार भी हमेशा की तरह धमकियाँ कम नहीं थीं। एक बड़े तंबू में शानदार नाश्ता परोसा गया था, जिसमें नवाब की रसोई ने बेहतरीन पकवानों का बड़ा योगदान दिया था। एक ड्राइंग रूम था, और कुछ अलग तंबू भी थे जहाँ महिलाएँ और पुरुष दिन की गर्मी से बचने या आराम करने के लिए जा सकते थे। श्रीमती मोस्टिन पहले भी ऐसे ही भोजों में जा चुकी थीं, और वास्तव में इस बार जाने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी; लेकिन वह खुद को रोक नहीं पाईं; और चूंकि यह ग्रेस का पहला देशी भोज था, इसलिए वह इसके बारे में सोचकर बहुत खुश थीं। सिरिल

सुबह जल्दी उनके साथ आने वाला था, और वे सब एक साथ घर लौटेंगे; उसने सीता को यह बताया, और सीता ने हमेशा की तरह उसे जाने के लिए कहा, हालाँकि उसका दिल कुछ अजीब तरह से भारी लग रहा था। "मैं अपनी अंग्रेज़ी पर काम करूँगी," उसने मुस्कुराते हुए कहा, जब उसने कहा, "अलविदा; अपना ख्याल रखना, मेरे प्यारे।" यह एक सुखद सवारी थी; कभी ठंडी हवा में तेज़ सरपट दौड़ते हुए— कभी घोड़ों को धीरे-धीरे चलाते हुए, वे उस ऊँचाई पर पहुँचे जहाँ से युत्तेहपुर घाटी की सीमा बनी हुई थी, और उन्होंने नीचे कस्बे को देखा: और यह सचमुच एक सुंदर दृश्य था। युत्तेहपुर एक नीची चट्टानी पहाड़ी पर बसा था, जो नीचे घाटी में जाकर मिलती थी। यह कोई बड़ा कस्बा नहीं था; लेकिन इसकी सुरम्य स्थिति ने सफेद छतों वाले घरों और लाल टाइलों वाली छतों को बेहतरीन ढंग से प्रदर्शित किया, और जैसे ही सूरज की रोशनी उन पर पड़ी, वे उज्ज्वल और आरामदायक लग रहे थे। उनके ऊपर, चोटी पर, और ढलान के एक बड़े हिस्से पर, नवाब का महल या किला खड़ा था, इमारतों का एक शानदार समूह, जिसके कोनों पर मीनारें थीं—जिनमें से एक सबसे ऊँची मीनार पर उस दिन के सम्मान में अंग्रेजी झंडा लहरा रहा था—और बुर्जों और दीवारों से मजबूत की गई बाहरी दीवारें कई स्तरों में कस्बे में फैली हुई थीं, जिनके बीच विशाल प्रांगण थे। किले का रंग एक सुंदर गहरा भूरा था, जो घाटी के रंग से मेल खाता था। पहाड़ियाँ थीं, जो उपजाऊ घाटी में फैले गन्ने, युवा गेहूँ और अन्य फसलों के चमकीले हरे रंग से बिल्कुल विपरीत थीं। दूर तक लहरदार भूभाग फैला हुआ था, जिसकी ऊँचाई बढ़ती गई और अंत में वह कुछ मील दूर जंगल से ढकी चट्टानी पहाड़ियों की एक ऊँची श्रृंखला में मिल गया। किले और शहर के नीचे नवाब का बगीचा था, जो खजूर, नारियल और सुपारी से भरा हुआ था, और आम के पेड़ों का एक सुंदर बाग था, जिसमें सफेद तंबू आराम से लगे हुए प्रतीत होते थे और परिदृश्य की सुंदरता को बढ़ा रहे थे। हमारा दल अनायास ही दृश्य को देखने के लिए पहाड़ी की चोटी पर रुक गया, और ग्रेस की प्रशंसा पूरी तरह से वास्तविक थी। चट्टानों, झाड़ियों और जंगली खजूर की छोटी झाड़ियों से घिरा अग्रभाग समृद्ध लाल, भूरे और हरे रंगों से भरा हुआ था; और पहाड़ी की निरंतरता से हमारी नज़रें किले और शहर की ओर खिंच गईं।

ऊपरी हिस्सा और किला प्रकाश से नहाया हुआ था। फिर दूरियाँ, धूसर, बैंगनी और नीले रंगों में और भी कोमल होती गईं, जिनमें स्थानीय रंगों के हल्के संकेत थे, और दूर तक फैली हुई बैंगनी पहाड़ियों तक पहुँच गईं जो आकाश से मिलती थीं। "वाह, क्या रेखाचित्र है—क्या खूबसूरत तस्वीर बन सकती है!" ग्रेस ने ब्रैंडन से खुशी से हाथ जोड़ते हुए कहा। "यह किला किसी जर्मन बैरन के किले जैसा है, बस उससे कहीं अधिक भव्य है; और अगर वे मीनारें और कस्बे का वह गुंबद न होता, तो यह पूरी तरह से एक जर्मन दृश्य होता। क्या आपने कभी इसका रेखाचित्र नहीं बनाया, श्रीमान ब्रैंडन?" "मैंने बनाया है," उन्होंने कहा, "कई बार; और अगर आप चाहें तो मैं आपके लिए एक रेखाचित्र बना दूँगा।" "धन्यवाद," उसने आगे बढ़ते हुए उत्तर दिया। “आप हमेशा मेरे प्रति बहुत दयालु रहे हैं; बस आपको इतनी परेशानी क्यों उठानी पड़ी, मैं एक रेखाचित्र को इतना महत्व देती हूँ,” और उसने कृतज्ञतापूर्वक कहा। धीरे-धीरे, नूरपुर से आने वाले सभी लोग, पहले से तय योजना के अनुसार, दल-दल में आने लगे: और, मोस्टिन परिवार की तरह, नवाब ने तम्बुओं के द्वार पर उनका स्वागत किया, जो सोने के भव्य वस्त्रों में सजे हुए थे, और शाही अंदाज में उनका अभिनंदन किया। एक मुसलमान सज्जन की शिष्टता से बढ़कर और क्या हो सकता है, चाहे वह सच्ची हो या दिखावटी? उन्होंने अपने मेहमानों से बातचीत नहीं की, बल्कि श्री मोस्टिन के पास बैठकर उन्हें अच्छी चीजों की सलाह दी और सुखद बातचीत की; और बीच-बीच में श्रीमती मोस्टिन से कुछ कह देते, जिनकी हिंदुस्तानी भाषा, हालांकि कभी-कभी व्याकरण की दृष्टि से बहुत अटपटी थी, फिर भी काफी अच्छी थी। उन्होंने शायद ही कभी ऐसी शालीनता देखी हो, और अगर हिम्मत होती तो वे उनकी सुंदरता पर मुग्ध हो जाते; लेकिन सिरिल ब्रैंडन उन्हें ध्यान से देख रहे थे, और नवाब ने खुद को रोका और चले गए। इन परिस्थितियों में लोग मनोरंजन के लिए क्या-क्या करते हैं, इसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। नौजवान अपने साथ क्वॉइट (एक प्रकार का तीर) लाए थे; कुछ धनुष-बाण, एक निशाना और श्रीमती मोस्टिन द्वारा उधार दी गई आंटी सैली भी थीं, जिनका इस्तेमाल वे लोग कर सकते थे जो करना चाहते थे। तंबुओं में शतरंज और ताश के खेल चल रहे थे; लेकिन ज़्यादातर लोग इधर-उधर टहलना या सुंदर पेड़ों के नीचे बैठना पसंद करते थे। दोपहर में बेगम साहब से मिलने जाना था; और महिलाएं पास ही स्थित एक किले के बुर्ज पर बने एक मंडप तक गईं, जहाँ नवाब के परिवार के सदस्य इकट्ठा थे, और बिना कुछ खास सीखे लौट आईं। ग्रेस

ने सोचा, "अगर ये सादी, कठोर चेहरे वाली औरतें देश की सुंदर महिलाओं का नमूना हैं, तो मिस्टर ब्रैंडन की पत्नियाँ कैसी होंगी!"
धमकियाँ। | 195 “और किस बात ने उसे उनमें से किसी एक से शादी करने के लिए प्रेरित किया होगा?” सच है, उनके कपड़े बहुत शानदार थे, और समूह और वेशभूषा शानदार तस्वीरें बना सकते थे; लेकिन औरतें! छी! उन्होंने अपने दांत काले कर लिए थे, खाना खाकर अपने मुंह बिगाड़ लिए थे, और ग्रेस और लूसी इलोमो की आशंका के अनुसार, वे बेहद घिनौनी लग रही थीं। फिर, जल्दी भोजन के बाद, सभी मेहमानों को गुलाब की बोतलों से भरे उपहार दिए गए, और उनके गले में फूलों की मालाएँ डाली गईं; और वे नूरपुर के लिए वैसे ही रवाना हो गए जैसे आए थे। मुझे नहीं लगता कि शाम की घर वापसी की सवारी सुबह की सवारी जितनी सुखद थी। दिन की ताजगी बीत चुकी थी, और महिलाएं गर्मी और थकान से परेशान थीं। घुड़सवारी के वस्त्र, चाहे कितने भी हल्के हों, पूरे दिन के लिए सुखद पोशाक नहीं होते। “मैं आपको रात के खाने पर न बुलाने के लिए आपसे माफी नहीं मांगूंगी,” श्रीमती मोस्टिन ने सिरिल से कहा, जब वे द्वार पर पहुँचे। “असल बात तो यह है कि मैंने कुछ भी ऑर्डर नहीं किया। ग्रेस और मैं चाय बनाकर सोने चले जाते हैं।” “और मैं तुम्हारे साथ सिगार पीने आऊंगा, सिरिल,” मोस्टिन ने कहा, “अगर तुम मुझे इजाज़त दोगे तो।” “मुझे बहुत खुशी होगी,” उसने जवाब दिया। “जब चाहो आ जाओ।” और वह अपने घर की ओर सरपट दौड़ पड़ा। घर पहुँचकर उसे खुशी हुई; उन कोमल, विनती भरी आँखों से कुछ पल के लिए दूर रहने की खुशी हुई, जो उस दिन अक्सर उसकी आँखों में आई थीं, और जिन्होंने, अगर मैं कहूँ तो, स्थानीय मध्ययुगीन इतिहास की उसकी कहानियों और फतेहपुर के उन वीर सरदारों की गाथाएँ सुनी थीं, जिन्होंने अकबर के समय में हिंदुओं से अपना क्षेत्र जीता था और सभी परिवर्तनों और क्रांतियों के बावजूद उस पर अपना अधिकार बनाए रखा था। उसने लोगों और उस नए परिवेश के बारे में उसके सभी सरल प्रश्नों के उत्तर दिए थे जिसमें वह उस दिन थी: उसे बताया था कि वे कैसे रहते हैं, उनके क्या विश्वास हैं, कैसे उनके भी सुख-दुख उन्हीं की तरह हैं; और उसने उसे इतना प्रभावित किया था जितना उसने सोचा भी नहीं था। यहाँ तक कि श्रीमती मोस्टिन ने भी कहा कि उन्होंने उससे इतना कुछ पहले कभी नहीं सुना था। वे महाद्वीप पर, इटली, जर्मनी और फ्रांस में एक ही स्थानों पर थे, और उन्होंने एक-दूसरे की यादों में दृश्यों और चित्रों को ताजा किया। सिरिल ने ग्रेस मोस्टिन को पहले कभी इतना

नहीं देखा था; मानो उसे कभी "बाहर निकालने" में सक्षम नहीं था; और यह लगभग एक भावना के साथ था दर्द से कराहते हुए उसने सीता को चूमा, जो उससे मिलने के लिए दौड़ी और इतनी जल्दी आने के लिए उसे धन्यवाद दिया। "मुझे लगा था कि तुम जज के यहाँ रुकोगे," उसने कहा। "नहीं, वे बहुत थके हुए थे," उसने जवाब दिया, "और उन्हें मेरी ज़रूरत नहीं थी, और श्री मोस्टिन अभी आ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि वह तुम्हें बेहतर तरीके से जान लें, और फिर वह समझ जाएँगे—" "क्या समझ जाएँगे?" सीता चिल्लाई।

196 सीता। “तुम क्या हो, नन्ही बच्ची, यह तो सिर्फ मैं ही जानती हूँ। और तुमने सारा दिन क्या किया?” “ओह, मैं बगीचे में गई, वापस आई, गमलों में पानी डाला, फिर बैठ कर अंग्रेजी पढ़ी। फिर मैंने भीमी को बाजार भेजा, चूड़ी बेचने वाले को ढूंढने के लिए, और वह एक चूड़ी ले आई; लेकिन उसके पास मेरे नाप की कोई चूड़ी नहीं थी, और वह कल आएगी; और—बस इतना ही, मुझे लगता है, सिरिल। और तुम?” “वही रोज़मर्रा के काम जो मुझे हमेशा नापसंद हैं; लेकिन फतेहपुर की हमारी यात्रा सुखद रही; और नवाब काफी सभ्य थे। मैं तुम्हें और क्या बताऊँ? अब, तुम्हें आज रात हमारे लिए चाय बनानी है, इसलिए भीमी को सामान लाने भेजो, मैं तुम्हारी पढ़ाई सुनती हूँ।” जब फिलिप मोस्टिन आए, तो सिरिल ने उन्हें सीता के अभ्यास दिखाए, और उन्हें पढ़कर सुनाने को कहा, जिसे उन्होंने धीरे-धीरे, लेकिन त्रुटिहीन उच्चारण के साथ पढ़ा; फिर भी वह बोलने में हिचकिचा रही थीं। “धीरे-धीरे,” उसने विनम्रता से कहा; “अभी नहीं।” और सीता उस रात बहुत खुश थी: श्री मोस्टिन के दयालु स्वभाव और उनकी भाषा की पूर्ण समझ ने उसे तुरंत सहज कर दिया। उसने भोलेपन से उनके लिए चाय बनाई; और अपनी मुलायम सफेद मलमल की साड़ी में वह सचमुच बहुत सुंदर और आकर्षक लग रही थी। फिर सिरिल ने उससे संस्कृत की कुछ पुरानी पुस्तकें पढ़ने को कहा, और उसने श्री मोस्टिन को ‘सावित्री’ का एक अंश पढ़कर सुनाया, जिसे उन्होंने कॉलेज के दिनों की अपनी पुरानी पढ़ाई के रूप में याद किया और उसे दोबारा सुनकर उन्हें बहुत खुशी हुई; और इस तरह शाम बहुत सुखद ढंग से गुज़री। “मुझे इस पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं है,” मोस्टिन ने बगीचे से घर जाते हुए कहा; “लेकिन ओह! काश वह ग्रेस का इंतज़ार कर लेता! वे दोनों एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त होते—और रोज़ भी यही कहती है। लेकिन हे भगवान! हे भगवान! हम कितने मूर्ख हैं, क्योंकि हम कैसे अनुमान लगा सकते थे कि क्या होने वाला है,

और वे पहले क्यों नहीं आ सकते थे?" लेकिन बेचारा सिरिल उस लड़की की एकरसता से ऊब जाएगा, चाहे वह कितनी भी प्रतिभाशाली और अद्भुत क्यों न हो। उसे एक अंग्रेज़ बुद्धि की ताजगी की कमी खलेगी। आज पेड़ों के नीचे हुई वो सुखद बातचीत; क्या उस लड़की को उनकी बातें समझ में आई होंगी? नामुमकिन! और सिरिल कितना उत्साहित था, और ग्रेस ने उसकी हर बात को कितनी अच्छी तरह समझा। नहीं! यह ठीक नहीं है; यह ज़्यादा दिन नहीं चलेगा। वैवाहिक सुख के लिए विचारों में एकता होनी चाहिए, या बिल्कुल भी विचार नहीं होने चाहिए। लेकिन उस लड़की के विचार कुछ ज़्यादा ही हैं। 'सावित्री' के उस अंश पर टिप्पणी करते हुए वह पुराने हिंदू धर्मगुरुओं के रहस्यवाद में कैसे डूब गई, और 'आत्मा' और 'पदार्थ' पर कितनी वाक्पटु हो गई, और दिल से कितनी पवित्र और विनम्र है, हालाँकि उसकी आँखें चमक उठीं और उसके प्यारे चेहरे पर लाली छा गई! लेकिन मुझे डर है कि ये विचार उसके नहीं हैं; और रोज़ शायद सही कह रही है कि यह ठीक नहीं चलेगा। खैर, देखते हैं।

कुष्ठ रोग का आसवन। 197 "क्या उन्होंने कभी मेरे बारे में पूछा?" मोस्टिन के जाने के बाद सीता ने सिरिल से पूछा। "वह मेरे प्रति बहुत दयालु हैं, और मुझे यकीन है कि उनकी पत्नी भी वैसी ही होंगी।" "एक बार भी नहीं," उसने उत्तर दिया; "मैंने उन्हें अपनी मर्ज़ी से करने के लिए छोड़ दिया है। वे तुम्हारे बारे में सब जानते हैं, और मुझे लगता है कि सही समय आने पर सब पता चल जाएगा। मुझे यकीन है कि वह अपनी पत्नी को बताएंगे कि उन्होंने आज रात तुम्हें कैसे देखा, और उसे भी!" "ग्रेस!" "हाँ, ग्रेस; मैं तुम दोनों को साथ देखना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि वह तुमसे प्यार करे, मेरी प्यारी; तुम उनसे मुझसे कहीं ज़्यादा सीख सकती हो।" अध्याय XXVI. कुष्ठ रोग का सार। उस रात श्री मोस्टिन ने अपनी पत्नी से लंबी बातचीत की। उन्होंने उन्हें बीते हुए समय के बारे में बताया; सीता के मनमोहक स्वभाव और एक हिंदू लड़की होने के बावजूद उसकी विद्वत्ता के बारे में बताया; और यह भी बताया कि वह कितनी तेज़ी से अंग्रेज़ी सीख रही थी। उन्होंने कहा, "उसने मुझे पढ़कर सुनाया, इतनी मधुर आवाज़ में कि आपने कभी नहीं सुनी होगी, और बिल्कुल भी किसी देशी वक्ता जैसी नहीं; और वह बहुत ही मनमोहक थी, रोज़; और उसने हमारे लिए चाय भी बनाई, पूरी शालीनता के साथ; लेकिन फिर भी, घर आते समय मैं सोच रहा था—।" "यह ठीक नहीं है," वह हंसते हुए बोलीं; "मैं तुम्हारे विचार जान गई थी, फिलिप, और इसलिए मैंने तुम्हारा

वाक्य पूरा कर दिया।" "तुम एक चुड़ैल हो, कोसे," उन्होंने जवाब दिया, "क्योंकि वास्तव में मैं यही सोच रहा था; और यही कारण है," और उन्होंने उन्हें अपने उस एकालाप का पूरा विवरण दिया जिसे मैंने रिकॉर्ड किया है। श्रीमती मोस्टिन ने आह भरी। "यह बहुत दुख की बात है, बेहद दुख की बात," उसने कहा, "उसके लिए भी और उस लड़की के लिए भी। बेशक वह उससे बेइंतहा प्यार करती है, भला वह क्या कर सकती थी, बेचारी? और फिर यह कितनी रोमांटिक कहानी है। लेकिन मैं सचमुच रो सकती हूँ, यह सोचकर कि बेचारी ग्रेस ने क्या खोया है; मुझे यकीन है कि वह उसे पसंद करती है।" "मुझे उम्मीद है ऐसा नहीं होगा," फिलिप ने गंभीरता से कहा। "खैर," उसकी पत्नी ने जवाब दिया, "मैंने आज तक इस बारे में ज्यादा नहीं सोचा था; लेकिन जब वे फुट्टेहपुर में पेड़ों के नीचे बातें कर रहे थे, तो मैं खुद को रोक नहीं पाई, उनकी बातों और विचारों में कितना सामंजस्य था; और फिर वह अपनी आँखों से उसका पीछा करती रही। क्या आप जानते हैं, श्रीमान, कि जो लोग इस बुखार से गुजर चुके होते हैं, वे इसे दूसरों में जल्दी पहचान लेते हैं? और
198 सेल्टा, मैंने बीच-बीच में एक हल्की सी आह भी सुनी। मुझे लगता है कि यह बिलकुल असंभव है कि ग्रेस और उसके जैसे दो प्राणी, जिनकी रुचियां और योग्यताएं बिल्कुल एक जैसी हैं, और जिनका स्वभाव भी एक जैसा है, एक-दूसरे के प्रति उदासीन रहें; और यही बात मुझे उसके लिए डर रही है। "काश..." उसके पति ने कहा। "बकवास! फिलिप," श्रीमती मोस्टिन चिल्लाईं, "इच्छा करने का कोई फायदा नहीं - सवाल यह है कि क्या किया जा सकता है?" "ठीक है," उसने कहा, "तुमने मुझे अपना वाक्य पूरा नहीं करने दिया; मेरी इच्छा तुम्हारे बारे में थी। देखो; तुम जानती हो कि वह गर्मी के मौसम तक अपने जिले में ही रहेगा, और मैं नहीं चाहता कि तुम और ग्रेस पहली गर्मी यहीं बिताओ: तुम दोनों मिल्स क्यों नहीं जाते? और अगर दर्द होना ही है तो उसे दर्द से बचाओ।" "ओह फिलिप!" उसकी पत्नी चिल्लाई, "ऐसी बातें मत करो, प्रिय - इस भयानक जुदाई को मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकती - हम दोनों में से कोई भी नहीं। ग्रेस को अकेला छोड़ दो, उसके सामने उसका ज़िक्र मत करो; या अगर आप ऐसा करते हैं, तो उनकी पत्नी की प्रशंसा करें। वह इतनी गंभीर, इतनी सही सोच वाली और शब्द के सर्वोत्तम अर्थों में पूरी तरह से अंग्रेज़ हैं कि वह जल्द ही सुधर जाएंगी, भले ही उन्हें कुछ ठेस पहुंची हो। नहीं, समाधान श्रीमती ब्रैंडन के हाथ में है; और मुझे लगता है, उनकी माँ के लिए, उनके परिवार के लिए, उन्हें वास्तव में छूट

मिलनी चाहिए, और फिर हम बाकी सब भगवान की मर्जी पर छोड़ सकते हैं। क्या आप उनसे सेक्टा के बारे में नहीं पूछ सकते?" "यह बिल्कुल असंभव है, मेरी प्रिय," श्री मोस्टिन ने दृढ़ता से कहा; "मैं सिरिल ब्रैंडन से जालसाजी करने के लिए कहने को उतनी ही तत्पर हूँ, जितनी कि उस बच्ची का अपमान करने के बारे में सोचने को। ऐसे पुरुष रहे हैं और हैं जो ग्रेस जैसी प्यारी अंग्रेज़ लड़की को पाने के लिए ऐसा कर सकते हैं, लेकिन सिरिल ब्रैंडन नहीं। अगर आप चाहें तो मैं उसे यहाँ बार-बार न आने के लिए कह सकती हूँ; लेकिन इससे ज़्यादा कुछ मत सोचो, मेरे प्यारे, और सो जाओ।" अगले दिन, जब सिरिल ब्रैंडन अपने कुचेरी के काम पर चला गया, और घर पर केवल अपने एक चूड़ीदार को पहरा देने के लिए छोड़ गया, जिसे सीता के अनुरोध पर चूड़ी बनाने वाली महिला के आने पर उसे अंदर आने देने का निर्देश दिया गया था —वह महिला एक टोकरी लिए एक और महिला के साथ आई, और उन्हें विधिवत सीता के सामने पेश किया गया। वह हमेशा की तरह बाहरी कमरे में अपनी चूड़ी का अध्ययन कर रही थी; लेकिन उसने कुछ देर के लिए अपनी किताबें एक तरफ रख दीं, और आवश्यक प्रक्रिया के लिए फर्श पर बैठ गई। भारतीय महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली चूड़ियाँ आमतौर पर कांच की पतली अंगूठियाँ होती हैं, सादी या अलंकृत; और इन्हें पहनने वाली महिलाओं को इन्हें बिना तोड़े या पहनने वाले को चोट पहुँचाए पहनने के लिए बहुत कौशल और अभ्यास की आवश्यकता होती है। "और तुम दोनों इतनी दूर कस्बे से क्यों आई हो?" सीता ने पूछा।

कुष्ठ रोग का आसवन। 199 "शायद उसका सेट मेरे सेट से ज़्यादा आपको पसंद आए," उस महिला ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं आपको फिट करने की कोशिश करूँगी। वेयर सेट भी ज़्यादा महंगे हैं; और आप जैसी अमीर महिला उससे एक-दो सेट लेकर अपने पास रख सकती हैं; ऐसे सेट गाँवों में नहीं मिलते।" * "आपको कैसे पता कि मैं अमीर हूँ?" सीता ने हँसते हुए पूछा। "अरे! यह तो सबको पता है, महोदया। क्या आप बैंकर नरेंद्र की पोती नहीं हैं? हमने आपके बारे में अक्सर सुना है; और क्या मैं नूरपुर में आपकी जाति के सभी लोगों की सेवा नहीं करती?" 'और मेरे लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं?' सीता ने पलटकर पूछा। "कि आप बहुत सुंदर, बहुत विद्वान, बहुत अच्छी और बहुत दानशील हैं," दूसरी महिला ने कहा, जो अब बोल रही थी, और जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, वह श्रीमती स्मिथ की आया थी, जो एक नई भूमिका निभा रही थी; "और वे कहते हैं कि सभी अंग्रेज़ महिलाएँ आपसे ईर्ष्या करती हैं,

क्योंकि आपने कमिश्नर साहब को उनसे छीन लिया है।" "यह सच नहीं है," सीता ने शर्म से लाल होते हुए कहा; "ईश्वर ने मुझे जो दिया है, उस पर कोई मुझसे ईर्ष्या नहीं कर सकता।" "वे अंग्रेज़ औरतें बहुत द्वेषपूर्ण हैं, और हम काले लोगों के प्रति बहुत निर्दयी हैं, महोदया, और उनसे डरना चाहिए," आयत ने आगे कहा। "अगर मैं तुम्हारी जगह होती, हालाँकि मैं केवल एक विनम्र दासी हूँ, तो मैं उनसे घृणा करती। हम जो उनके बीच रहते हैं, तुमसे और देहात से आने-जाने वालों से बहुत अलग हैं। हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।" "और मैं उनसे घृणा क्यों करूँ?" सीता ने पूछा, "उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई है, और मैं भी उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगी।" "अरे! तुम तो भोली हो," उस स्त्री ने उत्तर दिया; "इतनी भोली कि अंग्रेजों को उतना नहीं जानती जितना हम जानते हैं। क्या हमने तुम्हारे जैसी कई औरतों को आते-जाते नहीं देखा है, बहन?" उसने अपनी सहेली से कहा, जो सीता की सुंदर गोल बांह पर चूड़ियों के कई जोड़े पहनाने की कोशिश कर रही थी, जो सभी बहुत बड़ी थीं—"आती-जाती हैं, चुपके से चली जाती हैं, और शायद मर जाती हैं—जब उनके अंग्रेज़ स्वामी शादी कर लेते हैं।" सीता चौंक गई, मानो उसे किसी ने डंक मार दिया हो। "अपना हाथ मत हटाओ, प्रिय महोदया," ऑपरेटर ने कहा, "तुम्हें चोट लग सकती है।" लेकिन दूसरी महिला की आवाज़ में उदासी और करुणा का भाव सीता को बहुत आकर्षित कर रहा था। "शादीशुदा?" उसने पूछा। "हाँ, शादीशुदा हूँ, महोदया; और यह बहुत दुख की बात है। अंग्रेजों को कभी न कभी शादी करनी ही पड़ती है; यह उनकी जाति है, और वे केवल अपने ही लोगों से शादी कर सकते हैं, और वह भी पादरी साहब के हाथों, यह बात तो हर कोई आपको बता सकता है।" "मुझे पता है," सीता ने तुरंत कहा; "मेरे पति ने मुझे यही बताया था जब उन्होंने हमारी रीति-रिवाजों से मेरी शादी की थी।" "हो सकता है कि आपकी शादी हिंदू रीति-रिवाजों से हुई हो," ऑपरेटर ने दोहराया।

200 सीता. आयः, "परन्तु ईसाई बनकर नहीं; जब तुम ईसाई बन जाओगी, तब पादरी तुम्हारी शादी करवा देंगे। लेकिन मैं तो बस एक गरीब, अनपढ़ दासी हूँ, महोदया: मैं आपको वही बता रही हूँ जो सुनार की पत्नी ने मुझे बताया; उनसे पूछिए; और अगर मेरी बातों से आपको दुख हो तो मुझे क्षमा कर दीजिएगा। आपने पूछा था कि जाति क्या कहती है, और मैंने आपको बता दिया है; आप अपने लोगों के बीच जाकर खुद क्यों नहीं सुन लेतीं? मुझे लगता है अंग्रेज़ औरतें आपको विवाहित नहीं

मानतीं, वरना वे आपसे मिलने आतीं; वे अपने तरीके से आपके प्रति दयालु होतीं—उनमें से कुछ—अगर आप विवाहित होतीं, तो।'" सीता के गाल लाल हो गए। यही कारण था कि श्रीमती मोस्टिन उसके पास नहीं आई थीं, और वे एक-दूसरे के इतने करीब रहती थीं, उनके बीच केवल बगीचा और झाड़ियाँ थीं; फिर भी उसने श्रीमती मोस्टिन या ग्रेस को कभी देखा तक नहीं था। क्या उन्होंने जानबूझकर उससे दूरी बनाए रखी थी? 'मुझे बताइए, मुझे सच बताइए, स्त्री," वह चिल्लाई, "क्या अंग्रेज़ औरतें कभी उन लोगों के पास आईं जिन्हें आप जानती थीं, और कौन चली गईं?'"
"कभी नहीं, मैं तुम्हारी गर्दन की कसम खाकर कहती हूँ, कभी नहीं! आह, वे बहुत घमंडी हैं, महोदया। अंग्रेज़ पुरुषों का घमंड तो बहुत है, पर उनकी स्त्रियों का घमंड हमसे कहीं ज़्यादा है; और वे अपनी आयाओं को भी पीटते हैं, बेचारी! जो उनकी सेवा करती हैं। लेकिन तुम मुझसे नाराज़ हो जाओगी, क्योंकि तुम्हारा स्वामी अंग्रेज़ है।"
"वह हर जगह प्रिय है; स्त्रियाँ अपने बच्चों को उसके पास आशीर्वाद दिलाने लाती हैं, और उसके नाम पर दीपक जलाती हैं, उसे देखने से पहले ही मैंने अपने घर में ऐसा किया है," सेक्टा ने जोश से कहा। "और श्री मोस्टिन भी वैसे ही हैं; मैं उनके लोगों के बारे में और कुछ नहीं जानना चाहती, वे मेरे लिए काफ़ी हैं। अब तुम दोनों जाओ, और सुनार की पत्नी को बता देना कि जब मेरे दादाजी लौटेंगे, तो मैं उनसे मिलने आऊँगी;" और उसने उन्हें एक बड़ा उपहार दिया और विदा कर दी। जब वे कुटिया के दरवाज़े से कुछ कदम दूर गए, तो आया ने पीछे मुड़कर देखा और लौट आई; "मैं तुम्हें एक बात बताती," उसने कहा, "लेकिन वह चली गई है।" मुझसे चूड़ियों का यह सेट खरीद लो, मैं तुम्हें बता दूंगी। मैं तो बस एक गरीब, सीधी-सादी औरत हूँ, लेकिन अगर हो सके तो मैं तुम्हें दुख और शर्मिंदगी से बचा लूँगी। धन्यवाद, और एक गरीब विधवा की मदद करने के लिए तुम्हें मेरा आशीर्वाद मिले," उसने गहनों के लिए माँगे पैसे लेते हुए कहा। "सुनो—भले ही तुम्हें दुख हो। तुम्हारे स्वामी, न्यायाधीश की बहन से शादी करने जा रहे हैं: हर कोई यही कहता है, यहाँ तक कि अंग्रेज़ जादियाँ भी। क्या वह हमेशा उसके साथ नहीं रहते, और वे साथ में गाते हैं? क्या वह कल सारा दिन फुटिक्लिपूर में उसके साथ नहीं थे, और आज सुबह यह खबर पहले से भी ज़्यादा ज़ोरों पर है? जाओ, मेरी प्यारी चिड़िया; अपने सम्मान के साथ अपने घर वापस जाओ, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। जाओ!" सीता की आँखें मानो पानी से भर आईं और उसके घुटने काँपने लगे।

कुष्ठ रोग का आसवन। 201 एड दहलीज पर बैठ गई, अपना चेहरा ढँक लिया, और जैसे ही उसने वह भयानक कहानी सुनी, उसका दिल मानो थम सा गया; फिर एक पल के लिए वह संभली और ऊपर देखा, लेकिन वह औरत जा चुकी थी। उसके बाद उसने क्या किया, क्योंकि वह यंत्रवत रूप से इधर-उधर घूम रही थी, उसे कभी पता नहीं चला; लेकिन आखिरकार वह जाकर दरवाजे पर बैठ गई जब तक कि बगीचे पर परछाइयाँ लंबी नहीं हो गईं, सिरिल का इंतजार करती रही। और वह आया, हमेशा की तरह तेजस्वी, और जब वह भव्य रास्ते पर दौड़ रही थी, तो उसने उसे पुकारा— "आओ, सीता, कितनी सुहावनी हवा चल रही है, और मैं जल्दी निकल सकता हूँ, आओ और सैर करो। अरे—तुम्हें क्या हुआ है? फिर से वह डरा हुआ चेहरा?" "मैंने सुना—मैंने सुना, सिरिल," उसने लड़खड़ाती और कर्कश आवाज़ में कहा, क्योंकि उसकी साँसें सूख रही थीं, "कि तुम्हारी शादी होने वाली है। क्या यह सच है? हे पति, क्या यह सच है? मुझे तुरंत बताओ; और मुझे जाने दो; तुम नहीं चाहते कि तुम्हारी पत्नी पर शर्म आए। हे मेरे स्वामी, क्या बात यहाँ तक आ गई—इतनी जल्दी, इतनी जल्दी!" "मेरी पत्नी, मेरी प्रिय," उसने उत्तर दिया, हालाँकि उसे एक पीड़ा हुई, "तुमने मुझ पर विश्वास किया है, मुझ पर भरोसा किया है, और अब तुम्हें मुझ पर और अधिक भरोसा करना होगा। तुम्हें यह बदनामी भरी कहानी किसने सुनाई है? आह, मैं देखता हूँ, तुमने नई चूड़ियाँ पहनी हैं; यह वही औरत होगी जिसे तुमने बुलवाया था, और मैं मूर्ख था जो उसे तुम्हारे पास आने दिया। पत्नी, पत्नी, ऊपर देखो, मेरी प्रिय," और उसने उसका सिर अपने दिल पर रख लिया। "इसे भूल जाओ; मैंने एक बार ईश्वर और तुम्हारे लोगों के सामने कहा था कि मैं तुम्हारे प्रति सच्चा रहूँगा, और मैं समझौता कर चुका हूँ।" अगर मैं अपने लोगों के बीच गई हूँ, और अगर मैं मोस्टिन परिवार को जानती हूँ, तो सिर्फ़ इसलिए कि वे मेरे भाई-बहनों जैसे हैं।" अब वह फूट-फूटकर रो रही थी; उसे उसकी बात पर पूरा यकीन था। "मैं तुम पर भरोसा करती हूँ; मैं तुम पर जान तक का भरोसा करती हूँ, सिरिल," उसने धीरे से कहा, "लेकिन वे भयानक शब्द किसी डरावने सपने जैसे हैं।" "तो चलो," उसने कहा, "और उन्हें भूल जाओ। मैं उस बुढ़िया को सज़ा देना चाहता हूँ; लेकिन मुझे तुम्हारी इज़्ज़त का उतना ही ख्याल रखना है जितना अपनी। उसे जाने दो, और मुझसे वादा करो कि उसे दोबारा नहीं बुलाओगे। आओ, अपने ऊपर एक सुनहरा शॉल ओढ़ लो, और ताज़ी हवा उस सपने को भगा देगी।" और वह उसके साथ चली गई, और शांत हो गई, जैसा उसने कहा था। "आज

रात जज के पास जाना था, क्योंकि मैंने उनसे वादा किया है," उसने लौटते हुए कहा; "लेकिन जब तक तुम ठीक नहीं हो जाती, सीता, मैं नहीं जाऊँगा।" "सिरिल, मेरे साथ रहो," उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा; "मैं तुमसे अक्सर नहीं कहती, पर आज रात अकेले रहने से मुझे डर लग रहा है।" और वह उसके साथ रहा, और उसने महसूस किया कि उसका दर्द कुछ कम हो गया था, हालांकि पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था; और शायद उसके अपने विचार भी उसे परेशान कर रहे थे।

202 सीता। वास्तव में, वह अगली शाम सीता को छोड़कर नहीं जाता, लेकिन श्रीमती मोस्टिन का एक पत्र आया था, जिसमें उनकी उपस्थिति पर ज़ोर दिया गया था: उनके यहाँ कुछ मेहमान रात के खाने पर आए थे, और यदि वह चाहें तो उन्हें आने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उन्हें बाद में आकर उनकी मदद करनी होगी; और कैप्टन हॉब्सन भी वहाँ होंगे, इत्यादि। सिरिल ने यह पत्र सीता को अपने सुबह के नाश्ते के समय दिखाया, जो वह सीता की कुटिया में करना पसंद करते थे। सीता चाहती थीं कि वह रात के खाने पर जाएँ; लेकिन वह केवल समझौता ही स्वीकार कर पाए, और उन्होंने सीता से अपने कुछ स्वादिष्ट व्यंजन बनाने के लिए कहा, जो वह कभी-कभी बड़े आनंद से करती थीं। फिर वह कुचेरी से जल्दी घर आ गए, और वे नाव की सवारी के लिए निकल गए; और सीता काफी प्रसन्न लग रही थीं, क्योंकि वह बाद में अपने छोटे-छोटे व्यंजन लेकर आईं, और उन्हें उनकी पसंद का खाना परोसा: और उचित समय पर वह न्यायाधीश के घर चले गए, और शाम की पार्टी में सबसे पहले पहुँचे। श्री मोस्टिन ने उन्हें सज्जनों के साथ शामिल होने के लिए बुलाया; लेकिन उन्होंने कहा कि वे जहाँ हैं वहीं बहुत खुश हैं, और ड्राइंग रूम में ही रहे। | "तो आप रात के खाने पर नहीं आए, मिस्टर ब्रैंडन," श्रीमती मोस्टिन ने कहा; "और आप कुचेरी के बाद अभ्यास करने भी नहीं आए। मुझे अकेले खाना कितना बुरा लगेगा; मुझे यकीन है कि मैं एक निवाला भी नहीं खा पाऊँगी।" "मैं अकेला नहीं था," सिरिल ने साहसपूर्वक कहा, क्योंकि उन्होंने सीता के प्रति उस समय से अधिक सच्चा कभी महसूस नहीं किया था। "मेरी पत्नी ने मेरे लिए थोड़ा सा खाना बनाया था, और वह बहुत स्वादिष्ट था, और उन्होंने मुझे उसे खाते हुए भी देखा, जिसे मैंने बड़े चाव से खाया।" यह पहली बार था जब उन्होंने सीता का ज़िक्र किया था, और श्रीमती मोस्टिन शर्म से लाल हो गईं। अगर ग्रेस ने उन्हें सुना भी था तो उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और शाम के लिए संगीत चुनने में लगी रही। श्रीमती मोस्टिन ने उसकी ओर देखा, लेकिन उसके

चेहरे पर कोई बदलाव नहीं देखा। “आप बहुत अच्छे हैं, श्रीमान ब्रैंडन,” श्रीमती मोस्टिन ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया, “और मैं आपको पूरी तरह से क्षमा करती हूँ। मुझे लगता है कि मैं उससे मिलने न जाने के लिए खुद को दोषी मानती हूँ, लेकिन फिलिप ने मुझे बताया कि वह इस बार नहीं आना चाहती। जब आप वापस आएँगे, तो मुझे उससे दोस्ती करनी होगी; फिलिप ने मुझे बताया है कि वह कितनी प्यारी है।” “आप बहुत दयालु हैं,” उन्होंने उत्तर दिया, “बहुत दयालु। फिलिप ने जो आपको बताया वह बिल्कुल सही था। असल बात यह है कि सीता बहुत लगन से अंग्रेजी पढ़ रही है, और उसे उम्मीद है कि एक दिन वह आपसे आसानी से बात कर पाएगी; और मैं उसे बता दूँगा कि आपने क्या कहा। इससे उसकी प्रगति में बहुत प्रोत्साहन मिलेगा, जो अब तक वास्तव में आश्चर्यजनक है, यहाँ तक कि मेरे लिए भी।” “ठीक है, तो मैं यह सब आप दोनों पर छोड़ती हूँ,” उन्होंने कहा। “तुम दोनों वहाँ क्या फुसफुसा रहे हो?” पियानो से ग्रेस चिल्लाई। “मैं तो बस उसे आज अभ्यास में न आने के लिए डांट रही थी; लेकिन वह बहुत पछता रहा है,” रोज़ ने कहा।
कुष्ठ रोग का मिश्रण। 208 “हो सकता है वो ऐसा ही हो,” उसने शरारती लहजे में जवाब दिया। “क्या हमें ‘लुसिया’ का वो युगल गीत अभ्यास नहीं करना था? और मुझे यकीन है कि मुझे नहीं पता कि आज रात वो कैसा रहेगा।” “चिंता मत कीजिए, मिस मोस्टिन,” सिरिल ने उत्तर दिया। “मैं सचमुच नहीं आ सका, वरना मुझे इस आनंद से वंचित नहीं रहना चाहिए था। यह ज़रूर अच्छा रहेगा।” कुछ महिलाओं की घोषणा ने इस विषय पर आगे की बातचीत रोक दी; और शाम उनके लिए सामान्य रूप से आगे बढ़ी। सीता कुछ देर बैठी, पढ़ने की कोशिश करती रही; लेकिन शब्द उसकी आँखों से धुंधले पड़ते जा रहे थे, और उनकी जगह चूड़ी बेचने वाले की आकृति उभर आई, और उसके कानों में वही भयानक शब्द गूंजने लगे जो उसने सुने थे: “जाओ, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए! जाओ!” अभी तक, लड़की में कोई ईर्ष्या नहीं थी; और जब से उसने अपने पति को अपनी परेशानी बताई थी, उसकी दयालुता ने उसे आश्वस्त किया था, हालांकि पूरी तरह से नहीं, और एक उम्मीद बाकी थी जो अब काम कर रही थी। “काश मैं उन्हें एक साथ देख पाती,” उसने मन ही मन सोचा, “मुझे सब पता चल जाता, और फिर—अगर यह सच है—तो मैं चुपचाप चली जाती, भले ही मेरा दिल टूट जाए। अगर उसे खुश रहना है, तो मुझे मर जाने दो।” तभी अचानक उसके मन में एक विचार आया। वह जानती थी कि जज का ड्राइंग रूम कहाँ

है, क्योंकि उसने उसे अपने बगीचे से अक्सर देखा था। क्या वह सुन और देख नहीं सकती थी? ब्लीम्स सो गई थी, और उसकी कुछ साड़ियाँ बाथरूम में टंगी हुई थीं। उसने जल्दी से अपने कपड़े उतारे, अपनी नौकरानी के मोटे कपड़ों में से एक पहना, अपने सोने के पायल उतारे, और झोपड़ी के दरवाजे से बगीचे में चली गई। वहाँ संतरी के कदमों की आहट और मिस्टर मोस्टिन के घर से आती हल्की संगीत की धुन के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी। बार-बार उसके कदम लड़खड़ाए, और एक बार तो वह लगभग वापस लौट ही गई थी; लेकिन उसके अंदर की भावना ने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उसे देखना ही था, उसे सुनना ही था, वरना उसे चैन नहीं मिल सकता था; और इस तरह वह बिना देखे उस रास्ते पर आगे बढ़ती गई जो घर की ओर जाता था, कभी झाड़ियों के पीछे खरगोश की तरह छिपती हुई, जब तक कि वह अपनी मनचाही जगह के पास नहीं पहुँच गई। ड्राइंग रूम को श्री मोस्टिन ने नूरपुर आने पर घर से बाहर, फूलों के बगीचे में बनवाया था। इसकी छत मजबूत थी, जिस पर गर्म, उमस भरी शामों में बैठना बहुत सुखद था; और कमरे का तहखाना और उसका बरामदा ज़मीन से लगभग चार फीट ऊपर था, जो घनी फूलों वाली झाड़ियों से ढका हुआ था। अब कांच के दरवाजों से रोशनी फूलों की क्यारियों पर पड़ रही थी, जिनसे कंदगुला और मिग्नॉनेट की मीठी सुगंध शांत हवा में घुल रही थी। चुपचाप और सावधानी से वह अपनी मनचाही जगह पर पहुँच गई। अंदर से संगीत की मधुर धुनें आ रही थीं; लेकिन वह सुनने के लिए रुकने की हिम्मत नहीं कर पाई, और घनी झाड़ियों के नीचे रेंगती हुई आगे बढ़ी।

204 सीता झाड़ियों के बीच बैठी, मानो किसी सपने में हो, अपने विचारों को व्यवस्थित करने का व्यर्थ प्रयास कर रही थी। फिर भी कोई लाभ नहीं हुआ—उस पर छाए एक ही स्वप्न ने अन्य सभी विचारों को अवरुद्ध कर दिया था। कई बार सिरिल की मजबूत, स्पष्ट आवाज केवल उस तक ही पहुँची; फिर वह दूसरों के साथ मिल गई, और विशेष रूप से एक मधुर महिला की आवाज के साथ, और उसने महसूस किया कि यह ग्रेस मोस्टिन की आवाज होनी चाहिए। उसने ऊपर देखा, खुद को उठाते हुए, और कमरे को अंग्रेजी महिलाओं और पुरुषों से भरा हुआ देखा, जो बैठे या खड़े थे, और वह उन्हें एक नीरस, स्वप्निल रुचि के साथ देख रही थी जिसे परिभाषित करना मुश्किल था। कुछ देर बाद उसने एक महिला को पियानो पर बैठते देखा, और सिरिल और एक युवती उसके दोनों ओर बैठ गए। वह लड़की कितनी प्यारी लग रही थी!

उसके कोमल, लहराते बाल कितने सुंदर थे; उसका चमकीला, कोमल रंग, गुलाब की पत्ती जैसा; उसका छोटा गुलाबी कान, और उसकी लिली जैसी गर्दन, और बाहें और कंधे! “यह ग्रेस ही होगी,” उसने सोचा। “हाँ, वह सही है; वह मुझसे कहीं अधिक उसके लिए उपयुक्त है। इंद्र के स्वर्ग की कोई अप्सरा भी इतनी पवित्र या सुंदर नहीं हो सकती। उसी क्षण लगभग बेहोशी की हालत में सीता तुरंत भागने को बेताब हो गई, चाहे कहीं भी जाना हो या किसी के भी पास— शहर में उसके कुछ लोग उसे शरण दे देते; लेकिन संगीत फिर से शुरू हुआ और वह एक तरह के आनंद में डूब गई। “दिम्मी चे म’अमी अंकोर।” सिरिल ने इसका अनुवाद करके उसे सुनाया था और उसे यह कहते हुए याद करने की कोशिश की थी। “तामी, त’अमो।” आह! वह मधुर प्रेम, अब बनावटी नहीं लग रहा था; वह उसके लिए वास्तविक था, पर उसका नहीं—अब उसका नहीं रहा। वे उसे इस तरह गा नहीं सकते थे, और जो वे इतने मधुरता से गा रहे थे, उसे महसूस किए बिना नहीं रह सकते थे। फिर गीत समाप्त हुआ; और सिरिल, कांच के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए, उसे खोल दिया, और ग्रेस मोस्टिन और वह एक साथ बरामदे में आ गए। सीता फिर से अपने छिपने की जगह पर दुबक गई। वह इतनी पास थी कि उन्हें छू सकती थी, लेकिन उसने हिलने की हिम्मत नहीं की, और अपनी गर्म, जलती हुई आँखों से उन दोनों को देखती रही। उनके बीच बेफिक्री भरी बातें हो रही थीं। “उस गर्म कमरे के बाद ताज़ी हवा का झोंका कितना अच्छा लगता है, है ना, मिस मोस्टिन?” उसने कहा। “बिल्कुल,” उसने उत्तर दिया; “यह मन को तरोताज़ा कर देता है। रोशनी में बगीचा कितना सुंदर लग रहा है! वह बड़ा ताड़ का पेड़ सचमुच प्यारा है, मिस्टर ब्रैंडन।” “आज रात आपकी आवाज़ बहुत सुरीली है,” उसने कहा। “वैसे, मैं आपसे मेरे लिए ‘डोव सोनो’ गाने के लिए कहूँगा, अगर आप कुछ और पसंद न करें।” “मैं तुमसे एक सौदा करूंगी,” वह हंसते हुए बोली। “मैं ‘डोव सोनो’ या ‘वेदराई कारिनो’ या दोनों गाऊंगी, अगर तुम मेरे लिए ‘इल मियो टेसोरो’ या ‘विवी तू’ गाओगे।” “हाँ, मैं गाऊंगा,” उसने खुशी से कहा। “अब अंदर आ जाओ, क्योंकि हवा ठंडी है और तुम्हारे पास ओढ़ने के लिए कुछ नहीं है।”

कुष्ठ रोग का आसवन। 205 “यह क्या है?” ग्रेस ने नीचे झाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा। “मुझे लगा जैसे मैंने आह सुनी और पत्तों को हिलते देखा।” “बकवास!” सिरिल हँसते हुए चिल्लाया। “अगर तुमने देखा भी, तो वह कोई आवारा कुत्ता ही होगा; वे आवारा कुत्ते तो हमेशा इधर-उधर घूमते रहते हैं। अंदर जाओ, मैं दरवाजा बंद

कर देता हूँ।" ग्रेस सही थी; उसने आह सुनी थी—एक कोमल, कृतज्ञता भरी आह, उस लड़की की जो वहाँ दुबकी हुई थी। सीता को प्रेम के प्रदर्शन की उम्मीद थी। उसने सिरिल की आवाज़ के लहजे को आशंका से सुना था जो उसे घुटन महसूस करा रही थी; उसे लगा कि कहीं उसकी आवाज़ उन जानी-पहचानी आवाज़ों में न बदल जाए जो उसके दिल में बसी थीं। उसे लगा कि लड़की की आवाज़ भी बदल सकती है। वह पूरी तरह समझ नहीं पाई कि वे क्या कह रहे थे, लेकिन उनके लापरवाह, सहज व्यवहार, दोस्तों की सुखद हँसी—प्रेमियों की नहीं—में कोई शक नहीं था। उसने उसे "सिरिल" नहीं, बल्कि "मिस्टर ब्रैंडन" कहा था। मुझे लगता है कि सीता के मन में उस पल की राहत, सिरिल के प्यार में मिली शांति और सुरक्षा की अनुभूति, उसकी असीम खुशी में भी कभी इतनी खुशी नहीं लौटी थी। उसने इंतज़ार नहीं किया; वह जैसे आई थी वैसे ही जल्दी से घर लौटी, कपड़े बदले और अपने पति का इंतज़ार करने लगी; और जब वह आया, तो वह उससे मिलने दौड़ी और उसे गले लगा लिया। "मेरे प्यारे, मेरे अपने!" वह चिल्लाई, "तुम इतनी जल्दी क्यों चले गए?" "अरे! सब टूट गए, इसलिए मैं चला गया, मेरी प्यारी। आह! अब तुम फिर से पहले जैसी हो गई हो, मेरी लाडली; मैंने तुम्हारी आँखों में देखा। मुझे लगा था कि उस भयानक औरत की कहानी तुम्हारे मूर्ख दिमाग से निकल जाएगी। और क्या सब कुछ खत्म हो गया है, सीता, हमेशा के लिए?" "कभी नहीं," उसने कहा, "कभी नहीं!" और उसका दिल इस बात से पस्त हो गया कि उसने, सोच में भी, उस व्यक्ति पर अविश्वास किया जिसे वह जानती थी कि वह सच्चा है। "और अब मेरे पास तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर है," वह खुशी से बोला। "मैं मंगलवार की सुबह जिले में जा रहा हूँ। मोस्टिन परिवार ने कभी जियो मुख नहीं देखा है, और हम सब वहाँ जाएँगे। वे वहाँ सोएँगे और अगली सुबह लौट आएँगे; और हम अपने पुराने तरीके से आगे बढ़ेंगे।" "ओह, मैं फिर से कितनी खुश हो जाऊँगी!" सीता ने ताली बजाते हुए कहा; "और मैंने वहाँ मंदिर में एक मन्नत मानी है, जिसे मैं पूरा करूँगी।" मुझे नहीं लगता कि मुझे श्रीमती स्मिथ की उस गुप्त सभा में वापस जाने की ज़रूरत है, जहाँ उन्होंने अपनी सहेली, श्रीमती होम को बताया था कि आया ने क्या किया और क्या कहा था, और यह सब कितनी चतुराई से किया गया था। जहाँ तक छोटी श्रीमती जोन्स की बात है, मुझे लगता है कि वह इस साजिश से शर्मिंदा होने लगी थी; और शायद श्रीमती होम को इसमें ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी। उसे यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई थी कि सिरिल को उसकी सुंदर बेटी की कोई

परवाह नहीं थी, और नवाब के दल ने उसके इस विचार को पूरी तरह से बदल दिया था। दूसरी ओर, बढ़ती हुई श्रद्धा को देखकर उसे सुखद लग रहा था।
206 सीता। और कैप्टन हॉब्सन की रुचि, जो भले ही कभी लॉर्ड न बन पाए, लेकिन अपने देश में अच्छी संपत्ति के वारिस थे, और उनकी नज़र में सिरिल ब्रैंडन से कहीं ज़्यादा सुंदर थे। लेकिन फिलहाल मैंने नूरपुर का काम खत्म कर दिया है, और स्टेशन को उसकी सामान्य नीरस स्थिति में छोड़ देना चाहिए। अध्याय 672. जीकेओ मूकू। सिरिल ने जिस जगह दिन बिताने का प्रस्ताव रखा था, वह लगभग सात या आठ मील दूर थी, और बाबा साहब को जाने का आदेश सुनकर बहुत खुशी हुई और उन्होंने पूरी तत्परता से उसका पालन किया। उन्होंने सोचा, "तो आखिरकार अफवाह में कोई सच्चाई नहीं थी, और उनके आदरणीय स्वामी सच्चे थे।" श्री नोबल केवल क्रिसमस के दिन और मोस्टिन परिवार के नृत्य के लिए नूरपुर गए थे, और स्टेशन का काम स्थानीय सहायक और कोषाध्यक्ष को सौंप दिया गया था, जो आवश्यकता पड़ने पर न्यायाधीश से सलाह ले सकते थे। इसलिए, बाबा साहब ने अपने जीवन में कभी भी इतने संतोष के साथ नीरस स्टेशन कुचेरी को नहीं छोड़ा था जितना अब। राजस्व रिपोर्ट लगभग हर जगह तैयार थीं; और यद्यपि दो सप्ताह का समय बर्बाद हो गया था, समय की भरपाई आसानी से की जा सकती थी, और वे श्री ब्रैंडन पर भरोसा कर सकते थे। इसलिए, पूरे दल को "जियो मुख" के पार एक बड़े शहर में स्थानांतरित कर दिया गया। सिरिल और श्री मोस्टिन के तंबू हटा दिए गए और झरने के पास विशाल मोहवा वृक्षों के नीचे लगा दिए गए। सीता ने ब्राह्मणों को अपने छोटे से समारोह के लिए आवश्यक सामग्री तैयार करने का संदेश भेजा था और सिरिल से पहले ही निकल गई, ताकि, जैसा कि उसने कहा, वह रास्ते से हट जाए। सूर्योदय से पहले ही चारों मित्र अपने घोड़ों पर सवार हो गए और अनियमित घुड़सवार सेना के दो सैनिकों के साथ, जो हमेशा "न्यायाधीश" के साथ उनकी यात्राओं में रहते थे, अपनी सुखद छोटी यात्रा पर निकल पड़े। ओस से भीगी हवा कितनी ताज़ा और शुद्ध थी! जबकि कुछ निचली घाटियों में पाले की हल्की सी आशंका थी। जिन गांवों से वे गुज़रे, उनके ऊपर रात और सुबह का नीला धुआँ, धुंध के पतले छल्लों की तरह छाया हुआ था, जो ऊपर की ओर उठने में असमर्थ था, लेकिन जिसे सूरज जल्द ही बिखेर देगा। लोग गाँव के द्वारों से विनम्र भेंट, दूध के घड़े और फूल लेकर निकले; और गाँव की लड़कियाँ दल के घोड़ों के सामने जल चढ़ा रही थीं, साथ ही हँसी-खुशी से शुभकामनाएँ दे रही

थीं। वे एक समृद्ध, आरामदायक गाँव से गुज़रे जहाँ सिरिल ने इशारा किया। गाओ मुख 207 में उन्होंने अपने द्वारा सुझाए गए सुधारों पर चर्चा की; और उन्होंने और श्री मोस्टिन ने अपने आस-पास जमा हुए मुखियाओं और किसानों से विनम्रतापूर्वक बात की। सिरिल अक्सर ग्रेस के साथ रहते थे और अपने सुखद और विचारशील अंदाज़ में उन्हें खेती-बाड़ी के बारे में बताते थे, जब वे गेहूँ, जौ और दालों के हरे-भरे खेतों से गुज़र रहे थे; जातियों और व्यवसायों के बारे में, अंधविश्वासों और धार्मिक रीति-रिवाजों और लोगों की आदतों के बारे में, जिनके बीच अब उन्हें एहसास हो रहा था कि वे रह रही हैं। जगह-जगह ऊँची-ऊँची बाड़ों और पेड़ों से घिरी छायादार गलियाँ उन्हें इंग्लैंड की याद दिलाती थीं; और फिर खजूर के पेड़, विदेशी झाड़ियाँ और फूल, और कभी-कभार कोई खिड़की का मंदिर, या साधारण मस्जिद या मकबरा उन्हें भारत की याद दिलाते थे। एक घाटी पार करने के बाद, जिस पहाड़ी पर वे चढ़े, उसका शिखर समतल था, हालाँकि ज़मीन उनके सामने ऊपर उठती जा रही थी। वहाँ कोई खेती नहीं थी; लेकिन सतह छोटी, कुरकुरी घास से ढकी हुई थी, जो अब भूरी हो रही थी, जिसमें एक सुंदर हल्का रंग था। अंग्रेजी ओक जैसे विशाल म्वुह्वा वृक्ष और मीठे शाहबलूत जैसे जंगली आम मैदान में बिखरे हुए थे, जो दाईं ओर चट्टानी पहाड़ियों की चोटी तक फैला हुआ था; जबकि बाईं ओर, पठार की चोटी पर, उन्हें नीले कोमल आकाश और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों की कई चोटियों की झलक दिखाई दे रही थी। ज़मीन मज़बूत और लचीली थी, और वे पार्क जैसे पेड़ों के बीच से सरपट दौड़ते हुए जा रहे थे। ग्रेस को ऐसा आनंद आ रहा था जो उसने भारत में पहले कभी महसूस नहीं किया था; सब कुछ इतना ताज़ा, इतना नया, इतना आनंददायक था। "अगर यह आपके ज़िले का नमूना है, मिस्टर ब्रैंडन," उसने आधा मील की दौड़ के बाद रुकते हुए उससे कहा, "तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आप हमेशा वहाँ जाने के लिए तरसते रहते हैं, और अपने नीरस स्टेशन से बचकर खुश होते हैं। अगर मैं आपकी जगह होती, तो मैं वहाँ कभी नहीं जाती।" "मुझे कभी-कभी जाना ही पड़ता है," सिरिल ने कहा; "मैं खुद को रोक नहीं सकता। लेकिन आप सही कह रही हैं; मैं अपने लोगों के बीच रहना ज़्यादा पसंद करूँगा, बजाय इसके कि उन्हें अपने स्टेशन कुचेरी में उनके बुरे रूप में देखूँ।" देश का यह हिस्सा बेहद खूबसूरत है, और नूरपुर के इतने पास ऐसी जगह की आप शायद ही उम्मीद करेंगे; लेकिन मुझे शाहगंज कहीं ज्यादा पसंद है। यह पठार के किनारे के करीब है, और वहां के नज़ारे सचमुच बेहद खूबसूरत हैं; इतने प्यारे कि

मेरे परिदृश्य चित्रण के प्रयास भी फीके पड़ जाते हैं। आप उन्हें कहीं बेहतर ढंग से चित्रित कर सकते हैं। लेकिन देखिए, वहां तंबू हैं; और मुझे उम्मीद है कि आप दोनों को सवारी के बाद भूख लगी होगी। उनसे थोड़ा नीचे, एक घाटी में, मोहवा और आम के पेड़ ऊपरी इलाकों की तुलना में अधिक पास-पास खड़े थे; और जिस ढलान पर वे सवारी कर रहे थे, वह एक घाटी का हिस्सा था जो ऊपर की ओर और दाईं ओर चट्टानी पहाड़ियों के अंत तक काफी दूरी तक फैली हुई थी। नीले पानी के छोटे-छोटे तालाब जगह-जगह चमक रहे थे; और फिर झाग का एक सफेद धब्बा किसी नदी के प्रवाह में एक तेज धारा या छोटे झरने का संकेत दे रहा था जो अब स्पष्ट होने लगा था।
208 सीता। जिस ढलान पर वे थे, उसके तल पर। उसके आगे ज़मीन फिर ऊपर उठी, और वैसी ही लग रही थी जैसी उस पर से वे आए थे, भव्य पुराने पेड़ों से भरी हुई। "लेकिन झरना कहाँ है, श्रीमान ब्रैंडन?" श्रीमती मोस्टिन चिल्लाईं। "आप हमें इससे वंचित नहीं कर सकते।" "मेरे पीछे आइए," उन्होंने कहा, "और मैं आपको वह दृश्य दिखाऊंगा जो मुझे लगता है कि इसका सबसे सुंदर दृश्य है; लेकिन मुझे डर है कि इसकी पूरी सुंदरता दिखाने के लिए यहाँ पर्याप्त पानी नहीं है।" और उन्होंने अपने घोड़े को पास ही स्थित एक गोल टीले पर मोड़ दिया, और वे उसके शिखर पर उसके पीछे-पीछे तब तक चलती रहीं जब तक कि वे एक ऐसे बिंदु पर नहीं पहुँच गईं जहाँ ऐसा लगा कि वह अचानक एक गहरी खाई में गिर रही है। महिलाओं ने खुशी से चीख मारी। उनके सामने एक गहरी घाटी थी, जिसके किनारे लगभग चार सौ फीट ऊँचे बेसाल्ट के सीधे खड़े टीले थे, जो काले से लेकर भूरे, पीले और लाल तक के सबसे समृद्ध रंगों को प्रदर्शित कर रहे थे। और वहाँ चट्टान चिकनी थी; लेकिन, ऊपरी सिरे पर, यह विशाल प्रिज्मों में टूटा हुआ था, जो सदियों से मौसम के प्रभाव से घिसकर, कुछ जगहों पर चट्टान से अलग होकर अद्भुत आकृतियाँ बनाते थे, और लहराती घास और फूलों से ढकी लताओं से सजे हुए थे। इस एम्फीथिएटर के ऊपरी सिरे पर, जो बहुत चौड़ा नहीं था, उसका एक हिस्सा अचानक संकरा हो जाता था, और उसमें से काफी मात्रा में पानी का फव्वारा निकलता था, जो चट्टान से नीचे गिरकर महीन फुहारों का बादल बनाता था, हवा से इधर-उधर उड़ता था, और जैसे ही तेज धूप में इसके बदलते रंगों को देखा जाता था, चमकीले इंद्रधनुष के कुछ हिस्से दिखाई देते थे। झरने के नीचे एक गहरा, काला कुंड था, जिसके किनारे सुंदर बांस और सरकंडे लगे हुए थे जो घाटी में नीचे और ऊपर की ओर उन किनारों तक फैले हुए थे जहाँ कोई

चट्टान नहीं थी। झरने से एक धीमी गर्जना कभी-कभी उन तक पहुँचती थी, जो ऊपर और नीचे बहती नदी की आवाज़ों में मिल जाती थी क्योंकि वह अपनी चट्टानी सतह से टकराती थी। "मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सुना," फिलिप मोस्टिन चिल्लाया। “अरे, सिरिल, यह तो शानदार है! शानदार!” “मैं इसके बारे में ज़्यादा कुछ कहना नहीं चाहता था,” उसने जवाब दिया, “क्योंकि लोग अक्सर सोचते हैं कि इंसान अपनी ही बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है। मुझे तो पिछले साल एक दिन ही पता चला, जब मैं नीचे से कुछ ‘सांबुर’ का पीछा कर रहा था, और तभी मैंने तय कर लिया था कि जब श्रीमती मोस्टिन यहाँ आएंगी तो मैं उन्हें यहाँ ज़रूर लाऊंगा। यह एक अनोखी जगह है, और मुझे बेहद प्यारी लगती है। नदी का नाम इंचेर्ना है—कितना प्यारा नाम है, है ना, मिस मोस्टिन?—जो लगभग तीस मील दूर पहाड़ियों से निकलती है। आप देख सकते हैं कि अभी इसमें पानी अपेक्षाकृत बहुत कम है, लेकिन मानसून में यह बहुत ही शानदार झरना होगा। आप पानी के दोनों किनारों पर, ऊपर की ओर, सफेद निशान देख सकते हैं।” “मुझे नहीं लगता कि यह इससे ज़्यादा खूबसूरत कभी हो सकता है,” ग्रेस ने कहा;

गाओ मुख 209 “एक विशाल जलधारा सीधी नीचे गिरती थी, जबकि अब देखो यह कितनी सुंदर तरह इधर-उधर लहराती है। इसे देखकर ऐसा लगता है मानो यह किसी अप्सरा के पतले वस्त्रों जैसी हो, मानो कोई भारतीय लर्लाइन हो।” “और यही परंपरा है,” सिरिल ने उत्तर दिया; ‘इंद्र के स्वर्ग की कोई अप्सरा, जिसे एक नश्वर व्यक्ति से प्रेम हो गया—जो कि गलत था—नदी में परिवर्तित हो गई, और निराशा में उसने स्वयं को इस चट्टान से नीचे गिरा दिया, जिससे वह आज भी चिपकी हुई है।’ “क्या ऐसी कई किंवदंतियाँ हैं?” उसने पूछा। “हाँ,” उसने उत्तर दिया, “इतना कुछ है कि अगर कोई उन्हें इकट्ठा करे तो एक पूरी किताब भर जाए। ये लोग उतने सुस्त और बेपरवाह नहीं हैं जितना आपने सोचा होगा, मिस मोस्टिन; और शायद ही कोई चट्टानी टीला, शांत झील, विशाल वृक्ष, चौड़ी नदी या इस तरह की कोई एकांत घाटी हो, जो उनके विश्वास में आत्माओं, अप्सराओं और दैत्यों से आबाद न हो, या उनकी परंपराओं में किसी घटना का स्थल न हो। वे कहते हैं कि रात में यह एक भयानक जगह होती है, और बेचारी अप्सरा का विलाप सुनना भयावह होता है; लेकिन चट्टान के किनारे पर एक मंदिर है, जो बिल्कुल सुरक्षित है, और लोग वहाँ भेंट चढ़ाने और अपनी आशाओं के शगुन के रूप में नदी में मालाएँ डालने जाते हैं; और मैंने सुना है कि यह अक्सर

दिन के समय एक खुशनुमा जगह होती है। इसके पुजारी उस आखिरी गाँव में रहते हैं जहाँ से हम गुजरे थे। मंदिर के टावर से चट्टान और घाटी का एक शानदार दृश्य दिखाई देता है, और मैं मैं आपको थोड़ी देर में वहाँ ले जाऊँगी; लेकिन आप इसका एक स्केच बना लें, मिस मोस्टिन, आप इसे खूबसूरती से चित्रित कर सकती हैं।" उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि उस जगह की सुंदरता और भव्यता, जिसकी उन्हें बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी, ने उनकी आँखों में चमक ला दी थी, और उन्होंने अपना घोड़ा मोड़ लिया। "मैं कोशिश करूँगी," उन्होंने झिझकते हुए कहा; और वे तम्बुओं की ओर चल पड़े। नाश्ते के समय, घुड़सवार पुलिस के एक जवान ने, जिसे दिन के पत्र लाने के लिए पीछे छोड़ा गया था, उन्हें पहुँचाया; और सिरिल, अपने आधिकारिक पत्राचार को देखने के लिए कुछ समय की अनुमति माँगकर, अपने तंबू में चले गए। सेक्टा वहाँ नहीं थीं—वह मंदिर गई थीं—और उन्होंने सभी दस्तावेज़ पढ़े, और अगले दिन लिखे जाने वाले कुछ उत्तरों का मसौदा तैयार किया; और श्री मोस्टिन भी इसी तरह व्यस्त थे। "अच्छा, ग्रेस," श्रीमती मोस्टिन ने कहा, "जब वे व्यस्त हैं तो हम क्या करें? मेरा सुझाव है कि हम वहाँ नीचे कुर्सियाँ ले जाएँ, और उन शानदार पेड़ों के नीचे बैठें; आप अपना ड्राइंग का सामान ला सकती हैं, और मंदिर का एक स्केच बना सकती हैं।" "मैं जिस बात का प्रस्ताव रखने वाली थी," उसने जवाब दिया, "यह स्वादिष्ट होगा। चलो चलें।" और एक नौकर उनके पीछे कुर्सियाँ लेकर आया और उन्हें उनकी इच्छानुसार जगह पर रख दिया। जिस जगह को उन्होंने चुना था, छोटा मंदिर, वहाँ से एक बहुत ही

स्लेटा। एक साधारण सी इमारत, जिसका ऊपरी हिस्सा शंकु के आकार का था, पास ही थी; और वे उसकी छत पर लोगों को आते-जाते देख सकते थे। कई महिलाएं इमारत के चारों ओर चक्कर लगा रही थीं, और कई ब्राह्मण, सिर ढके हुए, उनकी सेवा कर रहे थे। कुछ देर बाद ग्रेस ने कहा, "काश मैं इन लोगों को पास से देख पाती और उनकी तस्वीरें ले पाती; मैं यहाँ से उन्हें ठीक से देख नहीं सकती, वे इतनी जल्दी-जल्दी हिलते रहते हैं। इसमें कोई बुराई तो नहीं है, है ना, रोज़?" "बिल्कुल नहीं," उसने जवाब दिया। "चलो हर हाल में चलते हैं; मैं उस खाई में देखना चाहती हूँ। कितनी अद्भुत तरीके से पानी की फुहार और धुंध ऊपर उठती है, फिर भी हवा नहीं चलती।" और वे आगे बढ़ गए। स्लेटा अपनी छोटी सी रस्म में व्यस्त थी, और कुछ ब्राह्मण और उनकी पत्नियाँ उसकी मदद कर रहे थे। श्रीमती मोस्टिन को पता नहीं था

कि वह वहाँ है; उन्हें लगा कि वह सिरिल के शिविर में चली गई है, और जो आकृतियाँ उन्होंने देखी थीं वे गाँव के लोगों की थीं; लेकिन जैसे ही महिलाएं छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ीं, उन्हें सीता और उनकी बूढ़ी नौकरानी भवन के चारों ओर चक्कर लगाते हुए मिलीं, और उनके पीछे-पीछे ब्रालमिन परिवार के लोग भी उनके साथ भजन गा रहे थे। झरने की धीमी गर्जना के बीच भी उनकी आवाज़ कितनी मधुर और बुलंद थी! ग्रेस पीछे हट गईं, लेकिन श्रीमती मोस्टिन अपने भीतर उमड़ी उदारता की भावना को रोक नहीं पाईं। मुस्कुराते हुए और हाथ बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "आप सीता ही होंगी, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे अभी आपको छूना नहीं चाहिए, मैं यहीं इंतजार करूंगी।" सीता ने उत्तर दिया, "धन्यवाद, महोदया। मैं सीता हूं। मैं अभी आती हूं।" और जैसे ही वह आगे बढ़ीं, भजन फिर से गूंज उठा, जबकि महिलाएं उत्सुकता से सुनती और देखती रहीं। मंदिर के कुछ और चक्कर लगाने के बाद सीता ने कहा, "अब मेरा काम हो गया है, महोदया। क्या आप आकर झरने को देखेंगी? यह बिल्कुल सुरक्षित है, क्योंकि लोगों के देखने के लिए एक मुंडेर बनी हुई है।" और वे उठकर उनके पीछे चल पड़ीं। मंदिर लगभग खाई के किनारे पर बना था, लेकिन मानो झरने के मुहाने से थोड़ा आगे, ताकि उसका ऊपरी भाग और उसके आगे खाई की दीवार साफ़ दिखाई दे सके। जैसे ही उन्होंने खाई में देखा, दोनों अनजाने में पीछे हट गए, क्योंकि तल दिखाई नहीं दे रहा था और अथाह लग रहा था। सूरज की रोशनी में हीरे की तरह चमकता हुआ पानी का बवंडर, जिसमें इंद्रधनुष लगातार बनते और गायब होते रहते थे, हवा में छाया हुआ था, और नीलम की तरह नीला पानी का विशाल फव्वारा खाई से निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था और बादल में समाकर गायब हो रहा था। आगे, खाई, ऊबड़-खाबड़ और टूटी हुई थी।

गाओ मूकू की चोटी, जो 211 फीट ऊंची थी, कई सौ फीट तक सीधी नीचे जाती थी, पेड़ों और सुंदर बांसों के बीच टिकी हुई थी, जो इसके आधार को छिपाए हुए थे; सभी चट्टानें चटख रंगों से भरी थीं, जबकि जंगली नीले कबूतरों और हरे तोतों के झुंड हवा में इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे। "डरो मत," सीता ने श्रीमती मोस्टिन का हाथ पकड़ते हुए कहा, "यहाँ बिल्कुल सुरक्षित है;" और इस तरह आश्वस्त होकर, वे लड़की के साथ खड़ी हो गईं और आश्चर्य से खाई में नीचे देखने लगीं। "इसका रेखाचित्र बनाने के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं है," ग्रेस ने अपनी बहन से कहा, जिसने सोचा कि वह कोशिश कर सकती है; "यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं बस एक याद के तौर पर

एक रूपरेखा बना सकती हूँ, और मैं तुम्हें अग्रभूमि में रखूँगी, इसलिए तुम जैसी हो वैसी ही खड़ी रहो।" ग्रेस का हाथ तेज और कुशल था, और उसने जल्द ही अपनी इच्छा पूरी कर ली। जब उसने रेखाचित्र अपनी बहन को दिखाया, तो सीता ने देखा कि उसमें उसका भी स्थान है। "काश मैं उससे बात कर पाती," ग्रेस ने अपनी बहन से कहा; “वह आपको बहुत अच्छी तरह समझती है।” “काश तुम समझ पातीं, ग्रेस। सीता,” उसने धीरे से कहा, “क्या तुम मेरी बहन को थोड़ी अंग्रेज़ी में समझा सकती हो?” “मैं कोशिश करूंगी,” उसने साफ़ अंग्रेज़ी में जवाब दिया। “आपको देखकर बहुत खुशी हुई, मिस मोस्टिन; क्या आप मुझसे हाथ मिलाएँगी?” “ज़रूर,” ग्रेस ने जवाब दिया और विनम्रता से अपना हाथ आगे बढ़ाया। “और मुझे तुम्हें चूमना है, सीता,” श्रीमती मोस्टिन ने कहा; “तुम सचमुच बहुत प्यारी हो—कितनी शर्म की बात है कि तुम्हारे पति ने मुझे पहले तुम्हारे पास नहीं आने दिया!” “यह बेहतर है, प्रिय महिला,” उसने अपनी भाषा में उत्तर दिया; “जब वह मुझे आपके हाथों में सौंप देगा, तब मैं आपसे प्यार कर सकूँगी और आपकी सेवा कर सकूँगी।” “ठीक है, तो हम थोड़ी देर में तंबू में मिलेंगे;” और दोपहर के भोजन पर, जब सिरिल उनके साथ शामिल हुआ, तो उन्होंने उसे सब कुछ बताया। “वह बहुत प्यारी हैं, श्रीमान ब्रैंडन,” श्रीमती मोस्टिन ने कहा, “ताज़ी हवा ने उन्हें और भी खूबसूरत बना दिया है; अरे वाह, वह हम सब की तरह ही सुंदर और आकर्षक हैं।” “इतनी सुंदर तो नहीं,” सिरिल ने हंसते हुए उत्तर दिया; “लेकिन मुझे खुशी है कि आपको वह पसंद आईं, और मैं आभारी हूं कि हमारी बातचीत इतनी सुखद तरीके से शुरू हुई। मुझे उम्मीद है कि आप उनके बारे में और जानेंगे; और मुझे पूरा यकीन है कि वह आप दोनों के बारे में जितना अधिक जानेंगी, उतना ही अच्छा होगा।” “लेकिन उन्होंने कहा कि आपको उन्हें हमें सौंपना होगा, श्रीमान ब्रैंडन; उनका क्या मतलब था?” “बस एक छोटी सी रस्म जो मैं अभी करूंगा,” उन्होंने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया; “वह अभी तक मंदिर से नहीं आई हैं। क्या आप थक गए हैं, या आप फिर से जाएंगे? आइए, फिलिप, आपने कम से कम पतन तो नहीं देखा है;” और जब वे तैयार हो गए, तो महिलाओं ने अपनी टोपियां पहनीं और उनके साथ चली गईं।

सीता। सीता अपने दोस्तों, ब्राह्मणों को अच्छे भोजन का आनंद लेते हुए देख रही थी; और जब वे लोग सीढ़ियों पर चढ़े, तो सीता सीढ़ियों पर खड़ी थी, उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। तभी उसने सिरिल और श्री मोस्टिन को देखा, जिन्होंने सीता का

शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। “सीता,” उन्होंने पुकारा, “आओ और मेरी पत्नी और बहन से मिलो। मुझे खुशी है कि पर्दा खुशी-खुशी हट गया है और तुम दोनों एक-दूसरे से बात कर चुकी हो।” सीता ने सिरिल की ओर विनती भरी निगाहों से देखा, जिन्होंने कहा, “फिलिप, इस बार यह मेरा काम है। मुझे सीता को उनके अपने तरीके से उनके हवाले करना होगा। आओ, सीता।” और उन्होंने सीता के दोनों हाथ पकड़कर श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के हाथों में दे दिए। “प्रिय मित्रों, उनके प्रति दयालु रहना,” उन्होंने आगे कहा; “वह आपके प्रेम के योग्य है, वरना मैं ऐसा नहीं करता।” बेचारी सीता की कोमल आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं, लेकिन वे बहुत खुशी के आँसू थे, और वह ग्रेस से लिपट गई, जिसका हाथ उसने थाम रखा था। फिर वे दोबारा दीवार के ऊपर से देखने गए और घूमते हुए कोहरे, पानी की बदलती लहरों, सूरज की रोशनी में चमकती हुई चट्टानों, चक्कर लगाते पक्षियों और लगातार बदलते इंद्रधनुषों को देखते रहे, जब तक कि परछाइयाँ लंबी नहीं हो गईं। ग्रेस ने अपना रेखाचित्र पूरा किया और सिरिल ने दोनों आकृतियों में कुछ और रंग भरकर उनकी समानता को ठीक किया, ताकि कोई भी उन्हें पहचानने में गलती न कर सके। अंत में श्री मोस्टिन ने कहा, “आइए, भले लोग; हवा हम पर पानी की फुहारें उड़ा रही है और सीता ने बहुत कम कपड़े पहने हैं। चलिए, हम फिर कभी लौटेंगे, ईश्वर की कृपा से, और एक सप्ताह रुकेंगे। यह शानदार होगा! “यहाँ एक छोटी सी रस्म है, प्रिय महिला,” सीता ने कहा, “जिसे बहुत से लोग उस चट्टान से करते हैं जो जियो मुख के पास है; और कोई खतरा नहीं है, क्योंकि वहाँ एक दीवार है। जो लोग किसी भी चीज की कामना करते हैं—स्वास्थ्य, धन, संतान, सुख—वे पानी में एक माला फेंकते हैं। यदि वह धारा में तैरती हुई झरने से नीचे गिर जाती है, तो उनकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। और अगर चट्टानें इसे पकड़ लें, तो देवता नहीं सुनेंगे—ऐसा मानते हैं यहाँ मन्नतें मांगने वाले। आखिरकार,” उसने मुस्कुराते हुए कहा, “ऐसा सोचना बहुत मूर्खतापूर्ण है; लेकिन ब्राह्मण कहते हैं कि वे इसमें विश्वास करते हैं, और वे बुद्धिमान लोग हैं। मुझे कोशिश करनी ही होगी, क्योंकि मैंने मन्नत मांगी है और पूजा-अर्चना की है। क्या आप भी मेरे साथ पानी में उतरेंगे?,” उसने सिरिल की ओर देखते हुए कहा, “पुरुषों को इस मामले में भाग लेने की अनुमति नहीं है। ‘अप्सराओं का जल केवल महिलाओं के लिए है।’” “वाह, बिल्कुल! कितना मज़ा आएगा!” श्रीमती मोस्टिन ने कहा। “आओ, ग्रेस, और अपनी किस्मत आजमाओ।” शायद ग्रेस ने सोचा कि यह एक अधार्मिक अनुष्ठान है,

जिसे करने की उसे आवश्यकता नहीं है; लेकिन इस छोटी सी रस्म में एक अलग ही आकर्षण था, और वह तुरंत मान गई।

गाओ मुख। 18 तो वे उस चट्टान पर उतरे, जो घाटी के सबसे संकरे हिस्से में धारा से कुछ फीट ऊपर उभरी हुई थी। उसके तल पर "गाओ मुख" या गाय का मुख था, एक खुरदुरा उत्कीर्णन, जो अब मन्नत की मालाओं से सजा हुआ था। मुख से चमकते पानी की एक धारा बहकर नदी में मिल रही थी। यह संभवतः एक शक्तिशाली झरना था; लेकिन आम धारणा यह थी कि यह गंगा से आता है। "जय गंगा माता!" सीता ने पुकारा, जो आगे-आगे चल रही थी, और उसने उत्कीर्ण प्रतिमा पर एक माला डाली, और बाकी लोग उसके पीछे-पीछे चले गए। उन्होंने चट्टान से नीचे गिरने से कुछ ही गज की दूरी पर धारा के सबसे तीव्र भाग को देखा - एक गहरा नीला पिंड, अटूट, कांच की तरह चिकना, और हल्की सरसराहट के साथ बहता हुआ। उन्हें देखते ही चक्कर आने लगा। “अब, महोदया,” सीता ने श्रीमती मोस्टिन से कहा, “टोकरी में से अपनी माला चुनिए और उसे पानी के बीच में फेंक दीजिए, और जो मन चाहे मांगिए। मैंने अपनी माला बहुत पहले बना ली थी।” और श्रीमती मोस्टिन ने सफेद फूलों की एक माला उठाई और सीता के कहे अनुसार किया। सभी ने उसे धीरे-धीरे नीचे जाते और गायब होते देखा। अब ग्रेस की बारी थी। “उसे हमें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि वह क्या चाहती है,” सीता ने श्रीमती मोस्टिन से शरारती मुस्कान के साथ कहा; “वह इसे अपने दिल में रख सकती है। आह! वह भी भाग्यशाली है। देखिए उसकी माला कितनी सुरक्षित रूप से बह गई। अब मेरी बारी है। देखिए! ओह, मैं कितनी खुश हूँ!” वह अपने हाथ जोड़ते हुए चिल्लाई। “भगवान मेरी सुन लेते हैं। देखिए!”—और वह अचानक ग्रेस की ओर मुड़ी—“वह भी चली गई!” लेकिन सिरिल, जो बड़े चाव से देख रहा था और अपनी जगह से सबसे दूर तक देख सकता था, उसने देखा कि एक भंवर में फंसकर माला किनारे की एक चट्टान से जा टकराई, फिर तेज़ बहते पानी में बह गई और टूटकर गायब हो गई। उसने कुछ नहीं कहा, क्योंकि सीता दुखी हो जाती; लेकिन यह छोटी सी घटना कभी नहीं भूली गई। फिर वे उस टीले पर गए जहाँ उन्होंने पहली बार माला को गिरते देखा था, और ग्रेस ने उसकी रूपरेखा बनाई और उसमें हल्के रंग भरे; जबकि सिरिल ने उसके अग्रभाग के लिए इस समूह का एक अलग रेखाचित्र बनाया: लेकिन काफी देर हो चुकी थी; और दूर धुंधली पर्वत श्रृंखलाओं के पीछे पश्चिम में डूबते सूरज और आसमान के शानदार रंगों को देखने के बाद, नारंगी,

हल्के हरे, गहरे बैंगनी और सुनहरे रंग में बदलते हुए, वे तंबुओं में लौट आए। और शाम बहुत सुहावनी थी। तंबुओं के दरवाजे बंद करके और पर्दे गिराकर, दोस्तों ने रात के खाने और चाय के बाद बातें कीं, सिरिल के गिटार पर गीत गाए, और सीता ने उनकी मधुर आवाज़ों का आनंद लिया। लालच से। कितनी जल्दी संकोच दूर हो गया; और अब वह कितनी खुश थी! फिर उन्होंने उससे गाने को कहा, और सिरिल ने उसे वही गाने को कहा जो उसने पहले उसके लिए गाया था; 'जब
214 सीता। “मैं घायल हो गया था,” उसने ग्रेस से कहा, “और उसने मेरी देखभाल की।” सीता शर्माते हुए मान गई; और सिरिल के गिटार को एक साधारण सुर में बजाते हुए, उसने मधुर और मार्मिक धुन गाई, “मैं उससे बात नहीं कर सकी,” जिसका सिरिल ने ग्रेस के अनुरोध पर अनुवाद किया। शायद मेरे पाठकों को पूरे गीत पर कोई आपत्ति न हो, और काश मैं उन्हें वह मार्मिक धुन भी लिख पाता; लेकिन जब तक श्री आर्थर सुलिवन संगीत की व्यवस्था नहीं करेंगे, इसे कौन जानेगा?— मैं उससे बात नहीं कर सकी, “वे सबसे प्यारे शब्द जो मैंने कहने के लिए संजो कर रखे थे; मेरी बहती आँखें थके हुए आँसुओं से धुंधली हो गई थीं, जो फिर, हाय! अनसुने ही गिर पड़े। कठोर हवा चल रही है, ठंडी बारिश हो रही है, मेरे पास रहने की कोई जगह नहीं है, हाय! उनसे निर्दयी, मुझे कोई दया का शब्द नहीं, कोई आश्रय देने वाला प्यार नहीं मिलता।” आह, अब मैं व्यर्थ ही प्रार्थना करता हूँ, हे प्रिय स्वामी, प्रिय साथी, जिसे मैंने इतना प्यार किया, यदि तुम जीवित होते, तो मुझे इतना अकेला मरते हुए न देखते, और उस प्रेम को न भूलते जो इतने लंबे समय तक, इतनी सच्चाई से सिद्ध हुआ— आराम करो, आराम करो, हे टूटे हुए हृदय! शांति शीघ्र ही तुम्हारे पास आएगी जिसे कभी किसी चीज़ ने विचलित नहीं किया। आह, अपने तीर को क्यों रोक रहे हो? दयालु मृत्यु, मुझे उसके पास ले जाओ जहाँ हम फिर कभी अलग न हों। “यह एक दुख भरा गीत है; लेकिन मुझे यह बहुत पसंद है,” सिरिल ने कहा। “हालाँकि, अब तुम मुझसे काफी जल्दी बात कर सकते हो,” वह हँसते हुए बोला; “और यह अब काफी पुरानी कहानी होती जा रही है।” मुझे नहीं लगता कि ग्रेस मोस्टिन उस रात चैन से सोई होंगी। शायद वह बहुत थकी हुई और बहुत उत्साहित थीं; शायद उस लड़की का उदास गीत उन्हें परेशान कर रहा था; लेकिन मुझे लगता है कि एक और भी अधिक दर्दनाक कारण था—उनके बचपन के सबसे प्यारे सपनों में से एक का टूट जाना। आह! अब उन्हें उसके बारे में नहीं सोचना चाहिए—कभी नहीं, जैसा कि उन्होंने सोचा

था, बस थोड़े समय के लिए ही सही। अगली सुबह, जब उजाला हुआ, वे फिर मिले, और दोस्तों ने अलग होने से पहले एक साथ गर्म कॉफी के प्याले लिए; और स्केटा शॉल में आराम से लिपटी हुई आई, और महिलाओं ने उसे चूमा और अलविदा कहा। उसे जल्द ही वापस आना होगा, और तब वे एक-दूसरे को बेहतर जान पाएंगी। तो वे अपने-अपने रास्ते चली गईं। उन्होंने सोचा कि शायद वे महीनों तक फिर न मिलें। भाग 3, अध्याय 28, नूरपुर का समाज। फरवरी का मध्य आ चुका था, और बैरकपुर में 34वीं और अन्य रेजिमेंट न तो निष्क्रिय थीं और न ही अपने दिल के मामलों के प्रति उदासीन हुई थीं; उनकी निजी बैठकें अधिक बार होने लगी थीं, और सैनिकों का लहजा अधिक उग्र और दृढ़ हो गया था। उन्होंने ऊपरी भारत के स्टेशनों तक जो खबर फैलाई थी, वह अपना असर दिखा चुकी थी; और उनके दोस्तों ने हर जगह उन्हें कारतूसों और अंग्रेजों द्वारा उनकी जाति और धर्म के विरुद्ध किए गए हर कपटपूर्ण प्रयास के संबंध में सहानुभूति और सहायता का आश्वासन दिया था। इस विद्रोह को किस रूप में प्रदर्शित किया जाए, यह शायद तब तक तय नहीं हुआ था; लेकिन उनके दृढ़ संकल्प में कोई कमी नहीं आई थी, और जैसे-जैसे संगठन आगे बढ़ा, सभी की आशाएँ भी उसी अनुपात में बढ़ती गईं। सन् 1914 वह भयानक वर्ष था, जिसमें महामारी, अकाल, दंगे, युद्ध और विनाश का बोलबाला था। यह वर्ष उनके पुराने स्वामियों, "कूम्पानी" को एक व्यापक और भयावह विनाश में डुबो देने वाला था; और सभी का यही मानना था। हर वर्ग के हिंदू, जिन्होंने वार्षिक पंचांग पढ़े या सुने थे, जानते थे कि यह भयावह भविष्यवाणी क्लाइव की प्लासी पर विजय के ठीक सौ साल बाद की गई थी; और ग्रहों के प्रभाव और निर्देशों के अनुसार, वे मानते थे कि यह अटल है। सिपाहियों ने सौ वर्षों की निष्ठापूर्ण सेवा का अपना अनुबंध पूरा कर लिया था, फिर भी उनके स्वामी अब, जैसा कि वे मानते थे, एक कड़वे धर्म परिवर्तन के इरादे से उन्हें अपवित्र करने और उनकी पवित्र जाति को दूषित करने की कोशिश कर रहे थे, जो जीवन से भी अधिक कीमती थी, क्योंकि इसके बिना सम्मान के जीवन मृत के समान था। उन्होंने अपने धर्म पर इस अत्याचार का क्या कारण बताया था - एक ऐसा धर्म जिसे उन्होंने हजारों वर्षों तक निष्कलंक रखा था? क्या वे अफगानिस्तान की भीषण बर्फ और ठंड तथा भारत के धधकते मैदानों में निष्ठापूर्वक नहीं चले थे, हर जगह अपना सर्वश्रेष्ठ रक्त बहाते हुए, जबकि उनकी उपलब्धियाँ शानदार विजय थीं? फिर भी अब, सब कुछ भुला दिया गया और बेरहमी से फेंक दिया गया प्रतीत होता

है।

216 सीता, अलग से। चिकनाई लगे कारतूस उनके पागल आकाओं का उस दिशा में पहला प्रयास था जो स्पष्ट रूप से प्रकट था, और जिसका अंत तक विरोध किया जाना था। इससे पहले ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था; लेकिन 1914 की घटना ने समय के पन्ने पर अपनी काली छाया डाल दी थी, और उसके आदेशों का पालन करना ही था। दुनिया को चकित कर देने वाला संघर्ष हो सकता था, होगा; लेकिन यह अवश्य होगा, और कुम्पानी बहादुर को रक्तपात करना होगा। फिर भी बैरकपुर में किसी भी रेजिमेंट के जवानों द्वारा कोई बाहरी प्रदर्शन नहीं किया गया, और परेड और सामान्य कर्तव्य हमेशा की तरह चलते रहे। छावनी में रहस्यमय आग लग रही थी; टेलीग्राफ कार्यालय, और कभी-कभी एक अधिकारी का बंगला, जलकर राख हो जाता था; और इस प्रकार अंग्रेज निवासियों और अधिकारियों के बीच अशांति की स्थिति उत्पन्न हो गई, जो सभी के लिए बहुत कष्टदायक थी - क्योंकि यह धारणा तेजी से फैल रही थी कि ये आग आकस्मिक नहीं थीं। हालाँकि, कुछ भी पता नहीं चल सका; और एक अजीब संयोग से, रानीगंज से भी इसी तरह की घटनाओं की खबर आई; लेकिन कहीं भी कोई विद्रोह नहीं हुआ। हालाँकि, वह घटना अब बहुत करीब थी। अज़राएल पांडे द्वारा भेजे गए प्रतिनिधिमंडल और जिस बैठक के बारे में हम जानते हैं, उन्होंने बरहमपुर स्थित उन्नीसवीं रेजिमेंट को पत्र भेजे और पाया कि प्रचलित अफवाहों से वह रेजिमेंट कई मायनों में उत्तेजित थी; लेकिन फरवरी के मध्य तक उन्हें कुछ भी निश्चित रूप से पता नहीं चला था, जब चौंतीसवीं रेजिमेंट की एक टुकड़ी सुरक्षा ड्यूटी पर पहुंची और उसके एक सप्ताह बाद उसी कोर की एक और टुकड़ी आ गई। पहली टुकड़ी द्वारा बताई गई, काली मंदिर और अन्य मंदिरों को लेकर ब्राह्मणों में व्याप्त आशंका की मनगढ़ंत कहानियों की पुष्टि दूसरी टुकड़ी ने बढ़ा-चढ़ाकर की; और उस नीच जाति के लस्कर की कहानी, जिसने चिकने कारतूसों के कारण एक ब्राह्मण सिपाही को जातिहीन करने का ताना मारा था, बार-बार दोहराई गई और मुंह-जुबानी फैल गई, जिससे दहशत और हैरानी फैल गई। उन्नीसवीं बटालियन ने लालच से जहर पी लिया और बचकाने भोलेपन में आकर अगली सुबह परेड में विद्रोह कर दिया और उन्हें दी गई खाली गोलियां लेने से इनकार कर दिया। यह सच है कि बाद में सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया और अपना कर्तव्य निभाया; लेकिन महीने की अन्य घटनाओं के साथ-साथ इस विद्रोह ने सेना के हर उस स्टेशन पर अशांति और संदेह की भावना

को और बढ़ा दिया, जहाँ यह खबर पहुँची थी। हर जगह कारतूसों पर चर्चा हुई थी। उन्हें चिकना करने के नए तरीके ईजाद किए गए थे और उनका अभ्यास किया गया था, जिन पर सैनिकों ने कोई आपत्ति नहीं जताई थी; लेकिन फिर भी दोनों पक्षों के बीच अविश्वास कम नहीं हुआ, बल्कि बढ़ गया; और उन्नीसवीं बटालियन का मामला, हालांकि सैनिकों ने कोई प्रत्यक्ष कृत्य नहीं किया था, फिर भी स्थिति और बिगड़ गई। नूरपुर का समाज। हिंसा की घटनाओं ने दिखाया कि कहीं भी और कभी भी क्या हो सकता है। सर्वोच्च परिषद ने उस रेजिमेंट के विरुद्ध तुरंत विघटन का आदेश पारित कर दिया था और उसे बैरकपुर भेज दिया गया था। सैनिकों को कुछ भी पता नहीं था और न ही उन्हें किसी बात का संदेह था; इसके विपरीत, यह आसानी से माना जा सकता है कि वे चौंतीसवीं रेजिमेंट और अन्य रेजिमेंटों के अपने मित्रों से मिलने के लिए बेहद उत्सुक थे। इस बीच, रंगून से मंगाई गई स्टीमर से महारानी की चौंतीसवीं रेजिमेंट के आगमन से कलकत्ता की स्थिति मजबूत हुई; बैरकपुर के तत्कालीन कमांडर जनरल के साथ कई चिंतित परामर्श हुए, जिन्होंने अपनी सेना को इकट्ठा किया और उन्हें चेतावनी के रूप में उन्नीसवीं रेजिमेंट के भाग्य के बारे में बताया, और उनसे अपने सुप्रसिद्ध, दयालु, लोकप्रिय और प्रेरक अंदाज में बात की। फिर भी, राजद्रोह की एक गुप्त प्रवृत्ति समय-समय पर सामने आती रही; और एक दिन कलकत्ता की टकसाल की सुरक्षा के प्रभारी देशी अधिकारी के साथ छेड़छाड़ करने का प्रयास किया गया। रविवार, 29 मार्च को एक नई घटना घटी, जिसने नए सिरे से दहशत पैदा कर दी। मेरे पाठक शायद मुंगुल पांडे को नहीं भूले होंगे, जो अजरदेल के भतीजे और चौंतीसवीं रेजिमेंट में सिपाही थे। उन्होंने अपने चाचा का भाषण सुना था और शायद अपने साथियों से भी ज़्यादा उस पर विचार किया था— विद्रोह के दिन के लिए वे बेसब्र थे और बड़ी मुश्किल से हिंसा से खुद को रोक पाए थे। उस दिन जमादार, जिनके घर पर पिछली बैठक हुई थी, रेजिमेंटल क्वार्टर-गार्ड की कमान संभाल रहे थे; और संभवतः यह घटना उनके बीच तय हुई थी। [जो भी हो, जैसे ही मुंगुल पांडे ने उस दोपहर नदी किनारे यूरोपीय सैनिकों के एक दल के उतरने की खबर सुनी, उन्होंने अपनी तलवार और बंदूक उठा ली और अपनी रेजिमेंट की पंक्तियों में सबको अपने पीछे आने का इशारा करते हुए परेड ग्राउंड की ओर दौड़ पड़े। कहा जाता है कि वे भांग के नशे में थे; लेकिन मुझे लगता है कि उसकी धार्मिक उमंग और खून की प्यास ने उसे उन्माद की स्थिति में लाने के लिए पर्याप्त कारण प्रदान किए। किसी ने भी उसे रोका या बाधा

नहीं डाली; लेकिन किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया। उसने सार्जेंट-मेजर और एडजुटेंट पर गोली चलाई और अपनी तलवार से दोनों को बुरी तरह घायल कर दिया। इस बीच परेड ग्राउंड सिपाहियों से भर गया था; लेकिन किसी ने भी उस उग्र विद्रोही को पकड़ने या गोली मारने का प्रयास नहीं किया, जो अपने साथियों को अपने साथ शामिल होने और धर्म के लिए लड़ने के लिए हर संभव आग्रह और प्रतिज्ञा कर रहा था। कुछ समय बाद, महान वृद्ध जनरल, उनके तीन बेटे और अन्य अधिकारी पहुंचे और तुरंत मुंगुल पांडे पर टूट पड़े। वह न तो डरा और न ही भागने का प्रयास किया; लेकिन, कुछ देर बाद

 क्षण भर के संकोच के बाद कि क्या उसे अपने कमांडर को मार देना चाहिए, उसका हौसला टूट गया और उसने अपनी तोप खुद पर तानकर गोली चला दी और ज़मीन पर गिर पड़ा। हालाँकि, वह मरा नहीं था और उसे कैद में ले जाया गया। यदि चौंतीसवीं रेजिमेंट तब विद्रोह कर देती, तो यह संभव था कि अन्य रेजिमेंट भी उनका साथ देतीं; लेकिन चौंतीसवीं रेजिमेंट के डर से वे सभी हिचकिचाए और उन्नीसवीं रेजिमेंट को दूत भेजे, जो उस समय केवल दस मील दूर थी, लेकिन उनसे कोई जवाब नहीं मिला; और 31 तारीख की सुबह, वह रेजिमेंट—अब पश्चाताप से भरी हुई, क्षमा की प्रार्थना करते हुए, यह घोषणा करते हुए कि वे समुद्र पार सेवा करेंगे, और अपने पुराने जनरल से विनती करते हुए कि उन्हें चौंतीसवीं रेजिमेंट को दंडित करने दें, जिसने उन्हें बहकाया था—बैरकपुर के परेड मैदान पर मार्च किया, हथियार डाल दिए और सैनिक बनना छोड़ दिया। लेकिन आगे की बदनामी या अपमान से उन्हें बचा लिया गया। जनरल ने देशी रेजिमेंटों को संबोधित करते हुए कहा, “मेरे पुत्रों, वहाँ चार सौ ब्राह्मण और डेढ़ सौ राजपूत अपनी जाति और धर्म में सुरक्षित, जहाँ चाहें पूजा करने के लिए स्वतंत्र जा रहे हैं; क्या ऐसा होता यदि अंग्रेजों ने उनकी अपवित्रता चाही होती?” इस प्रकार, कुछ समय के लिए सब कुछ फिर से शांत हो गया, और स्थानीय चिंता कुछ हद तक कम हो गई; लेकिन दोनों पक्षों की ओर से पहला खून बह चुका था, जो सुलगती आग को बुझाने से पहले एक उग्र धारा में तब्दील होने वाला था। मुंगुल पांडे और हमारे परिचित जमादार पर जल्द से जल्द मुकदमा चलाया गया, उनके साथी अधिकारियों ने उन्हें दोषी पाया और उन्हें फाँसी दे दी गई; लेकिन उस कठोर उदाहरण ने भी चौंतीसवीं रेजिमेंट या उन सभी रेजिमेंटों के मन में पनपी बुराई को खत्म नहीं किया, जिन्होंने फाँसी देखी थी; और जैसे ही यह

खबर देशी सेना में तेजी से फैली, बदला लेने की प्यास और भी प्रबल हो गई। अपने धर्म के लिए पहले ही दो शहीद हो चुके थे, और उनके भाग्य को दूसरों के साथ होने वाली घटनाओं का एक नया प्रमाण मान लिया गया था। उपस्थित सभी लोगों में, चौंतीसवीं बटालियन पर शायद सबसे गहरा और सबसे उचित संदेह था, और इसका आंशिक विघटन एक ऐसा प्रश्न था जिसका समाधान भविष्य में होना बाकी था। इस बीच, नूरपुर अपने सामान्य कामकाज में लगा रहा। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती गई, अंग्रेज़ निवासी एक-दूसरे से कम ही मिलने लगे, और यद्यपि न्यायाधीश का आतिथ्य सत्कारिक घर हमेशा खुला रहता था, और श्रीमती मोस्टिन यथासंभव समाज का नेतृत्व करती रहीं, मुझे लगता है कि वह इस भारी काम से लगभग थक चुकी थीं। ग्रेस ने सुंदर लूसी होम की प्रतिभा को निखारने की पूरी कोशिश की, अगर उसमें कोई प्रतिभा थी, तो उसके साथ धैर्यपूर्वक सरल युगल गीत गाए, और उसे चित्रकारी सिखाने का प्रयास किया; लेकिन यह सब बहुत कठिन काम था - लड़की जो थोड़ा बहुत सीख चुकी थी उसे भूल रही थी, और शायद उसने कभी इतना सीखा ही नहीं था कि वह खुद को प्रेरित कर सके।

नूरपुर में समाज। 219 और अधिक प्रयास करने के लिए। "बहुत गर्मी थी," उसने कहा, और इसके साथ ही उसकी सारी ऊर्जा समाप्त हो गई। गर्मी तो निश्चित रूप से थी; लेकिन ग्रेस और उसकी बहन, जब घर जल्दी बंद हो जाता था, तो उन्हें दिन काफी सहनीय लगते थे, और शामें और सुबह ठंडी और सुहावनी होती थीं; और ताजी सुबह की हवा में एक तेज सैर, और शाम को एक ड्राइव, उन्हें मजबूत और स्वस्थ रखती थी, और उनके सुंदर गालों की लाली कभी नहीं मिटती थी। मैं यह नहीं कहूंगा कि कैप्टन हॉब्सन उनके संगीत में उतने ही उपयोगी थे जितने कि सिरिल ब्रैंडन थे, लेकिन फिर भी वे उपयोगी थे; और उनकी सुरीली, दमदार बैरिटोन आवाज श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस की आवाज के साथ कई युगल और तिकड़ी गीतों में बहुत ही मनमोहक ढंग से घुलमिल जाती थी, और उनका वायलिन लगभग अब ड्राइंग रूम के एक कोने में ही रहता था, और उससे बहुत कुछ बजाया जाता था। हॉब्सन एक शानदार, बलवान और मजबूत शख्स थे, जिनकी घनी, घुंघराली, गहरे भूरे रंग की दाढ़ी छाती तक फैली हुई थी, हल्के रंग की मूंछें थीं और घने, लहराते भूरे बाल थे। वे बेहद आकर्षक भी थे, उनकी नीली आंखें तेज थीं, उनका चेहरा हंसमुख था, उनकी नाक छोटी, मजबूत और दृढ़ थी, और उनका रंग गहरा भूरा था, जो स्वास्थ्य और स्फूर्ति से

भरपूर था। हॉब्सन ने सिख युद्ध में असाधारण वीरता दिखाई थी और वे एक कुशल तलवारबाज थे, जिनकी तलवार के सामने कई बलवान सिख योद्धा निष्फल हो चुके थे, हालांकि अपने शरीर पर तलवार के तेज घावों के निशान छोड़े बिना नहीं। सभी जानते थे कि हॉब्सन के पिता ने उन्हें घर आकर बसने पर अच्छी खासी रकम देने का वादा किया था और यह भी कि स्वाभाविक रूप से उन्हें अच्छी संपत्ति विरासत में मिलेगी; लेकिन हॉब्सन मूल रूप से एक सैनिक थे, अपने पेशे के प्रति समर्पित, जिस रेजिमेंट की वे कमान संभाल रहे थे, उससे उन्हें बेहद लगाव और गर्व था; और सैनिकों का उनके प्रति सम्मान उतना ही था, या ऐसा प्रतीत होता था, जितना उनका सैनिकों के प्रति था। शायद वह बहुत विद्वान या अध्ययनशील नहीं थे, हालांकि उन्होंने सराहनीय परीक्षाएं उत्तीर्ण की थीं; न ही वे बहुत कुछ पढ़ते थे; उनकी एकमात्र प्रतिभा संगीत थी, जिसके वे दीवाने थे। क्या ऐसा व्यक्ति, जो हमारी प्यारी ग्रेस मोस्टिन की संगति में लगातार रहता था, उनकी सुंदरता, उनके आकर्षण, उनकी विलक्षण प्रतिभा और उनके मनमोहक स्वभाव से प्रभावित हुए बिना रह सकता था? ऐसा होना बिल्कुल असंभव था; फिर भी उन्हें अपने प्रति मित्रवत रुचि से अधिक कुछ भी पाने की कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। वह इतने मूर्ख नहीं थे कि उसे जीतने के किसी भी जल्दबाजी भरे प्रयास में जोखिम उठाएं और हार जाएं; लेकिन, अगर उन्हें लगता कि उनके प्रेम को स्वीकार किए जाने की कोई संभावना है, तो वे पूरे दिल से उन्हें अपना दृढ़, मर्दाना प्रेम दे देते। मुझे यकीन है कि जज और श्रीमती मोस्टिन ने इस विषय पर कई बार निजी बातचीत की होगी, और अगर ग्रेस ने कोई आशा भरी भावना दिखाई होती, तो वे उन्हें अपना प्रेम सौंप देते।

220 सेल्टा. खुशी से; लेकिन ऐसा कोई प्रदर्शन नहीं हुआ—ज़रा सा भी नहीं—और उन्होंने इस विषय पर सावधानीपूर्वक परहेज करके उसकी भावनाओं का सम्मान किया। मुझे डर है कि श्रीमती होम और बेचारी लूसी, उस साहसी कप्तान के स्पष्ट विश्वासघात को देखकर निराश थीं, जो हमेशा की तरह दयालु तो था, लेकिन लूसी से मिलने नहीं आता था और घर भी ज़रूरत से ज़्यादा नहीं आता था। एक दिन उसने आह भरते हुए और कुछ सच्चे आँसू बहाते हुए कहा, "मैं ग्रेस मोस्टिन के बराबर नहीं हूँ, माँ, और मैं कभी नहीं हो पाऊँगी; और कप्तान हॉब्सन को अब मेरी ज़रा भी परवाह नहीं है"—और इस निष्कर्ष में वह बिल्कुल सही थी। हालाँकि, स्टेशन पर कुछ अन्य लोग भी थे, जिन तक माँ जैसी चिंता धीरे-धीरे पहुँचने लगी। उसने कहा, "समुद्र

में उतनी ही अच्छी मछलियाँ हैं, मेरी प्यारी, जितनी उससे बाहर निकली हैं; और तुम्हें उनमें से एक को पकड़ने की उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए, शायद जितनी जल्दी तुम सोचती हो उससे भी जल्दी।" और लूसी, जो जानती थी कि उसकी शादी एक दिन होगी, क्योंकि वह बहुत अच्छी और सुंदर थी, प्रतीक्षा करने में संतुष्ट हो गई। उस समय नूरपुर समाज के बाकी लोगों के बारे में मेरे पास लिखने के लिए कुछ नहीं है। बड़े-बुजुर्ग सुबह के नाश्ते के समय और भोजनालय में अखबार पढ़ते थे और कारतूस के मुद्दे पर, साथ ही दिन के अन्य विषयों पर चर्चा करते थे। युवा लोग शिकार और सुअर के शिकार के लिए बाहर जाते थे, या गांव की सुंदरियों के बारे में श्री मोस्टिन लगातार गीत गाते रहते थे—बिलियर्ड्स खेलते थे, बैंड सुनते थे, हिंदुस्तानी पढ़ते थे और जितना हो सके समय बिताते थे। महिलाओं के बारे में ज्यादा कुछ नहीं लिखा जा सकता। श्रीमती हिल, श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के लिए एक अच्छी साथी साबित हो सकती थीं, लेकिन फिलहाल बाहर न जाने के ठोस कारण थे और उन्होंने उनका पालन किया; और शायद श्रीमती जोन्स और श्रीमती स्मिथ के लिए स्टेशन में सीता की उपस्थिति का उत्साह कम था, क्योंकि आया ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वह कभी वापस नहीं आएगी, और उसकी मालकिन की जांच उसी दिशा में निर्देशित थी। पहले की तरह ही अन्य स्थानीय विषयों पर चर्चा जारी रही। लेकिन सभी मामलों पर नजर रखने वाले ब्रिगेडियर की चिंता बढ़ती जा रही थी। एक दिन सुबह-सुबह श्री मोस्टिन उनसे मिलने आए, लेकिन वे ड्राइंग रूम में नहीं गए जहाँ महिलाएँ बैठी थीं, और उन्होंने उनसे अकेले में मिलने का अनुरोध किया। श्री मोस्टिन अभी तक अपने दरबार में नहीं गए थे; वे गोकुलपुर स्थित संपत्ति के संबंध में हाल ही में दायर एक नए मुकदमे - राम दास बनाम सीता बाय (विधवा) और नरेंद्र (बैंकर) - के कागजात पढ़ रहे थे, जिसने उन्हें काफी परेशान कर दिया था। श्री मोस्टिन ने जवाब दिया, "मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। मुझे नहीं पता कि गलती कहाँ है, लेकिन कहीं न कहीं तो है ही।"

नूरपुर में समाज। 221 क्या कारतूस का यह प्रश्न उठना ही चाहिए था? निश्चित रूप से हमारे यहाँ इतने बुद्धिमान लोग हैं जो इन नए हथियारों को लाने के किसी भी प्रयास के घोर खतरे को जानते हैं। अंग्रेज़ रेजिमेंटों को ये कारतूस हर हाल में मिलने चाहिए, और जितने ज़्यादा हों उतना अच्छा—वे और भी मज़बूत होंगे; लेकिन हम एक आम सिपाही को अपने जितना मज़बूत क्यों बनाना चाहते हैं, यह मेरी समझ से परे है।

भगवान भला करे, इत्यादि। “मुझे उम्मीद है कि बात यहाँ तक नहीं पहुँची है,” जज ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “मुझे सच में नहीं पता कि बात यहाँ तक नहीं पहुँची है, मोस्टिन,” ब्रिगेडियर ने कहा। “मैं खुद को बिल्कुल आश्वस्त नहीं कर सकता। मेरे पास उम्बाला, मेरठ, पंजाब, दीनापुर और अन्य जगहों से पत्र हैं, और उनमें से अधिकांश का सार एक ही है: हर जगह अविश्वास—हर कोई अनिश्चित—और फिर भी इस सबसे बेतुके और खतरनाक प्रोजेक्ट में दृढ़ता। अब, आप देख रहे हैं, पहला खून बह चुका है—मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यह आखिरी हो! लेकिन मुझे डर नहीं है; हवा में बहुत बुराई फैली हुई है, और साज़िश बहुत आगे बढ़ चुकी है, जैसा कि उन्नीसवीं रेजिमेंट के मामले और अखबारों से मिली खबरों से स्पष्ट है। मैं उस रेजिमेंट को जानता था, हालाँकि मैं कभी उसका हिस्सा नहीं रहा, और उससे बेहतर या कमांड करने में आसान रेजिमेंट मैंने कभी नहीं देखी; सैनिक ज्यादातर ब्राह्मण और राजपूत थे —सभी बड़े, उच्च जाति के लोग थे; और मुझे नहीं लगता कि वे ऐसा कर सकते थे।” अगर उनका ठीक से प्रबंधन किया गया होता, तो वे सबसे पहले अपराध करने वाले नहीं होते। लेकिन अब वे जा चुके हैं; और इयरसी के प्रति अपनी खुशी के बावजूद, वे अपना जहर हर जगह फैलाएंगे; और अगर सरकार चौंतीसवीं बटालियन को भंग कर देती है, जैसा कि कहा जा रहा है कि वे करेंगे, तो वे अपने साथियों का अनुसरण करेंगे और हर स्टेशन को आग लगा देंगे। वे पुराने चौंतीसवीं बटालियन जितने ही बुरे हैं, और यह बहुत बड़ी बात है। "और हम यहाँ कैसे हैं?" न्यायाधीश ने पूछा। "मुझे कुछ भी असामान्य सुनने को नहीं मिला है।" "न ही मुझे, और न ही हमें सुनने की संभावना है," ब्रिगेडियर ने उत्तर दिया; "और हम अब तक सुरक्षित हैं, इसलिए हमें कारतूस भेजे जाने की संभावना नहीं है। हम सौभाग्य से रास्ते से हट गए हैं: और मुझे लगता है और आशा है कि जब तक सिपाहियों को वास्तव में कुचला नहीं जाता, तब तक वे हम पर हमला नहीं करेंगे; लेकिन मुझे लगता है कि सावधानी बरतने में कोई हर्ज नहीं है, और मैं इसी बारे में आपसे बात करने आया हूँ; और मैं यहाँ बिना सुने जाने के खतरे के ऐसा कर सकता हूँ।" “आप बेझिझक बोलिए और मुझे अपनी योजनाएँ बताइए,” न्यायाधीश ने कहा; “कोई हमें सुन नहीं सकता और महिलाएँ ड्राइंग रूम में हैं।” “ठीक है, तो फिर,” ब्रिगेडियर ने आगे कहा, “हमें कोई सुरक्षित जगह ढूंढनी चाहिए और पुराना किला मुझे इसके लिए बहुत उपयुक्त लगता है।”

याप सीता। इस उद्देश्य के लिए अनुकूलित। मैंने कल इसका निरीक्षण किया था, और

यद्यपि कुछ इमारतें बेशक जर्जर हैं, फिर भी कुछ ऐसी भी हैं जिन्हें जरूरत पड़ने पर बहुत उपयोगी और मौसमरोधी बनाया जा सकता है। अब, क्या आप इसे साफ करने में मेरी मदद कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, आप अपने सभी उपलब्ध कैदियों को काम पर लगा सकते हैं; थोड़ी देर में मैं आपको लस्करों और कुलियों के साथ मदद कर पाऊंगा। मेरे द्वारा काम शुरू करने से शायद आश्चर्य हो; लेकिन आपके ऐसा करने पर किसी को पता नहीं चलेगा। आपका क्या कहना है? ध्यान रहे, इसके बारे में आपके और मेरे अलावा किसी को पता नहीं चलना चाहिए।" "तो क्या आप किसी विद्रोह की आशंका जता रहे हैं?" श्री मोस्टिन ने शांत भाव से कहा। "सच कहूँ तो, मुझे एक विद्रोह का डर है, और उन कारणों से जो मैंने बताए हैं। मुझे बस उम्मीद है कि मैं गलत हूँ, और फिर मैं आपको मुझ पर जितना चाहें उतना हंसने की छूट दूंगा। काश ब्रैंडन यहाँ होता, ताकि हमें उसके शांत दिमाग का लाभ मिल सके; लेकिन मुझे लगता है कि वह कुछ समय तक वापस नहीं आएगा।" "मुझे नहीं लगता कि वह आएगा," न्यायाधीश ने उत्तर दिया; "यह उसका सबसे व्यस्त समय है; लेकिन उसे बुलवाया जा सकता है—मेरे एक इशारे पर वो तुरंत आ जाएगा। और अब जब मैं तुम्हारी योजना पर विचार कर रहा हूँ, तो मुझे यह पसंद आ रही है, और मैं कल कैदियों को बुलाने का आदेश दूँगा। मैं आज शाम किले में जाकर देखूँगा कि क्या करना है, और मैं आज ब्रैंडन को गुप्त रूप से पत्र लिखूँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि वह जितनी जल्दी हो सकेगा आ जाएगा; लेकिन फिलहाल वह हमसे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकता। "और मोस्टिन, एहतियात बरतने के अलावा कोई और कुछ नहीं कर सकता। हमारे पास पर्याप्त संख्या में मुरोपियन सैनिक और तोपें हैं जो नियमित तोपखाने को छोड़कर हर तरह के आक्रमण से इस जगह की रक्षा कर सकते हैं; और मानवीय दृष्टि से, हमारी सुरक्षा 'गोरे लोगों' पर निर्भर करती है। तो, अभी के लिए इतना ही।" ब्रिगेडियर ने हाथ मिलाया और विदा हो गए, जबकि श्री मोस्टिन ने सिरिल को पत्र लिखकर लिए गए निर्णय के बारे में बताया। उन्होंने आह भरते हुए कहा, "काश रोज़ और ग्रेस पहाड़ियों पर सुरक्षित होतीं; लेकिन रोज़ यह सुनना ही नहीं चाहती, और अगर थोड़ी सी भी परेशानी की आशंका हुई, तो वह पहले से कहीं अधिक दृढ़ निश्चय के साथ वहीं रुकेगी; इसलिए शायद यही सबसे अच्छा है।"

(223) ए आरआर ने ईआरई रैटनर ने ईपी मी अध्याय XXIX. एक विधवा सचमुच। नरेंद्र बनारस से लौट आए थे और उन्होंने नूरपुर पंचायत और अपने गोवरू के निर्देशों

का पालन किया था; सभी आवश्यक अनुष्ठान और शुद्धिकरण किए थे, और प्रमुख ब्राह्मणों और अपनी जाति के संघों के प्रमुखों से पत्र लाए थे, जो न केवल उनके शुद्ध होने की पुष्टि करते थे, बल्कि यह भी प्रमाणित करते थे कि उन्होंने बड़ी मात्रा में दान दिया था और अपनी जाति के लोगों को एक भव्य भोज दिया था जहाँ उन्होंने सभी के साथ भोजन किया था। इन कारणों से, और उनकी महान बुद्धिमत्ता और सम्मान के कारण, उन्हें गोवरू और सुनार जाति के लोगों की मित्रता और संरक्षण के लिए सर्वत्र अनुशंसा की गई थी। नूरपुर पहुँचने पर, जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है, नरेंद्र को श्री ब्रैंडन और उनकी पोती नहीं मिली; लेकिन उन्होंने अपने जाति के लोगों का स्वागत किया, जिन्होंने उनका सहर्ष अभिनंदन किया, और सिरिल को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि यदि संभव हो तो वे शाहगंज आएँ, क्योंकि उन्हें बहुत कुछ बताना था जो वे बनारस से सामान्य डाक द्वारा लिखने का साहस नहीं कर रहे थे। अपने बारे में प्रमाण पत्रों के अलावा, उन्होंने अपनी पोती के बारे में भी एक प्रमाण पत्र का अनुरोध किया था, जिसके अपराध के लिए, यदि कोई था, तो उन्होंने दावा किया कि उन्होंने अपने अपराध के लिए प्रायश्चित किया था; लेकिन यह इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हुआ। वामुन भूत ने ब्राह्मणों से अपनी पोती के लिए विनती की और उनसे विवाह के विषय में अपने विचारों की पुष्टि प्राप्त की, जो उनकी एकमात्र इच्छा थी; लेकिन सुनारों के संघ को मनाना अधिक कठिन था। संघ के सदस्यों ने विवाह का विरोध किया, क्योंकि उन्होंने घोषणा की कि यह विवाह जाति को एक ऐसे व्यक्ति से जोड़ता है जो गाय का मांस खाने से अपवित्र हो गया है। जब तक वह उनके साथ रहती है, तब तक न तो वह और न ही उसकी पत्नी कभी शुद्ध हो सकती है; लेकिन फिर भी वह अपने दादा और चाची से मिलने जा सकती है और उनके घर में रह सकती है। लेकिन उसे तब तक अलग से खाना खाना होगा, और घर के बर्तनों का इस्तेमाल सामूहिक रूप से नहीं किया जाना चाहिए। नरेंद्र बस इतना ही कर सका, और उसने सोचा, हालाँकि उसने यह बात गिल्ड को नहीं बताई, कि इससे सीता संतुष्ट हो जाएगी। वैसे भी, अब कोई अपील नहीं थी। बनारस गिल्ड के कुछ सदस्यों ने तो यहाँ तक कह दिया था कि सीता को मिस्टर ब्रैंडन से अलग होना होगा; बनारस आना होगा, गंगा में स्नान करना होगा, सिर मुंडवाना होगा, चूड़ियाँ तोड़नी होंगी, मोटे कपड़े पहनने होंगे और विधवा की तरह व्यवहार करना होगा। लेकिन कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने उसकी कहानी सुनकर उस पर अधिक दया दिखाई, अंग्रेज सज्जन के उच्च सम्मान

को समझा, और
224 सीता ने इस संबंध को आशा से देखा; और वे सौभाग्य से सबसे अधिक संख्या में थे। इस प्रकार नरेंद्र अपनी पोती का स्वागत करने के लिए तैयार थे; और वामुन भूत से परामर्श करके, ग्रहों की कुछ स्थितियों के आधार पर एक उचित दिन निर्धारित किया गया, जिस दिन वह अपनी लंबी अनुपस्थिति के बाद घर में फिर से प्रवेश करेगी। आंटी एला अपनी बच्ची को एक बार फिर देखने के लिए कितनी उत्सुक और बेचैन थीं, जिससे वह अपने जीवन में पहले कभी इतने लंबे समय तक अलग नहीं हुई थीं! उनके पास उसे बनारस की यात्रा, विशाल मंदिरों और तीर्थस्थलों, तीर्थयात्रियों की भीड़, सड़कों पर भरे डरावने जोग्स और बैरागेक्स, और भव्य जुलूसों और समारोहों की कितनी कहानियां सुनाने को थीं! प्यारी आंटी एला अपनी यात्रा और व्रतों के परिणामों से बहुत आहत थीं, और उनमें कोई सुधार नहीं हुआ था। उनके कोमल भूरे बाल, जो हमेशा उनके माथे पर बड़े करीने से गुंथे होते थे और पीछे एक बड़ी गांठ में बंधे होते थे, अब गायब हो गए थे; उसका सिर पूरी तरह मुंडा हुआ था, और उसके सिर पर कभी-कभी हल्की दाढ़ी के छोटे-छोटे बाल रहते थे, जिन्हें नाई ही हटा पाता था। इस प्रक्रिया के बाद उसके सादे, साधारण चेहरे के भाव और भी बड़े और खुरदुरे हो गए थे, हालांकि उनके चेहरे पर अभी भी दयालु और स्नेहपूर्ण भाव बरकरार थे, और वे कभी नहीं बदलेंगे। पहले उसके कपड़े सुंदर होते थे, भले ही महंगे न हों; उसने खुद को उस विधवा के रूप में सजाया था, जिसने भले ही उसे कोई संतान न दी हो, फिर भी उसके लिए एक आरामदायक संपत्ति छोड़ी थी, जिसका उसके भाई ने अच्छे से और लाभप्रद तरीके से उपयोग किया था। यह उसकी सभी जरूरतों को पूरा करता था; और उसका भाई भी उसे अच्छे कपड़े पहने देखना पसंद करता था, और उसे सुंदर रेशम और मलमल की साड़ियाँ देता था, जैसा कि वह त्योहारों के दिनों में स्केता को देता था - सोने के धागे या रेशम की समृद्ध किनारी वाली साड़ियाँ, जिनकी कीमत बहुत अधिक होती थी। अब ये सब गायब हो गए थे: और इसके बजाय, एक पतले ऊनी कपड़े से बना एक धूसर सफेद वस्त्र, जो उसके घुटनों से थोड़ा नीचे तक ही पहुँचता था, बहुत ही घटिया और असुविधाजनक था, बस यही उसे पहनने को दिया जाता था। उसके पास कोई चोली नहीं थी; और उसका दाहिना हाथ कंधे तक नंगा दिखाई दे रहा था, कोहनी तक की त्वचा गोरी थी जहाँ तक पहले आस्तीन पहुँचती थी, और बाकी भूरी थी, जिससे उसका चेहरा धब्बेदार और देखने में बहुत अप्रिय लग

रहा था। उसने अपने पैर के ऊपरी हिस्से पर सोने की पायल नहीं पहनी थी, जो चलने पर बजने वाली छोटी घंटियों की झंकार सुनने में सुखद लगती थी, रसोई में आलसी लड़कियों को गपशप बंद करके अपना काम करने की चेतावनी देती थी। अब उसके हाथों या कलाई पर सोने की चूड़ियाँ या कंगन नहीं थे, कोई आभूषण नहीं था, और उसकी पतली कमर के चारों ओर सोने का कोई भारी घेरा नहीं था; उसे बस कोहनी के ऊपर प्रत्येक हाथ में एक सादी चांदी की चूड़ी और गले में एक चांदी की अंगूठी पहनने की अनुमति थी।

सचमुच एक विधवा। 225 अक्सर खुद पर हंसती थी—हाँ, और रोती भी थी—जब वह शीशे में देखती थी; लेकिन अब सेक्टा आ रही थी, और मिस्टर ब्रैंडन, वे उसके बारे में क्या सोचेंगे? “और वे उसे मेरे जैसा बना देते,” बूढ़ी जैडी ने मन ही मन कहा, ‘उनमें से कुछ; लेकिन अब वह अंग्रेजों के साथ सुरक्षित है।’ मुझे लगता है कि आंटी इला पहले वामुन भूत के मंदिर तक जाने से डरती थीं, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं बदतमीज़ लड़के उनके बदले हुए रूप पर उनका मज़ाक न उड़ाएँ; लेकिन वे स्वभाव से डरपोक नहीं थीं। रोज़ाना की रस्में निभानी होती थीं, और उन्हें उनके सिवा कोई और नहीं कर सकता था; इसलिए एक दिन उन्होंने अपने छोटे वस्त्र को इतना ऊपर उठाया कि उनके मज़बूत पैर घुटनों के ऊपर दिखाई देने लगे, अपने कंधों पर एक चादर डाली, कुत्तों को भगाने के लिए एक लंबी लाठी ली, और निडर होकर बाहर निकल पड़ीं; और बुढ़िया यह देखकर बहुत हैरान और प्रसन्न हुईं कि ज़्यादातर लोग उनका पहले से ज़्यादा सम्मान करते थे! पुरुष और महिलाएं अपने हाथ जोड़कर अपनी नाक और माथे पर रखते थे, और कई महिलाएं अपने पैर और छाती को छूती थीं, और अपने बच्चों से भी ऐसा करवाती थीं, और उनसे आशीर्वाद मांगती थीं—यह सब बहुत नया और सुखद था। जब वे अच्छे कपड़े पहनती थीं, और त्योहारों के दिनों में शान से गलियों से होते हुए मंदिर तक जाती थीं, तो ऐसा नहीं होता था। उनकी मोटी बैंगनी रेशम की कीमती साड़ी चलते समय चमकती और सरसराती थी, और उस पर लगा भारी सोने का हार बंधा होता था। उसके सामने; और अब लोगों का व्यवहार, मुझे यकीन है, उस धर्मपरायण महिला के लिए बहुत बड़ी सांत्वना थी। इसके अलावा, उसने बनारस में कुछ नए पवित्र ग्रंथ और मंत्र सीखे थे, जो उसके सभी गृहस्थों और विशेष रूप से कृष्ण को, जिनकी वह मंदिर में पूजा करती थी, अत्यंत प्रिय थे। वह शाहगंज की एकमात्र महिला थी जिसने पवित्र माता गंगा और पवित्र नगर को देखा

था; और इन मामलों में, वह अपनी उन सभी पुरानी सहेलियों और गपशप करने वालों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी, जो उससे मिलने और उसके कारनामों को बताने के लिए आती थीं। सीता के बारे में शायद ही कभी कोई पूछता था। वह स्वेच्छा से उनके बीच से निकलकर अंग्रेजों के पास चली गई थी, जिनके बारे में वे कुछ नहीं जानते थे; और उसके अधिकांश दोस्तों का मानना था कि चाची एला का परिवर्तन सीता को जाने देने के अपने पाप के प्रायश्चित के रूप में था, और उन्होंने इसे श्रद्धापूर्वक स्वीकार किया। जब सीता ने अपने दादा और चाची एला के बनारस से सुरक्षित लौटने की खबर सुनी, और पवित्र होने के कारण, वह बहुत आभारी थी, और उसने उस कस्बे के मंदिरों में दान-पुण्य किया जिसके पास सिरिल का शिविर था; उसने कुछ ब्राह्मणों को भोजन कराया, और एक हिंदू महिला की तरह व्यवहार किया जब उसके प्रियजन, जो लंबी और कठिन यात्राओं पर गए थे, सुरक्षित लौट आए। सिरिल चाहता था कि वह तुरंत शाहगंज जाए, जहाँ वह पहुँचेगी।

226 सीता। तीसरे या चौथे दिन, शायद, और पुलिस को उसे पूरे रास्ते सुरक्षा देनी चाहिए थी; लेकिन उसने सच कहा था कि वह चाहती है कि वे लोग व्यवस्थित हो जाएँ: अगर वह जल्दी चली गई तो वह उनके रास्ते में बाधा बनेगी, और वह भरोसा रख सकता है कि उसके दादाजी उसके आने के उचित समय पर पत्र लिखेंगे, और वामुन भूत ने एक उचित दिन तय कर दिया था। लगभग दो सप्ताह बीत गए थे जब नरेंद्र का बहुप्रतीक्षित पत्र आया, जो उन दोनों को संबोधित था, और लाल रंग और सोने की धूल से सजा हुआ था, मानो किसी शादी के लिए हो। नरेंद्र वास्तव में बहुत खुश था, सिवाय एक चिंता के, जो केवल श्री ब्रैंडन को ही बताई जानी चाहिए। उसकी अनुपस्थिति में उसका व्यवसाय बहुत फला-फूला था, और उसके प्रबंधक ने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया था। वह स्वयं मिर्जापुर से स्थानीय उत्पादों के बड़े ऑर्डर लाया था—अन्य भी आएंगे, और व्यापारिक वर्ष के अंत में उसके एजेंसी खातों में बड़ी राशि दिखाई देगी। वह अपनी बढ़ती संपत्ति का क्या करे? वह इसे किसे सौंपे? सीता के बच्चे होते तो वह उन्हें बहुत कुछ दे सकता था; लेकिन गोद लेना आवश्यक था। उसने बनारस में धार्मिक संस्कार ग्रहण किए थे, जिसका निशान उसकी चौड़ी छाती पर अभी भी सफेद था जहाँ से चमड़ी उतर गई थी, और उसे पंचायत और ब्राह्मणों दोनों ने समझाया था कि जब तक वह स्वस्थ और तंदुरुस्त है, उसे अपनी मृत्यु के बाद आत्मा की शांति के लिए अनुष्ठानों की व्यवस्था में लापरवाही नहीं करनी चाहिए, जो केवल

एक पुरुष उत्तराधिकारी ही कर सकता है। हालाँकि, इस बारे में कोई जल्दी नहीं थी, और उसने पहले ही नागपुर में रहने वाले एक दूर के रिश्तेदार के बेटे, जिसके बारे में उसने अच्छी बातें सुनी थीं, को चुन लिया था। हाँ, वह उसे शाहगंज बुलाएगा, और यदि वह योग्य सिद्ध हुआ, तो वह उसके साथ रहेगा और उसका पुत्र बन जाएगा। श्री ब्रैंडन समय के पाबंद थे, और सीता सीधे अपने पुराने घर चली गई। अपने बचपन के परिचित दृश्यों को फिर से देखना कितना सुखद था, और सूर्योदय के समय पालकी में गोकुलपुर से गुजरते हुए उसके पति की हत्या की भयावह घटना उसकी स्मृति में कितनी स्पष्टता से कौंध गई! वह पुराने घर की ओर नहीं देख सकी और उसने अपनी पालकी के दरवाजे बंद कर लिए; लेकिन गाँव की स्त्रियाँ उसका स्वागत करने के लिए एकत्रित थीं, और उन्होंने उसे गले लगाया और उंगलियाँ चटकाईं, जैसा कि उन्होंने कई बार पहले किया था। वहाँ से, हर पेड़, हर खेत, हर गाँव उसके लिए परिचित था; और जैसे ही वह अंतिम ऊँची जगह पर पहुँची और सुंदर कस्बे पर नज़र डाली, उसने अपने दादा का घर आसपास के घरों से ऊँचा देखा, और वह प्यारी खिड़की जहाँ वह बैठकर देखती रहती थी—तब बिना किसी आशा के। बाहरी रूप से कुछ भी नहीं बदला था; लेकिन भीतर से वह

एक विधवा सचमुच। 227 पहले से ही बहुत बदलाव देख सकते हैं। नए विचार, नई आकांक्षाएं, परिश्रम के लिए नए प्रोत्साहन, उनके उन पुराने स्वप्निल अध्ययनों का स्थान ले चुके थे, जिनका स्वाद शायद कुछ हद तक फीका पड़ गया था। हालांकि अभी तक उन्हें अंग्रेजी का बहुत कम ज्ञान था, उनके पति का दिमाग एक ऐसी किताब की तरह था जो हर दिन उनके सामने और अधिक खुलता जा रहा था। ऐसा लगता था मानो उन्होंने ज्ञान के अनगिनत भंडार संजो रखे हों! जबकि उनके लिए, उनकी बुद्धि को प्रशिक्षित करना और संतुष्ट करना हमेशा एक सुखद और संतोषजनक कार्य था। 'उन्हें कभी सुस्ती या उदासीनता का सामना नहीं करना पड़ा; इसके विपरीत, एक उज्ज्वल, तेज, गहन चिंतनशील दिमाग, सच्चे उत्साह और दृढ़ता से भरा हुआ, जो उन्हें कभी नहीं थकाता था, बल्कि वास्तव में उन्हें एक गंभीर श्रद्धा और प्रेम से देखता था जो उन्हें गहराई से प्रभावित करता था, और जिसमें उन्हें अपने दिन के काम से थक जाने पर आराम मिलता था। शुरुआत में सिरिल की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि वह सीता को कैसे मनाए: क्या शुरुआती उत्साह शांत होने के बाद सीता के विचार उसके पुराने जीवन और उसके साधारण सुखों और कामों की ओर लौट जाएंगे और वह उन्हें

याद करने लगेगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ; और इस प्रकार आपसी प्रेम और भी बढ़ गया। उनका जीवन शुरू से जैसा था वैसा ही रहा। उसका अपना काम भी दिन-प्रतिदिन अपरिवर्तित रहा। सरकारी कागजात, संदर्भ, मुकदमे और याचिकाओं की सुनवाई का नियमित क्रम घड़ी की तरह चलता रहा, और केवल विचार और निर्णय के विषयों में ही बदलाव आता था। कुछ मामलों में सुधार और बदलाव की आवश्यकता थी, जिनकी जांच से अच्छे परिणाम मिलने की उम्मीद थी। नई सड़कों, स्कूल भवनों, पुलों, पुलिस स्टेशनों और अन्य सार्वजनिक निर्माण कार्यों के संबंध में जो कुछ भी संभव था, उस पर भी उसका पूरा ध्यान रहता था। सिरिल ने साधारण सर्वेक्षण और मानचित्रण स्वयं ही सीख लिया था, जो पुराने समय में रक्तपात करने वाले कई देशव्यापी विवादों को सुलझाने में उनके लिए उपयोगी साबित हुआ, और शायद कुछ मामलों में संबंधित पक्ष उन्हें अनसुलझा ही छोड़ना पसंद करते। इस प्रकार, उनके द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक नए प्रस्ताव या रिपोर्ट में यह प्रमाण होता था कि उन्होंने स्वयं इस पर अच्छी तरह विचार किया है, और जिन अधिकारियों को यह भेजा जाता था, उन्हें यह विश्वास हो जाता था कि एक गंभीर, सही सोच वाला व्यक्ति पूरी निष्ठा और कुशलता से अपना काम कर रहा है। क्या यह विषयांतर है? मुझे उम्मीद है कि नहीं; क्योंकि मेरे पाठकों के लिए यह जानना आवश्यक है कि कैसे एक व्यक्ति, शायद एक अंग्रेज और कुछ देशी सहायकों के साथ, भारत के एक प्रांत पर शासन करता है जो आयरलैंड के एक विभाजन जितना बड़ा है—उतना ही विशाल, शायद उससे भी अधिक—और ऐसे कार्य की जिम्मेदारी स्वीकार करता है, और इसके विविध कर्तव्यों को पूरा करता है। सिरिल ब्रैंडन जैसे लोग असंख्य हैं; गंभीर, परिश्रमी, और समृद्धि के लिए प्रयासरत।

228 सीता। ——— अपने अधीन लोगों को सांत्वना देने के लिए, निस्संदेह कई कमियों से अवगत होते हुए भी, वह प्रयासरत है, और जैसा कि मैं सोचता हूँ, उसका प्रयास व्यर्थ नहीं है। लेकिन जब हम इन बातों पर विचार कर रहे थे, सीता नगर के द्वार से गुज़र चुकी थी, पालकी के दरवाजों की दरार से, जिन्हें उसने खोला नहीं था, उसे हर जगह परिचित चेहरे दिखाई दिए, परिचित चटखने की आवाज़ें सुनाई दीं, पुराने दोस्तों को उनके दरवाज़ों और दुकानों पर देखा, और उनमें से कोई भी नहीं बदला था। ऐसा लग रहा था मानो वह कल ही यहाँ आई हो, जबकि वह कुछ महीनों से अनुपस्थित थी और पूरे इलाके में घूम चुकी थी। फिर चौक आया, और सुबह-सुबह लकड़ी, सब्ज़ियाँ और अंडे बेचने वाले, और सुबह की पूजा के लिए फूलों की माला

लिए फूल बेचने वाली। और जब सामान ढोने वाले पुराने मेहराब में मुड़े, और उसके सामने पानी के घड़े तोड़े गए, और राठौर के रक्षकों ने, जिनके मुखिया देवी सिंह थे, उसे सलाम किया, तो वह जान गई कि वह एक बार फिर घर आ गई है। जब पालकी भीतरी प्रांगण में रखी गई, तो वह तेज़ी से बाहर निकली, और पल भर में आंटी एला ने उसे वैसे ही गले लगा लिया जैसे पहले लगाती थीं, जबकि वामुन भूत की पत्नी ने उसके सिर से पैर तक जलते हुए जाम्प, अनाज, दाल और फूलों से सजी एक थाली लहराई, और कुछ पवित्र पाउडर और राख भी रखी, जिससे उसके माथे पर निशान लगाया गया। महिलाओं की एक पंक्ति ने दुल्हन के स्वागत में एक भजन गाया, और सीढ़ियों के ऊपर उसके दादा की भव्य आकृति थी, उनकी बाहें खुशी से उसकी ओर फैली हुई थीं। फिर सेक्टा ने आदरपूर्वक उनके चरणों को छुआ और अपने हाथ उसके सिर पर रखे—और मुझे नहीं लगता कि दोनों में से कोई बोल पाया होगा—और आंटी एला ने उसे गोद में उठा लिया, महिलाएं उसके सामने भजन गा रही थीं और जलते हुए दीपक लिए हुए थीं, उस वेदी तक जिसकी वह हमेशा सेवा करती थीं, और उसने उस पर से कुछ ठंडी राख ली और उसे अपने माथे और आँखों पर मल लिया, जैसे वह पहले किया करती थीं। सचमुच उसका स्वागत पूर्ण और सुखद था! भारत में दोस्तों को स्वस्थ देखना शुभ नहीं माना जाता; इसके विपरीत, एक अजीब रिवाज प्रचलित है कि अनुपस्थिति के बाद बदले हुए रूप पर शोक व्यक्त किया जाता है, उनके दुबलेपन पर अफसोस जताया जाता है, और इसी तरह की बातें कही जाती हैं; और जब वे वहाँ खड़ी थीं, तो अच्छी चाची एला, जिनकी आँखें सीता के पालकी से उतरते ही खूब बह रही थीं, अब अपनी आँखें पोंछ रही थीं और अपनी बच्ची की दयनीय शारीरिक स्थिति पर सहानुभूति जता रही थीं; लेकिन साथ ही वह उस पर हाथ फेर रही थीं और अपनी बच्ची को बहुत गोल-मटोल, मजबूत और स्वस्थ देखकर उन्हें आंतरिक संतुष्टि महसूस हो रही थी—वास्तव में वह उससे बहुत अलग थी जब वह गई थी। और यह सचमुच ऐसा ही था। लगातार बदलती हवा, व्यायाम, एक हल्का और खुश मन, सुखद काम और सिरिल ब्रैंडन के प्यार ने उसे बदल दिया था।

सचमुच एक विधवा। 229 ने उस पीली, बीमार लड़की को, जिसे वह याद करती थी, एक नए, जीवंत और स्वस्थ प्राणी में बदल दिया। उसी क्षण, प्यारी चाची एला भी अपने बच्चे की ऐसी ही जांच-पड़ताल से गुज़र रही थीं, जिसे अब इस पूर्ण और दर्दनाक परिवर्तन को देखने का समय मिल गया था। चाची एला के सिर से कपड़ा गिर

गया था, और उनकी चमकदार, उभरी हुई खोपड़ी दिखाई दे रही थी, जिसे हाल ही में मुंडा गया था, और जिससे उनके चेहरे का रूप बेहद दर्दनाक रूप से विकृत हो गया था। स्केटा की नज़र उस कम, बेजान पोशाक पर पड़ी, और उसका दिल दुख से भर गया। "काश उन्होंने मुझे ऐसा बना दिया होता," उसने सोचा, और लगभग कांपते हुए मुँह फेर लिया। हम उसे आंटी एला की देखभाल में छोड़ सकते हैं, और उसके पुराने तरीके से आगंतुकों का स्वागत कर सकते हैं, जो "अंग्रेज़ महिला" को देखने के लिए उमड़ते थे, यह मानते हुए कि वे उसे बदला हुआ पाएंगे। लेकिन सीता ने अपने पुराने सरल तरीके से सभी का स्वागत किया, जैसे ही वह खिड़की पर बैठी, और शांति की अनुभूति के साथ प्यारे सफेद तंबुओं को देखती रही। और अब हम नरेंद्र के पीछे जा सकते हैं, जो अपना दैनिक काम शुरू होने से पहले सिरिल के शिविर में गया था। बूढ़ा आदमी उसे फिर से देखकर कितना आभारी था, और सीता की देखभाल के लिए कितना कृतज्ञ था, यह बताने की आवश्यकता नहीं है; और जब पहली पूछताछ समाप्त हो गई, तो ब्रैंडन ने उसे उस विषय पर ले गया जो उसके दिल के सबसे करीब था, और शायद नरेंद्र के भी सबसे करीब था। "जे.टी यहाँ उस बारे में बात नहीं करेगा जो मैं जानता हूँ; मेरे साथ मंदिर चलो—पुजारियों का कमरा छोटा है, और यह बस एक कदम दूर है। हमें बहुत सावधान रहना होगा; "और सिरिल ने अपनी टोपी पहनी और उसके पीछे-पीछे चल दिया। "पूरब की ओर हालात मेरी सोच से भी बदतर हैं—बहुत ज़्यादा। बनारस में तो इतनी बुरी हालत थी कि मैं लिखने की हिम्मत भी नहीं कर पा रहा," नरेंद्र ने बैठते हुए उत्तेजित होकर कहा। "क्या बदतर है?" सिरिल ने कुछ हैरानी से पूछा। "क्या तुमने नहीं सुना—जाति के विनाश की खबरें? आह! मुझे खुशी है कि तुमने नहीं सुनीं, क्योंकि वे बहुत भयानक और डरावनी हैं, और लोगों का मन बहुत विचलित है। वे कहाँ से आईं, मुझे नहीं पता; लेकिन बनारस और मिर्जापुर में अफवाहें थीं कि जिस नमक और आटे को हम खाते हैं, जिस अनाज को हम पीसते हैं, वह दूषित हो रहा है, और हो जाएगा; कि जाति का नाश होने वाला है, और हम सब सफाईकर्मी बन जाएंगे। ये अफवाहें, महोदय, तेज़ी से फैल रही थीं। हर कोई इनके बारे में बात कर रहा था; और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि कई लोगों ने इन पर विश्वास भी कर लिया।" ऐसी खबरें भी थीं कि रूसियों और फारसियों ने अंग्रेजों को हराकर आगे बढ़ रहे हैं और उनके नेतृत्व में देहली परिवार सत्ता में आ रहा है; और अफसोस! अब कोई अंग्रेज नहीं बचेगा; सिपाहियों को उन्हें नष्ट करना था, क्योंकि

कारतूसों में चिकनाई लगी हुई थी। "तो तुमने भी यह सुना, नरेंद्र?" "ऐसा होना ही था, श्री ब्रैंडन। लोगों ने कहा था।"
230 सीता। पहले अंग्रेजों को अपवित्र किया जाना था, फिर वे अन्य सभी हिंदुओं को भी अपवित्र करने में संकोच नहीं करेंगे। यह सब एक ही योजना का हिस्सा था। मंदिरों के पुजारियों ने स्वयं कहा कि 1914 के सुम्बुत के बाद तक वहां कोई पूजा नहीं होगी, और उसके बाद वह ईसाई धर्म में परिवर्तित हो जाएगा, यदि अंग्रेज नहीं मरते। "और क्या यह सब खुलेआम चर्चा का विषय था?" सिरिल ने पूछा। "शायद खुलेआम नहीं, लेकिन हवा में यही गंध व्याप्त थी; जो पानी पिया जाता था और जो खाना खाया जाता था, उसमें यही गंध आती थी। हर कोई खून का प्यासा प्रतीत होता था—भले ही वह खून फिरंगी लोगों का हो—ताकि उनके धर्म पर लगे दाग को धोया जा सके। यह पागलपन था, सरासर पागलपन, श्रीमान ब्रैंडन; और हे महोदय, जब पूरी कौम पागल हो जाए, तो कौन या क्या उन्हें रोक सकता है? और आने वाले वर्ष की उन भविष्यवाणियों को कौन टाल सकता है, जिनका सभी ने पिछले सौ वर्षों से गहन रुचि के साथ इंतजार किया है?" सच है, कई बुरी भविष्यवाणियाँ सुखद रूप से टल गई हैं, लेकिन यह तो अपने आप ही पूरी होने का संकेत दे रही है। सिपाही रेजिमेंटों में विद्रोह हो चुका है; कई लोगों ने जातिगत प्रदूषण का विरोध करने का संकल्प लिया है, और आगे भी लोग उनका अनुसरण करेंगे। ओ, श्री ब्रैंडन! हमसे दूर चले जाइए; अपनी माँ की खातिर खुद को बचा लीजिए; सेक्टा को मेरे पास छोड़ दीजिए, और अगर हम 1914 तक जीवित रहे, तो मैं उसे आपके लिए सुरक्षित रखूँगा; लेकिन खुद को बचा लीजिए, उसकी खातिर भी!" सिरिल बहुत आहत और परेशान था; उसे बूढ़े बैंकर के सम्मान या सच्चाई पर ज़रा भी संदेह नहीं था। "दोनों संदेह से परे हैं," उसने मन ही मन कहा; "लेकिन अगर माहौल में या लोगों के मन में कोई गड़बड़ी है, तो उसे कौन रोक सकता है?" वह चुपचाप बैठा रहा, और नरेंद्र ने फिर से उससे अपनी सुरक्षा के लिए कदम उठाने की विनती की। "मुझे नहीं लगता कि तुम मुझे अभी तक जानते हो, नरेंद्र," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं नहीं जाऊँगा, चाहे कुछ भी हो जाए। हम अंग्रेज अपनी जगह पर मर सकते हैं, लेकिन हम उसे कभी नहीं छोड़ते।" मैं आभारी हूँ कि आपने मुझ पर भरोसा जताया है, और मैं नज़र रखूँगा; लेकिन सीता को इस बारे में ज़रा भी मत बताना। क्या आंटी एला को इसके बारे में पता है?" "नहीं, मुझे नहीं लगता। मैंने जो सुना है वह पुरुषों के बीच सुना है; उन्होंने महिलाओं को नहीं बताया

था," नरेंद्र ने उत्तर दिया। "और क्या आपने यहाँ कुछ सुना है?" "कुछ नहीं, महोदय; हालाँकि मैं और वामुन भूत निगरानी रख रहे हैं। लेकिन जल्द ही हमें इस बुरी हवा का ज़हर महसूस होगा, और मेरी ओर से भेजे गए आखिरी निजी संदेश चेतावनी से भरे थे। अगर आप चाहें तो मैं उन्हें आपको दिखा दूँगा।" उस रात सिरिल अकेला था, क्योंकि उन्होंने सीता को रोक रखा था, जैसा कि वह चाहता था; इसलिए उसने मोस्टिन को मिले पत्र के जवाब में एक लंबा पत्र लिखा, और घुटने टेककर प्रार्थना की कि उस सुंदर भूमि में कोई उपद्रव और रक्तपात न हो।
संघर्ष और विजेता। 231 ee ee ee ee जिसकी सरकार में उसे पहले से कहीं अधिक दृढ़ता से यह महसूस हुआ कि उसकी भी एक भूमिका है—शायद बहुत छोटी सी, लेकिन फिर भी एक भूमिका। सप्ताह समाप्त होने से पहले ही, सिरिल को श्री मोस्टिन से पहले पत्र से भी अधिक चिंतित पत्र मिला, जिसमें उनसे नूरपुर में कम से कम एक दिन के लिए आने की विनती की गई थी, और यह भी कि वे उनके लिए और स्टेशन बेयरर्स को आधे रास्ते तक पालकी भेज दें। इससे बचा नहीं जा सकता था, और केवल अपने नौकर को भेजकर, और सीता को अपनी अनुपस्थिति में खुद को खुश रखने के लिए कहकर, वह अपने तंबू खड़े छोड़कर नूरपुर चले गए। अध्याय 30, संघर्ष और विजय। "अब मुझे पता चल गया है कि किश्नी झूठ नहीं बोलती," श्रीमती स्मिथ की आया ने श्री ब्रैंडन के नूरपुर पहुँचने के बाद सुबह-सुबह अपनी मालकिन से कहा। "श्री ब्रैंडन आ गए हैं; लेकिन सेक्टा नहीं आई—नहीं, अब और नहीं आती, आप समझ रही हैं। श्री ब्रैंडन जातिवाद से तंग आ चुके हैं—जातिवाद, जातिवाद, हमेशा जातिवाद; बहुत सारी मुसीबतें आई हैं, और आने वाली हैं—मुझे पता है—गेल्डस्मिथ की पत्नी ने मुझे बताया; उसने कहा कि अब कोई सेक्टा के साथ खाना नहीं खाता, तब सेक्टा बहुत गुस्सा हो जाती है, सबको बुरा-भला कहती है। 'तब गुरु कहते हैं, उसका सिर मुंडवा देंगे, उसे विधवा बना देंगे। तो श्री ब्रैंडन—आह! वह प्यारे भले आदमी—अपनी काली औरत को बूढ़े बैंकर के साथ छोड़कर यहाँ आ गए हैं, मिस मोस्टिन के पास।" श्रीमती स्मिथ की आया मद्रास ईसाई थीं, या खुद को ईसाई कहती थीं या मानती थीं, और अंग्रेज़ी की एक अजीब बोली बोलती थीं, जो कि भले ही असभ्य थी, उनकी मालकिन को पूरी तरह समझ में आती थी। मुझे अपने पाठकों को यह बताने की शायद ही ज़रूरत है कि उसने अपनी मालकिन को जो चतुराई भरी कहानी सुनाई थी, उसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं था। सुनार की पत्नी ने

निश्चित रूप से एक और जातिगत संघर्ष की संभावना और उसके होने पर क्या हो सकता है, इस पर विचार किया था; और एक साधारण मानसिक प्रक्रिया से, यह एक वास्तविकता में परिवर्तित हो गया था, जो उसकी मालकिन के लिए बहुत ही रोमांचक और उत्तेजक था। "और उसे यही मिलना चाहिए," श्रीमती स्मिथ चिल्लाईं, "अगर उसका सिर मुंडवा दिया जाए! ऐसी नीच औरतों को," उन्होंने मन ही मन कहा, "गधों पर बिठाकर बाज़ार में घुमाना चाहिए, क्योंकि वे सिरिल ब्रैंडन जैसे अच्छे नौजवानों को बहकाती हैं। मुझे आश्चर्य है कि श्रीमती मोस्टिन अब अपनी उस प्यारी सहेली से क्या कहेंगी जिसे उन्होंने झरने पर चूमा था—छी! कितनी गंदी औरत है, मैं उसे चिमटे से भी नहीं छूती।" और उसके बाद बेचारी छोटी सीता और श्रीमान के मामले...

सीता। ब्रैंडन के बारे में उन तीनों ने खुलकर चर्चा की, जिनके बारे में मैंने पहले ही विवरण दर्ज कर लिया है, और मिस मोस्टिन और सिरिल की तत्काल शादी को एक तथ्य के रूप में स्वीकार कर लिया गया। सिरिल को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनके आगमन से इतनी सनसनी फैली है (जैसा कि मैंने दर्ज किया है), या इसे कर्तव्य के अलावा किसी और मकसद से जोड़ा जा सकता है। सिरिल ने अपने दोस्तों की सुखद संगति में पूर्ण आनंद के साथ खुद को समर्पित कर दिया। सीता अपने लोगों के साथ खुश थी; वह फिर से मोस्टिन परिवार के साथ; इससे अधिक आनंददायक क्या हो सकता था? यह सच था कि वह ज्यादा देर तक नहीं रुक सकता था, लेकिन उसकी उपस्थिति ने स्पष्ट रूप से उन सभी को इतना शांत कर दिया, और वे उसके शांत, स्पष्ट निर्णय पर इतना भरोसा करते प्रतीत हुए, कि दिन ढलने से पहले ही उसने उन पर छाए उदासी के बादल को काफी हद तक दूर कर दिया था। लेकिन वह उदासी निराधार नहीं थी, और श्री मोस्टिन ने अपनी पत्नी से कुछ भी नहीं छिपाया था। उन्होंने बार-बार उनसे ग्रेस को पहाड़ियों पर ले जाकर सुरक्षित रहने की विनती की थी; लेकिन दोनों ने किसी भी तरह के अलगाव का पुरजोर विरोध किया था। दोनों स्वस्थ और तंदुरुस्त थे, और स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्हें किसी बदलाव की आवश्यकता नहीं थी; और यदि कोई खतरा होता, तो वे वहाँ भी उसके साथ रहने से ज़्यादा सुरक्षित नहीं होते—बल्कि उतना सुरक्षित नहीं होते—और एक-दूसरे के लिए चिंतित रहते। स्टेशन पर रहने वालों को हर तरफ से पत्र मिल रहे थे, और रोज़ाना नए पत्र भी आ रहे थे। श्री मोस्टिन को कई गुमनाम चेतावनियाँ मिली थीं, जो स्पष्ट रूप से स्थानीय स्रोतों से थीं, जिनमें उन्हें बताया गया था कि, क्योंकि वे सम्मानित और प्रतिष्ठित थे,

इसलिए उनकी, उनकी पत्नी और बहन की सुरक्षा केवल स्टेशन से तुरंत इंग्लैंड के लिए प्रस्थान करने से ही सुनिश्चित हो सकती है। इनमें से एक पत्र में लिखा था, "बंबई जाओ; तुम सुरक्षित रहोगे, क्योंकि संबत 1914 की बुरी हवा पूरब से आती है।" एक अन्य पत्र बिना नोक वाले तीर से बाँधकर बगीचे में फेंका गया था। श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस को यह एक दिन पहले ही मिला था, और श्री मोस्टिन और सिरिल ने मिलकर इसे पढ़ा। सिरिल की समझ में, शैली और लिखावट उस पत्र जैसी थी जो उसे नरेंद्र के घर में डकैती से पहले मिला था; लेकिन वह पत्र शाहगंज में उनके डेस्क पर था, और उनके सामने मौजूद पत्र से वे केवल इतना ही जान पाए कि तैयार रहने, देशी सैनिकों पर नज़र रखने, अपनी कीमती चीज़ें किले में भेजने और खतरे के ज़रा से भी संकेत पर किले में प्रवेश करने की चेतावनी दी गई थी। लेखक भी नज़र रख रहा था, और उसने लिखा था कि वह अच्छा काम करेगा, क्योंकि वह अंग्रेजों से प्रेम करता था। इन चेतावनियों से, अंग्रेजी स्टेशनों से मिली रिपोर्टों की सार्थकता की पुष्टि हुई। चाहे पत्र कहीं से भी आए हों, पंजाब के सुदूर पश्चिम से, या बंगाल के सुदूर पूर्वी छोर से, उनका अर्थ कभी नहीं बदला। युवा लोग अपने पत्रों में इसे हल्के में लेते थे; लेकिन अधिक विचारशील बड़े-बुजुर्ग गंभीर और सख्त हो गए। अब हर जगह—क्योंकि अप्रैल शुरू हो चुका था, और

संघर्ष और विजय। 233 संबत 1914 - 25 मार्च से बैंकरों के बहीखातों और पत्रों में यही लिखा था - जाति के विनाश की वही पुकार भयानक गति से फैल रही थी। यह कानपुर, मेरठ, आगरा, दिल्ली, उम्बाला पहुँच चुकी थी और पंजाब की ओर बढ़ रही थी। उम्बाला में कारतूस प्रश्न का परिणाम निष्फल रहा, हालाँकि कमांडर-इन-चीफ ने स्वयं सिपाहियों को संबोधित किया था और उनके उदार भाषण का उन्हें सटीक अनुवाद किया गया था। सत्य पर विश्वास करने वालों की संख्या हजारों में थी, जिन्होंने उस पर पूर्ण विश्वास किया; और यह विश्वास बैरकपुर में लगी आग के समान उस छावनी में लगी आग से पुष्ट होता प्रतीत हुआ। फिर चुपाती या बिना खमीर के रोटी की विचित्र, रहस्यमय घटना घटी, जो देश भर में एक जलते हुए क्रॉस की तरह, अत्यंत अवर्णनीय गति से फैल गई। उनके साथ कोई संदेश नहीं आया: वे कहाँ से आए थे और कहाँ जा रहे थे, यह कोई नहीं जानता था। उन्हें संदेशवाहकों द्वारा उत्तर-पश्चिम के गाँव-गाँव ले जाया गया, और दक्षिण में बरार तक पहुँचाया गया; उनमें से कोई भी नहीं बच पाया, सिवाय एक के जिसने दस और लोगों को भेजने से इनकार कर दिया।

वे उस समय के अनेक अपशकुनों में से एक थे, और तब से उनका कोई सुराग नहीं मिला है। वे नूरपुर से भी गुजरे, जैसे वे अन्य पड़ावों पर गए थे, और श्री मोस्टिन और सिरिल दोनों ने—जैसा कि कौन अधिकारी नहीं करता?—उनका पता लगाने या उनके बारे में जानकारी जुटाने का प्रयास किया—पर कोई लाभ नहीं हुआ। नूरपुर के बाजारों में फैली खबरों के बारे में तो मैं इस अध्याय से भी अधिक लिख सकता हूँ। भारत के आम हिंदू मूल निवासियों का बचकाना भोलापन दुनिया में बेमिसाल है। बचपन से ही अपने देवताओं के अद्भुत और उनके लिए लाभकारी चमत्कारों पर विश्वास करने के कारण, उनका मन किसी भी मानवीय अतिशयोक्ति और मनगढ़ंत कहानी को बिना किसी प्रश्न के, किसी भी कारण से, स्वीकार करने के लिए तैयार था। शायद इसीलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जब 1914 की रहस्यमय घटना की अफवाह फैली, तो जो भी अफवाह उठी, जो भी अपशगुन दिखाई दिया या कल्पना की गई, उसे ईश्वरीय रहस्योद्घाटन मानकर उस पर विश्वास किया गया; और जैसा कि सभी ने महसूस किया और माना, उनके बीच की हवा भयानक अफवाहों और भय की आशंका से भरी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो कोई शक्तिशाली ज्वालामुखी उफान मार रहा हो और बस एक गर्म हवा के झोंके से फटकर सब कुछ नष्ट कर दे। अब, कोई बीस मील चौड़ी और बीस मील लंबी सेना लेकर आ रहा था, जो धरती से हर जीवित अंग्रेज को मिटा देगा। फिर से, उड़ने वाले घोड़ों पर सवार होकर आते हुए धोखेबाजों को देखा गया था! रात में हवा में चिल्लाते हुए, "अंग्रेज़ों पर धिक्कार हो, धिक्कार हो!—हमारे भोजन में ज़हर मिलाने वालों पर!" कानपुर और गंगा नदी के किनारे स्थित अन्य स्टेशनों से पत्र प्राप्त हुए, जिनमें अनाज व्यापारियों को ज़हरीले आटे से सावधान रहने की चेतावनी दी गई थी।

234 सीता। फर्श, जिस पर गायों की हड्डियाँ अंग्रेज़ी मिलों में पीसी गई थीं और जो मेरठ से आने वाला था; और नमक और घी दोनों ही दूषित थे। हालाँकि, नूरपुर में देशी सैनिक शांत और वफादार प्रतीत हो रहे थे; उन्हें कारतूसों से कोई परेशानी नहीं हुई, और वे फिलहाल दूसरी कहानियों पर हंस सकते थे। यह स्पष्ट था कि प्रतिनिधि अभी तक उन तक नहीं पहुँचे थे, और कम से कम एक रेजिमेंट ने स्वेच्छा से आने वाले किसी भी प्रतिनिधि को सौंपने का वादा किया था। घुड़सवार सेना बिल्कुल अलग थी, और अधिकतर मुसलमान थे; सभी ने प्रचलित अफवाहें सुनीं, लेकिन वे उनकी परवाह नहीं करते दिखे, और कैप्टन हॉब्सन निश्चिंत थे। हालाँकि, जैसा कि हम जानते हैं,

ब्रिगेडियर ने खतरे के पहले संकेत पर ही अपना निर्णय ले लिया था, और श्री मोस्टिन के साथ मिलकर किले की व्यवस्था को बहुत लगन और कुशलता से पूरा किया था। पहले यह बताया गया कि एक नई जेल बनाई जानी है, और कैदियों के लिए किले की आवश्यकता है। तब, अन्य जेलें बहुत भरी हुई थीं, और इसे उन लोगों के लिए बनाया गया था जिनके लिए कोई जगह नहीं थी; और कोई संदेह नहीं हुआ। धीरे-धीरे, बड़े-बड़े अन्न भंडार गेहूँ और अन्य खाद्य पदार्थों से भर दिए गए, चारे के पर्याप्त ढेर लगा दिए गए, बारूद और गोले चुपचाप निकालकर गोला-बारूद डिपो में रख दिए गए: एक पुराने महल की सभी इमारतों और कमरों को सफेदी कर दी गई, शेड बनाए गए, और यह स्पष्ट हो गया कि नूरपुर में मौजूद सभी ईसाइयों के लिए रहने की व्यवस्था होगी - शायद थोड़ी अव्यवस्थित और साधारण, लेकिन फिर भी सुरक्षित, जबकि श्री मोस्टिन और अन्य लोगों के लिए अपने तंबू लगाने के लिए पर्याप्त जगह थी। सिरिल ने अपने लिए झील के किनारे स्थित बुर्ज में एक छोटा अष्टकोणीय कमरा चुना। यह गढ़ के बाहरी हिस्से या फाउसेब्रे से ठीक से जुड़ा हुआ था; लेकिन खिड़कियों से बने मेहराबों से एक सुखद दृश्य दिखाई देता था, और यह उसके उद्देश्य के लिए पर्याप्त था। उसे यह स्पष्ट था कि सीता को वर्तमान संकट के समाप्त होने तक शाहगंज में अपने दादा के साथ रहना होगा; और उसे उसकी सुरक्षा को लेकर कोई आशंका नहीं थी। क्या उनमें से किसी ने भी उस समय, जब तूफान मंडरा रहा था, यह महसूस किया था कि जब वह टूटेगा तो क्या होगा, या क्या वह टूटेगा भी? शायद भारत में कुछ ही विचारशील लोगों ने इसे पूरी तरह से महसूस किया होगा, और वे चिंतित और परेशान हो गए होंगे, हालांकि किसी ने भी परिणाम से विचलित नहीं हुआ। निश्चित रूप से कभी-कभार घबराहट होती थी; लेकिन अंग्रेजों का पलायन नहीं हुआ, और पुरुषों ने अपनी पत्नियों और बच्चों को, यदि उनके पास थे, तो उनकी रक्षा करने और उनके साथ जो भी विपत्ति आए, उसे साझा करने के लिए अपने पास रखा। ऐसे समय में ऐसे लोग सामान्य से अधिक भविष्य की ओर देखते हैं, और दुनिया के साथ अपनी अंतिम व्यवस्था करते हैं;

संघर्ष और विजय। 233 और इस मामले में श्री मोस्टिन और सिरिल ब्रैंडन में कोई कमी नहीं थी। उन्होंने अपने प्रियजनों के हितों को भाईचारे के विश्वास के साथ एक-दूसरे को सौंप दिया था, ताकि यदि किसी को बुला लिया जाए तो वे एक-दूसरे की रक्षा कर सकें; और मुझे उनका विस्तृत वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। सिरिल ने

कलकत्ता में पहले ही सीता के पक्ष में एक बड़ी राशि का अपना जीवन बीमा करवा लिया था, और उनकी अपनी संपत्ति के साथ, यह पूरी राशि उन्हें सम्मानजनक रूप से बनाए रखने के लिए पर्याप्त थी। हालाँकि, श्री मोस्टिन को उनकी संपत्ति के बारे में संदेह था, और उन्होंने सिरिल को उस मुकदमे के बारे में बताया जो हाल ही में उनके पहले पति के चचेरे भाई राम जस ने उनके खिलाफ दायर किया था। उन्होंने कहा, "यह एक कठिन मामला है, और बड़ी चालाकी से तैयार किया गया है; लेकिन इसकी सुनवाई में लंबा समय लग सकता है, और ये परेशानियाँ तब तक समाप्त हो सकती हैं। यह बहुत अजीब है कि आपने इसके बारे में कुछ नहीं सुना।" "कुछ नहीं, फिलिप; जब मैं गया था तब शाहगंज को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था।" लेकिन, वास्तव में, श्विता के मामले में इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे पता है कि उसके दादा ने उसकी ओर से और उसके नाम पर सरकारी कागजात में बड़ा निवेश किया है। उन्होंने यह बनारस में मेरी जानकारी के बिना किया था। “वह तो बड़े ही बड़े आदमी हैं,” मोस्टिन ने कहा; “कम से कम जब हमें दोस्तों की ज़रूरत होगी, तो वे हमारे प्रति वफादार रहेंगे। और आपके दो सामंतों के बारे में क्या?” “मुझे वे पसंद नहीं हैं,” सिरिल ने उत्तर दिया। “नवाब मुझे नागरिक रिपोर्ट लिखते हैं और कहते हैं कि खतरनाक अफवाहों के कारण और अंग्रेजों के मित्र के रूप में जाने जाने के कारण उन्हें अपनी सेना बढ़ानी पड़ी है; लेकिन वे तो बस देहाती लोग हैं, जिनसे डरने की ज़रूरत नहीं है। जहाँ तक राजा हुरपाल सिंह की बात है, मैंने सुना है कि वे बहुत युद्धप्रिय हो गए हैं और अपने सभी पैतृक क्षेत्रों को वापस लेने की बात कर रहे हैं। उनके आसपास बहुत से बुरे लोग जमा हो गए हैं, और मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर हमारा मित्र अज़राएल पांडे भी उनमें से एक हो।” वह तो इन दिनों का सबसे बड़ा दुष्ट आत्मा है। लेकिन फिलहाल मैं इन दोनों पर ध्यान नहीं दे सकता; हमारे पास पहले से ही इतना काम है कि हम अपने बारे में सोच भी नहीं सकते। और सिरिल सही था, क्योंकि अब मकरूत में सातवीं घुड़सवार सेना के विद्रोह की खबर आई, जिन्होंने कारतूस लेने से इनकार कर दिया था, और बड़ी संख्या में सैनिकों को कैद कर लिया गया था; लेकिन ब्रिगेडियर को वहां पर्याप्त अंग्रेज सैनिकों की मौजूदगी से तसल्ली मिली, जैसा कि उन्होंने कहा, "हर सिपाही को खा जाने के लिए," उस समय उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि संकट कितना गंभीर होगा। दिल्ली में शाही परिवार और बिठूर के नाना साहब की योजनाओं और गतिविधियों के प्रति भी जानबूझकर अनदेखी की जा

रही थी, जो पहले कभी अपनी जागीर से बाहर नहीं निकले थे, लेकिन अब कानपुर और दिल्ली के बीच यात्रा कर रहे थे और लखनऊ भी जा रहे थे; और अन्य लोग, जैसे नवाब और राजा हुरपाल सिंह, खुलेआम अपनी सेना बढ़ा रहे थे। इसलिए, बाहरी तौर पर,

256 सीता। अप्रैल का महीना था, जब पूरे देश में गहरा अंधकार छा गया था। अंग्रेजों के शुभचिंतक—और उनकी संख्या बहुत थी—घबरा गए थे, क्योंकि दूर से आती गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी थी और आने वाले तूफान का भय महसूस होने लगा था। किसी भी वर्ग में, चाहे अंग्रेज हों या स्थानीय निवासी, कहीं भी शांति या भय का माहौल था; और 1914 के तूफान के संकेतों पर अब कोई संदेह नहीं रह गया था। हालांकि, बुरी अफवाहों और संभावित संकट से निपटने की तैयारियों के बावजूद, दोस्तों के साथ समय सुखद बीता। मुझे पुरानी घटनाओं को दोहराने या घटनाओं का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन चूंकि सिरिल सोने के अलावा श्री मोस्टिन के घर में ही रह रहा था, इसलिए वह स्वाभाविक रूप से ग्रेस के साथ पहले से कहीं अधिक समय बिताने लगा था। सीता, जिसका तब कोई जिक्र नहीं होता था, अब उनके बीच घर-घर में जानी-पहचानी हो गई थी; और उसके अनोखे हिंदी पत्र, जिनमें से सिरिल कुछ अंश पढ़ता था, और बच्चों की तरह अंग्रेजी बोलने के उसके छोटे-छोटे प्रयास, उन्हें आनंदित और रुचिकर लगते थे। उसने सिरिल से कहा कि वह यहीं रुके और अपने दोस्तों के साथ खुश रहे, और उसके बारे में न सोचे; वे उसका अच्छे से ख्याल रख रहे थे। शुरुआत में तो ऐसा ही था; लेकिन धीरे-धीरे उसके पत्रों पर संदेह का साया छा गया। उसने भी बुरी अफवाहों के बारे में सुना था, और उसकी अपनी भी दो परेशानियाँ थीं, जिनसे वह बहुत दुखी थी, जिनका जिक्र मैं बारी-बारी से करूँगा। कैप्टन हॉब्सन अक्सर आते रहते थे, शाम को या अपनी परेड के बाद सुबह के नाश्ते पर, जब पत्र खोले जाते और मौजूदा विषयों पर चर्चा होती। सिरिल को यह स्पष्ट था कि वह ग्रेस मोस्टिन की कितनी प्रशंसा करता था; उसकी निगाहें उस पर टिकी रहती थीं, और उसका व्यवहार उसके प्रति कितना कोमल और फिर भी कितना मर्दाना था; लेकिन उसने यह भी देखा कि ग्रेस कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी। “शायद समय आने पर वह उसे जीत ले,” उसने सोचा, “जब यह परेशानी दूर हो जाएगी; और उसे लगता है कि अभी उसके प्रस्ताव का समय नहीं है; लेकिन अगर वह उसे स्वीकार कर लेगी तो वह उसके साथ सुरक्षित और खुश रहेगी।” इसलिए उसने खुद से तर्क किया, या

तर्क करने की कोशिश की; लेकिन सच तो यह था कि यह समय सेक्टा के लिए क्रिसमस और नए साल के शुरुआती समय से भी ज़्यादा खतरनाक था; और, मानसिक संकल्पों के बावजूद, दोनों एक-दूसरे के बारे में परिस्थितियों के हिसाब से ज़रूरत से ज़्यादा सोच रहे थे। वे अक्सर घर में अकेले होते थे, क्योंकि श्रीमती मोस्टिन हमेशा उन पर नज़र नहीं रख सकती थीं, और न ही वह उन पर नज़र रखना चाहती थीं, क्योंकि उन्होंने अपनी पहली उम्मीदें छोड़ दी थीं; और श्री मोस्टिन का काम हमेशा की तरह चलता रहा। जियो मूख फॉल का नज़ारा एक सुंदर चित्र में तब्दील हो रहा था, और ग्रेस और सिरिल बारी-बारी से सुखद बातचीत करते हुए उस पर काम कर रहे थे, उन विषयों पर चर्चा कर रहे थे जो दोनों को सबसे ज़्यादा पसंद थे; और इस तरह, झील पर कभी-कभार अभ्यास और नाव की सवारी के साथ, जो घोड़ागाड़ी की सवारी से कहीं ज़्यादा सुखद थी, दिन बीतते गए, और बाहर की भयानक वास्तविकताओं पर फिलहाल ध्यान नहीं दिया गया।

संघर्ष और विजय। 237 एक दिन, डाकिया इंग्लैंड से डाक लेकर आई, और हर जगह से हमेशा की तरह चिट्ठियाँ भी आईं; और छोटा हज़री, या हल्का नाश्ता, पर इकट्ठा हुए लोगों के लिए यह एक रिवाज बन गया था कि वे हर जगह से आई खबरों के कुछ अंश पढ़ें, जो वास्तव में अब एक-दूसरे से बहुत कम भिन्न थीं। श्री मोस्टिन ने देखा कि जब सिरिल ने अपनी एक अंग्रेज़ी चिट्ठी देखी, तो उसका चेहरा चिंतित और परेशान हो गया; और जब उसने एक और चिट्ठी पढ़ी जिस पर लाल मोम की एक बड़ी आधिकारिक मुहर लगी थी, तो वह और भी परेशान दिखाई दिया; लेकिन उसने उन्हें अपनी जेब में रख लिया, और कुछ देर के लिए आम बातचीत में शामिल हो गया, और फिर, यह कहकर कि उसे कुछ पत्र लिखने हैं, उन्हें छोड़कर उठ गया। "आप नाश्ते पर वापस आ जाएँगे, श्री ब्रैंडन," श्रीमती मोस्टिन ने कहा; "देर मत करना;" और उसने कहा कि वह आएगा, और बगीचे से होते हुए अपने घर चला गया। लेकिन समय बीतता गया, और वह वापस नहीं लौटा; और जब नाश्ता खत्म हो गया, तो श्री मोस्टिन ने कहा, "मुझे यकीन है कि उन पत्रों में कुछ गड़बड़ है, और मुझे जाकर सिरिल को देखना चाहिए, और अगर उसे नाश्ता चाहिए तो वह भेज देगा।" वास्तव में, उस दिन सिरिल ब्रैंडन के साथ बहुत कुछ गड़बड़ थी, क्योंकि उसके दोस्त ने उसे अपनी लेखन-मेज पर बैठे हुए पाया, उसका सिर उसकी फैली हुई बाहों के बीच था, और उसके सामने दो पत्र खुले हुए थे। श्री मोस्टिन चुपचाप अंदर आए थे, बिना बताए, और ब्रैंडन

ने उनके आने का तब तक पता नहीं लगाया जब तक कि उसके दोस्त ने उसके कंधे पर हाथ नहीं रखा और प्यार से कहा, "अरे, क्या हुआ है, सिरिल? इंग्लैंड से या कहीं से भी कोई बुरी खबर तो नहीं है, मुझे उम्मीद है? क्या बात आपको परेशान कर रही है, मेरे प्यारे दोस्त? क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ? किसी और को परेशानी में शामिल करने से बेहतर कोई उपाय नहीं है जो परेशानी को दूर भगाए।" सिरिल ने अपना सिर थोड़ा ऊपर उठाते हुए उसकी ओर देखा, और जोर से कराह उठा।
“फिलिप, मेरा दिल बुरी तरह टूट गया है,” उन्होंने कहा, “जो कुछ भी हुआ उससे। मैंने सोचा भी नहीं था कि हिल्टन मेरे प्रति इतना ठंडा और निर्दयी होगा; और ओह! मैं उससे कितना प्यार करता हूँ। और दूसरा तो उससे भी बुरा है; लेकिन हिल्टन ने जो लिखा है उसे पढ़ो—यह कितना संक्षिप्त और कितना असंवेदनशील है।” श्री मोस्टिन ने कोई जवाब नहीं दिया; उनके मन में यह ख्याल कौंधा कि अगर उनके भाई ने उन्हें सीता के बारे में बताया होता तो लॉर्ड हिल्टन क्या लिखते; और सिरिल से पत्र लेकर उन्होंने उसे दो बार पढ़ा। सामान्य घरेलू मामलों और अपने स्वास्थ्य के बारे में कुछ भूमिका लिखने के बाद, लॉर्ड हिल्टन ने इस प्रकार लिखा था:— “सिरिल, तुमने शादी के बारे में जो कुछ भी बताया है, उससे मैं बहुत हैरान और दुखी हूँ। मैंने इसे अपने विचारों से दूर रखने की कोशिश की है, और कई पत्रों को बिना इस विषय का जिक्र किए जाने दिया है, इसलिए शायद तुमने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि मुझे इसकी परवाह नहीं है, या मैं इसे स्वीकार नहीं करता।”
238 सीता। लेकिन मुझे परवाह है, और मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकती; और मैं आपसे विनती करती हूँ कि इसे पूरी तरह से समझें। जिस व्यक्ति के साथ आप शादी के दिखावे के तहत रह रहे हैं, वह नूरमहल जितनी ही सुंदर और गुणी हो सकती है; लेकिन मुझे उसमें केवल एक धूर्त भारतीय मूल निवासी दिखाई देती है, जिसने आपको बहला-फुसलाकर अपने ऊपर इतना अधिकार जमा लिया है कि आप पीछे नहीं हट सकते; और मैं दिल से चाहती हूँ कि आपने उसे कभी न देखा होता। वह यहाँ आपकी पत्नी के रूप में अपना स्थान कभी नहीं ले सकती, और सीता जैसी व्यक्ति को हमारे पुराने परिवार के सदस्य के रूप में स्वीकार करने का विचार, जैसा कि आप स्वयं चिंतन करने पर समझेंगे, पूरी तरह से बेतुका और असंभव है। हे मेरे प्यारे भाई सिरिल, मैं क्रोध में नहीं, बल्कि दुख में लिख रही हूँ; लेकिन आपके आँसू खुलेंगे, और मैं ही एकमात्र व्यक्ति हूँ जो ऐसा कर सकती हूँ। आपने यह बात हमारी माँ और

ऑगस्टा को बताने का जिम्मा मुझ पर छोड़ दिया था, और इसके लिए मैं आभारी हूँ। यदि आपने उनमें से किसी को भी लिखा होता, तो यह विषय हमारी प्यारी माँ का हृदय तोड़ देता। अगर मैं उनमें से किसी को भी बता देता, तो मैं तुम्हारी मूर्खता में भागीदार बन जाता, इसलिए मैंने तुम्हारा पत्र जला दिया है, और इस विषय पर मुझसे एक शब्द भी नहीं निकलेगा। मैं बस इतना ही कहूँगा, और वह यह है कि अगर किसी भी रकम से लड़की या उसके परिवार को संतुष्टि मिल जाए, तो तुम मुझसे संपर्क कर सकते हो। रकम चाहे जो भी हो, तुम्हारी आज़ादी मेरे जीवन की सबसे सस्ती और सबसे मूल्यवान खरीद होगी।" श्री मोस्टिन ने आह भरकर पत्र नीचे रख दिया, और सिरिल को नहीं पता था कि उसका दोस्त उस समय लेखक के प्रति कितनी सहानुभूति रखता था, या शायद उसने कभी यह दिखाया ही नहीं था। "यह दूसरा पत्र है," सिरिल ने उसे एक पत्र देते हुए कहा, जिस पर लिखा था "अर्ध-सरकारी। निजी और गोपनीय।" मोस्टिन ने हस्ताक्षर देखे, और पाया कि यह उस अधिकारी के हस्ताक्षर थे जिनकी सिफारिश पर सिरिल को डिप्टी कमिश्नर के पद पर नियुक्त किया गया था। यह बहुत संक्षिप्त और सटीक पत्र था, और इस प्रकार था:— "15 अप्रैल, 1857। प्रिय श्री ब्रैनन, "यह जानकर मुझे अत्यंत स्तब्ध और दुखी किया है कि आपने एक स्थानीय संबंध स्थापित किया है, जो आपके पूरे जिले और नूरपुर स्टेशन के लिए कलंक बन गया है। स्थानीय लोगों के मन की वर्तमान उत्तेजित अवस्था में, हम सभी से असाधारण सावधानी की अपेक्षा की जाती है; लेकिन एक सम्मानित बैंकर की पोती को जानबूझकर बहकाने के द्वारा आपने न केवल हमारे नैतिक नियमों का उल्लंघन किया है, बल्कि उन स्थानीय लोगों के नैतिक नियमों का भी उल्लंघन किया है जिन्हें आपकी देखरेख में सौंपा गया था। "इसलिए, मैं, जिसने आपको हर तरह से योग्य मानते हुए आपकी स्थायी नियुक्ति की सिफारिश की थी और अपनी सफलता पर प्रसन्न हुआ था, इसे अपना कर्तव्य मानता हूँ।
संघर्ष और विजय। 239 राज्य सार्वजनिक आधार पर आपको सभी सक्रिय कर्तव्यों से हटाने की सिफारिश करता है, जब तक कि आप मुझे स्पष्ट रूप से आश्वस्त न कर दें कि मेरी नाराजगी का अब कोई कारण नहीं है। "यह किसी को भी परेशान करने के लिए काफी है, फिलिप, है ना? - वह भी एक ही दिन में। भगवान मेरी मदद करें, मैं क्या करूँ?" सिरिल ने कहा, जैसे ही मोस्टिन ने पत्र दूसरे पर रख दिया। "मैं क्या करूँ?" फिलिप मोस्टिन की आँखों से आँसू ऐसे बह रहे थे जैसे किसी स्त्री की आँखों

से, जब उसने सिरिल को गंभीरता से देखा, और उसकी आँखों में एक ऐसा प्रेम और करुणा थी जिसे गलत नहीं समझा जा सकता था; और वह तुरंत बोल भी नहीं सका। अंत में उसने कहा - "यह वास्तव में आपके दिल को चोट पहुँचाएगा, प्रिय सिरिल, और आप मुझे कठोर भी समझेंगे; लेकिन मैं दूसरा भाई हूँ, और मेरा दिल आपके भाई के साथ है। जहाँ तक दूसरे की बात है, यह केवल व्यावहारिक गुस्ताखी है; लेकिन अगर कोई आदमी चाहे तो उसमें शरारत करने की शक्ति होती है, और सबसे मंदबुद्धि व्यक्ति को भी यह समझना चाहिए कि अगर वह चाहे तो उसमें ऐसा करने की इच्छा होती है। "क्यों अगर, फिलिप?" सिरिल चिल्लाया, अपने पैरों पर खड़ा होते हुए और उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं। "तुम—तुम ही हो जो 'अगर' कह रहे हो! क्या तुम्हें पता है तुम्हारा मतलब क्या है?" "मुझे अच्छी तरह पता है, सिरिल, लेकिन मैं एक शब्द भी नहीं कहूँगा—नहीं, एक शब्द भी नहीं—अगर तुम मुझे घूरते रहे। मैं तुम्हें ये पत्र तब तक के लिए छोड़ दूँगा जब तक तुम शांत नहीं हो जाते, और अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत हो तो तुम मुझे फिर से बुला सकते हो।"— "मैं मूर्ख हूँ, फिलिप," सिरिल ने जवाब दिया, बैठते हुए और अपनी आँखों पर हाथ फेरते हुए। "मुझे लगा था कि तुम कहोगे कि मुझे उस बेचारी लड़की को छोड़ देना चाहिए; लेकिन ऐसा मत कहो—मेरे लिए अपने प्यार की कसम, ऐसा मत कहो!" “प्रिय सिरिल, अगर मुझमें वह प्रेम न होता, तो मैं चुप रहता,” उसने उदास स्वर में उत्तर दिया, “और तुम्हें बर्बादी की ओर जाते देखता—नहीं, बर्बादी नहीं, शायद, बल्कि बदनामी की ओर; और मैं चुप नहीं रह सकता! तुम अपने भाई को संतुष्ट कर सकते हो, तुम्हारी माँ को कोई संदेह नहीं है; लेकिन हम सब जानते हैं कि वह निर्दयी व्यक्ति कैसा है; उसका दिमाग कितना संकीर्ण है, उसके पूर्वाग्रह कितने गहरे हैं, और उसके पास कितनी शक्ति है। वह इस रिश्ते से नाराज़ है, और कभी अपना विचार नहीं बदलेगा; और शायद हमारे आस-पास काफी लोग हैं जो उसका समर्थन कर सकते हैं। क्या तुम नरेंद्र को बुलवाकर मुझे उससे बात नहीं करवा सकते? ‘मेरे विचार से, सीता तुमसे इतना सच्चा, इतना समर्पित प्रेम करती है कि वह तुम्हारे पास बुराई या मुसीबत आने से बेहतर मौत को गले लगा लेगी, और हम सब उस पर विश्वास करते हैं। मैंने केवल सच कहा है, सिरिल, और इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका कोई तर्क नहीं है, और इसका उत्तर हाँ या ना ही होना चाहिए, बस!” “फिलिप, यह अभी तुम्हें उत्तर नहीं दे सकता,” सिरिल ने उदास स्वर में कहा। मुझे अपने दिल में अपनी

लड़ाई खुद लड़ने दो। अगर मैं ऐसा नहीं करता/करती तो...
- 240 सीता। रात के खाने पर आओ, तुम्हें कारण समझ आ जाएगा; लेकिन अभी मुझे अकेले रहना है। श्रीमती मोस्टिन और अपनी बहन को इस बारे में मत बताना, इससे उन्हें बेवजह ही दुख होगा। "नहीं," मोस्टिन ने कहा और अपने काम पर चले गए। सिरिल ब्रैंडन, हालांकि पहले भी कई बार प्रलोभन में पड़ चुके थे, लेकिन उन्होंने कभी भी इतनी कठिन परीक्षा का सामना नहीं किया था। "या तो हाँ या ना," फिलिप ने कहा था, "और कुछ नहीं।" एक ओर, अपनी माँ, भाई और बहन के प्रति प्रेम—जैसा कि हिल्टन ने लिखा था, परिवार की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई थी। उनकी अपनी उच्च आधिकारिक स्थिति भी खतरे में थी; और पद से हटाए जाने पर, उन्हें दो-तीन साल के लिए मामूली वेतन पर देहाती भेज दिया जा सकता था, और उन्हें फिर से सीढ़ी चढ़नी पड़ सकती थी। हालाँकि, ये विचार उनके मन से निकल गए; वे अपनी माँ और बहन के प्रेम पर भरोसा कर सकते थे; और हिल्टन, जिन्होंने इंग्लैंड में उनकी शादी की उम्मीद की थी, शायद कुछ समय के लिए परेशान और निराश हुए होंगे, लेकिन वे ठीक हो जाएँगे। आधिकारिक खतरे के लिए वे बहुत कम चिंतित हो गए, क्योंकि वे अपने कमरे में तेजी से इधर-उधर टहल रहे थे। उन्होंने सोचा, "मैं अपने से कहीं अधिक उच्च पदों पर बैठे देशी लोगों के दर्जनों उदाहरण दे सकता हूँ, और कुछ ही लोगों ने मेरी तरह शादी का दावा करने का साहस किया है।" लेकिन एक प्रलोभन उनका पीछा नहीं छोड़ रहा था, और वह था ग्रेस मोस्टिन के लिए स्वतंत्रता का विचार। आह! वह भावना जो पहले उसके हृदय में विद्यमान थी, और अब भी वहीं व्यस्त थी—बहुत व्यस्त—कुछ समय के लिए बेचारी नन्ही सीता और उसके प्रेम और संरक्षण के दावों को दरकिनार करते हुए; क्योंकि उसके मन में प्रेम की हजारों मधुर, आनंदमय भावनाएँ उमड़ रही थीं, जिसे उसकी माँ और बहन प्रसन्नता से स्वीकार करतीं और उसके साथ साझा करतीं; जिसे वह इंग्लैंड में और यहाँ अपने देशवासियों के बीच गर्व से, बिना किसी झिझक के प्रदर्शित कर सकता था; एक ऐसा प्रेम जिसके बारे में उसे कोई संदेह नहीं था—बिल्कुल भी नहीं—कि अगर वह माँगेगा तो वह उसे मिल जाएगा। अगर वह अब बैठकर सीता को एक पंक्ति भी लिख दे—"मैं अपनी इज्जत नहीं बचा सकता, मेरे लोग तुम्हारा विरोध करते हैं"—तो वह जानता था कि इतना ही काफी होगा उन्हें हमेशा के लिए अलग करने के लिए। मोस्टिन या नरेंद्र की कोई जरूरत नहीं। वह इसे सह लेगी, जैसे कई राजपूत महिलाओं ने अपने पति के घातक

वार को सहा था और उसकी बाहों में दम तोड़ दिया था, यह जानते हुए कि उसकी इज्जत सुरक्षित है—और एक पत्नी की तरह ही मरेगी। क्या वह उसे इस तरह मार सकता था? जैसे ही वह विनती भरा चेहरा, जिसे उसने अक्सर प्यार से छुआ था, उसकी आंखों के सामने आया, वह कांप उठा—यह याद करके कांप उठा कि उसने ईश्वर के सामने खुद से कसम खाई थी कि वह उसके प्रति सच्चा रहेगा, उससे प्यार करेगा और उसकी देखभाल करेगा; यह भी कि उसके लोगों ने निस्वार्थ भाव से उसे उसे सौंपकर कितना बड़ा जोखिम उठाया था; और क्या अब उसे अपने विश्वास को बनाए रखने में हिचकिचाना चाहिए? उस दिन उसने समय का ध्यान नहीं रखा, और परछाइयां लंबी होती गईं। उसका नौकर उसे खाने के लिए कहने आया था, लेकिन डर के मारे

संघर्ष और विजय। 241 जो कुछ उसने देखा, उससे वह घबरा गया और अस्वीकृति के अधीर भाव से तुरंत पीछे हट गया; लेकिन उसका दृढ़ मन तनाव सहन नहीं कर सका, और सिरिल अपने बिस्तर के पास गिर पड़ा और प्रार्थना की, जैसा कि उसने पहले भी किया था, "हे प्रभु, मैं डूब रहा हूँ! मुझे प्रलोभन में न डालो!" और कुछ देर बाद उसके हृदय में धीरे से यह अनुग्रहकारी आश्वासन समा गया, "यह मैं ही हूँ, डरो मत।" कई लोग शायद सिरिल ब्रैंडन को दोषी ठहराएँ कि उसने संसार के मार्ग को बदल दिया; लेकिन मनुष्य का विश्वास, यद्यपि वह जुनून के तूफान के सामने झुक गया था, टूटा नहीं, और जब वह तूफान गुजर गया, तो उसका मन शांत और स्थिर हो गया। उस शाम वह न्यायाधीश के यहाँ भोजन करने गया, और शायद सामान्य से अधिक गंभीर और विचारशील था; और जब उसने उन्हें शुभ रात्रि कहा, तो फिलिप मोस्टिन उसके पीछे बगीचे में आया और बोला, "सिरिल, मैं आज रात तुम्हारा चेहरा पढ़ रहा था, और मुझे आज सुबह जो कहा उस पर शर्म आ रही है। क्या तुम मुझे क्षमा करोगे?" "मुझे तुम्हें कुछ भी क्षमा करने की आवश्यकता नहीं है, प्रिय फिलिप," उसने अपने मित्र के कंधे पर हाथ रखते हुए और उसकी आँखों में देखते हुए उत्तर दिया। "बस मेरे साथ इस बात पर प्रसन्न हो जाओ कि प्रलोभन में पड़ने के बावजूद, मैंने अपनी छोटी बेटी से किए गए वादे को नहीं तोड़ा, और अब कभी नहीं तोडूँगा।" "मैं आभारी हूँ," फिलिप ने कहा। "यह सुनकर। मेरे विचार पूरे दिन तुम्हारे साथ रहे। कई लोग शायद तुमसे असहमत हों, और तुम्हें दोष भी दें; लेकिन मैं तुम्हारा पहले से कहीं अधिक सम्मान करता हूँ, सिरिल। शुभ रात्रि!" "शुभ रात्रि, फिलिप।" और मुझे

लगता है कि सिरिल की नींद मीठी और स्वप्नरहित रही। सुबह, जब वह शांत और तरोताज़ा होकर उठा, तो उसने अपने वरिष्ठ अधिकारी को इस प्रकार लिखा:— “मेरे प्रिय महोदय, मुझे आज का आपका अर्ध-सरकारी पत्र प्राप्त करने का सम्मान मिला है। मुझे नहीं पता कि आपको यह जानकारी कहाँ से मिली, और मुझे केवल इस बात का खेद है कि यह इतनी घोर और घृणित गलतबयानी थी।” जिस महिला का आप जिक्र कर रहे हैं, वह मेरी पत्नी हैं: उन्होंने हिंदू धर्म की रीति-रिवाजों के अनुसार मुझसे विवाह किया है, जो अटूट हैं और जिनका मैं सम्मान करता हूं। अपने आधिकारिक कर्तव्यों के संबंध में, मैंने अब तक आपके भरोसे के तहत, उन्हें पूरी लगन और योग्यता से निभाने का प्रयास किया है; और मुझे आशा है कि मैं उनमें से किसी में भी या मेरे अधीन सौंपी गई जनता के कल्याण के प्रति अपनी चिंता में कोई कमी नहीं करूंगा। आपका वफादार सेवक, साइरिल ब्रैनपॉन।

242 एस.एल.ए. अध्याय XXAI. सुनार के घर पर उदासी छा जाती है। जब तक श्री ब्रैंडन शाहगंज में रहे, बैंकर के परिवार में सब कुछ सुचारू और सुखद रूप से चल रहा था। सीता के लिए यह निश्चित रूप से एक सदमा और परीक्षा थी, जब चाची एला ने उसे बहुत आँसू बहाते हुए बताया कि वह अब उनके साथ खाना नहीं खा सकती, क्योंकि वह अब "भुगुट" हो गई है और उसने अपना जीवन धार्मिक रूप से व्यतीत कर लिया है; और न ही वह अपने दादाजी के लिए खाना बना सकती है जैसा कि वह पहले किया करती थी; क्योंकि, जब से उन्होंने “मूद्र” संस्कार ग्रहण किया था, वे “भुगुट” भी हो गए थे। जहाँ तक महिलाओं के साथ भोजन करने की बात है, यह पहले असंभव था; क्योंकि, सभी हिंदुओं की तरह, उनका भोजन रसोई में उनसे अलग परोसा जाता था, जो परिवार का खानपान कक्ष भी था। सेक्टा को यह भी अच्छा नहीं लगता था कि कुछ पीने के बर्तन और थालियाँ केवल उनके उपयोग के लिए अलग रखी जाती थीं; और जब कभी गलती से, या भूलवश, वह किसी दूसरे बर्तन को छू लेती थीं, तो आंटी एला उसे पवित्र अग्नि की लौ से गुजारती थीं और उस पर प्रायश्चित की प्रार्थना करती थीं। हालाँकि, यह भी संस्कारों और पवित्र तीर्थयात्रा के प्रभाव के कारण था, और इसे एक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया था; और फिर भी, समय सुखद रूप से बीत गया। आदरणीय पुजारी आए, और सेक्टा को संस्कृत पाठ पढ़ने के लिए जोर दिया, और कठिन पाठों और शतरंज के जोरदार खेलों पर उनकी हमेशा की तरह दोस्ताना नोकझोंक हुई; और शाम को, जब दिन का काम

समाप्त हो जाता था इसलिए, वह अपने दादाजी के बड़े तकिये के पास अपने पुराने कोने में बैठ जाती और पुजारी, मस्जिद के मूला या कस्बे के उन बड़े अधिकारियों के साथ उनकी शतरंज की लड़ाइयाँ देखती, जो अक्सर इलाके और क्षेत्र की खबरें और गपशप सुनने के लिए आते रहते थे। एक दिन सीता ने अपनी सारी पुरानी गुड़िया एक संदूक से निकालीं, जहाँ चाची एला ने उन्हें बड़ी सावधानी से रखा था, और उनमें से कुछ को नए कपड़े पहनाए। आह! कई भारतीय महिलाओं में गुड़ियों के प्रति यह अजीब सा प्रेम अक्सर उनके चरित्र का हिस्सा होता है, जो बुढ़ापे में भी उनका साथ नहीं छोड़ता। मुझे याद है कि एक बार मैंने एक बूढ़ी हिंदू राजकुमारी को देखा था, जिनकी उम्र पुरुषों की उम्र से कहीं अधिक थी, वे गुड़ियों के साथ खेल रही थीं; और जैसे-जैसे उन्होंने मुझे एक-एक करके गुड़ियों से मिलवाया, उनके नाम पर मिठाइयाँ खिलाईं, उनकी कहानियाँ सुनाईं, और बताया कि उनके अलावा कौन-कौन उनके साथ खेला था, लेकिन एक-एक करके उन्हें उनसे पहले बुला लिया गया था। शायद यह उनका दूसरा बचपन था, लेकिन मुझे नहीं लगता; उनकी सभी इंद्रियाँ तेज और स्वस्थ थीं, और अगर उनकी गुड़ियों ने उनकी याददाश्त छीन ली हो। एक खुशहाल लड़की के शुरुआती दिनों की यादें, भला उसकी खुशी पर कौन शक कर सकता है?
सुनार के घर पर मंडराता बादल। 243 उनमें? और सीता अभी बच्ची ही थी। जैसा कि हम जानते हैं, उसकी जवानी ढल चुकी थी और वह शांत हो गई थी, बेचारी! उसके सारे खिलौने वहीं थे, और उन्हें देखकर सीता की आँखों से बहुत आँसू बहते थे; लेकिन गुड़ियाएँ नहीं बदली थीं—वे पहले की तरह ही चमकीली, गंभीर और, मैं कहूँ तो, बदसूरत थीं, हालाँकि उनके कपड़े बहुत ही कीमती थे। सीता ने सोचा, यह अजीब बात है कि उसके कुछ पुराने साथी, हालाँकि सभी उससे मिलने आए थे और उसे अजीब तरह से घूरते थे, फिर भी उन्होंने उसे शहर के बाहर वाले बगीचे में गुड़ियों की दावत के लिए नहीं बुलाया था। “शायद,” उसने मन ही मन कहा, “वे मुझसे इसलिए शर्माते हैं क्योंकि मैं कमिश्नर की पत्नी हूँ, और पूछने की हिम्मत नहीं करते; लेकिन मैं उन्हें दिखा दूँगी कि मैं ज़रा भी घमंडी या अभिमानी नहीं हूँ, हालाँकि मैं दिल से गर्वित हूँ।” इस विषय पर आंटी एला को यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई। पहले तो उन्हें संदेह था कि क्या एक "भुगट" होने के नाते सीता का ऐसे मूर्खतापूर्ण मनोरंजन में शामिल होना उचित है या नहीं। लेकिन चूंकि आंटी एला गुड़ियों के प्रति पहले की तरह ही उत्साहित थीं और उन्होंने सीता को पुरानी गुड़ियों को नए कपड़े पहनाने में बड़ी

संतुष्टि से मदद की थी, इसलिए सीता ने भी इस विचार का दिल से समर्थन किया। खर्च की बात करें तो यह मामूली था और उनके भाई को इसकी कोई कमी महसूस नहीं होती। तो तैयारियां शुरू हो गईं; मैं यह नहीं बताऊंगी कि कितनी और किस तरह की मिठाइयां बनाई गईं, आंटी एला की मशहूर सेवई कितनी मात्रा में बनाई गई, सबसे बढ़िया चावल के कितने बोरे चुने गए, या माली को बगीचे में सभी पके फल और सब्जियां कैसे बचाकर रखने को कहा गया। जब घर के अंदर सब कुछ तैयार हो गया, तो सीता बगीचे को साफ करवाने और बड़े आम के पेड़ों के नीचे से सूखी घास और खरपतवार हटवाने के लिए बाहर गईं। फिर झूले लगाए गए, खाना पकाने की जगहों के लिए स्क्रीन लगाई गईं और बैठने के लिए कुछ हल्के शेड बनाए गए। नीचे। बेशक, बगीचा नूरूर जैसा नहीं था, लेकिन वहाँ मीठी सुगंध वाले गुलाबों की क्यारियाँ थीं, जो आंटी इला के प्रसिद्ध गुलाब जल और दही के लिए जानी जाती थीं, और रंग-बिरंगे अफीम के फूलों के क्यारियाँ थीं, जो ट्यूलिप की तरह दिखते थे, और बैंगनी अमरंती, नींबू और संतरे के फूल, और कंद गुलाब जो गर्म हवा को सुगंधित कर रहे थे। और यह सब तय हो जाने के बाद, वामन भूत को एक उपयुक्त दिन खोजने के लिए कहा गया, और उन्होंने एक दिन तय कर दिया; और सीता ने अपने सुंदर अक्षरों में लाल कागज पर लिखे निमंत्रण अपने सभी जातियों के पुराने दोस्तों को भेजे, ब्राह्मणों से लेकर नीचे तक, यहाँ तक कि कुछ मुसलमानों को भी; और चूंकि ब्राह्मण भोजन को सजाते थे, इसलिए सभी एक समान खा सकते थे। बाहरी तौर पर सब कुछ अच्छा लग रहा था; लेकिन अंदर से ऐसा नहीं था। BO शांत। क्योंकि अब शाहगंज में बुरी हवा चल रही थी। सभी ने इसे महसूस नहीं किया था, लेकिन कुछ ने किया था, और इसके प्रभाव में आ गए थे। राम दास का कानपुर, मिर्जापुर और बनारस में संवाददाताओं के रूप में,

सीता, जो कलकत्ता में भी थीं, ने उन्हें गुप्त रूप से लिखा था कि मई के अंत से पहले, इस धरती पर एक भी अंग्रेज, स्त्री या बच्चा जीवित नहीं रहेगा; उन सभी को सिपाही, मुसलमान और उनके साथ उठने वाले लाखों हिंदू मार डालेंगे; और यदि अंग्रेजों के साथ उनका कोई भी लेन-देन है तो उन्हें उसे बंद कर देना चाहिए। उन्होंने ये पत्र और कई अन्य पत्र गुप्त रूप से शाहगंज के बैंकरों को दिखाए, और बदले में उन्होंने भी अपने पत्र दिखाए, और पाया कि सभी में लगभग एकमत था। कुछ ने तो यह भी घोषणा कर दी थी कि दिल्ली का पुराना राजा एक बार फिर सम्राट बनेगा; कानपुर से

कुछ ने बताया था कि ढेंदो पुंत, नाना साहब, पेशवाह बनेंगे; लेकिन सभी इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे कि अब कोई अंग्रेज नहीं बचेगा, और जाति का बदला लिया जाएगा। पुराने हिसाब चुकता करने का कितना सुनहरा अवसर था! कमिश्नर साहब नूरपुर गए थे, जाहिर तौर पर अपनी जान बचाने के लिए, और जज की बहन से शादी करके उसे तुरंत इंग्लैंड ले जाने के लिए। इसकी संभावना की खबर कस्बे के सुनारों ने शाहगंज में अपने दोस्तों को भेजी थी, साथ ही यह भी बताया था कि जज साहब अपनी संपत्ति हटा रहे हैं, और वे सब साथ जाएंगे। मिस्टर ब्रैंडन मौजूद भी होते तो किसे परवाह! वह जातिगत कार्यवाही में दखल देने की हिम्मत नहीं कर सकते; उन्होंने पहले भी ऐसा नहीं किया था जब वे अपने पूरे अधिकार में थे, और उन्होंने नरेंद्र को कोई संरक्षण नहीं दिया था। "क्या नरेंद्र को फिर से पंचायत के सामने पेश किया जाए?" राम दास ने अपने समुदाय के उन लोगों से कहा जो उनसे मिलने के लिए इकट्ठा हुए थे; "हम उनसे सभी सामाजिक मेलजोल और विशेषाधिकार छीन लें, क्योंकि उन्होंने एक नीच, अपवित्र स्त्री को अपने घर में रखा है, और जानबूझकर बनारस के पवित्र पुजारियों के आदेशों का उल्लंघन किया है।" "अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, मेरे दोस्तों," उसने आगे कहा, "तो मैं खुद करूँगा। मुझे न तो उस बूढ़े आदमी का डर है, न ही कमिश्नर का; मैं तुम सबको अपवित्र घोषित कर दूँगा, और हमारा गुरु भी यही करने को तैयार है; हम इस अपमान को सहन नहीं कर सकते। और सुनो, नूरपुर के गोल्डसिनिथ आगे आने को तैयार हैं; वे हमसे ज़्यादा जानते हैं कि सीता जब जियो मुख गई थीं, और जज साहब, उनकी पत्नी और बहन के साथ खाना खाया और शराब पी थी, तब क्या हुआ था। वे इस बारे में बात करेंगे, भाइयों, और तुम्हें खास बातें बताएँगे। मूर्खों! क्या नरेंद्र और उसकी औरतें, अंग्रेज़ों की शरण में, सोचते हैं कि वे जाति की जाँच से बच जाएँगे? आह! उन्हें बेहतर बातें सिखाई जानी चाहिए। मेरा एक परिचित, बनारस का एक पवित्र जोगी, ने मुझे कल ही बताया था कि अंग्रेज़ों का कोई अस्तित्व नहीं होगा। "उनके देवताओं ने उन्हें त्याग दिया है, उनका देश उनसे शर्मिंदा है, और उनकी मदद नहीं करेगा, और वे सब एक साथ बंधे हुए हैं।" "ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने नागपुर का राज छीन लिया," एक ने टिप्पणी की।

सुनार के घर पर मंडराता बादल। 245 नागपुर का एक सुनार, जो शाहगंज घूमने आया था, बोला, "क्या उन्होंने बेचारे रान्सेस के महल को नहीं लूटा और सारे गहने ज़बरदस्ती नहीं बेच दिए? आह! इससे कुछ अच्छा नहीं होगा, पक्का।" "क्या उन्होंने

ओनुध और झांसी और हज़ारों दूसरी जगहों को नहीं लूटा? उन्हें जाने दो! मुसलमान भी उनसे बेहतर होते," दूसरे ने कहा। "हाँ," समूह के सबसे बड़े सदस्य ने कहा, "और यहाँ उनमें से एक ने हमारी जाति को कलंकित किया है और उस पर कीचड़ उछाला है। अब हममें से कौन बाहर जाने की हिम्मत करेगा, जहाँ उसके मुँह पर यह दाग लगाया जाए कि एक सुनार की औरत गाय खाने वाले अंग्रेज की रखैल है? हे मित्रों, हे भाइयों, क्या तुममें कोई सम्मान, कोई आत्मसम्मान नहीं बचा है? कहो कि मैं बहत्तर वर्ष जी चुका हूँ, और ऐसा पहले कहीं नहीं हुआ। और न ही हम तब तक अपवित्रता से बच सकते हैं जब तक उस व्यभिचारी का सिर बनारस में मुंडवा न दिया जाए, और जब तक वह अपनी चाची की तरह 'भुगुट' न बन जाए और सर्ज का ऊनी वस्त्र न पहन ले। वह क्या है कि उसे सजा से छूट मिल जाए?" और फिर सभा ने निर्णय लिया कि नरेंद्र को अपने घर में सचेता को रहने और वहाँ खाने की अनुमति देने के लिए तलब किया जाए; और उसके घर को उसकी उपस्थिति से शुद्ध किया जाए। मुझे नहीं लगता कि शाह गुंजो में रहने वाले सुनारों की बेटियों, जो उसकी पुरानी सहेलियाँ थीं, के हाथों सचेता का हाल कुछ बेहतर रहा होगा। शायद वह कभी उनके बीच लोकप्रिय नहीं रही थीं। उनकी विलक्षण विद्वत्ता, उनकी सुंदरता, उनकी सहज विनम्रता, और शायद कुछ हद तक स्वाभाविक एकांतप्रियता जिसने उन्हें दूसरों से अलग कर दिया था—उन्हें उनसे ऊपर उठाती थी; क्योंकि जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई, उनका दिमाग विकसित होता गया और विकसित होता रहा, यहाँ तक कि हुरे दास के जीवित रहते हुए भी: जबकि उनका दिमाग संकुचित और सुस्त होता जा रहा था। ये सभी पुरानी सहेलियाँ अब पत्नियाँ थीं, कुछ के बच्चे घुटनों तक थे, और उन्होंने सेक्टा के दूसरे विवाह को कम से कम अशोभनीय माना था; क्योंकि वे इस मामले में खुद को ब्राह्मणों के समान उच्च मानती थीं, जो अपने पतियों के सम्मान की रक्षा करते हैं और कभी दोबारा शादी नहीं करते। फिर भी वे सेक्टा को देखने गए थे, और जैसा कि हम जानते हैं, उन्हें अजीब तरीके से घूर रहे थे। एक दिन बाद, उनमें से कई गपशप करने के लिए इकट्ठा हुए, और शाहगंज में सेक्टा के बारे में उतनी ही गपशप चल रही थी जितनी नूरपुर में थी। "वह पहले की तरह ही घमंडी और अभिमानी है," राधा ने कहा, जिसे हमेशा से ही सुंदर माना जाता था और जो सीता की उम्र की ही एक सुडौल, गोल-मटोल लड़की थी, जिसकी गोद में एक बच्चा था। "मुझे अब वह बिल्कुल भी सुंदर नहीं लगती। अरे, वह अपनी पलकों पर 'सूरमा' नहीं लगाती, न ही

अपने दांतों पर 'मिस्सी'; उसके दांत किसी कुंवारी लड़की के दांतों की तरह सफेद हैं, और वह विधवा है और उसके दो पति हो चुके हैं। क्या यह शर्मनाक दिखावा नहीं है; और वह रेशमी पेटीकोट ऐसे पहनती है जैसे कोई
246 सीता. नाचने वाली लड़की. आह! वो कितनी बदल गई है; धिक्कार है! धिक्कार है!" "और वो पान भी नहीं खाती," एक और पुरानी सहेली, गुंगी चिल्लाई। "जब मैं उसके साथ थी, तो मैंने उससे कुछ पत्ते मांगे, क्योंकि मेरा थैला खाली था, और उसने मुझे बताया कि उसने पान खाना छोड़ दिया है, क्योंकि उसके पति को पान पसंद नहीं है; और चाची एला के पास भी नहीं थे क्योंकि वो 'भूगट' हैं, और मैं पूरे दिन बिना पत्ते के रही, इतनी गर्मी में।" "और क्या तुमने देखा," तीसरी लड़की, चिम्मा ने कहा, "कि उसने अपनी उंगली में हीरे जड़ी एक अंग्रेजी अंगूठी पहनी हुई है, और पैरों की उंगलियों में कुछ नहीं है; और उसने अपने हाथों, पैरों या नाखूनों को मेहंदी से नहीं रंगा है, और वे कितने रूखे और बदसूरत दिखते हैं; और उसकी त्वचा अब सफेद और लाल हो गई है, जैसे शराब पीने वाली फिरंगी औरतें; और उसका घमंड, पहले से भी बदतर हो गया है; जब तुम उसकी गुड़ियों से खेल रही थी, तो वो कभी-कभी तुम्हें ऐसे देखती थी जैसे तुम गली में पागल हो! मुझे यकीन है कि मैं तो खुश हूँ कि मैं कभी पढ़ना नहीं सीख पाई, अगर इससे मैं भी उस पत्थर जैसे चेहरे वाली लड़की जैसी बन जाती। शायद मैं इस बातचीत को और आगे लिखने की हिम्मत नहीं कर पाई, जो शिक्षाप्रद नहीं थी और वक्ताओं के बीच गरमागरमी के साथ-साथ और भी भद्दी, द्वेषपूर्ण और अभद्र होती गई; अंत में, राधा ने पूछा कि क्या वे सभी सीता की बगीचे की पार्टी में जा रही हैं, जिसका जवाब तिरस्कारपूर्ण और उपहासपूर्ण हंसी के साथ दिया गया। "अच्छा है कि तुम नहीं जा रही हो," राधा ने आगे कहा, "क्योंकि मैं तुमसे ज्यादा जानती हूँ; और यह बहुत बड़ी बात है अगर हम सब पहले से ही जाति से बाहर नहीं हैं। मेरे पति ने मुझे यह बताया था—लेकिन तुम सबको मेरी गर्दन और मेरे बच्चे के सिर को छूना होगा और कसम खानी होगी कि तुम मेरी कही हुई बात का जिक्र नहीं करोगी, वरना वह मुझे पीटेंगे। बस, हो गया। अब जब तुमने वह कर दिया है जो मैंने तुमसे कहा था, तो सुनो, बहनों।" वह नीच वेश्या फिरंगियों के साथ जियो मुख गई और उसे पालकी में ले जाना पड़ा— उसने बहुत शराब पी ली थी; और उनके साथ सोई भी थी। "उसका सिर मुंडवा देना चाहिए!" सभी ने एक साथ चिल्लाकर वक्ता को बीच में ही रोक दिया। "वे ऐसा करने वाले हैं," राधा ने अपनी आँखें चमकाते हुए

कहा; “और हम लड़कियाँ फिर से उस सुंदर सीता को मंदिर तक लंगड़ाते हुए देखेंगी, सिर मुंडा हुआ, पैरों को ढके बिना, और हाथ में एक बड़ा सा चिकन, बिल्कुल आंटी एला की तरह। अब क्या तुम गुड़ियों की दावत में जाओगी? भगवान का शुक्र है, हम सुनार पवित्र हो सकते हैं। बाकी सब अपवित्र हो जाएँ, ब्राह्मण और सब, हमें क्या परवाह!” यह एक सुहाना दिन था; और कुछ बादल, और रात में हुई थोड़ी सी बारिश ने हवा को तरोताज़ा कर दिया था।

सुनार के घर पर मंडराता बादल। — पृष्ठ 247। सीता ने सादे सफेद रंग की साड़ी पहनी और जब वह अपने दादाजी के पैर छूने के लिए झुकी, तो दादाजी उसकी सुंदरता और शालीनता को निहारने से खुद को रोक नहीं पाए। उन्होंने कहा, “जिससे गुलबर्गा के राजा ने विवाह किया और जो राजकुमारों की माता बनी, वह तुझसे अधिक सुंदर नहीं थी, बच्ची; जा और अपने दोस्तों के साथ खुश रह,” और सीता सचमुच ऐसा ही चाहती थी। चाची एला पालकी में उसके साथ नहीं आईं। उन्होंने कहा, “वह ‘अंग्रेज़’ थी और वह ‘भूखा’ थीं;” और उन्होंने अपनी छोटी सी पोशाक को पैरों के बीच समेटा, अपनी लंबी छड़ी ली और चल पड़ीं, हालांकि पालकी उठाने वालों ने कहा कि वे उन दोनों को नहीं ले जा सकते। सीता ने देखा कि दावत की सारी तैयारियां पूरी तरह से चल रही थीं। ब्राह्मण रसोइये बगीचे के कुएँ से पानी के घड़े लेकर इधर-उधर भाग रहे थे, और ऊपर हरे-भरे पेड़ों के बीच से रसोई से तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवानों और पैनकेक तलने की खुशबू आ रही थी, और कई मेहमान आ रहे थे। ब्राह्मण स्त्रियाँ अपने बच्चों के साथ, और अन्य सभी अच्छे हिंदू जातियाँ, और कुछ घूंघट वाली मुस्लिम स्त्रियाँ, जो निजी बाड़े में गईं और अपने घूंघट हटाकर अपने बच्चों के साथ आनंद मनाने लगीं; और वहाँ मौजूद सभी बच्चे बगीचे में दौड़ रहे थे, फूल तोड़ रहे थे, बूढ़े माली को परेशान कर रहे थे, झूलों पर चढ़ रहे थे और खूब खुशी से चिल्लाते हुए तब तक झूल रहे थे जब तक उनके पैर डालियों को न छू लें। सभी गुड़िया सफेद मलमल से ढके कालीन पर रखी हुई थीं, उनकी पीठ के लिए छोटे-छोटे तकिए थे, हमेशा की तरह बहुत गंभीर और शांत दिख रही थीं, फिर भी बच्चे और बड़े सभी उन्हें निहार रहे थे और उनसे प्यार कर रहे थे। फिर, जैसे-जैसे शाम ढलती गई, उन्होंने सीता से उनके लिए गाने को कहा, क्योंकि वह अपना तुंबोरा लाई थी, और सीता ने "उससे बात नहीं कर सकी" गीत गाया, जिससे कुछ युवतियाँ मधुर और मार्मिक धुन और शब्दों को सुनकर रोने लगीं। सीता लगभग टूट चुकी थी, क्योंकि वह

बहुत दुखी थी जब उसने देखा कि उसके पुराने दोस्तों में से कोई भी, या उनकी माताएँ —उसके अपने जाति के लोग—उसके भोज में नहीं आए थे, और वह क्या नहीं चाहती थी कि सिरिल को यह बात बताए और उससे सांत्वना सुने; लेकिन वह बहुत दूर था। घर पहुँचकर वह अपने दादा के चरणों में घुटने टेककर बैठ गई और उनके घुटनों को थामकर फूट-फूटकर रोने लगी; वह उन्हें बता नहीं सकी कि क्या हुआ था—वह पहले से ही सब जानते थे। "मेरी बच्ची," उन्होंने बड़े ही प्यार और गंभीरता से कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हें कितना दुख है; लेकिन घबराओ मत, मुझे कल पंचायत में बुलाया गया है, और मैं सब कुछ ठीक कर दूंगा। वे तुम्हारे बारे में बनारस पंचायत के फैसले को मानने से इनकार नहीं कर सकते। इसलिए निश्चिंत रहो; यह छोटी-मोटी दुश्मनी तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकती।" सीता को उनके आश्वस्त करने वाले लहजे और भरोसे से तसल्ली मिली; लेकिन फिर भी मन में डर बना रहा, और आंटी एला पूरी शाम उदास और बड़बड़ाती रहीं।

248 सीता। सुबह नरेंद्र पंचायत में उपस्थित हुए और वामुन भूत को अपने साथ ले गए। जैसा कि उन्होंने अनुमान लगाया था, उन पर सीता से मिलने के कारण बनारस के निर्णय का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया; लेकिन जब उन्होंने सीता के पक्ष में औपचारिक घोषणा प्रस्तुत की, तो सभा में उपस्थित कई लोगों ने उसे अपने माथे पर रखकर विनम्रतापूर्वक उसकी शक्ति को स्वीकार किया। हालाँकि, राम दास, जो संघ के कई सदस्यों के चले जाने के बाद चुप थे, अचानक सभी से भावुक अपील करने लगे। उन्होंने तीखी आवाज में कहा, "जब वह लिखा गया था, तो उसे लिखने वालों को सीता बाई और नरेंद्र की पवित्रता पर विश्वास था। उन्होंने यह नहीं सुना था, जैसा कि मैंने सुना है, कि सीता पहले ही जियो मुख में अंग्रेजों के साथ खा-पी चुकी थीं, या उन्होंने मुझे मारने के लिए वहाँ जादू-टोना किया था। इसे जाने दो, क्योंकि मैं उसके जैसी व्यभिचारी से नहीं डरता; लेकिन मुझे हमारी पवित्र जाति से डर लगता है, और उसके कल के शैतानी हथकंडों से भी, जो तुम्हारी माताओं, पत्नियों और बेटियों को अपने बुरे हाल में घसीट लेंगे, और मैं देवताओं का शुक्रगुजार हूँ कि मैं उन्हें चेतावनी भेज सका। नूरपुर, नंदा के सुनार की बात सुनो, जिसे तुम सब जानते हो; वह तुम्हें बताएगा कि जियो मुख में क्या हुआ था।" और वह आदमी उठा और बोला कि उसकी पत्नी ने वहाँ मौजूद एक महिला की आया से सुना था कि सेक्टा अंग्रेजों के साथ मिली, शराब पी और उसे पालकी में बिठाकर ले जाया गया। तब लोगों में एक

कर्कश फुसफुसाहट उठी, जिसे कोई रोक नहीं सका। “उसे निकाल दो! उसके जादू-टोने के लिए उसे सज़ा दो! उसका सिर मुंडवा दो! उसे बनारस में गंगा माता में स्नान करने के लिए भेज दो।” “देखो!” राम दास ने आगे कहा, “नरेंद्र को देखो; वह अपने बच्चे के लिए कुछ नहीं कह सकता! उसका सिर उस शर्म से झुका हुआ है जो उस पर आई है।” उसे अपने दोस्तों, अंग्रेजों—अपने रिश्तेदारों—के पास जाने दो! और देखो कि क्या वे उसे बचा सकते हैं! मैं तुमसे कहता हूँ, दोस्तों, उनका विनाश निश्चित है—सिपाही उन सबको मार डालेंगे। पूरे देश में एक आवाज़ गूंज रही है, ‘अंग्रेज न रहें!’ और कोई नहीं रहेगा। अंततः देवताओं ने हम पर दया की है, और अंग्रेजी अत्याचार के प्रकोप को समाप्त कर देंगे। “तू दुष्ट मुख वाला!” वामन भूत चिल्लाया। “शांत हो जा! जो तेरी बात सुनते हैं वे गद्दार हैं।” “शांत हो जा! मुझे तब तक शांति नहीं मिलेगी,” क्रोधित वक्ता चीखा, “जब तक वह वेश्या अपना मुंडा सिर मेरे सामने से न गुदगुदाकर न गुजर जाए, और अंग्रेज मर न जाएँ।” “चले जा!” ब्राह्मण ने नरेंद्र से कहा; “1914 की बुरी हवा उन सब पर चल पड़ी है, और वे पागल हो गए हैं—चले जा जा!” दादाजी की अनुपस्थिति में सेंटा बहुत दुखी थी।

सुनार के घर पर मंडराता बादल। 249 उसे अपमान के किस नए दौर का सामना करना पड़ेगा, और यह बात सीता को नहीं पता थी; लेकिन वह पंचायत से, और सबसे बढ़कर राम दास से डरती थी, जो इस नए आंदोलन का सूत्रधार और नेता था। चाची एला भी उदास और दुखी थीं, और सुबह से हाथ मलती और रोती रही थीं, और मुझे डर है कि वह सीता को इस गड़बड़ का जिम्मेदार ठहराने के लिए बहुत उत्सुक थीं। और जब सीता ने अपने दादाजी को लाठी के सहारे, ब्रालिमिन के सहारे, लगभग लड़खड़ाते हुए लौटते देखा, तो वह उनसे मिलने के लिए सीढ़ियों के ऊपर दौड़ी और अपनी बाहें फैला दीं; लेकिन बूढ़े ने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया और उन्हें ठुकरा दिया। फिर वह अपनी सीट पर गए और बैठ गए, अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया, और जब भी सीता उन्हें छूतीं, वह उनके हाथ हटा देते। आखिर क्या हुआ होगा? आखिरकार उसने एक खोखली, बदली हुई आवाज़ में कहा, जिसे सुनकर वह कांप उठी। “क्या तुम अपने पति और न्यायाधीश के साथ जियो मुख में थीं?” उसने पूछा। “हाँ,” उसने उत्तर दिया; “उसमें क्या हुआ?” “क्या तुम उनके तम्बुओं में थीं, और क्या तुम पालकी में गई थीं?” “मैं न्यायाधीश की पत्नी और बहन के साथ थी, और वे मेरे प्रति बहुत दयालु थीं,” उसने आँसुओं से भरी आँखों से उत्तर दिया। “हाँ,

सुबह मैं पालकी में डेरा डालने गई थी; मैं हमेशा उसी में यात्रा करती हूँ—वह मुझे सवारी नहीं करने देता।" "बस करो," बूढ़े ने धीमी आवाज़ में कहा; "इसे ले चलो, वामुन भूत; मैं अकेली रह जाऊँगी।" "मैं नहीं जाऊँगी, दादाजी," वह भावुक होकर रोई, "जब तक मैं यह नहीं सुन लेती कि उन्होंने मेरे बारे में क्या कहा है। मुझे बताओ, वामुन भूत, अगर वह नहीं बोलेगा। मैं खतरे का सामना करना पसंद करूँगी, उससे पीछे हटने के बजाय। बोलो!" ब्राह्मण ने उसे बताया कि क्या कहा गया था और किसने कहा था। "यह एक घिनौना झूठ है, मेरे और उसके सम्मान पर प्रहार है," उसने दृढ़ता और संकल्प से कहा; "लेकिन अंत में न्याय होगा, जैसा कि इब्री दास के लिए होगा। दादाजी, आप सांत्वना दीजिए," उसने घुटने टेककर उनके पैर चूमते हुए कहा। "सेक्ता अपने दोस्तों के साथ न तो खाती थी और न ही पीती थी। अगर आप इस पर विश्वास करते हैं, तो मुझे सांत्वना मिलती है, जैसे आपको मिलेगी। जब से आपने मुझे उसे सौंपा है, तब से सिरिल ने कभी भी विचार, शब्द या कर्म से मेरी जाति को चोट नहीं पहुंचाई है, और न ही कभी पहुंचाएगा। यहाँ, आपके पैर पकड़कर, मैं देवताओं के सामने और आपके हृदय से यह कहता हूँ; हे प्रभु, अपने बच्चे को मत ठुकराइए।" कुछ देर के लिए, लड़की को लगा जैसे बहुत लंबा समय बीत गया हो, बूढ़ा व्यक्ति अपने दिल में दबी पीड़ा से लगभग बेतहाशा जूझता रहा, और जब वह रोते हुए उससे लिपट गई तो उसने उसे दूर कर दिया; लेकिन प्रकृति और उसका प्रेम रोका नहीं जा सका, और अंत में उसने अपनी बाहें फैला दीं।

250 सीता ने अपने बच्चे से कहा, "अगर तू अपवित्र होती तो मैं तेरे साथ वो भी सह लेता, सीता; परन्तु मेरा मन कहता है तू पवित्र है—मुझसे भी अधिक पवित्र। अब मुझे सोने दे, क्योंकि मैं थक गया हूँ, बच्चे, बहुत थक गया हूँ।" अगली सुबह पंचायत का लिखित फरमान आया कि नरेंद्र को सीता की उपस्थिति से अपने घर को शुद्ध करना चाहिए, और उसे बनारस जाकर विधवा के वस्त्र पहनने होंगे, तभी उसे उसकी जाति में शामिल किया जा सकता है; तब तक वह बहिष्कृत और शापित रहेगी। दोपहर भी नहीं गुज़री थी कि राम दास को नगर के स्थानीय अधिकारी ने एक सार्वजनिक सभा में राजद्रोहपूर्ण शब्द बोलने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया और कैद कर लिया, जिसे कई लोगों ने सुना और बताया था। उसके मित्रों ने उसके लिए बड़ी रकम की जमानत की पेशकश की; लेकिन अधिकारी दृढ़ और निष्ठावान था, और उसने ठान लिया था कि अगर संभव हो तो वह अब तेज़ी से फैल रही बुरी अफवाहों को रोकेगा। "श्रीमान

“ब्रैंडन को इसकी जानकारी जरूर होगी,” पुजारी के आते ही नरेंद्र ने कहा; “चूंकि सीता का नाम मुझे भेजे गए नोटिस में आया है और उसके खिलाफ सजा दर्ज की गई है, यह मेरे साथ-साथ ब्रैंडन के लिए भी उतना ही अपमान है; मुझे तुरंत लिखना चाहिए।” “मत लिखो,” वामुन भूत ने कहा; “मुझे अपना घोड़ा उधार दे दो, मैं खुद चला जाऊंगा; वह मुझे तीसरी सुबह तक वहां ले जाएगा। जब मैं लौट आऊंगा, तब तक घर का शुद्धिकरण हो जाएगा; तब तक धैर्य रखो। मैं सीता को बताऊंगा कि मैं क्या करने जा रहा हूं, जिससे उसे तसल्ली मिलेगी; और इस बीच, उस बदज़ुबान गद्दार की गिरफ्तारी बाकी सब पर लगाम कस देगी।” अध्याय 32. अज़राएल पाण्डर का मिशन: जिन घटनाओं का मैंने वर्णन किया है, उनके घटित होते समय अज़राएल पाण्डर अपने नापाक मिशन में व्यस्त था और उसे लगभग पूरा कर चुका था। कानपुर पहुँचने के बाद, वह एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक अपने धर्म और अपनी जाति के लिए अथक परिश्रम करता रहा; और अपने उस उल्लास के साथ जिसे वह छिपा नहीं सका, उसने सफलता को निकट देखा। अफ़गान युद्ध के सभी अन्याय, अतिरिक्त वेतन से इनकार, यहाँ तक कि उनका ढीला अनुशासन भी, पूरी सेना के सिपाहियों को इतना विचलित नहीं कर पाया था जितना कि उनकी वर्तमान यह धारणा कि जाति खतरे में है—वह जाति जिसने सैकड़ों वर्षों तक क्रूर पुराने मुस्लिम सम्राटों और ऑक्सस नदी के पार से आए उनके कवचधारी तातार योद्धाओं के प्रयासों को तोड़ने या गिराने में विफल रही थी। अज़राएल एक ऐसा व्यक्ति था, जैसा कि उसने अपने साथी जातिवासियों को हर रेजिमेंट में बताया, जिसके पास वह गया था, उसके मन में केवल एक ही विचार था,
—_ अज़राइल पांडे का मिशन। 25) उनके जीवन का एक ही जुनून था—सुम्बुत की पवित्र भविष्यवाणियों की पूर्ति में अंग्रेजों का विनाश। और ये भावनाएँ तब और भी तीव्र हो गईं जब उनके प्रिय भतीजे के विद्रोह और उसकी फाँसी की खबर, और उनके चचेरे भाई जमादार की फाँसी की खबर उन्हें उम्बाला और मेरठ में मिली, जो थोड़े-थोड़े अंतराल पर एक के बाद एक घटित हुई। यदि उनके मन में अब तक कोई पश्चाताप की भावना थी, तो उन्होंने उसे पूरी तरह से त्याग दिया। उम्बाला, मेरठ और दिल्ली में, उन्होंने अप्रैल की शुरुआत में सिपाहियों को तत्काल विद्रोह के लिए उकसाया; लेकिन वे अभी तैयार नहीं थे, इसलिए वे लंबी और थका देने वाली यात्राओं के बाद पंजाब की ओर चल पड़े; लेकिन प्रतिशोध की आग में जलते उनके मन ने

उनके शरीर को कुछ समय के लिए थकान से मुक्त कर दिया। अंततः, एक दूरस्थ स्टेशन पर, वह कुछ समय के लिए ही सही, लेकिन अशक्त हो गया, और एक कट्टर जमींदार ने उसे एक हाथी दिया जिस पर वह एक पवित्र ब्राह्मण की तरह यात्रा कर सके। फिर सातवीं घुड़सवार सेना के विद्रोह के बाद वह मीरत लौट आया, और अपने द्वारा प्रचारित राजद्रोह के कारण, उसे और उसके साथ आए लोगों को अंग्रेज अधिकारियों द्वारा शहर और स्टेशन से निकाल दिया गया। वहाँ से वह झांसी गया, जहाँ उसे काम करने के लिए नई और उपयोगी सामग्री मिली, और उसने बारहवीं रेजिमेंट और तोपखाने को संकेत मिलने पर तैयार रहने और शापित जाति के किसी भी व्यक्ति को न बख्शने का आदेश दिया। उसने न केवल पाया कि हिंदू कार्रवाई के लिए तैयार थे, बल्कि मुसलमान भी; क्योंकि जाति खोने का भय उन तक भी पहुँच गया था, और इसके साथ ही यह रोमांचक खबर भी कि दिल्ली का राजतंत्र फिर से स्थापित होगा, जब सच्चे धर्म की शक्ति घृणित नाज़रीनों पर विजय प्राप्त करेगी और अपने प्राचीन वैभव को पुनः प्राप्त करेगी। शायद अज़रैकल ने इस बारे में ज़रा भी नहीं सोचा होगा; वह केवल अंग्रेजों के विनाश की कामना करता था और प्रार्थना करता था, और इसलिए, उस समय की एक दुष्ट आत्मा की तरह, वह बड़बड़ाता हुआ और अपने भयानक मिशन का प्रचार करता हुआ आगे बढ़ता रहा। अब जीवन से उसका क्या संबंध था? यदि अंग्रेज उसे पकड़ लेते और पहचान लेते, तो उस बहिष्कृत जल्लाद के हाथों उसकी मृत्यु निश्चित थी। मुंगुल पांडे और उसका चचेरा भाई बैरकपुर में इसी तरह अपवित्र होकर मरे थे। उसने अपना काम कर दिया था; और जब अतृप्त "माँ" रक्त से तृप्त हो जाएगी, तो उसे उससे मिलने से डरने की कोई आवश्यकता नहीं होगी, चाहे वह नर्मदा नदी पर स्थित ऊंकर मंदुत्ता की चट्टान से कूद जाए, या इलाहाबाद के पवित्र जल में डुबकी लगाए, या अपने शत्रुओं के साथ किसी युद्ध में मर जाए। लेकिन सबसे पहले एक काम पूरा करना था - सिरिल ब्रैंडन और सीता से उसका बदला, जिसे उसने कभी नहीं छोड़ा था। जब अंग्रेज नहीं रहेंगे, तो कम से कम सीता का कोई रक्षक तो नहीं होगा। उसके दादा का खजाना शायद उसका हो, और उस लड़की को गुलाम बनाकर, वह अपना बदला ले सकता है।

252 सीता। वह पूरी तरह से आवेशित हो जाएगा। उसके हृदय में किसी भी प्रकार की कोमल भावना, यहाँ तक कि प्रचंड जुनून से उत्पन्न होने वाली भावना भी, नहीं थी; वह केवल उसे पाने के लिए व्याकुल था; उस अभिमानी, सुंदर प्राणी को, जिसे

उसने देखा था—जो अब तक उससे बच निकलने में सक्षम थी, और जिसने उसके जीवन को खतरे में डाल दिया था—एक दास की स्थिति में लाने के लिए, और यदि वह मर सकती थी, तो उस अपमान से उसे मरते हुए देखने के लिए। झांसी के बाद, अजरी पांडे फतेहपुर के लिए रवाना हुए, और वे उस दिन शहर पहुँचे जिसकी घटनाओं का उल्लेख, इस इतिहास से संबंधित होने के कारण, मुझे अवश्य करना चाहिए; और अपने हाथी और सेवकों को एक मंदिर के प्रांगण में छोड़कर, शाम ढलने पर, वह नवाब के बगीचे में अपने पुराने छिपने के स्थान पर गया, और हमेशा की तरह, कुएँ के ऊपर पेड़ पर एक खंभे पर एक नारंगी झंडा लगा दिया, जो उसका हमेशा का संकेत था, और जहाँ नवाब उसे जल्द ही देख लेगा। कमरे में आटा, तेल, दाल और घी का भंडार था, साथ ही उसके पुराने खाना पकाने के बर्तन भी थे; और उसने इन सबका जायज़ा लेते हुए इस तसल्ली भरे भाव से निरीक्षण किया कि उसे भुलाया नहीं गया है। वास्तव में, उसे भुलाया भी नहीं गया था। नवाब दिल इथान बहादुर को "अंग्रेज़ों का राज" का मतलब समझ आने लगा था, क्योंकि फतेहपुर में अफ़वाहें तेज़ी से फैल रही थीं। वह नूरपुर गया था, ब्रिगेडियर और श्री मोस्टिन से मिला था, और पता लगाया था कि किले की व्यवस्था ठीक कर दी गई है। उसने इन सज्जनों को गंभीर, हालांकि शिष्ट, और किसी भी अप्रिय स्थिति के लिए तैयार पाया था। उसने ब्रिगेडियर को अपने किले में सैन्य भंडार और तोपों का प्रभार संभालने का प्रस्ताव दिया था, जो मजबूत था, जबकि नूरपुर का किला कमजोर था; लेकिन उसने अंग्रेज़ सैनिकों के बारे में कुछ नहीं कहा, सिवाय इसके कि वे बाहर डेरा डाल सकते हैं; और उसने ब्रिगेडियर को सिपाहियों से सावधान किया था, जो, वह जानता था, केवल मौके की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन ब्रिगेडियर ने उसकी बात नहीं सुनी। उन्होंने कहा, “नूरपुर काफी मजबूत था, क्योंकि जो भी इसे लेने की कोशिश करता, उसे पता चल जाता; लेकिन वह नवाब के प्रस्ताव के लिए आभारी था और आशा करता था कि वे अच्छे दोस्त बने रहेंगे।” फिर दिल खान ने श्री मोस्टिन से मुलाकात की और उन्हें वह सब बताया जो उसने कर्नल साहब से कहा था। हालांकि, मुझे यकीन है कि श्री मोस्टिन ब्रिगेडियर की तरह ही अड़ियल थे। “खजाना पहले से ही पुराने किले के एक गोदाम में सुरक्षित था, जहाँ अंग्रेज सैनिक उसकी रखवाली कर रहे थे; और जहाँ तक महिलाओं की बात है, हालाँकि वे नवाब के ज़नाना में उन लोगों की देखभाल करने के विचार पर दिल खोलकर हँसे बिना नहीं रह सकीं, फिर भी मुझे डर है कि उनकी ओर से सुरक्षा के

प्रस्ताव ने उन्हें आने वाले खतरे का पहले से कहीं अधिक स्पष्ट एहसास दिला दिया। फिर भी वे दृढ़ और खुश थीं, जैसा कि स्टेशन पर मौजूद अधिकांश अन्य लोग भी थे।"

अज़राइल पांडे का मिशन। 253 उस समय, सच कहें तो, नवाब इस बात को लेकर बहुत असमंजस में थे कि उन्हें क्या मार्ग अपनाना चाहिए। यदि "अंग्रेज़ों का अस्तित्व न हो", तो उनकी जगह कोई और होना चाहिए, और उनके पड़ोसी, राजा हुरपील सिंह, उनसे अधिक शक्तिशाली थे। पुराने समय में उनके अपने पूर्वजों ने हुरपील सिंह के पूर्वजों से उनकी वर्तमान जागीर छीन ली थी, और उनके बीच दुश्मनी चली आ रही थी, लेकिन नवाब के पिता ने बहादुरी से अपना बचाव किया था। दिल खान, हालांकि, कोई सैनिक नहीं था - केवल एक शेखीबाज़ था जो खानदानी माहौल में पला-बढ़ा था, और इसलिए कामुक और आलसी हो गया था; अपने पूर्वजों से बिल्कुल अलग, जिनकी तलवारें उनकी जांघों पर और उनकी ढालें उनके जीवन के अधिकांश भाग में उनकी पीठ पर रहती थीं। दोनों में से, हुरपील सिंह, अपने जंगली वनवासियों और अपने कबीले के सेवकों के साथ, अब कहीं अधिक युद्धप्रिय और दुर्जेय थे; लेकिन जब तक नवाब को अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त था, तब तक वह सुरक्षित था। नवाब अपनी स्थिति को भलीभांति समझता था, और अब यह तय करना था कि वह अंग्रेजों का साथ दे या समय आने पर राजा का साथ दे। ब्रिगेडियर और जज द्वारा उसके प्रस्तावों को ठुकराए जाने के बावजूद, वह जानता था कि दोनों उसके मित्र हैं, और हुरपेल सिंह द्वारा उसके विरुद्ध कोई भी प्रयास असंभव था। उनकी मुख्य पत्नी, कुरीम खानम, जिन्हें 'नुजमवोल-निस्सा' यानी 'महिलाओं की सितारा' की उपाधि से नवाजा गया था, अपने विचारों में पूरी तरह से जर्मन थीं। वह उनका सम्मान और प्रेम करती थीं; वह किसी भी अंग्रेज महिला के प्रति वफादार रहतीं जो उनके पति की शरण में आती; और जब संकट की हवा चलने लगी, तो उन्होंने ही नवाब को नूरपुर जाकर तुरंत अपनी सेवाएं देने के लिए प्रेरित किया था। हालांकि, एक और पत्नी थीं, जिनका नाम ज़ीनत-बी था, जो दिल्ली के एक अभिमानी और घमंडी पठान परिवार से थीं, जिसमें राजशाही को लेकर संदेह था। वह दूसरी पत्नी से ईर्ष्या की कड़वी दुश्मनी रखती थीं, और जब संकट की हवा चली, तो उन्होंने नवाब के मन में मुगल राजशाही और अपनी प्रतिष्ठा और साम्राज्य में वृद्धि के महत्वाकांक्षी विचार भर दिए; और परिणाम यह हुआ कि नवाब के विचारों के उतार-चढ़ाव का चतुराई से फायदा उठाया गया। जिस दिन

अज़रील पांडे फुतचपुर पहुंचे, उससे एक दिन पहले, दिल्ली से एक विद्वान मौलवी के आने की सूचना नवाब को सुबह ही मिल गई थी, और वे उनसे मिलने के लिए घोड़े पर सवार होकर शहर के द्वार तक गए। उन्होंने एक हट्टे-कट्टे, सलीके से कपड़े पहने हुए व्यक्ति को एक मजबूत काबुल टट्टू पर सवार देखा, जिसके साथ केवल एक नौकर था, जो दूसरे घोड़े पर सवार था, जिस पर कपड़ों और अन्य आवश्यक वस्तुओं से भरे थैले रखे थे। नवाब शायद कुछ निराश हुए। उनकी पत्नी ज़ीनत ने उन्हें बताया था, जैसा कि उन्हें अपने भाई से डाक द्वारा पता चला था।

254 एसएलईटीए., दिल्ली में नवाब को सूचना मिली कि आने वाला मौलवी एक महान व्यक्ति है, बादशाह का गहरा विश्वासपात्र है, और उसे कई महत्वपूर्ण स्थानों पर भेजा गया है, जिनमें से एक फुत्छपुर भी है। इस प्रकार नवाब को उम्मीद थी कि वह शाही हाथी पर या शायद पालकी में, एक बड़े दल के साथ यात्रा करेगा; और केवल एक व्यक्ति और एक सेवक की उपस्थिति नवाब की शाही राजदूत की धारणा को संतुष्ट नहीं कर पाई। फिर भी, उन्होंने शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया और साथ-साथ दरबार में प्रवेश किया; नवाब के राजदंड धारक (फसल कर प्राप्त होने पर चांदी के राजदंड छुड़ा लिए गए थे) हमेशा की तरह उनके खिताबों का उच्चारण कर रहे थे। जैसे ही वे भीतरी प्रांगण में पहुँचे और आंतरिक भाग के प्रवेश द्वार पर उतरे, अतिथि ने सबसे पहले अपने घोड़े की अच्छी तरह मालिश करने और कुछ दरदरी चीनी लाने की विनती की। फिर, जब वे साथ-साथ सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे और प्रांगण में राजदंड बजाने वाले अभी भी मौजूद थे, तब उन्होंने कहा, “अरे नवाब साहब! आपके जैसे उच्च व्यक्तित्व के लिए ऐसे तुच्छ खिताब शोभा नहीं देते! शायद जो मैं लाया हूँ वह आपको अधिक प्रसन्न करेगा, लेकिन कृपया थोड़ा इंतजार कीजिए; मैं तीन रातों से पूरी रात घोड़े पर सवार होकर यात्रा कर रहा हूँ और थक गया हूँ। मेरे सामान के थैले मेरे अपार्टमेंट में भिजवा दीजिए, मुझे स्नान करने और थोड़ा आराम करने दीजिए, मैं शाम को आपसे मिलूँगा।” यह सब हो चुका था, और नवाब उत्सुकता से उस शुभ शाही संदेश को सुनने के लिए बेताब थे। उनकी पत्नी ज़ीनत ने ताली बजाई और घोषणा की कि आखिरकार उनके सौभाग्य का सितारा चमक रहा है; लेकिन कुरीम खानुम भयभीत थीं और दिल्ली से आने वाली उस बुरी हवा से डर रही थीं, जिसका संदेशवाहक यह व्यक्ति था। मेहमान के उठने से पहले ही, नवाब दोपहर की नमाज़ के बाद अकेले खिड़की पर बैठे थे और सोच रहे थे कि उनके साथ क्या होने वाला है।

अभी पूरी तरह शाम नहीं हुई थी, और जब उन्होंने अपने बगीचे में देखा, तो उन्हें कुएँ से नीले धुएँ का एक पतला छल्ला उठता हुआ दिखाई दिया। उनका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, इसलिए उन्होंने अपनी आँखें मलीं, फिर से देखा, और नारंगी झंडे की हल्की सी फड़फड़ाहट ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि अज़रील पांडे वहाँ हैं। वे संकेत को नज़रअंदाज़ करने की हिम्मत नहीं कर सके, और वे इतने उत्सुक और चिंतित थे कि देरी नहीं कर सकते थे; 50, अपनी रिवॉल्वर को कमरबंद में रखकर, वे चट्टान की सीढ़ियों से नीचे उतरे, और सामान्य संकेत देकर भूमिगत कमरे में प्रवेश कर गए। अपार्टमेंट में, अज़रील पांडे न तो उठ सके और न ही आगे बढ़कर उनसे मिल सके; उन्होंने अपने चारों ओर पवित्र घेरा बना लिया था और कुछ खाना पका रहे थे। वहाँ कोई दीपक नहीं था, लेकिन आग से पर्याप्त रोशनी मिल रही थी, क्योंकि वह लोहे की थाली के नीचे से निकल रही थी जिस पर एक के बाद एक कच्चे आटे की रोटियाँ पक रही थीं। "तो आपने संकेत देख लिया, नवाब साहब," अज़रील ने कहा, जब नवाब ने कुछ औपचारिकता के साथ उनका हालचाल पूछा, और
अज़राइल पांडे का मिशन। 255 जारी रहा, “मुझे देखो; क्या मैं मोटा हो गया हूँ? क्या मैं वैसा ही हूँ जैसा मैं तुम्हें छोड़कर जाने से पहले था? देखो लंबी यात्रा और बीमारी ने मुझ पर क्या कहर बरपाया है;” और उसने अपना लंबा शरीर समेट लिया, जो अब दुबला-पतला और सिकुड़ा हुआ लग रहा था, क्योंकि नीचे से उस पर तेज धूप पड़ रही थी; “मैं ठीक हूँ, माँ के आने वाले काम के लिए काफी ठीक हूँ; क्या तुम तैयार हो?” “तैयार!” नवाब ने कहा; “किसके लिए?” “क्या मैंने तुम्हें एक बार नहीं कहा था कि यहाँ कोई अंग्रेज़ी नहीं होगी, और तुम मेरा मतलब नहीं समझे? क्या अब तुम समझते हो? क्या 1914 की हवा तुम तक नहीं पहुँची, या तुम मूर्ख हो, बहरे और अंधे? तुमने नूरपुर में क्या किया? “कुछ नहीं; मैं क्या कर सकता था, बाबा साहब? मैं तो बस...” “मुझे ‘बावा साहब’ मत कहो, नवाब; मेरा नाम अज़राइल पांडे है। क्या तुम मुझे भूल गए हो?” “नहीं,” जवाब मिला; “मेरे दो आदमी अभी भी सुरक्षित हैं; लेकिन अगर अंग्रेजों को उनके बारे में पता चल गया तो मेरा क्या होगा? मुझे लगता है आप समझ सकते हैं। उन्हें कब रिहा किया जाएगा? वे मेरे लिए खतरा और बोझ हैं, और वे मुझे खा जाते हैं।” “जब तक अंग्रेज नहीं रहेंगे, उससे पहले नहीं,” बदमाश ने जवाब दिया। “मैं क्या कर रहा था? सुनो,” और उसने संक्षेप में बताया कि उसने क्या किया था, और अपने भतीजे का क्या हश्र हुआ। नवाब को उसकी आँखें खोखली और

बेजान लग रही थीं, और उसके गाल पीले और मुरझाए हुए थे; लेकिन जैसे ही वह बोला, उसकी आँखें चमक उठीं, उसके होंठ झाग से भर गए, उसके चेहरे पर गर्म खून दौड़ गया, और उसके माथे की नसें फूल गईं क्योंकि वह लगभग चीखते हुए बदला लेने के लिए चिल्ला रहा था। "जब अंग्रेज़ नहीं रहेंगे," उसने आगे कहा; "जब उस चुड़ैल और जादूगरनी सीता को यहाँ लाकर मेरी गुलाम बनाया जाएगा, और मैं उसकी सुंदर गर्दन अपने पैरों तले कुचल दूँगा; जब यह बांह और हाथ कमिश्नर के खून से लथपथ हो जाएँगे, तब मैं संतुष्ट होऊंगा, उससे पहले नहीं। अब, क्या तुम मेरी मदद करोगे?" "मैं क्या करूँ," नवाब ने घबराकर कहा। "मैं क्या करूँ? क्या मेरी सेना नूरपुर पर कब्ज़ा कर पाएगी? अरे, वे सब अब किले में हैं, सैनिक और तोपें, और बारूद और गोले, और अंग्रेज़ लोग, और ईसाई, और खजाना; और सिपाही अभी भी वफादार हैं। ओ अज़रील! तुम बच्चे की तरह बातें कर रहे हो, अपने जैसे नहीं।"
"अगर तुम मेरी मदद नहीं कर सकते, तो मुझे लगता है हुरपाल सिंह करेगा," अज़रील ने आश्चर्य से कहा। "उसे वहाँ अपना मौका पाकर खुशी होगी जहाँ अंग्रेज़ नहीं हैं। सुनो; मैंने सुना है ब्रैंडन नूरपुर में है।" मुझे सौ आदमी दो, और मैं उसके शिविर को लूट लूँगा। तुम ऐसा कर सकते हो। मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।" नवाब ने कहा, "मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं करूँगा, और न ही मेरे आदमी जाएँगे, मैं तुम्हें बता दूँ, जब तक नूरपुर में सिपाही विद्रोह नहीं कर देते; यहाँ एक भी आदमी अंग्रेजों के खिलाफ़ नहीं उठेगा। मैं अपनी प्रजा पर भरोसा नहीं कर सकता।"
256 सीता। "तो मुझे हुरपेल सिंह के पास जाना होगा," अज़राएल ने जवाब दिया। "मुझे जो करना है, वह अभी करना होगा, और मुझे 16 मई तक मेरठ वापस आना होगा, ताकि काम पूरा हो सके।" "और तुम नूरपुर क्यों नहीं जाते?" नवाब ने व्यंग्य करते हुए पूछा। "क्योंकि मैं वहाँ खुद को खतरे में डालने की हिम्मत नहीं कर सकता, नवाब; मुझे सब जानते हैं, और मेरा चेहरा इतना बदसूरत है कि कोई मुझे भूल नहीं सकता।" "हा हा हा! कमाल!" नवाब ने बीच में ही टोकते हुए हँसते हुए कहा; "तो तुम अब भी अंग्रेजों से डरते हो? जब कोई नहीं रहेगा, तो तुम और मैं एक जैसे हो जाएँगे। है ना?" "और तुम्हारे किले में कौन है, नवाब? मैंने सुना है कि तुम्हारे यहाँ कोई आया है," अज़राएल ने अचानक विषय बदलते हुए कहा। "वह दिल्ली से एक मौलवी है, और उसका नाम ज़िया ओल्ला है; अभी मुझे उसके बारे में बस इतना ही पता है।" "ज़िया ओल्ला!" अज़राएल चिल्लाया। "मैंने उसे देखा है, और शायद उसे

मैं याद हूँ। उसका और मेरा काम लगभग एक जैसा है, और मैं सुनना चाहूँगा कि वह क्या कहना चाहता है; मैं सीढ़ियों के दरवाजे पर आकर सुन सकता हूँ।" "लेकिन मेरे दोस्त, तुम्हें अंदर नहीं आना चाहिए," दिल खान ने कहा; "मौलवी एक पवित्र व्यक्ति हैं, और शायद उन्हें अपने धर्म के अलावा किसी और की उपस्थिति पसंद न आए।" "तुम 'काफ़िर' कहने वाले थे, नवाब," अज़रील ने अपने दाँतों के बीच बुदबुदाया; "जब हुरपेल सिंह तुम्हारा महल लूटेगा, तब मैं तुमसे बदला लूँगा;" और उसने ज़ोर से कहा, "मैं आऊँगा। अब जाओ, क्योंकि मेरी रोटी जल रही है, और देखो कि मेरे हाथी और मेरे लोगों को भी खाना मिल जाए।" नवाब ने अपने मेहमान को खिड़की पर हुक्का पीते हुए पाया, जो उसे परोसा गया था, और अपनी अनुपस्थिति के लिए क्षमा मांगी। "मैं हमेशा शाम की ठंडक में अपने बगीचे में टहलने जाता हूँ," उसने लापरवाही से कहा; "तुम इसे कल देखोगे।" "उल्लाह! मैं बहुत आभारी हूँ कि इतने कठिन समय और धर्म और सम्राट के लिए इतनी पीड़ा सहने के बाद आखिरकार एक सभ्य स्थान पर पहुँच गया हूँ और नवाब दिल खान बहादुर जैसा नेक और मेहमाननवाज मेज़बान पा रहा हूँ। ईश्वर और पैगंबर मोहम्मद की कृपा हो कि उनके इस दीन सेवक को उनकी नज़रों में जगह मिली है और मैं आपके साथ हूँ। इन कृपाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। एक आलीशान घर, एक मज़बूत किला और धर्म के शत्रुओं से उसकी रक्षा के लिए अनेक सेवक, जो शैतान की सेनाओं के समान ही असंख्य और बलवान हैं। वे सब उसके साथ नरक में जलें! एक बेहतरीन रसोइया भी है; और पुलाव, कबाब और कोरमा तो लाजवाब थे!" "आमीन!" नवाब ने श्रद्धापूर्वक कहा, "वे सब नरक में जलें! लेकिन वे कौन हैं, मौलवी साहब? हमने तो उनके बारे में सुना है..."
अज़राइल पांडे का मिशन। O57 रूसियों के बारे में, जो अंग्रेजों की तरह शापित नाज़रीन हैं, और फारसियों के बारे में, जो शापित शिया हैं, और "रूसी!" मौलवी ने कहा; "मेरे मित्र, तुम्हें किसने गुमराह किया है? क्या मैं कबूल से नहीं आया हूँ, जहाँ दुनिया के शरणस्थल, महामहिम ने मुझे एक मिशन पर भेजा था? और क्या मैं नहीं जानता कि वे और फारसी हमारे मित्र हैं, और अंग्रेजों को हमारे देश से भगाने आ रहे हैं? यह सब बहुत पहले तय हो चुका था, और अब उन्होंने अंग्रेजों को उनके ही देश में हरा दिया है, और वे तेजी से आ रहे हैं।" "और क्या वे अंग्रेजों से बेहतर होंगे?" नवाब ने पूछा। "बेहतर! मुझे तो ऐसा ही लगता है," आत्मविश्वास से भरा उत्तर था; "क्योंकि वे हमारे सेवक होंगे। ये अंग्रेज खुद को हमारे स्वामी कहते हैं, लेकिन, ईश्वर का

धन्यवाद, बहुत जल्द, उनमें से कोई नहीं बचेगा। कुछ ही दिनों में, सभी नष्ट हो जाएंगे और नरक में चले जाएंगे।" "अरे, क्या सचमुच ऐसा है? मैंने दूसरों से भी यही सुना है, लेकिन अभी तक यहाँ आस-पास इसका कोई संकेत नहीं है।" "और समय आने तक नहीं होगा," मौलवी ने उत्तर दिया; "और वह समय अब बहुत निकट है। सिपाही उन सबको मार डालेंगे, और हमें बस देखते रहना है और समय आने पर प्रहार करना है।" मौलवी को नवाब के भाषण में काफी अनिश्चितता का भाव दिखाई दिया, और सफलता की उनकी सबसे अच्छी संभावना सीधे मुद्दे पर आने में थी। "सुनो," उन्होंने आगे कहा; "जब हम अकेले हैं, तो सुनो वह नेक संदेश जो मैं तुम्हारे लिए जगत के शरणस्थल, हमारे स्वामी बादशाह से लाया हूँ। मुझे इसे तुम्हें बताने में कोई भय नहीं है, जिनके पूर्वजों ने सिंहासन की सेवा की और उससे सम्मान और पद प्राप्त किए। उन्होंने कुछ दिन पहले अपने दीन सेवक, मुझसे कहा: 'फुटतेहपुर जाओ; दिल खान बहादुर को दिया गया कुलीनता का प्रमाण पत्र ले जाओ; उसे मेरी ओर से कहो कि वह अपने पूर्वजों की तरह साहसी और वीर बने; मैं उन्हें जो सम्मान का वस्त्र भेज रहा हूँ, उसे पहनाऊँ और धर्म के एक योद्धा के रूप में उनका अभिनंदन करूँ। सूर्य और चंद्रमा के अस्तित्व तक, मैं उन्हें और उनके उत्तराधिकारियों को नूरपुर प्रांत, उसके सभी राजस्वों सहित, सदा के लिए प्रदान करता हूँ; और मैं उन्हें पाँच हज़ार सैनिकों के सेनापति के पद पर पदोन्नत करता हूँ, उपाधि सहित; – लेकिन नहीं, मैं अपने साथ लाया हुआ यह गौरवपूर्ण प्रमाण पत्र पढ़ता हूँ – और मेरे मित्र, इसके अर्थ पर मैं आपके साथ प्रसन्न हूँ। देखो, यह शाही मुहर है, और कुलाधिपति की, और दरबार के सभी अधिकारियों की। पुराने समय में इसकी कीमत एक लाख रुपये होती थी, अब यह आपको निःशुल्क मिल रहा है; और उन्होंने एक लंबा पत्र लहराया – कागज पर सुंदर ढंग से लिखा हुआ और सोने की धूल से सजा हुआ, लाल साटन पर जड़ा हुआ – नवाब की चकित आँखों के सामने, जिन्होंने उसे उठाया और उस पर मुहर लगा दी। 203 सीता = उसने अपनी आँखों और हृदय को छूते हुए, उठकर, शाही उपस्थिति के सम्मान में तीन बार प्रणाम किया। "आह! तो अब आप सम्मान का अनुभव कर रहे हैं," मौलवी ने कहा, "जैसा मैंने सोचा था; अब, इन मधुर शब्दों को सुनिए।" वे शब्द वास्तव में, जैसा कि वर्णन किया गया था, अत्यंत मधुर थे। अपने समस्त शौर्य के बावजूद, नवाब के पूर्वजों ने पहले कभी ऐसे सम्मान प्राप्त नहीं किए थे, और बहादुर की उपाधि ही शाही कृपा का एकमात्र प्रमाण थी। अब नवाब को "मूमताज़-उल-

उमरा", "मूनीर-उल-मूलक", "आफ़ताब-उद-दूजा", "नवाब मोहम्मद दिल खान बहादुर, फुत्च जंग" की उपाधि दी गई। यह सब सुनना कितना भव्य और प्रभावशाली था, उसकी महत्वाकांक्षा के लिए कितना सुखद! फिर नूरपुर प्रांत के सभी विवरणों का, परगुनों या ज़िलों और उनके गाँवों का, प्राचीन 'लौदुर मुल' अभिलेखों के अनुसार, विस्तृत वर्णन किया गया। कोई भी हिस्सा नहीं छोड़ा गया, यहाँ तक कि हुरपाल सिंह की जागीर भी नहीं, जो कि वफ़ादार साबित होने पर उसे सौंप दी गई थी। नवाब को इस पर मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था। "क्या यह सच है, ओह क्या यह सच है?" वह काँपते चेहरे के साथ चिल्लाया। "रुको," मौलवी ने कहा, जो एक पल के लिए अपने कमरे में गया और वापस आया, "देखो! अगर मेरा मित्र संतुष्ट नहीं है, तो मैं उसकी नज़र में मिट्टी हूँ; मुझे इसे अभी पहनने दो, कल दरबार में सभी इसे देखेंगे।" यह पीले रेशम का एक ढीला-ढाला सम्मान का वस्त्र था, जिस पर छोटे-छोटे लाल फूल छपे हुए थे। दिल खान शाही रंग और पैटर्न को जानता था; और जैसे ही मौलवी ने इसे अपने कंधों पर डाला, एक चमकदार झिलमिलाते हार के साथ, उसने वस्त्र के किनारे को पकड़ा और उसे श्रद्धापूर्वक चूमा; उन्होंने कहा, "मैं इस सम्मान के योग्य नहीं हूँ, मैं तो बस दुनिया के शरणस्थल का एक बहुत ही विनम्र दास हूँ।" "नवाब साहब, आपको मुबारकबाद," अजरील ने अपनी बुलंद और गहरी आवाज़ में कहा। वह सीढ़ियों के दरवाज़े के पीछे बैठा था और यह सब देख रहा था, उसने चुपके से खुशी से बातचीत सुनी थी; "गरीब जोगी का आशीर्वाद पाइए, और आपकी प्रतिष्ठा और समृद्धि बढ़ती रहे," और वह बाहें फैलाकर आगे बढ़ा। अजरील ने अपने शरीर पर ऊनी सर्ज की पतली कमरबंद के अलावा कुछ नहीं पहना था, जिसमें उसने अपना खाना पकाया और खाया था, और उसका सिर खुला था; उसका शरीर जाति के चिह्नों से ढका हुआ था, और उसके माथे के बीचोंबीच लाल रंग का एक बड़ा धब्बा लगा हुआ था। उसका दुबला-पतला, लंबा, कमजोर शरीर अब कई बत्तियों वाले बड़े दीपक की रोशनी में पूरी तरह से दिखाई दे रहा था, और उसका क्रूर चेहरा नवाब के साथ रहने के समय से भी अधिक भयानक और घृणित लग रहा था। "तला-होन-इल्ला!" मौलवी ने हैरानी से पीछे हटते हुए कहा, "उस टैग-फुर-ओल्ला।" तुम कौन हो, के पुत्र? अज़राइल पांडे का मिशन। 259 — "हे शैतान, पवित्र मुसलमानों की उपस्थिति में यहाँ घुसपैठ करने की हिम्मत कैसे की? काफ़िर, दफ़ा हो जा!" "अगर तू तमीज़ से बात नहीं करेगा," अज़राइल ने दाँत पीसते हुए कहा, "मैं तेरा गला घोंट दूँगा; और

तुझे सियार और गिद्धों के सामने फेंक दूँगा। मैं कौन हूँ? वहाँ उससे पूछ, वो मुझे अच्छी तरह जानता है।" "शांति!" नवाब चिल्लाया। "हे मित्र," उसने दूत से आगे कहा, "ये अज़राइल पांडे हैं, और जब अंग्रेज़ इनका पीछा करते हैं, तो मैं इन्हें शरण देता हूँ।" "अज़राइल पांडे! आह! मैंने तुम्हारे बारे में सुना है," मौलवी ने उस भयानक आकृति से दूर हटते हुए कहा। "अगर तुम वही हो, तो क्या तुम एक बार दिल्ली में थे, और कुछ दिन पहले मकरूत में थे?" "मैं मकरूत में था, और रास्ते में अपने हाथी पर सवार होकर तुमसे मिला था।" "आह, मुझे अब याद आया, वो 'पागल जोगी', जैसा कि लोग कहते थे, जो चिल्लाता था, 'अंग्रेजों का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा! अंग्रेजों का नाश हो!'" "अब चिल्लाओ, अंग्रेजों का नाश हो! उन्हें मरने दो, जैसे वे मरेंगे, शीघ्र ही," अज़राइल चिल्लाया। "लेकिन ये क्या नाटक है?" और उसने नवाब का वस्त्र खींचा। "क्या तुम बच्चे हो, दिल खान, जो एक खिलौने से पकड़े जाओगे?" "यह कोई खिलौना नहीं है, मित्र," नवाब ने अकड़कर उत्तर दिया। "मैं 'मूमतेज़-उल-उमरा' हूँ; मैं अब दिल खान को नहीं जानता। पेटेंट देखो!" "बेचारा घमंडी बच्चा," अज़राइल ने कहा; "और इस चीनी के साथ क्या आया है?" और उसने काम शुरू किया। "ये लोग तुम्हें कौन सा खिलौना भेज रहे हैं?" "इसे मत छुओ, वस्त्र को मत छुओ—राजाओं के राजा का उपहार!" मौलवी ने अपने हाथ फैलाते हुए चिल्लाया। "तौबा, तौबा! धिक्कार है, यह तो अपवित्रता है!" "नव, इसे गला घोंटकर मार देना ही बेहतर है। यह जीने के लिए बहुत अधिक पवित्र है;" और अपनी कमर से एक छोटा पतला रूमाल निकालकर, अजराइल उसे अशुभ ढंग से पकड़ने लगा। "मुझे अपनी आस्था की प्रार्थना करने दो, और मैं मर सकता हूँ," मौलवी ने शांत भाव से कहा। वह कम से कम कायर तो नहीं था; और वास्तव में, अजराइल ऐसा लग रहा था मानो उसने जो कहा था, वह सच था। "अरे! चलो दोस्त बन जाते हैं, मौलवी साहब; बस शिष्टता बरतें, क्योंकि मैं ब्राह्मणों का ब्राह्मण हूँ," उसने जल्दी से कहा, "और तुमसे अधिक पवित्र हूँ, हे नीच पुजारी! जिसने संसार के शरणस्थल, बेचारे बूढ़े व्यक्ति को देखा है। क्या तुमने दिल्ली में उस न्यायाधीश को देखा है, जो रात में आया था, और तुम सबको तैयार रहने को कहा था, क्योंकि समय निकट था? अब हम यहाँ साथ हैं, और एक ही झगड़े में काम करने वाले दो लोगों को एक-दूसरे का अपमान नहीं करना चाहिए। सुनो; आज भी, आपका वह मित्र, इस महान उद्देश्य के प्रति उदासीन था; यदि आप 5) ' ?

260 सीता। इन छोटी-छोटी बातों से उन्होंने जो हासिल किया है, वह अच्छा ही हुआ है। दिल खान, यह कैसा है?" नवाब ने बारी-बारी से हाथ फैलाते हुए उत्तर दिया, "मित्रों, झगड़ा मत करो; मुझे अपनी इच्छा अनुसार कुछ दो। अंग्रेजों को उनकी नियति के अनुसार मरने दो, और सम्राट और धर्म की समृद्धि हो। दीन! दीन! अगर मैं अभी मर जाऊं, तो मैं खुश रहूंगा।" हमें आगे हुई चर्चा का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन वे कई बिंदुओं पर सहमत हुए: पहला, कि वे 16 मई के उदय पर नजर रखेंगे, जब, जैसा कि मौलवी ने कहा था, मेरठ, दिल्ली और अन्य स्थानों पर सभी अंग्रेज मारे जाएंगे; उसके बाद, मौलवी द्वारा लाया गया उद्घोषणा जारी किया जाएगा। यदि नूरपुर की चौकी में सुधार हुआ, तो अच्छा है; यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अज़िएल पांडे ने वादा किया कि वह भेस बदलकर सिपाहियों के पास जाएगा और उन्हें भड़काएगा, जब नवाब अपना झंडा फहराएगा और अपने पाँच हज़ार सैनिकों को इकट्ठा करेगा। इसलिए, बहुत विचार-विमर्श के बाद, योजनाओं पर रात ढलने तक चर्चा हुई, और जैसे ही अज़िएल उन सीढ़ियों से नीचे उतरा जिन पर नवाब ने उसे उतारा था, उसने कहा, "मैं सुबह होने से पहले हुरपाल सिंह के पास जाऊँगा! मुझे जो करना है वह रुक नहीं सकता, और अगर मैं ब्रैंडन को मार गिराता हूँ, तो आपका एक दुश्मन कम हो जाएगा। मैं आपको सुरक्षित हाथों में छोड़ रहा हूँ, और संतुष्ट हूँ।" फिर नवाब ने पेटेंट और सम्मान का वस्त्र ज़सेनुत-बी के पास ले जाकर उसके गले में बाउब्लो का हार पहनाया; लेकिन उसने "महिलाओं की सितारा" से मिलने की हिम्मत नहीं की, जो घर में फैली खबर से बहुत परेशान और दुखी थी। अध्याय 33 बासा संस, सेरिष्टदार, श्री ब्रैंडन के साथ व्यापार कर रहे थे, जब वामुन भूत शाहगंज से निकलने के तीसरे दिन देर शाम नूरपकोर पहुँचे। बैंकर के घोड़े ने उन्हें बड़ी शान से पहुँचाया था। वे गर्मी और थकान से चूर थे; लेकिन आराम करने से पहले वे तुरंत श्री ब्रैंडन के घर गए, अपना संदेश दिया और पंचायत में जो कुछ देखा था उसका वर्णन किया। ये विवरण दोनों के लिए अप्रत्याशित थे और उन्हें बहुत परेशान और नाराज़ कर दिया। सब कुछ सुनने के बाद, वे इस बात पर सहमत हुए कि अब एक ही रास्ता बचा है - तुरंत शाहगंज लौटना; और कुछ आवश्यक तैयारियों के लिए एक दिन का समय लगेगा, और श्री ब्रैंडन के घोड़ों और कुछ कुलियों को पड़ावों पर भेजना होगा। पुनर्मिलन। 261 एए रोड पर, वामुन भूत आराम कर सकते थे और सेरिष्टदार के साथ आने की तैयारी कर सकते थे, जो धीमी गति से यात्रा करेंगे। हालाँकि, नूरपुर छोड़ने

से पहले, ब्रैंडन सीता के खिलाफ लगाए गए घृणित आरोप के स्रोत का पता लगाने के लिए उत्सुक थे। सुनार नंदा, बाबा साहब और उनकी पत्नी, जिन्हें वह एक चुगलखोर मानते थे, दोनों को अच्छी तरह से जानते थे, और उन्होंने उस रात मामले की तह तक छानबीन करने और सुबह परिणाम बताने का जिम्मा लिया। शाम के भोजन पर, सिरिल ने महिलाओं को बताया कि शाहगंज में उनकी उपस्थिति अपरिहार्य है, और उन्हें कम से कम कुछ समय के लिए उन्हें छोड़ना होगा, क्योंकि उनका जिला कार्य लगभग पूरा हो चुका था, और उन्हें उम्मीद थी कि वे जल्द ही लौट सकेंगे। वे बहुत दुखी और आहत हुईं; क्योंकि समय कितना भी कठिन क्यों न हो, वे सिरिल में एक सच्चा सहारा देखती थीं, और उनका आत्मविश्वासपूर्ण, हंसमुख व्यवहार अक्सर बुरी आशंकाओं को दूर कर देता था, हालाँकि अभी तक कोई वास्तविक खतरा स्पष्ट नहीं था। उन्होंने उसे विदाई नहीं दी, क्योंकि वह अगले दिन शाम तक उनके साथ ही रहेगा। हालाँकि, महिलाओं के जल्दी सोने चले जाने के बाद, क्योंकि उस रात कोई संगीत कार्यक्रम नहीं था, सिरिल ने अपने दोस्त को सिगार पीते हुए सारी घटना बताई और उससे सलाह मांगी कि उसे क्या करना चाहिए। सिरिल ने जब पहली बार इस घोटाले के बारे में सुना था, तब वह राम दास को कड़ी सजा देने के लिए उत्सुक था; लेकिन विचार करने के बाद, उसने सोचा कि बेहतर होगा कि वह सेक्टा के खिलाफ जातिगत फैसले पर ध्यान न दे और नरेंद्र को अपना काम करने दे; और श्री मोस्टिन भी पूरी तरह से इसी राय के थे। “जातिगत मामलों में न्यायिक रूप से हमारा कोई अधिकार नहीं है,” उन्होंने कहा, “सिवाय इसके कि वे अपील के विषय बन जाएं; और तब भी, किसी भी हस्तक्षेप का कोई औचित्य नहीं है। यह संभव है कि नरेंद्र ने अपनी पोती को प्रवेश देने में नियमों का उल्लंघन किया हो, और वह इस बारे में आपसे कहीं बेहतर निर्णय ले सकता है। राम दास की बात करें तो, राजद्रोहपूर्ण अभिव्यक्तियों के लिए वह स्पष्ट रूप से अभियोज्य है, और तहसीलदार और उसके दारोगा द्वारा उसे कैद करना एक साहसिक कार्य था। केवल अफ़सोस की बात यह है कि हमारा संप्रदाय इस सब में शामिल है, और इसलिए आपके हाथ बंधे हुए हैं; यदि आप उदार होकर उसे मामूली जुर्माने के साथ छोड़ सकते हैं, और भविष्य में उसके अच्छे व्यवहार के लिए ज़मानत ले सकते हैं, तो मैं कह सकता हूँ कि इससे भी उसकी ज़ुबान नहीं रुकेगी; फिर भी, उसके जैसे कई बुरे लोग हैं जिन पर हम ध्यान नहीं दे रहे हैं, और हमें बस सही समय का इंतज़ार करना होगा। लेकिन क्या आप सही हैं, सिरिल, इन भयानक

समय में अकेले जिले में जाना? आप किस पर भरोसा कर सकते हैं? अगर यहाँ कोई प्रकोप फैलता है तो क्या होगा? मेरे बेचारे, आप तक कोई मदद पहुँचने से पहले ही आप अलग-थलग पड़ सकते हैं, भले ही हम कुछ भेज भी पाएँ। मुझे लगता है कि आपके लिए बेहतर होगा कि आप अपने सेरिश्तदार को शाहगंज में स्थिति स्पष्ट करने के लिए भेजें। मुझे लिखें।

262 सीता। सीता, तुम अपने साथ आओ और हमारे साथ रहो।" निःसंदेह सलाह अच्छी थी और सच्चे स्नेह से दी गई थी: हालांकि जहाँ वह था वहीं रहना बहुत सुखद होता। लेकिन सिरिल संतुष्ट नहीं था। "मैं सबसे आखिर में निकलूँगा," उसने कहा, "और जब तक हो सकेगा, मैं लोगों के बीच घूमूँगा और उन्हें वफादार रखूँगा। अगर मैं खुद को यहाँ बंद कर लूँ, तो मैदान किसी भी गद्दार या साहसी व्यक्ति के लिए खुला हो जाएगा, जो सबको गुमराह कर सकता है। नहीं, फिलिप, मेरा कर्तव्य कुछ समय के लिए है और मुझे इसे पूरा करना ही होगा। तुम जानते हो कि तुम्हारे पास मेरे सारे कागजात हैं, अगर कुछ भी कागजी कार्रवाई हो तो।" "ठीक है, मैं भी ऐसा ही करता," उसने उत्तर दिया, "अगर मैं तुम्हारी जगह होता। लेकिन कृपया, सिरिल, हर सावधानी बरतो और अपनी प्यारी पत्नी से कहो कि वह कान खुले रखे; हो सकता है वह तुमसे ज्यादा सुन ले।" "मैं, फिलिप, हम सबके भले के लिए बहुत सावधान रहूँगा। मुझे सबसे ज्यादा चिंता हुरपाल सिंह के रवैये को लेकर है।" अगर वह वनवासियों को उकसाएगा, तो वे बहुत परेशानी और गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। हालांकि, मुझे लगता है कि मेरे पुराने शिकार साथियों में मेरा कुछ प्रभाव है।" फिर वे रात के लिए अलग हो गए, और अगली सुबह बाबा साहब सुनार नंदा की पत्नी के साथ आए, जिसने अपना चेहरा साड़ी में छिपा लिया और खूब रोई। "मैंने सब पता लगा लिया है," सेरिष्टदार ने विजयी भाव से कहा, "और यह कहानी शुरू से अंत तक मनगढ़ंत है; लेकिन क्या यह अजीब नहीं है, श्री बियांडन, कि यह आपके ही लोगों में से—यहाँ की महिलाओं में से, या उनमें से कुछ में से—उत्पन्न हुई हो?" उन्होंने अधिक सावधानी से कहा। फिर उन्होंने वही सब बताया जो हम पहले से जानते हैं, कि कैसे श्रीमती स्मिथ की आया, जो एक ईसाई महिला थीं, ने सुनार की पत्नी को बहकाया, कैसे उन्होंने सेता तक पहुँच बनाई और उसे डराया, कैसे सिरिल और मिस मोस्टिन के होने वाले विवाह की खबर फैलाई गई, और कैसे अंत में, आया के इस आश्वासन पर कि सेता अब स्वाभाविक रूप से मिस्टर ब्रैंडन और मोस्टिन परिवार के

साथ खाती-पीती है, सुनार की पत्नी ने बिना सोचे-समझे एक और जातिगत झगड़े की संभावना के बारे में बात कर दी। “आप उनसे खुद पूछिए, महोदय; अगर वह डरी हुई नहीं हैं, तो वह आपको मुझसे ज्यादा बता सकती हैं।” लेकिन सिरिल के आश्वासन और सच बोलने के आग्रह के बाद भी वह महिला डरी नहीं। वह जिम्मेदारी दूसरे पर डालने से बहुत खुश थी। उसने पहले कही हुई सारी बातें विस्तार से दोहराईं और अपनी कहानी यह कहकर समाप्त की कि आया बाज़ार से किराए पर लिए गए टट्टू पर सवार होकर दल के साथ गौमुख तक गई थी; और स्वयं अनुष्ठान करने का नाटक करते हुए उसने...
पुनर्मिलन। 263 और उसे तंबुओं में ले गए। और ओवनिंग में वह उनके आसपास घूमती रही और अंदर गाते हुए सुना, जब तक कि टट्टू का मालिक और नहीं रुका और उसे वापस नूरपुर ले आया। यह सचमुच एक रहस्योद्घाटन था, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी! उसे अब याद आया कि उसने एक महिला को उस मंदिर में अकेले देखा था; लेकिन उसने उसे एक ग्रामीण समझ लिया था, क्योंकि वह वहाँ पूजा कर रहे ब्राह्मणों और अन्य लोगों के बीच थी। क्या उसे इसका आधिकारिक संज्ञान लेना चाहिए और निंदा करने वाले को सौंपने की मांग करनी चाहिए? हालाँकि, उसने देखा कि इससे कई जटिलताएँ उत्पन्न होंगी: छावनी पर उसका कोई वास्तविक अधिकार क्षेत्र नहीं था, जिसकी अपनी पुलिस थी; और न ही वह महिला अपने लिए काम कर रही थी। वह जानता था कि श्रीमती स्मिथ की हर तरह के विषयों में पूछताछ करने की प्रतिभा निरंतर अभ्यास में थी; लेकिन उसकी बेचारी सीता ने उसकी दुर्भावना को क्यों उकसाया होगा, यह वह समझ नहीं पा रहा था। भविष्य में सीता में उसकी विशेष रुचि को रोका जा सकता है, लेकिन अतीत को सुधारा नहीं जा सकता; नाश्ते के बाद, जब सिरिल ने अपने दोस्त को अपनी सारी खोजों के बारे में बताया, तो उसने पाया कि उसका भी वही मत था जो उसका था। फिलिप ने कहा, "ऐसा क्यों है कि हर स्टेशन पर हमें ऐसी ही औरतें मिलती हैं, जो अपनी नीच कल्पनाओं में डूबी रहती हैं?" सिरिल ने जवाब दिया, "मुझे लगता है कि दुनिया भर में लगभग यही हाल है, और कभी-कभी इसमें मर्द भी शामिल होते हैं।" मोस्टिन ने कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कहूँगा, और अगर कोई ऐसा बदमाश है भी, तो उसे चुप कराया जा सकता है; लेकिन हममें से कोई भी ऐसी औरतों के झूठ और शरारतों को नहीं रोक सकता।" "मैं कम से कम इस मामले में तो कोशिश करूँगा, फिलिप। मैं बेचारी सीता को श्रीमती स्मिथ जैसी औरतों का

शिकार नहीं बनने दे सकता। मैं अभी उसे पत्र लिखूँगा, उसे सब कुछ बताऊँगा, और उससे कहूँगा कि वह आगे दखल न दे; मुझे नहीं लगता कि वह अपने पति को यह बात बताएगी; और अगर उसने बताया भी, तो वह उस पर कड़ी कार्रवाई करेगा, क्योंकि वह वास्तव में एक दयालु और नेक इंसान है।" और सिरिल ने लिखा, और श्रीमती स्मिथ ने उसका पत्र अपने पति को नहीं दिखाया; वह अब शायद पहले से भी ज़्यादा द्वेषपूर्ण हो गई थीं, और उन्होंने जो किया, उसका वर्णन उचित समय पर किया जाएगा। इस बीच सीता कई कारणों से बहुत तंगी में और दुखी थीं। उनके दादाजी ने जियो मुख में हुई घटनाओं की घिनौनी कहानी पर विश्वास नहीं किया, और इससे उन्हें कुछ हद तक तसल्ली मिली; लेकिन अब वे घरेलू कामों में उन्हें उनसे अलग रखने में ज़्यादा सख्त हो गए थे; उन्होंने उन्हें खाना पकाने के लिए एक अलग जगह दी, और उनके पानी के बर्तन अलग से भरे जाते थे। यहाँ तक कि जब धोबिनें उनके कपड़े लाती थीं, तो उन्हें भी अलग रखा जाता था।

264 सीता। नरेंद्र अपने ही घर में रहते थे और सीता द्वारा उन्हें छूए जाने पर आपत्ति जताते थे, चाहे वे बैठे हों या चल रहे हों। इन सब बातों से सीता को गहरा दुख और मन में बेचैनी होती थी। नरेंद्र ने घर के शुद्धिकरण के लिए जारी जातिगत फरमान पर कोई आपत्ति नहीं जताई; उनका मानना था कि अगर कोई और होता तो वे ऐसा ही आदेश देते, और वामुन भूत के लौटने तक वे इसकी तैयारी कर रहे थे। उन्होंने सीता को पुजारी के घर भेजने की संभावना पर भी विचार किया था, यदि पंचायत सदस्य अधिक परेशान करने लगें; लेकिन राम दास के कैद होने से कुछ सदस्यों की धमकियाँ रुक गईं और उन्हें आगे परेशान नहीं किया गया। हालाँकि, इन सबमें चाची एला का व्यवहार सीता के दिल को सबसे ज्यादा चोट पहुँचाता था। अब उन्हें उस प्यारी बुढ़िया की बाहों में नहीं ले जाया जाता था, न ही उन्हें बच्चे की तरह दुलार किया जाता था, जैसा कि वे पहले चाहती थीं और पसंद करती थीं, और न ही उनकी चाची उनके कोमल लहराते बालों को सहलाती थीं और उंगलियों से छूती थीं; सीता की चाची ने उसे कभी यह पहनने या वह पहनने के लिए नहीं कहा, और न ही वह अब सुबह-शाम की प्रार्थना के समय प्रार्थना कक्ष में आती और पहले की तरह अपनी कर्कश, खुरदरी आवाज़ में बीच-बीच में उसमें शामिल होती। अगर सीता उनके पास नहीं आती, तो चाची हिला दूर हट जातीं अगर वह बैठी होतीं, या उससे संपर्क से बचती अगर वह खड़ी होतीं या इधर-उधर घूम रही होतीं। वह सीता को चावल और भोजन सामग्री भी

थाली में परोसतीं, मानो किसी अजनबी या नीची जाति के व्यक्ति को दे रही हों, हाथों से नहीं। जहाँ तक चांदी और तांबे के बर्तनों की बात है, चाची हिला उन्हें आग में से गुजारने से पहले छूती भी नहीं थीं; लेकिन अब यह काफी नहीं था, और एक नौकर को यह काम करना पड़ता था। देखने में तो ऐसा लगता था कि चाची हिला ने अपने "भुगुट" के प्रति पूरी श्रद्धा से समर्पण कर दिया है, जो उनके लिए बहुत ही शिक्षाप्रद हो सकता है, लेकिन बेचारी सीता के लिए अत्यंत कष्टदायक था। वह सुबह बहुत जल्दी उठ जाती, ठंडे पानी से स्नान करती, सुबह की पूजा करती और फिर एक अंधेरे कमरे के कोने में जाकर सिर झुकाए किसी योगी या गंभीर बैरागी की तरह बैठ जाती, माला जपती और हर मनके पर जितनी जल्दी हो सके 'राम' का उच्चारण करती; कभी-कभी वह 'सेक्ट' भी बोलती, यानी 'राम, राम, सीताराम', जो उसकी ज़बान से आसानी से निकलता था; लेकिन यह नाम उसे परेशान करता प्रतीत होता और वह इसे छोड़कर एकरस 'राम! राम! राम!' का उच्चारण करने लगती, जो एक हज़ार या पचास मनके पूरे करते-करते मेंढक की आवाज़ जैसा लगने लगता। आंटी एला कोई हिसाब-किताब रखने वाली नहीं थीं; लेकिन वह जानती थीं कि माला को कुछ बार पलटने से एक हज़ार मनके बनते हैं, और जब वह एक मनके पर पहुँच जातीं, तो माला को घुमाकर वापस उसी रास्ते से चली जातीं। दिन भर और देर रात तक, सिवाय उस समय के जब वह मंदिर में होती थी या घर के कामों में लगी होती थी, जिन्हें वह नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी, वही "राम! राम!" की आवाज़ गूंजती रहती थी।

पुनर्मिलन। 265 राम! यह नीरस और उबाऊ दोहराव में चलता रहा; और वह भली महिला सचमुच यह मानने लगी थी कि वह अपनी नाक का सिरा देख सकती है, जो किसी योगी के योग्य तपस्वी जैसा कारनामा था, लेकिन उस अंग की प्राकृतिक छोटी नाक के कारण यह असंभव सा लगता था। हालाँकि, मुझे प्यारी आंटी एला के साथ न्याय करना होगा। वह उतनी कठोर नहीं थीं जितना वह दिखावा करती थीं, और न ही उनका कठोर तप उनके स्वभाव की कोमल मानवता को पूरी तरह कुचल रहा था। वह मंदिर वही जगह थी जहाँ उन्होंने अपनी प्यारी बेटी को श्री ब्रैंडन को सौंपा था और उसे आशीर्वाद दिया था; और सफेद तंबू उसी के पास लगे हुए थे जैसे उस अविस्मरणीय दिन लगे थे। अब, जब वह उन्हें देखतीं, जब उन्हें याद आता कि सीता पुजारी के कमरे से आकर श्री ब्रैंडन के चरणों में गिर पड़ी थीं, तो उनका हृदय भर आता, उनकी बूढ़ी

आँखों से आँसू बहने लगते, और उनका हृदय सीता के लिए तड़प उठता, चाहे वह कितनी भी जिद्दी क्यों न हो, लेकिन जिस पर उन्हें स्नेहपूर्वक विश्वास था, वह दूषित नहीं थी। सीता, लोएवर, प्रेम के ये उद्गार तुम्हारे लिए कभी नए नहीं थे; और अपनी जाति को अक्षुण्ण रखने और अपने कठोर धार्मिक अनुष्ठानों को जारी रखने के लिए, वह बार-बार "राम! राम! राम!" का आह्वान करती रहती थी। कभी नहीं हुआ। कितनी बार, जब सीता उस अंधेरे कमरे से गुज़रती और कोने में बैठी उस गंभीर आकृति को देखती, तो आंटी एला अपने बच्चे के आने के लिए तड़पती; और शायद अगर सीता जाकर उस प्यारे बच्चे को गले लगा लेती, तो आंटी एला का पुराना स्नेह फिर से जाग उठता; लेकिन सीता डरती थी। एक-दो बार अनजाने में, एक शब्द या जुबान से, उसने अपनी आंटी का हिसाब बिगाड़ दिया था, जो अपनी माला भूल गई थीं, और उन्हें इतनी तीखी डांट पड़ी थी कि वे रोने चली गई थीं। अब क्या किया जाए? अपने सबसे प्रिय और सम्मानित लोगों के साथ-साथ अपनी जाति के लोगों द्वारा भी ठुकराई और उपेक्षित, सीता को चैन नहीं मिलता था। कभी-कभी वह अपनी पुरानी खिड़की पर, घुटनों पर अंग्रेजी की किताबें और पास में शब्दकोश लिए, स्वप्निल होकर बैठ जाती और सफेद तंबुओं को देखती, जो अभी भी खड़े थे, लेकिन, अफसोस! अब खाली थे। कभी-कभी वह अपने दादाजी की पालकी लेकर बगीचे में जाती और आम के पेड़ों की घनी छाया में बैठकर पढ़ती, जो अब फलों से लदे हुए थे। पकते हुए फल, बेचैनी से एक शाखा से दूसरी शाखा पर उड़ते तोतों के चीखते झुंड को देखना, या कबूतरों की कोमल गुटरगू सुनना, और कुएं से पानी खींचने वाले बैलों के लिए माली का एकरस गीत, और बगीचे में बहने वाले कुंड में गिरते पानी की सुखद आवाज़। मुझे लगता है कि सीता को उस समय यही एकमात्र राहत मिली थी: क्योंकि, जैसे ही वह अपने घर में वापस आती, उदास, गड़गड़ाती "राम! राम!" की आवाज़ उसके कानों में पड़ती, और अंधेरे कमरे में बैठी गंभीर आकृति को बिना मौन श्रद्धा के अनदेखा नहीं किया जा सकता था, जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता था। लड़की अपने लिए कितनी तरस रही थी!

266 सीता। पति की वापसी! वह जानती थी कि इसमें ज़्यादा देरी नहीं हो सकती, और वह रोज़ाना बदलते दृश्यों और स्थानों, और उनकी मधुर संगति की फिर से प्रतीक्षा करते हुए कितनी प्रसन्न थी। फिर भी, उसे घर की याद अभी तक नहीं आई थी। अगर उसके दादा और चाची उसके साथ पहले की तरह व्यवहार करते, तो वह

उनके साथ एक चिड़िया की तरह खुश रहती; लेकिन बनारस की यात्रा के बाद से, उनके जीवन की बढ़ती तपस्या ने उनके दिलों को उसके प्रति कठोर बना दिया था, और ऐसा लग रहा था मानो पुराने प्यारे दिन हमेशा के लिए बीत गए हों। सिरिल ने अपनी यात्रा में देरी नहीं की, और तय समय पर शाहगंज पहुँच गए। पुलिस के दारोगा ने बैंकर के यहाँ फोन करके बताया था कि श्री ब्रैंडन अगली सुबह पहुँचेंगे; और सीता का दिल खुशी से उछल पड़ा, जब उसने अपनी खिड़की से शिविर को देखा, और ध्वजदंड पर प्रसिद्ध अंग्रेजी ध्वज को सुबह की हवा में लहराते हुए देखा। सीता ने तुरंत भेकमी को वे दो व्यंजन देकर भेज दिए जो वह सुबह होने से पहले से ही सिरिल के नाश्ते के लिए तैयार कर रही थी, और साथ में एक छोटा सा प्यारा सा नोट भी दिया जिसमें उसने पूछा था कि सीता कब आ सकती है, क्योंकि उसे बहुत कुछ कहना था। सिरिल, जो घोड़े से उतरते ही अकड़ गया था, थोड़ा इधर-उधर घूमकर मंदिर के प्रांगण में चला गया और छत पर खड़ा होकर उम्मीद कर रहा था कि सीता उसे अपनी खिड़की से देख लेगी, तभी चाची एला मंदिर के पीछे से अपने चक्कर लगाते हुए आईं और हमेशा की तरह "राम! राम!" चिल्लाने लगीं। उनका सिर ढका हुआ नहीं था और उनकी खोपड़ी तेज धूप में चमक रही थी; उनका वस्त्र उनके घुटनों से काफी ऊपर तक उनकी टांगों के बीच दबा हुआ था, और उनके एक हाथ में पानी और बेल के पत्तों से भरा पीतल का लोटा था, और दूसरे हाथ में उनकी बांस की छड़ी थी। उन्होंने सिरिल पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन सिरिल को यकीन था कि उसके पास से गुजरने वाली वह अजीब सी आकृति चाची एला ही होंगी, और जब वह लौटीं तो उसने उन्हें पुकारा, "चाची एला, इधर आइए और मुझसे बात कीजिए। सीता कैसी हैं?" बेचारी आंटी एला! उनका दिल धड़क रहा था। अपने बेटे के पास जाने के लिए, उसे अपने हाथों से सहलाने के लिए, और हमेशा की तरह अपनी उंगलियां चटकाने के लिए, वह क्या कुछ नहीं दे देतीं? थोड़ी ही देर में वह अपने दोनों हाथ उनकी ओर बढ़ा रहा था और अपने पुराने प्यारे अंदाज़ में मुस्कुरा रहा था। वह अपना लोटा नीचे रखकर उसके गले लगकर अपना सारा दुख बयां करने के लिए अपनी सारी संपत्ति दे देतीं। बेचारी! सेक्टा से इसे छुपाना एक बहुत बड़ा संघर्ष था: लेकिन यह उससे भी बुरा था, क्योंकि सिरिल के लिए उनका प्यार और सम्मान बहुत गहरा था। फिर भी भयानक "भुगुट" उनके बीच आ गया। वह गिनती भूल गई थीं, और यह भी भूल गई थीं कि उन्होंने कितनी बार मंदिर के चक्कर लगाए थे, और सब कुछ फिर से करना होगा! इसलिए,

अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से ठंडी, बेजान निगाहों से देखते हुए, आंटी एला आगे बढ़ गईं, और "राम! राम! राम!" फिर से शुरू हो गया।
पुनर्मिलन। 267 ‘सीता के बारे में एक शब्द भी नहीं! उस बुढ़िया को क्या हो गया है?’ सिरिल ने मन ही मन कहा। ‘ठीक है, मैं शाम को उससे मिलूंगा और उनके बारे में सब कुछ सुनूंगा।’ फिर, कार्यालय के समय, सभी लोग हमेशा की तरह इकट्ठा हो गए, और उसका दिन व्यस्त रहा; और भोजन करने के बाद, वह अपने तम्बू के बाहर सीता के लिए उसकी कुर्सी लगाकर बैठा था, तभी उसने उसकी पालकी को ढलान पर आते देखा और उससे मिलने चला गया। मुझे उस सुखद शाम के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है; लेकिन सीता पिछले कुछ दिनों की घटनाओं का विवरण नहीं देना चाहती थी। “वह उसे किसी और समय बताएगी,” उसने कहा, “जब वामन भूत आएंगे; लेकिन अभी नहीं। उन्हें बीते हुए समय से क्यों परेशान होना चाहिए? हमारे लोग जितना हो सके उतने दयालु रहे हैं,” और उसने बस इतना ही कहा। ‘क्या वह खुश थी?’ “मैं अब खुश हूँ, सिरिल,” उसने धीरे से कहा, जैसे ही उसने अपना चेहरा उसकी छाती में छिपा लिया, “लेकिन मैं खुश नहीं थी, और ओ! मुझे तुम्हारे लौटने की बहुत तीव्र इच्छा थी, पहले से भी कहीं अधिक, जब 'सफेद तंबू' हुआ करते थे। इसके तीन दिन बाद, जब बाबा साहब, वामुन भूत और सुनार की पत्नी आ गए, तो राम दास का मामला खोला गया, जिसमें वामुन भूत मुख्य गवाह थे। हालाँकि, उस व्यक्ति के विरुद्ध अन्य गवाहों की भी कमी नहीं थी; कई लोगों ने उसका राजद्रोहपूर्ण नारा, "अंग्रेज़ नहीं रहेंगे," सुना था और सभी उससे अपना संबंध मिटाना चाहते थे। सच कहें तो, राम दास द्वारा शाहगंज पर लगाए गए राजद्रोह के आरोप के कारण शाहगंज की वफ़ादारी या दिखावटी वफ़ादारी बुरी तरह से धूमिल हो गई थी; और कमिश्नर साहब को मिठाइयों, बादाम, किशमिश और मिश्री से भरी थालियाँ, फूलों की मालाओं के साथ, असामान्य रूप से अधिक मात्रा में भेंट की गईं। अंततः, राम दास को दोषी पाया गया, और श्री ब्रैंडन ने, क्योंकि यह उसका पहला अपराध था, उसे मामूली जुर्माना लगाया और उसे तथा उपस्थित सभी लोगों को उस समय की बुरी अफवाहों पर विश्वास न करने की चेतावनी दी। लेकिन राम दास को भारी भरकम ज़मानत में दो ज़मानतदार पेश करने का भी आदेश दिया गया। भविष्य में अच्छे आचरण और बुलाए जाने पर उपस्थिति के लिए कुछ राशियाँ तय की गईं; और जब उस व्यक्ति ने अदालत से अपनी जमानत की व्यवस्था करने के लिए कहा, तो सिरिल ने सोचा कि अज़राएल

पांडे के अलावा उसने कभी किसी का ऐसा चेहरा नहीं देखा था जिस पर इतना घृणा और द्वेषपूर्ण भाव हो। जहाँ तक पंचायत की बात है, वामुन भूत यह देखकर प्रसन्न हुआ कि वे सीता के विरुद्ध अपनी कार्यवाही और फैसले पर शर्मिंदा थे। जब नूरपुर के सुनार की पत्नी और वामुन भूत ने समझाया कि सीता के बारे में वह अफवाह कैसे फैली, जिस पर कई लोगों ने वास्तव में विश्वास किया था या विश्वास करने का दावा किया था, तो वे नरेंद्र को अपने घर को शुद्ध करने का आदेश भी वापस ले लेते; लेकिन बैंकर ने यह बात नहीं मानी, और इस मामले में प्रारंभिक कदम के रूप में, ब्राह्मण ने सीता से पूछा कि क्या वह दिन में वहाँ रह सकती है।

सीता अपने घर या मंदिर में बने अपने अपार्टमेंट में रहती थीं, जहाँ वह नहा-धो सकती थीं और खाना बना सकती थीं, और श्री ब्रैंडन के करीब रह सकती थीं, और आंटी एला भी उनके साथ होतीं; और, ज़ाहिर है, सीता को न तो मंदिर से कोई आपत्ति थी और न ही आंटी एला से। यह सब उस प्यारी बुढ़िया के लिए कितना सुखद बदलाव था! मैं यह नहीं कहूँगी कि वह बिल्कुल नहीं बदलीं, क्योंकि उनकी तपस्या, जो अब उन पर हावी हो रही थी, उनके मन पर अमिट छाप छोड़ चुकी थी; लेकिन सीता की निर्दोषता की निश्चितता, उनके खिलाफ़ फैसला वापस लिए जाने और शहर के ब्राह्मणों द्वारा उन्हें मान्यता दिए जाने से उन्हें बहुत सुकून और तसल्ली मिली। यह सच है कि सुनार जाति की औरतें उनसे मिलने-जुलने से इनकार कर रही थीं; लेकिन राधा और बाकी सब सीता के पास मंदिर गए, अपने बच्चों को साथ ले गए, और उन्हें समझाया कि वे गुड़ियों की दावत में क्यों नहीं आ सकते, और वे सब पुराने दिनों को याद करके हँसे और रोए। कम से कम, इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उनके पतियों ने उनके आने पर कोई आपत्ति नहीं जताई, या यह कि सेक्टा पुजारी के छोटे से कमरे में रहती थी: और अगर उसने जियो मुख में गाय का मांस खाया होता और शराब पी होती तो वह ऐसा नहीं कर सकती थी। कुछ समय के लिए, शाहगंज में 1914 की बुरी हवा शांत हो गई थी: लेकिन यह अन्य क्षेत्रों में फिर से उठ रही थी, और सिरिल ने उससे मिलने और उसे रोकने के लिए जल्दी की, जैसा कि उसने वहाँ किया था। बैंकर द्वारा शुद्धिकरण समारोह संपन्न किया गया था, सभी संतुष्ट प्रतीत हुए, और शाहगंज के सुनार जाति के सभी पुरुष, महिलाएं और बच्चे, सभी ब्राह्मणों के साथ, घर पर भोजन कर चुके थे, जबकि अन्य जातियों और गरीब लोगों ने बगीचे में दावत की। सिरिल संतुष्ट था कि वह उस भले बूढ़े व्यक्ति को शांति से छोड़ सकता है, और उसने

समारोह के अगले दिन शाहगंज छोड़ने का फैसला किया। सभी लोग उन्हें स्नेहपूर्वक विदाई देने आए, और कई बार तो उन्होंने इतना प्यार दिखाया जिसे वे ठुकरा नहीं सके और उन्हें शक करने का कोई कारण भी नहीं था। लेकिन बूढ़े लोगों और उनके बच्चे के बीच यह एक दुखद विदाई थी। आंटी एला, अपनी प्रार्थनाओं को भूलकर, सारा दिन पुजारी के कमरे में बैठी रहीं, खाना नहीं खाया, मुश्किल से कुछ बोलीं, लेकिन मन ही मन अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करती रहीं। उन्हें अब सीता के लिए मिस्टर ब्रैंडन के प्यार पर कोई शक नहीं था; इसका सबूत शब्दों और कर्मों दोनों में था, इसमें कोई संदेह नहीं था: लेकिन उन्हें उनकी कठिनाइयों, शायद उनके खतरे का भी सामना करना पड़ेगा, और वह खतरा क्या होगा यह केवल भगवान ही जानते थे। सीता ने उन्हें दिलासा देने की कोशिश की; और जब वह एक बार फिर अपनी आंटी के स्नेहपूर्ण हृदय पर सिर रखकर लेटीं, तो उन्होंने उनसे कहा कि वे डरें नहीं, क्योंकि वे सावित्री की तरह एक वफादार पत्नी थीं, और अपनी तमाम कठिनाइयों के लिए उस दयालु महिला को अंत में देवताओं ने पुरस्कृत किया था। शाम को नरेंद्र भी श्री ब्रैंडन के पास आए और उन्होंने भविष्य की घटनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की; और सिरिल ने उन्हें अंग्रेजी और हिंदी में तैयार किया हुआ एक ज्ञापन दिया।
तूफान से पहले की शांति। अपने लिए किसी अप्रिय दुर्घटना की स्थिति में सीता के लिए 69 पाउंड का प्रावधान रखा गया था। फिर वे सीता को लेने मंदिर गए, क्योंकि एक को छोड़कर बाकी सभी तंबू कुछ मील दूर एक गाँव में चले गए थे। आह! यह एक दुखद दृश्य था। बूढ़ा आदमी अपनी बच्ची को एक बार फिर अपने दिल से लगाए एक औरत की तरह रो रहा था, जबकि प्यारी चाची एला ने अपना चेहरा दीवार से लगा लिया और शोक से व्याकुल हो गईं, सीता और सिरिल की किसी भी सांत्वना को ठुकरा दिया। "मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगी, कभी नहीं," बूढ़ी औरत बस इतना ही कह सकी, "लेकिन वह आपकी है, महोदय, अब हमारी नहीं, केवल आपकी; वे हमें उसे रखने नहीं देंगे।" सिरिल के उन सभी के लिए उज्ज्वल भविष्य के आश्वासन से भी सीता को कोई सांत्वना नहीं मिली। यह असहनीय पीड़ा थी: और अंत में बैंकर ने सीता को उसके पति की बाहों में सौंपते हुए अपनी पुरानी दृढ़ आवाज में कहा, "श्रीमान ब्रैंडन, इसे ले जाइए, इसे अभी ले जाइए जैसे आपने पहले लिया था; हम आपको पहले से कहीं अधिक बेहतर जानते हैं, और मृत्यु तक इस पर आपका भरोसा करते हैं। जब बुरा समय थम जाएगा, और 1914 बीत जाएगा, यदि ईश्वर की इच्छा

हुई, तो हम फिर से खुशी-खुशी मिलेंगे: तब तक ईश्वर आप दोनों की रक्षा करें।"
“पहले भी तुम मेरा आशीर्वाद लेकर गए थे, अब फिर से इसे ग्रहण करो,” और उन्होंने पूरी श्रद्धा से उन्हें आशीर्वाद दिया, और अपनी बहन को अपने पीछे आने का इशारा करते हुए बाहर चले गए। सिरिल और सीता चबूतरे के किनारे पर खड़े हो गए और उन्हें शहर की ओर ढलान से नीचे उतरते हुए देखते रहे। एक बार उन्होंने चाची एला को आराम करने के लिए बैठते देखा, और यहाँ तक कि उनकी सिसकियों की आवाज़ भी गर्म हवा में उन तक पहुँची; लेकिन उनके भाई ने उन्हें उठाया, और इस तरह वे धीरे-धीरे उनकी नज़रों से ओझल हो गए। “मेरे स्वामी और मेरे जीवन, तुम पहले से कहीं अधिक मेरे हो,” सीता ने तम्बू की ओर मुड़ते हुए कहा, “अब से मेरे, जब तक मैं मर न जाऊँ।” अध्याय 34. तूफान से पहले की शांति। शाहगंज छोड़ने के बाद, सिरिल ब्रैंडन जगह-जगह भटकते रहे, जहाँ भी उन्हें लगा कि उनकी उपस्थिति सबसे उपयोगी होगी। वे डरपोक लोगों को प्रोत्साहित करते, असंतुष्ट होते दिख रहे लोगों को चेतावनी देते और अपने मन और शरीर की पूरी ऊर्जा से उस विद्रोह को रोकने का प्रयास करते रहे, जो कई मायनों में पहले से कहीं अधिक आसन्न प्रतीत हो रहा था। कुछ सबसे शक्तिशाली जमींदार व्यवस्था बनाए रखने के लिए दृढ़ थे और उन्होंने सहर्ष और प्रसन्नतापूर्वक अपनी सहायता प्रदान की। हालाँकि, अन्य लोग उदास और अड़ियल थे, वे अंग्रेजी सरकार की शक्ति पर विश्वास नहीं करते थे और यदि अशांति शुरू होती, तो वे मुकदमा चलाने के इच्छुक थे।
270 सीता, अपने पड़ोसियों के साथ उन पुराने वंशानुगत झगड़ों को फिर से हवा दे रही थी, जिन्हें अब तक सौभाग्य से नियंत्रित रखा गया था। हर जगह दहशत का माहौल था; लेकिन श्री ब्रैंडन ने संतोष के साथ देखा कि अधिकांश वन जनजातियाँ अभी भी वफादार थीं और उस स्थानीय प्रभुत्व से भयभीत थीं जिससे उन्हें कभी नुकसान उठाना पड़ा था। हालाँकि, राजा हवुर्पदल सिंह सभी भले लोगों के लिए चिंता का विषय थे। वह एक चिड़चिड़े और प्रतिशोधी व्यक्ति थे; अपने आश्रितों के प्रति कठोर और अक्सर क्रूर, और उन्हें किसी भी समय नियंत्रित करना मुश्किल था। अब, जिले के कई बुरे चरित्र वाले लोग उनके आसपास जमा हो गए थे; उन्होंने अपने मजबूत किले की मरम्मत करवा ली थी और स्पष्ट रूप से मौका मिलते ही आक्रामक कार्रवाई शुरू करने के लिए तैयार थे। उन्होंने श्री ब्रैंडन से मिलने से मना कर दिया और लिखा कि बुरे समय के कारण उनके लिए एक दिन के लिए भी अपनी जगह छोड़ना

असंभव है; लेकिन वह घटनाक्रम पर नजर रख रहे थे और परिस्थितियाँ अनुकूल होने पर यथासंभव सहायता करेंगे। अज़रील पांडे का उनसे मिलना व्यर्थ नहीं गया था। उन्होंने राजा से उनके साथ हुए लंबे समय से चले आ रहे अन्याय की कहानी सुनी थी, जिसके लिए अंग्रेजों ने उन्हें कोई न्याय नहीं दिया था। उन्होंने उनकी पैतृक भूमि वापस नहीं की थी; उन्होंने नवाब दिल खान से उनकी संपत्ति छीनने से रोका था, जिसे उनके पूर्वजों ने मुस्लिम राजाओं के समय में बलपूर्वक हासिल किया था, और इस प्रकार नवाब के अतिक्रमण में उनका साथ दिया था। जिलों में भी, गांवों से अनाज और धन की वसूली के रूप में उनके ब्लैकमेल करने के अधिकार समाप्त कर दिए गए थे; और इन मामलों पर अंग्रेजों के सर्वोच्च अधिकारियों के समक्ष भी उनकी याचिकाओं का ठंडे बस्ते में जवाब दिया गया और उन्हें अस्वीकार कर दिया गया। यह सब बुराई का बीज बोने के लिए पर्याप्त कारण था; और वह बीज अंकुरित हुआ और अज़रील की संतुष्टि के अनुसार फल-फूल रहा था, जिन्होंने राजा को समझाया था कि कैसे, और केवल कैसे, उनके अन्याय का निवारण तभी हो सकता है जब घृणित अंग्रेज मर जाएं। हालांकि अजरील ने नवाब का साथ नहीं छोड़ा था, फिर भी हुरपेल सिंह की संगति और सहयोगी उसे कहीं अधिक पसंद थे। दिल्ली के उस कट्टरपंथी, असहिष्णु मौलवी से उसे कोई सहानुभूति नहीं थी; उसे अभी यह स्पष्ट नहीं था कि देशी सेना क्या रुख अपनाएगी; और स्वयं वह एक गौरवशाली हिंदू साम्राज्य के पुनरुद्धार और सभी अपवित्र अविश्वासियों के नाश की कामना करता था और जहाँ भी संभव होता, इसका प्रचार करता था। वह बलवान-बलवान व्यक्ति गांजा भी पीता था; और यदि वे इन पन्नों को अपवित्र न करते, तो मैं उनकी कुछ कार्रवाइयों का वर्णन कर पाता। इसलिए मैं विश्वासपूर्वक दोहराता हूँ कि बुराई का बीज फल-फूल रहा था। श्री ब्रैंडन इससे अधिक क्या कर सकते थे? जेयुनगर पर सेना भेजकर राजा को आत्मसमर्पण के लिए विवश करना ही एकमात्र कारगर उपाय साबित हो सकता था।

तूफान से पहले की शांति। 271 लेकिन उन्हें ऐसा करने की कोई उम्मीद नहीं थी; नूरपुर से कोई भी सेना अब आगे नहीं बढ़ सकती थी, क्योंकि वहाँ विद्रोह की आशंका थी, और आसपास के कई सौ मील तक के अन्य स्टेशन भी इसी स्थिति में थे: इसलिए उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी और निगरानी रखनी होगी। और बाबा साहब बहुत चिंतित हो रहे थे: उन्होंने संभवतः अपने आयुक्त से भी अधिक सुना था, और उन्हें उन संकटों से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था जो अब इतने खतरनाक प्रतीत

हो रहे थे। जिनके पास धन था वे अपने खजाने को दफना रहे थे या उन्हें अधिक शक्तिशाली व्यक्तियों को सौंप रहे थे। छोटे जमींदार अपने किलों की मरम्मत कर रहे थे और उनकी रक्षा के लिए सैनिकों को इकट्ठा कर रहे थे, और कुछ ही महीने पहले लोगों में व्याप्त सुरक्षा और शांति की भावना, बहने वाली बुरी हवा के सामने तेजी से गायब हो रही थी। कोई भी समझाना-बुझाना, कोई भी प्रयास, पूर्व और उत्तर से आने वाली अफवाहों को रोक नहीं सकता था, या उन्हें सबसे वफादार लोगों के मन से दूर नहीं कर सकता था: और जहाँ वे भयभीत थे, वहीं बहुत से लोग - बहुत अधिक - प्रसन्न भी थे। बाबा साहब ने अब श्री ब्रैंडन से नूरपुर वापस जाने की विनती की। उन्होंने कहा, “आप क्यों इस ग्रामीण इलाके में रोज़ाना के खतरे में रहकर, अपनी जान जोखिम में डालकर जी रहे हैं? आपकी रक्षा कौन करेगा? पुलिस में पहले ही कुछ लोग तुरपाल सिंह की सेना में शामिल हो चुके हैं, और इन दिनों किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। और अधिक प्रयास करने से आपको क्या लाभ होगा? जनता को अपना रास्ता खुद चुनना होगा; कोई भी उस बुराई को नहीं रोक सकता जो हैजा या चेचक की तरह है और जिसे चाहे उसे अपनी चपेट में ले लेती है। कम से कम, अगर आप नहीं जाएंगे, तो मैं सभी क्लर्कों और लेखकों को, जो दहशत में जी रहे हैं, नूरपुर भेज देता हूँ। उन्हें भारी तंबू और अभिलेख ले जाने दीजिए, और हम सब मिलकर निगरानी रख सकते हैं, अगर आप चाहें तो।” और जब सिरिल ने उन्हें भी साथ जाने के लिए ज़ोर दिया, क्योंकि उसे लगा कि बूढ़े आदमी की सलाह अच्छी है, तो बाबा साहब ने आँखों में आँसू लिए कहा, "नहीं, महोदय, मेरा स्थान आपके साथ है: लेकिन अपनी पत्नी को लोगों के साथ भेज दीजिए।" सिरिल ने सीता को इस बारे में बताया, लेकिन उसने नहीं सुना; उसने सिरिल की हर बात का विरोध किया, यहाँ तक कि कुछ हद तक चिढ़कर भी, और सिरिल ने उस पर दबाव नहीं डाला। उसे पहले से कहीं अधिक महसूस हो रहा था कि ऐसे समय में सीता से अलग होना असंभव है; और क्या श्रीमती मोस्टिन ने भी वही साहस नहीं दिखाया था जब फिलिप ने उसके सामने आँसू बहाते हुए सीता और ग्रेस को पहाड़ियों पर जाने की विनती की थी! वास्तव में, सीता उस समय के उत्साह में पूरी तरह से डूबी हुई प्रतीत हो रही थी, एक ऐसे जोश और उत्साह के साथ जिसकी उसके पति ने शायद ही उम्मीद की थी। श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस निष्क्रिय थीं, क्योंकि उन्हें निष्क्रिय रहना ही था; लेकिन सीता का गुस्सा सातवें आसमान पर था। अंग्रेजों के प्रति राजद्रोह और अपने स्वामी के

लिए खतरे के विचार से ही उसकी आत्मा कांप रही थी। उसके अपने रक्षक, जो उसे बचपन से जानते थे और जो उसे मानो ईश्वर का अवतार मानते थे, सच कह रहे थे। 272 सीता को लगा, जैसे मरते दम तक। बेशक, राठौर राजपूत परिवार में केवल छह ही लोग थे, जिन्हें उसके दादाजी अपनी संतान के साथ भेजने पर अड़े हुए थे: सफ़ेद बालों वाले, हट्टे-कट्टे लोग, जिन्होंने बैंकर द्वारा भेजे गए खजाने की कई खेपों की रक्षा की थी और जंगली इलाकों में कई हमलों से उनका बचाव किया था; और अपने सेनापति लखमुन सिंह, जो कद में विशालकाय थे, के साथ दिन-रात अपने प्रिय दल की रक्षा करते थे, तंबुओं के आसपास सोते थे और किसी भी संघर्ष का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। सीता स्वयं निडर और दृढ़ निश्चयी थी। वह सिरिल को नूरपुर तब तक नहीं भेजना चाहती थी जब तक कि यह बिलकुल आवश्यक न हो: और वह, जैसा कि उसे प्रतीत होता था, एक अजीब तरीके से, अपनी स्थिति के रोमांच और जगह-जगह भटकने का आनंद ले रही थी, लगातार आने वाली भयानक अफवाहों और बार-बार आने वाले गुमनाम चेतावनी पत्रों को हल्के में ले रही थी। ऐसे मनोभाव में क्या उसे भेजना बिल्कुल आवश्यक था, या वह उससे दूर रहकर संतुष्ट रहेगी? उसके पति को लगा कि ऐसा नहीं है; और मुझे लगता है कि उनके मन में यह प्रसन्नता थी कि उन्हें एक ऐसा साथी मिल गया है जिसे कोई भी खतरा डरा नहीं सकता। उनका छोटा सा शिविर अब दूधपुर में था, जो सिरिल का पसंदीदा ठिकाना था जब मौसम सबसे गर्म होता था। तंबू एक विशाल आम के बाग में लगाए गए थे, जहाँ पेड़ अंग्रेजी ओक से भी बड़े हो गए थे, और उनकी आपस में गुंथी हुई शाखाओं ने लगभग अभेद्य छाया बना रखी थी। गाँव इस बाग के किनारे पर था, और इतना बड़ा था कि अब कम हो चुके शिविर को आवश्यक आपूर्ति प्रदान कर सके। उस स्थान का मुखिया, जो अधिकांश भूमि का मालिक था और स्वयं खेती करता था, कुलराम सिंह था, जो आंशिक रूप से राजपूत और आंशिक रूप से गेंद था, एक उत्साही शिकारी और श्री ब्रैंडन के शिकार अभियानों में उनका निरंतर साथी था: एक समर्पित वफादार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति। उनका गाँव भी बहुत मजबूत था, चारों ओर अंतरालों पर बुर्जों वाली एक मजबूत मिट्टी की दीवार और केंद्र में एक ऊँचा वर्गाकार किला था जिसके कोनों पर बुर्ज थे, और उससे आगे प्राचीरें थीं। इसलिए दूधपुर एक सुरक्षित शरणस्थल था, और बुलराम के कबीले के लोग हर तरफ से सूचना भेजते थे। वह उपवन कितना शांत और सुंदर था, विशाल वृक्ष दूर तक फैले हुए थे, और चारों ओर

धुंधला नीला क्षितिज दिखाई देता था! कितनी शांति थी, बस पेड़ों पर चहचहाते पक्षियों की चहचाहट, शाखाओं के पीछे से और छेदों से अपनी चमकीली गोल पीली आँखों से झाँकते छोटे भूरे उल्लुओं की कभी-कभार चहचहाहट, और एक-दूसरे का पीछा करते गिलहरियों की चहचहाहट! छिपकलियाँ कितनी आलस से रेंगकर बाहर आतीं और धूप सेंकतीं, अपने लाल या नीले गले फुलातीं, और तेज़ गर्मी का आनंद लेतीं: और जब रात होती, तो अंगरक्षक और नौकर एक-दूसरे के चारों ओर इकट्ठा हो जाते।

तूफान से पहले की शांति। 273 ne re en a me ee oe हाथ के ढोल के साथ बारी-बारी से गाते हैं, किसी मधुर गीत को मधुर स्वर में गाते हैं, जबकि भेड़ें अपना चारा चरते समय अपनी घंटियों की हल्की झंकार सुनाती हैं। शायद इससे पहले सिरिल और सीता उस अशांत समय में कभी इतने प्रसन्न नहीं हुए थे; उन्होंने एक-दूसरे के बारे में इतना कुछ कभी नहीं सीखा था, और न ही वे इतने एकजुट हुए थे, जितना कि आसन्न खतरे के सामने खड़े होने पर। 'करने के लिए अपेक्षाकृत बहुत कम काम था, और बाबा साहब हर सुबह जो कुछ देशी रिपोर्ट और संदर्भ लाते थे, उन्हें जल्द ही भुला दिया जाता था। 'इसलिए सीता के पाठों के लिए पर्याप्त समय था: और ऐसा लगता था कि उसने शाहगंज में इतना कुछ सीख लिया था कि सिरिल उसकी योग्यता पर चकित था, और उससे अंग्रेजी में बात करने और गलती होने पर उसे सुधारने में लगा रहता था। “मुझे अब श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस से डरने की ज़रूरत नहीं है,” उन्होंने कहा, “वे भी मेरी तरह ही आश्चर्यचकित होंगी,” और सचमुच उनसे बात करने की इच्छा ही सीता की प्रगति का एक बड़ा कारण थी। एक शाम, जब वे अपने तंबू के बाहर दिन की गर्मी के बाद आई ताज़ी हवा का आनंद ले रहे थे, सीता, जो कुछ समय से चुप थीं, अपने पति द्वारा अपने ऊपर छाए हुए उदासी भरे भाव को दूर करने के लिए प्रेरित हुईं। “क्या सोच रही हो, मेरी प्यारी?” उन्होंने कहा, “आज कोई बुरी खबर नहीं आई है।” “उस बारे में नहीं,” उन्होंने ऊपर देखते हुए उत्तर दिया, “लेकिन मैं सोच रही थी... खैर, मुझे आपको बताने में लगभग डर लग रहा है: लेकिन जब मैं शाहगंज में बहुत दुखी थी, और सोच रही थी कि वे मुझे अपने से दूर कर देंगे और हमेशा के लिए त्याग देंगे, तो मुझे आपकी दी हुई किताबों में से एक में यह अंश मिला, ‘मेरे पास आओ, तुम सब जो थके हुए और बोझ से दबे हुए हो, और मैं तुम्हें आराम दूंगा।’” “ये ईश्वर के वचन हैं,” उसने सरल शब्दों में कहा, “मैं जानती हूँ, और

इन्होंने मुझे 'भगवत गीता' से भी अधिक सांत्वना दी। सोल उस पुस्तक को बगीचे में ले जाकर पढ़ता था, और मैं कहती थी, 'हे प्रभु, मैं बहुत थक गई हूँ, मुझे विश्राम दो।' मुझे नहीं पता कि मैं किससे प्रार्थना करती थी, लेकिन विश्राम मुझे आपके साथ मिला, और उन्होंने मेरी प्रार्थना सुन ली। ओह! मैं उस समय बहुत दुखी थी, सिरिल; तुम कभी नहीं जान पाओगे कि मैं कितनी उदास थी, और मैं उन्हें बता भी नहीं सकी। क्या अपने ईश्वर से प्रार्थना करना गलत था? क्या वह मेरी परवाह करेंगे?" लड़की के शब्दों से सिरिल का हृदय भर आया। क्या तब उसके मन में सच्चे प्रकाश की एक किरण जगी? उसने कितनी बार प्रार्थना की थी कि उसे ऐसा प्रकाश प्राप्त हो! अब शायद ऐसा ही हो। "मेरी प्रियतमा," उसने कोमल स्वर में कहा, "ईश्वर मेरे साथ-साथ हमारे भी ईश्वर हैं; वह कभी भी उन लोगों से मुँह नहीं मोड़ते जो अपनी आवश्यकता में और विनम्र विश्वास के साथ उनसे प्रार्थना करते हैं।" "जी हां," उसने तुरंत जवाब दिया, "गीता में भी यही है; लेकिन आपकी पुस्तक इतनी कोमल, इतनी सरल है कि एक बच्चा भी इसे समझ सकता है, और ब्राह्मणों के अलावा और कौन इसे समझ सकता है?"

274 सीता। गीता के रहस्य? वे तो मुझ जैसे श्वाद्रों को भी नहीं सिखाते; और जिन्होंने तुम्हारी पुस्तक में लिखे शब्द कहे हैं, उन्होंने सभी को छोटे बच्चों की तरह, बिना किसी भय के उनके पास आने को कहा है। परन्तु गीता ऐसा नहीं कहती। क्या कोई भी—मुझ जैसा कोई भी—उनके चरणों में पिता के समान प्रार्थना कर सकता है?" "कोई भी," उसने उत्तर दिया; "कोई भी जो सरल हृदय से सहायता मांगने उनके पास जाता है, उसे मार्गदर्शन मिलेगा। 'डरो मत,' उन्होंने अक्सर कहा: और जो उन पर विश्वास करते हैं वे भयभीत नहीं होते—वे प्रेम और विश्वास करते हैं। सीता, तुम्हें यह कब सूझा?" "मैं नहीं बता सकती," वह बुदबुदाई। "जब मैंने आपको अपनी किताब पढ़ते और घुटने टेककर प्रार्थना करते देखा है, तो मेरी हमेशा यह जानने की इच्छा रही है कि आप क्या कहते थे और किससे प्रार्थना करते थे, क्योंकि मैंने अक्सर सुना है कि अंग्रेजों का कोई धर्म नहीं होता; लेकिन यह गलत है, क्योंकि आप नूरपुर स्थित अपने चर्च जाते थे और रात-सुबह प्रार्थना करते थे; और रविवार को आप अंग्रेज लेखकों को पढ़कर सुनाते थे। फिर जब मैंने अंग्रेजी सीखी, तो मैं आपकी किताब पढ़ती थी; लेकिन मुझे बहुत कम समझ आता था, जब तक कि मैं शाहगंज नहीं गई, और एक दिन वामन भूत ने मुझे हिंदी में एक किताब दी जो उन्हें बनारस में एक पादरी ने दी थी

और उन्होंने कभी देखी भी नहीं थी; तब मैं अंग्रेजी को इधर-उधर से अच्छी तरह समझ पाई, और अब मैं पढ़ने से कभी नहीं थकती, हालांकि बहुत सी चीजें मुझे रुलाती और गुस्सा भी दिलाती हैं: लेकिन मैं अभी भी कई हिस्सों को समझ नहीं पाती। नहीं, आपको मुझे और नहीं सिखाना चाहिए," उसने बोलते हुए उसे बीच में ही रोकते हुए कहा; "मुझे बहुत कुछ समझ आ गया है, और अगर भगवान चाहेंगे तो मुझे और सिखाएंगे।" "वहाँ कौन है? बोलो, वरना मैं गोली चला दूँगा," तंबुओं के सामने थोड़ी दूर चक्कर लगा रहे सिख अर्दली में से एक चिल्लाया। "मैं बुलदेव हूँ," ऊँची, फटी हुई आवाज़ में जवाब आया जिसे सिरिल और सेक्टा ने तुरंत पहचान लिया; "साहिब और पत्नी कहाँ हैं? मुझे उनके पास ले चलो, मैं एक ज़रूरी काम से आया हूँ।" "उसे यहाँ लाओ," सिरिल चिल्लाया। "डरने की ज़रूरत नहीं," बुलदेव ने सिख से कहा, "मेरे पास हथियार नहीं हैं, और मैं अपनी लाठी यहीं छोड़ दूँगा।" चुनौती और पुकार ने अब पहरेदारों को सतर्क कर दिया था, और लखमुन सिंह कुछ आदमियों को लेकर पेड़ों के चारों ओर चक्कर लगाने चला गया, जबकि बुलदेव को दो अन्य लोग तंबुओं तक ले गए, और जैसे ही वह अपने हाथ में रिवाल्वर लिए खड़े सिरिल के पास पहुँचा, वह उनके चरणों में गिर पड़ा और उनसे विनती की कि वे उसकी बात सुनें। "मुझे मालिक के साथ छोड़ दो," उसने अर्दली से कहा, "अगर मैं झूठा निकला तो वह मुझे गोली मार सकता है; जो कुछ मुझे उसे बताना है वह उसके अलावा किसी को नहीं सुनना चाहिए।"

तूफान से पहले की शांति। 275 ———— "क्या मुझे जाना ही होगा, सिरिल?" सीता ने पूछा। "नहीं, नहीं," उस आदमी ने कहा, "रुको! तुम पहले कभी नहीं डरीं, हे महिला, और अब भी नहीं डरोगी। बैठ जाओ, और अपने दास को भी बैठने दो, क्योंकि मैं लंबी यात्रा से थक गया हूँ।" "कहाँ से?" सीता ने पूछा। "जेयनगर से, हे महिला; यह 2000 (40 मील) से अधिक है, और सड़क खराब है; लेकिन मैं यहाँ हूँ, सुनो। मैं कल हुरपिल सिंह के शिविर में था, और उसके पास अब लगभग 2000 आदमी हैं, और हर दिन और भी लोग इकट्ठा हो रहे हैं। वह उन्हें राशन देता है, लेकिन वे वेतन का इंतजार करने को तैयार हैं, और वे कहते हैं कि उसके पास कुल 1000 सैनिक होंगे, और सिपाही भी, जब वे आएंगे; लेकिन इसकी चिंता मत करो, अज़राएल पांडे वहाँ है, और इसीलिए मैं यहाँ हूँ। मैंने उसे देखा है, और जानता हूँ कि वह क्या करने वाला है, इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देने आया हूँ।" "क्या बात है?"

सिरिल ने पूछा, “और तुम्हें कैसे पता चला? तुम उससे बात करने की हिम्मत नहीं करते, वो तुम्हें मार डालेगा।” “हाँ, अगर वो कर सकता तो मुझे मार डालता, लेकिन वो नहीं कर सकता, क्योंकि कालेक मेरी रक्षा करता है। मेरा इकलौता भाई फुरसुत उसके साथ है,” बुलदेव ने जवाब दिया, “और मैं जानता हूँ कि जरूरत पड़ने पर फुरसुत किसी भी क्षण मेरा गला घोंट देगा, क्योंकि वो फेरिंगेया के गिरोह के पुराने भूतों में से एक है, जिसे सलीमन साहब पकड़ना चाहते थे; लेकिन मैं अज़्रिकल पांडे को एक चमड़े का कारीगर फाँसी पर लटका हुआ देखना पसंद करूँगा, क्योंकि वो ब्राह्मण है। सुनो; मैंने उस आदमी का हर जगह पीछा किया है, यहाँ तक कि कलकत्ता तक, जहाँ उसने चौंतीसवीं बटालियन को विद्रोह के लिए उकसाया, और उसके भतीजे मुंगुल को मोची ने फाँसी पर लटका दिया। वहाँ से वो मुझसे भी तेज़ चला, क्योंकि सिपाहियों ने उसे पैसे दिए थे; लेकिन जैसे-जैसे मैं उसके पीछे गया, मैंने जोगियो ब्राह्मण के बारे में सुना जो जाति के पतन और आटे और घी के अपवित्र होने का उपदेश दे रहा था, और मैंने उसका असर हर जगह देखा।” वह अकेला नहीं था; उसके जैसे सैकड़ों लोग थे, जोगी, बैरागी और यहाँ तक कि मुस्लिम पुजारी भी, जो जातिगत अशुद्धता के कारण अंग्रेजों को मौत की सजा सुना रहे थे। “मेरठ में मेरी मुलाकात अजरदील से फिर हुई; किसी ने उसे एक हाथी दिया था, और वह हमारे कुछ बुजुर्गों की मदद चाहता था, इसलिए फरसुत और दो अन्य लोग उसके साथ शामिल हो गए। मैं मजिस्ट्रेट के पास सूचना देने गया, लेकिन उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। मैंने न्यायाधीश द्वारा दिया गया प्रमाण पत्र खो दिया था, और ऐसा दिखावा कर रहा था जैसे मैंने कुछ कहा ही न हो। अजरदील बहुत उग्र और बेकाबू था, और अंग्रेज सज्जनों ने उसे शहर से निकाल दिया; लेकिन मुझे पता था कि सभी सिपाही 15 मई को अंग्रेजों की हत्या करने पर सहमत हो गए थे, और मैंने यह बात साहब को बताई; फिर भी मजिस्ट्रेट ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, और कहा कि उनके पास दो हजार अंग्रेज सैनिक हैं और वे दस हजार सिपाहियों से नहीं डरते। मैं और क्या कर सकता था? लेकिन अब आगे सुनो।”

276 सीता. “जे.टी. अजरईल के पीछे-पीछे फतेहपुर गया, और जब मौलवी दिल्ली से आया तो मैंने सुना कि किले में खूब जश्न मनाया गया; लेकिन नवाब नूरपुर पर हमला करने को तैयार नहीं था—उसकी हिम्मत नहीं थी। इसलिए अजरईल ने उससे कहा कि वह उसे दो सौ आदमी दे ताकि वे तुम पर हमला करके महिला को ले जा सकें,

लेकिन दिल खान ने ऐसा करने से भी इनकार कर दिया; फिर अजरईल जयनगर गया, और हुरपेया सिंह ने उसका स्वागत किया और उसे पाँच सौ आदमियों की कमान सौंप दी। परसों रात को मेरा भाई मेरे पास आया और बोला, 'बुलदेव, साहब और महिला खतरे में हैं, तुम उनके पास दुदपुर जाओ और उन्हें बताओ कि अजरईल अपने चुने हुए दो सौ आदमियों के साथ उन पर हमला करने आ रहा है। वह श्री ब्रैंडन को मार डालेगा और उस महिला को ले जाएगा, जिसके बारे में वह हमेशा बड़बड़ाता रहता है और उसे डायन बताता रहता है। फिर भोर होते ही जाओ और उन्हें नूरपुर जाने के लिए कहो, क्योंकि अन्यथा उन्हें बचाया नहीं जा सकता।' तब जे. ने पूछा, वे तोपें क्यों चला रहे हैं? क्या किले और तोपें हर जगह हैं? और उसने जवाब दिया, 'मेरठ में अंग्रेज मारे गए हैं, और सिपाही देहली में बादशाह के पास गए हैं। राजा के पास एक संदेशवाहक आया था और एक जयनगर के बैंकर के पास।' और यह सच है, मेरी कसम, बिल्कुल सच है। "असंभव!" सिरिल चिल्लाया। "मेरठ में लगभग दो हज़ार सैनिक थे और सिपाही भी कुछ ही ज़्यादा थे। यह खबर झूठी होनी चाहिए। क्या आपको यकीन है कि आप गलत नहीं हैं?" "मैं गलत नहीं हूँ। वे इस खबर का इंतज़ार कर रहे थे; लेकिन उन्हें एक हफ्ते या उससे ज़्यादा समय तक कोई खबर मिलने की उम्मीद नहीं थी। अज़र्डेल ने जब यह खबर मेरठ और बैंकर से सुनी, तभी उसने आप पर हमला करने का फैसला किया। हम दोपहर तक बाइसोना पहुँच जाएँगे; यह जंगल में बस एक छोटा सा गाँव है, क्योंकि वह सभी पगडंडियों को मेरी तरह ही जानता है, और वह वहाँ शाम तक आराम करेगा; फिर वह यहाँ आएगा और रात के तीसरे पहर के आसपास पहुँच जाएगा जैसा उसने तय किया था, क्योंकि उसने कहा था कि आप और आपकी पत्नी सो रहे होंगे। यह क्या है?" वह उठ खड़ा हुआ और सुनने लगा, "मुझे लगा घंटियाँ सुनाई दीं। चुप रहो! हाँ! ये घंटियाँ हैं, लेकिन ये नूरपुर रोड पर हैं, और अंग्रेज़ी समाचार तुम्हारे लिए आ रहा है।" यह सच था, हालाँकि सिरिल और सीता दोनों ने पहले उन्हें नहीं सुना था, और उन्हें ले जाने वाले पैदल धावकों के हर तेज़ कदम पर उनकी झनझनाहट जल्द ही स्पष्ट हो गई, साथ ही उनके द्वारा ले जाई जा रही जलती हुई मशालें भी। जो लोग उस समय भारत में सिरिल जैसी ही स्थिति में थे, वे इसे पढ़ते हुए शायद इसी तरह की घटनाओं को याद करेंगे और उस भय और आशंका की अनुभूति करेंगे जो उन पर हावी थी; और ऐसे कितने लोगों के लिए संदेश और एक्सप्रेस हत्या और नरसंहार की खबरें या खतरे की चेतावनी लेकर आए थे? जो

पैकेट वे लोग लेकर आए थे, वह श्री मोस्टिन का एक एक्सप्रेस था, और उसे लाने वाले लोग हाँफते हुए घास पर गिर पड़े। वहाँ “आपातकालीन” था।
तूफान से पहले की शांति। 277 अंग्रेजी और हिंड्स दोनों में, पैकेट पर लिखा हुआ है, और उस पर एक पंख लगा हुआ है। सिरिल ने बेचैनी से सील तोड़ी और इस प्रकार पढ़ा:-- “* न्वुओरपुर, 13 मई, सुबह 9 बजे। “मेरे प्रिय सिनीट, मेरे पास कुछ ही पंक्तियाँ लिखने का समय है, क्योंकि यह पत्र तुम्हें जल्द से जल्द पहुँचना चाहिए। शुक्रवार, 10 तारीख को मेक्रुत में सभी देशी सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और दिल्ली चले गए। हमारे कई लोगों को उन्होंने मार डाला, लेकिन संख्या और नाम ज्ञात नहीं हैं। मैं तुम्हें ‘मोफुसिलिट एक्स्ट्रा’ भेज रहा हूँ, जो आज हमें मिला है। यहाँ के सिपाहियों ने जाहिर तौर पर कुछ खबर सुनी है, लेकिन क्या है यह मुझे नहीं पता, और वे बहुत उत्तेजित हैं। मुझे नहीं पता कि दिन ढलने से पहले क्या होगा, लेकिन मैं सैनिकों को किले में भेजने जा रहा हूँ। भगवान के लिए, इसे मिलते ही अंदर आ जाना। हर कोई तुम्हारे बारे में बहुत चिंतित है, और मेरी पत्नी और ग्रेस तुम्हारे और सेक्टा के लिए बहुत परेशान हैं। तुरंत आ जाना; लेकिन अगर तुम्हें लगे कि तुम अंदर नहीं आ सकते तो... छावनी के आसपास कहीं भी रुकें और हमें बताएं कि आप कहां हैं। आपका, पिट मोसरी। और "मोफुसिलिट" के "एक्स्ट्रा" में इस प्रकार लिखा था: - "एकरा, सोमवार, 11 मई, 1857। मेरठ से एक टेलीग्राम संदेश आया है कि तीसरी कैवलरी के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया है, अपनी ही मोर्चों और कई अधिकारियों के बंगलों में आग लगा दी है: उन्होंने अपनी मोर्चों के पास मिले सभी यूरोपीय अधिकारियों और सैनिकों को मार डाला और घायल कर दिया है। मेरठ जैसे स्टेशन में, जहां छठी ड्रैगून, साठवीं राइफल्स और यूरोपीय तोपखाना मौजूद है, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विद्रोहियों का बहुत कम समय तक ही अस्तित्व रहा होगा। आगे की जानकारी मंगवा ली गई है। कलकत्ता गवर्नमेंट गजट में चौंतीसवीं नेटिव इन्फैंट्री की सात कंपनियों को भंग करने की घोषणा की गई है। मेरठ से आए पत्रों में कहा गया है कि तीसरी कैवलरी के पचासी सैनिकों पर मुकदमा चलाया गया है।" जो लोग सबसे ज़्यादा दोषी थे, उन्हें दस साल की कैद की सज़ा सुनाई गई है, जबकि अन्य को पाँच साल की। भारत में इसी तरह की घोषणा उस दंगे और नरसंहार के पहले प्रकोप के बारे में फैली, जो बाद में हुआ। “हमें जाना होगा, प्रिय,” उसने कहा, “और तुरंत नूरपुर जाना होगा। यह सच है कि सिपाहियों ने नूरपुर में विद्रोह कर दिया है।”

278 सीता, बुलदेव ने जेयनगर में सुना था, और उसने हमें जो कुछ भी बताया है, वह भी सच ही होगा। श्री मोस्टिन लिखते हैं कि सिपाही बहुत उत्तेजित हैं, और शायद हम थाने में प्रवेश न कर पाएं। "अगर नहीं, महाराज," बुलदेव ने हाथ जोड़ते हुए बीच में ही कहा, "मैं आपको ऐसी जगह ले जा सकता हूँ जहाँ आपको कोई नहीं ढूंढ पाएगा, यहाँ तक कि अज़राएल पांडे भी नहीं। आह! महिला, क्या मैं सच्चा नहीं था? मैं भूला नहीं हूँ कि आपने एक बार मेरी जान बचाई थी और उन्होंने मुझे मेरी जान दी थी—और जब तक आप और आपके स्वामी सुरक्षित हैं, मेरी जान का कोई मूल्य नहीं है। मुझे एक टट्टू दीजिए, महोदय, कुछ भी जिस पर मैं सवारी कर सकूँ," उसने सिरिल से आगे कहा, "क्योंकि मेरे पैरों में छाले पड़ गए हैं, और मैं और आगे नहीं चल सकता।" अब लगभग दस बज चुके थे, और उनके पास काफी समय था। छोटे तंबू तुरंत बांध दिए गए और सामान लाद दिया गया, और शिविर में मौजूद सभी लोगों को इकट्ठा करके, सिरिल और सीता आगे-आगे गाँव की ओर चल पड़े। कुछ दिनों से वे हर समय तैयार रहने के आदी हो गए थे, और सेक्टा ने अपने लिए पुरुषों के कपड़े सिलवाए थे, साथ ही मुलायम लाल चमड़े के लंबे घुड़सवारी के जूते भी। सिरिल ने उसका परीक्षण किया था, और वह एक उत्कृष्ट घुड़सवार और साहसी सवार साबित हुई थी; और अब जब वह अपनी फुर्तीली छोटी घोड़ी पर सरपट दौड़ रही थी, तो सिरिल को पूरा भरोसा था कि कोई भी उन्हें पकड़ नहीं सकता। उनका मित्र बुलराम सिंह जल्द ही जाग उठा; और बाबा साहब के साथ मशालें लेकर अचानक हलचल का कारण पूछने आया, और उसे सब कुछ बता दिया गया: और जब बाबा साहब यात्रा की तैयारी करने गए, तो सिरिल बुलराम के साथ बातचीत करते हुए उनके लौटने का इंतजार कर रहा था, जिसके चारों ओर उसके कबीले के लोग इकट्ठा थे। यह एक अद्भुत दृश्य था, हालांकि मशालों की रोशनी पुरुषों के मजबूत और खुरदुरे चेहरों पर चमक रही थी, और तलवारों, भालों, बंदूकों और ढालों से जगमगा रही थी। "मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा, मेरे दोस्त," सिरिल ने कहा, "लेकिन मैं हुरपाल सिंह को तुम पर और तुम्हारे लोगों पर नहीं लाना चाहता!" “महाराज, मेरे लिए चिंता न करें,” उसने उत्तर दिया, “जब तक मेरे कबीले के दो सौ लोग मेरी रक्षा के लिए हैं, तब तक चिंता न करें। मैं आपसे अधिक बलवान हूँ, और हुरपाल सिंह मुझ पर, न ही आप पर, हमला करने की हिम्मत करेगा, यदि आप मेरे किले में रहें; लेकिन शायद आप अपने लोगों के साथ बेहतर रहेंगे। आपका मार्गदर्शक कौन होगा?” “जी,” बुलदेव ने कहा। “शायद आप मुझे भूल गए

हैं, महाराज?" "अरे!" सरदार ने कहा। "नहीं, मैं आपको नहीं भूला हूँ; लेकिन मेरे दो आदमियों को भी साथ ले जाइए, कहीं रात में आप रास्ता न भूल जाएँ। आगे बढ़िए; रास्ता बिल्कुल सुरक्षित और गुप्त है। और चाँद जल्द ही निकल आएगा, महाराज," उसने सिरिल से कहा। "देरी न करें, और ईश्वर आपको और आपकी पत्नी को सुरक्षित रखे।—जय कंपनी बहादुर! ब्रैंडन साहिब बहादुर के जय!"

"जहाँ तुम जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा।" 279 ने अपने लोगों से पुकार लगाई, जिन्होंने उत्साहपूर्वक उनका अभिवादन किया और दल आगे बढ़ गया। वे रात भर यात्रा करते रहे, हर गाँव से बचते हुए, और ऐसे एकांत रास्तों से गुज़रे जिनकी कल्पना सिरिल ने शायद ही की होगी। अगली सुबह जब सूरज तेज़ हुआ तो वे एक छोटी सी धारा के किनारे फैले मोहवा के पेड़ों के नीचे विश्राम करने लगे; और जैसे-जैसे शाम ढलती गई, वे अपनी यात्रा जारी रखते रहे, इस बात को लेकर चिंतित थे कि स्टेशन के पास पहुँचने पर उन्हें क्या सुनने को मिलेगा: लेकिन वहाँ सब शांत था, हमेशा की तरह पहरेदारों ने उन्हें रोका और आगे जाने दिया, और आधी रात से पहले वे अपने घर पहुँच गए, शायद थके हुए, लेकिन सुरक्षित और आभारी। बुलराम सिंह का एक दूत सुबह होते ही उनके पीछे आ गया और श्री ब्रैंडन को यह संदेश दिया: "बुलदेव बिल्कुल सही था; वे रात के तीसरे पहर आए और आपके तंबू ढूंढने के लिए जंगल की तलाशी ली, फिर कुछ लोग फाटक पर आए और कुल्हाड़ी से उसे तोड़ने की कोशिश की; लेकिन मैं वहाँ था, और हमने उन पर गोली चलाई और दो को मार गिराया; कुछ अन्य घायल हो गए, जिन्हें ले जाया गया। जब मैं पीछे गया तो मुझे एक भी नहीं मिला, और लोग जैसे आए थे वैसे ही चले गए थे। "यह बात आपको और आपकी पत्नी को बता देना। मेरे आदमियों के माध्यम से मुझे आपकी कुशलक्षेम का समाचार भेजना।" इस प्रकार बुलदेव सही था, और वे बाल-बाल बच गए। अध्याय 30YV. "जहाँ तुम जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा।" मित्रों के बीच एक सुखद मुलाकात हुई, जब श्री मोस्टिन सुबह जल्दी आए और सिरिल को फुर्ती से बुलाया, "उठो और बाहर आओ और बात करो।" सब ठीक है, उसने सोचा, और जल्दी से कपड़े पहने, वरना फिलिप की आवाज़ इतनी खुशमिजाज़ नहीं होती। और अब तक सब ठीक ही था; स्टेशन पर सब शांत था, और जहाँ तक पता चल सकता था, सिपाही और उनके स्थानीय अधिकारी अभी तक भ्रष्ट नहीं हुए थे और वफादार थे। "काफी हलचल मची थी," फिलिप ने कहा, "जिस दिन मैंने तुम्हें लिखा था, उस दिन जब मर्कट पोस्ट आई थी,

लेकिन रेजिमेंट के स्थानीय अधिकारी अपने कमांडरों के पास गए और सच्चाई पूछी, जो उन्हें पता थी उतनी बताई गई; और अगले दिन, ब्रिगेडियर ने सभी को इकट्ठा किया और उनसे प्यार से बात की: उन्हें बताया कि उन्हें कारतूसों से कोई प्रलोभन या परेशानी नहीं हुई थी; कि उन्हें सोच-विचार करने पर पता चलेगा कि ये बातें कितनी झूठी हैं।

280 सीता। आटे और जाति के अपवित्र होने की अफवाहें जरूर फैली होंगी, और सैनिकों के लिए विद्रोह करना और उन अधिकारियों की हत्या करना कितना शर्मनाक था जो उनके लिए पिता समान थे। 'आप सभी कर्नल फिगिस को जानते हैं, या उनके बारे में सुना होगा,' उन्होंने कहा, 'जो सचमुच अपने सैनिकों के लिए पिता समान थे, और हर मौके पर सिपाहियों के साथ खड़े रहे।' और उन्होंने जो कुछ कह सकते थे, कहा, सिरिल, लेकिन यह एक बुरा मामला है। हमें सब कुछ पता नहीं चला है, क्योंकि कुछ पोस्ट गायब हैं; लेकिन हमने सुना है कि दिल्ली पर कब्जा हो गया है, वहां हमारे कई लोग बुरी तरह मारे गए हैं, और आशंका है कि विद्रोह हर स्टेशन पर फैल जाएगा, और सभी को बर्बाद कर देगा। "और मेरठ में यूरोपीय लोगों ने कुछ नहीं किया?" सिरिल ने पूछा। "कुछ नहीं; जबकि वे विद्रोह को शुरू में ही दबा सकते थे; बिल्कुल कुछ नहीं," फिलिप ने उत्तर दिया, "रात तक, जब उन्होंने विद्रोहियों का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई खास नुकसान नहीं पहुँचाया, और वे बच निकले।" यक्ट, ज़रा सोचो, उनकी संख्या क्लिवो के नेतृत्व में प्लासी में या मुनरो के नेतृत्व में बक्सर में हुई सेनाओं से तीन गुना ज़्यादा थी, जब उन्होंने अपनी ताकत से पचास गुना से भी ज़्यादा ताकतवर सेनाओं को हराया था। यह बहुत दुखद है, लेकिन शुरू से ही दहशत का माहौल था, और लगता है किसी ने भी अपना होश नहीं खोया। क्या यह हेनरी लॉरेंस की उस भविष्यवाणी की एक अजीब पूर्ति नहीं थी जो ब्रिगेडियर ने हमें पढ़कर सुनाई थी? और वो भी इतने सटीक समय पर! और आप क्या खबर लाए हैं? हुरपाल सिंह कैसा है?" "फिलिप, उसकी हालत बहुत खराब है। कल रात उसके साथ मौजूद अज़रील पांडे मुझे निश्चित रूप से मार डालता, लेकिन रात नौ बजे के आसपास जब मैं और सेक्टा अपने तंबू के बाहर बैठे थे, तब मुझे एक सही और समय पर मिली चेतावनी ने बचा लिया। उस वफादार साथी, बुलदेव ने उसे जेयुनगर से समय पर लाकर हमें हरकत में ला दिया, वरना हम निस्संदेह मारे जाते; और मैं बुलराम सिंह के साथ बहुत सुरक्षित महसूस कर रहा था!" "आह!" फिलिप ने कहा, "मुझे ठीक यही

डर था; लेकिन शुक्र है कि आप दोनों यहाँ हैं।" थॉन सिरिल ने अपने मित्र को बुलदेव से अज़रील पांडे के राजद्रोह के बारे में सुनी सारी बातें बताईं, और साल की शुरुआत में उसके अलग-अलग स्टेशनों पर घूमने के बारे में भी बताया; और यह भी बताया कि कैसे बुलदेव ने मेओरूत के अधिकारियों को चेतावनी दी थी, फिर भी उन्होंने नहीं सुनी, और कैसे अज़रील का नवाब और हुरपाल सिंह ने स्वागत किया था। "मुझे लगता है," उसने आगे कहा, "हुरपाल उस पूरे इलाके पर कब्ज़ा कर लेगा और बहुत बुराई करेगा, लेकिन अभी हम बेबस हैं। और नवाब?" "अरे!" फिलिप ने कहा, "वह बिल्कुल पहले जैसा ही है; मुझे शिष्टाचार भरे पत्र लिख रहा है, और मुझे पहले से कहीं ज़्यादा ज़ोर दे रहा है कि मैं 'हालातों' के चलते महिलाओं के साथ फतेहपुर आऊँ; लेकिन आप जानते हैं, समय बीत गया है और हम किले में आराम से हैं। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि वह जगह कितनी आरामदायक दिखती है।"

"तुम जहाँ जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा।" '281 "और महिलाएँ, क्या वे वहाँ हैं?" "नहीं," उसने उत्तर दिया, "हालाँकि वे पहली रात को वहीं सोई थीं; लेकिन जब सब शांत था, तब वहाँ रहना इतना बेतुका लगा कि वे सुबह वापस आ गईं और तब से यहीं हैं। वे नाश्ते पर तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगी, और सीता को भी, जब वह आ सके। वह कैसी है?" "बिल्कुल ठीक है, फिलिप। वह अपनी घोड़ी पर मेरे साथ पूरे रास्ते यहाँ तक आई; और शुरू से अंत तक उसने कभी भी मुझे एक पल की भी परेशानी नहीं दी। मैं उसे देखता हूँ और उसकी अटूट शांति और ईश्वर में विश्वास पर आश्चर्यचकित होता हूँ। हाँ, वह थोड़ी देर में श्रीमती मोस्टिन के पास आएगी, जब उसकी थकान दूर हो जाएगी।" सीता के आने के बाद वह अपने छोटे से प्रार्थना कक्ष में गई और उसने देखा कि पवित्र अग्नि जल रही है, और बूढ़े ब्राह्मण और उसकी पत्नी ने कुटिया में सब कुछ शुद्ध और स्वच्छ रखा है; फिर वह वेदी के सामने गिर पड़ी और अपनी सुरक्षा के लिए विनम्रतापूर्वक धन्यवाद दिया। जब वह पहली बार उठी तो उसने बरामदे में सिरिल और श्री मोस्टिन को बात करते सुना; और जब वह चला गया, तो वह अपने पति के पास गई, और वे ठंडी सुबह की हवा में बगीचे में घूमने लगे। कुछ भी नहीं बदला था, और यद्यपि गर्मी ने घास को सुखा दिया था, फिर भी गुलाब और फूल बहुतायत में थे। पानी के किनारे से उन्होंने पुराने पठान किले की ओर देखा, जहाँ लोग प्राचीरों और बुर्जों पर घूम रहे थे, और उसने उसे विशाल मीनार में वह कमरा दिखाया जो उसने पानी की ओर खुलने वाली खिड़की के साथ चुना था, और उसे

बताया कि जब वह शाहगंज में थी तो उसने इसे आरामदायक बनाने के लिए क्या किया था। हवा झील की सतह पर छोटी-छोटी लहरें बना रही थी, और सब कुछ शांत और सुंदर लग रहा था। "और अब जाओ और अपना नाश्ता कर लो," उसने कहा, "क्योंकि तुम्हें बाद में श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस से मिलने आना है; वे तुमसे मिलने के लिए तरस रही हैं।" नाश्ते के बाद, श्रीमती मोस्टिन ने कहा, “मुझे लगता है कि मुझे स्केटा को लाना चाहिए। श्री ब्रैंडन, क्या आपको याद नहीं है कि जब तक आप उसके हाथ मेरे हाथों में नहीं देते, वह मुझे पहचान भी नहीं पाती? मुझे जाना चाहिए, मुझे पूरा यकीन है। क्या आप मुझे ले चलेंगे?” उन्होंने उत्तर दिया, “यह बहुत अच्छा विचार है, श्रीमती मोस्टिन, बहुत ही दयालु और विचारशील। मुझे पता है कि वह आपको पहले से भी ज़्यादा प्यार करेगी। मुझे लगा कि जब मैंने उसे बताया कि मैं उसके लिए आऊंगा, तो वह थोड़ी हिचकिचाई थी; और अगर मैंने उसके दिल को सही समझा है, तो मुझे उसमें वही दिखा जो आपने सोचा है।” श्रीमती ब्रैंडन ने प्रसन्नता से जवाब दिया, “तो हम दोनों चलते हैं, श्री ब्रैंडन। ग्रेस, बस अपनी भूसे की टोपी पहन लो और मेरे साथ आओ। पूरे रास्ते छाया है; और हम वह सुंदर कुटिया भी देखेंगे।”

282 सीता। तो वे दोनों सुंदर, तेजस्वी महिलाएं, अपने शुद्ध सफेद मलमल के वस्त्रों में, अपने परोपकारी कार्य पर निकल पड़ीं। सिरिल उनसे कुछ कदम आगे चल रहा था और सीता को बाहर आने के लिए पुकारा। “तुम्हें अपने द्वार पर अपने आगंतुकों का स्वागत करने के लिए खड़ा होना चाहिए,” उसने कहा। और उसी क्षण वे दोनों महिलाएं झाड़ियों से निकलीं और हाथ बढ़ाते हुए सीता की ओर बढ़ीं। सीता ने दयालुता के इस सरल कार्य की अपेक्षा नहीं की थी, और अपनी आदत के अनुसार, उनके पैर छूते और उनके चेहरों पर हाथ फेरते हुए उसकी आँखों में आँसू आ गए; वह कुछ बोल भी नहीं सकी; लेकिन श्रीमती मोस्टिन इतनी संकोची नहीं थीं, और उन्होंने सीता को हार्दिक रूप से चूमा, ग्रेस ने भी ऐसा ही किया, और सीता का सारा संकोच दूर हो गया। फिर उन्होंने सुंदर कुटिया पर नज़र डाली, और साधारण प्रार्थना कक्ष, जलती हुई पवित्र अग्नि, सीता की पुस्तकें और अंग्रेजी अभ्यास देखे, और सीता की सुंदर लिखावट पर आश्चर्य व्यक्त किया। वास्तव में, इस मामले में सीता ने बहुत सुधार किया था: क्योंकि शिविर में मौजूद एक अंग्रेजी लेखक, एक युवा ब्राह्मण, जिसकी लिखावट तांबे की थाली जैसी थी, ने उन्हें अंग्रेजी सिखाई थी। सब कुछ देखने के बाद, उन्हें सीता के पालतू जानवरों के पास ले जाया गया, और बूढ़े काले मैना ने

अपनी मुस्लिम प्रार्थनाएँ कीं और इतनी स्वाभाविक रूप से खाँसा कि महिलाएँ हँसते-हँसते थक गईं। फिर श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस ने सीता का हाथ पकड़ा और उसे बगीचे से होते हुए अपने घर ले गईं। सीता को वह रात कितनी अच्छी तरह याद थी जब वह ड्राइंग रूम के नीचे झाड़ियों में दुबक कर अपनी शांति भंग करने वाली थी! अब सब कुछ कितना अलग था! "और तुम दोनों को मेरे लिए गाना होगा," उन्होंने ड्राइंग रूम में प्रवेश करते हुए कहा, जो सीता को सुंदरता का स्वर्ग प्रतीत होता था। "हाँ," श्रीमती मोस्टिन ने कहा, "अगर तुम अंग्रेजी बोलोगी, तो गाऊँगी, वरना नहीं, इसलिए बेहतर होगा कि तुम अभी से शुरू कर दो।" "मैं कोशिश करूँगी," सीता ने धीरे से और सरल शब्दों में उत्तर दिया। —"* जब वह यहाँ नहीं होगा तो मैं बेहतर करूँगी, और तुम मुझे सिखाओगी, है ना?" उसने ग्रेस से पूछा। "तुम मुझसे बड़ी नहीं हो, फिर भी तुम्हें इतना कुछ पता है; और मैं भी जानना चाहती हूँ।" "आपको सीता से प्यार भी करना चाहिए और उसके प्रति दयालु भी रहना चाहिए, क्योंकि अब उसका कोई दोस्त नहीं है, केवल आप ही हैं।" कई पत्र सिरिल के आने का इंतज़ार कर रहे थे; और जब सीता दोपहर में घर लौटी तो उसने उसे उन पत्रों को पढ़ने में व्यस्त पाया: लेकिन वह खुश नहीं लग रहा था, और उसने अपना हाथ उसके गले में डालकर पूछा कि उसे क्या परेशान कर रहा है। "पहले यह," उसने उत्तर दिया; "लेकिन इससे मुझे बस एक पल के लिए गुस्सा आया, और यह अच्छा है कि आप जान लें। एक ऐसा व्यक्ति जिसका मुझसे इस विषय पर बात करने का कोई अधिकार नहीं है, वह लिख रहा है कि वह मुझसे अनुरोध करता है कि मैं आपको भेज दूं और आप अकेले रहें। इस बारे में आपका क्या कहना है?"

“जहाँ तुम जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगी।” 283 “आह!” उसने जवाब दिया, “तो तुम्हारा भी पद है, और हो सकता है कि तुम्हें भी मेरी तरह पद से हटा दिया जाए; लेकिन जब उन्होंने मुझे जाने को कहा, तब भी मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा। मुझे नहीं लगता कि वे हमें जानते हैं, सिरिल! टोज़ और ग्रेस मुझे तुमसे दूर नहीं भेजेंगे!” “नहीं, बिलकुल नहीं,” सिरिल ने कहा। “इस आदमी की बात करें, अगर बुरे दिन उसे शांत नहीं करते, तो मुझे कोई और रास्ता निकालना होगा। लेकिन यह बात मुझे परेशान नहीं कर रही; मुझे मेरे भाई की सेहत परेशान कर रही है, जिसके बारे में मेरी माँ लिखती हैं कि वह फिर से बिगड़ रही है।” “और वह चाहती है कि तुम उसके पास जाओ, मुझे पता है,” सीता ने चिंता से कहा। “सच बताओ, क्या तुम्हें जाना ही है,

सिरिल?" "मैं अब नहीं जा सकता, अगर मैं चाहूँ भी," उसने जवाब दिया। "मैं अपना पद नहीं छोड़ सकता, भले ही मुझे ऐसा करने की अनुमति दी जाए। लेकिन चिंता मत करो, मेरी प्यारी, कोई असली बीमारी नहीं है और न ही कोई खतरे की बात है, और मुझे उम्मीद है कि अगली चिट्ठी तक अच्छी खबर मिल जाएगी।" "'मैं तुम्हें उनके पास भेज दूँगी, सिरिल; हाँ, अगर उन्हें तुम्हारी ज़रूरत हो तो मैं तुम्हें ज़रूर भेज दूँगी। मैं रोज़ और ग्रेस के साथ यहाँ बिल्कुल सुरक्षित रहूँगी। मैं शाहगंज नहीं जा सकती, जब तक कि पंचायत मुझे बुलाकर अपने लोगों के साथ पहले की तरह रहने का आदेश न दे; और मैं ग्रेस के साथ बहुत खुश रहूँगी, वह मुझे सिखाएगी, और तुम लिखोगी।' 'अब अपने छोटे से नासमझ दिमाग में असंभव बातें मत भरो, सीता, या जो हो सकता है या नहीं हो सकता, उसके बारे में मत सोचो। वैसे भी, जब हमें कुछ करना होता है, तब ऐसा करना काफी होता है," उसने उसे रोकते हुए कहा। 'चलो, हम चलते हैं और नाव की सवारी करते हैं।' "लेकिन जब तुम दोबारा सुनो, तो मुझे सच-सच बताना," उसने विनती भरे स्वर में कहा। 'मैं तुम्हें उनके पास जाने दूँगी, सचमुच। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं तुम्हें भेज दूँगी, सिरिल।' "मुझे पता है तुम ऐसा करोगी, मेरी जान," उसने कहा, 'लेकिन यह कोई बहुत बड़ी ज़रूरत होनी चाहिए जो मुझे तुमसे एक दिन के लिए भी दूर ले जाए।' मेरी प्यारी बूढ़ी माँ को लगता है कि इल्टन बीमार है अगर वह सिर्फ छींकता या खांसता है; और यह उनका एक दुख भरा पत्र है; इसलिए हम इंतज़ार करेंगे और उम्मीद करेंगे कि वह ठीक हो जाए! शायद जिन महिलाओं को हम जानते हैं, उन्हें सेक्टा की स्टेशन पर वापसी और श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के स्नेह और सम्मान में उसके द्वारा प्राप्त किए गए स्पष्ट अच्छे स्थान से कोई खास खुशी नहीं हुई होगी; लेकिन अब उसके खिलाफ सक्रिय कदम उठाने का कोई कारण नहीं था; और श्रीमती स्मिथ अपनी कलम के परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थीं, क्योंकि उन्होंने पाया कि उनकी आया भी सूचना देने में कुछ हिचकिचा रही थी। सुनार की पत्नी और सुनार को शाहगंज की लंबी यात्रा, पंचायत का सामना करना, और कमिश्नर साहब की पत्नी के खिलाफ उन पर लगाए गए झूठे आरोपों से कोई खास खुशी नहीं हुई थी; और सुनार ने आया से कहा कि अगर उसने उसकी पत्नी को और परेशान किया तो वह उसकी शिकायत पुलिस से कर देगा।

इतिहास में शामिल करना उचित लगता, तो मैं श्रीमती स्मिथ द्वारा उच्च पदस्थ व्यक्ति को लिखे गए उस पहले भावुक पत्र का उल्लेख कर सकता था, जिसमें उन्होंने नूरपुर में हुए घोटाले पर शोक व्यक्त किया था और श्री ब्रैंडन की चौंकाने वाली "अनैतिक" कार्रवाइयों पर खुलकर टिप्पणी की थी; और सीता के वापस आने के बाद, उन्होंने फिर से लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें यकीन है कि वही उच्च पदस्थ व्यक्ति यह सुनकर दुखी होगा कि उनकी उत्कृष्ट चेतावनी (जिसे उन्होंने आगे भेजा होगा) को जानबूझकर नजरअंदाज कर दिया गया है, और घोटाला पहले से कहीं अधिक बड़ा हो गया है, और उन्होंने अपने हस्ताक्षर "सतर्क" के रूप में किए थे। वास्तव में, उन्होंने इंडिपेंडेंट को एक गुमनाम पैराग्राफ भेजा था: लेकिन संपादक इसे छापने में बहुत सतर्क था। हालाँकि, उनके अनुसार, सबसे सफल कदम लेडी विल्टन को लिखा गया एक पत्र था, जिसे उन्होंने गुप्त रूप से कलकत्ता में एक मित्र को डाक से भेजने के लिए कहा था, "क्योंकि ग्रामीण डाक व्यवस्था इतनी अविश्वसनीय थी।" उन्होंने इसे मार्च में लिखा था और उन्हें जून या जुलाई में जवाब मिलने की उम्मीद थी, जब सीता का पूरा मामला, उन्हें पूरा यकीन था, गरमा जाएगा। इसलिए फिलहाल, श्रीमती स्निथ खुलकर आक्रामक नहीं थीं और अन्य पूछताछ में व्यस्त थीं। इस तरह दिन पुराने तरीके से बीतते गए; और सीता अन्य महिलाओं से भी परिचित हो गई थीं, जो श्रीमती मोस्टिन से मित्रतापूर्वक मिलने आती थीं। श्रीमती हिल अपने प्यारे बच्चे को श्रीमती मोस्टिन को दिखाने के लिए लाईं और सीता के प्रति दयालु थीं, जिसकी असाधारण सुंदरता और आकर्षण से वे बहुत प्रभावित हुईं, और सीता की अंग्रेजी दिन-प्रतिदिन सुधर रही थी। दयालु पादरी की पत्नी, भली-भांति श्रीमती प्रैट भी अपने पति से बातचीत के बाद श्रीमती मोस्टिन के पास गईं और उनसे सीता के बारे में पता करने का अनुरोध किया, और रोज़ को ऐसा करने में खुशी हुई। "मेरी प्यारी, तुम्हें पता है, श्री प्रैट से शादी करने से पहले मैं एक मिशनरी थी, और मुझे देशी महिलाओं से बात करने की आदत है; इसलिए मैं सीता को पूरी तरह से सहज महसूस कराऊंगी।" और सचमुच, इस मामले में श्रीमती प्रैट को दूसरों पर बहुत बड़ा लाभ था, क्योंकि उन्होंने हिंदी का गहन अध्ययन किया था और वे एक उत्कृष्ट भाषाविद् थीं। प्रिय महिला ने सोचा कि उन्हें हिंदी का ज्ञान कराया जा सकता है; लेकिन वह जानती थीं कि उन्हें सावधान रहना होगा। कुल मिलाकर स्टेशन बहुत शांत और सुखद था, हालांकि मौसम गर्म था; लेकिन यह स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रही। अज़राएल पांडे

नूरपुर में सिपाहियों की निष्क्रियता से बहुत परेशान थे, जबकि अन्य जगहों पर सभी सैनिक हथियारबंद थे और कई अंग्रेज पहले ही मारे जा चुके थे, वहीं दिल्ली के महलों और मीनारों पर राजसी ध्वज शान से लहरा रहा था। श्री ब्रैंडन और सीता के नूरपुर पहुंचने के बाद से दो सप्ताह से अधिक समय बीत चुका था; और एक शाम बुलदेव, जो

"जहाँ तुम जाओगे, मैं भी वहीं जाऊँगा।" 285 कुछ दिनों से अनुपस्थित था, अचानक लौट आया और उन्हें बगीचे में कॉटेज के बाहर बैठे हुए पाया: और उसने जो खबर दी, उससे उनकी चिंता और बढ़ गई। "अज़राइल," उसने कहा, "फुटहपुर लौट आया है, और यहाँ हुई देरी से नाराज़ है। कुछ सिपाही उससे मिलने गए थे, और वे विद्रोह की योजना बना रहे हैं; लेकिन मेरे भाई ने मुझे बताया कि यहाँ सभी एकमत नहीं हैं, और वे कोई जोखिम लेने की हिम्मत नहीं कर रहे हैं; लेकिन उन्होंने अज़राइल को आज रात आकर रेजिमेंटों के प्रतिनिधियों से बात करने के लिए कहा है। क्या आप आएँगे, महोदय, और सुनेंगे? मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता हूँ; यह एक पुराना मंदिर है जो यहाँ से कुछ ही दूरी पर पैदल सेना की पंक्तियों के पीछे स्थित है; और इसके चारों ओर घना जंगल है: एक सुनसान जगह, और रात में भूतों और जिन्नों के कारण डरावनी; लेकिन शायद," उसने अपनी आँखों में शरारती चमक के साथ कहा, 'मैं उनके बारे में कुछ जानता हूँ, क्योंकि यह हमारे पुराने सभा स्थलों में से एक था; और दीवार में एक छेद है जहाँ से आप सुरक्षित रूप से देख सकते हैं। कोई खतरा नहीं होगा, और अगर हुआ भी तो, अगर आप राहटोर्स को साथ ले जाएं तो हम कायरों के लिए काफी हैं।" बुलदेव के बोलते ही सिरिल ने अपना मन बना लिया था, और जैसे ही उसने जवाब दिया, "मैं जाऊंगा," सेक्टा उछल पड़ी और बोली, "और मैं भी: मैं यहाँ नहीं रह सकती, सिरिल, मैं डर से मर जाऊंगी, लेकिन आपके साथ मुझे कोई डर नहीं होगा। ओ! मैं आऊंगी और आपके पास रहूंगी; मुझे आने दो!" "हाँ," बुलदेव ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा, "उसे आने दो; वह हममें से किसी से भी ज्यादा डरी हुई नहीं है, और उसे अब कभी भी अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए, या उसके राहटोर्स के बिना नहीं छोड़ा जाना चाहिए।" "मुझे यह पसंद नहीं है, छोटी बच्ची," सिरिल ने अंग्रेजी में कहा, "लेकिन तुम्हें कोई डर नहीं है। अगर कोई मुसीबत आ भी जाए तो?" "मैं अभी जैसी हूँ वैसी ही रहूंगी," उसने गर्व से जवाब दिया। "मैं तुम्हारे साथ सब कुछ साझा कर सकती हूँ, वरना मैं तुम्हारी पत्नी बनने के योग्य नहीं हूँ। मुझे जाने दो। मैं अपने

पुरुष के कपड़े पहन लूँगी, और कोई मुझे देख भी नहीं पाएगा।" "वे कब इकट्ठा होंगे, बुल्डको?" सिरिल ने पूछा। "आधी रात को, महोदय," उसने कहा; "लेकिन हमें वहाँ उससे पहले पहुँच जाना चाहिए ताकि हम अपनी जगह सुरक्षित कर सकें।" "अरे!" बेचारा बोला, "तुम कुलीन खानदान के हो, और डरो मत। मैं तुम्हारे साथ मर भी जाऊँगा। तुम देख नहीं पाओगे, लेकिन सुन सकते हो।" बुल्डको ने जिस जगह का ज़िक्र किया था, वह सिरिल को अच्छी तरह से पता थी। एक पुराना खंडहर बौद्ध मंदिर, जहाँ अब कोई उपासक नहीं था। यह कुछ बगीचों के पीछे एक सुनसान जगह पर, मुश्किल से आधी मील दूर था। उसने अक्सर उस जगह का नक्शा बनाया था और उसके आस-पास की ज़मीन को अच्छी तरह जानता था। लगभग दस बजे बुल्डको आया और उसने दोनों को पूरी तरह से तैयार पाया। सिरिल ने अपनी कमर में दो रिवाल्वर रखी हुई थीं, जिन्हें उसने सावधानीपूर्वक फिर से भर लिया था।
286 सीता। उसके हाथ में एक मोटा, भारी डंडा था, जिसे वह तलवार से अधिक पसंद करता था। सीता उसके पास अपने साधारण लड़के के वस्त्र में खड़ी थी, उसका चेहरा ढका हुआ था, और उसने अपनी कमरबंद में अपना खिलौना रिवॉल्वर रखा हुआ था। छह राठौर और सिख अर्दली भी तैयार थे; और बुलदेव के पास उसका पुराना हथियार, एक छोटा भारी भाला था। फिर, सिरिल से कुछ चेतावनी मिलने के बाद, वे बूढ़े डकैत के नेतृत्व में, सावधानीपूर्वक और तेज़ी से आगे बढ़े। जब वे मंदिर के पास पहुँचे, जिसका काला खंडहर आकाश के सामने खड़ा था, बुलदेव ने उन्हें चुपचाप बैठने का इशारा किया, और खुद निरीक्षण करने चला गया। "अभी तक कोई नहीं आया है," उसने लौटते हुए कहा, "लेकिन हमें अपनी जगह लेनी चाहिए;" और वह उन्हें सीताफल की झाड़ियों और अन्य घनी झाड़ियों के जंगल से होते हुए प्रांगण की दीवार तक ले गया, जो ऊँची और पूरी थी, सिवाय एक बड़े छेद के जिससे अंदर का दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था: और वे सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए और प्रतीक्षा करने लगे। आवरण इतना घना था कि उन्हें देखना बिल्कुल असंभव था, और ऊपर कुछ बड़े इमली के पेड़ों से होकर बहने वाली गर्म रात की हवा ने हर दूसरी आवाज़ को दबा दिया था। कुछ देर बाद उन्होंने देखा कि एक या दो काली आकृतियाँ मुख्य द्वार से आईं और मंदिर की सीढ़ियों पर चुपचाप बैठ गईं, और धीरे-धीरे वह स्थान भर गया। किसी ने कुछ नहीं कहा; ऐसा लग रहा था मानो मृतकों की सभा वहाँ एकत्रित हो गई हो, क्योंकि जो भी एक-एक करके अंदर आए और अपनी जगह ली,

वे सब इतने शांत और प्रेत की तरह थे। पंक्तियों में लगे घंटों से आधी रात की घंटी बज रही थी, तभी लोगों के बीच कुछ हलचल दिखाई दी, और तीन काली आकृतियाँ प्रवेश द्वार से आगे बढ़ीं: इनमें से दो सीढ़ियों पर बैठ गईं और एक खड़ी रही, हालाँकि रात के अंधेरे और ऊपर के पेड़ों के कारण उसकी आकृति स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रही थी। "क्या आप सब यहाँ हैं?" उस व्यक्ति ने धीमी, गहरी आवाज़ में कहा, जिसे सिरिल और सीता अच्छी तरह याद रख पाए। "हम यहाँ हैं," सोमो ने उत्तर दिया; "बैठिए और बोलिए!" और वह व्यक्ति बैठ गया। मुझे लगता है कि अज़राकल के पिछले भाषण को दोहराने की आवश्यकता नहीं है, जो शायद मेरे पाठकों को अभी भी याद होगा। जातिगत भेदभाव, मौजूदा अन्याय, या अंग्रेजों के अत्याचार और लालच के विरुद्ध उनकी अब भावुक अपील में कुछ भी नया नहीं था; लेकिन जैसे-जैसे वक्ता अपने विषय में आगे बढ़ता गया, उसने कलकत्ता में अपने चचेरे भाई और भतीजे की हत्याओं का कड़वा विवरण दिया, जो इस उद्देश्य के लिए शहीद हुए थे, और उसने उनके प्रतिशोध का आग्रह किया, जिसके लिए मकरूत और दिल्ली के लोगों ने पहले ही अपना काम कर दिया था और आगे भी करेंगे। "दिल्ली के महल पर," उसने आगे कहा, "अब राजा का झंडा लहरा रहा है, और हमारे हजारों लोग पहले ही इसमें शामिल हो चुके हैं, जबकि विधर्मी अंग्रेज खुद को महिलाओं की तरह छिपा रहे हैं।" "जहाँ तू जाएगा, मैं भी वहीं जाऊँगा।" 287 ee ee मेरठ में दो हज़ार श्वेत सैनिक थे —क्या हमारे लोग डर गए थे? और जब वे ढोल बजाते और झंडे लहराते हुए स्टेशन से निकले, तो क्या किसी ने उनका पीछा करने की हिम्मत की? मेरे बेटों, तुम इतने आलसी क्यों हो? तुम जाति और मानहानि क्यों सहन कर रहे हो? क्या तुममें ज़रा भी शर्म नहीं बची? अगर तुम उन्हें धर्म के लिए लड़ने के लिए छोड़ दोगे, तो क्या अंग्रेज़ों के न रहने पर वे तुम्हारा स्वागत करेंगे? आह! तब तो बहुत देर हो जाएगी यह कहने में कि, हाय! हाय! काश हमने हमला किया होता! क्या तुम्हें लगता है कि हमारे भाई बिना किसी कारण के पद, वेतन, पेंशन और सम्मान को त्याग देते? मुझे लगता है कि जाति और धर्म की तुलना में वे मिट्टी के समान हैं; और इसलिए उन्होंने अपनी बुद्धि और वीरता में यही सोचा और निर्णय लिया कि अंग्रेज़ों का नाश होना चाहिए। अब, जब तक समय है, तुम अपने मान को बचाते हुए उनसे मिल सकते हो। एक होकर लड़ो; एक भी श्वेत पुरुष या स्त्री को बचने न दें: आयुक्त के साथ रहने वाली वेश्या को मुझे सौंप दें, ताकि उसे बनारस भेजकर उसके बाल मुंडवा दिए जाएं और उसे

अपमानित किया जाए। क्या तुम उस अपमान और बदनामी को भी सहन कर पाओगे जो हमारे आसपास के देश में हर सच्चे हिंदू के लिए तिरस्कार है? सुनो! मैं राजा हुरपेल सिंह के पास से आया हूँ, जिनके पास पहले से ही बीस हजार अच्छे सैनिक हैं; नवाब दिल खान के पास से, जिनके पास दस हजार सैनिक और कई तोपें हैं। जब तुम यहाँ सबको नष्ट कर दो, तो उनके पास आना और मेरा स्वागत पाना!" "चलो अब चलें," भीड़ में अपनी लंबी कद-काठी को ऊपर उठाते हुए एक युवा सिपाही चिल्लाया। "तुरंत शुरू करें। देरी क्यों करें?" "अभी नहीं, मेरे बेटे," अजरिक ने कहा। "अभी नहीं; मुंगुल पांडे की तरह पागल मत बनो: मेरे संकेत की प्रतीक्षा करो, और तुम सब तैयार रहो। मैं अब ज्यादा दिन नहीं लगाऊंगा। अंग्रेजों को शक न होने दो। अपना कर्तव्य निभाओ और अपनी परेड में शामिल हो, लेकिन तैयार रहो। अपना पैसा अपने पास रखो, और जब समय आए, उठो, चौकी को जला दो, और मार डालो!" तुम्हें रोकने के लिए कोई अंग्रेज़ सैनिक नहीं हैं; डरने की कोई बात नहीं। जो हैं, उन्होंने अपने चेहरे आगे छिपा लिए हैं और बाहर आने की हिम्मत नहीं कर रहे। और अगर वे आ भी गए, तो क्या तुम उनसे डरते हो? अगर डरते हो, तो तुम कायर और चमड़ा ढोने वाले हो, और मैं, अज़राएल पाण्डे, तुम्हारी बदनामी हर रेजिमेंट में, और अवध और बहार के हर गाँव में फैला दूँगा; और वे, जो अब तुम्हारे भाई हैं, तुम्हें अपनी तोपों से उड़ा देंगे। क्या तुमने मुझे सुना?" "हमने सुना," जवाब आया। "और तुम तैयार रहोगे?" "हम तैयार रहेंगे। हम अभी तैयार हैं!" "बस करो," वक्ता ने कहा; "मुझे तुम पर भरोसा है। और अब मुझे जाने दो, क्योंकि मुझे सुबह होने से पहले बहुत दूर जाना है। मेरी बात याद रखना और इंतज़ार करना, धैर्य से इंतज़ार करना, काली माता से प्रार्थना करना। तुममें से कोई भी, यहाँ तक कि वह बहादुर साथी भी जिसने मुझसे बात की,

 सीता। मेरे बेचारे मुंगुल पांडे ने अति उत्साह में आकर ऐसा किया। आह! हाँ, तुम उसकी मृत्यु का बदला लोगी, और उसके खून के बदले अंग्रेज़ों का खून धरती माता को दोगी। "हम लेंगे! हम लेंगे! डरो मत और जाओ!" उनकी धीमी, कर्कश आवाज थी। तभी वक्ता उठे और उत्तेजित भीड़ ने उन्हें घेर लिया, कुछ सिसक रहे थे, कुछ बच्चों की तरह रो रहे थे और उनके सीने और पैरों को छू रहे थे। सिरिल ब्रैंडन अब खुद को रोक नहीं पाए। उन्होंने कई बार मंदिर की सीढ़ी पर बैठे अज़राएल पांडे की आकृति को पहचानने की कोशिश की, लेकिन वे पहचान नहीं पाए, और अंधेरा इतना

गहरा था कि उनके सामने मौजूद भीड़ में किसी को भी पहचानना मुश्किल था। अब जब गद्दार उठा, और उसकी लंबी आकृति एक पल के लिए आकाश के सामने खड़ी हुई, तो सिरिल को पहचानने में कोई गलती नहीं हुई, और उन्होंने अपनी पिस्तौल से उसे निशाना बनाते हुए गोली चला दी; जैसे ही अफरा-तफरी मची, उन्होंने भीड़ पर एक के बाद एक कई गोलियां चला दीं। उन्होंने तीन लोगों को गिरते देखा, क्योंकि स्केटा ने भी गोली चलाई थी, और उन्होंने अंग्रेजी में चिल्लाकर कहा: "आओ, पुरुषों, आओ! एक भी न बचे!" और भीड़ बिना मुड़े, बेतहाशा आगे अंधेरे में दौड़ पड़ी। उसी क्षण, लुचमुन सिंह और राठौर, बुलदेव के साथ, दीवार के चारों ओर से प्रवेश द्वार की ओर भागे; भगोड़ों से मिलते ही, उन्होंने अपनी भारी तलवारों से उन पर अंधाधुंध वार करना शुरू कर दिया, और "हुर्रे बोल!" और "जे कोम्पनी बहादुर!" के नारे लगाते हुए, गर्म हवा की सीटी और ऊपर पेड़ों की सरसराहट के बीच अपनी आवाज़ बुलंद की। किसी ने भी विरोध करने की कोशिश नहीं की, सिवाय एक आदमी के, जिसने एक राहतोरे को मामूली रूप से घायल कर दिया, और बुलदेव ने उसे तुरंत भाले से मार डाला: बाकी लोग अंधेरे में भागते हुए गायब हो गए। वे कहाँ गए, यह दल न तो जानता था और न ही परवाह करता था, और कुछ ही क्षणों में वे अकेले रह गए। "हमें देर नहीं करनी चाहिए, स्वामी," बुलदेव ने ज़ोर से हंसते हुए कहा; "और कौन कह सकता है कि हमारा 'दुरेरा' अच्छा नहीं था? लेकिन मैं बस यह देख लूँगा कि कौन मर गया है। मुझे अज़्रिकल को पाकर दुख होगा, क्योंकि मुझे उसे मोची के लिए चाहिए था।" यिरिल उसके पीछे गया और आंगन के अंदर लेटे तीन आदमियों को देखा, जिनमें से एक सांस ले रहा था और धीमी आवाज़ में पानी मांग रहा था। बाहर चार और लोग थे, जिनमें से कोई भी बोल नहीं पा रहा था, और कुछ घायल भाग निकले थे। अज़र्डक्ल पांदे फिर से बच निकला था। “चलो चलें!” बुलदेव चिल्लाया; “हमने आज रात के लिए काफी कुछ कर लिया है। जल्दी आओ; और हमें भागना होगा, श्री ब्रैंडन, कहीं ऐसा न हो कि वे फिर से इकट्ठा होकर हमारा पीछा करें। मृतकों को सुबह तक वहीं पड़े रहने दो, और हम जान जाएंगे कि वे कौन हैं। महिला का ख्याल रखें, महोदय, या क्या हम उसे ले जाएं?” “मुझे नहीं लगता कि वह हममें से किसी की भी तरह तेज़ दौड़ सकती है,” श्री गैड ने उत्तर दिया।

“जहाँ तू जाएगा, मैं वहीं जाऊँगी।” ब्रैंडन मुस्कुराते हुए बोला, “लेकिन हम दोनों, और हम सभी अंग्रेज, आपकी वफ़ादारी और साहस के लिए आपके बहुत ऋणी हैं, जितना

हम कभी चुका नहीं सकते।" "पैसा नहीं, पैसा नहीं, महोदय," वह आदमी रोते हुए बोला; "बस अपने दोनों हाथ मेरे सिर पर रख दीजिए, मेरे जैसे गुलाम के लिए इतना ही काफी है।" और सिरिल और सीता ने ऐसा ही किया। "अब भागो।" "मेरी प्रियतमा," सिरिल ने सीता से कहा, जब उन्होंने अपनी गति धीमी की—जिसकी कमर पर उसका हाथ था जब अज़रील पांडे बोल रहा था—"और तुम ज़रा भी नहीं डरीं। हे प्रियतमा! जब मैं तुम्हारे दोस्तों को बताऊँगी कि क्या हुआ है, तो मुझे तुम पर सचमुच गर्व होगा।" "नहीं! मैं उससे नहीं डरी," उसने ऊपर उसकी ओर देखते हुए कहा; "लेकिन मैं आपके लिए, मेरे स्वामी, और उनके लिए, मेरे प्रियतम, विद्रोहियों से डरती हूँ।" "अब आपको डरने की ज़रूरत नहीं है," उन्होंने कहा; "हम जानते हैं कि सिपाही क्या कर सकते हैं, और हम तैयार रहेंगे। हमें जजों के पास जाने दीजिए, अगर वे अभी भी जाग रहे हों; शायद वे हमारा इंतज़ार कर रहे हों।" और वे फिर तेज़ी से आगे बढ़ गए। जब वे घर पहुँचे तो कतारों में लगे घंटे एक बज रहे थे। "जज साहब और सिपाही आपके बारे में बहुत चिंतित थे, महोदय," बटलर कासिम ने कहा, "और हम उन्हें बता नहीं पाए कि आप कहाँ गए थे। श्री मोस्टिन को यहाँ आए अभी कुछ ही पल हुए हैं।" "तो हम जैसे हैं वैसे ही उनके पास चलते हैं," सिरिल ने कहा। और कुछ ही क्षणों में उसने ड्राइंग रूम की खिड़की पर दस्तक दी और चिल्लाया, "फिलिप, हम यहाँ हैं, सब सुरक्षित हैं। हमें अंदर आने दो।" श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस मेज पर बैठी थीं जब उनके पति ने सिरिल और सीता को अंदर आने दिया। महिलाओं के रोने का स्पष्ट संकेत था, क्योंकि उनकी आँखें लाल और सूजी हुई थीं। "भगवान का शुक्र है, आप दोनों सुरक्षित हैं!" सभी ने एक साथ कहा; "और सीता भी तुम्हारे साथ है। ओ मेरी प्यारी! तुम्हें खुद को इस तरह उजागर नहीं करना चाहिए," श्रीमती मोस्टिन ने आगे कहा। "लेकिन वह अपने लड़के के कपड़ों में कितनी अच्छी लग रही है, श्री ब्रैंडन। आप कहाँ थे? गोलियों की आवाज सुनाई दी, और नौकर दौड़ते हुए आए और चिल्लाने लगे कि सिपाही विद्रोह कर रहे हैं; और हम आपके लिए बहुत चिंतित थे, क्योंकि किसी को नहीं पता था कि आप कहाँ गए थे।" "मैं अपने स्वामी के साथ थी," सीता ने विनम्रता से कहा; "मैं आपको सब बताऊंगी। हम भारतीय महिलाएं आपसे कहीं अधिक कठिन परिस्थितियों की आदी हैं; और अगर उनकी मृत्यु हो गई होती, तो मैं वापस नहीं आती।" और जो महिलाएं बोल नहीं पा रही थीं, उन्होंने सीता को अपने हाथों से ढक लिया। "अगर एक कप चाय मिल जाए, तो मुझे भी एक पीने दीजिए," सिरिल ने

श्रीमती मोस्टिन से कहा; “इससे मेरी जुबान खुल जाएगी, जो अभी तक सूख चुकी है। जहाँ तक सीता की बात है, उसे कभी प्यास नहीं लगती, मुझे पूरा यकीन है कि उसने हमारे साथ जो किया उसका आनंद लिया!”
i) 90 सीता। | सचमुच, लड़की के गाल दमक रहे थे और उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं। वह पहले कभी इतनी सुंदर नहीं दिखी थी। “सबको बताओ,” उसने कहा। और फिर सिरिल ने वह सब बताया जो उन्होंने देखा और सुना था, जब तक कि गर्म रात काफी आगे नहीं बढ़ गई। अध्याय 36. “‘तैयारी।” जैसे ही सुबह हुई, नूरपुर में स्वाभाविक रूप से बहुत हलचल थी। पूरा स्टेशन शोक और चिंता से भरा हुआ था। रेजिमेंट के सिपाही समूहों में अपने परेड मैदान में इकट्ठा हुए, लेकिन उनके पास हथियार नहीं थे; वे अपने अधिकारियों से पूछ रहे थे कि रात में क्या हुआ था, क्योंकि कई लोग मोर्चे के पास तलवार के गंभीर घावों के साथ पाए गए थे, जिन्हें अस्पताल ले जाया गया था, लेकिन उन्होंने अपने साथ हुई घटना के बारे में बताने से इनकार कर दिया था। कई लोग निस्संदेह अच्छी तरह जानते थे, क्योंकि अज़री पाण्डे का भाषण सुनने वाली सभा में सिपाही और गैर-कमीशन अधिकारी दोनों मौजूद थे; और वफादारों के बीच काफी अटकलें लगाई जा रही थीं कि कहीं सिपाहियों के बीच ही कोई लड़ाई तो नहीं हुई थी। हालांकि, फिलहाल समूह जल्दी से तितर-बितर हो गए; लेकिन इस विश्वास के साथ कि जो कुछ भी हुआ था, अंततः उसका खुलासा हो जाएगा। बहुत सुबह ही, श्री नोबल, जिन्हें पुलिस ने रात में खंडहर मंदिर में हुए संघर्ष की सूचना दी थी, उनमें से कुछ लोगों को लेकर घटनास्थल पर पहुंचे। वहां कुछ लोग जमा थे, जिनमें कुछ सिपाही भी थे जो वर्दी में नहीं थे; लेकिन मृतकों को छेड़ा नहीं गया था और उन्हें आसानी से पहचान लिया गया। टूटी हुई दीवार के अंदर तीन लोग थे, जिनकी गोली लगने से मौत हो गई थी; बाहर चार लोग थे, जिन पर तलवार और भाले के भयानक घाव थे। तीन सिपाही थे, जिनके नाम वहां मौजूद लोगों ने बताए। मृतकों में से एक रेजिमेंट की ग्रेनेडियर कंपनी का एक नेक नौजवान था, जिसका नाम इसरी तिवारी था। “अरे!” सिपाही ने कहा, “वह हमेशा धमकी देता रहता था और कहता था कि वह अंग्रेजों को मार डालेगा, लेकिन वह इतना गांजा पीता था कि हम उसे पागल समझते थे। उसे वही मिला जिसका वह हकदार था।” वहाँ दो जिला पुलिसकर्मी भी बिना वर्दी के थे, आयुक्त विभाग में एक मुस्लिम मुंशी था, जिसके शरीर पर नवाब की कार्यवाही के अखबारों सहित कई फारसी पत्र मिले; और एक

ऐसा व्यक्ति था जिसे कोई नहीं जानता था, तलवार और ढाल से लैस, जिसे नवाब के खास लोगों में से एक बताया गया।
“तैयारी।” 291 सेवक, या कोई बाहरी ग्रामीण। श्री नोबल ने मौके पर ही एक जांच समिति बुलाई, जिसने फैसला सुनाया, “कि सातों मृतकों की मृत्यु हिंसा से हुई थी, जिसका कारण अज्ञात था।” इसके बाद श्री नोबल पुलिसकर्मियों और मुंशी के घर गए और उनके यहाँ से कागजात ढूंढे; मुंशी के पास नवाब के पत्रों और अखबारों का एक अच्छा-खासा बंडल और उन्हें भेजे गए संदेशों के मसौदे मिले, जिन्हें बाद में पढ़ने पर राजद्रोह का पता चला। हालाँकि, उनका लेखक फरार हो चुका था। इन सभी दस्तावेजों और जो थोड़ी-बहुत जानकारी उन्होंने जुटाई थी, उसके आधार पर श्री नोबल श्री ब्रैंडन के पास आए और अपनी रिपोर्ट दी, और उन्होंने भी वही सुना जो मैंने पहले ही दर्ज किया है। फिर बाबा साहब आए और उन्होंने भी यही सुना; और एक अन्य फारसी मुंशी को समाचार लेखक के कागजात की जांच करने के लिए बुलाया गया, और वे धोखे और झूठ का एक दुखद खुलासा साबित हुए। सेक्टा के बारे में लिखे गए उस प्रसिद्ध पत्र का मसौदा भी वहीं था, जिसमें कई रेखांकन और बदलाव किए गए थे, मानो लेखक ने इसे लिखने में विशेष परिश्रम किया हो, और वास्तव में उसने किया भी था। कुछ देर बाद, श्री मोस्टिन अपने बगीचे से सुबह की चाय पीने के लिए अंदर आए, और उनके साथ ब्रिगेडियर और कैप्टन हिल भी शामिल हो गए, जो मृतकों को देखने मंदिर गए थे: इस प्रकार उस स्थान के सभी प्रमुख अधिकारी रात की घटनाओं पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए। बेशक, श्री नोबल ने हल्के-फुल्के अंदाज़ में शिकायत की कि उन्हें वह मौका नहीं दिया गया जो सिरिल को मिला था; और विशेष रूप से इसलिए क्योंकि वे थाने में नागरिक कर्तव्य के प्रभारी थे: लेकिन श्री ब्रैंडन ने उन्हें यह कहकर संतुष्ट किया, जो बिल्कुल सच था, "कि उनके पास व्यवस्था करने का समय नहीं था, और यदि पुलिस को लगाया गया होता, तो संभवतः गुप्त राजद्रोह का पता ही नहीं चलता।" इसलिए, एक आपातकालीन मामले के रूप में, उन्होंने इसे अपने तरीके से संभाला था। "और यह बहुत अच्छा भी था," ब्रिगेडियर ने कहा; “मैंने इससे बेहतर काम होते कभी नहीं सुना। लेकिन शाहगंज में अपने कारनामे के बाद तो तुम काफी अनुभवी हो गए हो, ब्रैंडन। और वो बदमाश फिर से तुमसे बच निकला?” “हाँ,” सिरिल ने कहा, “जहाँ तक मुझे पता है; लेकिन अगर मैंने अपनी जिंदगी में कभी किसी मृत चीज को ढका है तो वो उसका सिर था; और वो

मुझसे दस कदम से ज्यादा दूर नहीं था, मुझे लगता है। शायद उसके साथ वाले लोग उसे ले गए हों; लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि हमें उसके बारे में पता चल जाएगा। मैं नवाब को पत्र लिखकर उसे न्याय के हवाले करने को कहूँगा, लेकिन मुझे जरा भी अंदाजा नहीं है कि उसे भेजा जाएगा।" "मुझे भी नहीं," ब्रिगेडियर ने कहा; "और वहाँ 292 सीता। मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं लगता कि मैं ब्रिगेड को फुटतेहपुर ले जाऊं और उससे पूछताछ करूं; लेकिन सिपाहियों की वर्तमान संदिग्ध स्थिति को देखते हुए, मैं उन पर भरोसा करने की हिम्मत नहीं कर सकता। "फेवो, तो क्या आपको सामान्य से अधिक संदेह था?" श्री मोस्टिन ने पूछा। "मुझे है भी और नहीं भी, न्यायाधीश," उन्होंने उत्तर दिया; "अभी तक मुझे सैनिकों में कोई कमी नहीं मिली है; लेकिन कल हमें रात की बैठकों की कुछ अप्रिय खबरें मिलीं, हालांकि न तो मैं और न ही कमान अधिकारी उनका पता लगा सके। हालांकि, एक बात पर मैं दृढ़ हूं, ब्रैंडन, जैसा कि मैंने हमेशा कहा है: कोई जोखिम नहीं लेना। मैं आज शाम सभी यूरोपीय लोगों को किले में ले जाऊंगा, क्योंकि इस समय वहां केवल एक सार्जेंट का गार्ड है; और मैं उन्हें तब तक बाहर नहीं निकालूंगा जब तक कि विद्रोह का यह सारा तूफान शांत नहीं हो जाता, और मुझे लगता है कि आपको अपना सारा खजाना भी भेज देना चाहिए। मेरे पास पहले से ही कुछ है; लेकिन मुझे पता है कि आपका बहुत सारा राजस्व हाल ही में आया है, और अब आपके पास और भी बहुत कुछ होना चाहिए।" सोचो, अगर सिपाही बेवफा निकले तो उनके लिए कितना बड़ा प्रलोभन होगा, जब उसकी रखवाली करने के लिए सिर्फ वे खुद ही हों! "ज़रूर," सिरिल ने कहा। "बाबा साहब खुद ही देखेंगे।" "और कर्नल साहब शायद यूरोपीय सैनिकों को किले जाते समय इसे ले जाने के लिए भेज सकते हैं," सेरिश्तदार ने आगे कहा; "इसे गाड़ी में ले जाया जा सकता है।" "बुरा विचार नहीं है, बाबा साहब; और कैप्टन टिल आकर सब कुछ देखेंगे," ब्रिगेडियर ने उससे कहा। "और अब, सज्जनों," उन्होंने आगे कहा, "क्या हम पिछली रात के मामले पर चर्चा करें? मुझे मृत और घायल सैनिकों की जांच के लिए अदालतें गठित करनी होंगी; लेकिन बाकी, क्योंकि मंदिर छावनी की सीमा से बाहर है, नागरिक अधिकारियों के पास रहेगा। हालांकि, ब्रैंडन, आपकी गवाही की आवश्यकता होगी। क्या आप ग्यारह बजे भोजनालय में आएंगे? मैं भी वहीं रहूंगा।" और सिरिल ने खुशी-खुशी जाने की बात कही। "महिलाओं के लिए," ब्रिगेडियर ने आगे कहा, "मैं स्वयं कुछ नहीं कह सकता: लेकिन अगर हम सब तैयार हैं, जैसा कि हम होंगे, और

अधिकारियों का एक दल हर रात स्टेशन का चक्कर लगाएगा, तो मुझे लगता है कि उन्हें डरने की ज़रूरत नहीं है, और मैं जानता हूँ कि इस मौसम में उनके लिए अपने आरामदायक घरों को छोड़ना कितना अप्रिय होगा। लेकिन मैं सभी को बता दूँगा कि जो भी आएगा उसे पहले से आवंटित क्वार्टर मिलेंगे। मैं वास्तव में नहीं चाहता कि किसी को उनमें जाना पड़े, लेकिन बेहतर यही है कि विकल्प खुला रखा जाए।" इस प्रकार सब कुछ तय हो गया: और कैप्टन हिल शाम को अंग्रेजी सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ खजाने की ओर रवाना हुए, जहाँ
तैयारी। रुपयों से भरी 293 बोरियाँ गाड़ियों पर लादकर ले जाई गईं, केवल दैनिक उपयोग के लिए ही पर्याप्त रुपये छोड़े गए। खजाने की सुरक्षा में तैनात देशी अधिकारी और सिपाहियों का यह दावा व्यर्थ था कि इस स्थानांतरण में उनकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। कैप्टन हिल केवल इतना ही कह सके कि यह कमिश्नर साहब का आदेश था और इसका पालन करना ही होगा, और सूर्यास्त के समय पुराने पठान किले के ऊंचे बुर्ज से अंग्रेजी बिगुलों की मधुर ध्वनि सुनाई दी। कई महिलाएं अंग्रेजी टुकड़ी के साथ गईं; उनमें श्रीमती स्मिथ और श्रीमती जोन्स भी थीं, लेकिन अधिकांश महिलाएं अपने घरों में ही रहीं। वे अभी तक डरी नहीं थीं, और सुंदर लूसी होम एक नायिका बनती जा रही थी। मोस्टिन और ओरिल ब्रैंडन के घर किले के बिल्कुल पास थे और किले की तोपों की निगरानी में थे, और झील पर बने छोटे बुर्ज तक जाने वाली सड़क उनके बगीचों के अंत से होकर गुजरती थी; इसलिए, मोर्चे या शहर में किसी भी प्रकार की चेतावनी की स्थिति में वे आसानी से भाग सकते थे, और वे वहीं रहे। वास्तव में यह देखकर आश्चर्य हुआ कि क्या किया गया था। ब्रिगेडियर और अधिकारियों द्वारा किले का जीर्णोद्धार किया गया। मराठा युद्ध के बाद से प्राचीरों और बुर्जों पर पड़ी कुछ पुरानी तोपों की सफाई और जांच की गई और उन्हें उपयोग योग्य पाया गया। किले की प्राचीरों और छेददार दीवारों की मरम्मत की गई; द्वार तक जाने वाली ऊबड़-खाबड़ सड़क को समतल किया गया; खाई और भीतरी भाग की सफाई की गई और काउंटरस्कार्प की मरम्मत की गई। प्रत्येक इमारत को अच्छी तरह से सफेदी की गई और नए कार्थेन के फर्श बिछाए गए। संक्षेप में, भीतरी भाग, जिसमें एक हजार सैनिक रह सकते थे, वास्तव में जैसा था वैसा ही सुरक्षित और आरामदायक दिखता था। किला एक प्राकृतिक ऊँचाई पर बनाया गया था, जो झील की ओर तेजी से ढलान वाला था। प्रत्येक ओर एक चौड़ी सूखी खाई थी, जिसमें काउंटरस्कार्प और

छोटी ढलानें थीं, जिसके आगे प्राकृतिक भूमि को दस से बीस फीट की ऊँचाई तक ढलानदार बनाया गया था। चारों ओर एक फाउस-ब्रेई थी, जो प्रवेश द्वार पर दोहरी थी, जिसमें बड़े बुर्ज और ट्रैवर्स थे, और एक दोहरी सूखी खाई थी। खाई। पूरा इलाका, खासकर गढ़ के पास, एक ऊँचाई बनाता था, जहाँ से मीलों दूर तक सब कुछ दिखाई देता था, और इसलिए छावनियों की तुलना में हवा ठंडी और ताज़ी थी, और लोगों को यह बहुत पसंद था। एक बड़े खाली महल में एक गिरजाघर और एक अस्पताल भी बनवाया गया था; कुल मिलाकर सब कुछ पूरा था। सिरिल और स्केता चाहें तो अपने क्षेत्र में बने जलद्वार तक जा सकते थे, या पैदल भी जा सकते थे; और वहाँ पहुँचने पर एक रास्ता उस मीनार तक जाता था जिसे सिरिल ने सबसे एकांत स्थान के रूप में चुना था। इसके पास ही परदे में मेहराबों से बने कई कमरे थे, जिन्हें सिरिल ने आंशिक रूप से बंद करवा दिया था।

294 सीता। ~~ ऊपर। एक को नया प्रार्थना कक्ष, एक को रसोईघर, एक को बैठक कक्ष में बदल दिया गया, और एक अन्य में उस बूढ़े ब्राह्मण और उसकी पत्नी को, जिन्होंने सीता छोड़ने से इनकार कर दिया था, अपना निवास स्थान बनाना था। आटे और अन्य खाद्य सामग्री का भंडार जमा किया गया, और अष्टकोणीय मंडप कक्ष में कुछ साधारण फर्नीचर रखे गए—एक नीचा पलंग, दो-तीन आरामकुर्सियाँ और अन्य कुर्सियाँ, एक मेज और कुछ किताबों की अलमारियाँ—और जब इन्हें व्यवस्थित किया गया और सिरिल की तस्वीरें टांगी गईं, तो यह स्थान वास्तव में सुंदर लग रहा था। जैसा कि कहा गया है, यह एक अष्टकोणीय था, जो बुर्ज के आकार से मेल खाता था। सामने, केंद्रीय भाग में एक छोटी सी खिड़की और बालकनी थी, और प्रत्येक तरफ दो खुली जगहें थीं, जिनमें खुरदुरे खिड़की के शीशे और कांच लगाए गए थे। कमरे की शैली पठान गोथिक थी, जिसे बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से बनाया गया था, क्योंकि मेहराबों की नक्काशी और मोल्डिंग छत के केंद्र तक जाती थी, जहाँ वे एक नक्काशीदार शीर्ष या मुकुट में मिलती थीं, और छत भी नुकीले मेहराबों के समान ही घुमावदार थी। खिड़कियों से नज़ारा सचमुच मनमोहक था। पैरों के नीचे, लगभग एक मील दूर, एक झील थी, जिसके दूसरे छोर पर उसका बांध था। एक तरफ़ स्थानीय शहर और कई घाट या स्नान स्थल थे, जिनमें पानी में उतरने वाली सीढ़ियाँ थीं, और जहाँ स्नान करने वाले और पानी लाने वाले लोग हमेशा मौजूद रहते थे। इसके सामने कुछ अंग्रेज़ी बंगले और उनके सुंदर बगीचे थे; ब्रिगेडियर का बंगला सबसे ऊँचे स्थान

पर था, जहाँ ध्वज स्तंभ लगा था, और इंग्लैंड का लाल झंडा दूर नीले आकाश में लहरा रहा था। मीनार की छत से, जिस पर एक तोप थी, सिपाही टुकड़ियाँ और परेड ग्राउंड दिखाई देते थे, साथ ही दूर तक फैले हरे-भरे ग्रामीण इलाकों का विस्तृत दृश्य भी दिखाई देता था। लेकिन गढ़ की विशाल संरचना, जिसका टावर एक बाहरी भाग था, अन्य दिशाओं में दृश्य को बाधित करती थी। सिरिल ने सीता के समान मेहराबों से एक रसोईघर और स्नानघर बनवाया था; लेकिन बुर्ज की विशाल संरचना उनके बीच में थी, और वे एक-दूसरे के दृश्य में बाधा नहीं डालते थे। इसलिए यह माना जा सकता है कि ये कमरे एकांत और आरामदायक थे, और सीता और उनके पति अक्सर वहां आते थे, यह सोचते हुए कि क्या कभी उनकी आवश्यकता होगी, और उस खूबसूरत सूर्यास्त को देखते थे जब शाम के बादलों की चमक झील में प्रतिबिंबित होती थी, और दूर तक सुनहरी धुंध छाई रहती थी। और वे बहुत खुश थे; ग्रेस और सीता पक्की सहेलियाँ बन गई थीं, और सीता अब उनसे सामान्य विषयों पर स्पष्ट रूप से धाराप्रवाह बात कर सकती थीं, जो प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। ग्रेस अक्सर सीता को अंग्रेजी के पाठ पढ़ाती थीं और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करती थीं; और शाम का संगीत हमेशा उनके लिए एक सुखद अनुभव होता था, खासकर जब कैप्टन हॉब्सन आते थे, और उनकी आवाजें आपस में मिल जाती थीं।

“तैयारी।” 295 ए ई प्रसिद्ध इतालवी ओपेरा के बेहतरीन तिकड़ी और चौकड़ी में। “लुक्रेज़िया बोर्जिया” से “गुआई, से ते स्फुगे उन मोटो” उनका लगभग विशेष पसंदीदा था, जब कैप्टन हॉब्सन की समृद्ध बास और सिरिल की सुरीली टेनर, ग्रेस मोस्टिन के विलाप के साथ घुलमिल जाती थी; और संकेत मिलता है कि ऐसे कई अन्य भी थे। अक्सर, अच्छी श्रीमती प्रैट भी आतीं और उनके साथ बैठतीं, अपने धैर्य और ईश्वर की महान दया में सच्चे विश्वास से सभी को प्रोत्साहित करतीं, और कभी-कभी, हालांकि अक्सर नहीं, स्कॉटा को धार्मिक चर्चा में शामिल करतीं, क्योंकि वह महसूस करती थीं कि लड़की ईश्वर के वचनों का कितना गहरा आदर करती है, जिन्हें बच्चे भी समझ सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं। लेकिन फिर भी, सीता अपने पुराने हिंदू वैदिक विश्वास की पवित्रता में इतनी दृढ़ थीं, जिसकी शिक्षा वामुन भूत ने उन्हें दी थी, और हिंदू मूर्तिपूजा के प्रचलित चलन के प्रति इतनी कट्टर थीं कि सीता अच्छी तरह जानती थीं कि सीता के धार्मिक गढ़ को हिलाना या उनके आध्यात्मिक विश्वासों को तोड़ना आसान काम नहीं होगा। इसलिए, उन्होंने समझदारी से इस विषय

पर ज़ोर नहीं दिया। एक दिन उन्होंने ग्रेस से कहा, “अच्छी नींव बोई है, मेरी प्यारी, और यह अंकुरित होकर बढ़ेगी ही: और अगर ऐसा नहीं हुआ तो मैं बहुत बड़ी गलती करूंगी। मैं आध्यात्मिकता में उनका मुकाबला नहीं कर सकती।” नवोरपुर में सामान्य कामकाज में कोई बदलाव नहीं आया था। जज अपने दरबार में उपस्थित थे और सिरिल ब्रैंडन अपने कुचेरी में। सिपाही स्थिर थे, कर्तव्य सामान्य रूप से चल रहे थे और मंदिर में हुए विवाद का तनाव मानो शांत हो गया था। यदि कोई राजद्रोही लोग सक्रिय थे या अभी भी हैं, तो वे पहले की तुलना में अधिक सतर्क और सावधान थे। दिल्ली में हुए हंगामे के स्थल से कभी-कभार ही कोई डाक या पत्र आता था; लेकिन जो भी खबरें आती थीं, वे हर तरह से बेहद भयावह होती थीं और मई के अंत तक इसमें कोई संदेह नहीं रह गया था कि राजद्रोह उतना ही व्यापक था जितना कि उस समय तक सफल हो रहा था। श्री ब्रैंडन ने नवाब को अज़रील पांडे की तत्काल रिहाई के संबंध में विनम्रतापूर्वक, लेकिन कड़े शब्दों में लिखा था। अज़रील पांडे एक दोषी अपराधी था, जिसके खिलाफ मौत की सजा दर्ज थी, जो भाग गया था और सेना को विद्रोह के लिए उकसाने में मदद की थी। श्री ब्रैंडन ने स्वयं स्टेशन के पास मंदिर में उसे एक उत्तेजक और राजद्रोही भाषण देते हुए सुना था। उन्हें चेतावनी दी गई थी। कि उसका अपना चरित्र अत्यंत संदिग्ध था, और यदि वह इस पर अड़ा रहा तो अंततः उसका पतन निश्चित था। नवाब ने इस पत्र का तुरंत उत्तर नहीं दिया। उसने अपने मूंशे के द्वारा एक अत्यंत प्रशंसात्मक संदेश भेजा, जिसमें उसने कहा कि वह अंग्रेजों के प्रति वफादार है, और उसका जीवन उनकी कृपा और सुरक्षा पर निर्भर है, और वह यथाशीघ्र पत्र लिखेगा। वास्तव में, उसका देश...

296 सीता. ए टेट वी ने एन एनजी ए ए: एलटी सेलर मौलवी नवाब के आदेश पर वुर्पाल सिंह के पास एक मिशन पर गए थे, जिसका उद्देश्य राजा को पुराने मनमुताव भुलाकर अंग्रेजों के विरुद्ध आम लड़ाई में उनके साथ शामिल करना था। जब मौलवी लौटे, तो बलवान राजा द्वारा किए गए स्वागत से बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं हुए। नवाब ने उन्हें प्राप्त पत्र दिखाया और उनसे सलाह मांगी। मौलवी ने कहा, ‘‘हमें थोड़ा इंतजार करना चाहिए, मेरे मित्र; हम अभी कार्रवाई के लिए तैयार नहीं हैं, और नूरपुर के सिपाही अभी हमारे साथ नहीं हैं। मैं एक ऐसा उत्तर तैयार करूंगा जो फिलहाल फिरंगी को संतुष्ट कर दे।’’ और उन्होंने फ़ारसी में इस प्रकार लिखा, जिसका अनुवाद मैं कर रहा हूँ:— “उच्च पदस्थ, प्रतिष्ठित, अपने मित्रों के प्रति दयालु, संसार के न्यायप्रिय,

गरीबों के शरणस्थल, सिरिल ब्रैंडन, साहिब बहादुर, नूरपुर के आयुक्त, सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से नमस्कार और शांति! ईश्वर की स्तुति हो, और हज़ार बार धन्यवाद, कि मेरे स्वामी ने अपने विनम्र मित्र को एक दयालु, उपदेशात्मक पत्र लिखने की कृपा की है।" "इस याचिकाकर्ता के पूर्वज योद्धा थे और उन्होंने अनेक युद्धों और संकट के समय में कुम्पानी बहादुर की निष्ठापूर्वक सेवा की थी। इसलिए, यह याचिकाकर्ता, जो स्वयं योद्धा नहीं है और शांति एवं सद्भाव चाहता है, उनके द्वारा अर्जित लाभों का आनंद लेता है और उनके प्रति कृतज्ञ है। अब तक उसका चेहरा सत्य की चमक से दमकता रहा है और ईश्वर की कृपा से अब वह दुष्ट वक्ताओं और निंदकों की दुर्भावना से धूमिल न हो। "आपका मित्र दुःखपूर्वक कहता है कि उस पर डाकू और दुष्ट लोगों को गुमराह करने वाले अज्रियल पांडे को शरण देने का आरोप लगाया गया है और उसकी सत्यनिष्ठा पर भी संदेह किया जा रहा है। खैर, जीवन में अनेक गुणी लोगों का यही भाग्य होता है कि उन्हें गलत समझा जाता है, और यह याचिकाकर्ता भी अपने भाग्य से बच नहीं सकता; वह इसके निर्णय के आगे असहाय है!" "सर्वज्ञानी के फरमान अद्भुत और रहस्यमय हैं। उनका विरोध कौन कर सकता है? सच्चा दुख मौन होता है। यह निश्चित है कि मंदिर में हुई गड़बड़ी के कुछ दिनों बाद, आपके उत्तराधिकारी ने सुना होगा कि एक जोगी को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, और उसे ले जाकर तुरंत जला दिया गया था; इसलिए उसका कोई सुराग नहीं है। अगर वह अजराएल पांदे होता, तो आपका मित्र उस दुष्ट व्यक्ति की मृत्यु पर प्रसन्न होता। मैं और क्या लिखूँ? भगवान आपको सुरक्षित रखें, और आपका मान-सम्मान और समृद्धि सौ वर्षों तक प्रतिदिन बढ़ती रहे।" "लो, मुझे लगता है कि सूअर के लिए इतना काफी होगा," मौलवी ने कहा। "यह उसे गुमराह कर देगा; और जब वह मरे तो उसकी कब्र कुत्तों द्वारा अपवित्र की जाए।"

घायल, लेकिन मरा नहीं। 297 "उल-हम्द-उल-इल्ला!" नवाब चिल्लाया, "यह एक अद्भुत और विद्वतापूर्ण पत्र है: हर हाल में इसे जाने दो;" और यह मूनशी द्वारा सुनहरे कागज पर लिखा गया था, और एक घुड़सवार द्वारा विधिवत भेजा गया था। "मुझे आश्चर्य है कि क्या अजरील पांडे मर गया है," फिलिप मोस्टिन ने पूछा, जब मित्र आपस में पत्र पढ़ रहे थे, क्योंकि न्यायाधीश दोनों में बेहतर फारसी विद्वान थे; "आपने कहा था कि जब आपने उस पर गोली चलाई थी, तब आपने उसे ढँका था।" "वह मुझसे ज्यादा मरा नहीं है," सिरिल ने कहा, "वरना बुलदेव को पता चल जाता।

हालाँकि, शायद वह घायल हो; लेकिन मेरा जासूस कुछ दिनों से गायब है, और जब तक वह वापस नहीं आता, हमें पता नहीं चलेगा। मुझे लगता है कि मैंने उसे मारा है, फिलिप। मुझे लगता है कि मैंने मारा है, और बहुत जोर से।" अध्याय 37वीं। घायल, लेकिन मरा नहीं। नवाब की जागीर के एक छोटे से सुनसान गाँव, टाइना में, अज़रील पांडे, जिसके चेहरे पर भयानक घाव थे, मानो मृत्यु के निकट था। उसका दुबला-पतला शरीर एक साधारण पलंग पर पड़ा था, और उस पर सूखे खून के काले धब्बों से सनी एक मोटी, गंदी चादर पड़ी थी, जिसके ऊपर से उसके नग्न शरीर की कठोर आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं। वह जिस जगह लेटा था, वह नवाब के एक सेवक के छोटे से घर का इकलौता कमरा था, जो पहले अज़रील के गिरोह का सदस्य था, और जिसके पास मंदिर में हुई घटना से लौटने पर डाकू सरदार को छुपने और सुरक्षा के लिए भेजा गया था। सिरिल ब्रैंडन का यह अनुमान गलत नहीं था कि गोली चलाते समय उसने अज़रील को अपनी पिस्तौल से ढँक लिया था; क्योंकि गोली उसके दाहिने जबड़े पर लगी थी, जिससे वह चकनाचूर हो गया था और उसका गाल बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो गया था। अगर कुछ इंच नीचे होता, तो वह बदमाश भी बाकी बदमाशों की तरह मारा जाता: लेकिन वह बच निकला। नवाब के कुछ सेवकों की मदद से, जो उसके साथ आए थे, उन्होंने राठौरों के हमले से खुद को बचा लिया और घायल व्यक्ति को जल्दी से एक मोटे काले कंबल में लपेटकर, जो उनमें से एक के पास था, उसे तेजी से फतेहपुर की ओर ले गए। वहाँ पहुँचने पर उसके साथ क्या करना है, यह उन्हें नहीं पता था, क्योंकि उसके छिपने की पिछली जगह उन्हें नहीं पता थी; लेकिन उनमें से एक आदमी चुपके से नवाब के पास गया, जिसने तुरंत फैसला किया कि उसे लेना असंभव होगा, और तुरंत उसे भेज दिया।

298 सीता। उसने उसे उस गाँव तक पहुँचाया जहाँ वह अब था, और अपने सेवक को, क्योंकि उसे लगा कि फ़ूरसुत वहीं है, उसके पीछे आने का आदेश दिया। अज़राइल पांडे वास्तव में दयनीय हालत में पहुँचा था; और यह आश्चर्य की बात थी कि वह यात्रा में कैसे बच गया। एक ब्राह्मण होने के नाते, वह उसे ले जाने वाले लोगों से पानी नहीं ले सका; इधर-उधर गाँव के ब्राह्मण मिले, जिन्होंने उसके होठों पर पानी लगाया, लेकिन घाव बुरी तरह सूज गया था, और उसकी भयानक हालत देखकर, उसकी मदद करने की कोशिश करने वाले कई लोग भाग गए, जब उसके ऊपर रखा रूमाल हटाया गया। हालाँकि, वह गाँव तक जीवित पहुँच गया था, और फ़ूरसुत ने

स्थानीय नाई को घाव पर पट्टी करने के लिए बुलाया; लेकिन उसने भी घाव को देखकर मना कर दिया और कहा कि इस आदमी को मरना ही होगा। दोपहर होते-होते, नवाब के यहाँ कार्यरत एक मुस्लिम सर्जन आया। उसने गोली निकाली, या उसका जो भी हिस्सा बचा था, उसे निकाला, हड्डी और दाँतों के कुछ टुकड़े निकाले और घाव पर पट्टी बाँध दी। उसे पूरा विश्वास था कि सूजन होने पर आदमी की मृत्यु हो जाएगी। जब उसने नवाब को यह सूचना दी, तो मुझे लगता है कि उस रईस को ज़्यादा खुशी होती अगर उस योग्य डॉक्टर ने उसे बताया होता कि उसका मरीज़ मर गया है। लेकिन अज़रील बच गया। उसका दुबला-पतला, मांसल शरीर, संयमी खान-पान और जीवन के प्रति दृढ़ संकल्प ने उसे अब तक बचाए रखा था; लेकिन वह बुरी हालत में था और घाव के दर्द से तड़प रहा था, जिसे उसकी सहनशक्ति भी सहन नहीं कर पा रही थी। उस समय वह बेहोश था। उसे उठाए जाने के तुरंत बाद, घाव के सदमे और खून की कमी से वह बेहोश हो गया था, और पूरे दिन उसे बस इतना ही पता था कि उसे आगे ले जाया जा रहा है, हालाँकि उसे नहीं पता था कि कहाँ, और वह पूछ भी नहीं सकता था। फुटतेहपुर में उसकी हालत थोड़ी सुधरी थी और उसने वहाँ रखे जाने के इशारे किए थे; लेकिन नवाब का आदेश अटल था, नए शववाहक और एक नया अंगरक्षक भेजा गया था, और इस तरह वह गाँव-गाँव भटकता रहा—बेबस, और कभी-कभार ही होश में आता था। कुछ दिन बीत गए, और नाई ने हिम्मत जुटाकर, पास के गाँव के एक दोस्त की मदद से, पट्टियाँ खोलीं, घाव को साफ किया और उस पर मरहम लगाया, जिसका अच्छा असर हुआ। फिर भी उनका मरीज़ अक्सर बेहोश हो जाता था और इतना बड़बड़ाता था कि उसे सुनना डरावना हो जाता था; और एक बार उसने सारी पट्टियाँ फाड़ दीं, जब खून फिर से बहने लगा, और उन्हें लगा कि वह मर जाएगा, लेकिन मौत ने उसके कष्टों को समाप्त नहीं किया। कुछ दिनों की खोज के बाद, बुलदेव, जो अपने भाई को खोजने की उम्मीद में उसके सभी पुराने छिपने के स्थानों पर गया था, लेकिन व्यर्थ, आखिरकार उसे उस गाँव में पाया जहाँ अज़ेरेल लेटा हुआ था, और उसकी हालत सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। “वह बिल्कुल ठीक है।” "बुरी तरह घायल, लेकिन मरा नहीं। 299 बेहोश," फुर्सुत ने कहा; "कभी-कभी वह अपनी आँखें खोलता है, और एक ब्राह्मण स्त्री आकर उसे बच्चे की तरह खिलाती है; फिर भी वह कभी-कभी बोल सकता है, हालाँकि रात में उसकी बातों से मुझे डर लगता है, और जब उसके बुलावे पर शैतान उसके पास आते हैं तो वह चीखता है, और

काँपने लगता है, यहाँ तक कि मैं उसे मुश्किल से पकड़ पाता हूँ। आज रात मेरे साथ पहरा दो, और तुम देखोगे।" "वह मुझे पहचान लेगा," बुलदेव ने कहा। "अगर वह पहचान भी लेता, तो वह तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता था," उसके भाई ने उत्तर दिया, "और वह इतना अनाड़ी है कि मेरे अलावा किसी और को नहीं पहचानता; उसे बस 'गांजा', 'गांजा' चाहिए, और किसी न किसी तरह वह धूम्रपान करने का जुगाड़ कर लेता है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कोई मरा हुआ आदमी हुक्का पकड़े हुए हो, और मैं खुद से डर जाता हूँ।" “भाई, मैं उससे नहीं डरता,” बुलदेव ने उत्तर दिया, “और हमने अपने समय में बहुत से मरे हुए लोगों को देखा है, इसलिए हम किसी ऐसे जीवित व्यक्ति से नहीं डरेंगे जो उनमें से एक जैसा दिखता हो। हाँ, मैं आऊँगा। लेकिन क्या हमारे कोई बुजुर्ग आस-पास नहीं हैं?” “नहीं,” फुर्सुत ने कहा। “बुस्सुत, जिसके घर में वह लेटा है, आज के लिए फुट्तेपुर गया है; उसकी स्त्रियाँ तुरंत दूसरे गाँव चली गईं, और आने वाले ब्राह्मणों के अलावा, मैं अकेला हूँ। मुझे एक बार भी मत छोड़ना।” बुलदेव ने अपने भाई को नहीं छोड़ा; और रात होते ही, वह कमरे में गया और एक अँधेरे कोने में बैठ गया। दीवार की एक आले में, पलंग के सिरहाने के पास, दो बत्तियों वाला एक छोटा सा जम्प जल रहा था, और उसके पास पीतल का एक बर्तन रखा था; इसलिए प्रकाश एक तरफ से अज़राएल के चेहरे पर पड़ रहा था, जिसे देखना भयानक था। उसके जबड़े और गाल पर बंधी पट्टियाँ खून से सनी और गंदी थीं, और जहाँ घाव था, वहाँ उसके चेहरे का एक हिस्सा धंसा हुआ सा लग रहा था। उसकी घनी, खुरदरी, भूरी भौहें धँसी हुई आँखों के ऊपर लटकी हुई थीं, जिससे बाईं ओर की ऊँची गाल की हड्डी और उसकी नुकीली नाक पहले से कहीं ज़्यादा उभरी हुई लग रही थी। उसका रंग गहरा राख जैसा भूरा था—बेहद भयानक। उसका हड्डीदार गला और झुर्रियों वाला सीना खुला हुआ था, और एक लंबी, मजबूत बांह चादर के ऊपर से उस पर पड़ी थी, और दर्द से कराहते हुए जब उसके चेहरे पर ऐंठन होती थी, तो वह कमजोर हाथ दूसरे हाथ को कसकर पकड़े हुए था। वे उसे देर तक देखते रहे, लेकिन अज़्रिएल कुछ नहीं बोला। कभी-कभी उसके होंठों से कुछ बुदबुदाहट की आवाज़ निकलती थी, और दर्द में गहरी कराहें निकलती थीं; लेकिन वह स्पष्ट रूप से सो रहा था, या कम से कम बेहोश था, और बुलदेव उसे एक तीव्र आकर्षण के साथ देख रहा था, जिसे वह दबा नहीं पा रहा था। "उसे गला घोंट देना अच्छा होगा," उसने अपने भाई से ठंडे स्वर में फुसफुसाया; “हम उसका सिर मिस्टर ब्रैंडन के पास ले जा सकते

हैं!" "मैंने इसके बारे में कई बार सोचा है," फोरसुट ने जवाब दिया, "लेकिन मेरे पास आपके जैसा जज का कोई प्रमाण पत्र नहीं है; और अगर अंग्रेज
300 सीता। अगर उन्होंने मुझे फांसी नहीं दी होती, तो वे मुझे काले पानी के पार भेज देते, या जुब्बुलपुर में मुझे बुनकर बना देते। नहीं, अगर वह जीवित है, तो यह उसका भाग्य है। और एक और बात भी है: वह 'गुर्त पूरिन' पढ़ रहा है, और उन शक्ति अनुष्ठानों का पालन कर रहा है, जो सबसे गुप्त और भयानक हैं, जिनके बारे में सोचना भी रोंगटे खड़े कर देता है। इसलिए वह अब 'काली माता' का है, और हम उसे छूने की हिम्मत नहीं कर सकते। वह जब चाहेगी उसे ले जाएगी; और इसीलिए वह जीवित है। कोई और होता तो मर जाता, लेकिन वह इस बार नहीं मरेगा।" "हाँ, इससे तो मामला ही बदल जाता है, भाई, इसलिए हमें 'माता' की इच्छा का इंतजार करना होगा," बुलदेव ने निराशा से कहा। "लेकिन देखो! क्या वह जाग रहा है?" फुर्सुत उठा और दरवाजे की ओर गया, आकाश की ओर देखते हुए, जो बिजली के बादलों से भरा हुआ था। "हाँ, वह अब जल्द ही जाग जाएगा," उसने कहा; "आधी रात होने वाली है, और अज़राएल बेचैन और व्याकुल हो रहा है। अगर वह उठ बैठे तो घबराइएगा नहीं। लेकिन अगर वह हिंसक हो जाए तो मेरी मदद करना।" जैसे ही उसने यह कहा, वह भयानक आकृति बिस्तर पर उठकर बैठ गई, और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें खोलकर, एक खाली, बेजान निगाहों से धीरे-धीरे चारों ओर देखने लगी। जाहिर तौर पर उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था; लेकिन होंठ तेजी से हिल रहे थे, और चेहरे पर जुनून या दर्द के भाव थे। अज़राएल किसी भयानक सपने में खोया हुआ लग रहा था, और कुछ क्षणों तक वह चुप रहा। अचानक चेहरे के भाव शांत हो गए, और कठोर निगाहों में आँसू भर आए, पलकें उन पर बंद हो गईं, और दुबली-पतली, मजबूत भुजाएँ फैल गईं। "सीता! सेक्टा!" वह बुदबुदाया। बुलदेव नाम को पूरी तरह सुन सका। "सीता! सीता! हे प्रियतम, मेरे पास आओ! हे प्रियतम, मुझे अपना प्रेम दो, जैसे तुमने मेरा प्रेम दिया है! हे कमल जैसे चरण; मैं तुम्हारे कोमल पायल की झंकार सुन रहा हूँ! हे कोमल और लहराती हुई आकृति, जो नर्म कदमों से आगे बढ़ रही है, मैं तुम्हें आलिंगन में लेना चाहता हूँ! हे मधुर चुम्पा फूल, तुम्हारी मनमोहक सुगंध मुझ तक पहुँचती है! मैं जीता हूँ, मैं इसे पीता हूँ! सीता, मैं मरता हूँ! मुझे स्पर्श करो और यह पीड़ा समाप्त हो जाएगी। सीता, सुनो; एक ब्राह्मण तुम्हें पुकार रहा है। आओ! आओ! ... इंद्र के स्वर्ग में अप्सराओं के लिए उतना आनंद नहीं है जितना मेरा स्वर्ग तुम्हारे लिए होगा!" "अरे,

चुड़ैल, जादूगरनी!'' अब वह चीखते हुए बोला, “तू अपवित्र है, मेरे पास आ! सीता, क्या तू सुन नहीं रही? तू कहाँ भागना चाहती है? वेश्या! मैं तुझे अपवित्र करूँगा! मैं तुझे कुचल दूँगा! तू मेरी दासी होगी; और तेरा प्रेमी ब्रैंडन तुझे अज़राइल पांदे से नहीं बचा पाएगा! सीता, आ, मैं सब कुछ भूल जाऊँगा। हा! क्या तू मुझसे भागना चाहती है? नहीं, तो मैं तेरा पीछा करूँगा। रुक! ..." "अब उसे पकड़ ले, भाई," फ़ोरसुट ने कहा, "और उसे थामे रख।"

घायल, लेकिन मरा नहीं। 301 नीचे। एक बार वह 'स्केटा' के पीछे भागने के लिए निकला और लगभग मेरा गला घोंट दिया था। जब वह उसके सपने देखता है तो उसकी हालत और भी खराब हो जाती है।” बुलदेव ने यह बड़बड़ाहट सुनी और सुनकर कांप उठा। फिर यह बदमाश अपनी युवा प्रेमिका से प्यार करता था, जिसके लिए वह जान भी दे सकता था; और उसकी रक्षा करना आवश्यक था। केवल कालेओ के डर से, अज़रील पांडे का उस रात गला घोंट दिया गया था। अब बुलदेव अपने भाई की मदद के लिए दौड़ा और दोनों ने मिलकर छटपटाते हुए कांपते शरीर को पकड़ लिया। थोड़ी देर में वह शांत हो गया; और अज़रील जागा और बोला, “फूर्सुत!” “यह रहा आपका हुक्का, महाराज,” जवाब मिला। “इसके कुछ कश ले लीजिए, और आप फिर से सो जाएंगे; गांजा आपको अच्छा लगेगा।” बुलदेव ने उसे सहारा दिया, जबकि अज़रील ने भांग की पत्तियों के तीव्र नशे को तेजी से अंदर लिया, धुएं को निगल लिया या नाक से बाहर निकाल दिया। आखिरकार उसने हुक्का नीचे गिरा दिया और खर्राटे लेते हुए अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। “अब शैतान जल्द ही उसके पास आएंगे, भाई,” फुर्सुत ने कहा। “डरो मत; वे मुझे कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचाते, लेकिन मुझे लगता है कि वे उसे सता रहे हैं, खून मांग रहे हैं। यही हर रात और लगभग पूरे दिन होता है; और जो मेरी रक्षा के लिए पहरा देते हैं, वे डरकर भाग जाते हैं। सुनो! यह शुरू हो रहा है; वह उन्हें इसी नाम से पुकारता है।” “ॐ! ॐ! ॐ! हे भगवती! दिव्य चमांडा, कब्रों के बीच निवास करने वाली, खोपड़ी धारण करने वाली, आत्माओं द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार, हे कालरात्रि! काली रात की माता; विशाल मुख वाली, अनेक भुजाओं वाली, अपनी घंटी बजाती हुई, अपना ढोल बजाती हुई, अपने रक्तरंजित दांत जोर से पीसती हुई; खालों से ढकी हुई, और तुम्हारा शरीर रक्त से लथपथ। उसे चाटती हुई, उसे चाटती हुई, अपनी जीभ से। हे दिव्य कालचे, हे तुम्हारी जय हो!” वह कुछ देर के लिए रुका और काफी भ्रमित लग रहा था।

302 सीता। लेकिन मंत्रोच्चार, जैसा कि प्रतीत होता था, पहले की तरह ही धीमी बुदबुदाहट में फिर से शुरू हो गया। “हे मांस और रक्त में आनंदित होने वाले, कृपा करें! कृपा करें! हमारी इच्छाओं को शीघ्र पूरा करें। यहाँ प्रवेश करें। प्रवेश करें, प्रवेश करें! चलें, चलें! नाचें, नाचें! प्रवेश करने में देरी क्यों कर रहे हो! रक्त से लथपथ मोतियों के हार से, खोपड़ियों के हार से और उसके सर्पों के बच्चों से, प्रवेश करें, प्रवेश करें! फाड़ें, फाड़ें! मार डालें, मार डालें! हे जीवन की माता, आपकी विजय हो! ह्रीम! ह्रीम! ह्रीम! भेदें, भेदें, अपने रक्त से लथपथ त्रिशूल से! मार डालें, मार डालें, अपनी गर्जना से! प्रहार करें, प्रहार करें, अपनी कुल्हाड़ी से! ...” * फिर शब्द अस्पष्ट और धुंधले हो गए, और आकाश में दूर से आती गड़गड़ाहट की धीमी बुदबुदाहट के साथ अजीब तरह से घुलमिल गए। रात गर्म और शांत थी; बादलों के बीच बिजली कड़क रही थी, और बार-बार नीली चमक के साथ कमरे में रोशनी डाल रही थी। “मुझे वह पसंद नहीं,” बुलदेव ने कहा; “वह शैतान है, और कभी इंसान नहीं था। मैंने उसे पहले भी ये सब कहते सुना है जब वह अपने स्वामी को पीटता था। वह ‘ह्रम! हर्रिम! हर्रिम!’ भयानक है। ‘ह्रम! हर्रिम! हर्र्म!’ मेरे कानों में ऐसे गूंजता है जैसे लोहे के पैरों वाले शैतानों की सेना के कदमों की आहट हो। उफ़! भाई, मेरा मन कर रहा है कि मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊं। गरज और बारिश उस भयानक ‘ह्रम! हर्रिम! हर्र्म!’ से बेहतर हैं।” “हमारी माँ की कसम, मुझे मत छोड़ो,” फोरसुत ने हाथ जोड़कर विनती की। “जब तक यह सब खत्म नहीं हो जाता, मुझे मत छोड़ो! कल बुसुंत वापस आ जाएगा, और तब मुझे कोई परवाह नहीं होगी। सुनो!” वह फिर बोल रहा है। मैं उसे वह दूंगा जो वह चाहता है; और उसने * सर डब्ल्यू. जोन्स के “गुरुरा पूर्फन” के अनुवाद से लिया।

स्कॉच्ड, बट नॉट किल्ड! 303 अज़राएल के होठों पर गांजे का पाइप लगाया गया, और कुछ तेज़ साँसों के बाद उसकी आवाज़ साफ़ और भरी हुई सी लगने लगी, हालाँकि शब्द कभी-कभी अस्पष्ट थे। "मलाती और मेहदेवा" नाटक का एक दृश्य उसके सपनों में आ गया था, जिसे जब वह समझ पाता था, तो इस प्रकार चलता था। "वह कालेओ माता के लिए बोल रहा है," फोरसुट ने डर से काँपते हुए कहा। "सुनो, वह यहाँ है!" “मेरी उड़ान पर, भयानक सम्मान प्रतीक्षा कर रहे हैं। ‘खोखली खोपड़ियाँ जो मेरी गर्दन पर लटकी हुई हैं, आपस में टकराकर भयंकर संगीत उत्पन्न करती हैं, या मेरी कमर को जकड़े हुए कांपते हुए कवच से टकराती हैं, मेरी बुनी हुई लटों को

चारों ओर फैलाकर लंबी चोटियों में बदल देती हैं। मेरे भारी डंडे पर लगी घंटियों की माला हल्की-हल्की इधर-उधर लहराती हुई लगातार झनझनाती रहती है। मेरा बाफ़िनर उमड़ती हुई हवा पर तैरता है, जिसकी ध्वनि प्रत्येक मांसहीन खोपड़ी की गुफाओं में गूंजती है, जो मेरे शरीर के चारों ओर भयानक रूप से लटकी हुई है।' फिर बाहर गरजते बादलों की धीमी गड़गड़ाहट और भारी बारिश की बूंदों की टप-टप के अलावा, सन्नाटा छा गया।" कुछ देर बाद दृश्य फिर से शुरू हुआ:— "अब उस स्थान के आतंक को जगाओ, जो भीड़भाड़ वाले और दुष्ट राक्षसों से घिरा हुआ है; अंत्येष्टि की चिताओं से निकलती लपटें अपनी उदास रोशनी मुश्किल से ही बिखेर पा रही हैं, अपने मांसल शिकार से भरी हुई, उस भयानक अंधकार को दूर करने के लिए जो उन्हें घेरे हुए है। पीले भूत दुष्ट जिन्नों के साथ खेल रहे हैं; और उनकी बेमेल हंसी, तीखी चीखों में गूंज रही है। बुराई के राक्षस, और निराकार आत्माएं जो इस स्थान पर मंडराती हैं, मैं तुम्हारे लिए मांस लाया हूँ! ... लोमड़ियों जैसी अजीब आकृतियाँ आकाश में उड़ रही हैं... और अब मैं जिन्नों की सेना को देखता हूँ।" * "माँ! माँ!" वह चीखा, उसकी बाहें फैली हुई और कांप रही थीं, और उसकी आँखें खालीपन में टकटकी लगाए हुए थीं। 'तुम उपस्थित हो! मैं तुम्हें देखता हूँ! मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ। मैं तुम्हारी आराधना करता हूँ! अपने दास की सुनो। उन्हें ले जाओ; मार डालो, अपने शत्रुओं का वध करो; पी लो, उनका खून पी लो—अंग्रेजों का खून। हे दिव्य माता! यह तुम्हारे लिए मीठा है। किसी को भी मत छोड़ो। उन्हें मरने दो, स्त्रियों और गोद में बैठे बच्चों को! अज़राएल उन्हें, सैकड़ों—हाँ, हजारों—तुम्हारे पास भेज रहा है—जैसा उसने शपथ ली थी। और, हे माता! मार डालो, मार डालो। खून से मदहोश हो जाओ! इसे गंगा माता के श्वेत सीने को लाल कर दे, और तुम आनंदित हो जाओगी! डायन को पकड़ो, डुबो दो। * एच. एच. विल्सन के अनुवाद से

 सीता। उसे नरक में भेज दो! सीता! हे सीता!" वह और भी उग्रता से चिल्लाया, "काश मैं तुम्हें माँ के लिए मार डालता। सीता! हे सीता!" उसने अपनी पुरानी कोमल आवाज़ में कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करो और मेरे पास आओ, तो तुम रानी बनकर रहोगी!" फिर उसके हाथ नीचे गिर पड़े और वह थककर पीछे की ओर गिर पड़ा। "अब वह शांत हो जाएगा, और उसे अब और गांजा नहीं मिलेगा," फोरसुत ने कहा। "फिर भी रुको; वह फिर से उठ खड़ा हुआ है और तुम्हारी ओर इशारा कर रहा है। वह तुम्हें देख रहा है; जाओ!" "बेहद निर्दयी और गद्दार," अज़राकल चिल्लाया, "क्या तू मेरा

मज़ाक उड़ाने आया है?” लेकिन बुलदेव ने आगे कुछ नहीं सुना। वह कमरे से चुपके से बाहर निकला और दरवाजे के पास बाहर दुबक गया। फिर उसने अपने भाई को यह कहते हुए सुना कि यह एक सपना था, और बुलदेव अंग्रेजों के साथ बहुत दूर है। और अज़राकल ने फिर कुछ नहीं कहा। वह अपनी पुरानी उन्माद की अवस्था में डूब चुका था, जिससे बढ़ती आंधी, लगातार बिजली की तेज चमक और गरज की आवाज भी उसे जगा नहीं पा रही थी। अध्याय 66वां: एक अशुभ मुलाकात। हालांकि बारिश अभी भी तेज हो रही थी, क्योंकि मानसून लगभग शुरू हो चुका था, और सुबह की हल्की रोशनी ने उसे रास्ता देखने में सक्षम बना दिया था, बुलदेव अपने भाई को छोड़कर नूरपुर की ओर चल पड़ा। उसने सोचा, "जब अजरैल ठीक हो जाएगा, तो वह पहले से भी ज्यादा क्रूर होगा; और हमें उस पर और भी कड़ी नजर रखनी होगी; लेकिन मुझे लगता है कि अगर श्री ब्रैंडन उसे उसी हालत में पकड़ने की कोशिश करें और उसे तुरंत फांसी दे दें तो बेहतर होगा; इससे गड़बड़ी को रोका जा सकेगा।" और इसी योजना से प्रेरित होकर बुलदेक जल्दी से आगे बढ़ा, और नूरपुर पहुँचकर उसने हमेशा की तरह उस सज्जन के सामने हाज़िर होकर अपनी अनुपस्थिति का कारण बताते हुए बताया कि उसने क्या देखा था और उस पागल आदमी के साथ उसने कितनी भयानक रात गुज़ारी थी। “मैं उस शैतान की चीखें और चिल्लाहट कभी नहीं भूलूँगा जब दूसरे शैतान उसके पास आए थे,” बुलदेक ने कहा; “हमने उन्हें नहीं देखा, लेकिन फ़ोरसुट ने कहा कि वे अक्सर आते थे; और जब कमरे में बिजली चमक रही थी और हवा में गंधक की गंध थी, तो मुझे लगा जैसे वे वहाँ मौजूद थे; और ‘ह्रूम! ह्रूम! ह्रूम!’ की आवाज़ें तब तक आती रहीं जब तक मैं बाहर नहीं भाग गया। और फिर, महोदय,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “उसने उस महिला के बारे में बड़बड़ाना शुरू कर दिया, और वह और भी बुरा था। मैं उसे तब गला घोंट देता, लेकिन वह शैतान का उपासक है।”

एक अशुभ आगमन। 305 माताओं, और ऐसे लोगों को हम छूने की हिम्मत नहीं करते; लेकिन आप कर सकते हैं, आपको उसे फांसी देनी होगी! कल रात कुछ घुड़सवारों के साथ खुद आइए; हम आसानी से छोटे से गाँव को घेर लेंगे और उसे उसके बिस्तर पर ही उठाकर ले जाएंगे। वहाँ उसे ले जाने के लिए बहुत सारे लोग हैं। सिरिल ब्रैंडन को इस साहसिक कार्य से बढ़कर कुछ भी पसंद नहीं था, लेकिन उन्होंने अगले मामले में, चाहे वह कुछ भी हो, अपने सहायक श्री नोबल को नियुक्त करने का

वादा किया था और उन्हें भगोड़े डाकू को पकड़ने जैसे मामूली काम में भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका गंवाने का उन्हें कोई आसार नहीं था। लेकिन वास्तव में, अज़्रिक्ल पांडे को पकड़ना दिन-प्रतिदिन और भी ज़रूरी होता जा रहा था। नूरपुर के सिपाहियों पर उसके राजद्रोह का असर इतना भयानक था कि वे किसी भी क्षण विद्रोह कर सकते थे; और यद्यपि किले में मौजूद अंग्रेज़ सैनिकों की मौजूदगी सभी ईसाइयों को सुरक्षा प्रदान करती थी, फिर भी किसी भी विद्रोह को निंदनीय माना जाना चाहिए था, क्योंकि इससे न केवल नुकसान होता, बल्कि आसपास के इलाकों पर भी बुरा असर पड़ता। सिरिल को श्री नोबल की बुद्धिमत्ता और सक्रियता पर पूरा भरोसा था और उन्हें विश्वास था कि वे हर संभव प्रयास करेंगे। श्री नोबल इस अभियान से बेहद खुश थे; और इसके बारे में सुनकर, कैप्टन हॉब्सन ने स्वेच्छा से आगे आने की पेशकश की, बशर्ते उन्हें अनुमति मिल जाए। ब्रिगेडियर, श्री नोबल और पुलिस के साथ अपने कुछ सैनिकों को भेजने के लिए तैयार थे; और ब्रिगेडियर को नागरिक शक्ति की सहायता करने में कोई आपत्ति नहीं थी, इसलिए सभी संबंधित लोग बिना किसी देरी के चौबीस मील से अधिक दूर स्थित रायना गाँव के लिए रात्रिकालीन मार्च की तैयारी में जुट गए। बुलदेव को एक मजबूत और फुर्तीला टट्टू दिया गया था, और श्री मोस्टिन ने उन्हें बताया कि उन्हें अपने भाई के बारे में कोई चिंता नहीं होनी चाहिए, जिसे एक जासूस के रूप में उसकी वफादारी और बहुमूल्य सेवाओं के सम्मान में अस्थायी रूप से एक प्रमाण पत्र दिया गया था, जिसकी पुष्टि वह भविष्य में उच्च अधिकारियों से करवाएंगे; बुलदेव ने उस महत्वपूर्ण दस्तावेज को अपनी आँखों और सीने से लगाकर, उसे अपनी पगड़ी की एक सुरक्षित तह में रख लिया। फिर सभी संबंधित सज्जनों ने श्री मोस्टिन के यहाँ भोजन किया और जाने का समय होने तक इस साहसिक कार्य के संभावित परिणाम पर चर्चा की। और घुड़सवार सेना की टुकड़ी और कुछ चुने हुए घुड़सवार, अपने देशी अधिकारियों के नेतृत्व में, न्यायाधीश के घर के सामने वाली सड़क पर आकर रुके और सभी ने हार्दिक शुभकामनाओं के साथ विदा ली। उनकी सफलता के लिए, जो वास्तव में अपरिहार्य प्रतीत हो रही थी, उनके दोस्तों, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं, ने उनका उत्साह बढ़ाया। घर लौटते समय सिरिल ने अपनी पत्नी से खुशी से कहा, "मुझे लगता है कि इस बार हम उसे पकड़ लेंगे, मेरी प्यारी। वह घायल पड़ा है और बुलदेव उनका मार्गदर्शन कर रहा है, इसलिए वे निश्चित रूप से सफल होंगे; और मुझे आशा है कि वे

सफल होंगे, क्योंकि अजराइल मुझसे बच निकला है।"
306 सीता। दो बार, और कोई लगभग यह मान सकता है कि उसका जीवन किसी चमत्कार से ग्रस्त है!" "मुझे नहीं पता," उसने उदास होकर उत्तर दिया; "जब भी मैं उस आदमी और उसके द्वारा किए गए बुरे कामों के बारे में सोचती हूँ, तो मेरा मन भारी हो जाता है; और अब उसके शक्तिशाली मित्र हैं।" "इस मामले में वे उसकी रक्षा नहीं कर सकते," सिरिल ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "और वह भागने के लिए बहुत कमजोर है; हमें यहाँ परसों पता चल जाएगा। इसलिए हिम्मत रखो, मेरी प्रिय! और उससे मत डरो जिसने एक बार तुम्हारा बुरा किया होता, अगर वह कर सकता, लेकिन अब वह असहाय है।" "और जिससे तुमने मुझे बचाया था, सिरिल। आह, वह एक बार! काश वह हमेशा के लिए हो!" उसने अपनी आँखें फेरते हुए कहा, जो शाहगंज में अजरदेल के हमले की स्पष्ट याद से आँसुओं से भरी थीं। "काश तुम गए होते, और मैं तुम्हारे साथ होती।" * क्या! कीचड़ और बारिश में? नहीं, सीता, तुम यहाँ बेहतर हो; और श्रीमान नोबल और कप्तान उतना ही कर सकते हैं जितना मैं कर सकता हूँ।" लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद, अभियान दल तीसरी शाम को हताश और निराश होकर लौट आया; और कीचड़ से सने हुए अधिकारियों ने अपने कारनामों का ब्योरा दिया। श्री नोबल ने कहा, "हम रात में आगे बढ़े, मौसम साफ़ और ठंडा था, और बुलदेव ने अपने टट्टू पर सवार होकर हमारा शानदार मार्गदर्शन किया। वह एक पल के लिए भी नहीं भटका, और रास्ते में आने वाले हर गाँव से बचते हुए खेतों और बंजर भूमि को पार करते हुए, बड़ी कुशलता से रास्ता खोजता रहा; और हम सूर्योदय से ठीक पहले रायना पहुँच गए। फिर हॉब्सन ने उस जगह को घेर लिया, जो एक छोटे से गाँव से ज़्यादा कुछ नहीं थी, और मैं घोड़े से उतरा और बुलदेव के नेतृत्व में दो-तीन आदमियों के साथ उस घर में गया जहाँ निस्संदेह अज़रील पांडे रहा होगा, लेकिन वह घर खाली मिला। वहाँ वह पलंग था जिस पर वह लेटा था, खून से सना एक चादर, और कुछ गंदी पट्टियाँ बिखरी हुई थीं—जो वहाँ की घटनाओं का पर्याप्त सबूत थीं—लेकिन अज़रील वहाँ नहीं था।" फिर हमने आधे दिन तक हर घर, हर अनाज के ढेर, हर उस जगह की तलाशी ली जहाँ वह छिपा हो सकता था, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। गाँव के लोग पहले तो घबरा गए और खेतों में भाग गए; लेकिन वे जल्द ही लौट आए और हमें बताया कि एक दिन पहले डाकुओं जैसे दिखने वाले कुछ अजनबी लोग एक पालकी लेकर आए थे और शाम को घायल ब्राह्मण को ले गए थे। उनमें से कोई

भी जाना-पहचाना नहीं था और वे कहाँ गए, सिवाय पूरब की ओर जाने के, कोई नहीं बता सकता था; गाँव वालों को इससे कोई लेना-देना नहीं था और किसी ने भी उनका पीछा नहीं किया था। फिर हॉब्सन और मैंने उसके कुछ आदमियों को खाना खाने के बाद अपने साथ लिया और कई गाँवों में तलाशी ली। जगह-जगह लोग...
एक अशुभ मुलाकात। 307 ee A SS ETS RETEST तम्बू काफी सभ्य था, और कभी-कभी रूखा भी; लेकिन किसी को भी उस पालकी या डाकुओं के बारे में पता नहीं था—अगर वे डाकू थे—जो आए थे; और हम वापस लौट आए—हार गए! मुझे बहुत अफ़सोस है," उन्होंने आगे कहा; "लेकिन सच में हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की, और मैं बस इतना ही कह सकता हूँ, 'अगली बार बेहतर किस्मत।' मेरे पास चादर और पट्टियाँ हैं, चाहे वे कितनी भी गंदी और बदबूदार क्यों न हों, और बुलदेव उनकी कसम खाता है। मैंने अपने सभी सामानों का भुगतान किया था, और रसीदें भी ले आया था।" किसी भी पुलिस अनुभव में शायद इससे अधिक उत्तेजक और भ्रामक कुछ भी नहीं है, जितना कि भारतीय ग्रामीणों की पूर्ण, शांत, अभेद्य दृढ़ता, जब वे किसी भगोड़े या किसी भी प्रकार के अपराध को छिपाना चाहते हैं। एक विशुद्ध देशी राज्य में, शायद, आधे दर्जन प्रमुख पुरुषों को चिलचिलाती धूप में पीठ के बल लिटा दिया जाता, प्रत्येक की छाती पर एक भारी पत्थर रखा जाता, या कुछ पिसी हुई मिर्च, राख के साथ मिलाकर, एक थैले में भरकर उनके मुंह पर बांध दी जाती; जैसा कि वास्तव में, कुछ घुड़सवारों ने रायना में करने का सुझाव दिया था, जब उन्हें अजरईल की उपस्थिति के संकेत दिखाए गए थे। लेकिन श्री नोबल और कैप्टन हॉब्सन ऐसे किसी भी कठोर व्यावहारिक उपाय का सहारा नहीं ले सके; और इस प्रकार वे वह नहीं सुन पाए जो वे अन्यथा प्राप्त कर सकते थे—कि बुलदेव की यात्रा के अगले दिन, नवलब परिवार की एक खाली पालकी, बीस घुड़सवारों की सुरक्षा में और मुसलमान डॉक्टर के साथ, पहुंची थी; कि अजरईल पांडे, उसके बाद भारवाहकों ने विश्राम कर लिया था, उन्हें सावधानीपूर्वक गाड़ी में बिठा दिया गया था; गाँव ने फ़ोरसुत के लिए एक टट्टू उपलब्ध कराया था, और सभी दोपहर में फ़ुट्चपुर के लिए रवाना हो गए थे, जहाँ वे सुरक्षित पहुँच गए थे, और घायल व्यक्ति को भूमिगत कमरे में रखा गया था, और अब उसकी पूरी लगन और कुशलता से देखभाल की जा रही थी। "खैर, इस बार हम कुछ नहीं कर सकते," सिरिल ने कहा। "मैं खुद डाकुओं पर विश्वास नहीं करता, और मुझे लगता है कि हमें पता चल जाएगा कि नवाब ने अपने

मित्र को अच्छी तरह से सुरक्षित रखा है। और आपको देश कैसा लगा?" "जब हम गए थे," कैप्टन हॉब्सन ने उत्तर दिया, "हमें इसके बारे में बहुत कम जानकारी थी; लेकिन जब हम वापस आए, तो हालात अजीब लग रहे थे। हर गाँव ने अपने द्वार बंद कर दिए थे, और हम दीवारों और बुर्जों पर सशस्त्र लोगों को देख सकते थे। एक जगह, एक पहाड़ी पर भीड़ के पास एक झंडा था, वे ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजा रहे थे और तुरही बजा रहे थे।" फिर, लगभग पचास घुड़सवारों का एक दल, जिसमें बड़ी संख्या में माचिसधारी सैनिक (शायद दो-तीन सौ) झंडे और ढोल लिए हुए थे, एक जगह पर तैनात हो गए और हवा में गोलियां चलाने लगे। मुझे लगता है कि अगर हम कमजोर होते तो वे हम पर हमला कर देते; लेकिन जैसे ही मैं उनकी ओर बढ़ा, वे पीछे हट गए, और अंत में वे सब भाग निकले। मेरे सैनिक और पुलिस उन पर झपटने के लिए बेताब थे; और सच में, अगर उन्होंने हम पर गोली चलाई होती, तो मैं उन्हें पल भर में ही खत्म कर देता।

308 स्लेट ए, — “मुझे लगता है मेरे दोस्त नवाब साहब का काफी खर्चा हो रहा है,” श्री नोबल हंसते हुए बोले; “शायद वो आपको किसी दिन युद्ध का आदेश भेज दें!” “काश, ब्रैंडन,” कैप्टन हॉब्सन ने कहा; “मुझे यकीन है कि हमारी सभी देशी सेनाओं के लिए कुछ करना, आने वाली खबरों पर हमेशा सोचते रहने से कहीं बेहतर होगा। मैं चाहता हूं कि उस बदमाश नवाब और हरपाद सिंह को भी, इससे पहले कि वे कुछ गड़बड़ करें, अक्ल आ जाए।” “मुझे डर है कि अभी तक दोनों के खिलाफ युद्ध का कोई ठोस कारण नहीं है, हॉब्सन। अजरील का मामला भी इसके लायक नहीं है; और हम यह साबित नहीं कर सकते, चाहे मुझे कितना भी शक हो, कि वह अभी फतेहपुर में है,” श्री ब्रैंडन ने कहा। “लेकिन अगर युद्ध की घोषणा होती है, तो मुझे कोई अफसोस नहीं होगा।” निश्चित रूप से युद्ध की कोई घोषणा नहीं हुई थी; लेकिन नवाब ने अगले दिन अपने सामान्य अंदाज़ में एक व्यथित पत्र भेजा, जिसे दोहराने की मुझे आवश्यकता नहीं है। उन्होंने शिकायत की कि घुड़सवारों का एक दल उनकी अनुमति के बिना उनके गाँव रायना गया, ग्रामीणों के साथ हिंसा की, उनसे काफी धन वसूला और अज़रील पांडे की तलाश के बहाने बड़ी मात्रा में अनाज और चारा लूटकर ले गया। उन्होंने परिवारों की निजता का उल्लंघन किया, महिलाओं का अपमान किया और उनकी इज़्ज़त लूटी। पत्र में आगे लिखा था, “ईश्वर न करे कि मैं यह सोचूँ, मेरे मित्र, कि इन अपमानों का न्याय नहीं होगा और लूटी गई संपत्ति वापस नहीं मिलेगी;

लेकिन मुझे स्पष्ट रूप से कहना होगा कि मेरी इज़्ज़त—एक रईस की इज़्ज़त, जिस पर कभी कोई कलंक नहीं लगा—डाकू अज़रील पांडे के संबंध में आपके निराधार संदेहों से आहत हुई है।" और इस संदेह की पुनरावृत्ति, या मेरी अनुमति के बिना मेरे गांवों की कोई भी तलाशी, मेरी मित्रता में कमी लाएगी, और उच्च अधिकारियों से मेरी शिकायत के परिणामस्वरूप आपको अप्रिय परिणाम भुगतने पड़ेंगे। आप एक नौजवान और अनुभवहीन व्यक्ति हैं, और इसमें मुझे आपके आचरण का बहाना मिल जाता है।" "वाह!" न्यायाधीश ने पत्र पढ़कर सीटी बजाई, "यह वह युद्ध की घोषणा नहीं है जो हॉब्सन चाहता था, लेकिन यह घोर दुस्साहस के समान है। सिरिल, आपने जो किया वह डकैती अधिनियम, धारा 18, 1843 के तहत पूरी तरह से उचित है।" यह टिप्पणी, और अन्य बहुत सी बातचीत, जिसे मुझे दर्ज करने की आवश्यकता नहीं है, तब हुई जब सिरिल कुचेरी जाते समय न्यायाधीश के घर गया था, लेकिन उसे अभी नवाब के अपमान करने के वर्तमान स्वभाव के अधिक घृणित रूप को जानना बाकी था।

एक अशुभ मुलाकात। 809 नवाब को अपने ज़नाना की एक प्रिय मामा, या भरोसेमंद महिला सेविका को नूरपुर में एक विशेष कार्य के लिए भेजने का अवसर मिला, लेकिन उसका मुख्य उद्देश्य सीता से मिलना था। मामा ने श्री ब्रैंडन को सुबह-सुबह पत्र दे दिया था और उनके घर के सेवकों को यह संदेश दे दिया था कि यदि कोई उत्तर आए तो वह लौटते समय फिर से आएँगी; और जब श्री ब्रैंडन अपने काम पर चले गए और मामा को पता चल गया कि वे दोपहर तक नहीं लौटेंगे, तो वह घर गईं और उत्तर आने तक बगीचे में प्रतीक्षा करने की अनुमति मांगी। सीता, जिसके पास यह संदेश पहुँचाया गया था, उस स्त्री के प्रति कोई दुर्भावना न रखते हुए उसे अंदर आने दिया। उसने देखा कि मामा, एक लंबी, सुगठित महिला, अच्छे वस्त्र पहने हुए थी और अपने वर्ग की अन्य महिलाओं की तरह एकांत का दिखावा नहीं करती थी। वह बगीचे में घूम रही थी, हाथ में एक छोटा सा चांदी का हुक्का लिए हुए, चलते-चलते धूम्रपान कर रही थी और अपने साथ मौजूद एक अन्य महिला परिचारिका से ऊँची आवाज़ में बातें कर रही थी। तभी माली ने बड़े ही विनम्रता से उसे फूलों का गुलदस्ता भेंट किया। धूप तेज़ होने के कारण सीता ने दयालुता से उसके पास से गुजरते हुए उसकी कुटिया के दरवाजे तक जाकर उसे अंदर आकर आराम करने के लिए कहा। "ज़रूर, मेरी सुंदरी," उस महिला ने कहा; "तुम यहाँ एकांत में रहती हो; लेकिन तुम्हारे आकर्षण की प्रसिद्धि

तो सबने सुनी ही है, और अब मैं समझ गई हूँ कि यह अतिशयोक्ति नहीं है। तुम्हें मैं याद नहीं हूँ; लेकिन एक बार नवाब साहब ने मुझे शाहगंज में तुम्हारे दादाजी से मोती खरीदने के लिए भेजा था। तब तुम विधवा थीं और तुम्हारा एक बच्चा था। क्या वह यहाँ है?" "नहीं," सीता ने उत्तर दिया, "वह मर चुका है।" अब उसे उस महिला का रूप-रंग बिल्कुल पसंद नहीं आया, न ही जिस तरह से उससे बात की गई थी। मामा जुमीला देखने में बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थीं। वह लंबी और मोटी थीं—सचमुच बेढंगी। उनके चेहरे के भाव भद्दे और अड़ियल थे; उनके गालों और दोहरी ठुड्डी का मांस उनकी छोटी गर्दन तक लटक रहा था, और हर गले पर तिल थे, जिनसे लंबे-लंबे बाल निकले हुए थे, और उनके ऊपरी होंठ पर लगभग घनी मूंछें थीं। उनके मोटे होंठ और दांत मिसी और पान के इस्तेमाल से काले हो गए थे, और उनकी आंखें सुरमा से इस तरह रंगी हुई थीं कि उनकी अड़ियल और कामुक छवि बेहद अप्रिय तरीके से बढ़ गई थी। इसके अलावा, मामा साहिबा ने अपने गले और बाजुओं पर ढेर सारे कीमती सोने के गहने पहन रखे थे, और उनके भारी झुमकों ने उनके कानों के लोबों को नीचे खींचकर उनके विशाल गोल कंधों तक पहुंचा दिया था। उनकी पोशाक चमकीले लाल रंग की पेटीकोट थी, जो भारी और मोटे मशरू या इलियन कपड़े से बनी थी। साटन का कपड़ा, और धारीदार पीले रेशम की चोली, जिसके ऊपर पारदर्शी मलमल की एक छोटी कमीज़ थी, जो गले पर बटनों से बंद थी और पेटीकोट की पट्टी पर गिर रही थी। सबसे ऊपर उसने एक दुपुत्ता या स्कार्फ पहना हुआ था।

उसने तिरस्कार भरे स्वर में कहा। “तुम्हारे जैसी नाज़ुक के लिए तो साटन का कपड़ा होना चाहिए था। और वैसे भी ये जगह गरीब और घटिया है। तौबा! छी! उन्होंने मुझे बताया कि उसने तुम्हें महल में रखा है। उल-हमद-उल-इल्ला, फिरंगियों के पास महल नहीं होते, सिर्फ़ नवाब होते हैं। और अंदर क्या है?” वह अपनी सीट से उठते हुए बोली। “तुम अंदर नहीं जा सकतीं—ये निजी है,” सीता भी उठी और भीतरी शयनकक्ष के दरवाजे के सामने दृढ़ता से खड़ी हो गई। “निजी!” उस स्त्री ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, “निजी! सुनारों की स्त्रियाँ निजी होती हैं, या फिर फ़िरंगी स्त्रियाँ, यह सुनना तो नई बात है! तौबा! नहीं, मेरी प्यारी चिड़िया, तुझे इससे बेहतर पिंजरे में होना चाहिए—निजी और सम्मानित, पहनने के लिए गहने, मेरे जैसे उत्तम वस्त्र, खर्च करने के लिए धन, और तेरी सेवा में बीस स्त्रियाँ! और,” उसने अपनी चमकती आँखों में एक भयानक घृणा के साथ फुसफुसाते हुए कहा, “तुम्हें प्यार करने वाला एक नवाब, जो तेरा नाम सुनते ही जल उठता है। आह, उसके साथ तू क्या नहीं होगी, मेरी कबूतरी? क्या उसने तुझे यह नहीं भेजा?” और उसने अपने सीने से मोतियों का एक हार निकाला। सीता की कोमल आँखें अब चौड़ी हो गईं और उनमें चुनौती झलकने लगी, और उसने पूरी ताकत से उस स्त्री का चेहरा अपने से दूर धकेल दिया। सीता लगभग साँस लेने के लिए तड़प उठी, और चिल्ला नहीं सकी। “अरे, शुरू में तो तुम सब ऐसे ही होते हो,” उस स्त्री ने मीठी-मीठी बातों से कहा, “पर तुम सब सही समय पर आ जाओगी। इसे स्वीकार करो, मेरी प्यारी, मेरी जान; उस दयालु प्रेमी ने जो भेजा है, उसे ले लो, और थोड़ी देर में वह तुम्हारे लिए एक सेना भेजेगा, जो उनकी रानी का दल होगी।” सीता उस स्त्री से अलग होकर मदद के लिए पुकारते हुए दरवाजे की ओर भागी; और उसके कई राहतोरे और नौकर दौड़ते हुए वहाँ आ गए।

एक अशुभ मुलाकात। 311 — “इसे ले जाओ! इसे ले जाओ!” लड़की ने मामा की ओर इशारा करते हुए कहा। “अगर मिस्टर ब्रैंडन आए, तो वो इसे मार डालेंगे। इसे ले जाओ!” “क्या बात है, सीता?” सिरिल ने घबराकर कहा, जैसे ही वह अचानक जज के बगीचे की ओर जाने वाली झाड़ियों के पीछे से निकला। “मैंने तुम्हारी आवाज़ दूर से सुनी, और मैं दौड़कर आया। मेरी प्यारी को किसने डरा दिया?” “देखो! वह वहाँ है, सिरिल,” सीता कांपते हुए बोली और उस औरत की ओर इशारा किया, जो अब आगे बढ़ रही थी। “मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि उसने क्या कहा, लेकिन ओह, कितना

अपमान और शर्म की बात है!" और वह फूट-फूट कर रोने लगी। सिरिल उस औरत को चेहरे से और उसकी प्रतिष्ठा से जानता था। उसने उसे नवाब के आखिरी भोज के समय तंबुओं में सेवा करते देखा था; और सीता की घबराहट से उसे तुरंत शक हो गया कि क्या हुआ है। "बाहर आओ!" वह चिल्लाया, "बाहर आओ!" तुम एक औरत हो, वरना मैं तुम्हें पीटता। यहाँ क्या कर रही हो? तुम्हें किसने भेजा है?" "नवाब साहब ने मुझे भेजा है, जिनकी गुलाम तुम और सभी फिरौन जल्द ही हो जाएँगी," औरत ने चुनौती भरे लहजे में जवाब दिया। "मुझे मारो! जब वह अपनी सेना के साथ उसे ले जाने आएगा, तो वह तुम्हें अपने जूतों से पीटेगा। क्या वह एक कायर अंग्रेज, एक काफिर के साथ रहेगी, जबकि वह फतेहपुर की स्वामिनी बन सकती थी? कोई बात नहीं, मेरी प्यारी! डरो मत, मेरी कबूतरी, वह तुमसे जो भी कहे। अब तुम्हारे दिन गिने-चुने हैं, और तुम आज़ाद हो जाओगी। मैं, मामा जुमीला, तुम्हारे लिए आऊँगी।" लेकिन सेक्टा मुड़कर अपने प्रार्थना कक्ष में भाग गई, जहाँ वह वेदी के सामने लेट गई और ऐसे सिसक रही थी मानो उसका दिल टूट जाएगा। "काश मैं पैदा ही न हुई होती, कि मेरे लिए उसे अपमानित होना पड़ता!" "दफा हो जाओ, शैतान!" सिरिल अपने दाँत भींचते हुए चिल्लाया और हाथ उठाते हुए बोला, "नहीं, मैं तुम्हें न मारूंगा और न ही छूऊंगा। लेकिन सुनो। अगर तुम फिर कभी नूरपुर में दिखीं, तो जुएँ तुम्हें पकड़ लेंगी, और मैं तुम्हारा सिर मुंडवा दूंगा, तुम्हारा चेहरा काला कर दूंगा, और तुम्हें गधे पर बिठाकर तुम्हारे मालिक के पास भेज दूंगा। चले जाओ, वरना तुम्हारा बुरा होगा!" "हा! हा!" महिला हँसी। "मैं नहीं डरती, ब्रैंडन साहब। अगर आप जीवित रहे तो आप मेरा सिर मुंडवा सकते हैं; लेकिन आप झांसी में फिरंगियों की तरह मरेंगे और नरक में जलने के लिए भेजे जाएंगे। सलाम, साहब; आपकी दासी जाती है!" और मामा जुमीला अपनी पालकी की ओर चली गईं। "मेरे मालिक, मेरे मालिक," वहाँ जमा हुए राठौरों, नौकरों और चुप्रसियों ने कहा, "बस हमें मामा जुमीला का चेहरा काला करने दीजिए, ताकि वह नवाब को खुद को दिखा सकें।" "उसे जाने दो। उसे मत छुओ।" मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम हस्तक्षेप न करो।

 सीता, उसके साथ। उसकी अपनी शर्म उसके साथ ही जाएगी; लेकिन अगर वह फिर आई," श्री ब्रैंडन ने आगे कहा, "मैं वही करूंगा जो मैंने कहा था। उसे जाने दो," और वह सीता को ढूंढने के लिए अंदर चले गए। हालाँकि, मामा जुमीला उतनी आसानी से नहीं बच पाईं जितना उन्होंने सोचा था। नौकरों ने उनकी पालकी पर

कीचड़ उछाला और उनका पीछा तब तक करते रहे जब तक कि कुछ शरारती बच्चों ने पालकी उठाकर उनका पीछा उस जगह तक नहीं कर लिया जहाँ उनके साथ आए लोग स्टेशन की सीमा से बाहर खड़े थे, और भारतीय चमचों की आम शैली में उन्हें गालियाँ देते और अपशब्द बोलते रहे। मामा जुमीला बहुत गुस्से में थीं, क्योंकि उनकी नई शानदार साटन की पेटीकोट कीचड़ से सन गई थी। अपने बाल नोचते हुए वह चिल्लाईं कि उनकी इज्जत चली गई है—वह नंगे पैर फतेहपुर जाएंगी—वह श्री ब्रैंडन का खून बहाएंगी—और उनकी पत्नी गुलाम बन जाएगी। और उनकी बड़बड़ाहट इतनी तेज हो गई कि उसे दर्ज करना मुश्किल हो गया, क्योंकि उन्होंने सड़क की धूल उठाकर अपने सिर पर फेंक दी। लेकिन आखिरकार उसे पालकी में बैठने के लिए मना लिया गया और उसे फुचपुर ले जाया गया, जहाँ उसने अपनी कहानी सुनने वालों को सुनाई। उसने नवाब से कहा, “आखिरकार, एक पतली, पीली-सी लड़की, बिल्कुल फेरिंगसी जैसी, आपके लिए मैंने जो कष्ट उठाया, उसके लायक नहीं। अगर आपको एक चाहिए, तो मिस मोस्टिन को क्यों नहीं ले लेते, या अगर आप चाहें तो दोनों को, जब उनके आदमी मारे जाएँगे, जैसे झांसी में मारे गए थे?” नवाब ने कहा, “हाँ, झांसी में मारे गए लोगों की तरह, और यह जल्द ही होगा, जुमीला, बहुत जल्द। मैं तुम्हें ब्रैंडन पर थूकने के लिए दूंगा; क्या इससे तुम्हें तसल्ली मिलेगी? लेकिन तुम्हें उसके घर नहीं जाना चाहिए था।” “उसके मरने से पहले—उसके मरने से पहले। दिल खान! याद रखो तुमने वादा किया था,” औरत चिल्लाई, “जब तक उसमें जान है, मुझसे मिलने के लिए।” सिरिल के लिए सीता को शांत करना आसान नहीं था। वह पहले भी दुखी हो चुकी थी, लेकिन कभी अपमानित नहीं हुई थी, और अपने पति के साथ हुए इस अपमान से उसका उच्च मनोबल पूरी तरह टूट गया था। "तुम्हें नहीं पता कि इसका कितना महत्व है," उसने उससे कहा; "यह कितना गहरा, कितना घिनौना अपमान है, मेरे प्रिय; लेकिन फिलहाल हम इसका बदला लेने में असमर्थ हैं।" "जाने दो, सीता," उसने उत्तर दिया। "नवबा मूर्ख है, और हमें नहीं पता कि उस भयानक औरत को तुम्हारे पास आने का आदेश दिया गया था या नहीं। उसने तुमसे जो कहा, उसका जिक्र रोज़ और ग्रेस से मत करना; इससे उन्हें और दुख होगा, लेकिन तुम कह सकती हो कि वह औरत बदतमीज़ और धमकी देने वाली थी, और मैंने उसे भगा दिया।" फिर भी यह एक गहरा आघात था; और जब तक वह ग्रेस के पास नहीं गई और आँसुओं से उसे राहत नहीं मिली, तब तक सीता सामान्य नहीं हो पाई। झनझनाहट! उस भयानक

औरत ने एक विदाई दे दी।
एक अशुभ मुलाकात। 313 गोलियों की आवाज़ सिरिल के मन में घर कर गई। वहाँ क्या हुआ होगा? उसने हाल ही में उस जगह के बारे में कुछ नहीं सुना था। किसी ने उसका ज़िक्र नहीं किया था; जहाँ तक उसे पता था, झांसी से किसी को कोई चिट्ठी नहीं मिली थी। लेकिन उसे काम करना था, और वह सीता के ड्राइंग रूम में, जैसा कि वह उसे कहता था, मेज पर बैठकर आधिकारिक रिपोर्ट तैयार कर रहा था, जबकि सीता ग्रेस के साथ थी, तभी एक सेवक ने घोषणा की कि बाबा साहब बंगले में हैं और उससे बात करना चाहते हैं, और वह वहाँ गया। "मुझे झांसी से दुखद खबर मिली है, महोदय," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, जो स्पष्ट रूप से बहुत दुखी था। “बारहवीं, घुड़सवार और तोपखाना, सभी ने 4 तारीख को विद्रोह कर दिया और रैंस में शामिल हो गए, और दो-तीन को छोड़कर, जो बच निकले, सभी ईसाइयों को 7 या 8 तारीख को मौत के घाट उतार दिया गया। एक भी जीवित नहीं बचा; एक भी पुरुष, स्त्री या बच्चा नहीं! मैं आपको और श्री मोस्टिन को सलाह देता हूँ कि आप आज रात महिलाओं के साथ किले में जाएँ।” “लेकिन क्या आप इस बारे में निश्चित हैं? यह बहुत भयानक है,” सिरिल ने कहा। “इस घटना में कोई संदेह नहीं है,” बाबा साहब ने उत्तर दिया। “मालहुंद, बैंकर, जिसकी वहाँ एक एजेंसी है, ने एक्सप्रेस द्वारा प्राप्त जेटर पढ़ा, और दूसरों को भी यही खबर मिली है। अब तक सभी ने इसे सुन लिया है, यहाँ तक कि सिपाहियों ने भी। नवाब ने परसों झांसी में ‘विजय’ की खबर के लिए सलामी दी थी, जो उन्हें भी एक्सप्रेस द्वारा प्राप्त हुई थी। नहीं, महोदय, इस खबर में कोई संदेह नहीं है,” बूढ़े व्यक्ति ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा। और कहा जाता है कि एक बेचारे सज्जन ने आत्मसमर्पण करने के बजाय अपनी पत्नी को गोली मार ली और फिर खुद को भी गोली मार ली। उस समय भारत में कौन था जो उस दृश्य का वर्णन करने वाले पत्र को पूरे भारत में पढ़ते समय फैली दहशत को भूल गया हो, या नौगोंग से भागे लोगों के कष्टों की कहानी सुनकर अपने आँसू रोक पाया हो? पहला पत्र बहुत बाद में झूठा साबित हुआ; लेकिन नौगोंग से भागने के दौरान झेली गई विपत्तियाँ अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं थीं। “और नौगोंग भी चला गया,” बाबा साहब ने आगे कहा; “लेकिन अंग्रेज अधिकारी अपने कुछ आदमियों के साथ भाग निकले। ईश्वर उन्हें सुरक्षित रखे!” “ईश्वर उनकी मदद करे! हम सब उनके लिए प्रार्थना करते हैं, बाबा साहब। लेकिन जब तक यहाँ कोई हलचल नहीं होती, हम हिलेंगे नहीं। हमें हर हाल में

अपना कर्तव्य निभाना है।" और इस तरह उनके चारों ओर मुसीबत बढ़ती गई, क्योंकि 1914 का भयानक तूफान हर जगह कहर बरपा रहा था।
314 सीता, अध्याय 39. शांतिपूर्ण दिनों में व्यवधान। चारों ओर विद्रोह और नरसंहार की खबरों के बावजूद, यह विचित्र था कि नूरपुर में देशी सैनिक अब तक स्थिर बने रहे। जिन्हें जानने की आवश्यकता है, वे जून 1857 की घटनाओं के बारे में पहले से लिखे गए विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों और वृत्तांतों से जान सकते हैं, और शायद ही इन पृष्ठों के कुछ पाठक ऐसे होंगे जिन्होंने इन्हें ध्यान में न रखा हो। 1914 के संबुत के कट्टरपंथी तूफान का सबसे भयंकर हिस्सा उसी महीने गंगा और यमुना की विशाल घाटी में हर चौकी पर टूट पड़ा; और उनमें से अधिकांश में, निर्दय नरसंहार में बहुमूल्य अंग्रेज रक्त बहाया गया था। मुझे कानपुर में खाइयों की बहादुरी और धैर्यपूर्ण, यद्यपि निष्फल, रक्षा और आत्मसमर्पण करने वालों के अमानवीय नरसंहार को याद करने की आवश्यकता नहीं है, जब रक्षा अब संभव नहीं थी; और न ही वहाँ के अन्य बंदियों की कहानी, जो संभवतः और भी दयनीय और भयानक परिस्थितियों में पकड़े गए, और जब हैवलॉक के वीरतापूर्ण प्रयासों से उनका उद्धार लगभग निकट ही प्रतीत हो रहा था। मुझे लखनऊ की घटनाओं का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, जहाँ कुछ समर्पित पुरुषों ने हजारों क्रोधित सिपाहियों और अवध के लोगों के विरुद्ध अपनी रक्षा ऐसे समर्पण और वीरता से की, जिसकी शायद ही कभी बराबरी की गई हो और न ही कभी उससे आगे बढ़ा जा सका हो। न ही यह बताने की आवश्यकता है कि दिल्ली में वह भयंकर संघर्ष कैसे शुरू हुआ, जो कई महीनों तक जारी रहा, जब ब्रिटिश शासन का भविष्य अधर में लटका हुआ प्रतीत हो रहा था, और जब पंजाब में एक के बाद एक सिपाही विद्रोह कर रहे थे, तब भी एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ने वफादार सिखों को एकजुट किया और संघर्ष स्थल पर सैनिक, धन और युद्ध सामग्री भेजी। ये घटनाएँ, और अंग्रेज़ी रेजिमेंटों की सहायता, जिनमें से कई भीषण गर्मी और मूसलाधार बारिश में ऊपरी प्रांतों की ओर बढ़ते हुए संघर्ष कर रही थीं, इतिहास के क्षेत्र से संबंधित हैं, इस कहानी से नहीं, और आने वाली पीढ़ियों द्वारा इन्हें अटूट आश्चर्य और रुचि के साथ पढ़ा जाएगा। कभी-कभी, दूर-दराज के ठिकानों से भटककर आए लोग, जो स्थानीय उपद्रव और नरसंहार से बच निकले थे या जीवित बच गए थे, नूरपुर पहुँचते थे, और उनकी कोमल देखभाल की जाती थी। वे पुरुष जिन्होंने अपनी पत्नियों और बच्चों को खो दिया था, वे कोमल महिलाएं जिन्होंने अपने जीवन में कभी कठिनाइयाँ नहीं देखी

थीं, और जिन्होंने अपने पतियों और बच्चों को बंदूक की गोली से, या निर्मम गर्मी और थका देने वाली थकान के कारण खो दिया था—जो लगभग नंगे पैर और फटे-पुराने कपड़ों में भटकते हुए आए थे।

शांतिपूर्ण दिन खलल (V संस्करण 315) पथरीली सड़कों पर सौ मील और उससे भी अधिक की यात्रा के बाद, पैरों में छाले पड़ गए और खून बह रहा था—भूख और प्यास की चरम सीमा का सामना करते हुए, और चेहरे झुलसकर और सूजकर पहचान से परे हो गए थे—एक-एक करके, या छोटे-छोटे समूहों में, वे अपने दुख भरे कारनामों को सहानुभूति रखने वालों को सुनाते हुए, और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए पहुँचे कि वे शांति और सुरक्षा के आश्रय स्थल पर पहुँच गए हैं। दुख की कितनी ही ऐसी कहानियाँ हैं, जिन्हें सहना शायद ही संभव हो, जिनके बारे में हम जानते हैं, या जिनके बारे में हमने पढ़ा है: लेकिन ऐसी कितनी ही और कहानियाँ हैं जो कभी ज्ञात नहीं होंगी, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने उन्हें सहा है! दुर्भाग्यशाली लोगों के प्रति मूल निवासियों की भावनाएँ बदलती रहती थीं। कभी-कभी यह क्रूर और निर्दयी होती थी, और असहाय शरणार्थियों को मार डाला जाता था; फिर यह दयामय होती थी; और बच्चों, पुरुषों और महिलाओं को कस्बों और गाँवों में आश्रय दिया जाता था, कपड़े और भोजन दिए जाते थे, और उनके रास्ते में मदद की जाती थी: अन्यथा कौन बच पाता? हालाँकि सभी अंग्रेज मरे नहीं थे, और न ही उनके मरने की संभावना थी, हालाँकि अज़रील पांडे जैसे लोग उन्होंने अपना बुरा काम कर दिया था, और वे अब भी उसे लगातार करते आ रहे थे। कई देशी राजकुमार और बैरन अंग्रेजों या देशी वर्चस्व की संभावना का आकलन कर रहे थे, और कुछ ने अपना भाग्य और तलवारें एक पक्ष के पक्ष में, तो कुछ ने दूसरे पक्ष के पक्ष में लगा दीं। हम जानते हैं कि अंत में अंग्रेजों का पक्ष प्रबल हुआ; लेकिन तब यह सभी को स्पष्ट नहीं था कि ऐसा ही होगा। जो लोग यह सोचते थे कि ऐसा नहीं होगा, झूठी शक्तियों और आशाओं के भ्रम में, उनके अपने स्वार्थ थे, जैसे दिल खान; कई लोगों को पुराने झगड़े फिर से शुरू करने थे, और क्षेत्र और सत्ता वापस पानी थी, जैसे हुरपेल सिंह, जो उन जैसे अन्य लोगों के प्रतीक मात्र हैं; वास्तव में बहुत कुछ दांव पर लगा था, लेकिन अंग्रेजों के न होने पर बहुत कुछ हासिल भी होने वाला था। शायद यही भावना अन्य और निचले वर्गों में भी व्याप्त थी, हालांकि उनके कारण बहुत अलग थे। जमींदार, जो दमनकारी बंदोबस्त और स्थानीय करों से पीड़ित थे, उन्हें पुराने दिन याद थे, जब वे अपनी मर्जी से कर चुकाते थे, और

करों से बचने और उनका विरोध करने के साधन रखते थे। स्थानीय अधिकारियों ने सख्त नियंत्रण से मुक्ति की संभावना पर खुशी मनाई। अंग्रेजी अदालतों में हारे हुए वादियों ने अंग्रेजी फैसलों को दरकिनार कर कानून अपने हाथ में ले लिया। जिन बैंकरों के जनता के साथ किए जा रहे सूदखोरी पर रोक लग गई थी, वे पुराने जबरन वसूली के तरीकों को फिर से शुरू करने और ढेर सारा पैसा कमाने के अवसर की तलाश में थे। चोर, डाकू और कानूनविहीन लुटेरे सैनिक, जो अपनी तलवारों को हल में बदलने में असफल रहे थे, हजारों की संख्या में उठ खड़े हुए और शांतिप्रिय और मेहनती लोगों को लूटने लगे। फिर भी, सबसे बुरी स्थिति में भी, अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी आस्था और सम्मान के प्रति और सबसे गरीब व्यक्ति की संपत्ति की उस व्यापक सुरक्षा के प्रति एक मजबूत और गहरी निष्ठा बनी रही।

316 सीता। साथ ही सबसे धनी लोगों को भी, जो शक्तिशाली अंग्रेजी सरकार ने उपलब्ध कराए थे, जो आबादी के सभी सबसे मूल्यवान हिस्सों में व्याप्त थे और समय के साथ अच्छे परिणाम लाए। शायद मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि शाहगंज के अच्छे पुराने बैंकर उस समय कितने चिंतित थे, या बनारस, मिर्जापुर और अशांत प्रांतों के अन्य बड़े वाणिज्यिक शहरों में स्थित उनकी एजेंसियों से आने वाली प्रत्येक रिपोर्ट, "कि अंग्रेजी शासन का अंत निश्चित है," "कि अंग्रेज हर बार विद्रोह में मारे जा रहे हैं," उनके दिल पर कितना गहरा आघात पहुँचाती थी और उन्हें कोई सांत्वना नहीं देती थी। नूरपुर से मिली सलाह भी कुछ कम नहीं थी। वहाँ उनके मित्रों ने लिखा कि यद्यपि कोई विद्रोह नहीं हुआ है, फिर भी एक विद्रोह अवश्य होगा: कि कई राजद्रोही एजेंट सक्रिय हैं, और अन्य जगहों की तरह वहाँ भी, देर-सवेर बुरा तूफान जरूर आएगा। वह जानते थे कि यह व्यर्थ है, फिर भी उन्होंने श्री ब्रैंडन और सीता को पत्र लिखकर उनसे उनके पास आने का आग्रह किया। अब उन्हें न तो उसके लिए और न ही अपने लिए जाति संघ से डर लगता था, क्योंकि उनकी सुरक्षा को लेकर वे चिंतित थे; और उन्हें लगता था कि अगर श्री ब्रैंडन आ गए, तो जिले के उस हिस्से के वफादार लोग—और अभी भी बहुत से लोग थे—उनके साथ एकजुट हो जाएंगे और राजा हुरपाल सिंह को चुनौती देंगे, जो नवाब से कहीं अधिक खूंखार थे। चाची एला ने भी सेक्टा को पत्र लिखकर उसे अपने पास आने और सुरक्षित रहने का निमंत्रण दिया; लेकिन बाकी के बारे में, मुझे लगता है कि उनकी बढ़ती तपस्या ने उनके दिमाग को संकुचित कर दिया था और उनकी पुरानी प्रेमपूर्ण भावनाओं को कुंद

कर दिया था। “राम! राम! मैं!” का निरंतर जाप, यदि संभव हो तो, पहले से कहीं अधिक मग्न कर देने वाला था, और उनके निजी कमरे की दीवार पर बने निशान अब लाखों में दिखाई दे रहे थे, और जल्द ही करोड़ों तक पहुँच सकते थे, जिससे उनकी मृत्यु के बाद उनकी आत्मा को शाश्वत शांति प्राप्त करने में मदद मिलती। उन्हें लगता था कि यह लगभग अधार्मिक ही था कि उनका भाई अभी भी अपने व्यवसाय में लगा हुआ था, ऐसे समय में भी जब दुनिया में भारी आतंक और अराजकता व्याप्त थी; और वह अक्सर आँसू बहाते हुए उनसे विनती करती थी कि वे सब कुछ समेटकर बनारस लौट जाएँ और मृत्यु तक एक पवित्र जीवन व्यतीत करें। लेकिन बूढ़ा व्यक्ति अपने आदेश पर अडिग रहने और संभव हो तो अंग्रेजों की मदद करने के लिए दृढ़ था; और उसने शाहगंज की वफादार आबादी पर अपना पूरा बल लगा दिया। यदि यह अंग्रेजों के हाथ से निकल जाता, तो यह नवाब या राजा का हो जाता; और दोनों ही स्थिति में हिंसा और जबरन वसूली के अलावा और कुछ आशंका नहीं थी। श्री ब्रैंडन और सीता को ये पत्र विधिवत प्राप्त हुए, जो बैंकर के दो खजाना वाहकों द्वारा उन्हें भेजे गए थे, जिनके पास सोने की एक बड़ी राशि और नूरपुर के बिल भी थे, जो सीता के उपयोग के लिए और उनके भागने में मदद करने के लिए थे यदि वे उसके पास जाने का निर्णय लेते। यदि शाहगंज जिले में ध्यान भटकाना संभव होता, तो श्री ब्रैंडन शांतिपूर्ण दिन भंग हो गए। 317 किसी भी व्यक्तिगत जोखिम पर इसकी जिम्मेदारी सहर्ष ग्रहण कर लेता; लेकिन जब वह और सेक्टा इस विषय पर चिंतापूर्वक चर्चा कर रहे थे, तो उसके पुराने पड़ोस के बारे में उसकी गहरी जानकारी ने वर्तमान सफलता की कोई उम्मीद नहीं छोड़ी। नरेंद्र द्वारा उल्लिखित व्यक्ति निश्चित रूप से प्रभावशाली और सम्मानित जमींदार और व्यापारी थे; लेकिन उनके पास वांछित उद्देश्य को पूरा करने के लिए न तो साधन थे और न ही सैनिक। इसके अलावा, स्थानीय युद्ध अभी तक शुरू नहीं हुआ था, और न ही शुरू होने की संभावना थी; न ही श्री ब्रैंडन, श्री मोस्टिन या श्री नोबल को विश्वास था कि ऐसा नहीं होगा, क्योंकि नवाब और राजा दोनों ही अपने उग्र सैन्य बलों को बहुत कम संसाधनों के साथ बढ़ा रहे थे, और जब ये समाप्त हो जाएंगे तो वे उन्हें देश पर हमला करने के लिए विवश होंगे। यदि एक मजबूत सैन्य बल के साथ जिले का दौरा करना और इस प्रकार असंतोष को भयभीत करना संभव होता, तो श्री ब्रैंडन, अपनी नागरिक क्षमता में, सहर्ष इसका नेतृत्व करते; लेकिन कौन कह सकता था कि देशी सैनिकों का वास्तविक स्वभाव क्या था, या

उनका अंतिम उद्देश्य क्या हो सकता था? अंग्रेज़ सैनिकों के बिना ऐसा कोई अभियान प्रभावी रूप से पूरा नहीं हो सकता था, और यदि उन्हें वापस बुला लिया जाता, तो नूरपुर किले पर भी खतरा मंडराता, जहाँ सभी सुरक्षित थे। इसके अलावा, मानसून शुरू हो चुका था, और भारी बारिश की आशंका थी: मौसम के अनुकूल सड़कें अब कीचड़ से भरी हुई थीं, और उन पर भारी वाहनों का चलना असंभव था, जहाँ हल्की गाड़ियाँ भी नहीं चल सकती थीं। इसलिए, नूरपुर परिषद ने सभी कारणों से यह सहमति व्यक्त की कि स्थानीय सुरक्षा के लिए उपाय करना ही सबसे उचित है, और ये उपाय अब यथासंभव पूर्ण कर लिए गए थे। अधिकारियों, और ईसाई क्लर्कों और अन्य अधीनस्थों में से जो सक्षम थे, उन्होंने रात्रि गश्त का जिम्मा संभाला; वे अच्छी तरह से हथियारों से लैस थे, और अधिकतर अच्छे घोड़ों पर सवार थे। किले में उनके स्वागत और हमले की स्थिति में उनकी तत्काल सहायता के लिए व्यवस्था की गई थी। किले के बुर्जों पर तैनात तोपें सिपाही मोर्चे पर नज़र रखती थीं, जिन पर किसी भी समय गोले बरसाए जा सकते थे; और वे शहर पर भी नियंत्रण रखती थीं, ताकि वहाँ किसी भी प्रकार की साज़िश न हो। इसलिए, जहाँ तक दूरदर्शिता संभव थी, अचानक हमले या साज़िश से बचाव के लिए हर संभव व्यवस्था की गई थी। सैनिकों और अधिकारियों के नौकरों के अलावा किसी भी स्थानीय नागरिक को किले में प्रवेश की अनुमति नहीं थी, और अंगूर के गोलों से लदी दो हॉवित्ज़र तोपें बाहरी द्वार और उसके आगे के ढलान पर तैनात थीं। सैन्य अधिकारियों के साथ-साथ नागरिक और उनके क्लर्क भी अपनी नियमित ड्यूटी करते थे, और सीता कभी भी अपने पति के साथ से अनुपस्थित नहीं रहती थीं। अपने लड़के के कपड़े पहने, वह अपने घोड़े पर सवार होकर जाती थीं।

318 सीता। ———— एक जोशीली घोड़ी, बड़ी शान और साहस के साथ, सबकी प्रशंसा बटोरते हुए आगे बढ़ती थी; और कई लोग उस लड़की को देखकर चकित थे, जो पहले इतनी सावधानी से रखी जाती थी, अपने देश की महिलाओं के स्वभाविक संयम को तोड़कर अपने पति के साथ उस कर्तव्य का पालन करती थी जो शायद हमेशा खतरे से खाली नहीं था। इस तरह के खतरे से, यहाँ तक कि खुले युद्ध के खतरे से भी, जब तक वह सिरिल के पास थी, सीता को कोई डर नहीं था। सिरिल के साथ उसे निश्चित रूप से कोई परेशानी नहीं हुई थी, लेकिन रात की गश्त में उसे एक अजीब सा आनंद मिलता था। मौसम चाहे जैसा भी हो, शांत हो या तूफानी, सुहाना हो या

मूसलाधार बारिश, वह फुर्तीली और साहसी लड़की कभी पीछे नहीं हटती थी, सिरिल की बारी आने पर उसके साथ सवारी करने और जो भी हो, उसका सामना करने में कभी संकोच नहीं करती थी। सीता वास्तव में इसे खतरे से पूरी तरह से मुक्ति मानती थी; क्योंकि अब वह नवाब से उतना ही डरती थी जितना अपने पहले कट्टर दुश्मन से, जिसके खतरनाक मंसूबों के खिलाफ बुलदेव की चेतावनियाँ लगातार और ज़ोरदार होती रहती थीं। बुलदेव और उसके विशालकाय लुचमुन सिंह ने सीता को रात में कभी भी अकेले न रहने की विशेष चेतावनी दी थी। उन्होंने कहा था कि अज़राएल पांडे जैसा दृढ़ निश्चयी और अनुभवी डाकू क्या-क्या साजिशें रच सकता है और उन्हें अंजाम दे सकता है? यह सच था कि उसे पकड़ा नहीं जा सकता था, लेकिन यही बात बुलदेव को सबसे ज्यादा बेचैन कर रही थी। उन्होंने श्री ब्रैंडन से कहा, "जिस हालत में मैंने उसे देखा, उस हालत में वह ज्यादा दूर नहीं जा सकता था, और अगर मैं उसे ढूंढ पाता, तो वह फतेहपुर में ही होता; लेकिन फुर्सुत कहीं नजर नहीं आ रहा है, और शायद अज़राएल को पता चल गया है कि वह मेरा भाई है, और उसने उसे मार डाला है। लेकिन मैंने अभी तक अपनी खोज नहीं छोड़ी है, और अक्सर जब आप मुझे नहीं पाते, तो मैं वहीं पहरा दे रहा होता हूं।" सिरिल ब्रैंडन ने सीता के लिए किसी भी खतरे को कम नहीं आंका था; और वह उसकी आशंकाओं को समझते थे। पहले तो उन्होंने उसे शाहगंज जाने का सुझाव दिया था; लेकिन सीता ने जिस भय से इस प्रस्ताव को सुना, उससे इस विषय पर दोबारा चर्चा नहीं हुई। "नरेंद्र मेरी रक्षा कैसे करेगा?" उसने कहा, "एक समय था जब वह मर गया होता, लेकिन तुम बच गए; और अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं वहाँ चली गई हूँ, तो क्या यह संभव है कि वे अपनी योजनाएँ पूरी न करें? आह, प्रिय, अगर मैंने तुम्हें एक बार छोड़ दिया, तो मैं तुम्हें फिर कभी नहीं बचा पाऊँगी, कभी नहीं! और यहाँ मैं सुरक्षित हूँ, उतनी ही सुरक्षित जितनी तुम हो। अगर तुम मर जाओ, तो कम से कम मैं तुम्हारे साथ मृत्यु में जा सकती हूँ। मैं अब तुम्हारे बिना नहीं जी सकती।" उसने आधे मन से कहा, "फिलिप, रोज़ और ग्रेस मेरे पालतू जानवर का ख्याल रखेंगे, जब तक मुसीबत रहेगी; और उसके बाद नरेंद्र और आंटी एला होंगे।" उसने उत्तर दिया, "अगर मेरा शरीर जीवित रहा, तो वे उसका ख्याल रख सकते हैं, लेकिन मेरी आत्मा तुम्हारे साथ रहेगी, सिरिल। नहीं—अगर तुम चले गए तो मेरा शरीर जीवित नहीं रह सकता।" उसने उत्तर दिया, "तो तुम यहीं रहोगी, छोटी बच्ची, और मैं..."

शांतिपूर्ण दिन बाधित©डी, 319 अब शाहगंज के बारे में आपको कभी नहीं चिढ़ाएंगे। जो कुछ भी हमें सहना है, उसे अब हम सब मिलकर सहेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए। सच तो यह है कि सीता बहुत तेज़ी से अपने पुराने तौर-तरीकों और सोच से बाहर निकल रही थी। ग्रेस मोस्टिन ने इस अनोखी लड़की को दिल से अपना लिया था और उसे धीरे-धीरे अपने जैसा बना रही थी। सीता हमेशा से ही सरल स्वभाव की थी, अपने अनूठे ज्ञान के साथ: भोली और अपने तरीके से गहरी धार्मिक। वह लगनशील और अध्ययनशील थी, उसकी याददाश्त तेज़ थी और वह जल्दी समझ जाती थी। ग्रेस को उसे पढ़ाने में कोई कठिनाई नहीं होती थी और सीता में नए विचारों को जागृत होते देखना उसके लिए एक अनोखा सुख था, जो उसकी आत्मा को जीवंत उत्साह से भर देते थे। वह मिल्टन और शेक्सपियर के कुछ अंश पढ़ने और समझने लगी थी: और शेक्सपियर में, क्योंकि उनके नाटकों की कहानी उसके पुराने संस्कृत अध्ययन से सबसे ज़्यादा मेल खाती थी, उसे बहुत आनंद आता था; कुछ नाटकों में तो उसकी रुचि लगभग जुनूनी हो जाती थी, जिसे सिरिल को रोकना पड़ता था, और जिससे उसे सीता के पुराने जीवन के अनसुलझे पहलुओं की पहले से कहीं ज़्यादा समझ मिलती थी। अगर वह उसे अनुमति देता, तो सीता अपने इस प्रयास में उचित भोजन और आराम से भी वंचित हो जाती। रोमांचक अध्ययन; और अक्सर जब उसे नींद नहीं आती थी, तो सिरिल उसकी विनतियों के आगे झुक जाता था और उसे उसका पसंदीदा नाटक या जेरेमी टेलर का नाटक "होली लिविंग एंड डाइंग" देखने की अनुमति दे देता था, जो श्रीमती प्रैट ने उसे दिया था और जिसने उसे शुरू से ही मोहित कर लिया था, और जिसके सरल वाक्यों को वह कंठस्थ करना पसंद करती थी: जबकि "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" वह अपनी मातृभाषा में पढ़ सकती थी। "हम उसे कैसे रोक सकते हैं, मिस्टर ब्रैंडन?" एक दिन ग्रेस ने लगभग निराशा भरे लहजे में पूछा, ‘‘वह हम सबको शर्मिंदा कर देती है। जैसे ही मैं उसे अपनी किसी किताब का कोई पसंदीदा अंश दिखाती हूँ, वह कहीं छिप जाती है और उसे कंठस्थ कर लेती है। कल उसने मुझसे कहा, ‘‘हम अंग्रेज़ों के बारे में कितना कम जानते हैं, आपके विश्वास के बारे में कितना कम, आपकी किताबों के बारे में कितना कम, जो शानदार विचारों से भरी हैं और ज्ञान के नए भंडारों से जो आपके लिए हमेशा खुलते रहते हैं। जबकि हमारे लिए —अब कोई लिखता नहीं, कोई सोचता नहीं; हम मुर्दों के समान हैं, उन लोगों के समान जिनकी भाषा भी मर चुकी है।’ मैं उससे क्या कहूँ, श्री ब्रैंडन? क्या आप मुझे

बताएँगे कि उसे बेहतर तरीके से कैसे पढ़ाऊँ या उसे कैसे नियंत्रित करूँ?" लेकिन सिरिल कुछ नहीं कह सका। "आप उसे पढ़ाकर बहुत दयालु हैं," उन्होंने कहा; "और उसके साथ जो मेहनत करते हैं, वह भी सराहनीय है। मुझे नहीं लगता कि अब आप उसे रोक पाएंगे। वह इतना जानती है कि और अधिक जानने की इच्छा जागृत होती है, और वह तब तक प्रयास करती रहेगी जब तक वह स्वयं पर निर्भर न हो जाए, और अंग्रेजी में उतनी ही संतुष्ट न हो जाए जितनी हिंदी और संस्कृत में है। लेकिन मेरी पत्नी को इस तरह के पाठ पढ़ाना उबाऊ काम होगा।"

320 सीता। "नहीं," उसने तुरंत जवाब दिया, "मुझे इसमें आनंद आता है। मैं सीता की दिनभर की गतिविधियों में भागीदारी को उतनी ही खुशी से देखती हूँ जितनी अपनी। अगर आप पूछें कि क्यों, तो मैं आपको बता दूँगी।" "हाँ, मैं ज़रूर पूछती हूँ कि क्यों, मिस मोस्टिन।" "तभी मुझे उसके दिल की बात पता चली: उसके सारे प्यार, उसकी सारी भक्ति, और तुम्हारे साथ रहने की उसकी तीव्र इच्छा को देखा। तुम सीता पर कितना भी विश्वास करो, मुझे नहीं लगता कि तुम जानते हो कि वह तुमसे कितना प्यार करती है। अब उसे अपने दिल की बात कहने के लिए शब्द नहीं मिल रहे; क्योंकि वह कहती है, उसकी अपनी ज़बान बहुत भद्दी और सुस्त है। 'मैं उससे जूलियट की तरह बात कर सकती थी,' उसने एक बार मुझसे कहा था, 'लेकिन वह मुझ पर हँसता, और मुझे अब शर्म आती, हालाँकि मुझे लगता है कि मैं कभी जूलियट जैसी थी। लेकिन मैं इमोजेन की तरह होना ज़्यादा पसंद करूँगी। तुम्हें पता है, वह तब मौत को गले लगाने गई थी जब उसके पति ने पिसानियो को उसे मारने के लिए भेजा था, और वह अपनी सच्चाई में मर जाती। आह! प्यारी ग्रेस, मैं उस दृश्य को बिना आँसू बहाए कभी नहीं पढ़ सकती। वह इतनी सच्ची, इतनी कोमल, इतनी प्रेममयी, इतनी वफ़ादार थी। हमारे सभी नाटकों में उसके जैसी केवल एक ही है—सावित्री, जिसके बारे में तुम जानते हो। वह अपने स्वामी के लिए मृत्यु को गले लगा लिया, और मैं—मैं उसके लिए मृत्यु से नहीं डरूँगी।' शायद," जारी रहा ग्रेस ने कहा, और फिर रुक गई, आँसुओं के बीच मुस्कुराते हुए बोली, "क्या उसके दिल में कुछ ऐसा है जो उसे ऐसा सोचने पर मजबूर करता है, मिस्टर ब्रैंडन, कुछ ऐसा जिसे मैं समझा-बुझाकर या शांत करके उसे मना सकूँ? मैं ज़रूर कोशिश करूँगी, क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ।" सिरिल का दिल दुख से भर आया, क्योंकि वह उस डर और खतरे को जानता था; लेकिन वह ग्रेस को ये बातें नहीं बताना चाहता था। "यह बस

उसका उत्तेजित स्वभाव है," उसने कहा, "अपनी तीव्रता में अद्भुत, और जिसे हमारी पूरी देखभाल और मार्गदर्शन की ज़रूरत है; और मैं अब 'हमारा' कह सकता हूँ, क्योंकि इसमें तुम्हारा भी मेरे साथ हिस्सा है। क्या वह संगीत नहीं सीखेगी? इससे उसके विचार दूसरे विषयों से हट जाएँगे।" "ज़्यादा नहीं," ग्रेस ने जवाब दिया: "उसे सुर सीखने का यांत्रिक भाग कठिन लगता है: लेकिन उसकी सुनने की क्षमता तेज़ और सटीक है, और उसकी आवाज़ बहुत मधुर है; मेरी जितनी ऊँची तो नहीं, लेकिन कहीं ज़्यादा भरी हुई और समृद्ध—मुझे उससे ईर्ष्या होती है। वह जितना आप सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा जानती है, और सुर उसे रास्ता दिखाते हैं; लेकिन मैं उसे केवल 'होम, स्वीट होम' और 'वेदराई कारिनो' जैसी सरल धुनें ही सिखाता हूँ। आज वह उन्हें चिड़िया की तरह गा रही थी और मुझसे विनती कर रही थी कि मैं तुम्हें न बताऊँ, तभी रोज़ अंदर आई और उसने उसे चूमा, और वह रोने लगी और घर भाग गई। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई हिंदू लड़की कभी उसके जैसी हो सकती है।" "इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी क्षमताओं को नहीं जानते," सिरिल ने उत्तर दिया, ''और सीता की तरह उन्हें खोजने का कोई साधन नहीं है; और हमारी शिक्षा को उन तक पहुँचने में वर्षों, शायद पीढ़ियाँ लग जाएँगी! फिर भी, "शांतिपूर्ण दिन खलल डालते हैं। चाहे कितनी भी ठंड हो, हमारे स्कूलों की लड़कियाँ जब भी अवसर मिलता है, कितनी लगन से प्रयास करती हैं। वे लड़कों के बिल्कुल बराबर हैं।" इस सारी प्रगति और चर्चा में श्रीमती मोस्टिन ने बहुत कम हिस्सा लिया था, क्योंकि वह जानती थीं कि सीता उनसे बेहतर, और अधिक धैर्यवान हाथों में थी, और वह ग्रेस के नीरस जीवन में लगभग अनिवार्य हो चुके इस मामले में दखल नहीं देना चाहती थीं; और रोज़ सोचती थी कि अगर उसकी बहन सीता को किसी भी हद तक अपने स्तर तक ला सकती है, तो यह श्री ब्रैंडन की पत्नी बनने के सबसे करीब होगा; उसने खुद केवल सुई-धागे के काम की शिक्षा देने का प्रयास किया था, जिसमें वह निपुण थी, और जिसमें सीता बुरी तरह पिछड़ गई थी। इसलिए, दिन के अंग्रेजी पाठ समाप्त होने के बाद, जब महिलाओं ने अपना काम शुरू किया, तो सीता धीरे-धीरे उनके साथ जुड़ गई और एक योग्य और मेहनती छात्रा साबित हुई, खासकर कढ़ाई में, जिसमें उसने स्पष्ट प्रतिभा दिखाई, और उसने अपनी सहेलियों के लिए कॉलर और कफ बनाए, और यहाँ तक कि उनकी पोशाकों के लिए कुछ सजावट भी बड़ी बारीकी से की। इस प्रकार समय बीतता गया; और अब सुखद रूप से, क्योंकि शुरुआती खतरे

शांत हो गए थे, या नूरपुर का समाज शांत हो गया था। खतरे का सामना करने और उससे डरने की आदत सी हो गई थी, जेस; लेकिन जुलाई के कुछ ही दिन बीते थे कि सिरिल और सीता की सारी आशंकाएँ फिर से जाग उठीं। एक शाम, सिरिल की गश्त की बारी थी, और उसने अपने कुछ दोस्तों को, जो उसके साथ आने वाले थे, रात के खाने पर बुलाया था, और सीता को हमेशा की तरह अपनी कुटिया की एक खिड़की के पास पढ़ने के लिए छोड़ दिया था। दिन में यह सीता की पसंदीदा जगह थी। एक तरफ सजे हुए चाइना रोज़ और दूसरी तरफ सदाबहार चमेली से एक मनमोहक खुशबू आती थी और वे खिड़की के फ्रेम को एक मंडप की तरह घेरे हुए थे; और बगीचा, उसके पार झील का चमकीला पानी, और ऊपर स्थित पुराना किला, जहाँ ऊँचे खंभे पर अंग्रेज़ी झंडा लहरा रहा था, एक ऐसा दृश्य बनाते थे जिसे वह देखना पसंद करती थी। दिन में कुछ बारिश हुई थी; लेकिन रात साफ थी, और तारे असाधारण चमक के साथ जगमगा रहे थे। उसने कुछ देर तक खिड़की की चौखट पर झुककर उन्हें देखा, और फिर खिड़की बंद कर ली। खिड़की खोलकर वह अपनी पसंदीदा किताब "इमोजेन" पढ़ने लगी, जिसके शब्दों को वह एक-एक पंक्ति करके याद कर रही थी, पढ़ते समय वह अपनी आँखें बंद कर लेती थी। एक बार उसे कुछ सरसराहट सुनाई दी, और उसने ऊपर देखा, लेकिन वहाँ कुछ नहीं था; शायद चिड़ियों ने छत और झाड़ियाँ में घोंसले बना रखे थे। खलिहान के उस पार, अस्तबल से थोड़ी दूर, पहरेदारों का कमरा था, और उसने वहाँ कुछ लोगों को हिलते-डुलते देखा, और पुलिस का संतरी इधर-उधर घूम रहा था। भोजन कक्ष से खुशमिजाज आवाजों की आवाज़ आ रही थी और लगभग...

322 सीता। हंसी की गूंज में, जिसमें वह अपने पति की आवाज स्पष्ट रूप से पहचान सकती थी। वह अपने डर पर मुस्कुराई और फिर से पढ़ने बैठ गई। तभी उसे सरसराहट की आवाज फिर से सुनाई दी, और जैसे ही उसने ऊपर देखा, उसे एक ऐसा दृश्य दिखाई दिया जिससे उसका खून जम गया। खिड़की के ठीक सामने डाकू का भयानक चेहरा था, बुरी तरह बदला हुआ और आंशिक रूप से पट्टियों से लिपटा हुआ, फिर भी जिसे भुलाया नहीं जा सकता था। उसकी क्रूर आंखें गहरी गड्ढों से उसे घूर रही थीं, उसका निर्मम चेहरा, राख जैसा पीला और मुरझाया हुआ, उसके चेहरे से एक फुट की दूरी पर था, उसकी मोमबत्तियों की रोशनी उस पर पड़ रही थी, और उसके चेहरे के भाव क्रूरता और धमकी भरे ढंग से ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो कुछ

बोलने की कोशिश कर रहे हों। इससे पहले भी उसने दीवार के उस पार से ऐसा ही क्रूर चेहरा देखा था, और अक्सर उसे अभी भी देखने का आभास होता था: लेकिन यह अपने भावों की तीव्रता और दुर्भावना में कहीं अधिक भयानक था। अगर उसका रिवॉल्वर पास होता, तो वह सामने दिख रही चीज़ पर गोली चला देती, लेकिन उसने उसे अपने बेटे के कपड़ों के साथ अंदर के कमरे में छोड़ दिया था। उसने अपना होश नहीं खोया और मदद के लिए चिल्लाते हुए दरवाजे की ओर भागी। उसी क्षण एक गार्ड ने डकैत को देख लिया था, और लॉन में भगदड़ मच गई, और "उसे पकड़ो!" "उसे रोको!" के नारे लगने लगे। बुलदेव वहाँ नहीं था। सिरिल ने अपनी पत्नी की चीख और आदमियों की भगदड़ सुनी, और अपने दोस्तों के साथ उठकर बगीचे में कूद गया। कई लोग घबराकर इधर-उधर भागने लगे। जज का गार्ड सतर्क हो गया और खोज में शामिल हो गया, क्योंकि राहटोरे परिवार के एक सदस्य ने बताया कि उसने झोपड़ी की खिड़की के पास एक फव्वारा देखा था, और पुलिस वालों में से एक को यकीन था कि वह बगीचे के नीचे झाड़ियों के बीच से गुजरा था; लेकिन हालांकि सज्जनों ने अपने घोड़ों पर सवार होकर उस जगह तक जाने वाले हर रास्ते की जाँच की, फिर भी कोई दिखाई नहीं दिया। हालाँकि, अज़र्डेल एक बार फिर बाल-बाल बच गया। सीता की चीख सुनकर वह तेज़ी से बगीचे को पार करते हुए, झाड़ियों और पेड़ों की आड़ में झील में कूद गया, ऊंचे सरकंडों के बीच छिप गया और तब तक वहीं बैठा रहा जब तक कि अफरा-तफरी शांत नहीं हो गई। सिरिल ने पहले सीता को समझाने की कोशिश की कि वह गलतफहमी में है। सीता कांप रही थी और सिसक रही थी, उसका सिर उसके कंधे पर था, लेकिन उसने सेडलविन में अपनी बात पर अड़ी रही कि वह सही है। अंत में उसने कहा, “डरना कायरता है! आप इतने पास होते हुए वह मेरा क्या बिगाड़ सकता था? और हमें चक्कर लगाने हैं, सिरिल; सवारी से मुझे आराम मिलेगा, और आप मुझे यहां अकेला नहीं छोड़ेंगे? आइए देखें कि कोई निशान तो नहीं रह गए हैं, क्योंकि खिड़की के नीचे की ज़मीन नरम है।” सचमुच, दो लंबे, पतले पैरों के कई निशान थे, और बगीचे में झाड़ियों के एक छेद तक उनके निशान थे, जिसमें ताज़ी टूटी हुई टहनियाँ थीं। उसके आगे कुछ नहीं था। अज़र्डेल अकेला था।

शांतिपूर्ण दिन भंग हो गए। 323 सिरिल ने सीता को उसके इरादे से रोकने का प्रयास नहीं किया। वह उसे किसी भी कीमत पर अकेला नहीं छोड़ता, और उसने अगले दिन उसे किले में ले जाने का निश्चय किया, जहाँ कोई डाकू प्रवेश नहीं कर सकता था। उसे

स्पष्ट था कि अज़र्डेल की योजना कुटिया की जाँच करने की थी; और यह कहना असंभव था कि कब उस पर भारी आक्रमण नहीं हो सकता। इसलिए, कुछ ही समय में, अन्य लोगों के साथ दल छावनी की चौड़ी सड़कों से इत्मीनान से आगे बढ़ रहा था। लेकिन रात बिना किसी घटना के नहीं गुजरी, और न ही पिछली रातों की तरह सुरक्षित रही। जैसे ही गश्ती दल आगे बढ़ा, अचानक आकाश में एक भयानक रोशनी उठी, और दूसरी सड़क पर मुड़ने पर उन्होंने देखा कि सीमा रेखा से कुछ ही दूरी पर स्थित अधिकारियों के बंगलों में से एक में आग लगी हुई थी, जो हर पल बढ़ती जा रही थी। वहाँ दो युवक साथ रहते थे और अब वे अपने रात्रि वस्त्रों में, हाथों में रिवाल्वर लिए बाहर थे, तथा सिपाही पानी के घड़े लेकर उस स्थान की ओर दौड़ रहे थे। कई लोग फर्नीचर और बक्से हटाने में मदद कर रहे थे, या छत से जलती हुई घास-फूस को खींचने का प्रयास कर रहे थे, जबकि दो-तीन फुर्तीले युवक घास-फूस पर चढ़कर शिखर तक पहुँच गए थे और जो कुछ बचा था उस पर पानी डाल रहे थे, जिसे बचाया नहीं जा सका। अधिकांश जवानों में सच्ची सद्भावना की कोई कमी नहीं थी, जिन्होंने ब्रिगेडियर और अपने-अपने कमांडरों के आने पर ज़ोरदार जयकारे लगाकर उनका स्वागत किया, और ब्रैंडन ने भी उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ते हुए उनका उत्साहवर्धन किया; और सेक्टा का हृदय 'ब्रैंडन साहब बहादुर के जय' के जोशीले स्वागत के नारे को सुनकर खुशी से उछल पड़ा। लेकिन जलती हुई इमारत के चारों ओर जमा भीड़ के धुंधले बाहरी किनारों से, 'दीन! दीन!' के कुछ अशुभ नारे सुनाई दिए। और सहायता कर रहे लोगों का उपहास उड़ाया गया। कुछ लोगों ने आग को आकस्मिक समझा, लेकिन ब्रैंडन को स्पष्ट था कि यहाँ, अन्य जगहों की तरह, अज़राएल पांडे के आगमन के साथ ही सक्रिय शरारत शुरू हो गई थी और उसने अपने निशान छोड़े थे। उस रात नूरपुर में कोई भी ईसाई नहीं सोया; सभी पुरुष और महिलाएं तैयार थे, किले से संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे—पहली तोप की आवाज़। लेकिन रात शांति से गुज़री, और सुबह हमेशा की तरह अभ्यास और पहरेदारी हुई। हालाँकि, आगे कोई जोखिम नहीं उठाया जाना था; और दोपहर में श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस किले तक गईं, वहाँ मौजूद अन्य महिलाओं के साथ शामिल हुईं, और सिरिल और सीता को झील में नौकायन करते हुए तब तक देखा जब तक कि उन्होंने अपनी नाव को मीनार के नीचे नहीं ले गए, और जलद्वार से अपने क्वार्टर में चढ़ गए।
324 स्लेटा, अध्याय 11. दिल खान की मुसीबतें। “तो महाराज, आपने उसे वहाँ

देखा?" अज़राइल पांडे के नवाब ने कुएँ के पास उस कमरे में बैठे हुए पूछा, जिसे हम जानते हैं। "फिर भी, यह एक पागलपन भरा अभियान था, मेरे मित्र। मान लीजिए कि वे आपको पकड़ लेते?" "वे मुझे चमड़े के कारीगर के हाथों फाँसी पर लटका देते, और आप अपने मित्र को फिर कभी नहीं देख पाते—बस इतना ही," उसने उदास स्वर में उत्तर दिया और चुप हो गया। "लेकिन स्लेटा," नवाब ने ज़ोर देकर पूछा—"वह आपसे कैसे बच निकली?" "क्योंकि आपके लोग कायर थे—कायर!" उसने दाँतों के बीच से फुफकारा, "और जब हम सीमा रेखा पर पहुँचे तो वे पीछे हट गए। अगर उन्होंने कुल्हाड़ी पर कसम खाई थी, तो वह अब यहाँ होती; और वह वहाँ है—चुड़ैल—जादूगरनी! यह उसके शैतानी जादू थे जिन्होंने पुरुषों को रोक दिया और उनके दिलों को भय से भर दिया।" क्या मैं यह नहीं जानता? क्या मैंने उसे अंग्रेज़ी किताब से पढ़ते हुए नहीं सुना और न ही उसे देखा? ओ सीता, मैंने तुझे देखा था! जब मैं सुन और देख रहा था, तो मुझे लगा जैसे मैं तेरे साँसों को अपने गालों पर महसूस कर सकता हूँ। सीता, सीता, क्या तूने नहीं सुना जब मैं बोल रहा था, जब मैं तुझसे फुसफुसा रहा था कि आओ और मेरी रानी बनो।" "तुम बड़बड़ा रहे हो, मेरे मित्र," नवाब ने रूखेपन से कहा; "और उसके जैसी रोने वाली, बेजान चेहरे वाली लड़की के बारे में बड़बड़ाना एक बूढ़े आदमी के लिए शोभा नहीं देता। जब तुम बीमार और डरे हुए थे, तब तुमने वह कहा जो तुम्हें पता नहीं था। लेकिन अब जब तुम ठीक हो, भगवान का शुक्र है, तुम्हारी ये सारी मूर्खताएँ और तुम्हारे सारे शैतान दूर हो जाएँ।" "आह! हमें नहीं पता कौन आ रहा है, नवाब, वरना आप यहाँ नहीं होते; आप उनकी 'ह्रेम! हर्दम! हिरेम!' सुनकर डर जाते। क्या आपको उनके लोहे के कदमों की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही? सुनो!" "अगर तुम अपने शैतानों और सुनार हुरे दास को अपने पास बुलाने वाले हो, तो मैं, अज़रील पांडे, उन्हें तुम्हारे पास छोड़कर चला जाता हूँ;" और वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। "रुको," उसके साथी ने कहा; "वे जा चुके हैं —अब तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। हाँ," उसने उदास स्वर में अपनी आँखों पर हाथ फेरते हुए कहा, "मैं अब कई ऐसे लोगों को देख रहा हूँ जो पहले कभी नहीं आए थे; और गुड्डुक में वह बूढ़ा आदमी है जिसके भाले के घाव खुले हुए हैं, और उसके चारों ओर मृत पड़ी हुई सभी औरतें हैं, और हाँ, अब सब खून ही खून है—मेरी आँखों में खून, मेरे दिल में खून, उन अंग्रेजों का खून जो दिल्ली और कानपुर में नरक में चले गए हैं।"

दिल खान की मुसीबतें। 325 झांसी, एक बड़ी धारा में बह रही है, और आगे भी बहती जा रही है। हे दिव्य माँ! और, और, जब तक तू भर न जाए!" "नहीं, यह तो और भी बदतर होता जा रहा है," दिल खान ने मन ही मन कहा। "इसे उसे उसके खून से दूर करना होगा। और सिपाहियों का क्या हुआ, महाराज? क्या आपने उन्हें देखा, जैसा आपने कहा था? क्या आप मेरी बात सुन रहे हैं? शैतानों की चिंता मत करो; वे किसी और समय आएंगे, जब आपको उनकी ज़रूरत होगी।" "मुझे वह हुक्का दो। मैं जीने के लिए बहुत कमज़ोर महसूस कर रहा हूँ," अज़रील ने जवाब दिया; और जैसे ही नवाब ने उसे हुक्का दिया, उसने अपने पास जलते अंगारों से दो-तीन जलते हुए कोयले के टुकड़े लिए, उन्हें हुक्के के प्यालों पर रखा, और धुएँ के कई लंबे कश लिए। "अब मैं आपसे बात करूँगा, नवाब साहब," उसने अधिक संयम से कहा, "लेकिन ज़्यादा नहीं, क्योंकि यह घाव अभी भी बहुत दर्द दे रहा है। आपने मुझसे क्या पूछा? शायद मेरा मन भटक रहा था—यह अक्सर अब भटकता है।" "सिपाहियों के बारे में," दिल खान ने कहा। "मुझे लगने लगा है कि तुम उनके बारे में गलत सोच रहे हो, मेरे दोस्त; और अगर ब्रिगेडियर और ब्रैंडन—उनकी आत्मा को आग लगे!—उन्हें और उन 'सैनिकों' को अपनी बड़ी तोपों के साथ मुझ पर हमला करने के लिए ले आए, तो मुझे नहीं लगता कि तुम या मैं इस जगह को बचा पाएंगे।" "शांत रहो!" अज़रील ने हाथ हिलाते हुए कहा। "तुम बच्चों की तरह बात करते हो। क्या कल रात मोर्चे पर एक साहब का बंगला नहीं जला था; और क्या तुमने यहाँ से आग की लपटें नहीं देखीं?" "हाँ, एक गरीब घर का," नवाब ने व्यंग्य करते हुए उत्तर दिया। "मुझे ऐसी आग की उम्मीद थी जो आसपास के पूरे इलाके को रोशन कर देती।" "अरे, तुम्हें नहीं पता, तुम्हें अभी समझ नहीं आया; यह तो बस शुरुआत थी," अज़रील ने कहा। "क्या मैं वहाँ नहीं था, और क्या मैंने घर की जलती हुई राख पर अपने कपड़े नहीं सुखाए थे? क्या मैंने ब्रैंडन को, और उसके साथ घोड़े पर बैठी चुड़ैल सेकेता को, और ब्रिगेडियर को, और सभी अधिकारियों को नहीं देखा था?" और हम 'दीन! दीन!' चिल्लाते रहे और पानी ला रहे तथा आग बुझाने की कोशिश कर रहे लोगों का मज़ाक उड़ाते रहे। "अच्छा, अच्छा, मुझे पता है," नवाब ने अधीरता से जवाब दिया; "और बात यह थी कि सभी अधिकारी और मेम साहब किले में चले गए हैं, और मैं जानना चाहता हूँ कि उन्हें बाहर कौन निकालेगा। तौबा! तौबा! वहाँ कोई नाज़रीन नहीं होगा जिसे शैतान के पास भेजा जा सके जो उनका इंतज़ार कर रहा है। मेरे दोस्त, तुमने

बहुत देर कर दी है, और कहीं और कोशिश करो।" "ज़्यादा देर नहीं, दिल खान; हालाँकि, अगर मैं ऐसा न होता, तो बात अलग होती। क्या मैं इसमें कुछ कर सकता हूँ?" और उसने ज़ख्म की ओर इशारा किया। "इसे जाने दो। अगर तुम तैयार हो, तो आदमी अब तैयार हैं। बोलो!" "अहम! मौलवी अभी तक नहीं लौटे हैं," नवाब ने कहा।

सीता ने हिचकिचाते हुए कहा, "और जब तक वह नहीं आता, मैं कुछ करने की हिम्मत नहीं कर सकता; और तुम अभी इतने ताकतवर नहीं हो, मेरे दोस्त, कि अपने पाँच सौ योद्धाओं का नेतृत्व कर सको।" "पाँच सौ कायर, तुम्हारा मतलब है?" डकैत ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "कल रात मैं अपने साथ जिन पचास योद्धाओं को ले गया था, वे झाड़ियों में छिप गए और फिरंगी गश्ती दल के आधा मील दूर रहते ही भाग गए। क्या ये सैनिक हैं? हमें सच्चे सैनिकों का इंतज़ार करना होगा, दिल खान।" नवाब उठे और चले गए। उनका मन शांत नहीं था। सीधे शब्दों में कहें तो, वे अब आशंका और संदेह से भरे हुए थे। दिल्ली से उन्हें वाकई अद्भुत समाचार मिले थे; और राजसी अखबारों के माध्यम से उन्हें सूचित किया गया था कि हजारों नाज़रीन काफिरों को प्रतिदिन नरक भेजा जा रहा है, शाही सेनाओं की विजय शाश्वत है, हजारों सच्चे विश्वासियों ने पहले ही दुनिया के शरणस्थल को प्रणाम कर दिया है, और जब सभी अंग्रेज नष्ट हो जाएंगे, तो सम्राट स्वयं युद्ध के मैदान में उतरेंगे और अपनी वफादार और समर्पित प्रजा से बधाई स्वीकार करेंगे। लेकिन इन समाचारों के साथ उनकी दूसरी पत्नी के भाई का एक पत्र भी आया था, जिसने उनकी महत्वाकांक्षाओं को झकझोर दिया और अखबारों के समाचारों की पूरी तरह पुष्टि नहीं की। अंग्रेजी सेना शहर के ऊपर पहाड़ी के पीछे छिपी हुई थी, और उनकी तोपखानों से धधकते गोले दागे जा रहे थे, जिससे कई लोग घायल हो रहे थे और लोगों के जिगर पानी में मिल रहे थे। वहाँ सिपाही थे। हजारों सैनिक आ रहे थे, और रेजिमेंटों के रूप में और भी आ रहे थे; लेकिन उनका कोई मुखिया नहीं था, और वे अक्सर आपस में झगड़ते और कभी-कभी लड़ते भी थे। उसका पति कहाँ था, जिससे इतनी बड़ी उम्मीदें थीं? वह अपने योद्धाओं के साथ प्रकट होकर राजाओं के राजा की रक्षा क्यों नहीं कर रहा था? वह आवश्यकता को क्यों टाल रहा था, और नूरपुर के किले में शरण क्यों ले रहा था, जिसे उसने बेशक बहुत पहले ही जीत लिया था? उसके भाई का ऐसे प्रश्न पूछना तो ठीक था, लेकिन वह उनका उत्तर कैसे देती? दिल खान न केवल उसे सांत्वना नहीं दे

सका, बल्कि उस उग्र स्त्री ने उसे कायरता, निष्क्रियता और अपने उपकारक सम्राट के प्रति कृतघ्नता के लिए लताड़ा, जिसने उसे सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया था। वह अपनी पत्नी को यह समझाने में असमर्थ रहा कि मुश्किल से दस रुपये का झिलमिलाता हार या सम्मान का वस्त्र, जो जाँच करने पर मैला और फटा हुआ निकला, किसी सेना को प्रेरित नहीं कर सकता या उसकी तत्काल आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता; और इस बात को साबित करने में असफल होकर, उसने उस क्रोधित स्त्री को उसके भावुक रोने के लिए छोड़ दिया और "स्टार" की ओर चल दिया। "महिलाओं की" जो शायद अक्सर मिलने नहीं आती थीं। लेकिन यहाँ उन्हें और भी परेशानी का सामना करना पड़ा। उस भली महिला ने
दिल कुआन की मुसीबतें। 327 ए री ई में शाही पीड़ितों की कहानियाँ या शैतान की संगति में भेजे गए काफिर फरिश्तों की सूचियाँ सुनने का धैर्य नहीं था। वह दिल से अंग्रेजों की सच्ची दोस्त थी। हालाँकि नूरपुर के मेम साहब हमेशा उसके प्रति दयालु और कृपालु रहे थे, और वह उनसे प्यार करती थी; जहाँ तक प्यारी मिस मोस्टिन की बात है, वह किसी भी नौकर के पास जाने के बजाय खुद उसके पास जाकर उसकी रक्षा करना पसंद करती। 'महिलाओं की सितारा' स्थानीय सुंदरता की धनी थीं और फतेहपुर के आसपास कई प्रभावशाली जमींदारों से उनके अच्छे संबंध थे। उनसे उनका निरंतर संपर्क था और वे जानती थीं कि भले ही वे कुछ समय के लिए असहाय रूप से तटस्थ रहें, लेकिन अवसर मिलने पर वे अंग्रेजों का साथ देने के लिए तैयार हो जाएंगे। इन परिस्थितियों में नवाब खुद को बहुत दुखी महसूस कर रहे थे; शायद कड़वाहट से नहीं, बल्कि बहुत उदास; उन्हें लॉर्ड लेक के समय से लेकर आज तक अंग्रेजों के साथ चली आ रही लंबी दोस्ती याद आ रही थी। क्या यह सब कुछ त्याग दिया जाएगा और उनका जीवन और संपत्ति खतरे में पड़ जाएगी? वास्तव में, मेरी इच्छा है कि इस इतिहास के माध्यम से मैं अपने पाठकों को इस उत्कृष्ट महिला के बारे में और अधिक बता पाता; दयालु, परोपकारी, अपने आश्रितों के प्रति दयालु, अपनी स्थिति से संतुष्ट और आभारी—छोटी बहन पत्नी के बावजूद—अपने धर्म के सिद्धांतों का पालन करने वाली, सरल और शालीन व्यवहार वाली, और सभी की प्रिय और सम्मानित—देश में उनसे अधिक लोकप्रिय या सम्मानित महिला कोई नहीं थी, और न ही किसी ने अंग्रेजों और उनके परिवार के सदस्यों का इतना गहरा स्नेह प्राप्त किया था। मुसलमानों और हिंदुओं से भी बढ़कर, नुज्म-उल-निस्सा खानुम। "तुम्हें क्या करना चाहिए?" अपने

स्वामी के प्रश्न के उत्तर में उसने कहा, जो उसके सामने टेढ़ी पगड़ी और उंगलियों के बीच तर्जनी उंगली रखे बैठे थे; "तुम्हें क्या करना चाहिए? क्यों, तुरंत ब्रिगेडियर और जज साहब के पास जाओ। कहो कि तुम्हें गुमराह किया गया है, उनसे क्षमा मांगो, और ढोल बजाकर घोषणा करो कि तुम अंत तक अंग्रेजों के साथ खड़े रहोगे; क्योंकि, हे स्वामी, अंत में वे ही जीतेंगे। क्या उन्होंने पहले नहीं जीता? यदि सर्वशक्तिमान ने उन पर विपत्ति भेजी है, तो वे उसके आगे झुकेंगे और फिर उठ खड़े होंगे। यदि तुम नहीं जाओगे, तो जज की पत्नी के पास भेजो। यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं तुम्हारे लिए इंग्लैंड की रानी के पास भी जाऊंगी। हे स्वामी! लोगों को तुम्हारे बारे में बुरा न बोलने दो, बल्कि वफादार अंग्रेजों पर भरोसा रखो कि वे तुम्हें तुम्हारी वफादारी के लिए पुरस्कृत करेंगे।" "उन्होंने झांसी और नागपुर पर कब्जा कर लिया," उसने कड़वाहट से कहा; "तब से मुझे उन पर भरोसा नहीं रहा। उन्हें मरने दो, जैसे वे हर जगह मर रहे हैं और मरेंगे। अगर उनके पूर्वज इस पीढ़ी जैसे होते, तो मेरे पूर्वज उनसे जान की बाजी लगाकर लड़ते, जैसे मैं लड़ूंगा! इंशाल्लाह! जैसे मैं लड़ूंगा! चुप रहो, अगर तुम मेरी कृपा और अपनी इज्जत की परवाह करते हो! वरना—"
328 सीता। "मैंने तो बस सच कहा है," उसने विनम्रता से उत्तर दिया; "बाकी सब ईश्वर के हाथ में है। ईश्वर आपकी रक्षा करे और आपको सही राह दिखाए।" इन सब बातों और भी बहुत सी बातों से, जिनका उल्लेख करना आवश्यक नहीं है, नवाब दिल खान को कोई सांत्वना नहीं मिली। उनके घर में फूट पड़ी हुई थी और वे जहाँ भी जाते, उन्हें विरोध का सामना करना पड़ता था; और कई बार, कई दिनों तक, वे मन ही मन सोचते रहे कि क्या श्री मोस्टिन और ब्रिगेडियर के पास जाना और उनके साथ पूरी तरह से जुड़ जाना ही सबसे सुरक्षित और बुद्धिमानी भरा कदम नहीं होगा। उनकी इस हालत में उन्हें खुश करने और सहारा देने वाला कुछ भी नहीं था। अगर वे गुप्त कक्ष में जाते, तो पाते कि उनका मेहमान या तो नशा या अफीम के नशे में बड़बड़ा रहा है; या भावुक अवस्था में डूबा हुआ है, अपने पूजे जाने वाले शैतानों को पुकार रहा है, या फिर "सीता" कहकर गिड़गिड़ा रहा है। इसलिए, नवाब साहब हर तरफ से परेशान और बेहद दुखी थे; उन्हें एकमात्र सांत्वना अपने भाग्य के आगे समर्पण में ही मिली, जो उन्हें अपनी मर्ज़ी से चला रहा था। दरअसल, दिल खान को उसकी बेचैनी और मन की हताशा से जगाने के लिए मौलवी के प्रभाव की ही ज़रूरत थी; और उचित समय पर वह योग्य व्यक्ति प्रकट हुआ: आत्मविश्वास से भरा हुआ, अवध, कानपुर,

फतेहगढ़, बांदा, झांसी और कई अन्य स्थानों पर विजय की खबरों से उत्साहित। बिठूर के नाना साहब ने प्रांतों के विद्रोहियों को अपने चारों ओर इकट्ठा कर लिया था, जो अपनी सभी तोपों और युद्ध सामग्री के साथ एक तरफ दिल्ली और दूसरी तरफ कलकत्ता की ओर कूच करने की तैयारी कर रहे थे, जहाँ सभी अंग्रेज़ "काफिरों" को उनके जहाजों में या समुद्र में धकेल दिया जाना था। राजपूत राज्यों में विद्रोह हो रहे थे, और सिंधिया और होल्कर की देशी सेनाएँ, अपने आकाओं की निष्क्रियता से अधीर होकर, कुछ टुकड़ियों ने विद्रोह कर दिया था; और बारिश रुकने और तोपखाने के चलने लायक होते ही मैदान में उतरने की तैयारी कर रहे थे। “मराठा सेना, फ्रांसीसी वीरों की पुरानी बटालियनें, अपने आप में एक सेना, नाना साहब से मिलेंगी, जो पेशवाह बनने वाले हैं। पुणे में मराठा राजकुमार और उनके सभी लोग तैयार हैं। आर्कोट, वेल्लोर, सेरिंगापट्टम और दक्षिण के मुसलमान अंतिम संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और हैदराबाद और नागपुर में सब कुछ तैयार है। क्या आप धर्म की महिमा के लिए इस दौड़ में देर करेंगे?” मौलवी ने उत्साह से कहा। “मैं जानता हूँ कि मैं लंबे समय से अनुपस्थित रहा हूँ, लेकिन मैंने दूर-दूर तक और तेजी से यात्रा की है, और जो समाचार मैं अब आपको बता रहा हूँ, वह मैंने अंग्रेजी स्रोतों से प्राप्त किया है, हमारे अपने स्रोतों से नहीं। यहाँ तक कि अंग्रेजी अखबार भी चिंता और आशंका से भरे हुए हैं।” “और दिल्ली?” नवाब ने पूछा। “हालात इससे पहले कभी इतने उज्ज्वल या बेहतर नहीं दिखे,” उन्होंने उत्तर दिया।

दिल खान की मुसीबतें। 829 अंग्रेज़ सेना पुराने किले के विरुद्ध अपनी शक्ति खो बैठी, जैसे चट्टान से टकराती लहरें, और शक्तिहीन झाग के टुकड़ों में बिखर जाती हैं। वे दीवारों के पास भी नहीं पहुँच पाते; उनकी तोपें घिस चुकी हैं, और उनके पास नई नहीं हैं। हा! हा! हा! उन्हें वहीं उत्पात मचाने दो। जब हम सब उनके विरुद्ध आगे बढ़ेंगे, तो वे धरती से मिटा दिए जाएँगे और नरक में भेज दिए जाएँगे। अब मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है: मैं झांसी गया था, और मैंने लुक्शमेओ बाय, रांस से मुलाकात की। वह चाहती है कि नूरपुर पर कब्जा होने के बाद तुम उसके साथ शामिल हो जाओ। उसके पास बीस हज़ार सैनिक हैं। हालाँकि अंग्रेजों ने एक बार उसका राज्य छीन लिया था, उसने उसे वापस पा लिया है। उसने सभी छिपे हुए खजाने खोल दिए हैं, और वह उदार और खुले दिल की है; नाना उसे एक लाख सैनिकों से समर्थन देता है; अवध के तलवोकदार पचास हज़ार सैनिकों से। मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरी जानकारी में

उनके पास इस समय दो लाख (200,000) से अधिक सैनिक हैं। दिल्ली, ग्वालियर, इंदौर, हर जगह मौजूद सैनिकों से मिलवाओ, और क्या होगा? कम से कम पाँच लाख योद्धा तो धर्म के लिए तैयार हो जाएँगे! जबकि अगर पूरे हिंद में दस हज़ार अंग्रेज़ सैनिक बिखरे पड़े हों और एक-दूसरे की मदद न कर पा रहे हों, तो बस इतना ही काफी है। क्या वह तुम्हारे साथ है? वह ब्राह्मण—जोगी—जो भी कहो—जिसने नूरपुर के सैनिकों को अपने वश में कर रखा था? वह क्या कर रहा है? नवाब ने जवाब दिया, “उसके चेहरे पर बुरी तरह चोट लगी थी, और मुझे लगा था कि वह मर जाएगा। इसलिए उसने कुछ नहीं किया। और मैं उससे तंग आ गया हूँ; क्योंकि चाहे कमज़ोरी से हो या गांजा पीने से, वह एक स्वप्नद्रष्टा बन गया है, अपने पूजे जाने वाले शैतानों के दर्शन करता है, और कुल मिलाकर बहुत अप्रिय संगति में रहता है। लेकिन अब वह ठीक है, और उसका घाव लगभग भर गया है।” “अच्छा!” मौलवी ने हाथ मलते हुए कहा। “मैं उसके लिए कुछ पुराने दोस्तों को लाया हूँ, जिन्होंने झांसी में अच्छा काम किया था। मुझे यकीन है कि वे उसका हौसला बढ़ा देंगे।” "घबराइए मत, नवाब साहब, वे आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।" "ऐसा नहीं था," नवाब ने कहा, "बस —मान लीजिए कि उन्हें नूरपुर में पता चल जाए, तो वे शायद..." "बेशक, मेरा मतलब है कि उन्हें पता चल जाए। आप और क्या सोच रहे थे? मैं कहता हूँ कि इन अवध के जवानों को उनके हाल पर छोड़ दो; वे जानते हैं कि क्या करना है और कैसे करना है। जब आपके साथ नूरपुर के सभी सिपाही होंगे, तो आप मजबूत महसूस करेंगे और झांसी की ओर कूच कर सकते हैं। अब आप कमजोर हैं, है ना? क्या आप यही सोच रहे थे, मेरे दोस्त?" नवाब दिल खान ने आह भरी; वह अपनी "किस्मत" के सामने क्या कर सकता था, और उसने फिर आह भरी। अब यही उसके लिए फैसला करेगा, क्योंकि उसके पास मौलवी का विरोध करने की मानसिक शक्ति नहीं थी, और 330 सीता। वे लोग भी आ चुके थे। बाहर प्रांगण में हलचल मच गई और एक सेवक ने घोषणा की कि सिपाही तुरंत अंदर आने की मांग कर रहे हैं। नवाब ने सहमति में सिर हिलाया और मौलवी ने उनकी ओर से कहा, "उन्हें अंदर आने दो और सलाम करने दो।" और कुछ ही क्षण बाद लगभग बीस लोग अपने दाहिने हाथ ऊपर उठाकर अंदर आए और "जय काली माता!" का नारा लगाया। "नवबा दिल खान बहादुर के जय!" नवाब उठते हुए बोले, "आपका स्वागत है, मेरे मित्रों; एक गरीब घर में आपका स्वागत है; क्या आप बैठेंगे नहीं?" उन लोगों ने सैन्य सलामी दी और दो पंक्तियों में

अपनी एड़ियों पर बैठ गए। वे वर्दी में नहीं थे, लेकिन उन्होंने अपने कपड़ों के ऊपर अपनी बेल्ट पहनी हुई थी और जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल के लिए तैयार अपनी बंदूकें हाथों में पकड़ी हुई थीं। वे सभी अपने भाइयों की तरह ही बड़े और मजबूत थे। अपनी मूंछें समेटे हुए, वे उत्सुकता से चारों ओर ऊंचे मेहराबदार हॉल और नवाब को बारी-बारी से देख रहे थे। उनमें से कोई नहीं बोला। "यह बहादुर सिपाही," मौलवी ने नवाब से हाथ जोड़ते हुए कहा, "कर्नल गोर बक्स तिवारी हैं, जो कभी तोपखाने के हवलदार थे और अब झांसी में तोपखाने के कमांडर हैं, कर्नल के पद पर। कृपया उन पर अपनी कृपा बनाए रखें। कर्नल साहब," उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, "उठिए और हमारे बीच एक मित्र की तरह बैठिए। मुझे लगता है कि आपके लोग आराम करने के लिए जा सकते हैं, क्योंकि उन्होंने लंबी यात्रा की है;" और, अपने नेता के इशारे पर, सभी उठे और अपना सैन्य सलामी दोहराते हुए हॉल से बाहर निकल गए। फिर तीनों ने देश की स्थिति, इलुरपदल सिंह की स्थिति और नूरपुर पर कब्जा करने की संभावनाओं पर चर्चा शुरू की; और यह परिणाम पूर्व हवलदार को पसंद नहीं आया, न ही यह उस भव्य तस्वीर से मेल खाता था जो मौलवी साहब ने झांसी में पेश की थी। गोर बक्स की तेज सैन्य दृष्टि ने नवाब की सेना की पूरी कमजोरी और बेकारता को तुरंत भांप लिया था, और उसे इस तरह के काम के लिए इतनी दूर आने का आधा अफसोस था। उसने सुना था कि हुरपाल सिंह एक बदमाश था, जो केवल स्थानीय लूटपाट में लिप्त था, और सहयोगी के रूप में किसी काम का नहीं था। इसलिए, केवल नूरपुर की चौकी ही बची थी। "मेरे गुरु, अजरदल पांडे कहाँ हैं?" गोर बक्स ने पूछा। "वह मुझसे मिलने क्यों नहीं आ रहे? कुछ भी तय करने से पहले मुझे उनसे मिलना होगा।" "अगर तुम एक पागल से नहीं डरते, तो मैं तुम्हें खुद उनके पास ले जाऊंगा," नवाब ने कहा, "मैं खुद मुसीबत की स्थिति में ऐसा करता हूँ," और उन्होंने अपनी पिस्तौल की ओर इशारा किया; "लेकिन वह तुमसे नहीं डरेंगे, जो कभी उनके शिष्य थे।" आप यहीं रहिए, मौलवी साहब, हम अभी लौटेंगे।" फिर उसने

* षड्यंत्र।" 831 उठा और सीढ़ियों का दरवाजा खोला, और गोर बक्स को अपने पीछे आने का इशारा करते हुए, सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, और उतरते हुए अपने साथी को अज़राएल पांदे के घाव, उसके प्रलाप और उसकी भयानक चीख "ह्रराम, हर्दिम, हर्रेम!" के बारे में बताने लगा। "आह," उस आदमी ने कहा, "मुझे लगता है कि वह 'गुरिरा पूरेन' पढ़ रहा है। यही उनमें से अधिकांश के साथ होता है। नहीं, मैं

डरा हुआ नहीं हूँ; आगे बढ़ो।" अध्याय 11। "* षड्यंत्र।" हमने वह जगह और वहाँ रहने वाले उस आदमी को देखा है; उसकी विचित्र पूजा-अर्चना और उसके उदासी और उत्तेजना के बदलते दौरों को भी। शायद, अज़रील ने जिस भयावह मार्ग को चुना था और जिन अपवित्र कलाओं और अनुष्ठानों का वह अभ्यास करता था, उसे जानते हुए, उसका पूर्व शिष्य और मित्र भी उस कमरे के पास आते ही कांप उठा; और फोरसुत, जो बाहरी कक्ष में बैठा था, नवाब से फुसफुसाया, "बेहतर होगा कि आप प्रतीक्षा करें; वे सब अब उसके साथ हैं, और उसकी चीखें पहले से भी बदतर हो गई हैं। उसने अपनी तलवार निकाल ली है और उसकी पूजा कर रहा है। मुझे आज सुबह उसकी बलि के लिए एक मुर्गा मारना पड़ा, उसे खून से लपेटने के लिए; देखो!" "मुझे उसके पास जाने दो," गोर बक्स ने कहा, "मुझे एक ऐसा मंत्र आता है जो उसे शांत कर देगा, चाहे वह कितना भी हिंसक क्यों न हो, अगर वह इससे आगे न बढ़ा हो। जब तक मैं न बुलाऊं, यहीं रहो; तुम्हें उसे गोली नहीं मारनी चाहिए; और न ही वह तुम्हें मारेगा," यह कहकर वह तेज़ी से अँधेरे में आगे बढ़ गया। गोर बक्स के हाथ में लोहे की मज़बूत लाठी थी और वह तलवार से नहीं डरता था; लेकिन जो उसने देखा, उससे उसके कदम तुरंत रुक गए। रोशनी मंद थी और कमरा जलती हुई अगरबत्ती के धुएँ से इतना भरा हुआ था कि दीवार के आले में रखी मोमबत्ती मुश्किल से जल रही थी। दूर, मानो किसी साधारण से छोटे मंदिर या वेदी के सामने दो छोटे दीपक टिमटिमा रहे थे, जिसके सामने अज़र्देल पांदे नंगे सिर और कमर पर केवल एक पतला रेशमी कपड़ा लपेटे, भक्ति या ध्यान की मुद्रा में बैठे थे और अपने सामने ज़मीन पर पड़ी एक पतली आयताकार किताब पढ़ रहे थे। उनके बगल में, और हाथ में तैयार, खून के धब्बों और पाउडर के निशानों से सनी एक नंगी तलवार रोशनी में चमक रही थी, और वह धीमी आवाज़ में उस अजीब संस्कृत मंत्र का जाप कर रहे थे, जिसका कुछ अंश पहले उद्धृत किया जा चुका है। गोर बक्स ने एक नज़र में ही जान लिया कि यह वही मंत्र है। वह जिस व्यक्ति की तलाश कर रहा था; लेकिन

थीं। लेकिन गोर बक्स ने जिस चेहरे को देखा था, उसे पहचानना मुश्किल था। दाहिना हिस्सा लगभग गायब सा हो गया था, और एक चौड़ा घाव, जो अभी पूरी तरह से भरा भी नहीं था, जबड़े और गर्दन के अधिकांश हिस्से को ढके हुए था और निचले पलक और मुंह के कोने को भयानक ढंग से नीचे खींच लिया था, जिससे चेहरे पर एक डरावना भाव आ गया था। “ह्रूम! ह्रूम! ह्रूम!” डाकू चीखा, उछलकर खड़ा हुआ, अपनी तलवार पकड़ी और इतनी ज़ोर से हवा में वार किया कि हर वार से सीटी की आवाज़ आई। “नष्ट करो, नष्ट करो! भेदो, भेदो! अपने रक्त से लथपथ त्रिशूल से! आओ, आओ, हे! महेश्वर, हे! कपालिनी, हे! कामरिनी, हे! महाकाली! प्रवेश करो, प्रवेश करो, सुनो और आओ, सुनो और आओ! सुनो और आओ!” फिर वह अपनी तलवार फैलाए, साँस फूलते हुए, सीधा खड़ा हो गया, और उसकी आँखें खालीपन में टकटकी लगाए थीं। “वह नहीं आती,” उसने उदास स्वर में कहा, जैसे ही उसकी तलवार की नोक असहाय होकर नीचे गिरी, और वह लगभग अपनी पिछली स्थिति में गिर पड़ा। “जब तक और रक्त नहीं बहेगा, वह नहीं आएगी। वह भूखी है, वह प्यासी है! क्या वह तुच्छ बलिदान उसे तृप्त करेगा? नहीं, लेकिन देखो! देखो! वहाँ!” इससे पहले कि वह उठ पाता, गोर बक्स ने अपने ऊपरी वस्त्र उतार दिए, उसके पीछे चला गया, और एक संस्कृत मंत्र बुदबुदाया, जिसका एक अजीब प्रभाव हुआ। अज़राएल मानो अकड़कर बैठ गया। चेहरे पर कोई भाव नहीं बदला, और उसकी काँच जैसी आँखें बिना किसी चिंतन के अंधकार में टकटकी लगाए देख रही थीं। फिर दूसरे ने पास ही रखी पीतल की थाली से धूप ली, और उसके बगल में रखा लाल पाउडर भी लिया, जिससे उसने अपना माथा मला; और अज़रील द्वारा अपने चारों ओर बनाए गए जादुई घेरे में प्रवेश करके, पहले वेदी को प्रणाम किया, और उसके सामने घुटने टेककर, एक के बाद एक कई लंबी प्रार्थनाएँ कीं।

“षड्यंत्र।” 333 “बस करो,” वह बड़बड़ाया, “बस करो, देवी माँ! वरना मैं भी उसके जैसा हो जाता,” और वह बैठ गया और देखने लगा; लेकिन ज़्यादा देर नहीं। अज़राएल ने आह भरी, उसकी गर्दन का तनाव कम हो गया, और जैसे ही उसका लबादा उसकी छाती पर गिरा, उसकी आँखों से आँसू चुपचाप उसके हाथों पर गिरने लगे। “उठो, अज़राएल पांडे!” उसके साथी ने पुकारा; “मैं, गोर बक्स तिवारी, तुम्हारे पास हूँ, और तुम्हें माँ के नाम से प्रणाम करता हूँ। जय देवी! काली माता के जय! महा काली को जय! उठो, और अपने शिष्य को गले लगाओ। आह! अगर तुमने मुझे वह

मंत्र न सिखाया होता, गुरुजी, तो माँ तुम्हें अपने पास बुला लेतीं," "तुम, गोर बक्स? कैसे, तुम यहाँ हो?" "वह मुझे लाया," उस आदमी ने नवाब की ओर इशारा करते हुए कहा, "वरना तुम्हें यहाँ धरती के नीचे कौन ढूँढता?" "तुमने क्या किया है?" अज़रील ने घबराकर पूछा, "मेरा भयानक सपना अब चला गया है; बोलो! क्या वे मर गए? अंग्रेज़!" "झांसी में जितने भी थे," गोर बक्स ने कहा; "मैंने उन सबको सुरक्षित रखा; फिर मैंने माता के लिए एक बड़ा बलिदान दिया, और जैसा आपने मुझे कहा था, मैंने उन सबको मरवा दिया। लगभग सौ थे।" "और आपने किसी को नहीं बख्शा?" "एक को भी नहीं; न बच्चे को, न माँ को, न दासी को; लेकिन कानपुर में तो सैकड़ों को मारा गया है! नाना साहब ने किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा? आह! माता ने बहुत खून पिया है! लेकिन तुम, उनके पुजारी और भक्त—तुमने एक को भी क्यों नहीं भेजा? सावधान रहो, कहीं वह तुम्हें न ले जाए; जब वह तुम्हें बुलाती है, तो तुम उसके बहुत करीब होते हो!" "मुझे पता है, मुझे पता है," अज़रील ने उदास होकर उत्तर दिया; "वह आती है और खाली हाथ लौटती है; और जब वह इशारा करती है, तो मुझे उसका अनुसरण करना पड़ता है, क्योंकि मैंने उसे कानपुर से कोई खून नहीं भेजा है।" "गुरुजी, क्या आप मेरे साथ पुरुषों के पास आकर उन्हें जगाएंगे?" "मैं कमजोर हूँ," अज़रील ने उत्तर दिया; "परन्तु आपको देखकर मुझे नई शक्ति मिली है, और शायद इस क्षीण शरीर में अभी भी कुछ बाकी है;" और वह उठ खड़ा हुआ, और एक एथलीट की तरह अपनी हथेलियों से अपनी जांघों और छाती के गड्ढों पर बारी-बारी से प्रहार किया। "शाबाश! शाबाश, मित्र; यह तो एक पहलवान की तरह किया। अब तुम फिर से पहले जैसे हो जाओगे," नवाब ने कहा। "उसे मेरे साथ यहीं रहने दो, और उसके लोगों को बगीचे में ठहराओ," अज़रील ने नवाब से कहा। "उनके साथ एक दिन बिताने से, उनके परिचित चेहरों को देखकर, और अपने देश के गीत और भाषा सुनकर मुझे नई शक्ति मिलेगी। हम वहाँ की दीवार गिरा सकते हैं, और हवा और रोशनी आने दे सकते हैं, और वे अपनी मर्जी से आ-जा सकते हैं।"

834 सीता। "ऐसा ही हो, मित्र," नवाब ने कहा, "सच कहूँ तो, मुझे नहीं पता कि इन्हें कहाँ रखूँ। लेकिन अगर ये अर्दन मंडप में संतुष्ट हैं, तो इनका स्वागत है; बस वहाँ आग मत जलाना।" "तो मैं जाकर उन्हें बता देता हूँ," गोर बक्स ने कहा। "मैं इन्हें यहाँ ले आऊँगा, और नवाब साहब हमारे लिए राशन भेज देंगे। मुझे ज़्यादा देर नहीं लगेगी।" लेकिन कई दिन बीत गए, और दोनों तरफ से कोई हलचल नहीं हुई। फ़ूरसुत

ने सोचा, अजीब बात है कि रायना आने के बाद से उसने बुलदेव को नहीं देखा। वह कहाँ हो सकता है? न ही वह नूरपुर में श्री ब्रैंडन के साथ था, क्योंकि फ़ूरसुत किसी कारणवश कुछ घंटों के लिए उसे ढूंढने गया था। “लेकिन अब मुझे जाना ही होगा,” उसने मन ही मन कहा, “क्योंकि नए लोग आ गए हैं, और बुराई होगी; और अज़रेकल अपने दोस्तों में मुझे नहीं भूलेगा।” और सचमुच वह भूला भी नहीं। मेहराब की दीवार गिरा दी गई, कमरा कुएँ की ओर खुल गया, और अज़राएल उन बलवान युवकों को देखता हुआ बैठ सकता था जो पानी में तैरते, छपछपाते और गोता लगाते थे, और चौंतीसवीं रेजिमेंट के पुराने दिनों की तरह गीत, तालो और हँसी के साथ दिन बिताते थे। यह देखना विचित्र था कि डकैत की ऊर्जा फिर से कितनी प्रबल हो गई थी; और एक सप्ताह बीतने तक उसकी ताकत में कितना सुधार हो गया था। उसकी पुरानी ताकत का बहुत कुछ उसमें लौट आया था; और जब उसके मित्र को इस बात का यकीन हो गया, तो अब और देरी नहीं की जा सकती थी। गोर बक्स पहले ही छावनी में जासूस भेज चुका था, जिन्होंने दोनों रेजिमेंटों के सैनिकों को देखा था; लेकिन उनमें वह एकता नहीं दिखी जो सफलता के लिए आवश्यक थी। यह नहीं माना जा सकता कि ऐसी स्थिति पूर्व हवलदार और अज़राएल पांडे जैसे दो लोगों को रोक सकती थी। यह स्पष्ट था कि उन्हें स्वयं जाना होगा; एक रात वे नूरपुर के पास एक गाँव में गए, जहाँ से वे आगे बढ़कर कस्बे के बाहरी इलाके में स्थित एक और सुनसान मंदिर की ओर बढ़े, जो बंजर पहाड़ी पर बना था, जहाँ अचानक हमले की कोई संभावना नहीं थी। यह पुरानी इमारत एक छोटी गोल पहाड़ी की चोटी पर बनी थी, जो अब छोटी हरी घास से ढकी थी; और इसके बरामदे से झील, कस्बा, रोशनी से जगमगाता किला और शिविर दिखाई दे रहे थे। चाँद नहीं था, और आकाश बादलों से घिरा था; मंदिर में भी कोई रोशनी नहीं थी। वहाँ जमा हुए लोग अंधेरे में बैठे थे, और चारों ओर कुछ दूरी पर जासूस तैनात किए गए थे। बरामदे की सीढ़ियों के सामने huddled समूह में सन्नाटा छाया हुआ था; लेकिन नमी से भरी रात की हवा निचले हॉल के खंभों से होकर सरसरा रही थी, जबकि कस्बे के बाहरी इलाके से लकड़बग्घे और सियार की भयानक चीखें आ रही थीं, क्योंकि वे वहाँ फेंके गए कचरे और सड़े हुए मांस के लिए लड़ रहे थे। मुझे लगता है कि जो कुछ हुआ उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वहाँ

“षड्यंत्र।” 335 बताने के लिए कुछ नया नहीं था। जो कुछ कहना था, वह अजरील

पांडे ने अपने अधिक अनुभवी सहयोगी पर छोड़ दिया, जिसने समझाने का एक नया तरीका अपनाया और अपने श्रोताओं को कम से कम यह आश्वस्त कर दिया कि झांसी की सेना या बिठूर के नाना साहब की सेना में शामिल होने वाले सभी रैंकों को दुगना वेतन मिलता था; कि वह, एक हवलदार, एक सार्जेंट, अब पूर्ण कर्नल बन गया था, जिसके पास पाँच हज़ार रुपये प्रति वर्ष, एक हाथी और एक दल था; कि सेना और नाना साहब को जितने सैनिक मिल सकते थे, उतने की आवश्यकता थी; और यह सब सुनने वालों को अजरील पांडे के बेतुके कथनों की तुलना में कार्रवाई के लिए कहीं अधिक तर्कसंगत आधार प्रतीत हुआ। गोर बक्स उन्हें अवध में सेनाओं के बारे में, लखनऊ की रेजिडेंसी की घेराबंदी में किए जा रहे कार्यों के बारे में और यह भी बता सकता था कि तालुकदार उठ खड़े हुए थे और उनके पुराने राजा धर्म के प्रति भयभीत थे। देहली कैसे डटा रहा, और कैसे गुलाओर और इंडोर बारी-बारी से आ रहे थे; क्योंकि इन सभी मामलों में वह मौलवी जितना ही जानकार था, “आओ, तुममें से कुछ,” गोर बक्स ने आगे कहा, “फुटतेहपुर चलते हैं। हाजिरी के बाद तुम निकल सकते हो, और सुबह गोलीबारी से पहले वापस आ जाना, और मैं नवाब से नाच-गाना करने के लिए कहूंगा, जब हम इस अंधेरे गड्ढे की तुलना में अधिक आराम से इन मामलों पर चर्चा कर सकते हैं, और एक-दूसरे के चेहरे देख सकते हैं।” यह मामले का एक नया और सुखद पहलू था, जो अजरेकल की कठोर निंदा और धर्म तथा जाति-विहीनता की अपीलों से कहीं अधिक सुखद था। उनमें से किसी ने भी अपनी जाति नहीं खोई थी, किसी ने भी अस्थि-कण मिला आटा नहीं खाया था, किसी ने भी चिकनाई लगे कारतूस नहीं छुए थे; लेकिन दुगना वेतन और अपने भाइयों द्वारा हर जगह जीती जा रही विजय में हिस्सेदारी ऐसे प्रलोभन थे जिन्हें ठुकराना मुश्किल था, और इन्हें पुष्ट करने के लिए एक नाच-गाना भी होगा, जिसके लिए उनमें से कोई भी फुटतेहपुर से भी आगे जाने को तैयार था; और इस प्रकार प्रतिनिधियों ने सहर्ष निमंत्रण स्वीकार कर लिया। चौथे दिन उन्हें फतेहपुर जाना था और नवाब के बगीचे में आना था, जहाँ वे ठहरेंगे। इसी बीच, फरसुत श्री ब्रैंडन के घर के पास गया और बगीचे के पेड़ों से एक सींग वाले उल्लू की आवाज सुनाई दी, जिसे बुलदेव बखूबी जानता था। आवाज कभी धीमी, कभी तेज और लगातार बदलती जा रही थी। बुलदेव ने उस पुराने संकेत को कितनी अच्छी तरह पहचान लिया! उसका भाई जीवित था; कोई और उस तरह आवाज नहीं कर सकता था। इसलिए वह चुपचाप उठा और सेक्टा की

कुटिया से बाहर निकला, जहाँ वह सो रहा था, और बगीचे में जाकर उसी आवाज का जवाब दिया, लेकिन और भी तीखी आवाज में। जब पुलिस का पहरेदार पेड़ों पर पत्थर फेंक रहा था, बुलदेव ने अपने भाई को ढूंढ लिया, और आवाज बंद होने से पहरेदार को यकीन हो गया कि उसने रात के उन भयानक पक्षियों को भगा दिया है।
336 सीता, "बातचीत के लिए ज़्यादा समय नहीं था, क्योंकि फुर्सुत को लौटने की जल्दी थी; लेकिन उसने अपने भाई को बताया कि अज़राएल कहाँ है, और उसके साथ उसने कितना भयानक समय बिताया था। 'अब,' उसने आगे कहा, 'झांसी से तोपखाना हवलदार गोर बक्स और उसके पच्चीस आदमी आ गए हैं, और अज़राएल अब जवान हो गया है। वे आज रात मंदिर में यहाँ की रेजिमेंटों के सैनिकों से मिलने गए हैं; क्या हम पुराने स्थान पर जाकर सुनें?' बुलदेव को यह विचार बहुत अच्छा लगा, और अपना भाला लेने के लिए लौटकर, दोनों भाई एक साथ चल पड़े। बुलदेव रास्ते में अपने कारनामों और अपने भाई की व्यर्थ खोज की कहानी सुनाता रहा। लेकिन पुराने मंदिर में कोई नहीं था। दोनों ने उत्सुकता से इधर-उधर देखा और एक घंटे से अधिक समय तक सुना, लेकिन सब कुछ सन्नाटे में डूबा हुआ था। यह स्पष्ट था कि मिलने का कोई और स्थान था, और जब वे अलग हुए, तो फुर्सुत ने कहा, 'अब समय निकट है।' गोर बक्स तेवारेसे आलसी नहीं हैं, और हमारे महाराज फिर से जवान हो गए हैं। हवलदार ने उन पर एक मंत्र पढ़ा जिससे शैतान और सीता दूर हो गए, और वे अब पहले जितना गांजा नहीं पीते। यह सब बुरा है— और उन्हें ऊपर सावधान रहना चाहिए," और उन्होंने किले की ओर इशारा करते हुए कहा, "और जब तक खतरा टल न जाए, तब तक हिलना मत। मैं आगे की खबर लेकर आऊंगा।" अब मुझे जाना होगा, भाई," और वे गले मिले और अलग हो गए। सिरिल ब्रैंडन के लिए यह खबर शायद अप्रत्याशित नहीं थी; लेकिन जो किया जा चुका था उससे ज़्यादा क्या किया जा सकता था? किले में सब कुछ सुरक्षित और सतर्क था, और बाहर? खैर, शायद कुछ और दिन ही फैसला करेंगे; और ब्रिगेडियर ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे जितनी जानकारी जुटा सकें, जुटाएँ और सैनिकों के मिजाज पर कड़ी नज़र रखें। जब नए "कर्नल साहब" ने नवाब को नौश का प्रस्ताव दिया, तो दिल खान ने इस विचार पर बड़ी संतुष्टि व्यक्त की। बेशक सिपाहियों को नौश मिलना चाहिए; बल्कि, वह ब्रिगेडियर को पत्र लिखकर सिपाहियों को भी पार्टी में आने की अनुमति देने का अनुरोध करेगा, ताकि उसे और भी ज़्यादा बेखबर किया जा सके;

लेकिन इस पर गोर बक्स और मौलवी दोनों ने आपत्ति जताई। “उसका दिल तो आधा ही हमारे साथ है, मेरे दोस्त,” मौलवी ने कहा, “और वह—आप जानते हैं, मैं यह नहीं कह रहा कि वह करेगा—ब्रिगेडियर को बता सकता है कि आप और अज़रील पाण्डे यहाँ हैं, और हम पर श्वेत लोगों को थोप रहे हैं, और नूरपुर में उनकी संख्या लगभग साढ़े तीन सौ है, अगर अधिकारियों को भी गिना जाए तो। इसलिए सिपाहियों को आमंत्रित नहीं किया गया, और मामा जुमीला को गुप्त रूप से नूरपुर भेजा गया ताकि वे प्रसिद्ध पेरी बुक्श और कुछ अन्य नर्तकियों और गायकों से आकर प्रदर्शन करने के लिए बातचीत कर सकें। सीता से मिलने गई महिला की तरह भव्य पोशाक में नहीं, बल्कि मामा जुमीला नूरपुर के लिए रवाना हुईं।

“षड्यंत्र।” | 837 इस बार नूरपुर सादे, बल्कि साधारण कपड़ों में, और एक बंद पालकी में थीं, जो दिखावटी और विनम्रता से भरी थी और किसी का ध्यान आकर्षित नहीं कर रही थी; और इस तरह उन्हें पेरी के घर के आंगन में, एक बहुत ही भव्य, यहाँ तक कि सम्मानजनक दिखने वाले महल के बाहर बिठा दिया गया, हालाँकि शायद उसके अंदरूनी हिस्से के बारे में जितना कम कहा जाए उतना ही बेहतर है। जैसे ही मेमा जुमीला ने अपने भारी शरीर को बंद पालकी से बाहर निकाला, वह लेट गईं, और पेरी को तहखाने के बरामदे में यह पूछने आते देख कि कौन आया है, उन्होंने अपनी बाहें उनकी ओर फैला दीं, और लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों पर चढ़कर अपनी युवा सहेली को गले लगाया, और अपने विशेष प्रेमपूर्ण अंदाज में अपनी उंगलियाँ और यहाँ तक कि कोहनी के जोड़ भी चटका दिए। मुझे उस सौदे की शर्तों का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है जिसे पूरा किया जाना था; लेकिन मुद्दा यह था कि नवाब से मिलने वाले एक बड़े उपहार और दर्शकों से मिलने वाली राशि के बदले में पेरी बुक्श को अगले गुरुवार को सुबह जल्दी आना था और जब तक चाहे महल में ठहरना था। मीमा जुमीला ने अपना उद्देश्य लगभग पूरा कर लिया था, इसलिए वह नूरपुर के छोटे-मोटे सितारों की ओर चल पड़ीं। पेरी बुक्श नूरपुर और अन्य जगहों पर अपनी कई सहेलियों का आदर्श थीं। वह नर्तकियों और गायिकाओं के एक "सभ्य" परिवार से थीं, जो प्रांत का सबसे पुराना और सबसे प्रसिद्ध परिवार था। सदियों पहले, उनके पूर्वजों ने मालवा और खानदेश के राजाओं के सामने गाया और नृत्य किया था, जिन्होंने परिवार को विशेषाधिकार दिए थे और उन्हें भूमि दान में दी थी; और अकबर और औरंगजेब के सामने भी, जिन्होंने इन अनुदानों की पुष्टि की थी। पेरी को अक्सर लंबी यात्राएं करनी

पड़ती थीं और संतों की समाधियों या गाँव के मंदिरों में गाना और नृत्य करना पड़ता था, ताकि वंशानुगत दायित्वों को पूरा किया जा सके और अपना हक प्राप्त किया जा सके। और अगर वह खुद नहीं जा पातीं, तो वह अपने कई अधीनस्थों में से किसी एक को भेज देतीं, जिन्हें गोद लिया गया था या खरीदा गया था और जीवन में उनके पेशे के लिए शिक्षित किया गया था। पेरी परिवार को इसलिए "अत्यंत सम्मानित" माना जाता था, और वह वंशानुगत अधिकार से "तुवैफ" या नर्तकियों के जिला संघ की प्रमुख थीं, और इस प्रकार उनका काफी प्रभाव और अधिकार था। बेशक, उन्होंने भी, बाकी सभी की तरह, 1914 के सुम्बुत तूफान की बुरी खबर सुनी थी, लेकिन इसका उन पर कोई असर नहीं हुआ था। अगर उनकी राजनीतिक विचारधारा पर विचार किया जाए, तो मुझे लगता है कि वह अंग्रेजों के पक्ष में होतीं, जिनके बारे में उन्होंने कहा था कि वे "अच्छे लोग थे और उन्होंने अक्सर उनकी मदद की।" और, अधिकांश अन्य लोगों की तरह, उनके मन में श्री ब्रैंडन के लिए विशेष श्रद्धा थी, जिन्हें वह एक लोकप्रिय नायक मानती थीं। मैं यह भी नहीं कहूंगा कि उन्होंने कभी-कभी उन्हें प्रभावित करने की कोशिश नहीं की; लेकिन उन्होंने उन्हें, हालांकि हमेशा सुलभ और विनम्र, बर्फ की तरह ठंडा पाया, और शायद इसी वजह से उनका सम्मान और भी बढ़ गया। जब उन्होंने सुनार की पोती से शादी की तो वह इस कृत्य से मोहित हो गई; 338 स्लेटा, और साथ ही अपनी पत्नी के प्रति दिखाई गई दयालुता से भी। “वह एक अच्छा आदमी है,” उसने अपने लोगों से कहा, “और अगर सभी फेरिंगी उसके जैसे होते, तो हमें इस बुरी हवा के बारे में और कुछ नहीं सुनना पड़ता।” उसके मन में यही विचार था कि नवाब ने उसे अपने लिए नृत्य करने के लिए न बुलाया होता तो बेहतर होता; पर वह मना भी नहीं कर सकती थी, क्योंकि उसके कई अधिकार और जमीनें नवाब के गांवों में थीं; और अगर, जैसा कि कहा जा रहा था, वह देश का स्वामी बन जाता, तो वह उसे अवज्ञा के लिए दंडित करता। पेरी लगभग बीस वर्ष की एक सुंदर, सुगठित महिला थी; शायद रंग में बहुत गोरी नहीं, न ही बहुत सांवली, न ही बहुत लंबी, लेकिन उसका सुडौल, लचीला शरीर था, जिसका वह अपने नृत्यों में बखूबी उपयोग करना जानती थी। इसके अलावा, उसका चेहरा बहुत सुंदर था, सुडौल होंठ और सुंदर आंखें थीं, जिनका उपयोग—या दुरुपयोग—वह भली-भांति जानती थी। उसे फारसी और हिंदी का भी कुछ ज्ञान था, हिंदी में वह अपना हिसाब रखती थी; और वास्तव में, वह पैसे की बहुत शौकीन थी। इसलिए, जब पेरी उचित समय पर नवाब के

दरबार में पहुंची, जिसके कई झूमर विशेष रूप से रोशन किए गए थे, तो एक सामान्य फुसफुसाहट हुई। भव्य कमरे के दोनों ओर बैठे मेहमानों के बीच तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी, जिससे बीच का हिस्सा प्रस्तुति के लिए खाली रहा। उन्होंने एक चुस्त-दुरुस्त पोशाक पहनी थी, जिसमें लंबी आस्तीनें और एक बहुत ही घेरदार स्कर्ट थी, जो कमर पर बहुत अधिक गद्दीदार थी, जो हल्के बैंगनी रंग के बेहतरीन पारदर्शी मलमल से बनी थी, और कमर तक चौड़ी सुनहरी ब्रोकेड लेस की पंक्तियों से सजी थी, साथ ही उनके कंधों और छाती पर भी उसी तरह की लेस लगी थी। यह पोशाक उनकी कमर पर सुनहरे धब्बों वाले चमकीले हरे मलमल के स्कार्फ से थोड़ी कसी हुई थी, जिसके सुनहरे ब्रोकेड के सिरे उनके बाईं ओर लटक रहे थे, जिससे स्कर्ट थोड़ी ऊपर उठकर उनके सबसे कीमती सुनहरे कपड़े के पतलून को दिखा रही थी। एक सिरा उनकी कमरबंद में फंसा हुआ था, एक शानदार बनारस का स्कार्फ, पतले अंबर रंग के मलमल के जालीदार कपड़े का, सुनहरे फूलों से भरपूर, उसी तरह के बॉर्डर और सिरों वाला, उनके बाएं हाथ और सिर से होकर उनके दाहिने कंधे पर गिर रहा था। उनके सिर और बाहों पर लगे सभी सुनहरे आभूषण सुंदर और भव्य थे। अत्यधिक आभूषणों से सजी उसकी सोने की पायलें, जिनकी छोटी घंटियाँ चलते समय झनझनाती थीं, उनके बैंड पर बड़े-बड़े हीरों की एक पंक्ति थी, जो उसके चलने पर चमकती थीं और उसके छोटे, सुंदर पैरों को एक आकर्षक रूप प्रदान करती थीं। वह लड़की, अपने दो साथियों के साथ, जो लगभग उसी की तरह महंगे वस्त्र पहने हुए थे, और अपने संगीतकारों के दल के साथ, धीरे-धीरे हॉल में आगे बढ़ी और नवाब को गहरा प्रणाम किया, और उनके दोनों ओर बैठे मौलवी और 'कर्नल साहब' को हल्के से अभिवादन करते हुए अपने हाथ से एक सामान्य इशारा किया।

“षड्यंत्र।” © 839 आस-पास बैठे सभी लोगों के लिए, समूह बैठ गया, और उपस्थित प्रमुख और सबसे सुंदर समूहों में से एक बन गया। कई अन्य दर्शक भी थे; नवाब के अपने सैन्य बल और घराने के अधिकारी; और झांसी और नूरपुर से आए सिपाही, सभी अब एक साथ मिल गए थे, पंक्तियों में अपनी एड़ियों पर, लगभग घुटने टेकने की मुद्रा में, अत्यंत सम्मानपूर्वक बैठे थे; उनके चेहरे उनके चमकीले पगड़ियों पर रंगीन दुपट्टों से ढके हुए थे, और उनका सामान्य भाव गंभीर और भावहीन था। नृत्य में कुछ खास नहीं था, क्योंकि भारतीय महिला नर्तकियाँ केवल अपने सरल संगीत पर छोटे-छोटे झनझनाते कदमों से ही नृत्य करती हैं; लेकिन अपने लचीले शरीर

और अपने छोटे सुंदर सिर और गर्दन के लचीले झुकाव में, पेरी, जो हमेशा उल्लेखनीय रही है, अब पहले से भी आगे निकल गई। वह शरारत की भावना से, विशेष रूप से मौलवी को संबोधित करती हुई प्रतीत हुई; जो अपनी सीट पर पलकें झपकाते हुए, अपनी लंबी पतली दाढ़ी सहलाते हुए और अपनी माला जपते हुए बैठे थे। उसका गोल, गोल सिर और पाखंडी भाव, जो लड़की के आकर्षण को चुनौती देता प्रतीत होता था, ने उसे उन पर खुलकर मोहित कर दिया। यदि मौलवी नाचने से अप्रभावित होता, या खुद को संयमित रख पाता, तो पेरी के गाने शुरू करते ही वह बिल्कुल विपरीत हो गया, क्योंकि उसकी आवाज़ सचमुच बहुत मधुर और सुरीली थी, और उसका नृत्य परिपूर्ण था। वह एक गीत के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थी; और नवाब ने उसे अपने पास बुलाकर फुसफुसाते हुए उसे वह गीत गाने को कहा। "उसे गाकर सुनाओ," उसने मौलवी की ओर इशारा करते हुए कहा, "और उसे मत छोड़ो।" मुझे विश्वास है कि मेरे कई पाठकों ने "सूबू दुमेकद, शुभ गूझुश्त" और उसके मुखड़े "सूनो, ज़ेरा-ए-गूफ़्तोगू" को सुना होगा और वे मूल गीत के इस संस्करण का अनुसरण करेंगे, हालाँकि इसकी शक्ति और भावना को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। सुबह हो गई है, रात बीत गई है, नींद से जागा हूँ, आखिरकार उठ खड़ा हुआ हूँ। ओ, प्यारी युवती! क्या तुम एक सपना थे? तुम्हारी आँखें इतनी निर्मल और मोहक चमक से भरी थीं! सुनो, मुझे जो कुछ कहना है, सुनो! पिछली रात, नदी के किनारे, हालाँकि मैं घूँट-घूँट कर लाल शराब पी रहा था, एक मोहिनी मेरे पास शरमाती हुई बैठी थी, मशाल की रोशनी हमारे पास से तेज़ी से गुज़र रही थी, मैंने उसके चारों ओर अपना हाथ रखा, प्रेम के डर के अलावा किसी और बुराई से नहीं डर रहा था; फिर भी, जब मैं जागा, तो मैं बिल्कुल अकेला था! मेरी परी और उसका प्यार, दोनों चले गए! आह, हाँ! शायद यह एक सपना था!

340 सीता. II. नहीं! सपना नहीं! मैं उसे अभी भी देख रहा हूँ! मैंने शराब पी, मेरे होंठ गीले हैं; तीव्र आनंद अभी भी मुझमें सिहर रहा है, वह जुनून जिसे सारी बुद्धि मार देती है! दिल से दिल और होंठ से होंठ मिलाकर, मैं अपनी प्रेमिका से अमृत पीता हूँ, ओ! ऐसा आनंद जिसे मैं बयान नहीं कर सकता! और न ही अब उसके कष्ट में डूब सकता हूँ। हाय! यह मीठा था, और फिर भी एक सपना! III. मैं बगीचे की छाया में आराम कर रहा था, मेरे चारों ओर फव्वारे धीरे-धीरे बह रहे थे; उनके गिरते, गुनगुनाते पानी की आवाज़ ने मुझे गहरी नींद में सुला दिया। लेकिन अब, फिर से, वह दृश्य पास

है! कांपते हुए डर से नींद भगा देता है! मैं उन गुलाबी होंठों पर ठहर जाता हूँ, एक बार फिर, मेरी आत्मा उनका अमृत पीती है! दूर! यह तो बस एक व्यर्थ सपना था! चाँद फूट पड़ा, रात बीत गई, इत्यादि। मेरे कुछ पाठक भी शायद गायिका के भावपूर्ण अभिनय को समझ पाएँगे, जो शब्दों की माँग के अनुसार था; और भला कौन कुशल पेरी बुक्श की भाव-भंगिमाओं का मुकाबला कर सकता था? उनके शरीर का सुंदर हिलना-डुलना, उनकी खूबसूरत बाहों की कभी लुभाने वाली तो कभी आकर्षित करने वाली हरकतें, उनकी चमकती आँखों से निकलती निगाहें और उनके झनझनाते हाथों का तीव्र उतार-चढ़ाव, मौलवी के लिए इतना मोहक और जादुई था कि उन्होंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा था; और उनके मन में दबी हुई हैरानी और प्रशंसा की भावनाएँ, जिन्हें उनके पवित्र कर्तव्य के कारण वे ज़ोर से व्यक्त नहीं कर सकते थे, कमरे में मौजूद सभी मेहमानों और सिपाहियों की ज़ोरदार आवाज़ों के साथ फूट पड़ीं, जिन्हें वे मुश्किल से रोक पाए। हालाँकि, पेरी ने मुस्कुराते हुए और हाथ हिलाते हुए इस बात को स्वीकार किया, फिर भी लड़की संतुष्ट नहीं हुई। अचानक वह मौलवी उलोन के पास बैठ गई, लेकिन उसके संगीतकार भी उसके पीछे-पीछे आ गए: और अपनी बाहों को इधर-उधर घुमाते हुए, जबकि उसके गहनों से सजे हाथ लगभग उसके चेहरे को छू रहे थे, उसने गाया— “जैसे दिल से दिल, और होंठ से होंठ, मैं अपने प्रेमी से, अमृत पीती हूँ, ओ! ऐसा आनंद जिसे मैं बयान करने की हिम्मत नहीं करती!” ये शब्द बार-बार दोहराए गए, जब तक कि मैकुलवी

“षड्यंत्र” 341 अपनी कुर्सी पर बेचैनी से हिल रहा था, इधर-उधर देख रहा था, और उस मोहक युवती के प्रति प्रशंसा और घृणा से भरे स्वर निकाल रहा था। “या अल्लाह! दूर हो जा, निर्लज्ज! मैं कहाँ हूँ? अद्भुत—मनमोहक—यातना देने वाली कुतिया! वाह!—अल्लाह मेरी रक्षा करो! डायन, जादूगरनी, दूर हो जा! नहीं, रुक जा! ला हौल इल्ला! पुन्ना, पुन्ना! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो! या कुबीर, या कुरीम ओ!” वह हर उद्गार के साथ बढ़ते जोश से चिल्ला रहा था। “मौलवी साहब, बेहतर होगा कि आप उसे दो सोने के मोहर दे दें और उसे जाने दें,” नवाब ने जोर से हंसते हुए कहा, और वास्तव में अधिकांश लोग भी हंस रहे थे। “तौबा, तौबा! दूर हो जा, डायन!” पुजारी चिल्लाया, अपनी जेब में सिक्के ढूंढते हुए और कई सिक्के निकालते हुए। “तुम्हारा जादू मुझ पर हो गया है! दूर हो जाओ!” और उसने सोने के सिक्के उसके हाथ में रख दिए। “मैं राजाओं के राजा के सिंहासन के सामने नाचना चाहूँगी,”

लड़की ने उठते हुए विनम्रता से हाथ जोड़ते हुए कहा। “जब मैं दिल्ली में उनकी विजय का जश्न देखने आऊँगी, तो आप मुझे नहीं भूलेंगे, मौलवी साहब।” “नहीं! मैं नहीं भूलूँगा!” उसने उत्तर दिया। “भगवान शुक्र, शुक्र! शुक्र, शुक्र! हज़ार!” उसने नवाब से कहा और एक लंबी साँस लेते हुए बोला; “उसे भगाने के लिए कुछ भी।” और वह अपनी सीट पर फिर से बैठ गया और आँखें बंद करके, बढ़ती तेज़ी और संत भाव से अपनी माला जपने लगा। “वह फिर आएगी, मौलवी साहब। परी आमतौर पर एक ही मुलाकात से संतुष्ट हो जाती है; वह आपके कुछ और सोने के सिक्के ले लेगी,” नवाब ने फुसफुसाते हुए कहा। “नहीं! भगवान न करे!” पुजारी ने श्रद्धापूर्वक उत्तर दिया। “उसे दूर रखो! उसे दूर रखो, पैगंबर के नाम पर!” “उसने मुझ पर जादू कर दिया है। हे माइकल! हे जिब्रसेल!” वह स्वर्गदूतों से प्रार्थना करते हुए चिल्लाया; “मुझे उसके जादू और टोने से बचाओ। आमीन! आमीन! तौबा! तौबा! ज़रा सोचो—कि मैं, ज़िया ओल्ला—एक चुड़ैल की शक्ति को महसूस करूँ!” लेकिन पेरी वापस नहीं लौटी। वह हॉल में इधर-उधर भटकती रही, जहाँ भी उसे कोई उपयुक्त समूह मिलता, बैठ जाती; और सिपाही, पूरी तरह से मोहित होकर, उदारतापूर्वक दान देते रहे। मुझे लगता है कि उस रात लड़की ने भरपूर फसल काटी। लेकिन उसने इससे भी अधिक किया था। पहले तो, कुछ लापरवाही से कहे गए शब्द उसके कानों तक पहुँचे, जिससे वह अधिक ध्यान से सुनने लगी, क्योंकि उसने पूर्व हवलदार को एक समूह से दूसरे समूह में जाकर आदेश देते देखा; और अपना काम खत्म होने के बाद बार-बार अपनी जगह बदलते हुए, उसने पुरुषों को धीमी आवाज़ में यह बात करते सुना कि कल शाम को क्या किया जाना है।

342 सीता, बुधवार को किसी के बुलावे का इंतज़ार करो, जब नूरपुर की सेना उठ खड़ी हो। और जब उसे विदा कर दिया गया और वह नवाब के महल से निकल रही थी, तो मीमा जुमीक्ला उत्तेजित भाव से उससे मिली और उसे एक तरफ ले गई। “कल सब हो जाएगा,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “और मैं एक हज़ार आदमियों के साथ हाथी पर सवार होकर खुद लड़कियों को ले आऊंगी।” “कौन सी लड़कियां?” पेरी ने पूछा। “मिस मोस्टिन और सुनार की लड़की,” उसने जवाब दिया; “दोनों की ज़रूरत है।” लेकिन किसी को मत बताना, ‘अपनी जान की कसम’।” अध्याय 132. प्रकोप से पहले एक चेतावनी। अगली सुबह ग्रेस मोस्टिन और सीता अष्टकोणीय कमरे में बैठी थीं, क्योंकि वह हमेशा शांत और घुसपैठ से सुरक्षित रहता था। सिरिल नहीं

चाहता था कि उसकी पत्नी नूरपुर की महिलाओं से डरे, अब जब वह किले में उनके बीच आम जगह पर थी; और एक बार सीता पुराने पठान महल में, जिसे सभी के लिए साझा कमरा कहा जाता था, महिलाओं के ड्राइंग-रूम में श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के साथ बैठी थीं, तभी कई महिलाएं अंदर आईं और सीता को लगा कि वे उसे घूर रही हैं, उसके चारों ओर घूम रही हैं और संदेह भरी नजरों से उसे सिर से पैर तक देख रही हैं। श्रीमती स्मिथ, श्रीमती होमो और उनके समूह की एक-दो अन्य महिलाएं भी उनमें से एक थीं; और उसके बाद, जैसा कि श्रीमती स्मिथ ने कहा, "उन्होंने उसे अच्छी तरह से देख लिया," और फिर वे बेचारी सेक्टा के रूप-रंग पर चर्चा करने चले गए, जो निश्चित रूप से प्रशंसात्मक नहीं थी। श्रीमती स्मिथ ने बाद में गुस्से से हवा सूंघते हुए कहा, "मैं किसी 'नीग्रो' औरत के साथ कमरे में नहीं बैठूंगी, बिलकुल नहीं; और आप चाहे जो कहें कि वह सुंदर और गोरी है, वगैरह। लेकिन फिर भी वह एक 'नीग्रो' ही है, मेरे प्यारे बच्चों, उन भयानक काले लोगों में से एक जिनके बीच हम रहते हैं, जो अगर मौका मिले तो हमें मार डालेंगे, जैसे उन्होंने देहली और झांसी में बेचारे लोगों को मार डाला था। मैं उसे यहाँ आकर बैठने नहीं दूंगी जैसे वह हममें से एक हो। अगर उसने ऐसा करने की कोशिश की, तो मैं स्मिथ से ब्रिगेडियर से शिकायत करवा दूंगी, मैं आपको बता सकती हूँ। श्रीमती मोस्टिन चाहें तो अपने कमरे में काले लोगों को रख सकती हैं, यह उनके पति का मामला है: लेकिन उनके द्वारा किसी को यहाँ लाने का विचार! ज़रा सोचिए, मेरे प्यारे बच्चों!" “मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ, प्यारी मारिया,” श्रीमती होम ने कहा, “और अगर ऐसा हुआ तो मैं लूसी को ग्रेस मोस्टिन के पास पाठ पढ़ने के लिए नहीं जाने दूँगी।”

प्रकोप से पहले एक चेतावनी। 843वीं अश्वेत लड़की वहाँ होगी। ज़रा सोचो, मेरी प्यारी बच्ची ऐसे प्रदूषण के संपर्क में आ जाए! मैंने सुना है कि ये अश्वेत महिलाएँ आपस में बहुत बुरी बातें करती हैं। मेरी आया मुझे ऐसी कहानियाँ सुनाती हैं। ऐसी बातें, आप जानते हैं, जिनका ज़िक्र करने में मुझे शर्म आती है, यहाँ तक कि आप लोगों से भी, मेरे प्यारे बच्चों; और ग्रेस मोस्टिन उस लड़की को कैसे पढ़ा सकती है, यह मेरी समझ से परे है। निश्चित रूप से, वह पढ़ाना पसंद करती है, बिल्कुल एक गवर्नेस की तरह, आप जानते हैं; कम से कम, लूसी तो यही कहती है। "और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह एक गवर्नेस ही थी," श्रीमती स्मिथ ने उत्साह से कहा, मानो उनके मन में कोई नई बात आ गई हो। "अब ज़रा सोचो, जिस तरह से वह गाती

और बजाती है, वह बिल्कुल पेशेवर है, और उसे इतालवी और जर्मन भाषा का बहुत ज्ञान है। हाँ, यकीन मानिए, उसे पढ़ाना सिखाया गया है। कोई नहीं जानता, मेरे प्यारे बच्चों, कि शादी से पहले लड़कियाँ क्या-क्या रही होती हैं। हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम किससे मिलते हैं, सचमुच। अरे, रेजिमेंट के लड़के जिस बूढ़ी औरत को 'मदर प्रैट' कहते हैं, वो तो बस एक धर्म प्रचारक थी, कभी अच्छे लोगों के बीच नहीं रही; और मिसेज़ मोस्टिन, भले ही वो जज की पत्नी हैं, उन्हें अपने पति की उस 'गवर्नेस' बहन के बारे में इतना घमंड करने की ज़रूरत नहीं है। छी! मुझे हैरानी होती है कि आपमें से कोई भी इन घमंडी और बदतमीज़ औरतों को कैसे बर्दाश्त कर पाता है।
उपरोक्त बातों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि श्रीमती मोस्टिन, ग्रेस और बेचारी स्केता का नूरपुर की इन महिलाओं से कोई खास संबंध नहीं था, और ग्रेस को टावर के अष्टकोणीय कमरे में शांत सुबहें बिताना पसंद था, जहाँ सिरिल शायद ही कभी उन्हें परेशान करने आता था। हालाँकि वे किले में रहने लगे थे, फिर भी वह और श्री नोबल नियमित रूप से कुचेरी जाते थे, और हालाँकि स्थानीय मामलों में काम अपेक्षाकृत कम था, फिर भी ज़िला अधिकारियों की रिपोर्टों पर पूरा ध्यान देना और तुरंत जवाब देना ज़रूरी था। बाबा साहब राजस्व और सांख्यिकी रिपोर्टों में व्यस्त थे, और संक्षेप में, जहाँ तक सामान्य कामकाज का सवाल है, सभी के लिए पर्याप्त काम था। अब मानसून में विराम लग गया था, जो अब तक असाधारण रूप से भारी रहा था। मौसम इंग्लैंड की गर्मियों जैसा था, ताज़ा, कोमल और गर्म, हल्की बादल दक्षिण-पश्चिम की नियमित हवा के साथ उड़ रहे थे, और उनकी परछाइयाँ झील और सुंदर परिदृश्य पर एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं, जो दोस्तों के सामने वाली खिड़की से देखने पर फैला हुआ था, कभी-कभी श्रीमती मोस्टिन भी उनके साथ शामिल हो जाती थीं, लेकिन ज़्यादातर वे अकेले पढ़ते या काम करते थे, या ग्रेस हमेशा की तरह चित्र बनाती रहती थी। झील, जो कभी पानी से भरी होती और तेज़ धूप में चमकती, या जब कोई बादल उस पर से गुज़रता तो उसका रंग बदल जाता, जैसा कि सेक्टा ने कहा था, "ग्रेस की प्यारी नीली आँखों की तरह," उनके लिए हमेशा नई लगती थी; जबकि दूर का नज़ारा तो और भी ज़्यादा परिवर्तनशील था।
344 सीता। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों के कोमल बैंगनी रंग में। पुराने किले, उसकी मीनारों और दीवारों, प्राचीरों से दिखने वाले नज़ारों, विचित्र पुरानी इमारतों और पठान गोथिक वास्तुकला के अनेक सुंदर हिस्सों से भरी हुई ग्रेस के पास पहले से ही रेखाचित्रों का

एक छोटा सा संग्रह था: और सिरिल, जब अपने काम से लौटता था, तो हमेशा अपनी आदत के अनुसार जोश और कुशलता से आकृतियों के समूह बनाने के लिए तैयार रहता था। तो, नवाब के नौच के बाद की सुबह, जैसा कि मैंने पहले ही दर्ज किया है, सीता और ग्रेस साथ बैठी थीं, ग्रेस चित्र बना रही थी और सीता अपना सुबह का पाठ पढ़ रही थी, तभी बूढ़े भीमनी दरवाजे पर आए और बोले, "बाहर आइए, महिला; बुलदेव और लखमन सिंह आपको बुला रहे हैं।" एक पल के लिए सीता का धैर्य भंग हो गया, क्योंकि उसे लगा कि उसके पति को कुछ हो गया होगा: लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला और उनके पास चली गई। “यहाँ एक महिला है, कस्बे की नर्तकी, पेरी बुक्श; मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ,” बुलदेव ने कहा, “वह नीचे है,” और उसने द्वार की ओर इशारा करते हुए कहा, “और वह आपसे तुरंत मिलना चाहती है। मैं उसे ऊपर लाना चाहता था, लेकिन अंग्रेज़ सैनिक उसे अंदर नहीं जाने दे रहे हैं, और मैं उनसे बात भी नहीं कर सकता।” “वह क्या चाहती है?” श्वेता ने पूछा, “मैं यहाँ किसी नर्तकी को नहीं जानता; वह क्यों आई है?” “मुझे लगता है कि यह नवाब के बारे में है,” लखमन सिंह ने कहा; “उसे पता नहीं था कि आप यहाँ हैं, और वह आपको ढूँढ़ते हुए घर आई और कहा कि वह फतेहपुर से आई है। जब मैंने उसे बताया कि आप और महिलाएँ कुछ दिनों से यहाँ हैं, तो वह बहुत खुश हुई, इसलिए मैं उसे ऊपर ले आया। बेहतर होगा कि आप उससे मिलें।” सीता ने ग्रेस को पुकारते हुए कहा कि वह तुरंत वापस आ रही है और ढलान से नीचे द्वार की ओर चली गई। वहाँ उसने पेरी को अकेले, पहरेदारों के हगली सैनिकों के बीच बेफिक्र होकर बैठे हुए पाया। पेरी शिविर की अंग्रेज़ी के कुछ शब्द सीख चुकी थी और उनसे बात करने की कोशिश कर रही थी, और अपने प्रयासों पर दिल खोलकर हंस रही थी। लेकिन “सुप्रभात, कर्नल,” “आप कैसी हैं,” “बहुत अच्छी,” और इस तरह के शब्द उसके उद्देश्य को पूरा करने में सहायक नहीं थे। जैसे ही सीता मेहराब में मुड़ी, पेरी अपनी सीट से हल्के से उछलकर ज़मीन पर बैठ गई और अपने पैरों को छूकर अपने हाथों को अपने माथे, आँखों और हृदय पर रख लिया। “आप क्या चाहती हैं?” सीता ने झिझकते हुए पूछा, क्योंकि वह जानती थी कि वह लड़की नवाब की दूसरी दूत है। पेरी ने आदरपूर्वक और विनम्रता से कहा, “मैं यहाँ बात नहीं कर सकती; हमें अकेले में बात करनी होगी; आपको एक महिला से डरने की ज़रूरत नहीं है, और मैं आपको सब कुछ बता दूँगी।” “मैं डरी हुई नहीं हूँ,” सीता ने उत्तर दिया— लड़की की गंभीर, उदास नज़र ने तुरंत संदेह दूर कर

दिया— 'मेरे साथ चलो'
प्रकोप से पहले एक चेतावनी। 845 मकान; वहाँ एक अंग्रेज़ महिला है, लेकिन वह आपकी बात नहीं समझ पाएगी। "मिस मोस्टिन?" "हाँ," सीता ने आगे कहा, "वह मेरी दोस्त है। कृपया उसे मेरे साथ ऊपर जाने दीजिए," उसने गार्ड के कॉर्पोरल से अंग्रेज़ी में कहा, जिसने और उसके आदमियों ने उसे सलाम किया था; "उसे मुझसे कुछ काम है।" "ज़रूर, माँ," कॉर्पोरल ने उत्तर दिया। "हमें आपका ध्यान रखने का आदेश है। हे भगवान, लड़कों," लड़कियों के आगे बढ़ते हुए उसने कहा, "वह आखिरी वाली तो कमाल की है, है ना? जिस तरह से उसने अपनी सीट से टांगें और पैर हिलाए, मैंने पहले कभी नहीं देखे। अरे, वह तो किसी सनकी लड़की की तरह तहखाने में कूद गई। शायद वह कोई खिलाड़ी है; और उसकी अंग्रेज़ी भी कितनी अजीब है!" "अरे! कॉर्पोरल," एक गंभीर बूढ़े सैनिक ने कहा, "उन कमीने पांडियों में कुछ अच्छी लड़कियाँ ज़रूर हैं; और मैंने ऐसी खूबसूरत लड़की पहले कभी नहीं देखी। देखो वो कैसे चलती है; कितनी शानदार चाल है। और श्रीमती ब्रैंडन की बात करें तो, अगर उन्होंने अंग्रेज़ कपड़े पहने होते, तो भगवान उनके प्यारे चेहरे पर कृपा करें, वो इस इलाके की सबसे खूबसूरत लड़की होतीं; और वो कितनी मीठी बातें करती हैं, बिल्कुल किसी अंग्रेज़ इंडी की तरह। जब सीता अष्टकोणीय टावर तक पहुँची तो उसने अपनी साथी को पीछे आने को कहा, और ग्रेस ने केंद्र में आते ही ऊपर देखा और पेरी को देखकर खड़ी हो गई। "वो कौन है?" उसने पूछा। "उसे कुछ बताना है," सीता ने कहा, "और वो चिंतित लग रही है। तुम्हें उससे कोई आपत्ति नहीं है: क्या वो नाचने वाली लड़की है?" "बिल्कुल नहीं," ग्रेस ने कहा। "हाँ; मैं उसका एक स्केच बनाना चाहूँगी, वो सचमुच बहुत सुंदर है; लेकिन तुम्हारे पति उसका बेहतर चित्रण कर सकते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि तुमसे बात करने के बाद वो मेरे साथ बैठेगी?" "वाईटी उससे पूछेगी, ग्रेस। हाँ," वह कहती है, "तुम उसकी तस्वीर बना सकती हो; लेकिन मुझे लगता है कि वह रोने ही वाली है," और सीता ने लड़की को खुलकर बोलने के लिए प्रेरित किया। पेरी का पहला जवाब आँसुओं का सैलाब था, एक भावुक सिसकते हुए, और जब सीता उसे दिलासा दे रही थी, "मुझे मत छुओ; मुझे मत छुओ," वह सीता के हाथों को हटाते हुए रोई; "मैं नीच और अपवित्र हूँ। मैं तुम दोनों के पास आने, तुम्हारे घर में रहने या तुम्हारी उपस्थिति में रहने के योग्य नहीं हूँ, क्योंकि तुम जानती हो कि मैं क्या हूँ। पेरी बुश्कश तुवैफ को सब जानते हैं। मेरी गुस्ताखी के लिए मुझे क्षमा

करो: लेकिन खतरा था, खतरा है, और मैं तुम्हें, सीता बाय, और तुम्हारी सहेली को चेतावनी देने आई हूँ। तुम दोनों खतरे में हो।" "वह क्या कह रही है, सीता?" ग्रेस ने पूछा; "वह देखती है... रुको, मैं तुम्हें अभी बताती हूँ; उसने मुझे अभी तक नहीं बताया है," सीता ने जवाब दिया; "वह अजीब तरह से परेशान है।" हाँ, वही कठोर नर्तक और गायक, मैडम का उपहास करने वाला
346 सीता। संत मौलवी, जो अनेक बुरे रास्तों पर चल पड़ी थी, फिर भी कोमल हृदय की स्त्री थी। उसने सीता के चरणों में गिरकर, अपने घुटनों को थामते हुए सिसकते हुए कहा, "वे तुम्हें, सीता बाई, और तुम्हें, मिस्सी मोस्टिन, फतेहपुर ले जाकर अपना गुलाम बना लेते। हे भगवान! भगवान का शुक्र है! कि तुम सुरक्षित हो और उनकी शक्ति से परे हो। फिर भी मामा जुमीला और हज़ारों आदमी आज रात तुम्हें लेने आएंगे। वह सोचती है कि तुम नीचे अपने घरों में हो; लेकिन हे भगवान! मैं सभी संतों को धन्यवाद अर्पित करती हूँ कि तुम यहाँ हो और तुमने मुझे देखने और मेरी चेतावनी सुनने से इनकार नहीं किया है।" फिर उस लड़की ने सीता को उस रात होने वाले विद्रोह और झांसी के "कर्नल" की योजनाओं के बारे में बताया, कि या तो वह सिपाहियों को वहाँ ले जाएगा, या नूरपुर को घेरकर नवाब की तोपों से उस पर कब्ज़ा कर लेगा। सीता ने चिंता से ग्रेस से कहा, "काश मेरे पति यहाँ होते। उन्हें पता होना चाहिए कि यह लड़की क्या कह रही है। देखो, भले ही वह सिर्फ एक नर्तकी है, लेकिन वह वफादार और सच्ची हो सकती है। मेरे प्रिय, हमारे साथ बुरा होने की आशंका थी, लेकिन हम सुरक्षित हैं; भगवान का शुक्र है! ओह! भगवान का शुक्र है! मुझे बुलदेव को सिरिल के पास भेजना होगा। क्या तुम मेरे स्वामी से बात करने के लिए रुक सकती हो?" उसने सिरिल को एक पत्र लिखते हुए पेरी से पूछा। दरवाजे से लौटते हुए उसने आगे कहा, "तुम उससे डरती नहीं हो?" लड़की ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "डरती हूँ?" "कोई भी, यहाँ तक कि एक बच्चा भी, मिस्टर ब्रैंडन से नहीं डरता। हम अपने दीपक जलाते समय उनका नाम दोहराते हैं, और मुझे उनके बारे में कई लोकगीत याद हैं, और तुम्हारे बारे में भी, सीता बाय, जो मैं तुम्हें सुना सकती हूँ; और मैं मांडू के बादशाह बाज़ बहादुर के उन प्रेम गीतों को जानता हूँ जो उन्होंने उस लड़की के लिए लिखे थे जिसने उनके लिए अपनी जान दे दी, हालाँकि वह महज़ एक नर्तकी थी। वह मेरी पूर्वज थीं, और उन्होंने यह साबित किया, जैसा कि मैं तुम्हें साबित करूँगा, कि हम भी प्रेम कर सकते हैं और वफ़ादार रह सकते हैं। अब, जब तक

तुम्हारा पति इंतज़ार कर रहा है, मैं इंतज़ार करूँगा, और अगर वह चाहे तो मेरी तस्वीर बनवा सकती है। मुझे नहीं पता कि वह रेखाचित्र कितना सफल रहा, क्योंकि सीता द्वारा धीरे-धीरे बताई गई बातों से ग्रेस इतनी विचलित हो गई थी कि वह अपनी सामान्य साहस और कुशलता से चित्र नहीं बना पाई; लेकिन चेहरा काफी हद तक मिलता-जुलता था, और रंग के कुछ हल्के धब्बों ने लड़की के वस्त्रों को वास्तविकता का आभास दिया। यह एक ऐसे दिन और घटना की स्मृति थी जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता था। जब सिरिल आया, तो पेरी ने उसे अपनी पूरी कहानी सुनाई, अब अधिक शांत और स्पष्ट रूप से, क्योंकि सीता और ग्रेस ने उसे सहज महसूस कराया था, और उसने विनम्रता और विवेक से व्यवहार किया था। वह हर बात पर पूरी तरह दृढ़ थी, और उसकी व्याख्याएँ बहुत स्पष्ट थीं। जब वह फतेहपुर से निकली, तो नवाब की "सेना," जैसा कि वह उसे कहती थी, पहले से ही तैयारी में थी।

आक्रमण से पहले एक चेतावनी। 84/ नवाब की सीमा तक कूच करना था और लौटते हुए सिपाहियों से मिलना था। फिर सभी को एकजुट होकर किले पर धावा बोलना था। पेरी ने कहा, “जिस द्वार से मैं आई हूँ, उस पर कड़ी निगरानी रखना; जब उन्हें पता चलेगा कि महिलाएं यहाँ हैं, तो वे उस पर हमला कर सकते हैं। फिलहाल मीमा जुमीला मानती हैं कि वे अपने घरों में हैं। अब मुझे जाने दीजिए, महोदय, और ईश्वर आपकी रक्षा करे; लेकिन मुझे कोई डर नहीं है; अगर मैं आपकी जगह होती, तो मुझे यहाँ कोई डर नहीं होता। अगर अनुमति हो, महोदया,” उसने सीता से कहा, “मैं आप दोनों को आशीर्वाद दूंगी। ईश्वर नर्तकियों की प्रार्थना भी सुनता है; और आप दोनों मेरे सिर पर हाथ रखिए, और मैं आभारी रहूंगी। ‘भले ही हम फिर कभी न मिलें, पेरी बुक्श को मत भूलना;” और जब उसने उनके हाथ हटाकर उन्हें चूमा, तो वह सिरिल ब्रैंडन के साथ उस द्वार से चली गई जिससे वह अंदर आई थी। जब वे विदा हुए तो उसने कहा, “किसी को भी नीचे मत रहने देना; किसी की जान जाने से बेहतर है कि तुम्हारे घर जल जाएँ। मैंने तुम्हें चेतावनी दे दी है।” सिरिल ने उत्तर दिया, “मैं इस पर तुरंत ध्यान दूंगा; और यहाँ मौजूद सभी की ओर से मैं आपके मेरे पास आने के लिए धन्यवाद देता हूँ, आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं कि अच्छे दिन आने पर इसका फल अवश्य मिलेगा।” सिरिल ब्रैंडन जब अपनी कुचेरी से ऊपर आ रहा था, तो उसने देखा कि रेजिमेंट के जवान अपने परेड ग्राउंड पर समूहों में खड़े होकर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे। एक साथी, जो गांजा या शराब के नशे में लग रहा था, चिल्लाया,

“दीन, दीन!” और उसके बाद कुछ लोग हँसने लगे। उसने सोचा, “अगर मुझे पता होता कि लड़की ने हमें क्या बताया है, तो मैं खजाने का जो कुछ बचा है, उसे ले आता; लेकिन वहाँ बहुत कुछ बचा नहीं है।” जब वह ब्रिगेडियर के पास गया, जिसका किले के दूसरे छोर पर, द्वार के ऊपर, उसी की तरह एक टावर था, तो उसने उसे, कैप्टन हिल और अन्य अधिकारियों को इकट्ठा पाया, जो दूरबीन से परेड ग्राउंड की ओर देख रहे थे और स्पष्ट रूप से सोच रहे थे कि वहाँ कुछ गड़बड़ हो रही है। दोनों रेजिमेंटों के सभी अधिकारी वहाँ मौजूद थे, और कैप्टन हॉब्सन भी, जो अपने सैनिकों को लेकर सहज नहीं लग रहे थे; और बाकी लोगों में से एक भी चिंतित था, जिसे स्थानीय सहायक अधिकारी ने सैनिकों को परेशान न करने की चेतावनी दी थी। जहाँ तक दूसरे की बात है, वह खुश था; अपने सैनिकों की निष्ठा में उसका विश्वास और अपनी रेजिमेंट के सिपाही मेजर, द्रिगपाल सिंह पर उसका भरोसा अटूट था। शायद उस शानदार बुजुर्ग सिपाही मेजर के लिए यह संघर्ष उसके कमांडर अधिकारी की जानकारी से कहीं अधिक कठिन रहा था। पिछली रात का अधिकांश समय वह परेड ग्राउंड पर बैठा रहा, सभी रैंकों के सैनिकों के साथ धैर्यपूर्वक बातचीत करता रहा, उन्हें उन भ्रमों के बारे में बताता रहा जो उनके बीच फैलाए गए थे, और उन्हें याद दिलाता रहा। उन्हें उनके पूर्वजों द्वारा प्राप्त विजयों की याद दिलाना।

318 सेल्टा., * “इन निशानों को देखो,” उसने सीना खोलते हुए कहा; “देखो मैंने कितने सम्मान धारण किए हैं। मैं सरदार बहादुर हूँ, क्या मैं बेवफ़ा हो सकता हूँ? अगर तुम उन लोगों के खिलाफ़ उठ खड़े हो जो तुम्हारे लिए माता-पिता के समान हैं, तो पहले मुझे यहीं, जहाँ मैं खड़ा हूँ, सलाम करो, या मुझसे वफ़ादारी की कसम खाओ। तुम्हें बेवफ़ा देखने से बेहतर है मर जाना।” और वह सफल हो गया; और उनका कमांडर, जो कई अधिकारियों के साथ परेड में आया था, जब उसने सैनिकों के इकट्ठा होने की खबर सुनी, तो उसका आँसुओं, सिसकियों और वफ़ादारी और सच्चाई की चीखों के साथ स्वागत किया गया; फिर भी वे मुश्किल से ही उन पर विश्वास कर पा रहे थे! अन्यत्र कितने लोगों को ऐसे ही आश्वासन मिले थे, और फिर भी उन्हें मार गिराया गया था? बूढ़े सिपाही मेजर को यह स्पष्ट था कि विद्रोह होगा; लेकिन उसे कुछ दिनों तक इसकी उम्मीद नहीं थी। कुछ अजीब सिपाही, अवध के लोग, देखे गए थे, जो देखने से घर लौटने का बहाना कर रहे थे; और जब से उन्हें देखा गया था, तब से अशांति फैली हुई थी; लेकिन फिर भी, द्रिगपाल सिंह को कुछ दिनों तक विद्रोह की

आशंका नहीं थी। हालाँकि, बाद में पेरी की सूचना बिलकुल सही साबित हुई; और पूरी तैयारी के साथ, ब्रिगेडियर और कुछ अधिकारी, सिरिल ब्रैंडन और श्री मोस्टिन के साथ, ब्रिगेडियर टॉवर की छत पर बैठकर संभावित घटनाक्रम पर नज़र रख रहे थे, जबकि अधिकारी, अंग्रेज़ सैनिक और तोपखाने के जवान सभी टावरों और फाटकों पर अपनी-अपनी चौकियाँ संभाले हुए थे। ऐसे समय में लोग ज़्यादा बात नहीं करते, और सभी की चिंता वास्तविक खतरे से कहीं अधिक तीव्र थी। हॉब्सन और अन्य अधिकारी अपने-अपने सैनिकों के पास चले गए थे, और अब कुछ ही लोग मौजूद थे। शाम ढल रही थी, और अपने कस्बे में कुछ दीपक भी जलाए जा चुके थे। चाँद अभी नया था, और उसकी रोशनी धुंधली और अनिश्चित थी; लेकिन फतेहपुर की दिशा से हवा में ऊँचाई पर उठे संकेत को पहचानने में कोई गलती नहीं हो सकती थी। तीन रॉकेट एक के बाद एक दागे गए, और आखिरी रॉकेट खून जैसे लाल गोलों की बौछार में बदल गया। जैसे ही पहला रॉकेट उठा, ब्रिगेडियर चिल्लाया, "देखो! हम जल्द ही देख लेंगे कि कौन सच्चा है और कौन बेवफा। जहाँ तक मेरा सवाल है, मुझे सब पर शक है, और किसी भी अधिकारी का सिपाहियों के बीच जाना जान की सरासर बर्बादी है। जो भी जाए, उसे अपनी ज़िम्मेदारी पर जाना होगा।" जैसे ही उसने ये कहा, किले से सबसे दूर की पंक्तियों से एक ज़ोरदार शोर उठा और एक के बाद एक कई गोलियाँ दागी गईं। किले के परेड ग्राउंड पर एक अंधेरा समूह इकट्ठा हुआ, जो कुछ देर तक इधर-उधर डगमगाता रहा, फिर आखिरकार खुद को समेटकर आगे बढ़ गया। एक तोपखाने के अधिकारी ने घुड़सवार से पूछा, "क्या मैं गोली चलाऊँ, ब्रिगेडियर? मुझे लगता है कि वे अभी तक नहीं पहुँचे हैं। वे मुझ पर गोली चला रहे हैं। मैं कर सकता हूँ।'

4 प्रकोप से पहले चेतावनी। 349 मैं उन्हें अपनी रात की दूरबीन से बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। उनके साथ उनका कोई भी अधिकारी नहीं है। "गोली चलाओ!" ब्रिगेडियर चिल्लाया; और उन्होंने दो गोले हवा में तेज़ी से आते हुए देखे, जो भीड़ के बीच गिरे, जिससे भीड़ तुरंत तितर-बितर हो गई और आग लग गई। अब विद्रोह करने वाली रेजिमेंट की पंक्तियों के बीच कई तेज़ रोशनी दिखाई देने लगीं, जो सिपाहियों के घरों में आग की लपटों में बदल गईं, और कई फूस के बंगलों की छतों से लपटें हवा में ऊंची उठ रही थीं। किले में भी हल्की हवा चल रही थी; लेकिन वह लपटों को और भड़काने के लिए काफी थी, जिसकी चमक पूरे परेड ग्राउंड में फैल गई। तोपें अब

शांत थीं, क्योंकि निशाना लगाने के लिए कुछ भी नहीं था, केवल छोटे-छोटे दल जलती हुई पंक्तियों से बचकर मैदान में दौड़ रहे थे, मुख्य सेना में शामिल होने के लिए, जो कुछ बगीचों और पेड़ों की आड़ में अब दिखाई नहीं दे रही थी; लेकिन कोलाहल की आवाज़ भयावह थी। अचानक, पैदल सेना की परेड के दूसरे छोर से दो अधिकारी निकले, जिनमें से एक बिना टोपी के था, जिनका पीछा घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी पूरी गति से कर रही थी, वे अपनी तलवारें लहरा रहे थे जो तेज रोशनी में चमक रही थीं, जबकि उनकी चीखें... “दीन!” “दीन!” की आवाज़ आग की लपटों की गर्जना और चारों ओर के कोलाहल के बीच से साफ सुनाई दी। वे कैप्टन हॉब्सन और उनके द्वितीय कमांडर युवा टेंपल थे; और अब सचमुच जीवन-मरण की दौड़ थी। दोनों अच्छे घोड़ों पर सवार थे; लेकिन घुड़सवार सेना के घोड़े भी चुस्त और तेज थे, और ऐसा लग रहा था मानो वे उनकी आँखों के सामने ही पकड़े और मारे जाएँगे। कैप्टन हॉब्सन का घोड़ा लगभग कमजोर होता जा रहा था और वह पीछे छूट गया, तभी टेंपल ने अपने घोड़े की लगाम खींची और वे फिर से एक साथ तेजी से दौड़ पड़े। एक बार हॉब्सन ने अपनी काठी घुमाई और बाकी सेना का नेतृत्व कर रहे और उनके ठीक पीछे चल रहे एक घुड़सवार पर गोली चलाई, लेकिन वह सीधे अपने घोड़े से गिर गया, जिसका शरीर कुछ देर तक उसके शरीर को घसीटता रहा और फिर बिना सवार के परेड ग्राउंड पर पड़ा रहा। इस दृश्य को देखने वाले सभी लोग सांस रोककर और चुपचाप उत्सुकता से देख रहे थे, और उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी थी; तभी तोपखाने के शांत और सतर्क अधिकारी ने फिर से चिल्लाकर कहा, “गोली चलाओ!” दोनों हॉवित्जर तोपों से निकले छर्रे हवा में थोड़े ऊपर उठे और पीछा करने वालों के समूह पर फट गए, जो मुड़कर भाग गए और अपने पीछे घोड़ों और उनके सवारों का एक भयानक, तड़पता हुआ ढेर जमीन पर छोड़ गए। फिर एक ऐसा दृश्य सामने आया जिसने कई दिलों को प्रसन्न कर दिया। दूसरी रेजिमेंट, कंपनियों की कतारों में सुव्यवस्थित रूप से गठित होकर, अपनी सुरक्षित पंक्तियों से बाहर निकली और "जसी कूम्पानी बहादुर!" के नारों के साथ परेड में दूसरी रेजिमेंट की ओर दौड़ पड़ी, और गुजरते हुए घायल सैनिकों और सिपाहियों को संगीनों से मार गिराया।
वहाँ उन्हें 350 सीता मिलीं। उनके आगे उनके कमांडर और सहायक चल रहे थे, उनके अधिकारी उनके किनारों पर थे, अपनी तलवारें लहराते हुए, जैसे ही स्थिर और संगठित समूह आगे बढ़ा, उनकी संगीनें चमक उठीं और उनके लाल रंग की वर्दी चारों

ओर जलती आग की रोशनी में दमक उठी। आगे बढ़ो! बस आगे बढ़ते रहो, विद्रोहियों की ओर, जिनके समूह से, आड़ में, अब गोलियाँ बरस रही थीं। सिरिल ब्रैंडन अब खुद को रोक नहीं पा रहा था; उसे वफादार सैनिकों के साथ आगे बढ़ना ही था, और शायद वह खजाने को बचा सके। किसी ने उसे जाते हुए नहीं देखा, लेकिन वह तलवार और रिवाल्वर से अच्छी तरह लैस था; उसे हमेशा से यह रेजिमेंट पसंद थी, और उसे यकीन था कि वह काम आ सकता है। जैसे ही वह फाटकों से भागा, उसकी मुलाकात हॉब्सन और टेंपल से हुई जो अभी-अभी अंदर आ रहे थे, और उसने देखा कि हॉब्सन की छाती में तलवार से घाव हुआ था और खून बह रहा था, और उसके घोड़े की गर्दन और छाती से खून टपक रहा था; लेकिन अंग्रेज सैनिक उसका सहारा दे रहे थे, और अंधेरे और अफरा-तफरी में, सिरिल फाटक से बाहर निकल गया। उस सारी अफरा-तफरी के दौरान, जिसका कुछ हिस्सा तो वे अष्टकोणीय बुर्ज पर तोप के पास अपनी चौकी से देख पा रही थीं, श्रीमती मोस्टिन, ग्रेस और सीता सांस रोककर देख रही थीं। श्रीमती मोस्टिन लगभग बेहाल थीं; लेकिन ग्रेस और सीता शांत थीं और दोनों चुपचाप प्रार्थना कर रही थीं। उन्हें नहीं पता था कि क्या हुआ था; लेकिन यह स्पष्ट था कि सिपाहियों के संबंध में पेरी की चेतावनी सही थी, और यह देखना बाकी था कि क्या उन पर होने वाले हमले के संबंध में भी यह उतनी ही सही साबित होगी। तोप के पास आयरिश सार्जेंट खड़ा था जो उसका कमांडर था, और सैनिक तेजी से ढलती रात के अंधेरे में इधर-उधर देख रहे थे, लेकिन उन्हें कुछ खास दिखाई नहीं दे रहा था। "सावधान रहें, महोदय," सार्जेंट ने नीचे द्वार पर तैनात अधिकारी को पुकारा, जो अपने कुछ आदमियों के साथ द्वार के बगल में बने बुर्ज पर खड़ा था। "सावधान रहें, महोदय; पांडिक वहाँ से आने की कोशिश कर रहे होंगे। गोली चलाने से पहले मेरा इंतज़ार कीजिए।" "ठीक है," कमानधारी पताका ने उत्तर दिया, "हम यहाँ तैयार हैं। आप भी कड़ी निगरानी रखें; मैं तब तक गोली नहीं चलाऊँगा जब तक वे करीब न आ जाएँ।" सीता की चेतना चरम सीमा पर थी। वह पूरी तरह शांत थी, और ग्रेस को हमेशा उसकी शांत दृष्टि, उसकी हल्की मुस्कान याद रही, जिससे वह नीचे अंधेरे में देख रही थी। किले की इमारतों के चारों ओर गूंजती तोपों की आवाज़ पर उसने शायद ही ध्यान दिया हो: और आग की बढ़ती रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी, जिससे उसका चेहरा दमकता और आत्मविश्वास से भरा दिख रहा था, उसके सुंदर होंठ खुले हुए थे, और उसके छोटे मोती जैसे दाँत चमक रहे थे। अचानक उसने ग्रेस का हाथ

पकड़ लिया और बोली, "क्या तुम्हें उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही—हाथियों की घंटियों की झंकार?"
प्रकोप से पहले एक चेतावनी। 851 “‘इसमें एक गोला भरा हुआ है,’ सार्जेंट ने कहा, ‘और गार्डिन के लिए फ्यूज बाहर है। लेकिन, लड़कों, मुझे नहीं लगता कि इसके ऊपर से दागा गया एक गोला नुकसान पहुंचाएगा; यह इसे और इससे भी अधिक ले जाने में सक्षम है। इसे अंदर डालो, और इसे अच्छी तरह से ठोक दो।’” सार्जेंट ने तोप पर एक और नज़र डाली और संतुष्ट हो गया कि निशाना सही था। अब तोप की चमक तोप पर और सिरिल ब्रेंडन के बगीचे के लॉन पर पड़ रही थी, और सार्जेंट को वहाँ सब कुछ साफ़ दिखाई दे रहा था। हाँ! घंटियाँ पास आती जा रही थीं, और अचानक सिरिल के घर के पीछे सड़क पर कुछ मशालधारी दिखाई दिए, उनके पीछे देशी पैदल सैनिकों की एक भीड़ थी, जो चमकीली बंदूकें लिए एक स्थिर गति से दौड़ रही थी। फिर वे घर के कोने से मुड़ गए, उनके पीछे एक हाथी था, जिसके हौदे में कोई बैठा था। “अरे यार,” तोप को देखते हुए सार्जेंट चिल्लाया, “यह पांडियों का जनरल है! अगर वह बदमाश अभी एक मिनट के लिए भी रुक जाए, तो मैं उसे मार गिराऊँगा। सब लोग संभलकर रहो, और जब मैं कहूँ 'फायर', तो ध्यान रखना।” हाथी स्थिर खड़ा था। हौदे में बैठा कोई व्यक्ति घर और झोपड़ी से होकर आए लोगों से बात कर रहा था। वह व्यक्ति पुरुषों के वस्त्र पहने हुए था, लेकिन उसके चेहरे के हाव-भाव स्पष्ट नहीं थे, हालांकि कई मशालों और आग की रोशनी में पूरा समूह साफ दिखाई दे रहा था; और मशाल लिए दो आदमी स्पष्ट रूप से इशारे कर रहे थे, क्योंकि कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहे थे, कि घरों में आग लगा दी जाए। हालांकि, सार्जेंट का निशाना एकदम सटीक था। "आगे बढ़ो!" वह चिल्लाया, और सैनिक प्रभाव देखने के लिए बुर्ज की प्राचीर की ओर दौड़े। गोले के फटने से वस्तु क्षण भर के लिए छिप गई; लेकिन एक पल बाद, उन्होंने उस विशाल तोप को लड़खड़ाते और गिरते देखा, और हौदे के तल से एक ढेर घास पर जा गिरा। उसी समय पहरेदारों ने नीचे बुर्ज से गोलियों की बौछार की, और शायद कुछ असर भी हुआ, क्योंकि दूरी लगभग एनफील्ड की मारक क्षमता के भीतर थी; लेकिन दोबारा गोली चलाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैदान पर मौजूद हर आदमी भाग गया था, और आग की अब घटती हुई लपटों ने मैदान को अंधेरे में डुबो दिया। "मैंने उसे मार गिराया, लड़कों, मैंने मार गिराया," सार्जेंट ने अपने गोले के प्रभाव को देखकर खुशी से चिल्लाया। "आह! मुझे दुख है, लेकिन तुम सबसे अच्छी तोप हो जिसे

मैंने कभी संभाला है," और उसने हॉवित्जर के पिछले हिस्से को थपथपाया; “और मुझे उम्मीद है कि आपने भी इसे देखा होगा, मिस्ट्रेस ब्रैंडन? सच में, वो तो हैं जो बंदूक की आवाज से बेहोश नहीं होतीं; और अगर ये गोली किसी और के खिलाफ न होती, तो हम आपके लिए तीन बार जयकार करते, मैडम, बिल्कुल करते।” हाँ, सीता ने गोली की आवाज देखी थी; और वो भी सुबह-सुबह।

352 सीता। बुलदेव और लुचमुन सिंह दौड़कर मैदान में गए और उन्होंने देखा कि मामा जुमीला का फूला हुआ, क्षत-विक्षत शरीर मृत हाथी और उसके सारथी के पास पड़ा है। सियार और लकड़बग्घे पहले ही उस पर टूट पड़े थे, जबकि गिद्ध आसपास के पेड़ों पर उदास बैठे अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। बुलदेव ने कहा, "काश यह अजराइल पांडे होता," जब उन्होंने महिला से सोने के आभूषण और उसकी कमर से पैसों से भरा भारी थैला निकाला; "लेकिन उसका समय भी आएगा।" अध्याय 13वां। "तूफान का शांत होना।" पूरी रात भयानक कोलाहल जारी रहा। सैन्य शिविरों के पीछे हमेशा मंडराने वाली दुष्ट भीड़ ने सारी मर्यादाएं तोड़ दीं और अपनी मर्जी से लूटपाट की, अधिकारियों के सुनसान बंगलों या बाजारों में व्यापारियों की दुकानों को लूटा और कई जगहों पर नई आग लगा दी। किले की ओर हर तरफ से चीखें और रोने की आवाजें आ रही थीं; लेकिन सुबह होने तक पीड़ितों की सहायता करना या स्थानीय शांति के लिए कोई उपाय करना असंभव था, जब तक कि यह पता न चल जाए कि क्या किया जा सकता है। ब्रिगेडियर की सावधानियों का अक्सर उपहास किया गया था, लेकिन परिणाम ने उनकी दूरदर्शिता को सही साबित कर दिया। तूफान के पहले प्रकोप के बाद किसी भी समय विद्रोह फिर से भड़क सकता था; और यदि कोई तैयारी नहीं होती, तो वर्तमान जैसी आपात स्थिति में क्या किया जा सकता था, जब न तो राशन का इंतजाम था और न ही कोई सुरक्षित ठिकाना तैयार था? कौन अनुमान लगा सकता था कि एक रेजिमेंट वफादार रहेगी? यदि दोनों अचानक उठ खड़े होते जब सभी लापरवाह थे, और ईसाई पुरुष, महिलाएं और बच्चे विशाल छावनी क्षेत्र में अपने घरों में बिखरे हुए थे, तो निश्चित रूप से कई लोग मारे जाते; और यहां तक कि अंग्रेजी सैनिक भी हार सकते थे, या नूरपुर से पीछे हटने के लिए मजबूर हो सकते थे। यदि देशी सैनिकों ने तब किले पर कब्जा कर लिया होता, तो उन्हें वहां से कौन निकाल सकता था? या यदि उस पर हमला जैसा उपाय भी आवश्यक हो जाता, तो कितना बड़ा बलिदान होता - सफलता कितनी अनिश्चित होती! अपने अस्तित्व में

शायद ही कभी किले में रहने वालों ने इतनी परिपूर्ण सुरक्षा का अनुभव किया हो, या सुरक्षा के लिए इतने आभारी रहे हों। एक-एक करके विद्रोह करने वाली रेजिमेंटों के अधिकारी आए और अपनी कहानी सुनाई: कैसे कमांडर और एडजुटेंट, और कुछ देशी अधिकारियों ने मोर्चे पर एक-एक कंपनी में जाकर सैनिकों को स्थिर रहने का आग्रह किया; कैसे

"तूफान का सन्नाटा।" 353 उनका उपहास, ताने और धमकियाँ दी गईं, जब तक कि रेजिमेंट परेड में एक समूह के रूप में एकत्रित होकर आगे नहीं बढ़ गई। और हैरानी की बात यह है कि किसी भी अंग्रेज अधिकारी को चोट नहीं आई, हालाँकि अंत में, उन्हें भगाने के लिए, सैनिकों ने गोलियाँ चलाईं—यदि उन पर नहीं, तो कम से कम उनके इतने करीब से कि उन्हें यह स्पष्ट संकेत मिल जाए कि यदि वे उनके मंसूबों को नाकाम करने का प्रयास जारी रखते हैं तो क्या किया जाएगा। कैप्टन हॉब्सन ने भी अपने सैनिकों से पूरी लगन से अपील की थी, और उन्हें पहले लगा कि इसका कुछ असर हुआ है; लेकिन जब वे हिचकिचाने लगे, तो एक कुख्यात हिंसक व्यक्ति ने अचानक उन पर हमला कर दिया और उनकी छाती और कंधे पर गंभीर चोटें पहुंचाईं। बाकी लोग अपने साथी के पीछे-पीछे आ रहे थे; जब उन्होंने देखा कि वे मुश्किल से अपनी जान बचा सकते हैं, तो उन्होंने टेम्पल को पुकारा और जैसा कि मैंने बताया है, वहां से भाग निकले। हॉब्सन ने अपने घाव पर पट्टी बंधवाते हुए और अपनी कहानी सुनाते हुए कहा, "उन दो गोलों और वफादार सैनिकों ने हमें बचा लिया; लेकिन जब मेरा घोड़ा खून की कमी से लड़खड़ा रहा था, और हमने रेजिमेंट को इकट्ठा होते देखा, तो हमें लगा कि हमारा काम तमाम हो गया है, जब तक कि हमें पता नहीं चला कि उनके अधिकारी उनके साथ हैं; तभी हमें लगा कि हम सुरक्षित हैं।" नूरपुर में बिगुल की आवाज़ से ज़्यादा खुशी की कोई आवाज़ नहीं सुनी गई थी, क्योंकि सुबह होते ही रेजिमेंट अपने बहादुर कमांडर और अन्य अधिकारियों के नेतृत्व में, बगीचों की आड़ से निकलकर परेड ग्राउंड पर शान से आगे बढ़ी। ब्रिगेडियर और उनके साथ आए कई लोग किले से नीचे आकर उनका हार्दिक स्वागत करने और यह जानने के लिए दौड़े कि रात उनके साथ कैसी गुज़री, और सचमुच यह एक रोमांचक रात थी। उन्होंने कायर रेजिमेंट को छावनी की सीमा से बाहर खदेड़ दिया था और जब तक उजाला रहा, उन्हें कुछ नुकसान पहुँचाया था; लेकिन चाँद डूबते ही उन्हें कोई युवा सैनिक नहीं दिखाई दिया, और थोड़ी दूरी पर सैनिकों के नारों, घोड़ों के हिनहिनाने और हाथियों की

घंटियों की आवाज़ से यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने नवाब की सेनाओं के साथ मिलन कर लिया था, जो उनका स्वागत करने के लिए तैनात थीं। वफादार रेजिमेंट को बहुत कम नुकसान हुआ था; एक अंग्रेज अधिकारी को उसकी बांह में संगीन के वार से मामूली चोट आई थी; लेकिन किसी भी अन्य सैनिक को गंभीर चोट नहीं आई थी। बाकी सैनिकों को चोट लगी थी, और सैनिकों में हताहतों की संख्या उनके द्वारा किए गए कार्य की प्रकृति को देखते हुए मामूली थी। पुरस्कार देने का इससे बेहतर अवसर कभी नहीं था, और ब्रिगेडियर ने अपनी जिम्मेदारी पर, रात भर उपस्थित सभी सैनिकों को एक महीने का अतिरिक्त वेतन वितरित किया, जिससे उनकी लोकप्रियता में जबरदस्त वृद्धि हुई। हालाँकि, कुछ सैनिक विद्रोहियों के साथ चले गए थे। दूसरी ओर, उतने ही से अधिक संख्या में विश्वासघाती रेजिमेंट के सैनिक, जिनमें कई देशी अधिकारी भी शामिल थे, वहीं रह गए थे, जिन्होंने 2a
054 सीता - « टेनमोवो-. हमने उनके साथियों को बिना वर्दी के देखा और उनसे अपने दल में शामिल होने की विनती की। घुड़सवार सेना पूरी तरह से नहीं गई थी, क्योंकि लगभग सौ सैनिक और कुछ स्थानीय अधिकारी अपनी पंक्तियों से बाहर आए और ब्रिगेडियर के आदेशों का पालन किया। इस प्रकार नूरपुर वास्तव में पहले से अधिक मजबूत हो गया; और असंतुष्टों के भाग जाने से हुआ सकारात्मक लाभ सभी के लिए अकल्पनीय था। सिरिल ब्रैंडन भी दूसरे क्षेत्र में अपना कर्तव्य निभा रहे थे। द्वार से गुजरने के बाद वे पुलिस की ओर तेजी से बढ़े, जहाँ उन्होंने नोबल को सैनिकों के साथ पाया और उनका खुशी से स्वागत किया गया। लेकिन कुचेरी और खजाने को बचाना बहुत देर हो चुकी थी। उस दिन विद्रोही रेजिमेंट का एक गार्ड वहाँ मौजूद था: और संकेत मिलते ही, उन्होंने तुरंत इमारत में आग लगा दी, सौभाग्य से कम मात्रा में खजाने को गाड़ियों पर लाद दिया और फुट्टेहपुर की ओर भाग गए। चूंकि यह बात निर्विवाद थी, सिरिल और उसके साथी जेल की ओर चल पड़े, जो अत्यधिक उत्तेजित कैदियों से भरी हुई थी। सौभाग्य से, जेल की देखरेख केवल पुलिस कर रही थी, जो वफादार थी, और अंदर हिंसा को दबा दिया गया था। विद्रोहियों ने पहरेदारों को हटाने का प्रयास किया था, लेकिन उन्होंने डटकर मुकाबला किया, जैसा कि द्वार के पास पड़े कई मृत सिपाहियों के शवों से स्पष्ट था। रात भर चले संघर्ष की बदलती प्रकृति ने हमले को दोबारा होने से रोक दिया, और श्री ब्रैंडन द्वारा भेजे गए लगभग पचास सैनिकों की अतिरिक्त तैनाती ने इमारत की सुरक्षा को निर्विवाद बना दिया। इसलिए,

पूरी रात वह और श्री नोबल पहरा देते रहे, उन्हें पता नहीं था कि क्या हो रहा है, लगभग सुबह होने तक; जब जासूस के रूप में स्वेच्छा से गए दो सिखों ने यह खुशखबरी दी कि विद्रोही, नवाब की सेना के साथ, उत्तेपुर की ओर पीछे हट रहे हैं। इस बीच, बेचारी सीता ने बहुत दुख भरी रात गुजारी, क्योंकि सिरिल के बारे में कोई खबर नहीं मिली थी। उसने खुद उस मीनार की निगरानी की थी जहाँ से मैंने जिन घटनाओं का वर्णन किया है, वे देखी गई थीं और जहाँ उसने श्री मोस्टिन को देखा था, लेकिन अपने पति को नहीं। फिर उसने श्री मोस्टिन को ढूँढा और उनसे पूछताछ की; लेकिन वे उसे केवल इतना ही बता सके कि सिरिल उनके साथ था और अचानक उसे खो दिया था; और वह उस व्याकुल लड़की के साथ हर जगह गया जहाँ तक वह सोच सकता था, उसे ढूँढने के लिए, लेकिन वह नहीं मिला। क्या वह नोबल के साथ कुचेरी गया होगा और दोनों वहीं मर गए होंगे? क्योंकि श्री मोस्टिन ने विद्रोह भड़कने के तुरंत बाद इमारत में आग की लपटें देखी थीं। रात के दौरान कुछ भी निश्चित रूप से पता लगाना असंभव था: और सीता को अपनी पत्नी और ग्रेस की देखभाल में सौंपकर, वह ब्रिगेडियर और बाकी लोगों के साथ ऊँची जगह पर अपनी निगरानी फिर से शुरू करने चला गया।

“द स्टिलिंग ऑफ द स्टोज एम.” 355 कैवेलियर; और जब उसने अपने शीशे से उन लोगों को देखा जो सुबह होने के बाद परेड पार कर रहे थे, और देखा कि न तो सिरिल और न ही मिस्टर नोबल उनके साथ थे, तो उसका दिल बैठ गया। वह सीता को क्या बताता? सीता के लिए वह रात बहुत कठिन और थका देने वाली थी। “वह मुझे अकेला क्यों छोड़ गया?” “वह क्यों चला गया?” “क्या वे उसे मेरे पास लाएंगे?” “ओह, मुझे जाने दो और उसे ढूंढने दो!” ऐसी दयनीय चीखें, सिसकियों और प्रार्थनाओं के साथ, न तो उसके दोनों दोस्त और न ही अच्छी श्रीमती प्रैट शांत कर सकीं; क्योंकि वास्तव में वे सभी सबसे बुरे की आशंका कर रहे थे, और केवल अपनी क्षमता के अनुसार सीता को सांत्वना दे सकते थे और उसके साथ प्रार्थना कर सकते थे। इसलिए वह बेसुध और चुपचाप बैठी रही, उसका चेहरा सफेद और डरा हुआ था, वह बीच-बीच में थोड़ा-थोड़ा कराहती थी, लेकिन धैर्य रखती थी, हालांकि उसे मुश्किल से ही समझ आ रहा था कि उससे क्या कहा जा रहा है। बाद में उन्होंने कहा, जैसा कि उन्होंने तब सोचा था, कि अगर सिरिल का शव लाया जाता, तो वह बिना कुछ बोले ही मर जाती। और शायद वह मर भी जाती; लेकिन उसके लिए खुशी का इंतज़ार था।

हम जानते हैं कि सुबह होते ही बुलदेव और लखमन सिंह घर गए थे और वापस नहीं लौटे थे। अष्टकोणीय कमरे में बेचैन सीता ऊपर छत पर चली गई थी, और श्रीमती मोस्टिन भी उसके पीछे गईं, क्योंकि सुबह की ताज़ी हवा बहुत सुखद थी। उन्होंने सीता को लॉन को ध्यान से देखते हुए देखा, और फिर कुछ आदमियों को इधर-उधर घूमते हुए देखा। फिर सीता जल्दी से अपने प्रार्थना कक्ष में उतर गई, और इससे पहले कि वे समझ पाते कि वह क्या कर रही है, उन्होंने उसे अपने लड़के के कपड़ों में, जल्दी से गेट की ओर जाते और ढलान से नीचे भागते हुए देखा, उसके साथ उसके बाकी साथी भी थे, जो अंग्रेज़ सैनिकों के साथ पहरा दे रहे थे। श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस अब बहुत घबरा गई थीं; लेकिन उसे कौन रोक सकता था? बुलदेव और उसके साथी ने उसे नीचे उतरते ही देख लिया था। लॉन पर पड़े भयानक शवों के ढेर और इधर-उधर पड़े मृतकों की परवाह न करते हुए, उसने उन सभी से कहा, "यदि तुम पुरुष हो, तो मेरे साथ आओ और अपने स्वामी को ढूंढो;" और दल आगे बढ़ गया। हालाँकि, हम जानते थे कि सिरिल पूरी तरह सुरक्षित था; और वह पुलिस पर भरोसा कर सकता था। इसलिए, बहादुर बूढ़े दारोगाह को उसकी चौकी पर छोड़कर, मैंने सोचा कि वह देख ले कि उसके घर पर या उसके आस-पास क्या हुआ है, क्योंकि उसने मीनार से तोपों की आवाज सुनी थी। मुझे नहीं लगता कि उसे कोई खास जल्दी थी: और जैसे ही सीता लॉन से घर की ओर मुड़ी, उसने सबसे पहले मफ को देखा, जो चीखता हुआ उस पर कूद पड़ा, और फिर सिरिल को, मुंह में सिगार लिए आराम से टहलते हुए देखा। "तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया, ओ तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?" उसने उसके पैर छूते हुए कहा। वह और कुछ नहीं कह सकी, क्योंकि वह
356 सीता को लगा कि वह अत्यधिक खुशी से बेहोश हो जाएगी; इसलिए उसने उसे सहारा देकर कुटिया में ले जाकर दीवान पर लिटा दिया, जबकि बूढ़ा ब्राह्मण और उसकी पत्नी, जो बुलदेव के साथ नीचे गए थे, उसके लिए पानी लाए। "हे भगवान! मैं भगवान का शुक्रिया अदा करूंगी, सिरिल," जब वह बोल पाई, तो बोली, "जिसने तुम सबको बचाया है। मैं एक नन्ही बच्ची की तरह उनके पास जाऊंगी, और वे मुझसे नाराज़ नहीं होंगे, वे मुझे ठुकराएंगे नहीं। लेकिन मुझे फिर कभी मत छोड़ना, सिरिल; कभी नहीं, कभी मत छोड़ना। कल रात जब शोरगुल जारी था, तो मेरी प्रार्थनाओं के कारण ही मेरी जान बच गई। हे भगवान, मुझे फिर कभी मत छोड़ना! अगर तुम जाओ, चाहे युद्ध में ही क्यों न जाओ, मुझे अपने साथ ले जाना; मैं नहीं डरूंगी; लेकिन

अकेले मैं सचमुच डरपोक हूँ। मुझसे यह वादा करो, सिरिल; हे मेरे प्रिय, इसे मत ठुकराना!" सिरिल जानता था कि उसकी पत्नी सच कह रही है। "नहीं, मैं तुम्हें फिर कभी नहीं छोड़ूंगा," उसने उत्साह से कहा। "कठिन काम हो सकता है, लेकिन तुम मेरे साथ सबसे अच्छे हो।" कल मैं कुछ नहीं कर सका, क्योंकि आपको फोन करने का समय ही नहीं था, और सच कहूँ तो मैं बिल्कुल सुरक्षित था।" फिर वह बाहर जाकर लॉन को साफ करने के निर्देश देने लगा, और बुलदेव ने उसे उस भयानक औरत के अवशेष दिखाए जो संप्रदाय के लिए आई थी। सिरिल ने कृतज्ञता से कहा कि उसकी पत्नी सुरक्षित है। "क्या उसे इस बारे में पता है?" उसने पूछा। "नहीं, महोदय," बुलदेव ने उत्तर दिया। "हम उसे बताना नहीं चाहते थे, लेकिन मैंने और लखमन सिंह ने गहने धो दिए हैं और उन्हें ऊपर सुरक्षित रख दिया है। महोदय, मामा साहिबा यहाँ क्यों आई होंगी?" "मुझे लगता है, यह उनकी अपनी मूर्खता और दुष्टता है," श्री ब्रैंडन ने मीनार की ओर देखते हुए कहा। "क्या उन्हें नहीं पता था कि आप उन पर नज़र रख रहे थे?" सिरिल ने उस महिला के बारे में बुलदेव की सनक को संतुष्ट करना उचित नहीं समझा। जब वह सीता के पास लौटा, तो उसने उससे पूछा कि क्या वह जानती है कि कौन मारा गया था; लेकिन वह नहीं जानती थी। सीता ने उत्तर दिया, "मैं उस समय इतनी चिंतित थी कि मुझे इस बात की परवाह ही नहीं थी कि हौदे में कौन था। मुझे लगा कि वह नवाब का कोई अधिकारी होगा और वे बंगले और मेरी झोपड़ी को जला देंगे; लेकिन सार्जेंट ने ऐसा होने से रोक दिया; और मैंने हाथी को गिरते हुए देखा, और हौदे से कुछ बाहर फेंका गया। वह क्या था?" सिरिल ने उत्तर दिया, "मामा जुमीला; इसलिए शुक्र मनाइए कि आपका एक दुश्मन कम हो गया। सीता, वह नर्तकी कितनी सच्ची थी; हमें उसे किसी न किसी तरह पुरस्कृत करना चाहिए।" सीता ने अनमने ढंग से कहा, "हाँ, हमें उसे पुरस्कृत करना चाहिए।" लेकिन वह उस भयानक खतरे से कांप रही थी जिससे वह बच निकली थी। अगर वह अपनी झोपड़ी में रहती तो उसकी मदद कौन करता? श्रीमती मोस्टिन या ग्रेस की मदद कौन करता? उन सभी को करना चाहिए था।

"तूफान का शांत होना।" 857 लोग बुरी तरह से नष्ट हो गए थे, या उन्हें मृत्यु से भी बदतर भाग्य का सामना करना पड़ा था; और ऐसे विचारों के तहत सुरक्षा कितनी सुखद थी! आगामी रविवार को पादरी द्वारा एक विशेष धन्यवाद प्रार्थना सभा आयोजित की जानी थी, सभा कक्ष, जिसे आमतौर पर सैनिकों का सार्वजनिक कक्ष,

“दीवान-ए-आम” कहा जाता था, में, जिसे इस अवसर के लिए विशेष रूप से सजाया जाना था; और चूंकि नूरपुर के सभी ईसाई किले में थे, इसलिए सभा वहीं आयोजित करना बेहतर था, चर्च का उपयोग करने के प्रयास से, जो कि हालांकि पूरा था, शिविर के लुटेरों द्वारा तहस-नहस कर दिया गया था, और उसकी कुर्सियाँ और वेदी क्षतिग्रस्त हो गई थीं। सीता जानती थी कि यह समारोह आयोजित किया जाना है, और उसने बहुत ही संकोच से सिरिल से पूछा कि क्या उसे अंदर जाने दिया जाएगा। “मान लीजिए कि मैं चली जाऊं,” उसने उदास चेहरे से कहा। “कई देशी ईसाई महिलाएं जाएंगी, और मैं उनके साथ हो सकती हूं; मुझे कोई नहीं पहचानेगा।” “और श्रीमती प्रैट और मोस्टिन परिवार के साथ क्यों न जाऊं?” उन्होंने पूछा, “जाओ! बिल्कुल जा सकती हो। हमारे चर्च सबके लिए खुले हैं; और जहाँ सार्वजनिक रूप से प्रार्थनाएँ पढ़ी जाती हैं, वह स्थान कुछ समय के लिए ईश्वर का मंदिर होता है। मुझे यकीन है कि श्रीमती प्रैट और तुम्हारे दोस्त तुम्हें ले जाएँगे, और अगर वे नहीं ले गए, तो मैं ले जाऊँगा। ओ स्केता, मुझे बहुत खुशी है कि तुम अब हमारे साथ सोच सकती हो।” उसने कुछ नहीं कहा, बस अपना सिर उनकी छाती में छिपा लिया और एक छोटे बच्चे की तरह सिसकियाँ लेने लगी, शायद एक थका हुआ बच्चा, जो अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ था। “ओह, अगर आप मुझे बस एक बार ले जाएँ, सिरिल, ताकि मैं उस ईश्वर से प्रार्थना कर सकूँ जिसने आपको मेरे पास सुरक्षित पहुँचाया, तो मैं बहुत खुश हो जाऊँगी। वास्तव में, मैं उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहती, क्योंकि मैं उनसे केवल एक बच्चे की तरह प्रार्थना करती हूँ, और मैं जानती हूँ कि वे बहुत दयालु हैं।” जब सिरिल ने उन्हें यह बताया, तो प्यारी बूढ़ी श्रीमती प्रैट, श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस ने कहा कि स्केता उनके साथ बैठे और जो चाहे करे; और वे उसे पहले से कम हिंदू नहीं समझती थीं। लेकिन उन्होंने लड़की के कृतज्ञता और प्रेम के उच्च उद्देश्यों को पूरी शक्ति से महसूस किया और उनके परिणाम की प्रतीक्षा करने में संतुष्ट थे। सीता रविवार की सुबह श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के कमरों में गईं और श्रीमती मोस्टिन ने चुंबन के साथ उनका स्वागत करते हुए, अपने और ग्रेस के नाम से, हाथीदांत की प्लेटों में बंधी एक सुंदर प्रार्थना-पुस्तक उन्हें भेंट की, जिस पर स्पष्ट और मोटे अक्षरों में लिखा था। उनमें से कोई भी ज्यादा बोल नहीं पा रहा था और सीता कांप रही थी, लेकिन उत्तेजित नहीं थी। उसने बिना किसी आभूषण के, एक साधारण सफेद मलमल की साड़ी पहनी हुई थी; और जैसे ही वे हॉल में दाखिल हुईं, सीता ने हमेशा की तरह

अपनी चप्पलें उतार दीं और नंगे पैर अपनी सीट तक चली गईं। हॉल पठान गोथिक शैली का एक उत्कृष्ट नमूना था, जिसके मेहराबों के आधार अष्टकोणीय आकृतियों में उठते थे जो छोटे
358 सेल्टा. गुंबदों से छत बनी हुई थी। दीवारों और छत के सभी मुख्य भाग प्लास्टर में अरबी नक्काशी से भरपूर रूप से सजाए गए थे, और अब उन्हें धोकर साफ कर दिया गया था, क्योंकि पहले उन पर चमगादड़ों और अबाबीलों के घोंसले थे जिन्होंने उन्हें बदसूरत बना दिया था। ऊपरी खिड़कियों के खुले छिद्रों से केंद्र पर भरपूर रोशनी पड़ रही थी, जो लंबी तिरछी किरणों के रूप में गिर रही थी। नीचे की दीवार ठोस थी, लेकिन मेहराबों में बने बड़े-बड़े आले और खांचे से टूटी हुई थी: और ऊपर की रोशनी के बिना, अंदर का भाग अंधकारमय होता। अंत में बने चबूतरे पर, जहाँ पुराने समय में राजा या स्थानीय शासक बैठा करते थे, एक कालीन बिछा हुआ था; और वहाँ एक मेज थी जिस पर शुद्ध सफेद कपड़ा बिछा था, और उस पर पवित्र प्रसाद के चांदी के पात्र रखे थे: एक तरफ थोड़ी ऊँची पढ़ने की मेज रखी गई थी, और वहाँ सैनिकों के लिए बैठने की जगहें और अधिकारियों और उनकी पत्नियों के लिए कुर्सियाँ थीं। जब समूह चर्च में दाखिल हुआ और अपनी-अपनी सीटों पर बैठा, तो यह मानना स्वाभाविक था कि सीता की उपस्थिति ने सबका ध्यान आकर्षित किया। वहाँ मौजूद कुछ महिलाओं ने एक 'काली महिला', एक गैर-ईसाई महिला के ईसाई पूजा स्थल में अनुचित प्रवेश पर नाराज़गी जताई। लेकिन सीता श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस के बीच बैठीं, कुछ एकांत में, और उन्होंने अपना चेहरा अपनी साड़ी से ढक लिया। श्रीमती टिल, लूसी फोम और श्रीमती प्रैट की दयालु निगाहों, दोस्तों की सहानुभूति और श्रीमती मोस्टिन और उनके पति के हार्दिक समर्थन ने उन्हें ऐसा आत्मविश्वास दिया जिसकी उन्हें उम्मीद भी नहीं थी। मुझे लगता है कि अगर वह अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनतीं तो तुरंत आगे बढ़कर मेज के सामने प्रणाम कर अपनी सरल विधि से प्रार्थना करतीं। लेकिन किसी ने उन्हें ऐसा करते नहीं देखा, और उन्होंने विनम्रता से उस प्रार्थना में भाग लिया जिसे वह अक्सर पढ़ती थीं। श्रद्धा भाव से भरी, उनका हृदय कृतज्ञता से एक प्रकार की मौन प्रसन्नता से भर उठा, जिसका अनुभव उन्होंने पहले कभी नहीं किया था; शांति और मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हुए, युद्ध और अशांति के समय में, और शायद सबसे अधिक उस प्रार्थना में, "जो पश्चातापी हृदय की आह को तुच्छ नहीं समझता", वह अपने भावों को मुश्किल से रोक पाईं। शायद वह पूरी प्रार्थना

में शामिल नहीं हो पाईं, क्योंकि उसकी लंबाई और उसमें होने वाले बदलावों ने उन्हें भ्रमित कर दिया था; लेकिन उन्होंने देखा कि उनके प्रिय मित्रों ने, जो उनके विचारों को सबसे अच्छी तरह जानते थे—जानते थे कि उनका हृदय भक्ति से कितना भरा हुआ था कि अभी तक वह केवल सोच सकती थीं, व्यक्त नहीं कर सकती थीं—उनके लिए कुछ अंश पहले ही चिह्नित कर दिए थे; और उन्होंने उनकी आँखों से धीरे-धीरे गिरते हुए कोमल आँसुओं को देखा, जबकि उनकी श्रद्धापूर्ण निगाहें बीच-बीच में ऊपर उठती थीं और उनके होंठ उनके विचारों में लीन हो जाते थे। उन सभी ने यह भी देखा कि संयोगवश खिड़कियाँ से आती एक किरण उन पर पड़ी और जब तक वह बैठी रहीं, तब तक उन्हें एक प्रकाश से घेरे रही।

“चर्च का शांत होना।” 859 यह एक उत्तम प्रार्थना सभा थी, क्योंकि गिरजाघर का हारमोनियम बचा लिया गया था और उसे लाया गया था, और उस दिन के भजन और स्तोत्र गाए गए थे। श्रीमती प्रैट ने वाद्य यंत्र बजाया, और कुछ सैनिकों और उनकी पत्नियों ने एक सशक्त और स्थिर गायन मंडली बनाई। फिर मधुर संगीत और उनकी मिश्रित आवाजें छत के गुंबदों और नक्काशीदार अलंकरणों के बीच गूंज उठीं, और ध्वनि इतनी बढ़ गई कि सेक्टा पर उसका प्रभाव लगभग अभिभूत हो गया; और एक भजन ऐसा था जिसे वह जानती थी, और जिसमें ग्रेस ने उसे साथ गाने के लिए फुसफुसाया, और सेक्टा ने ऐसा किया, उसकी पूरी समृद्ध आवाज आसपास के कई लोगों के बीच सुनाई दी। शायद अच्छे श्री प्रैट के उपदेश को सेक्टा ज्यादा नहीं समझ पाई, क्योंकि वास्तव में उस उत्कृष्ट दैवीय का भाषण सरल नहीं था, बल्कि नीरस था; लेकिन अन्य लोगों ने इसे समझा, क्योंकि यह व्यावहारिक और समयोचित था, सभी को चेतावनी देते हुए कि बुलाए जाने पर तैयार रहें, उन्हें उन लोगों की याद दिलाते हुए जो पहले ही अन्यत्र हिंसक मृत्यु का शिकार हो चुके थे और सच्चे ईसाइयों की तरह व्यवहार किया था, और उपस्थित सभी को, विशेष रूप से उनमें से लापरवाह लोगों को, उस परमेश्वर पर विनम्रतापूर्वक भरोसा रखने के लिए प्रेरित करते हुए, जिसकी दया पहले ही इतनी स्पष्ट रूप से प्रकट हो चुकी थी। जब उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया, तो शायद अधिकांश लोग चले गए; लेकिन कई लोग बाद की प्रार्थना सभा के लिए रुके रहे, और बारी-बारी से मेज पर गए और रोटी और शराब ग्रहण की। यदि सेक्टा ग्रेस के साथ जाकर वहाँ प्रार्थना कर सकती, तो वह अवश्य करती; लेकिन उनके बीच एक खाई थी, जिसे सेक्टा पार नहीं कर सकती थी, और वह केवल गंभीर

रुचि और आँसुओं से भीगी आँखों से समारोह को देखती रही। शायद ईसाई पूजा और धन्यवाद में भाग लेने की चेतना के साथ मिश्रित आश्चर्य और प्रशंसा ने उसे उस प्रभावशाली समारोह को पूरी तरह से महसूस करने से रोक दिया था जिसे उसने देखा था। घर पहुँचकर वह अपनी छोटी प्रार्थनाशाला में गई, हमेशा की तरह पवित्र अग्नि से राख ली और आदरपूर्वक उससे अपना माथा छुआ, फिर अपने छोटे से वेदी के सामने प्रणाम किया। उस पर कृष्ण की केवल एक ही चांदी की प्रतिमा थी, जिसे उसके दादा और बुआ एला ने पूजा करने के लिए अत्यंत आग्रह के साथ उसे सौंपा था: और अब वह प्रतिमा अपनी नीलमणि आँखों से नींद में झपकी लेती हुई प्रतीत हो रही थी, और उसने अपने स्वयं के प्रार्थना के शब्दों में, जो उसे कंठस्थ थे, उससे प्रार्थना की। लेकिन कुछ समय बाद वे प्रार्थनाएँ उसे ठंडी और भावहीन लगने लगीं। और उनके स्थान पर अनायास ही उसके हृदय में ईसाई विलाप उठने लगा, “हे ईश्वर, दयालु पिता, जो पश्चात्तापी हृदय की आहों और दुखी लोगों की इच्छाओं को तुच्छ नहीं समझते,” और उसने महसूस किया कि ईश्वर की दया से, “शैतान या मनुष्य की धूर्तता और कपट ने उसे वश में कर लिया है।”

360 सेलेटा. सचमुच, उसके लिए सब कुछ नष्ट हो गया था," और वह सुरक्षित थी—उस भयानक हिंसा से सुरक्षित जो होने वाली थी। और मुझे लगता है, जब हिंदू लड़की उठी और अपने पति को अपनी कृतज्ञता बताने के लिए उसके पास गई, तो नूरपुर में उस दिन सीता से ज़्यादा गहराई से यह महसूस करने वाले बहुत कम लोग थे कि भगवान सभी पर कितने दयालु रहे हैं। अध्याय 14. सीता के रिश्तेदार। शाहगंज के बूढ़े बैंकर और आंटी एला ने नूरपुर में हुए विद्रोह की अफवाहें कितनी पीड़ा से सुनी थीं, इसका वर्णन करने का मैं साहस नहीं करता; क्योंकि यह बताया गया था कि सभी अंग्रेज मारे गए थे—कि सरदार और उनके अधिकारी, अपनी सुरक्षा में सभी महिलाओं और बच्चों के साथ, किले से बाहर निकले थे, और पैदल सेना और घुड़सवार सेना, और नवाब की तोपों और सेनाओं से घिरे होने के बावजूद, पूरे दिन बहादुरी से लड़े थे, लेकिन ढेरों मारे गए थे: और शाम तक कोई भी जीवित नहीं बचा था। झांसी और कानपुर के परिणामों को देखते हुए, जो सत्य माने जाते थे और जिनके बारे में उनके संवाददाताओं ने उन्हें विस्तार से लिखा था, नरेंद्र ने सुनी हुई बातों पर पूरा विश्वास किया और दुःख से चूर हो गए। बेचारी आंटी एला ने अपने सिर पर धूल और राख डाली और दयनीय ढंग से विलाप करती बैठी रहीं, सांत्वना देने से

इनकार करती रहीं और असहाय होकर इधर-उधर हिलती रहीं, भोजन त्याग दिया। यदि अंग्रेजों के बारे में खबर भयानक थी, तो सीता के बारे में खबर उससे भी बदतर थी। बताया गया कि सीता को, न्यायाधीश की बहन नामक एक युवती के साथ, नवाब ने अगवा कर लिया था और अपने ज़नाना में रखा था; सीता को तुरंत अहोमदी बना दिया गया था और गाय का मांस खाने के लिए मजबूर किया गया था, और सीता और उस युवती के एकांतवास के बाद उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बेचारी आंटी एला की मृत्यु निकट थी, क्योंकि यह खबर उनके नौकरों द्वारा उन तक पहुंचाई गई थी; और यहां तक कि पुजारी भी कोई मदद नहीं कर सके। आशा या सांत्वना जगाने वाली कोई बात नहीं थी। अगर ऐसा हुआ भी होता, तो त्रासदी इतनी भयानक होती और दुःख की पीड़ा इतनी गहरी होती कि मानवीय सांत्वना असंभव होती; और वास्तव में नरेंद्र और उसके दोस्त ने सोचा कि अगर प्यारी बूढ़ी औरत अपनी पीड़ा के उन्मादी दौर में ही मर जाए, तो यह उसके लिए एक दयालु मुक्ति होगी। “राम! राम! राम!” का जाप थम गया या भुला दिया गया; और उसकी जगह “सीता! ओह, बेहतर होता कि वह मर जाती” के लिए पुकार सुनाई देने लगी। सीता के रिश्तेदार। 361 "एक मुसलमान गुलाम के रूप में दूषित जीवन जीने की बजाय, उसके लिए अपने पति के साथ मर जाना हजार गुना बेहतर होता।" तो क्या अंग्रेज़ सचमुच नष्ट होने वाले थे, या उत्तर में वे पहले ही हर जगह नष्ट हो चुके थे? दक्षिण में तो सब कुछ शांत और सुरक्षित था; लेकिन पुणे और हैदराबाद से बैंकर के पत्र बिल्कुल भी संतोषजनक नहीं थे। नागपुर में पुराने भेस्ले परिवार के सेवक परिवार को फिर से स्थापित करने की साजिश रच रहे थे; और यहां तक कि बंबई में भी भय और अविश्वास का माहौल था। जब ये सारी बुरी खबरें और भी बहुत कुछ लगातार आ रही थीं, और जैसा कि कुछ समय के लिए माना गया था, नूरपुर पर कब्ज़ा हो चुका था, तो नरेंद्र, जो अंग्रेजों के शुभचिंतक थे, सचमुच निराश हो सकते थे। उनके पास शाहगंज में दुष्टों के खुलेआम जश्न का मुकाबला करने के लिए एक भी शब्द नहीं था, न ही उनके चालाक दोस्तों की सलाह थी कि उन्हें तुरंत अपने काम निपटाकर बनारस चले जाना चाहिए, जहां वे सुरक्षित रहेंगे; लेकिन बूढ़ा आदमी फिर भी दृढ़ और साहसी था, और वहीं रुका रहा। उन्हें अपने मन में कोई संदेह नहीं था कि यह सारी बुराई टल जाएगी। समय आने पर, और जब मानसून समाप्त होगा, तो दक्षिण और पश्चिम से अंग्रेज आगे बढ़ेंगे और विद्रोहियों को उस लूट से खदेड़ देंगे जिस पर वे अब मौजमस्ती

कर रहे थे; लेकिन शाहगंज में, हालांकि कई लोगों को उम्मीद थी, वामन भूत को छोड़कर शायद ही कोई ऐसा था जो नरेंद्र की तरह सोच सकता था। इसलिए बूढ़ा आदमी तब तक आशावान और आश्वस्त था जब तक नूरपुर से खबरें नहीं आईं, जिसने उसे पूरी तरह से तोड़ दिया। सिरिल ब्रैंडन की मृत्यु हो गई, और उसका प्यारा बच्चा अपवित्रता में चला गया! मैं यह समझने की कोशिश करता हूँ कि इस विश्वास के तहत इन दो प्रेममय दिलों की पीड़ा कितनी तीव्र रही होगी, जब तक यह कायम रही, और मेरे अपने विचार मुझे रोक देते हैं, जो उनके विचारों का अनुसरण नहीं कर सकते। और यह सुनार के घर पर आई एकमात्र मुसीबत नहीं थी। जब उसने नूरपुर में विद्रोह के बारे में सुना, शाहगंज में फैली सभी अतिशयोक्तियों के साथ, राजा हुरपेल सिंह ने अपनी आदत के आलस्य को त्यागकर, देखा कि अब हमला करने का समय आ गया है। दूर-दराज से कुछ सिपाही विद्रोही आए थे। उसके उद्देश्यों के लिए पर्याप्त संख्या में सैनिक उसके साथ जुड़ गए थे। उसकी अपनी सेना लूटपाट के लिए तैयार थी, और उसने नूरपुर प्रांत में अपना हिस्सा सुरक्षित करने के लिए तुरंत कूच किया। यह एक ऐसी होड़ थी जिसमें सबसे मजबूत और सबसे सक्रिय व्यक्ति को सबसे अधिक लाभ मिलता; और शाहगंज को नजरअंदाज किए जाने की संभावना नहीं थी। राजा रामदास के साथ कुछ समय से गुप्त पत्राचार कर रहा था; और उस धूर्त व्यक्ति ने पहले ही उन लोगों को मार डाला था जिनसे सबसे अधिक चंदा वसूला जा सकता था। इनमें से नरेंद्र का बचना असंभव था; और जब राजा ने कई हजार सैनिकों और तोपखाने के साथ अचानक हमला किया, तो

 शाहगंज पर कब्ज़ा करने के बाद, वहाँ पहरा दे रहे कुछ पुलिसकर्मियों को खदेड़कर या तलवार से मार डालने के बाद, स्थानीय अधिकारी रहे दुर्भाग्यशाली तहसीलदार को फाँसी पर लटका दिया गया। राम दास विजेता के साथ गया और कर वसूली का आकलन किया। नरेंद्र से अत्यधिक वसूली करना उसकी नीति नहीं थी, क्योंकि उसका एक और अधिक प्रभावी उद्देश्य था, उसके पूरे व्यवसाय और संपत्ति पर कब्ज़ा करना; और बैंकर से राजा की दस हजार रुपयों की माँग का भुगतान तुरंत कर दिया गया, कुछ नकद में और कुछ बनारस और मिर्जापोवुर के नोटों में, जो आसानी से विनिमय योग्य थे। शायद अगर राम दास को बैंकर के गुप्त खजाने के बारे में पता होता, तो न तो वह और न ही राजा उसे इतनी आसानी से छोड़ते; लेकिन उसे पता नहीं था, और बैंकर के किसी भी कर्मचारी को इसके बारे में पता नहीं था, सिवाय

राठौर परिवार के, जो अब नूरपुर में अनुपस्थित है, जिसकी वफादारी को कोई भ्रष्ट नहीं कर सकता। फिर भी नरेंद्र की हालत निश्चिंत नहीं थी और वह उस व्यक्ति के बेईमान चरित्र से भयभीत था जिसके अधीन वह अब था। यदि राम दास खजाने का पता नहीं लगा सका, तो कम से कम वह जिले भर के लोगों से बकाया राशि और ऋण का पता लगा सकता था; वह मिर्जापुर, उमरावट्टी, बॉम्बे, पुणे और अन्य एजेंसियों के खातों की स्थिति का भी पता लगा सकता था; और नरेंद्र के सबसे भरोसेमंद क्लर्कों में से एक का राम दास को इन मामलों से संबंधित पुस्तकों और कागजातों का पता बताना घोर कृतघ्नता थी। क्योंकि नरेंद्र स्वयं अब अपने ही घर में कैदी बन गया था, सीता के पुराने कमरे में रह रहा था, जहाँ उसकी यादें उसके अन्य दुखों को और बढ़ा रही थीं; और चाची एला को ऊपरी गलियारे के एक कमरे में भेज दिया गया था, जब राम दास के व्यवहार से क्रोधित होकर और अपनी पुरानी शिकायतों को भूलकर, उसने राम दास पर ताने और अपशब्दों की बौछार कर दी थी; उसने ऐलान किया कि वह उसके भाई की हत्या उसी तरह कर रहा है जैसे उसने हुरे दास की हत्या की थी, और अंग्रेजों के लौटने पर वह उससे बदला लेगी। राम दास का जवाब क्या था, यह बताने की ज़रूरत नहीं; वह न तो संयमित था और न ही शालीन; और बुढ़िया की पवित्रता के बावजूद, उसे ऊपर ले जाया गया, वह संघर्ष कर रही थी और ज़ोर-ज़ोर से लात मार रही थी, लेकिन अपने घृणित उत्पीड़क के सामने बेबस थी। इससे भी बुरा यह हुआ कि वह पवित्र अग्नि, जिसकी देखभाल शो लाड अपने भाई के घर आने के बाद से कर रही थी, बुझ गई, और बिना किसी विशेष विधि के उसे दोबारा नहीं जलाया जा सकता था: और इस तरह उस प्यारी बुढ़िया के दुख का प्याला भर गया; इतना भर गया कि उसका मन उस समय एक अजीब सी उथल-पुथल में था, जिससे उसकी वाणी बहुत ही विचित्र और कष्टदायक तरीके से प्रभावित हो रही थी, और वह सांत्वना के प्रति बिल्कुल असंवेदनशील हो गई थी, यहाँ तक कि उस थोड़ी सी सांत्वना के प्रति भी जो उसका भाई—क्योंकि वामुन भूत का आना-जाना अब प्रतिबंधित था—उसे दे सकता था।

सीता के रिश्तेदार। 863 शहर में नरेंद्र की तरह ही, या शायद उससे भी बदतर हालत में, और भी लोग थे। छोटे बैंकर और साहूकार, जिनकी आमदनी सीमित थी, बुनकर, राशन व्यापारी, तांबे और पीतल के कारीगर, अनाज व्यापारी, कपड़ा व्यापारी, संक्षेप में कहें तो वे सभी व्यापार जो उस जगह की सामाजिक ज़रूरतों को पूरा करते थे;

किसान, ज़मींदार जो वहाँ रहते थे, और आम तौर पर वे सभी लोग जिनसे छोटी से छोटी रकम भी वसूली जा सकती थी, उन्हें देने के लिए मजबूर किया जाता था। मैं मजबूर इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि फाँसी पर लटकाए गए तहसीलदार की सार्वजनिक अदालत में बैठे राजा और उनके दरबारी कई दिनों तक अपनी ही अनोखी और चालाकी भरी तरीकों से लोगों को ठगते रहे: यानी, उन्हें धूप में तंबू के खूंटों से हाथ-पैर बाँधकर लिटाते, उनकी छाती पर पत्थर रखते, और भी बहुत कुछ। लेकिन शायद मुझे यातना के उन सभी तरीकों का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है, जिनके बारे में लोग सोचते थे कि वे अंग्रेज़ों के ज़माने में मौजूद नहीं थे। कस्बे में मुसलमान ज़्यादा नहीं थे, लेकिन कुछ हिंदुओं का उनसे पुराना झगड़ा था, और अब पुराने हिसाब चुकता करने का समय आ गया था। इसलिए राजा, जो मुसलमानों से नफ़रत करता था, ने एक सूअर मंगवाया और मस्जिद में उसका गला कटवा दिया, उसका खून मस्जिद के मेहराबों और मंच पर मल दिया, और उस जगह को पूरी तरह अपवित्र कर दिया। मुसलमानों के अनुसार, अंग्रेजों ने कभी ऐसा कुछ नहीं किया था। दरअसल, कुछ ही महीने पहले श्री ब्रैंडन ने उनके स्कूल के लिए अनुदान दिया था, जिससे स्कूल का विस्तार होना था और नई किताबें खरीदी जानी थीं; उन्होंने लड़कों की परीक्षा ली थी और उन्हें मिठाई की दावत दी थी, क्योंकि वे उन्हें पसंद आए थे; और ये बातें भूली नहीं जा सकती थीं। लेकिन अब वे सब बेबस थे। शाहगंज के आसपास के गाँव भी कस्बे से ज़्यादा बेहतर हालत में नहीं थे। राम दास और उसके एजेंट राजस्व संग्रहकर्ताओं के रूप में विशेष रूप से सक्रिय थे, और अग्रिम भुगतान के लिए उन पर लगाए गए दबाव से बचना नामुमकिन था। आगामी वर्ष के संग्रह। और इससे बहुत से लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ा, उन्हें अपने मवेशी और पारिवारिक गहने, उनकी कीमत से कम दाम पर, लालची साहूकारों को बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। खैर, मुझे शायद और अधिक विपत्तियों का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अराजकता और अव्यवस्था इतनी व्यापक थी मानो वहाँ कभी कोई अंग्रेज़ रहे ही न हों। यह व्यावहारिक रूप से पुराने समय के शासन की वापसी थी। वही पुराना अच्छा नियम, वही सरल योजना, कि जिनके पास सत्ता है वे ले लें, और जिनके पास है वे रख लें। और आश्चर्य की बात यह थी, यदि यह आश्चर्यजनक था, कि यह परिवर्तन केवल कुछ ही दिनों में हुआ। और अनगिनत लुटेरे, डाकू और चोर हर दिशा में फैल गए, और कहीं भी शांति नहीं रही।

304 सीता। कुछ दिनों बाद बैंकर और आंटी एला को शांति मिल गई; ऐसी पूर्ण और आनंदमय शांति कि उनके द्वारा झेली गई और सहन की जा रही सभी परेशानियाँ हवा में उड़ गईं। नूरपुर में धन्यवाद समारोह के ठीक अगले दिन, बुलदेव और राठौरों में से एक, नरेंद्र के खजाने के वाहकों में से एक के साथ, जो नूरपुर में एजेंट के साथ था, बैंकर के लिए विशेष संदेश लेकर उस शहर से रवाना हुए; और नूरपुर के अन्य बैंकरों ने शाहगंज में अपने संवाददाताओं को पत्र भेजने का अवसर लिया। सीता वास्तव में विद्रोह के तुरंत बाद अपने दादा को पत्र लिखकर अपनी सुरक्षा का आश्वासन देना चाहती थी; लेकिन नवाब के पहले कार्यों में से एक सभी चौकियों को बंद करना, संदेशवाहकों को भगाना और नूरपुर की चौकी को बाहरी दुनिया से किसी भी प्रकार का संपर्क रखने से रोकना था; और इस प्रकार सीता को तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जब तक कि एजेंट ने सैनिकों के प्रेषण को अपेक्षाकृत सुरक्षित नहीं मान लिया। उन सभी को शाहगंज तक जाने वाले घने जंगलों के गुप्त रास्ते पता थे, जिनके निवासियों से वे आम तौर पर डरते नहीं थे; लेकिन अब, हर कोई अपने पड़ोसी के खिलाफ था, और अत्यधिक सावधानी बरतना आवश्यक था। लेकिन अंत में, उन लोगों की बुद्धिमत्ता और साहस की जीत हुई। उनका अंतिम विश्राम स्थल वह एकांत मंदिर की गुफा थी जहाँ से इस कहानी की शुरुआत हुई थी, और उन्होंने अत्यंत सावधानी से शाम को शाहगंज में प्रवेश किया। बुलदेव, घर के गुप्त रास्तों से अनजान, अपने कीमती पैकेट को पहुँचाने में बहुत असमंजस में था; लेकिन अंततः, उसे जानने वाली एक महिला नौकरानी उसे पिछवाड़े से एक छोटी सी सीढ़ी से ऊपर ले गई; और खुशी से चिल्लाते हुए, उसने पार्सल बूढ़े आदमी के चरणों में रख दिया। “वे ठीक हैं,” उसने कहा, “ठीक और सुरक्षित; किसी भी अंग्रेज को कोई नुकसान नहीं पहुँचा है, और वे नूरपुर में पहले से कहीं अधिक मजबूत हैं!” नरेंद्र ने पहले तो उदास होकर उस बिस्तर से ऊपर देखा जिस पर वह लेटा हुआ था। बुलदेव का चेहरा उन्हें पहचान में नहीं आया था, या वे उसे भूल गए थे: लेकिन उन्हें मुकदमे के दौरान उसकी ऊँची, फटी हुई आवाज़ याद थी, और वे चौंककर बिना कुछ बोले पैकेट लेकर कांपते हाथों से उसे खोलने लगे। तभी, आंटी एला, जो अब पहले से कहीं अधिक दुबली-पतली हो गई थीं, एक अजीब सी आवाज़ सुनकर अपनी लाठी का सहारा लेकर लड़खड़ाती हुई अंदर आईं: और जब बुलदेव ने आदरपूर्वक उनके पैर छुए और नरेंद्र की ओर इशारा किया, तो उन्होंने देखा कि उनके हाथ में एक पत्र था, और वे बहुत कांप रहे थे,

लेकिन उनका चेहरा विजय की खुशी से भरा हुआ लग रहा था। जैसे ही उन्होंने उन्हें देखा, उन्होंने अपनी दोनों बाहें उनकी ओर फैला दीं; “एला! बहन! वे जीवित हैं,” वे चिल्लाए, “वे जीवित हैं! आओ और सुनो।” लेकिन घृणा और खुशी उस प्यारी, स्नेहशील बूढ़ी औरत के लिए असहनीय थी; ऐसा लग रहा था जैसे वह थम सी गई हो, क्योंकि उसके चेहरे के भाव कांप रहे थे, और वह
सीता के रिश्तेदार। 865 — सीता ज़मीन पर गिर पड़ीं, लेकिन बुलदेव की मज़बूत बाहों ने उन्हें सहारा दिया और धीरे से लिटा दिया। उन्हें होश आने में काफ़ी समय लगा, और एक समय तो सभी को लगा—क्योंकि उनकी औरतें उनके पास आ गई थीं —कि वे मर गई हैं; लेकिन उनकी साँसें रुक-रुक कर वापस आईं, और थोड़ा पानी पीने के बाद, उन्होंने विनती भरी नज़रों से ऊपर देखा और खुद को उठाया, हालाँकि वे बोल नहीं पा रही थीं और काँप रही थीं। “मर गईं? सब मर गए?” उन्होंने हाँफते हुए पूछा। “नहीं मरीं, एला,” नरेंद्र ने कहा, “और न ही कोई चोट आई है,” और उन्होंने बहुत धीरे-धीरे कहा ताकि वह धीरे-धीरे समझ सकें, “बल्कि सुरक्षित हैं, बहन, सुरक्षित! देखो! यह सीता का पत्र है; यह श्री ब्रैंडन का है। देखो! ओह! हम भगवान का कितना धन्यवाद करें!” प्यारी चाची फिला! यह धन्य सत्य, सुरक्षा का आश्वासन, उनके मन में धीरे-धीरे आया। वह रोईं; वह हँसीं; उन्होंने पत्रों को अपने सीने से लगाया और उन्हें गले लगाया; उसकी आँखों में आँसू बह रहे थे, और उसने उन्हें चूमकर ढँक लिया। शो ने अपने भाई की ओर बाहें फैलाईं और उसकी गर्दन पर गिरकर सिसकियाँ भरीं, कभी रोई तो कभी हँसी, मानो वह व्याकुल हो गई हो। ओह! उन दोनों को जो खुशी मिली थी! वह इतनी भरपूर, इतनी परिपूर्ण, इतनी अवर्णनीय थी कि उसे परिभाषित करने का प्रयास करना पाप होगा, क्योंकि हम जानते हैं कि उन कुछ दिनों में भी उन्होंने क्या सहा था, जिसने लगभग उनके दिलों से जीवन निचोड़ लिया था। और जब वे शांत हुए, तो नरेंद्र ने उन्हें मिले पिछले पत्रों को बार-बार पढ़ा; सीता का पत्र विस्तृत और वर्णनात्मक था, और ब्रैंडन का पत्र कोमल और कृतज्ञता से भरा था कि सभी सुरक्षित हैं। अंत में उसने लिखा था, “हिम्मत रखो, हम न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि यहाँ पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, अब सभी वफादार और सच्चे हैं। शाहगंज में हर किसी को यह बताओ, और हमारे साथ आभारी रहो कि 1914 का तूफान हमें बिना किसी नुकसान के पार कर गया।” जल्द ही, शायद, हमारे पास विद्रोहियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए सेना होगी, और पुरानी शांति बहाल हो

जाएगी।” उन्हें उनके उत्साहवर्धक शब्दों पर कोई संदेह नहीं था, और वे अपनी कारों में ऐसे घंटी बजाने लगे मानो लेखक स्वयं उनके साथ मौजूद थे और उन्होंने ही ये शब्द कहे हों। पूरी रात वे बुलदेव के साथ बैठे रहे, और जो कुछ हुआ था, वह सब सुना, और यह भी कि मामा जुमेक्ला की मृत्यु कैसे हुई; सैनिकों ने कितनी बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, और अंग्रेज़ सैनिकों के रहते हुए किला कितना सुरक्षित और मजबूत था। जैसे ही सुबह हुई, आंटी एला खुद को रोक नहीं पाईं; मानो उनमें नया जीवन और नई शक्ति आ गई हो, और अपने भाई को, जो गहरी नींद में सो गया था, बिना बताए, उन्होंने अपनी लाठी उठाई और अपनी पुरानी आदत के अनुसार मंदिर चली गईं; और वामुन भूत ने उन्हें गर्भगृह में मूर्ति के सामने झुकी हुई, रोती हुई, लेकिन धन्यवाद देते हुए पाया, और थोड़ी देर बाद, उन्होंने सुना
366 सीता। सारी खुशखबरी उसके होठों से निकल गई। जब वह लौटी, तो उसने देखा कि नरेंद्र पत्रों के उत्तर लिख रहा था, क्योंकि बुलदेव जाने के लिए बेचैन था और दिन भर के लिए अपने छिपने के स्थान पर चला गया था। उसने कहा, "वह रात में संदेशों के लिए आएगा।" जहाँ तक आंटी एला की बात है, मुझे लगता है कि पुरानी बातें असामान्य उत्साह के साथ फिर से शुरू हो गईं, और जैसे-जैसे उसने अपनी दीवार पर गिनती बढ़ती देखी, वह पहले से कहीं अधिक आश्वस्त हो गई कि उसे "राम" से कितना बड़ा उपकार मिला है। इस बीच, फुत्चपुर में काफी अशांति और हलचल मची हुई थी। पूर्व हवलदार गोर बक्स ने, "कर्नल" के पद पर रहते हुए, तोपखाने और तोपखाने के अपने पेशेवर ज्ञान के बल पर, नवाब की कई पुरानी तोपों की मरम्मत करवाई थी, जो लंबे समय से अप्रयुक्त और जंग लगी हुई थीं, लेकिन फिर भी धीमी गति से चलाने पर कामचलाऊ थीं। वह विद्रोहियों से उलझने की हिम्मत नहीं कर रहे थे, जो अक्सर आपस में ही मतभेद रखते थे। एक गुट नाना या झांसी के रांस में शामिल होने के लिए तुरंत मार्च करने पर अड़ा हुआ था; दूसरा गुट पूर्व हवलदार की सलाह को मानते हुए वहीं रुकने और बारिश खत्म होने के बाद ही आगे बढ़ने को उचित ठहरा रहा था, और उन्होंने वादा किया था कि अगर वे रुकेंगे तो उनके पास करने के लिए काफी कुछ होगा। नवाब की स्थिति नदी में इधर-उधर तैरते तिनके के समान थी। वह अपनी दोनों पत्नियों की नजरों से गिर चुके थे, हालांकि एक पत्नी नरम पड़ रही थी। उन्होंने अपनी सबसे भरोसेमंद और सलाहकार मामा जुमीला को खो दिया था; वह मिस्सी मोस्टिन को अपने साथ नहीं रख पाए थे। सीता को

अज़राइल पांडे को सौंपने में असमर्थ रहे, जो विद्रोह के उत्साह और इस घोर निराशा के बाद कि "मातृभूमि" में कोई अंग्रेज़ रक्त नहीं बहा, अपने पुराने मंत्रों का जाप करने लगा था और शायद ही कभी ज़मीन के ऊपर दिखाई देता था; और जब वह दिखाई देता था, तो वह चिड़चिड़ा और क्रूर होता था, और उसके साथियों द्वारा उसे बड़ी मुश्किल से नियंत्रित किया जाता था। विद्रोही रेजिमेंट के कुछ सैनिकों ने नूरपुर जाकर वफादार रेजिमेंट को भड़काने की स्वेच्छा से पेशकश की थी; लेकिन दो को -वें के सैनिकों ने पकड़ लिया था, एक को शहर में छिपी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, और इन पर तुरंत मुकदमा चलाया गया, और उस समय के प्रचलित रिवाज के अनुसार तोपों से उड़ा दिया गया। जब "कर्नल" की तैयारियाँ पूरी हो गईं, तो वह नवाब की सेना के साथ फतेहपुर से निकला और किले की घेराबंदी करने की कोशिश की; लेकिन वह पुरानी तोपों और हथौड़े से बने गोलों के साथ बुरी तरह असफल रहा, और गैरीसन हमेशा सक्रिय और सतर्क रहता था, और किले की तोपों द्वारा अच्छी तरह से सुरक्षित था। स्टेशन की आड़ में, वे कभी-कभी दुश्मन की तोपों का प्रतिनिधित्व करने वाले मिट्टी के टीलों पर जोरदार हमले करते थे, और एक बार उन्होंने उन तोपों में से एक पर कब्जा कर लिया जिसे "कर्नल" समय पर नहीं ले जा सका था। इस प्रकार, लगातार झड़पें चल रही थीं, जिनमें ब्रैंडन और
सीता के रिश्तेदार। श्री नोबल और उनके बलवान पुलिसकर्मियों ने जेल की विशेष चौकी की रक्षा में सक्रिय भूमिका निभाई, जिसके लिए वे पर्याप्त संख्या में मौजूद थे। सीता को भी पीछे नहीं छोड़ा गया। चाहे कितनी भी मुश्किल हो या थकान, इस सक्रिय लड़की ने हर चुनौती का सामना किया; और उसकी सुरक्षा, जैसा कि अपेक्षित था, सैनिकों के लिए सम्मान की बात बन गई। अक्सर अंग्रेज़ सैनिकों और वफादारों से नूरपुर तक विद्रोहियों का पीछा करने और उस स्थान पर कब्जा करने की अनुमति मांगी जाती थी, जहाँ से लगातार उपद्रव हो रहा था; लेकिन ब्रिगेडियर सतर्क थे और किले और छावनियों की रक्षा में उनके आचरण से पूरी तरह संतुष्ट थे। लेकिन नवाब को लगा कि नूरपुर पर कब्जा करने के इन निष्फल प्रयासों में समय बर्बाद हो रहा है, और जब राजा हुरपेल सिंह की सफलताओं और भारी मात्रा में धन संग्रह की खबर उन्हें मिली, तो उन्होंने सख्ती से कार्रवाई करने का संकल्प लिया। मौलवी साहब को एक तरफ भेजकर, उन्होंने स्वयं दूसरी दिशा में मोर्चा संभाला और वहाँ मौजूद कुछ पुलिसकर्मियों को खदेड़ दिया, अपने एजेंट नियुक्त किए और घोषणा जारी की कि

नवाब को सम्राट द्वारा नियुक्त किए जाने के कारण वह नूरपुर जिले के स्वामी बन गए हैं और सभी को उनका आज्ञापालन करना होगा। शायद इन कार्रवाइयों का उल्लेख करना उचित नहीं है, क्योंकि इनका राजा हुरपाल सिंह की पहले से उल्लिखित कार्रवाइयों के परिणामों से कोई खास अंतर नहीं था। और यदि नवाब कुछ हद तक राजा की तुलना में जनता के प्रति अधिक सजग थे, तो मूल रूप से शायद उनमें या उनके द्वारा उत्पन्न अराजकता में कोई खास अंतर नहीं था। यदि निरंतर झड़पें और कभी-कभार उनके सिर के ऊपर से गुजरने वाली गोलियों की हल्की सी आवाज न होती, तो नूरपुर की चौकी वास्तव में जितनी थी उससे भी अधिक नीरस होती। बाहर से कोई खबर नहीं आती थी, और यहाँ तक कि देशी संदेशवाहकों के संदेश, जिनका बाबा साहब हमेशा विवरण एकत्र करते थे, भी नीरस और महत्वहीन हो गए थे। या तो उनके पत्र-व्यवहार करने वाले लोग इस बदलाव के अभ्यस्त हो गए थे, या फिर कुछ ऐसी घटनाएँ घट रही थीं जिनके बारे में लिखने की हिम्मत वे नहीं कर पा रहे थे। सैनिक शायद सबसे अधिक संतुष्ट थे, क्योंकि उनके पास किताबें, क्रिकेट और मनोरंजन के सभी साधन थे, और उन्होंने एक नाटक और संगीत कार्यक्रम भी आयोजित किया, जिसमें हमारी प्यारी श्रीमती मोस्टिन और ग्रेस, सिरिल और कैप्टन हॉब्सन, जो अपने बाएं हाथ में स्लिंग पहने हुए बहुत दिलचस्प लग रहे थे, ने कुशलतापूर्वक और अच्छे से सहयोग किया, और सीता एक शांत कोने में मौजूद थीं। बाकी समाज के बारे में, शायद जितना कम कहा जाए उतना ही अच्छा है; इस तरह बंद माहौल में रहने वाले लोग छोटी-मोटी ईर्ष्याओं, गुटों में उतार-चढ़ाव और एक-दूसरे के बारे में राय में बदलाव के शिकार होते हैं।

368 SLETA, जिसे एक सामान्य खतरा भी नहीं रोक सकता; और मुझे लगता है कि हमारा समूह सबसे सुखी था, क्योंकि उसने अपने पड़ोसियों के मामलों में दखल नहीं दिया और विनम्रता और सभी के प्रति शिष्टाचार के साथ अपना काम किया।

अध्याय 15. मृत्यु तक वफादार। किले में धीरे-धीरे अशांति बढ़ती जा रही थी; यहाँ तक कि छिटपुट झड़पों का रोमांच भी थम गया था, क्योंकि नवाब और उनकी सेना जिले में विजयी प्रगति कर रहे थे और काफी दूरी पर पहुँच चुके थे, और उनका फतेहपुर लौटने का कोई इरादा नहीं दिख रहा था। राजा हुरपाल सिंह की गतिविधियों पर नज़र रखी जा रही थी, जिनके अनुयायियों ने उनकी सेना के एक दल पर हमला किया था, और नवाब और मौलवी दोनों का आक्रोश चरम पर था जब शाहगंज मस्जिद

के पुजारी हाथों में जलती मशालें लिए और कफ़न पहने शिविर में आए, उन्होंने अपने सिर पर राख डाली और शाहगंज मस्जिद के अपमान के लिए न्याय की मांग की। "आप राजाओं के राजा के प्रतिनिधि हैं," मुख्य प्रतिनिधि ने कहा, "जिन्होंने हम सभी को आपके हवाले किया है; और हम उन काफिरों से न्याय की उम्मीद करते हैं जिन्होंने यह अन्याय किया है। अंग्रेजों के समय में ऐसा अत्याचार असंभव होता।" और पिछले साल तो उन्होंने हमें भरपूर दान भी दिया था। आओ और धर्म के इस अपमान का बदला लो, वरना हम भीख मांगते हुए दिल्ली जाएंगे और राजाओं के राजा को अपनी शिकायतें सुनाएंगे! दोहाई! दोहाई!" नवाब बेहद दुखी और असमंजस में थे। जब उनके अपने राज्य में ऐसी घटनाएँ घटी थीं, जैसा कि पहले भी हो चुका था, तो उन्होंने मामलों को अपने हाल पर छोड़ दिया था, या केवल तभी हस्तक्षेप किया था जब उन्हें लगा कि वे काफी मजबूत हैं। लेकिन यह एक प्रतिद्वंद्वी का जानबूझकर किया गया अपमान था—एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी जिसके साथ पुरानी दुश्मनी अभी खत्म नहीं हुई थी —एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी जिसकी शक्ति के विरुद्ध उनके योद्धा पूर्वजों ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। क्या अब उनकी बारी भी यही करने की थी? निश्चित रूप से, वे उस झगड़े से बच नहीं सकते थे जो उन पर थोपा गया था; और फिर भी उनकी सेना के सेनापति हिंदू थे। कर्नल गोर बक्स और अजराइल पांडे ब्राह्मण थे; सेनापति मेजर, जिसे वे बर्खास्त करने या नाराज करने की हिम्मत नहीं कर सकते थे, वह भी ब्राह्मण था। विद्रोह करने वाले अधिकांश सिपाही ब्राह्मण और राजपूत थे; यदि उन्हें कोई प्रलोभन होता तो वे सभी हुरपेल सिंह से मिल जाते, या रानी के पास चले जाते। "मृत्यु तक वफादार। | 369 झांसी। और अगर वे चले गए, तो उसका क्या होगा? उसकी अपनी स्थानीय सेना, अनुशासनहीन और निकम्मी, वह अच्छी तरह जानता था कि किसी भी दिन नवोरपुर में अंग्रेजी सेना द्वारा पराजित हो सकती है। फुट्तेहपुर पर कब्जा हो सकता था, और वह खुद एक दयनीय भगोड़ा बन सकता था। यह सब उसके परेशान मन के सामने एक पल में गुजर गया, जबकि शाहगंज के प्रतिनिधि उसके तंबू के बाहर तेज धूप में अपनी मशालें लहरा रहे थे और मुट्ठी भर धूल हवा में उछालते हुए चिल्ला रहे थे, "दोहाई! दोहाई!" और न्याय के लिए अल्लाह और पैगंबर से दुआ मांग रहे थे! मौलवी—जो नवाब के भीतरी तंबू में बैठकर घोषणाएँ तैयार कर रहा था और बादशाह को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से संदेश लिख रहा था, जिसमें इस बात का विस्तृत वर्णन था कि महाराज के नाम पर प्रांत पर कैसे कब्ज़ा किया गया था

—शोर सुनकर आगे आया और जल्द ही उसे सच्चाई का पता चल गया; और धर्म के प्रति उसका जोश अचानक भड़क उठा। “दिल खान, क्या तुम हिचकिचा सकते हो कि तुम्हें क्या करना चाहिए, जबकि इन सच्चे विश्वासियों की चीखें तुम्हारे कानों में गूंज रही हैं? तुरंत शाहगंज पर चढ़ाई करो और इन काफिरों का नाश करो: या मुझे अपने कुछ आदमी दो जो मेरे साथ धर्म के लिए लड़ेंगे और मुझे जाने दो। दीन! दीन!” उसने अपनी पगड़ी फेंक दी और उत्तेजित भीड़ में नंगे बदन घुसते हुए चिल्लाया, दाहिना हाथ ऊपर उठाकर और जेब में रखी कुरान को हवा में लहराते हुए बोला, “दीन! दीन! जो भी धर्म के लिए मेरा अनुसरण करेगा, वह पवित्र पुस्तक पर शपथ खाकर कहे कि न्याय विफल होने पर वह मर जाएगा। चलो, मेरे बेटों, इस अपमान का बदला लें।” उसका यह जोशीला नारा व्यर्थ नहीं गया। भला कौन सा मुसलमान इसे नकार सकता था? इसलिए, शिविर के चारों ओर से नाईदिया योद्धा आगे बढ़े, और घुड़सवार सेना के जवान भी उनके प्रभाव में आ गए, और थोड़े ही समय में मौलवेक के चारों ओर एक हजार कट्टरपंथी जमा हो गए, जिन्हें उसने मिट्टी के एक छोटे से टीले पर खड़े होकर, शहीद होने वालों के लिए स्वर्ग के सुखों पर एक छोटा सा उपदेश या भाषण दिया; और उसे कर्कश आवाजों में “आमीन! आमीन!” सुनाई दिया। इस उपद्रव को रोकने में नवाब पूरी तरह से लाचार थे; और शायद वे न केवल मौलवी की अनुपस्थिति से, बल्कि उनके द्वारा स्वयं चुने गए एक खतरनाक कर्तव्य में उनकी व्यस्तता से भी मन ही मन प्रसन्न थे। शाह गुंजे और उस जिले की पुनः प्राप्ति, जिस पर हुरपाल सिंह का अधिकार था, उनकी विजय को सुदृढ़ करने की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम था; और सफल होने पर उस संत पुरुष को जागीर देने का वादा उनके उत्साह को और भी बढ़ा रहा था। शायद मुझे आगे की घटनाओं का विस्तृत वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। इतना कहना ही पर्याप्त है कि तीसरी रात को शाह गुंजे पर पूर्ण आश्चर्य हुआ। राजा हुरपाल सिंह वास्तव में निश्चिंत नहीं थे, बल्कि 370 सीता। उसके लेफ्टिनेंट को पकड़कर फांसी दे दी गई, उसके आदमियों को खदेड़ दिया गया और कई मारे गए, और विजय के उल्लास में, क्रूर मुस्लिम कट्टरपंथियों ने वामन भूत के सुंदर मंदिर में एक गाय की बलि दी, मूर्ति को उलट दिया, उसके चेहरे पर खून पोत दिया, और उस स्थान को उसी तरह अपवित्र कर दिया जैसे पहले मिसकुओ को अपवित्र किया गया था। तब मौलवी ने घोषणा की कि कोई भी इलिंदू अपने माथे पर जाति चिह्न के साथ प्रकट नहीं होगा, घंटियाँ नहीं बजाई

जाएंगी, न ही शंख बजाए जाएंगे, और इन आदेशों का उल्लंघन करने पर शहर के सभी मंदिरों को उड़ा दिया जाएगा। मैं नवाब को विजय के बारे में उस पवित्र व्यक्ति की रिपोर्ट का अनुवाद करने के लिए लगभग प्रलोभित हूँ, जिसे उन्होंने अपने सबसे भव्य और विद्वतापूर्ण तरीके से तैयार किया था; लेकिन फारसी और अरबी के उद्धरण बहुत अधिक हैं, और शायद मेरे पाठक मुस्लिम कट्टरपंथ के इतने बुरे रूप के इस उल्लेखनीय उदाहरण में रुचि नहीं लेंगे। यदि शाहगंज पर कब्ज़ा इस इतिहास से जुड़े पात्रों से सीधे तौर पर संबंधित न होता, तो शायद इसे पूरी तरह से छोड़ दिया जाता। आज भी, मैं इस घटना को केवल उस समय के प्रभाव के रूप में देखता हूँ; कैसे धार्मिक द्वेष, जो इतने लंबे समय से सुप्त थे, कई स्थानों पर जागृत हो गए और लोगों पर भयानक कष्ट और अपमान का कारण बने—जो उस समय व्याप्त अराजकता का प्रमुख और कष्टदायक हिस्सा बन गए। यदि हुरपाल सिंह के सैनिकों की ज्यादतियाँ बड़ी थीं, तो मौलवियों की ज्यादतियाँ उससे भी बदतर थीं; और धूर्त राम दास, उस महान व्यक्ति को एक सुंदर "नुज्जर" या भेंट देकर, उसके विश्वासपात्र बन गया और पहले की तरह ही जबरन वसूली का निर्देश देता रहा। इस प्रकार, शाहगंज में सभी की स्थिति, उत्तेजित मुस्लिम सैनिकों का उग्र आचरण और मौलवियों की असहिष्णुता और जबरन वसूली, दिन-प्रतिदिन असहनीय होती जा रही थी। इस बीच, जैसा कि मैंने इस अध्याय की शुरुआत में उल्लेख किया था, नूईपुर के किले में जीवन दिन-प्रतिदिन थकाऊ होता जा रहा था। कुछ हद तक पार्टी का माहौल बढ़ गया था, और छोटी-मोटी ईर्ष्याओं के कारण हर तरह के मनोरंजन में बाधा आने लगी थी। ऐसे भी दिन थे जब सभी लोग मेस में एक साथ भोजन करते थे, जहाँ जिन्हें ऐसा करना पसंद होता था, उन्हें मटन के टुकड़ों, मुर्गे के पंखों या टांगों, और करी में विशेष हड्डियों में पक्षपात देखने को मिलता था। या, यदि वे घर पर भोजन करते थे, तो मेहमानों का कहना था कि मांस दिन-ब-दिन खराब होता जा रहा है, और मांस के टुकड़ों का वितरण शर्मनाक रूप से पक्षपातपूर्ण और भेदभावपूर्ण है। ये छोटी-मोटी असंतुष्टियाँ पहले तो दूर क्षितिज से उठते छोटे बादलों की तरह थीं, और कुछ समय के लिए गायब हो जाती थीं; लेकिन फिर वे घनी हो जाती थीं, और कभी-कभी गरज की तरह फूट पड़ती थीं। दो अन्य कारण भी थे, जिन्होंने महिला निवासियों की शांति भंग करने में योगदान दिया: एक तो उस यादगार अवसर पर हमारी प्यारी सीता का चर्च जाना; और दूसरा "मृत्यु तक वफादार।" 871 पियानो "लड़कियों के कमरे" में था, जिस पर हर कोई

दिन के एक ही समय पर बजाना चाहता था। इन दोनों ही मामलों में, दलगत भावना और गुटों के बीच की लड़ाइयाँ असहनीय रूप से तीव्र थीं; और यद्यपि अधिकांशतः वे तटस्थ रहते थे, फिर भी सज्जन लोग पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं थे, और कभी-कभी उन्हें अपनी पत्नियों के झगड़ों में, काफी गरमागरम तरीके से, लड़ना पड़ता था। मुझे लगता है कि यदि मुझमें श्री ट्रोलोप जैसी शक्ति और चतुराई होती, तो मैं इस अवधि के दौरान पुरुषों और महिलाओं के कार्यों और कथनों का, और मिस मोस्टिन और मिस लूसी होम के सुंदर हाथों को पाने के कई प्रयासों और उनके परिणामों का, और यहाँ तक कि बेचारी मिस क्ले, एक कुछ हद तक दकियानूसी अविवाहित महिला, जो अपनी बहन, श्रीमती मोब्रे के साथ रहती थी, पर ध्यान देने का भी, एक बहुत ही मसालेदार विवरण लिखने के लिए पर्याप्त सामग्री जुटा सकता था। मैं कहता हूँ कि ये सब, दीवारों के बाहर पांडीज़ के साथ कभी-कभार होने वाली झड़पों के साथ, सनसनीखेज बनाने के लिए, बहुत ही आकर्षक सामग्रियाँ हैं, लेकिन चूंकि मैं श्री ट्रोलोप नहीं हूँ, मुझे खेद है कि मैं इस अवसर पर इनका उपयोग नहीं कर सकता, और मुझे उस इतिहास की धारा का अनुसरण करना होगा जिसे मैं दर्ज कर रहा हूँ। "मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती, फिलिप," श्रीमती ने कहा। मोस्टिन, जैसे ही वह उसके कमरे में गई, जिसे वह पुराने महल का एक छोटा सा प्रतीक्षालय कहता था, "वे औरतें बहुत बुरी हैं—बिल्कुल भी सभ्य नहीं!" "अरे, अब क्या बात है, रोज़, कुछ नया है क्या? मैं सचमुच मटन की लड़ाइयों के टुकड़ों, करी में ड्रमस्टिक और चावल की खीर के भूरे रंग से तंग आ गया हूँ," श्री मोस्टिन ने उत्तर दिया। "क्या बात है?" "नहीं फिलिप," उसकी पत्नी चिल्लाई, "यह मटन के टुकड़े, या करी की हड्डियाँ, या चावल की खीर नहीं है—यह द्वेष है! आपको क्या लगता है मैंने अभी दो महिलाओं को क्या कहते सुना, इतनी ज़ोर से कि मैं सुन सकूँ, और स्पष्ट रूप से मेरे कानों के लिए ही कहा गया था, मुझे यकीन है? अब आप कभी अनुमान नहीं लगा पाएंगे, हालाँकि आप एक न्यायाधीश हैं।" "मैं कल्पना भी नहीं कर सकता, रोज़—सीता के बारे में? क्योंकि मैं देखता हूँ कि उनमें से कुछ उससे नफरत करती हैं।" "बिल्कुल नहीं, फिलिप; लेकिन, ज़रा सोचो, उन्होंने कहा कि ग्रेस एक गवर्नेंस थी, और इसीलिए उसने सीता जैसी 'काली औरत' को पढ़ाया, और उस बेवकूफ लूसी होम को सबक दिया। "खैर," श्री मोस्टिन हँसते हुए बोले, "मुझे इसमें कोई बुराई नहीं दिखती; और अगर ग्रेस गवर्नेंस होती, तो मुझे यकीन है कि मुझे उस पर शर्म नहीं आती, न ही आपको।"

"ओह, ऐसी बात नहीं है, फिलिप; लेकिन देखो इसमें कितनी द्वेष भावना है। यह बिल्कुल उनके उपहास भरे तरीकों और बातों की तरह है, और मैं उस श्रीमती स्मिथ के कान दिन में दस बार खींचना चाहूँगी," उसने पैर पटकते हुए जवाब दिया। "आपको क्या लगता है मेरी मालकिन ने क्या किया? मेरे ऊपर तीर चलाने के तुरंत बाद, ग्रेस हाथ में कुछ संगीत लेकर आई, और मुझे पता है कि वह अभ्यास करना चाहती थी; लेकिन श्रीमती स्मिथ, अगर
372 सीता ~ आप चाहें तो, वह स्टूल पर बैठ जाती है और कुछ बेतुके क्वाड्रिल और वाल्ट्ज़ बजाने लगती है—वह भी बिल्कुल गलत—और वह वहीं खड़ी रहती है, और बेचारी ग्रेस रोने को बेताब है। क्या आप आकर उस बदतमीज़ से बात नहीं करेंगे?"
"नहीं," फिलिप ने कहा। "मुझे पता है यह बदतमीज़ी है, लेकिन हमें इस पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। मैं स्मिथ से चुपके से कहूंगा कि वह अपनी पत्नी को सावधान करे, और मुझे पता है कि वह उसकी ज़बान से उतनी ही नफरत करता है जितनी आप करते हैं।" "ठीक है," रोज़ ने थोड़ा मुंह बनाकर कहा, "जैसा चाहो वैसा करो; लेकिन अगर मैं मर्द होती तो परवाह नहीं करती," उसने आगे कहा, "यह ध्यान देने लायक नहीं है; लेकिन क्या हम अपने घर जाकर इन सबसे छुटकारा नहीं पा सकते? श्रीमती स्मिथ अपने घर नहीं जा सकतीं, क्योंकि वह जल गया था; लेकिन हमारा घर ठीक है। हम कल सुबह श्री ब्रैंडन और सीता के साथ गए थे, और फूल सचमुच बहुत प्यारे हैं। और फिर आपको पता है कि सब शांत है; एक महीने से ज़्यादा समय से कोई हंगामा नहीं हुआ है।" "हाँ," उसने कहा, "मुझे लगता है यह बहुत अच्छा विचार है। हमारे पास रात्रि पहरे के लिए पर्याप्त पुलिस है, और मुझे ब्रिगेडियर से पूछने की ज़रूरत नहीं है; इसके अलावा, मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है, और यह बदलाव मेरे लिए अच्छा रहेगा। छी!" उसने खुद को आश्वस्त करते हुए कहा, "और हम किले की तोपों के ठीक नीचे होंगे। वहाँ एक बार हमला हुआ था, जिसे मुझे लगता है नवाब के बदमाश भूले नहीं हैं, और दोहराएंगे नहीं। मैं अभी ब्रिगेडियर से इस बारे में बात करूँगा। और अब जाओ, पत्नी; मैं अपनी रिपोर्ट और इन सभी भयानक आंकड़ों में बहुत व्यस्त हूँ, और श्रीमती स्मिथ, तुम ध्यान मत रखना।" ब्रिगेडियर को कोई आपत्ति नहीं थी। उन्होंने केवल सावधानी बरतने का सुझाव दिया, और कहा कि कम से कम पहले कुछ दिनों तक किले में सोना बेहतर होगा, और ऐसा ही किया गया। हर सुबह, महिलाएं अपने बगीचे में जाती थीं, और हर शाम अपने टोंजॉन में आती थीं। कभी सीता उनके

साथ होती थी, कभी नहीं। उसे पहले से ज़्यादा अकेले रहना अच्छा लगता था। सीता के मन में कुछ ऐसी परेशानियाँ थीं जिन्हें वह किसी को बताने की हिम्मत नहीं करती थी—यहाँ तक कि सिरिल या ग्रेस को भी नहीं, हालाँकि दोनों को शक तो था, लेकिन वे श्रीमती प्रैट की तरह सीता से उनके बारे में बात नहीं करते थे। क्या पुराने हिंदू धर्म की नींव—वेदों और "भगवत गीता" के महान गढ़, पतंजलि का तत्वमीमांसा—कमज़ोर पड़ रही थी? कभी-कभी सिरिल को लगता था कि ऐसा हो रहा है, और श्रीमती प्रैट, जो इनके बारे में थोड़ा-बहुत जानती थीं—लेकिन ज़्यादा नहीं—भी ऐसा ही सोचती थीं! फिर भी, केवल कभी-कभी ही, क्योंकि सीता का बचाव मज़बूत और सूक्ष्म था। वह वामुन भूत की एक कुशल शिष्या थीं, जो नूरपुर प्रांत के वेदांतिक ब्राह्मणों के भौतिकवादी पूर्दनी संप्रदाय के विरुद्ध सर्वश्रेष्ठ तर्क-वितर्ककर्ताओं में से एक थे; और उन्हें उनके सभी तर्क कंठस्थ थे, और वह अक्सर उन पर उग्र हो जाती थीं; जबकि, यह देखकर कि वह अपने ज्ञान में जंग खा चुकी हैं,
“मृत्यु तक वफादार।” 873 ~-” कुछ मायनों में, सीता ने हाल ही में अपनी अंग्रेज़ी भाषा को लगभग नज़रअंदाज़ कर दिया था, ताकि वह जो खो चुकी थी उसे वापस पा सके। अगर श्रीमती प्रैट या सिरिल हिंदू धर्मशास्त्र में सीता की तरह ही पारंगत होते, तो उनके बीच कई तीखी बहसें हो सकती थीं; लेकिन सीता के ज्ञान के बावजूद, वे केवल अपने विश्वास की सरल सच्चाइयों और वास्तविक सिद्धांतों का ही विरोध कर सकते थे। हठधर्मिता का कभी ज़िक्र नहीं हुआ; केवल पापों के लिए उद्धारकर्ता का प्रायश्चित, हर मुसीबत में उनकी सहायता, और उनके अनुग्रहकारी वादों को पूरा करने के लिए विश्वास। यह सचमुच एक चट्टान से टकराती तूफानी लहरों का प्रतीक था, क्योंकि सीता को इन तर्कों से लगाव हो गया था: और यह लगाव बढ़ता ही जा रहा था, जैसा कि ग्रेस और सिरिल को भी लग रहा था, जिन्होंने उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया, बल्कि उनसे बचते रहे। लेकिन श्रीमती प्रैट ने उन्हें प्रोत्साहित किया और उन्हें सुनकर प्रसन्न हुईं। प्यारी बूढ़ी महिला ने सीता की दृढ़ता से तर्क दिया कि अच्छा बीज जड़ पकड़ चुका है; लेकिन चाहे वह कांटों के बीच गिरा हो, या किसी सूखी और बंजर जगह पर, या किसी समृद्ध और फलदायी जगह पर। मिट्टी के बारे में अभी कौन बता सकता है? भला कौन? निश्चित रूप से स्वयं हिंदू कन्या तो नहीं, जो प्रार्थना और रट लगाकर, जब वह अपने प्रार्थना कक्ष में अकेली होती या झील के किनारे खिड़की पर बैठी होती, तो सही राह पर चलने की विनती करती। स्वयं सरल स्वभाव की और

सांसारिक मामलों से अनजान, श्रीमती प्रैट ने सीता को भी सांसारिक मामलों में उतना ही सरल पाया। श्रीमती प्रैट जानती थीं कि वह धनी हैं; लेकिन सीता को अपने धन के मूल्य या दूसरों के लिए उसके उपयोग का कोई अंदाजा नहीं था। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति अपने दादा और पति को सौंप दी थी; और, "अगर मेरा कोई बच्चा हुआ," उन्होंने विनम्रता से कहा, "तो वह सब कुछ विरासत में पाएगा।" "नहीं," श्रीमती प्रैट ने कहा, "मुझे यकीन है कि ऐसा नहीं हो सकता। केवल एक हिंदू ही एक हिंदू से विरासत पा सकता है—कम से कम मुझे तो ऐसा नहीं लगता—और आप हमारी तरह वसीयत नहीं बना सकतीं। क्यों न आप श्री मोस्टिन से इस पूरे मामले के बारे में पूछें और उनकी सलाह लें?" मुझे लगता है कि अगर तुम्हारे कोई रिश्तेदार हैं, तो तुम्हारी संपत्ति के लिए कम से कम बहुत बड़ा विवाद होगा, मेरी प्यारी। लेकिन राम दास के अलावा सीता किसी को नहीं जानती थीं। "लेकिन मेरा बच्चा अंग्रेजी संपत्ति का वारिस होगा; कोई उसे इससे रोक नहीं सकता," सीता ने मानो मजबूरी में कहा; "इसका हिंदुओं से कोई लेना-देना नहीं है।" "मेरी प्यारी," श्री प्रैट ने कहा, जैसे ही सीता का चेहरा लाल हो गया, "सच जानने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिस पर तुम विश्वास करती हो। क्या तुम्हारे पति ने इस विषय पर तुमसे कभी कुछ नहीं कहा?" "जी हां, मां" (सीता हमेशा श्रीमती प्रैट को मां कहती थीं), "उन्होंने कहा है, कई बार! लेकिन"—और उनका चेहरा भी लाल हो गया— "उन्होंने कभी इंग्लैंड का ज़िक्र नहीं किया। ओह, मैं अपने बेटे को उसके पिता की तरह एक अंग्रेज सज्जन देखना चाहती हूं! वह क्यों न हो?" उन्होंने संकोच से कहा, जैसे ही उन्होंने अविश्वास भरी निगाहें देखीं।

874 सीता। बूढ़ी औरत का चेहरा। 'वह एक ईसाई होंगे—माननीय सिरिल ब्रैंडन।' "अब तुम मुझसे नाराज़ हो जाओगी, मेरी बच्ची, अगर मैं तुम्हें सच बताऊँ," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया; "लेकिन, देर-सवेर, किसी को तो बताना ही होगा, और ग्रेस नहीं बता सकती। क्या तुम मुझसे सुनना चाहती हो?" "क्या है?" सीता ने बहुत घबराकर पूछा। "मुझे अपना सिर आपकी छाती पर रखने दीजिए, और मैं नहीं डरूँगी।" "तो फिर, ईमानदारी से, और मानो मैं सचमुच तुम्हारी माँ हूँ, मैं तुम्हें बताऊँगी," श्रीमती प्रैट ने आगे कहा। "अंग्रेज़ी कानून और ईसाई रीति-रिवाज के अनुसार, अगर तुम्हारा बेटा तुम्हारी तरह होता, तो उसे केवल वही विरासत मिलती जो उसे विशेष रूप से दी जाती। उसका कोई पद या नाम नहीं होता; वह वास्तव में

नाजायज होता।" 'लेकिन मैं शादीशुदा हूँ," वह चीखी, उठ खड़ी हुई, उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं। "सिरिल ने मुझे बताया कि मैं उनकी पत्नी हूँ, और नरेंद्र ने भी, और वामुन भूत ने भी। माँ, मैंने कोई पाप नहीं किया है। ओह, ऐसा मत कहो—मैं मर जाऊँगी!" "नहीं, प्यारी: तुम्हारे धर्म के रीति-रिवाजों के अनुसार तुम श्री ब्रैंडन की पत्नी हो, और इसी रूप में हमने तुम्हें दिल से अपनाया है और तुमसे प्यार करते हैं। लेकिन अंग्रेजी कानून इसे मान्यता नहीं देता। तुम्हारे रीति-रिवाज हमारे नहीं हैं, सेक्टा।" "तो अगर श्री प्रैट ने मेरी शादी उनसे करवा दी होती," वह सिसकते हुए बोली, जो बहुत तेज़ी से और भारी आ रही थीं, "क्या मैं सचमुच उनकी पत्नी होती, आपके और हमारे कानून के अनुसार?" "हाँ, सेक्टा, तुम होतीं; लेकिन श्री प्रैट तुम्हारी शादी श्री ब्रैंडन से तब तक नहीं करवा सकते जब तक तुम हिंदू हो।" "हे भगवान! हे भगवान!" लड़की की कड़वी चीख थी, जैसे ही उसने खुद को एक बार फिर प्यारी बूढ़ी औरत की छाती पर गिरा दिया। "हे भगवान, मेरी मदद करो, क्योंकि मुझे नहीं पता कि क्या करना है!" "और वह तुम्हारी मदद करेंगे, मेरी प्यारी बच्ची, अगर तुम उनसे प्रार्थना करोगी," श्रीमती प्रैट ने सिसकते हुए कहा: "तुम्हारी तरह किसी ने भी संदेह या कठिनाई में उनकी ओर रुख नहीं किया, और न ही किसी बच्चे की तरह सच्चे दिल से उनकी तलाश की, जिसे उन्होंने न रोका हो। तुम उनसे जो भी कहोगी, वह सुनेंगे। क्या तुम इस पर विश्वास करती हो? लेकिन," सीता के उनसे लिपटते ही, बूढ़ी महिला ने आगे कहा, "किसी भी सांसारिक चिंता या विचार को अपने ऊपर हावी न होने दो, न ही उन्हें तुम्हारे और ईश्वर के बीच आने दो; जब तुम उनके पास जाओ तो इन सबको त्याग दो। मैं तुम्हारी सारी परेशानियाँ जानती हूँ, मेरी प्यारी, और अगर मैं कर सकती तो तुम्हारी और मदद करती; लेकिन तुम्हें संदेश उन्हीं से मिलना चाहिए, मुझ जैसे किसी से नहीं। अब अपने आँसू पोंछ लो और आशावान रहो, और हमेशा की तरह साहसी बनो, और मुझे यकीन है कि तुम सही करोगी।" मैं यह कहने की हिम्मत नहीं कर सकती कि इस बातचीत का सीता पर क्या प्रभाव पड़ा, न ही उसके कोमल प्रेममय हृदय में चल रहे बड़े संघर्षों के बारे में बता सकती हूँ; और मुझे लगता है कि उनका वर्णन करने का प्रयास करना अपवित्रता होगी। बाहरी दिखावट के लिए, वास्तव में, वह

"मृत्यु के प्रति निष्ठावान।" 375 —_— वह पहले से भी ज़्यादा खुशमिजाज़ हो गई! और केवल ग्रेस और सिरिल ही कुछ हद तक यह महसूस कर रहे थे कि उसके भाग्य

में संकट आने वाला है। सीता ने श्री मोस्टिन से सलाह लेना भी नहीं भूला। जैसे कोई बच्चा अपने पिता के पास जाता है, वैसे ही वह एक दिन उनके पास गई जब वे अकेले थे; और अपनी सारी चिंताएँ बताईं, अपने विश्वास की नहीं, बल्कि अपनी जीवन स्थिति की। क्या मुझे यह कहने की ज़रूरत है कि श्रीमती प्रैट की राय की पुष्टि हो गई? श्री मोस्टिन ने इस परामर्श के बारे में रोज़ को बताया तक नहीं: उन्होंने केवल इतना कहा, “काश सीता का बपतिस्मा हो जाता और उसकी शादी हो जाती;” और रोज़ मोस्टिन ने भी यही इच्छा व्यक्त की। “ओह! काश ऐसा होता,” उसने कहा; “हमारी प्यारी कितनी खुश होती, और सिरिल उससे भी ज़्यादा खुश होता।” अब सभी के लिए कितना सुखद समय था! लंबे समय तक बंद रहने के बाद पुराने काम आनंदपूर्वक फिर से शुरू हो गए थे। शानदार "एरार्ड", जो कंबलों के ढेर से ढका हुआ था, बेहतरीन स्थिति में था, और दोस्त अपने पुराने जोश और कौशल के साथ पढ़ने, संगीत सुनने और चित्रकारी का आनंद ले रहे थे। बाहर से सभी खतरे दूर हो गए थे: और दिल्ली से नूरपुर के व्यापारियों को मिली सूचनाओं में बताया गया था कि अंग्रेजों की विशाल सेना ने शहर को घेर लिया है, जिसे सिपाही अब मुश्किल से ही संभाल पा रहे हैं, और जो जल्द ही हार जाएगी। हम जिन्होंने यह खबर सुनी, उस समय के तीव्र उत्साह को याद करते हैं; उस भयानक संघर्ष का निर्णायक मोड़; और सिपाही युद्ध पर इसके निर्णायक प्रभाव के बारे में बारी-बारी से आशा और भय दोनों महसूस करते थे, जिसमें व्यापक रूप से बिखरी हुई घटनाओं ने रूपांतरित कर दिया था। हालाँकि, बाहर से नूरपुर को शाहगंज के अलावा कोई सूचना नहीं मिली, जहाँ बुलडको ने फिर से घुसपैठ की थी, और पुराने बैंकर और औत एला के पत्र वापस लाए थे। “हम अत्याचार से तंग आ चुके हैं,” नरेंद्र ने श्री ब्रैंडन को लिखा; “सभी वर्ग आहें भर रहे हैं और अंग्रेजों के लौटने की प्रार्थना कर रहे हैं। हमारे मंदिर को मौलवियों ने अपवित्र कर दिया है, और यहाँ के लोग, और पूरे देश के लोग, आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप हमारी मदद के लिए कब आ सकते हैं? एक हज़ार आदमी आपके पीछे आएंगे, और मेरे पास सभी के लिए पर्याप्त धन है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं एक कैदी हूँ, और रेन दास ने मेरी सारी किताबें हड़प ली हैं, और अपने नाम से कारोबार चला रहा है। मौलवी और नवाब ने उसके पक्ष में फैसला सुनाया है; लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपके वापस आते ही, उसने जो कुछ भी लिया है, वह मुझे वापस मिल जाएगा: और अगर वह खो भी जाए, तो क्या फर्क पड़ता है? बस जल्दी आइए, जल्दी

आइए!" "और हम चलेंगे, नन्हे बच्चे," सिरिल ने उत्साह से कहा; "मेरे दिमाग में पहले से ही एक योजना है, और, मेरे प्यारे, हम विद्रोहियों को भगा देंगे, और आंटी एला को उनका मंदिर वापस मिल जाएगा, और वह जितना चाहे 'राम!' पुकार सकेंगी।"

346 सीता, ऐ एनिएस ओम पोनीज़ ए "देहली पर कब्ज़ा हो गया!" बाबा साहब ने आनंद से चिल्लाते हुए कहा, कुछ दिनों बाद सुबह होते ही उन्होंने श्री ब्रैंडन को पुकारा, "देहली पर कब्ज़ा हो गया! ओह! भगवान का शुक्र है, महोदय, भगवान का शुक्र है! रात में पूरुन मुल महाजून के पास एक संदेशवाहक आया था, और यह वह मुद्रित पत्र है जो उसके साथ आया था; जिसे पूरुन मुल ने अपनी शुभकामनाओं और बधाई के साथ भेजा है। भगवान का शुक्र है, महोदय, कि 1914 का तूफान आखिरकार थम गया।" सिरिल मुश्किल से "टिक्स्ट्रा" की छोटी पर्ची पढ़ पा रहा था। लेकिन कोई गलती नहीं थी। छह दिनों की भीषण लड़ाई के बाद 19 सितंबर को शहर पर विजय प्राप्त कर ली गई थी। "दुनिया का आश्रय" एक असहाय भगोड़ा था! सीता को बताते ही सिरिल दौड़कर जज के घर गया, उन्हें कागज़ दिखाया और फिर पानी के फाटक से होते हुए किले की ओर गया—जहाँ पहरेदारों ने उसे पढ़कर सुनाते हुए उसका उत्साह बढ़ाया—और ब्रिगेडियर को यह खुशखबरी सुनाई; और देखते ही देखते तोपों ने शाही सलामी दी, जो सुनने वालों ने अब तक की सबसे शानदार सलामी सुनी थी। नूरपुर के थके-हारे निवासियों के लिए सचमुच एक आनंदमय और कृतज्ञता भरा दिन था; और छोटी-मोटी नोकझोंक और ईर्ष्या भी मानो भुला दी गई थी। "चलो रोज़, थोड़ा खाना खा लेते हैं," फिलिप मोस्टिन ने अपनी पत्नी से कहा। "देखते हैं: ब्रिगेडियर और तोपखाने के दो कमांडर, हॉब्सन और व्हार्टन, और नोबल; बस दस लोग। हम इतना कर सकते हैं, और मैं उन सभी को पत्र लिखूंगा।" दिल्ली से खुशखबरी सुनने के अगले दिन, सभी बेहद खुश थे। सीता भी बाकी लोगों से कम खुश नहीं थीं, क्योंकि सिरिल ने उन्हें बताया था कि वह जल्द ही अपनी योजना को अंजाम देंगे और वह नरेंद्र और प्यारी आंटी एला से एक बार फिर मिल पाएंगी। इसलिए जज के घर पर एक खुशनुमा पार्टी हुई; और खाने के दौरान अन्य जगहों पर क्या हो रहा होगा, इस पर खूब बातें और अटकलें लगाई गईं। महिलाओं के कुछ देर आराम करने के बाद, सज्जन लोग ड्राइंग रूम में उनके साथ शामिल हुए, और हमेशा की तरह पियानो बजाया गया और संगीत शुरू हो गया। सभी लोग इतने अच्छे मूड में थे, क्योंकि उनकी

खुशी ने उन्हें असाधारण ऊर्जा दी थी; और इतने लंबे समय बाद वहां गाना एक सुखद अनुभव था। सीता ड्राइंग रूम से सटे ग्रेस के कमरे में बैठकर कुछ देर सुनती रहीं; और वह सिरिल के साथ रात की सवारी के लिए तैयार होने घर चली गईं, क्योंकि गश्त जारी थी। उन्होंने कपड़े बदले और अपनी कुटिया के एक हिस्से की छत पर गईं, और अकेले बैठकर बहुत कुछ सोच रही थीं, तभी बुलदेव ने अचानक उन्हें आवाज दी। नीचे, "नीचे आओ! नीचे आओ! मैंने उन्हें देखा है! जल्दी करो, महिला!" और लगभग जैसे ही उसने यह कहा, सड़क के पास झाड़ियों की ओर देखते हुए, उसने स्पष्ट रूप से पुरुषों के एक समूह को चुपचाप और तेजी से आगे बढ़ते हुए देखा।

° मृत्यु तक वफादार।" 377 पल भर में वह अपनी पूरी गति से सीढ़ियों से नीचे उतरी और जज के घर की ओर बजरी वाली पगडंडी पर चढ़ गई। पीछे से प्रवेश करके, वह घर के अंदर दौड़ती हुई ड्राइंग रूम में जा घुसी, जहाँ ग्रेस और सिरिल पुराना गीत "डिम्मी चे म' अमी, अंकोर" गा रहे थे। सभी ने एक पल के लिए उसे अजीब तरह से देखा; लेकिन उसके चेहरे पर भय था, उसकी सांस फूल रही थी और वह केवल चिल्ला सकी, "भागो!" "किले तक पहुँचो, विद्रोही हम पर हमला कर रहे हैं," तभी बाहर से चीखें उठीं और खिड़कियों से गोलियों की बौछार हुई, जिससे शीशे और फ्रेम चकनाचूर हो गए और दीवारों से प्लास्टर उखड़ गया। तब कोई भी बिना हथियार के नहीं घूम रहा था; कमरे के कोनों में भरी हुई बंदूकें, रिवॉल्वर और तलवारें पड़ी थीं; हर किसी ने अपने-अपने हथियार उठा लिए, और अभी तक किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ था। अगर संभव होता, तो अधिकारी ड्राइंग रूम को तब तक संभाले रखते जब तक कि जलद्वार से मदद न पहुँच जाती; लेकिन ऐसा नहीं हो सका, हमलावर दल ने तुरंत कई जगहों पर छप्पर में आग लगा दी, और आग बगीचे में फैल गई, हर पल बढ़ती जा रही थी। "महिलाओं का ध्यान रखें, सज्जनों," ब्रिगेडियर ने तीखे स्वर में कहा; "हमें उनकी रक्षा करनी होगी।" अब बाहर बहुत शोर मच रहा था, क्योंकि जज के पुलिस गार्ड और सिरिल के गार्ड, राटोर्स के साथ, बहादुरी से अंदर घुस आए थे; लेकिन वे हमले को तुरंत रोकने के लिए बहुत कम थे। सिरिल ग्रेस को सहारा दे रहा था, जो उससे लिपट गई थी; और सीता, जिसकी सूझबूझ बढ़ती हुई प्रतीत हो रही थी, ने भी अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे आगे ले गई। श्री मोस्टिन और एक अन्य अधिकारी श्रीमती मोस्टिन के पीछे-पीछे चले गए। वे सीढ़ियों से नीचे उतर चुके थे और सिरिल उनके पीछे-पीछे आ रहा था, तभी अज़रील पांडे, जो पहले से

कहीं अधिक भयानक दिख रहा था, उसकी आँखें घूर रही थीं और उसका पीला पड़ा टूटा हुआ चेहरा क्रोध से कांप रहा था, अचानक बरामदे के एक कोने से अपने भाले के साथ उस पर झपटा। सिरिल ने वार को रोका और बदले में अपनी तलवार से वार किया, जिसे डाकू ने उसके भाले पर ही पकड़ लिया। उसी क्षण एक गोली सिरिल के दाहिने हाथ में लगी और उसकी तलवार गिर गई। वह पूरी तरह से अपने दुश्मन की दया पर था। “जे काली माता!” अज़रील चिल्लाया। “फिरंगी का कुत्ता!” अब तुम्हारे लिए कोई बच निकलने का रास्ता नहीं है,” और जैसे ही उसने वार करने के लिए अपना घातक हथियार पीछे खींचा, सिरिल ने एक चीख सुनी—यह चीख नहीं थी—और सीता उसके सामने दौड़ पड़ी, और वार उसके सीने पर लगा। फिर कैप्टन हॉब्सन, जिसने सीता को बचाने की कोशिश की थी, या जैसा कि उसने पहले सोचा था, सिरिल को, ने अपनी तलवार उस बदमाश के दिल में घोंप दी, जो एक पल के लिए हथियार पर तड़पता रहा, फिर जमीन पर गिर गया और अगर वह बच भी गया, तो बुलदेव ने अपने ही भाले के बार-बार वार से उसे मार डाला। यह सब एक पल में हुआ, और जबकि अन्य लड़ाइयाँ चल रही थीं...

£78 सीता। बरामदे और बगीचे में लड़ाई चल रही थी, और लुचमुन सिंह और राठौर, पुलिस के साथ, युद्धघोष करते हुए हमला कर रहे थे। सिरिल एक पल के लिए स्तब्ध और अचंभित खड़ा रहा। उसका दाहिना हाथ घायल था और लगभग बेकार था: लेकिन उसने सीता को उठाने की कोशिश की, जबकि ग्रेस मोस्टिन, जिसने अपना होश नहीं खोया था, अपने कपड़े और रूमाल से खून रोकने का प्रयास कर रही थी। तभी हॉब्सन और बुलदेव ने घायल लड़की को धीरे से अपने बीच उठाया और उसे सीढ़ियों से नीचे ले गए, सिरिल उनके पीछे-पीछे चल रहा था और ग्रेस उसका हाथ पकड़े हुए थी। एक पल के लिए सीता की आँखें खुलीं और उसने ग्रेस से धीमी आवाज़ में कहा, "भागो, खुद को बचाओ - मुझे यहीं मरने दो," और फिर बेहोश हो गई। इसलिए वे उसे बगीचे में नीचे ले गए, जब तक कि वे कुछ हद तक सुरक्षित नहीं हो गए; फिर बुलदेव ने अपनी कमरबंद खोली और सीता को उसमें डाल दिया, और कुछ अन्य लोगों के साथ उसे धीरे से चौकीदार द्वार तक ले गए, जहाँ श्री मोस्टिन, उनकी पत्नी और अन्य लोग उनसे पहले ही पहुँच चुके थे। जैसे ही चौकीदार ने श्री मोस्टिन के घर पर अशांति फैलते देखी, वह अपने आधे आदमियों के साथ बचाव के लिए दौड़ पड़ा; लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। अपने नेता की मृत्यु और अधिकारियों

और पहरेदारों के साहसी बचाव के कारण हुए नुकसान से भयभीत होकर, साथ ही सतर्क सार्जेंट द्वारा श्री ब्रैंडन के लॉन पर भीड़ पर दागे गए कई गोलों से भी भयभीत होकर, जो अब उनके जलते हुए घर और सीता की कुटिया से स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, विद्रोही सिपाही और उनके साथी घबराकर भाग गए; और अंग्रेज़ पहरेदारों द्वारा दल की वापसी को कवर करते हुए, कुछ ही मिनटों में चौकी में प्रवेश कर उसे बंद कर दिया गया। कुछ जल्दबाजी में कहे गए शोकपूर्ण शब्दों के अलावा, कोई नहीं बोला, क्योंकि दुखद जुलूस जलते हुए घरों की रोशनी से जगमगाते हुए टावर की ओर जाने वाले रास्ते पर आगे बढ़ रहा था, बंदूकों की गड़गड़ाहट और घुड़सवार सेना की तोपों की आवाज पर जरा भी ध्यान नहीं दे रहा था, जिससे यह स्पष्ट हो गया था कि न्यायाधीश के घर पर हमला एक छलावा था, और सामने एक कहीं अधिक गंभीर और हठी आक्रमण था, जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। भाग तीन समाप्त।
भाग चार। अध्याय 16। * 4 जीवन का मुकुट। सीरा मरी नहीं थी: हालाँकि जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए, बार-बार उसे देखते हुए उन्हें लगा कि उसकी आत्मा शरीर छोड़ चुकी है। ग्रैको, जिसका अद्भुत संयम उन्हें चकित कर रहा था, और श्रीमती प्रैट, जो शोक से व्याकुल बूढ़े भीम के साथ मीनार की ओर दौड़ीं, ने उसके कपड़े उतारे और खून धोया, और उसे यथासंभव उसके ही एक वस्त्र में लपेटकर, सिरिल और डॉ. होम को अंदर आने दिया, जो एक अन्य सर्जन के साथ उपस्थित थे। अभी तक स्केटा पूरी तरह बेहोश थी; लेकिन उसके घाव पर पट्टी बांधने से वह थोड़ी होश में आई, और उसने अपनी आँखें खोलीं और अपने चारों ओर देखा; लेकिन उसने अपने आस-पास के लोगों को नहीं पहचाना, और केवल पानी के लिए करुण स्वर में बुदबुदाई, जिसे भीम ने उसे दिया तो उसने जी भरकर पिया, लेकिन फिर से बेहोश हो गई। "क्या कोई उम्मीद है, डॉक्टर?" सिरिल ने पूछा; उस समय वह बस इतना ही कह सका। “मुझे डर नहीं है,” डॉ. होम ने उत्तर दिया। “मुझे डर नहीं है! बेचारी, बेचारी। लेकिन हम अभी कुछ नहीं कह सकते। मैंने इससे भी बुरे घाव देखे हैं, जिनसे लोग ठीक हो गए हैं; लेकिन वह बहुत कमजोर और नाजुक है, और चोट उसके दिल के बहुत करीब है। हम बस अपनी पूरी कोशिश कर सकते हैं, मिस्टर ब्रैंडन। क्या वह कोई उत्तेजक दवा लेगी? शायद इससे उसे होश आ जाए, और हम उसकी स्थिति का बेहतर आकलन कर सकें; जिस हालत में वह है, मुझे डर है कि वह तुरंत ही गिर सकती है।” “कोशिश करूंगा,” उसने उत्तर दिया; और उसने डॉ. होम द्वारा दिए गए गिलास को उसके होठों

से लगाया। “यह दवा है, सेक्टा,” उसने कहा, “तुम्हें फायदा होगा; इसे पीकर देखो, मेरी प्यारी; कोशिश करो!” वह उसकी बात समझ गई और उठने की कोशिश करते हुए पीने के लिए हाथ बढ़ाया; लेकिन सिरिल का हाथ घाव के कारण कांप रहा था, और उसने ग्रेस को इशारा किया, जिसने उससे गिलास ले लिया; और जैसे ही स्केता की उंगलियां गिलास पर पड़ीं, उसने उसे अपने होठों तक पहुंचाया, और उन्होंने देखा कि उसने लगभग सारा पी लिया।

380 सीता। “बस! बस! यह छोटी सी बहादुर आत्मा है,” डॉक्टर ने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा; “लेकिन, हे भगवान, आप भी घायल हैं, श्रीमान ब्रैंडन! और जब तक वह शांत लेटी है, मैं आपके हाथ पर पट्टी बांध देता हूँ: यह बहुत दर्दनाक होगा। मैं देख रहा हूँ, मैं देख रहा हूँ,” उन्होंने घाव की जाँच करते हुए कहा; “गोली आर-पार हो गई है, और आप इसे निकालने के दर्द से बच गए हैं; और हड्डियाँ भी अभी तक सही सलामत हैं; लेकिन काफी घाव है, और आप शुक्रगुजार हो सकते हैं कि जिम कुछ समय बाद पहले की तरह ठीक हो जाएगा।” ग्रेस और श्रीमती प्रैट अभी भी देख रही थीं, और थोड़ी देर बाद, श्रीमती मोस्टिन अंदर आईं; लेकिन वह लगभग हिस्टीरिकल लग रही थीं, और श्रीमती प्रैट ने उनसे कहा कि बेहतर होगा कि वह जाकर नीचे बैठ जाएँ: और श्री मोस्टिन, जो दरवाजे पर थे, अपनी पत्नी को साथ ले गए। दरअसल, उसकी स्थिति ने उसे किसी भी अनावश्यक उत्तेजना के जोखिम से बचा लिया: और घर पर जो दृश्य था, हालांकि उसे तब सीता के घाव के बारे में पता नहीं था, उसने उसे लगभग वश में कर लिया था। सिरिल ने ग्रेस से उसके साथ जाने की विनती भी की; लेकिन उसने विनम्रता से इनकार कर दिया; और श्रीमती प्रैट, जो उसके शांत मन और उपयोगिता को भलीभांति जानती थीं, ने सिरिल से उस पर दबाव न डालने का अनुरोध किया, और उसने ऐसा नहीं किया। वास्तव में, सीता को इन दो प्रिय मित्रों से बेहतर किसने प्यार किया था, या बेचारी पीड़ित सीता को इन दो प्रिय मित्रों से अधिक किस पर भरोसा था? वह कैसी रात थी! चौकी पर और कोई हमला नहीं किया गया, क्योंकि हमलावरों को टावर में लगी तोप और पास के एक बुर्ज पर लगी दूसरी तोप से पहले ही भारी नुकसान उठाना पड़ा था; लेकिन सामने आड़ थी, और विद्रोहियों ने, जिनका नेतृत्व स्पष्ट रूप से बहादुरी और कुशलता से किया जा रहा था, इसका भरपूर फायदा उठाते हुए वफादार सैनिकों पर बार-बार हमला किया और उन्हें काफी नुकसान पहुंचाया। जब रेजिमेंट बुरी तरह से दबाव में आने लगी और यहां तक कि उसका

मनोबल भी गिरने लगा, तब अंग्रेजी सैनिकों की एक टुकड़ी, और मुख्य द्वार पर तैनात एक अन्य टुकड़ी को उनकी सहायता के लिए भेजा गया। वास्तव में, उन लोगों को रोकना मुश्किल था जो "पांडियों" के विरुद्ध नेतृत्व करने और बहादुरों की मदद करने के लिए शोर मचा रहे थे। मदद का स्वागत जयकारे और उत्साह के साथ किया गया जिससे विद्रोही घबरा गए; फिर भी उन्होंने अंतिम हमला किया, और अंग्रेजों ने उनका उसी जोश के साथ सामना किया जैसे दिल्ली को जीता गया था, और लखनऊ को हैवेलॉक और आउट्राम द्वारा मुक्त कराया गया था; और जब आरक्षित सेना भी आ गई, तो विद्रोही भाग गए, परेड की कमान संभाले हुए तोपों से बरसाए गए गोलों की बौछार से बुरी तरह घायल हो गए। तब यह स्पष्ट हो गया कि हमला छोड़ दिया गया था। हालाँकि स्केटा के साथ मौजूद सभी लोग धड़कते हुए चिंतित दिलों से युद्ध के कोलाहल को सुन रहे थे, फिर भी वह इसकी प्रगति या बार-बार दागी जा रही भारी तोपों की आवाज़ से अवगत नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह
“जीवन का मुकुट।” 381 वह चुपचाप सो रही थी, हालाँकि उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं; और डॉ. होम, जो बीच-बीच में आकर उसकी नब्ज़ जाँचते थे, ने कहा कि यह उनकी उम्मीद से भी ज़्यादा तेज़ थी। इसलिए वे इंतज़ार करते रहे और प्यास बुझाते रहे। कुछ देर तक घरों की तेज़ रोशनी से कमरा लाल रंग से जगमगा रहा था; लेकिन वह धीरे-धीरे कम होती गई, और अंत में रुक-रुक कर चमकती रोशनी में बुझ गई, और उन्होंने मोमबत्तियाँ जला लीं, जो उसकी आँखों से दूर होने के कारण उस पर हल्की रोशनी डाल रही थीं। उनमें से कोई भी फुसफुसाहट के अलावा नहीं बोला; लेकिन पेय को दोहराना पड़ा, और ग्रेस, जिसने स्केटा से कई बार पूछा था कि क्या वह इसे फिर से ले सकती है, ने सिरिल को उससे बात करने का इशारा किया।
“सीतू, मेरी प्यारी—छोटी बच्ची,” उसने धीरे से कहा, और अपने सभी पुराने प्यार भरे शब्दों का प्रयोग करते हुए, “ग्रेस ने जो तुम्हें दिया है, उसे फिर से पी लो।” अंततः लड़की जाग उठी जब उसने धरती पर अपने सबसे प्रिय व्यक्ति की आवाज़ सुनी और उसकी ओर मुड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने ग्रेस का हाथ झटक दिया और अपने पति की ओर देखा। उसकी प्यारी आँखें बुद्धिमत्ता और प्रेम से भरी थीं, इतनी भावुक, इतनी उदास, इतनी विनती भरी, और सिरिल को लगा कि अब वह होश में आ गई है, और ग्रेस के हाथ से गिलास लेकर उसके मुँह से लगा दिया। उसने फिर से पिया और आह भरी; लेकिन उसने अपने पति का हाथ नहीं छोड़ा, और वह उसके पास बैठ गया,

जबकि वही गंभीर नज़र बनी रही और उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान थी। ऐसा लग रहा था मानो, तब तक, उसे पता ही नहीं था कि वह जीवित है। "बच गई! बच गई!" उसने अंत में बुदबुदाया। ये उसके द्वारा बोले गए पहले समझ में आने वाले शब्द थे। "ओह, मैं भगवान का शुक्रिया अदा करती हूँ! मैं भगवान का शुक्रिया अदा करती हूँ!" "हाँ, प्रिय," उसने कहा, "हम सब सुरक्षित हैं, और यहाँ तुम्हारे दोस्त हैं; क्या तुम उनसे बात कर सकती हो?" उसने चारों ओर देखा और ग्रेस की ओर हाथ बढ़ाया, जो श्रीमती प्रैट के साथ नीची पलंग के पास फर्श पर बैठी थी, लेकिन वह अभी बोल नहीं पा रही थी; वह केवल उन्हें बारी-बारी से चुपचाप देख रही थी, जैसे कोई कुत्ता अपने प्रिय को देखता है, और उनकी बड़ी भूरी आँखें उस समय गर्म, कोमल भावनाओं से भरी हुई लग रही थीं। “बच गई! बच गई!” उसने फिर स्पष्ट स्वर में कहा। “जैसा मैंने चाहा था—केवल मरना—सिरिल के लिए!—मेरे स्वामी!—मेरे प्रिय, मेरी ओर देखो!” “मैं यहाँ हूँ,” उसने कहा, “सीता, तुम्हारे पास।” “मैंने सोचा—मैंने सोचा,” वह कांपते हुए बोली, “कि जिसके पास भाला है—आह! उसे बचाओ! देखो! वह वार कर रहा है!” “यहाँ कोई नहीं है, सीता; डरो मत, मेरी प्यारी—केवल तुम्हारी ग्रेस, और माँ, और मैं।” लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह उन्हें अभी तक पहचान नहीं पाई है, और चुपचाप लेटी रही, अपने पति का हाथ अपने दोनों हाथों में, अपने दिल के पास रखे हुए। आराम ने उसे तरोताज़ा कर दिया, और

382 सीता, "तभी उसने बहुत स्पष्ट रूप से पानी माँगा; और बाहर बैठी कराहती हुई, इधर-उधर झूलती हुई भेमी, उसके लिए ठंडे नींबू पानी से भरा चाँदी का प्याला लेकर आई, जिसे डॉ. होम ने मंगवाया था; लेकिन उसने बुढ़िया का हाथ हटा दिया; और केवल अपने पति से ही हाथ लिया। फिर उसने आराम से और लंबे समय तक पानी पिया, और चारों ओर देखकर उनसे कहा, "मैं अब आप सबको देख पा रही हूँ, मेरे प्यारे बच्चों, लेकिन मुझे यहाँ बहुत दर्द हो रहा है। क्या हुआ है? आह! मुझे याद आया —लेकिन आप सब सुरक्षित हैं—सिरिल?" "हम सब, सीता," ग्रेस ने उसे चूमते हुए उत्तर दिया; "उस आदमी के मारे जाने के बाद, हम सुरक्षित थे। आह! मैं ईश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि तुम हमें फिर से पहचान गई, मेरी प्यारी। अब तुम जल्दी ठीक हो जाओगी, और हम सब दिन-रात तुम्हारी देखभाल करेंगे, और ईश्वर तुम्हारा सारा दर्द दूर कर देगा।" “हाँ,” लड़की ने अपने गोरे गालों पर लाली लिए हुए जवाब दिया, “वह मेरा दर्द दूर करेंगे, और अब मुझे उन पर भरोसा है। मैंने हमेशा सोचा था कि मैं

सावित्री की तरह मृत्यु को गले लगा सकती हूँ, और अब वह बहुत करीब है। मुझे लगता है कि मैं समझ गई हूँ कि मुझे क्या परेशान कर रहा था—बेहतर, मुझे लगता है। ओ सिरिल, यह क्या है?" और उसने उसकी बांह पर बंधी पट्टी को देखा। "तुम्हें चोट लगी है!" "ज़्यादा नहीं," उसने कहा। "तुमने मुझे बचाया, प्रिय, और हॉब्सन ने उसे तब मार डाला जब मैं असहाय था।" "मर गया!" उसने धीमी आवाज़ में कहा। "मर गया? भगवान उसे क्षमा करें!" "क्या तुम उसे क्षमा करती हो, सीता?" श्रीमती प्रैट ने कहा, "और दिल से? उसने कहा था, 'अपने दुश्मनों को क्षमा करो।'" "हाँ," उसने दृढ़ता से जवाब दिया। "वह मेरा दुश्मन क्यों था? मैंने उसका क्या बिगाड़ा था? हे माँ, मेरे लिए प्रार्थना करो; प्रार्थना करो कि दयालु, भले भगवान एक नन्ही बच्ची को अपने पास बुला लें।" फिर प्यारी महिला घुटनों के बल बैठ गई और प्रार्थना करने लगी। अपने लंबे जीवन में उसने कई मृत्युशय्याओं के पास प्रार्थना की थी; कई डगमगाती, बेहोश होती ईसाई आत्माओं को उसने अंतिम विश्राम दिया था। लेकिन यह बहुत अलग था; दृढ़ विश्वास, एक नन्हे बच्चे की तरह विनती, उस एक पर पूर्ण भरोसा, जिसे वह बहुत धुंधली तरह जानती थी—अब सभी संदेह, भय और पीड़ा पर विजय प्राप्त करता प्रतीत हो रहा था—और प्रिय महिला ने प्रार्थना की। अक्सर सिसकियों और आँसुओं से उसके शब्द टूट जाते थे, अक्सर लड़खड़ाते थे; लेकिन वह जानती थी कि उसके द्वारा इस्तेमाल किए गए कुछ सरल शब्द, प्रार्थना करने वाले पीड़ित द्वारा समझे जा रहे थे, और उसने यह भी देखा कि सीता के होंठ हिल रहे थे, जबकि उसके हाथ सिरिल के हाथों पर जुड़े हुए थे। वह प्रार्थना कर रही थी। फिर सन्नाटा छा गया; और वे आश्चर्य से उस सुंदर चेहरे को देखने लगे, जो अब मुस्कुरा रहा था और आनंद से भरा हुआ था, होंठ खुले हुए थे, और कोमल ओस से भीगी आँखें श्रद्धा और आशा से ऊपर देख रही थीं। "मेरे प्रभु!—मेरे सिरिल!" उसने अंत में अपनी भाषा में, लेकिन बहुत धीमी आवाज़ में कहा, जैसे ही उसने अपनी आँखें पूरी तरह से सिरिल की ओर घुमाईं।

"जीवन का मुकुट।" 383 उसे। "अगर ऐसा हो पाता तो मैं तुम्हारे लिए जी जाती; लेकिन प्रभु मुझे बुला रहे हैं, और मैं रुक नहीं सकती। मेरे जाने पर शोक मत करना, सिरिल—बस अपनी पत्नी को क्षमा कर देना कि वह लापरवाह थी, अक्सर उपेक्षित रहती थी, और इतनी अज्ञानी थी। लेकिन हे मेरे स्वामी, मैंने तुमसे प्रेम किया, मेरे प्रिय, और अगर मैं कर पाती तो और भी बेहतर करती, लेकिन मुझे कुछ पता नहीं

था। और तुम उन्हें जो कुछ भी हुआ है, उसके बारे में बताओगे। वे मुझे कभी नहीं भूलेंगे, सिरिल, कभी नहीं; उनकी छोटी सीता उनके मन में मृत्यु तक रहेगी, और चाची एला को शोक नहीं करना चाहिए—उन्हें बस उस लड़की को याद करना चाहिए जिसने उनसे प्यार किया और उनके साथ खेला। तुम्हें उनके पास जाना चाहिए, सिरिल, और उन्हें यह बताना चाहिए—मुझसे वादा करो कि तुम जाओगे, और वामुन भूत को बताना कि मैंने भी उनसे प्रेम किया था।" "ऐसा होगा," उसने रुंधे हुए स्वर में कहा, "अगर— हे सेक्टा, हे प्रभु परमेश्वर तुम्हें मेरे लिए अवश्य ही बचा लेंगे, और हम साथ-साथ उनके पास जाएँगे। हिम्मत रखो, मेरी प्रिय।" "नहीं," उसने और भी धीमी आवाज़ में कहा, "ऐसा नहीं हो सकता। वह मुझे अभी बुला रहे हैं। 'मेरे पास आओ,' वह कहते हैं, 'तुम सब जो बोझ से दबे हो।'" और कुछ देर के लिए वह खोई-खोई सी हो गई, और उसकी संस्कृत प्रार्थनाओं के कुछ अटपटे अंश उसके सीखे हुए सरल ईसाई भजनों की पंक्तियों में मिल गए। इस प्रकार वे आश्चर्य से बैठे और सुनते रहे, और उन्होंने देखा कि उसके चेहरे पर एक बदलाव आ रहा है। तभी डॉ. होम अंदर आए और उसकी नाड़ी जाँची, और अपना सिर हिलाया। "यह अब फड़फड़ा रही है," उन्होंने सिरिल से कहा। "मैं और कुछ नहीं कर सकता, बेचारी— बेचारी बच्ची— वह जल्द ही शांत हो जाएगी।" अब सुबह हो रही थी, रात के कोलाहल का शोर थम गया था, और सब कुछ शांत था। धूसर रात के बादलों में ऊपर, लाल रंग की रोशनी की एक धारा अचानक प्रकट हुई और तेज़ी से नीचे सुनहरे रंग में बदल रही थी, और शांत, निर्मल झील उस भव्य दृश्य को अपनी पूरी चमक के साथ प्रतिबिंबित कर रही थी। सीता ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थी, लेकिन उसे कोई दर्द नहीं लग रहा था, और वह बस कभी-कभार आहें भर रही थी। अचानक, मानो उस तेज़ रोशनी ने उसे जगा दिया हो, वह थोड़ा उठी, अपने हाथ फैलाए और सूर्य को स्तुति देने वाली गायत्री प्रार्थना की। ऐसा लग रहा था मानो वह स्तुति दोहराना चाहती हो, लेकिन उसमें शक्ति नहीं थी, और जैसे ही वह वापस गिरी, वह धीमी आवाज़ में बोली, "सिरिल! कृपा! मुझे चूम लो। माँ! वह मुझे फिर बुला रहा है!—सुनो! और वहाँ स्वर्ग के चमकीले फूल हैं! —प्रभु!—मैं आती हूँ!" जैसे ही उन्होंने उसे सहारा देने के लिए अपनी बाहें उसके नीचे डालीं, वह मुस्कुराई, और एक बार आह भरी, और जैसे ही सूर्य की महिमा उसके चेहरे पर पड़ी, उसकी स्तब्ध, प्रेममयी आत्मा हमेशा के लिए विलीन हो गई। भीमी ने कहा, "जब तक तुम उसे धरती पर नहीं लिटाओगे, तब तक उसकी जान नहीं

जाएगी!"

384 सीता, "वह चली गई है," श्रीमती प्रैट ने उत्तर दिया। "वह ईश्वर के साथ विश्राम कर रही है। देखो वह कितनी सुंदर है! चलो प्रार्थना करें!" और उसने प्रार्थना की कि सीता की मृत्यु देखने वालों को भी, जब उनका समय आए, तो वे भी उसी विनम्र, निष्ठावान और बाल-समान भाव से इस दुनिया से विदा हों। इसके बाद सिरिल बाहर गया और उस चबूतरे पर बैठ गया जहाँ तोप रखी थी। उसने सीता के बालों की एक लंबी लट काटकर अपने हृदय पर रख ली थी। पहरेदार वहाँ थे और कई ईमानदार लोग रो रहे थे, क्योंकि उन्होंने सब कुछ सुन लिया था और वे कुछ नहीं बोल रहे थे। सिरिल उस भयानक और अचानक आई पीड़ा से स्तब्ध और व्याकुल था। वह केवल इतना ही समझ पाया कि सीता चली गई थी; ईश्वर में अपने शाश्वत विश्राम में चली गई थी, निश्चित रूप से अंत तक विश्वास और भरोसा रखते हुए; और उसकी भक्ति के इस महान कार्य ने उसे बचा लिया था। ऐसे समय में, हमारे आस-पास हर दिन होने वाली घरेलू त्रासदियों में शामिल लोग शोक की अनुभूति से अधिक कुछ नहीं समझ पाते; और मन स्तब्ध होने के बावजूद, वह इस पीड़ा को निष्क्रिय रूप से, शायद शांति से भी सहन कर लेता है। उस समय उस पीड़ादायक शून्य का एहसास शायद ही होता है। नीचे, कभी आलीशान रहे घरों के खंडहर पड़े थे, आग की सुलगती राख अभी भी सुलग रही थी; और उसके अपने लॉन और बगीचे में, साथ ही जज के घर के आसपास, कई मृत शरीर पड़े थे। यह एक अजीब विचार और आवेग था, लेकिन सिरिल ने तुरंत उस पर अमल किया। "मेरे साथ आओ," उसने कुछ राहटोरे और बुलडेको को पुकारा, जो कई पुलिसकर्मियों के साथ बुर्ज के नीचे थे, और वह उनके पास नीचे गया, और वे उसके पीछे पानी के द्वार तक गए। "आप बाहर नहीं जा रहे हैं, श्रीमान ब्रैंडन?" ड्यूटी पर तैनात अधिकारी ने कहा। "हो सकता है कि उनमें से कुछ बदमाश आसपास छिपे हों। कम से कम, अपने कुछ आदमियों को साथ ले जाइए।" "नहीं," सिरिल ने कहा, "मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन आपको दोष दिया जाएगा, और मेरे साथ मेरे अपने बहादुर साथी हैं। मैं कुछ समय से मीनार से देख रहा हूँ, और किसी को नहीं देखा है।" फिर वह सीधे जुडगो के घर की ओर चल पड़ा। कुछ सियार बगीचे की झाड़ियों में छिपकर निकल गए, और अधभरे गिद्ध पेड़ों पर मंडरा रहे थे। जैसे ही वह बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, उसके सामने अज़राएल पांदे का शव खून के तालाब में पड़ा था: उसकी घूरती, बेजान आँखें प्रकाश में चमक रही थीं, और

उसका घिनौना, पीला पड़ा, टूटा हुआ चेहरा, उसी नफरत और अवज्ञा के भाव से भरा था, जो उसे तब याद आया था जब उसके खिलाफ घातक भाला उठाया गया था। "उसकी तलाशी लो," सिरिल ने पुलिस से कहा। "देखो उसके पास कोई कागजात हैं या नहीं;" लेकिन वे डर के मारे हिचकिचाते हुए प्रतीत हुए। "मुझे उसके जीवित रहने से डर नहीं था, और मुझे उसके मरने से भी डर नहीं है," बुलदेव ने आगे बढ़ते हुए और कमरबंद खोलना शुरू करते हुए कहा।

“जीवन का मुकुट” 385 डकैत के शरीर पर लिपटा कपड़ा; सिखों और अन्य लोगों की सहायता से, उसे शीघ्र ही उतार दिया गया। कमर पर एक लंबा चमड़े का थैला था, जो लगभग सोने के सिक्कों से भरा हुआ था; एक और ऐसा ही थैला रूबी से भरा था, और एक छोटे थैले में कई कीमती मोती और बिना जड़े हुए रत्न थे। “अरे! उसने हमें इनसे ठग लिया, महोदय,” बुलदेव ने थैला पलटते हुए कहा। “ये तो कलकत्ता के डकैत के थे, और ये हीरे और रूबी हैं जिनके बारे में उसने हमें बताया था कि ये कलकत्ता में माता के मंदिर के लिए हैं। हाँ, वह चोर भी था।” कोई अलग कागज़ात नहीं थे; लेकिन उसकी पीठ पर एक कपड़े का बक्सा बंधा हुआ था, जो बुलदेव ने श्री ब्रैंडन को सौंप दिया, जिसमें एक संस्कृत पुस्तक थी; इसे खोलकर, सिरिल को पन्नों के बीच कुछ पत्र और अन्य दस्तावेज़ मिले, जिन्हें उसने सावधानी से निकालकर अपने रुमाल में रख लिया। और कुछ नहीं था, और एक-एक पन्ना पलटने के बाद, सिरिल जाने के लिए उठा। जैसे ही उसने पुस्तक नीचे फेंकी, एक पुलिसवाला उसे उठाने ही वाला था, लेकिन बुलदेव ने उसे रोक दिया। “यह ‘गुरु पाद’ है,” उसने कहा, “जिससे वहाँ का महाराज अपने शैतानों को बुलाता था। इसे जला देना चाहिए। यह [र्रम, हर्रम, हर्रम! मुझे अभी भी सुनाई दे रहा है! इसे उस आग में फेंक दो, मित्र, वरना यह हमें नुकसान पहुँचाएगी। और अब, स्वामी, अंतिम खोज आगे है। अगर अज़राइल का दुनिया में कोई रहस्य है, तो वह इसमें है;” और उसने लुटेरे का रजाईदार बक्सा उठाया, और उसे एक-एक करके फाड़ना शुरू कर दिया। अंत में उसे दो मुड़े हुए कागज़ मिले, एक फ़ारसी में, दूसरा हिंदी में, जो उसने सिरिल को सौंप दिए; लेकिन उसने वस्त्र को तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि उसका एक-एक धागा खोलकर उसकी पूरी तरह से जाँच न कर ली गई। “अब, महोदय, मेरा विश्वास कीजिए; उसका जो भी सबसे गुप्त था, वह आपके हाथों में है। चलिए!” सिरिल ने ड्राइंग रूम पर एक नज़र डाली, जो पूरी तरह से सुरक्षित था। वहाँ वह ग्रेस के साथ गा रहा था जब श्विता

तहखानों से अंदर आ गई; और पियानो पर, जो बच गया था—क्योंकि आग ने मजबूत छत को प्रभावित नहीं किया था, और तहखानों को केवल आंशिक रूप से जला था—पुराना युगल गीत, “दिम्मी चे म’ अमी,” धुएँ से सना हुआ था, निश्चित रूप से, लेकिन पूरा था। “मैं इसे रखूँगा,” उसने मन ही मन कहा, “उस रात की याद में।” और, अपने आदमियों के साथ, वह किले में लौट आया। बाबा साहब पहले से ही वहाँ थे, और अपनी पत्नी और अन्य ब्राह्मण महिलाओं को लाए थे, और मृतकों के पेशेवर वस्त्र बनाने वाले भी, जो अंतिम संस्कार में व्यस्त थे, और अपनी प्रथा के अनुसार विलाप और विलाप कर रहे थे। वह कमरा जाने लायक नहीं था, और यहाँ तक कि अपने वफादार पुराने दोस्त से भी सिरिल कुछ खास कह नहीं पाया। बाबा साहब जानते थे कि ऐसा ही होगा, और उस दुःख का सम्मान करते थे जिसे वे कम नहीं कर सकते थे। फिलिप मोस्टिन भी आए और उन्होंने अपने दोस्त के 20
386 सीता। हाथ। वह क्या कह सकता था? तब कोई क्या कह सकता था? जो कुछ भी करना था, वह करना ही था। “रोज़ और ग्रैको उससे विदा लेने आएंगे,” उसने कहा; “मैं अंदर जाकर पता लगा लूंगा कि वे कब तैयार हैं।” महिलाओं ने सीता के सिर को फूलों की मालाओं से सजाया था और उन्हें उनके साधारण सफेद मलमल के वस्त्र पहनाए थे। जब वह मोम की मूर्ति की तरह लेटी थीं, और उनके प्यारे चेहरे पर मृत्यु की भव्यता का एक सुंदर लेकिन विचित्र विस्मय भाव था, तो उनके आसपास बैठी पेशेवर महिलाएं भी विस्मय से भर उठीं और चुप हो गईं। जब श्रीमती मोस्टिन, ग्रेस, श्रीमती प्रैट, श्रीमती हिल और लूसी होम अंदर आईं, तो सभी सम्मानपूर्वक खड़ी हो गईं। मुझे लगता है कि वे भी दूसरों की तरह ही विस्मय में थीं और ज्यादातर चुप ही रहीं; लेकिन ग्रेस और श्रीमती मोस्टिन फूट-फूटकर रो रही थीं और घुटने टेककर सीता के प्यारे चेहरे को चूमना चाहती थीं, लेकिन बाबा साहब की पत्नी ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने श्रीमती प्रैट से कहा, जिन्हें वह जानती थीं कि वह उनकी बात समझ गई हैं, "उनकी मृत्यु का मार्ग प्रशस्त हो चुका है और अब कोई उन्हें छू नहीं सकता!" लेकिन उन सभी ने उससे एक-एक माला ली और चुपचाप रोते हुए चले गए। इसी बीच, झील के किनारे, जलद्वार के पास, एक चिता तैयार की गई थी, और स्केता को उठाकर एक अर्थी पर वहाँ ले जाया गया और उस पर लिटा दिया गया। अंग्रेज़ सैनिकों ने अर्थी को गुजरते हुए सलामी दी, और सिरिल और मोस्टिन, मिस्टर नोबल और कई अन्य लोग शोक मना रही महिलाओं के पीछे-पीछे चले जो मृतकों के लिए प्रार्थना और भजन गा

रही थीं। बाबा साहब और कई ब्राह्मण, बिना सिर ढके, उनसे मिले, और जैसे ही अंतिम विलाप समाप्त हुआ, चिता को प्रज्वलित कर दिया गया। "बस करो!" फिलिप मोस्टिन ने कहा; "तुमने जो कर सकते थे, कर लिया, सिरिल, अब चले जाओ!" अपने मित्र का सहारा देते हुए, वह उसे उस शोकपूर्ण दृश्य से दूर ले गया। टावर की ओर जाते हुए सिरिल ने कहा, “मुझे देखना ही होगा कि मुझे मिले कागज़ात में क्या है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मेरी बेचारी सीता की मृत्यु पर प्रकाश डालेंगे। फिलिप, जब तक मैं उनकी जाँच नहीं कर लेता, मुझे चैन नहीं मिलेगा। आओ और मेरी मदद करो।” जैसा कि हम जानते हैं, दो कागज़ात थे। एक राम दास, जो बैंकर और सुनार था, द्वारा सात सौ पचास रुपये की राशि का एक बॉन्ड या स्वीकृति पत्र था, जिसकी तारीख अगस्त 1855 थी, और इसमें एक हजार रुपये की एक और मद जोड़ी गई थी, जिसके कुछ भुगतान दर्ज थे। श्री मोस्टिन ने कहा, “अरे! यह तो वाकई महत्वपूर्ण है! मुझे देखने दीजिए! मुझे लगता है कि यह हरी दास की हत्या के अगले दिन की बात है, लेकिन मैं मुकदमे के अपने नोट्स देख सकता हूँ। अब मुझे कोई संदेह नहीं है कि राम दास ही उस भयानक घटना का सूत्रधार था।”
“जीवन का मुकुट।” 387 “हाँ!” सिरिल ने सोचा और बहुत व्याकुल होकर कहा, “लेकिन इस पर नवाब की मुहर लगी है,” और कांपते हाथों से इसे ऊपर उठाया। “मुझे दे दो,” उसके मित्र ने कहा, “तुम इसे पढ़ने के योग्य नहीं हो।” और उसने वह पढ़ा जिसका मैं अनुवाद कर रहा हूँ। व्याकरण की गलतियों और वर्तनी की खामियों के बावजूद, इसका अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट था:— “ईश्वर के नाम पर, जो सबसे दयालु और कृपालु है।” “मैं, नवाब दिल खान बहादुर (उन्होंने अपनी नई उपाधियों का उल्लेख नहीं किया था), कर्नल अजरील पांडे बहादुर को पाँच हजार रुपये की राशि और नूरपुर तालुक के ज़ैनाबाद और सेक्टापुर गाँव, जिनका वार्षिक मूल्य चार हजार सात सौ रुपये है, और उससे संबंधित सभी भूमि और अधिकार देने का वचन देता हूँ। इस अनुदान के बदले में, उक्त कर्नल नूरपुर में जज और ब्रैंडन के घरों पर हमला करने और जज की बहन मिस्सी मोस्टिन को मेरे पास सुरक्षित लाने का वचन देता हूँ, और जज, ब्रैंडन और अन्य सभी फिरंगी, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को, जो उक्त घरों में और नूरपुर के किले में मौजूद हों, मेरी वीर सेना द्वारा उस पर आक्रमण करके उसे अपने कब्जे में लेने के बाद मार डालने का वचन देता हूँ।” “टेम.— और सीता ब्यो के बारे में, मैं, दिल खान बहादुर, कोई दावा नहीं करता। श्ली ‘कर्नल’ साहब की दासी है,

और वह उसके साथ जो चाहे कर सकता है। “रायना स्थित मेरे शिविर में, मेरे अपने हाथ से लिखा हुआ; मेरी अपनी मुहर से मुहरबंद; और मेरे हस्ताक्षर, “डिट कियान।” सिरिल ने दांत पीसे। ‘अगर भगवान मेरी मदद कर सकें,’ वह रोया; ‘यह बदला लेने का समय नहीं है। हाँ, फिलिप, मेरे बगीचे में दो पालकी पड़ी हैं, लावारिस। सोचो वे किससे बच गईं! हाँ! अब वह शांति से है, मेरी प्यारी!” वह सिसकते हुए बोला, “और उसके लिए ये भयानक साजिशें खत्म हो गई हैं।” फिलिप मोस्टिन बहुत भावुक हो गया। वह जानता था कि सिरिल ने उसकी बहन को बचाया था, क्योंकि उसने लड़ाई का कुछ हिस्सा देखा था, और कैसे उसने और सीता ने उसकी रक्षा की थी। ‘भयानक! भयानक!” उसने कहा। “लेकिन मैं यह सोच भी नहीं सकता कि ग्रेस किससे बच गई; मैं केवल इतना जानता हूँ कि वह आपकी और उस बिछड़ी हुई औरत की कितनी ऋणी थी।” “नहीं!” सिरिल ने शांत भाव से कहा; “मेरी नहीं, बल्कि हॉब्सन की— जिसने हम सबको बचाया। क्योंकि इसी,” और उसने अपने घाव की ओर इशारा करते हुए कहा, “ने मुझे बेबस कर दिया था; और आस-पास कोई और नहीं था। अगर वह न होता, तो मैं उसके साथ मर जाता।”

 “शाह गुंजे।” कुछ सप्ताह थकावट और उदासी से भरे बीत गए थे। सीता की मृत्यु के समय, और वास्तव में, उसके बाद कई दिनों तक, सिरिल ब्रैंडन उस व्यक्ति के खोने से स्तब्ध थे जो उनके लिए एक ऐसी साथी और मित्र बन गई थी जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी; और अब, एक ऐसा गहरा खालीपन छा गया था जिसे भरने के लिए कुछ भी नहीं था। उन्हें हर मोड़ पर और हर उस काम में सीता की याद आती थी जो उन्होंने उनके साथ किया था। शायद, शुरुआत में उनके जीवन में बहुत कुछ समान नहीं था; लेकिन सीता के मन की प्रखर प्रकृति ने पहले ही उनके बीच के गहरे जुड़ाव में कई बाधाओं को पार कर लिया था। अपने अथक अध्ययन में उन्हें मुख्य रूप से ग्रेस मोस्टिन का मार्गदर्शन मिला था, जिनकी शांत और कोमल भावना उनकी शिष्या में भी झलकती थी। सिरिल और उनके दोस्तों के लिए यह लगभग समझ से परे था कि सीता ने पिछले चार महीनों में कितना कुछ और कितनी तेजी से सीखा था; सीता की क्षमता कितनी बढ़ गई थी और नए कार्यों में उनके उत्साह ने उनकी समझ को कितना जीवंत कर दिया था। वास्तव में, उनके प्रयास का एक ही प्रेरक था: सिरिल की पत्नी के रूप में वह बनना जो उन्हें लगता था कि उन्हें बनना चाहिए। वह केवल एक हिंदू लड़की नहीं, जिसे उसके पति

के अलावा कोई नहीं जानता था; बल्कि वह जो समय आने पर दुनिया में खुलकर अपना स्थान बना सके और जिससे सिरिल कभी शर्मिंदा न हो। ग्रेस और उसकी बहन को ऐसा प्रतीत हुआ था कि ऐसा हो सकता है; लेकिन जब तक सीता अपने हिंदू धर्म और रीति-रिवाजों को मानती रहेंगी, तब तक यह असंभव ही रहेगा। क्या वह कभी इन्हें छोड़ पाएंगी? वास्तव में, यह सीता से प्रेम करने वाले सभी लोगों के बीच चिंताजनक चर्चा का विषय था; लेकिन श्रीमती प्रैट भी, जिनकी शिक्षा और एक मिशनरी के रूप में अनुभव ने उन्हें श्रीमती मोस्टिन या ग्रेस से कहीं अधिक महत्व और समझ दी थी, धर्म परिवर्तन का कोई ठोस प्रयास करने से हिचकिचा रही थीं। सीता का मन अभी इस बदलाव के लिए तैयार नहीं था। वह जाति को त्याग नहीं सकती थीं। वह अपने पुराने संबंधों और शाहगुन में बचे लोगों के प्रति अपने गहरे प्रेम से खुद को अलग नहीं कर सकी। वह उस पुरानी आस्था को, जिसमें उसका पालन-पोषण हुआ था, और उस आस्था को, जिसके आधार पर वह गहरी और अक्सर भव्य आध्यात्मिक दलीलें दी जाती थीं, तुरंत नहीं छोड़ सकी। इन सबके सामने, ईसाई सत्य की सादगी, शुरू में तो बचकानी, बल्कि तुच्छ ही लगती थी; फिर भी किस तरह वह धीरे-धीरे उसके मन में बसती चली गई! किस तरह वे उसे एक अंतिम, अटल कदम उठाने के लिए प्रेरित कर रही थीं, यह हम आंशिक रूप से जानते हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं।

“शाह गुंजे” 889 —देखें। उस प्रेममय, पवित्र हृदय के संघर्षों को इन अपूर्ण पृष्ठों में जितना मैंने पहले ही वर्णित किया है, उससे अधिक विस्तार से बताना मेरे लिए आवश्यक नहीं है। सत्य को जानने की लालसा रखने वाले ईसाई हृदयों में भी ऐसे संघर्ष अक्सर लंबे और कष्टदायक होते हैं; तो फिर एक विधर्मी के संघर्ष कितने अधिक होंगे, जिसके पास इसे समझने के लिए पर्याप्त बुद्धि और शिक्षा है, और फिर भी जिसे वह सर्वोपरि और पहले अत्यंत पवित्र और अनमोल मानती थी, जिसे न केवल जोखिम में डालना है, बल्कि एक नए धर्म और बिल्कुल नए स्नेह और संगति के लिए पूरी तरह से त्याग देना है। यदि वह हिंदू धर्म का त्याग करती, तो वह अपने दादा के घर में अजनबी हो जाती। वह उनके साथ भोजन नहीं कर सकती थी, न ही उनके साथ रह सकती थी, जैसा कि वह पहले करती थी। वे उसे धिक्कार सकते थे और उससे मिलने से इनकार कर सकते थे; और उसके आदरणीय गुरु वामन भूत को गहरा दुःख होगा। उसके पुराने साथी उसे तुच्छ समझेंगे, क्योंकि वह जानती थी कि

उनके बीच ईसाई धर्म का कितना सम्मान था—बल्कि, लगभग एक वर्ष पहले तक उसने स्वयं भी इसका कितना सम्मान किया था। यदि सिरिल की मृत्यु हो जाती—और संभवतः उसकी मृत्यु सीता से पहले हो जाती—और सीता ईसाई होती, तो उसकी जाति समाप्त होने पर उसे कौन स्वीकार करता? कोई प्रायश्चित, कोई जुर्माना, न ही धर्म संघ या बनारस के ब्राह्मणों से कोई समझौता, वह सब कुछ वापस नहीं दिला सकता था जो उसने जानबूझकर त्याग दिया था। उसे एक बहिष्कृत की तरह अकेले रहना होगा: और यदि उसकी मृत्यु हो जाती, तो उसे दफ़नाने वाला भी कौन होता? मैं कहता हूँ कि ये और ऐसे ही हज़ारों अन्य विचार सीता के मन में समय के साथ-साथ आते-जाते रहते थे, और उसके विश्वास के पुराने स्तंभ कमज़ोर होते जा रहे थे; और शायद इस मामले में सीता अपने हज़ारों देशवासियों का ही प्रतीक है, जो इस सत्य को समझते हैं, और जो अपने जीवन में किसी अनहोनी विपत्ति के आने तक वह अंतिम कदम उठाने का साहस नहीं करते जो न केवल उन्हें जीवन में उनके सभी प्रिय, सम्मानित और आदरपूर्ण पहलुओं से अलग कर देता है, बल्कि उन्हें सामाजिक रूप से बहिष्कृत बना देता है—अपने लोगों द्वारा पूरी तरह से तिरस्कृत और अस्वीकृत, यहाँ तक कि एक गिलास ठंडा पानी देने से भी इनकार कर दिया जाता है। हममें से बहुत से लोग गैर-ईसाइयों की कठोरता की निंदा करते हैं और उनके अपने धर्म में विश्वास को बहुत ही भद्दे नामों से पुकारते हैं; लेकिन मुझे लगता है कि सीता जैसे संघर्षों की वास्तविकता की गंभीरता को समझने के लिए हमें उनके प्रति अत्यंत दयालुता दिखानी चाहिए। फिर भी, उस यादगार रात में उस लड़की को देखने वाले सभी लोग जानते थे कि ईश्वर के प्रति उसकी आस्था कितनी गहरी थी, जिस पर वह बचपन से ही भरोसा करती थी। क्या वह कभी बपतिस्मा स्वीकार करती? वे नहीं बता सकते थे, क्योंकि किसी ने पूछने की हिम्मत नहीं की थी। वे इस मानसिक संघर्ष को देखकर संतुष्ट थे और सीता को यथासंभव सांत्वना और प्रोत्साहन दे रहे थे। फिर भी, सांसारिक दृष्टिकोण से, ईसाई बनने के लाभ, यथास्थिति बनाए रखने की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट प्रतीत होते थे। श्रीमती प्रैट ने सीता की स्थिति को

 सिरिल को छोड़कर, जिसने इसे कभी नहीं छिपाया था, बाकी सभी के सामने यह बात स्पष्ट रूप से कही गई थी। एक ईसाई होने के नाते, वह उससे ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह करेगा। तब कोई भी उसके सामाजिक पद और प्रतिष्ठा के अधिकार से इनकार नहीं कर सकता था। वह इंग्लैंड जा सकती थी और लेडी

हिल्टन से मिल सकती थी। सिरिल के भाई की मृत्यु होने पर वह भी लेडी हिल्टन बन सकती थी, सम्मानित और आदरणीय। यदि वह अपने पति से संतान उत्पन्न करती, तो अंग्रेजी कानून के अनुसार उन पर नाजायज होने का कलंक नहीं लगता; और क्या उसने अपने प्रेम, अपने विश्वास और निष्ठा के कारण एक ईसाई के साथ अपना जीवन नहीं बिताया था? इसलिए, अपने पति के धर्म को अपनाना उसका कर्तव्य प्रतीत होता है: बाकी सब कुछ त्यागकर, उस धर्म से प्रेम और आदर करना। क्या उसे उस बात को अस्वीकार करने का कोई अधिकार था जिसे वह जानती थी कि उसका पति सहर्ष स्वीकार करेगा? तब वह और ग्रेस वास्तव में बहनें होंगी, क्योंकि श्रीमती मोस्टिन ने एक दिन मजाक में कहा था कि वह और श्रीमती प्रैट उसकी धर्ममाताएँ होनी चाहिए। ये सब बातें वह जानती थी, फिर भी इससे उसका ध्यान नहीं भटका, न ही उसके मन में उठ रहे उस तूफान को शांत कर पाया जिसमें सांसारिक स्वार्थों का कोई स्थान नहीं था। फिर भी संकट निकट था, और शायद कुछ ही दिनों में, इस प्रश्न का हल निकल जाता, जो अब हमेशा के लिए हल हो चुका था। बाबा साहब ने नरेंद्र और उसकी बहन को पत्र लिखने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया था, और उन्होंने उनके लिए सिरिल का एक छोटा सा पत्र भी भेजा था, जिसमें केवल कुछ शब्द थे। जो स्वयं को कोई सांत्वना नहीं दे पा रहा था, वह क्या कह सकता था? सिवाय इसके कि जो कुछ उन सब पर बीता था, उसे वह साहसपूर्वक सहन करे। मुझे लगता है कि शाहगंज में उनकी सबसे बड़ी सांत्वनाओं में से एक यह सोचना था कि सिरिल ने उन्हें धोखा नहीं दिया था; लेकिन आंटी एला कई कारणों से बहुत परेशान थीं। जाति के विरुद्ध किए गए अपराधों से वह अभी तक मुक्त नहीं हुई थीं। काश, जब हरसे दास की मृत्यु हुई थी, तब वह तुरंत बनारस चली गई होती! काश! तो वह आंटी एला जैसी ही लौट आतीं, और यह छोटी सी कहानी कभी लिखी ही न जाती। यह जानकर कुछ राहत मिली कि बाबा साहब और नूरपुर के समुदाय ने अंतिम संस्कार का प्रबंध कर लिया था और सभी आवश्यक रस्में पूरी कर ली थीं; और वामुन भूत बाकी का काम संभाल लेंगे। कुल मिलाकर, शायद शुरू में, आंटी एला इस दुखद घटना के प्रति जितनी शांत थीं, उतनी उम्मीद नहीं थी। सीता के ईसाई बन जाने का एक बड़ा डर अब शांत हो गया था; उनकी आत्मा को शांति मिलने में कोई बाधा नहीं थी, और शायद कठोर तपस्या के लंबे दौर और अपनी नाक की नोक को पहचानने के कष्टदायक प्रयासों ने उस बूढ़ी महिला की मानवता और प्रेम की भावनाओं को काफी हद तक कुंद कर दिया था; कम

से कम बाहरी रीति-रिवाजों या प्रदर्शनों के मामले में तो ऐसा ही था। लेकिन शायद कम ही लोग जानते थे कि कितनी बार, जब वह रात में ठंडे पानी से नहाने के लिए उठती थीं, गीले कपड़ों में बैठती थीं, और
सीता गुंजे 391, उनके "राम, राम, राम" को दोहराते हुए, स्वाभाविक भावनाएँ अपना रूप धारण कर लेतीं: और जैसे ही वह प्यारी बच्ची, जो उनके सामने पली-बढ़ी थी, जिसके प्रेम की लटें उनके हृदय को जकड़ चुकी थीं, आत्मा के रूप में उनके पास आई और उन्हें सहलाती हुई प्रतीत हुई—आंटी एला ने उन्हें अभी भी वहाँ लिपटा हुआ महसूस किया, और सबके अलावा किसी को पता चले बिना, भावुक आँसुओं की बाढ़ बहा दी। मुझे लगता है कि नरेंद्र, सांसारिक मामलों में जितना बुद्धिमान था, कुछ समय बाद शोक को पहले की तुलना में अधिक कोमलता से ग्रहण करने लगा। सीता, जो कभी उनके दैनिक जीवन का हिस्सा थीं, धीरे-धीरे उससे अलग हो गई थीं। बाद में यह अलगाव और भी गहरा हो गया था, और बूढ़े व्यक्ति को यह सुनकर कभी आश्चर्य नहीं होता कि सीता ईसाई बन गई हैं; वास्तव में, वह श्री ब्रैंडन के सम्मान से इतने संतुष्ट थे कि अपनी पत्नी के धर्म में इस तरह के परिवर्तन की खबर का उन्होंने लगभग स्वागत किया होता, क्योंकि इससे उनके जीवन में और अधिक पूर्ण सामंजस्य सुनिश्चित होता। संभव है कि बेचारी सीता ने इस मामले में घरेलू प्रभावों के असर को कुछ ज़्यादा ही आँका हो; और उसने अपने जीवन के सबसे अहम संकट पर अंतिम निर्णय लेने से पहले एक बार फिर उनसे मिलने का निश्चय कर लिया था। बुलदेव हमेशा की तरह शाहगंज के पास पत्र लेकर गया था। उसने बूढ़े को विनम्र और धैर्यवान पाया, जैसा कि उसने कहा, वह सार्वजनिक मामलों में अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा था। राम दास शाहगंज से शायद ही कभी बाहर निकलता था: उसने नरेंद्र के घर की निचली मंज़िल के सभी कमरों पर कब्ज़ा कर लिया था, पुराने बैंकर के आसन पर बैठता था और सारा कारोबार वहीं करता था; लेकिन उसे बैंकर का छिपा हुआ खजाना नहीं मिला था, और संवाददाताओं और एजेंटों ने नरेंद्र के सीधे आदेश के बिना अपने पास मौजूद बकाया राशि भेजने से इनकार कर दिया था, और नरेंद्र ने आदेश देने से भी इनकार कर दिया था; इसलिए आस-पास के ज़िले में उधार दिए गए पैसों को इकट्ठा करने के अलावा, राम दास को वास्तव में बहुत कम लाभ हुआ था। इस प्रकार, नरेंद्र की बड़ी-बड़ी धनराशि उसकी पहुँच से बाहर थी—कम से कम अभी के लिए—और "कोई अंग्रेज़ नहीं" होने की आशा शायद इस डर में बदल रही थी कि कहीं वह आशा

पूरी न हो पाए। शाहगंज के आसपास और भीतर, लोग मौलवी के अत्याचारों के खिलाफ़ उठ खड़े होने लगे थे, जो वास्तव में कई मायनों में गंभीर और असहनीय थे। न केवल उसके साथ रहने वाले साहसी सैनिक हिंसक और उद्दंड थे, बल्कि किसानों और ज़मींदारों को भी यह महसूस होने लगा था कि उनसे अग्रिम राजस्व की किश्तों की माँग बढ़ती जा रही है और पहले से भी अधिक क्रूरता से वसूली जा रही है; और उन्होंने नरेंद्र को संदेश भेजा था कि यदि श्री ब्रैंडन आ जाएँ, तो वे अपने इतने सैनिक जुटा सकते हैं कि मौलवी को शहर से बाहर निकाल दें।

392 सीता। शाहगंज, और अंग्रेजों के लिए शहर और जिले पर कब्जा बनाए रखें। श्री ब्रैंडन को लिखे अपने पत्र में, नरेंद्र ने सीता की मृत्यु पर उन्हें सांत्वना के कुछ अच्छे शब्द कहने के बाद, उनसे शीघ्र आने का आग्रह किया। उन्होंने लिखा, "मेरे पास इकट्ठा होने वाले लोगों को भुगतान करने के लिए पर्याप्त धन है, और वे बहुत होंगे; और जब आप हमें अत्याचार से मुक्त करेंगे, तो आपका नाम हमारे सभी दिलों में कृतज्ञतापूर्वक सदा के लिए अमर रहेगा।" वास्तव में, यह एक ऐसा उपयुक्त समय प्रतीत हो रहा था, जिसमें जनता की सहायता से एक सक्रिय आंदोलन द्वारा अच्छा कार्य किया जा सकता था! उन्हें केवल एक नेता की आवश्यकता थी, और श्री ब्रैंडन को पूरा विश्वास था कि सरकार न केवल विद्रोहियों के विरुद्ध कार्रवाई को मंजूरी देगी, बल्कि इस उद्देश्य के लिए आवश्यक किसी भी अभियान को भी स्वीकृत कर देगी। धन का बोझ वह स्वयं नहीं उठा सकते थे; लेकिन नरेंद्र धन उपलब्ध कराएंगे, और बुलदेव ने उन्हें आश्वासन दिया था कि उनकी गतिविधियों को सार्वजनिक किए बिना, वह और राठौर उन्हें जंगलों के सुरक्षित लेकिन अज्ञात रास्तों से शाहगंज तक ले जा सकते हैं। श्री ब्रैंडन राम दास को पकड़ने के लिए भी उतने ही उत्सुक थे, जिनके मूल अपराध का पता, उनके विचार में, अज़राएल पांडे के शव की तलाशी से मिले सबूतों से लगाया जा सकता था, और यदि वे शाहगंज पहुँच जाते तो और भी सबूत मिल सकते थे। अज़राएल के अन्य कागजातों के बीच उनकी लिखावट में कई विवरण मिले, जो सभी राम दास के साथ हुए लेन-देन की ओर इशारा करते थे, जो हुरे दास की हत्या के समय के आसपास शुरू हुए थे, लेकिन जिन्हें केवल सुनार के कागजातों की जांच से ही पूरी तरह समझा जा सकता था। किताबों में लिखी बातों के आधार पर, बुलदेव से गोकुलवौर की घटना के बारे में कई बार पूछताछ की गई, लेकिन वह लगातार यही कहता रहा कि उसे कुछ नहीं पता। वह किसी काम से एक गाँव गया हुआ था और

शाह गुंजे में अजरदेल और झरने पर गिरोह से उसी दिन मिला जिस दिन डकैती हुई थी। उसने निश्चित रूप से सुना था कि एक बैंकर झरने पर आया था और पैसे लाया था; और दो जासूस, सुम्भो और गोविंदा, उसके साथ गए थे; लेकिन वह राम दास था या नहीं, यह वह नहीं बता सका। उसने कहा, "अगर मुझे पता चल जाए कि ये दोनों आदमी कहाँ हैं, तो हमें सब पता चल जाएगा: लेकिन डकैती का पता चलने और अजरदेल के पकड़े जाने के बाद वे गायब हो गए और देश छोड़कर भाग गए होंगे।" बुलदेव का भाई, फुर्सुत, बहुत पहले ही उससे जुड़ चुका था; और अब वह सिरिल के सबसे सक्रिय जासूसों में से एक था। उसे नूरपुर पर होने वाले हमले या सीता और मिस मोस्तीन के अपहरण की योजना की जानकारी नहीं थी। नवाब और उसकी सेना रायना में हुरपेल सिंह पर नज़र रख रहे थे; और अज़राएल अपने एकांतवास में ही रहा, और दिन-ब-दिन और भी उग्र और बेकाबू होता जा रहा था।

“शाह गुंजे।” 393 यहाँ तक कि गोर बक्स ने भी उसे छोड़ दिया था और उसकी देखभाल के लिए तीन आदमियों के साथ उसे अकेला छोड़ दिया था। लेकिन एक सुबह, उसकी सबसे भयानक रातों में से एक के बाद, अज़र्डेल और अन्य लोग अचानक फुटतेहपुर से चले गए और उसे वहीं रुकने के लिए कहा; और वह वहाँ कई दिनों तक इंतज़ार करता रहा, जब तक कि अंततः सिपाही वापस नहीं आ गए, जिनमें से एक बुरी तरह घायल था। उन्होंने उसे बताया कि नूरपुर में सेना को खदेड़ दिया गया था, और उन्होंने अज़र्डेल को कप्तान हॉब्सन और बुलदेव द्वारा मारे जाते देखा था, ठीक उसी समय जब वह स्केटा पर कब्ज़ा करने ही वाला था। नूरपुर पर अचानक हमला सफल होने की बड़ी उम्मीद थी, और अज़र्डेल ने कुछ महिलाओं को ले जाने के लिए पालकी की व्यवस्था की थी; लेकिन हमला विफल हो गया, और परिणामस्वरूप सेना में बहुत असंतोष फैल गया। अपने साथी की मृत्यु के बाद, फुटसुत अपने लिए कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र था, और उसने अज़र्डेल की संपत्ति, जो भी थी, ले ली और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया। फिर बुलदेव, जो एक बार में कुछ ही दिनों से अधिक आराम नहीं कर पाता था, समय-समय पर समाचार लाने के लिए बाहर जाता था, जिसकी आखिरी खबर यह थी कि नवाब और हुरपाल सिंह की सेनाओं ने आपस में लड़ाई लड़ी थी, और हुरपाल सिंह की हार हुई थी और वह अपने किले में लौट आया था; लेकिन नवाब के सिपाही बागी हो गए थे और उसे झांसी या कानपुर ले जाना चाहते थे, और वह कर्नल गोर बक्स के हाथों में असहाय था, जो अब अपनी

मनमानी कर रहा था। "मुझे बिल्कुल स्पष्ट है, फिलिप, यही सबसे अच्छा होगा," सिरिल ने एक दिन श्री मोस्टिन से कहा, बुलदेव और उसके भाई के अपने आखिरी जासूसी अभियान से लौटने के कुछ ही समय बाद। “और अगर हम शाहगंज पर कब्ज़ा कर लेते हैं, जिसमें मुझे कोई शक नहीं है, तो पूरा देश हमारे साथ होगा। बाबा साहब भी मेरी ही राय से पूरी तरह सहमत हैं। जो कुछ हुआ है, वह सब मेरी यादों में इतना ताजा है कि यहाँ रहना नामुमकिन है, हर दिन उसी भयानक घटना की पुनरावृत्ति होती है। सच कहूँ तो, मैं शिकायत न करने की कोशिश करता हूँ, फिलिप; लेकिन तुम खुद को मेरी जगह रखकर मेरी भावनाओं को समझ नहीं सकते। अगर मैं सफल हो जाता हूँ, तो मुझे कुछ श्रेय मिल सकता है, और अगर मैं तुम्हारे पास वापस नहीं आता, तो केवल एक और व्यक्ति ही जाएगा जिसने अपना कर्तव्य निभाने की कोशिश की।” “और अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं भी यही करता, सिरिल,” उसके दोस्त ने जवाब दिया। “मुझे पता है कि तुम जल्दबाजी नहीं करोगे, और तुम्हें हमेशा याद रखना चाहिए कि घर पर भी तुम्हें दूसरों के बारे में सोचना है, सिर्फ अपने बारे में नहीं। लेकिन तुम अकेले नहीं जाओगे?” “नहीं, फिलिप; टेंपल मेरे साथ आएगा, और मैं नोबल को ज़िम्मेदारी सौंप रहा हूँ। ओब्सन भी आना चाहता था, लेकिन उसका घाव अभी तक ठीक नहीं हुआ है, और जब तक उसकी रेजिमेंट का मुख्य दल यहाँ है, ब्रिगेडियर का कहना है कि उसे यहीं रहना होगा; और उसे इस बात का बहुत अफ़सोस है। उसके सैनिकों में से पच्चीस स्वयंसेवकों को बुलाया गया है, और हमारे साथ उतने ही बेहतरीन साथी होंगे जितने किसी भी सैनिक के पास होने चाहिए।”

सीता की मृत्यु के बाद, यह तय हो गया था कि वे जाएंगे; सीता की मृत्यु के बाद से सिरिल ब्रैंडन का मन जितना हल्का हुआ था, उससे भी हल्का मन से उन्होंने श्री मोस्टिन, ग्रेस और अन्य मित्रों से विदा ली; और एक शाम ढलते समय जब छोटा सा दल द्वार पर इकट्ठा हुआ, तो सभी अंग्रेज़ सैनिक और अधिकारी बाहर आए और उन्होंने तीन बार ज़ोरदार जयकार की और उनके सुरक्षित लौटने की कामना की। बेचारी श्रीमती मोस्टिन बहुत भावुक हो गई थीं और मुश्किल से उनसे बात कर पा रही थीं; लेकिन ग्रेस, हालांकि उनके आंसू तेज़ी से बह रहे थे, ने उनसे कहा कि वे अपना कर्तव्य निभाएं और ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उन्हें सुरक्षित रखें। “अगर मैं लौटता हूँ,” उन्होंने गंभीरता से उत्तर दिया, “तो मैं बहुत आभारी रहूंगा; और अगर मैं नहीं

लौटता, तो मैं आपको यह बताए बिना नहीं जा सकता कि मैं अपनी प्यारी पत्नी के लिए आपके सभी प्रेम और स्नेह के लिए कितना आभारी हूं, जो अंत तक बना रहा, एक ऐसी भावना जो समय के साथ और भी बढ़ती जाएगी;" और इस तरह वे उनसे विदा हो गए। कितना सुखद सफर था! आज़ादी का एहसास, खुला मैदान, और छोटी-मोटी लड़ाइयों और ईर्ष्याओं के उस असहनीय माहौल से मुक्ति ने साथियों को नई हिम्मत दी। सिरिल का घाव लगभग भर चुका था, और उसने अपने हाथ और बांह का इस्तेमाल फिर से शुरू कर दिया था, जो एक समय संदिग्ध लग रहा था। पहली रात उन्होंने जियो मुख में पेड़ों के नीचे आराम किया, जहाँ महीनों पहले तंबू लगाए गए थे। इंचेर्ना नदी अब एक बड़ा जल निकाय बन चुकी थी, और एक धीमी, अचानक गर्जना के साथ खाई में गिरती थी, जिससे पानी की फुहारें उठती थीं। बेचारी सीता की भविष्यवाणी कितनी सच साबित हुई थी! सुख का एक छोटा सा पल, और मानो परम सुख की चरम सीमा, फिर भी छिन जाने वाला था! अगली सुबह वे एक ऊबड़-खाबड़ रास्ते से नीचे जंगल में उतरे, और जितनी तेज़ी से हो सके, घाटी की तलहटी तक पहुँचे, जिसके शीर्ष पर मंदिर और झरना था, जिससे इस कहानी की शुरुआत हुई। जिस जगह उन्होंने डेरा डाला था, वह एक खुला समतल स्थान था जो धारा के पास था, एक छोटा हरा घास का मैदान, जो सचमुच एक घास के मैदान जैसा दिखता था। चारों ओर ऊँची-ऊँची, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियाँ थीं, जो मानो उस मैदान को घेर लेती थीं, केवल धारा को एक ऊँची चट्टान के नीचे से निकलने की जगह छोड़ती थीं। और फिर वह जगह पूरी तरह से निगरानी से मुक्त थी; शाह गुंजे से ज़्यादा नज़दीक कोई गाँव नहीं था, जो लगभग सात मील दूर था। "काश मैं आज़ाद होता!" नरेंद्र चिल्लाया, जब बुलदेव उस रात सिरिल का संदेश लेकर उसके पास आया; "कि मैं तुरंत उससे मिलने जा सकूँ; लेकिन मुझे पहले से कहीं ज़्यादा कैदी जैसा दिखना होगा। उसे बता देना कि सब तैयार हैं, और वह कल रात झरने पर एक हज़ार आदमियों से मिलेगा। उसे

देरी; उन्हें तुरंत ले आओ, जब उनका खून गर्म हो। मुझे छुड़ाने के लिए एक दल भेजो, और मैं जल्द ही उनके साथ होऊंगा। अगली दोपहर, सिरिल और टेम्पल, राटोर्स और उनके सहायकों के साथ, धारा के किनारे से घाटी में सावधानीपूर्वक आगे बढ़े, और एक कठिन चढ़ाई के बाद झरने के नीचे घास का रोशन टुकड़ा दिखाई दिया। वे वहाँ सबसे पहले पहुँचे थे, और उस स्थान की असीम सुंदरता

की प्रशंसा करने का समय मिला, जो अब डूबते सूरज की नारंगी किरणों के नीचे चमक रहा था, जो सीधे उस पर पड़ रही थीं, पुराने पीपल के पेड़ की सूखी शाखाओं और चट्टान और झरने को सुनहरी रोशनी से रोशन कर रही थीं। पेड़ के चारों ओर, तोतों और जंगली कबूतरों के झुंड चक्कर लगा रहे थे, क्योंकि वे रात के आराम के लिए बैठ रहे थे; और घाटी में, मोर धारा के एक किनारे से दूसरे किनारे उड़ते हुए चीख रहे थे। “यही वह जगह है जहाँ से हम गोकुलपुर में डकैती के लिए गए थे,” बुलदेव ने कहा। “यह हमारी पुरानी मुलाकात की जगह है; और देखो, ये वो भट्टियाँ हैं जिनमें अजराइल ने सोना और चाँदी पिघलाई थी। तब से यहाँ कोई नहीं आया है, क्योंकि हमारे निशान नहीं मिटाए गए हैं;” और उसने मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक विशेष ढंग से रखी कुछ टहनियों की ओर इशारा किया। थोड़ी देर में सूरज डूब गया और रात हो गई, और दूर से गाँव के एक सींग की आवाज़ सुनाई दी। “यह संकेत है,” बुलदेव ने कहा; “यह बुलराम सिंह का सींग है, और वह अपने दो सौ कबीले के लोगों के साथ यहाँ होगा।” बुलराम सिंह, सिरिल का पुराना मित्र था, जहाँ तक हमें पता है, और नूरपुर जिले के अधिकांश छोटे सरदार उसके सहयोगी थे। बुलदेव का अनुमान गलत नहीं था, क्योंकि थोड़ी देर में ही उन्होंने मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते से कुछ लोगों को नीचे आते सुना, और बुलराम सिंह अपने दोनों मित्रों से मिलने के लिए दौड़ा, जो उसका स्वागत करने के लिए प्रवेश द्वार पर खड़े थे। बच्चे की तरह रो रहे बुलराम सिंह को सिरिल ने गले लगाया और उसे हिम्मत रखने को कहा, और कहा कि अगर सभी उसकी तरह हैं, तो जिला जल्द ही साफ हो जाएगा। “वे सब आ रहे हैं, महोदय; हमें जिनकी ज़रूरत है, वे सब आ रहे हैं। आज रात यहाँ एक हज़ार या उससे अधिक लोग होंगे। फिर हम चुपचाप आप पर हमला करेंगे।” और यह एक विचित्र और अराजक दृश्य था, जब पुरुषों के लिए जगह न होने के कारण, एक के बाद एक नेता रास्ते से नीचे आए, और बुलराम सिंह द्वारा परिचय कराए जाने पर, उन्होंने अपनी तलवार की मूठ दिखाई; और जब सभी वहाँ पहुँच गए, तो किसी ने मशाल जलाई, और उसकी चमक लगभग पचास पुरुषों के दृढ़ चेहरों पर फैल गई, जो प्रतिष्ठित जमींदार और गाँव के मुखिया थे, जिन्हें सिरिल पहले से जानता था। सचमुच वे गंभीर प्रतीत हो रहे थे। 396 सीता। “मेरे मित्रों,” उसने कहा, “मैं पहले नहीं आ सका, क्योंकि मैं घायल था और मेरा हाथ लाचार था; लेकिन मैं तुम्हारे बुलावे पर तुम्हारे बीच आया हूँ, और हम उस अत्याचार से खुद को मुक्त करेंगे जिससे सभी पीड़ित हैं। एकजुट रहो और कुछ

मत बोलो, कोई गोली मत चलाओ। तुम सब जगह जानते हो। आधे मेरे साथ चलो, आधे मेरे इस मित्र के साथ, जिसे तुम नहीं जानते, लेकिन जिसे मैं बहादुर और सच्चा जानता हूँ; और अब—क्योंकि यहाँ कोई नहीं सुन सकता—अंग्रेजों के लिए एक जयकार करो, 'जय कुम्पानी बहादुर'।" और सभी ने पूरे दिल से इसका उत्तर दिया, और ऊपर मौजूद लोगों की भीड़ ने भी इसे दोहराया, जो हवा में गूंजता रहा, यहाँ तक कि सिरिल को डर था कि यह दूर तक सुनाई दे सकता है। "घोड़े और घुड़सवार आ गए हैं," सिख अर्दली में से एक ने ऊपर आते हुए कहा; "और हम सब तैयार हैं, महोदय!" "जय ब्रैंडन बहादुर" के एक और नारे के साथ, नेता आगे बढ़े, उनके पीछे सिरिल और टेंपल थे, जो खुशी और उत्साह से बेकाबू थे। "काफी नाटकीय है ना, ब्रैंडन?" वह चिल्लाया; "क्या ही शानदार दृश्य है किसी नाटक का!" जब वे शाहगंज के करीब पहुँचे, तो एक और छोटा सा ठहराव आया; कस्बे में कोई हलचल नहीं दिख रही थी। द्वार बंद थे, लेकिन दीवार में कुछ खुले द्वार थे जिनकी पहरेदारी नहीं हो रही थी, और उनसे अंदर घुसने पर सबको पूरी तरह से आश्चर्य हुआ। सिरिल, जो कस्बे को अच्छी तरह जानता था और जिसे किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता नहीं थी, उसने बुलराम सिंह को टेंपल के साथ भेजा था, जो उसे सीधे स्थानीय अदालत ले गया, जहाँ से संगीत की कुछ आवाज़ें आ रही थीं। दरअसल, मौलवी अपनी रात की दावतों में से एक मना रहा था; और जैसे ही वह नौजवान अंग्रेज और उसके साथी अंदर आए, पूरा दल अफरा-तफरी में उठ खड़ा हुआ। फिर थोड़ी देर के लिए हाथापाई हुई, और टेम्पलो पर चिल्लाते हुए हमला करने वाले मौलवी को टेम्पलो ने आगे बढ़ते ही गोली मार दी, और बाकी सभी को जल्द ही तलवार से मार गिराया गया या काबू में कर लिया गया। "आपको उसे मेरे हवाले कर देना चाहिए था, महोदय," बुलराम सिंह ने कहा; "मैंने उसे अपना बना लिया था, लेकिन मैं बहुत देर हो गया।" "हाँ, बहुत देर हो गई, मेरे दोस्त," टेम्पलो ने जवाब दिया; "लेकिन मुझे लगता है कि आप काफी तेज थे," उसने अपनी खून से सनी तलवार को देखते हुए कहा। "शाबाश, शाबाश!" इसी बीच सिरिल उस प्यारे पुराने घर की ओर बढ़ गया जिसे वह अच्छी तरह से याद करता था। द्वार पर भारी पहरा था, लेकिन चौक पार करने से पहले ही उसने अंदर से शोर सुना, और कई पहरेदार चिल्लाते हुए बाहर भागे, "धोखा! धोखा!" असल में, बुलदेव और राठौर परिवार के कुछ सदस्यों को नौकरानियों ने पीछे से अंदर आने दिया था। वे भीतरी प्रांगण में पहुँच गए थे और जब वहाँ सो रहे रामदास को दो आदमी बाँध रहे थे, तभी

बाकी बचे लोगों ने अंदर से पहरेदारों पर हमला कर दिया और उन्हें बेरहमी से पीट-पीटकर भगा दिया।

“शाह गुंजे।” 397 भारी तलवारें। बाकी काम सिरिल के आदमियों ने पूरा किया, और जैसे ही वह पुराने दरबार में दाखिल हुआ, उसने देखा कि बैंकर सीढ़ियों पर बाहें फैलाए खड़ा है, मानो उसे आने के लिए पुकार रहा हो, क्योंकि उसने एक बार फिर उसकी जान और इज्जत बचाई थी। “और तुम सुरक्षित हो, तुम सुरक्षित हो,” वह बार-बार कहता रहा, उसके ऊपर हाथ फेरते हुए। “हे ईश्वर का शुक्रिया जिसने तुम्हें भेजा!” और औम एला भी उसके पीछे-पीछे थी, जिसने सिरिल के गले में बाहें डाल दीं, और बेसुध होकर रोने और हंसने लगी, और अस्पष्ट रूप से धन्यवाद कहती रही, जब तक कि उसका भाई उसे कांपती हुई हालत में खींचकर अलग नहीं कर दिया और चुप रहने को कहा। “और राम दास?” सिरिल ने पूछा; “उम्मीद है वह भागा नहीं होगा?” “नहीं, महोदय,” राठौरों में से एक ने अंदर से आकर कहा। “उसने अपने हाथों से खुद को गला घोंटने की कोशिश की, लेकिन हमने उसके हाथों को उसकी पगड़ी से बांध दिया, और वह बिल्कुल सुरक्षित है। आइए और उसे देखिए।” हाँ, वह बिल्कुल सुरक्षित था, ज़मीन पर तड़प रहा था, उसके दुष्ट चेहरे पर ऐसी दुर्भावना थी जिसे सिरिल ने सोचा कि अज़्रिएल की भी नहीं आँकी होगी; लेकिन वह कुछ नहीं बोला। तभी टेंपल अंदर आया, बुलराम सिंह और उसके साथियों की प्रशंसा करते हुए। उसने कहा, “कुछ विद्रोही भाग निकले हैं, लेकिन हमारे पास बहुत से कैदी हैं, क्योंकि मैं उन दुष्टों को मार नहीं सका जिन्होंने अपने मुँह में घास भर रखी थी और दया की भीख माँग रहे थे; लेकिन बहुत से लोग मारे गए हैं। हर द्वार पर पहरा है, और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि हमारे पास केवल कुछ ही घायल हैं। किसने सोचा होगा कि ये देहाती इस तरह लड़ेंगे?” नरेंद्र ने शालीनता से कहा, “वे तो बस चाहते थे कि आप उनका नेतृत्व करें, महोदय, और ईश्वर आप दोनों को आशीर्वाद दें। कल बहुत से लोग आपके पैर चूमने आएंगे।” फिर वे लगभग सुबह होने तक बीते समय की बातें करते रहे; दुख भरी, लेकिन बहुत प्रेम भरी। “यह अजीब बात है, श्री ब्रैंडन,” नरेंद्र ने कहा, जब सिरिल सोने के लिए लेट गया, “कि हमारी प्यारी को हमेशा से यह ख्याल था कि वह अपने पति के लिए मर जाएगी; और इस मामले में उसका विश्वास अंत तक कायम रहा। इसलिए उसे हमारी यादों में एक ऐसी शख्सियत के रूप में रहने दें जिसकी भक्ति ने आपको बचाया, और जिसे ईश्वर ने उस दुष्ट के इरादे से होने वाली

पीड़ा से बचाया।" अगली सुबह शहर मेले जैसा लग रहा था। आसपास के गांवों से लोग फूलों की मालाएँ लाए और उन्हें श्री ब्रैंडन और टेंपल के चरणों में अर्पित किया। शाहगंज की नर्तकियों ने अपने सबसे सुंदर वस्त्र पहने और चौक में कालीन बिछाकर सिरिल की प्रशंसा में नृत्य और गीत गाए, जो उन्होंने पहले भी कई बार गाए थे, लेकिन इतने जोश और तालियों के साथ पहले कभी नहीं। फिर जैसे पुराना अंग्रेजी झंडा एक बार फिर लहराया गया...

398 सीता. लोगों के जयजयकार के बीच फहराया गया, और डंडे पर मालाएँ चढ़ाई गईं और उसके चरणों में डाली गईं, सभी को लगा कि अंग्रेज एक बार फिर सत्ता में आ गए हैं और शांति स्थापित हो जाएगी। भोर से पहले घुड़सवार सेना और राठौरों की एक टुकड़ी को नरेंद्र के दो क्लर्कों के साथ गोकुलपुर भेजा गया, जहाँ राम दास की किताबें और कागजात जब्त कर लिए गए; और व्यस्त दिन की शाम से पहले ही व्यवस्था पूरी तरह बहाल हो गई। जिले का खजाना भरा हुआ पाया गया, क्योंकि मौलवी ने स्वयं एकत्र की गई राशि को ले जाने का इरादा किया था; और एक स्थानीय प्रमुख की आवश्यकता होने पर, श्री ब्रैंडन द्वारा बुलराम सिंह को नियुक्त किया गया, जिसे लोगों ने खुशी से स्वीकार किया। जहाँ तक सुनारों के संघ का सवाल है, वे अत्यंत पश्चाताप करते हुए एक समूह में नरेंद्र के घर गए और उनसे अपना अधिकार पुनः ग्रहण करने की विनती की; उस दिन शाहगंज में हर लिहाज से ऐसा उल्लास था जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था, हालांकि यह उन लोगों के लिए कुछ हद तक कम ही था जिनकी यादों में मृतकों की स्मृति अभी भी ताज़ा और जीवंत थी। अध्याय 183. नवाब का आतंक, अगले कुछ दिन व्यस्तता भरे रहे। न केवल जनता से वसूले गए करों की वसूली करनी थी, बल्कि नए रंगरूटों को भी कुछ हद तक संगठित और सेवा के लिए तैयार करना था। कुछ पुराने पुलिसकर्मी बेवफा साबित हुए थे और नवाब या राजा हुरपेल सिंह के पक्ष में चले गए थे; लेकिन कई वफादार रहे, जो अब श्री ब्रैंडन के साथ जुड़ गए और उनकी नई टुकड़ी के गठन में उनकी सहायता की। बुलराम सिंह और एक अन्य जमींदार ने चार तोपें मुहैया कराईं, जिनमें से दो सबसे हल्की तोपों को सक्रिय सेवा के लिए तैयार किया गया; बाकी तोपों को शाहगंज में टेंपल के पास छोड़ना था, जिसके बारे में नरेंद्र ने घोषणा की कि जब तक उसके तंबू नहीं आ जाते, तब तक वह उसका मेहमान रहेगा। राम दास और अजरील पांडे के संबंध के बारे में, जब्त की गई पुस्तकों से उनके आपसी लेन-देन के

पर्याप्त प्रमाण मिले, इसलिए उन्हें सील कर दिया गया और श्री मोस्टिन द्वारा मामले की सुनवाई के समय ही खोला जाना था। राम दास ने स्वयं कोई बात स्वीकार नहीं की; वह खामोश रहे और उन्हें नूरपुर भेजे जाने तक अदालत भवन के पहरेदार कक्ष में रखा गया। शाहगंज में अब तक सब कुछ तय हो चुका था; और बाबा साहब, जो नूरपुर में निष्क्रिय नहीं रह सके थे, अपने कुछ स्थानीय क्लर्कों के साथ जल्द ही शाहगंज जाने की कोशिश करने लगे।

नवाब का आतंक। 3.9 गुंजे, और अपने सामान्य उत्साह के साथ काम में अपना हिस्सा लेने के लिए। उनकी सहायता से, एक प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था का शीघ्र ही निर्माण किया गया; जो लोग मौलवी से डरकर छिपे हुए थे, वे अब सेवा में वापस आ गए; और सार्वजनिक कामकाज इतनी सक्रियता से चल रहा था कि सिरिल अब और देरी नहीं कर सकते थे, क्योंकि अवसर बहुत अच्छा था। हुरपेल सिंह अपने सभी सैनिकों के साथ कुछ दूरी पर स्थित एक अन्य विद्रोही राजा से मिलने गए थे। कई अंग्रेजी सेनाओं के आगे बढ़ने की अफवाहें पहले से ही थीं, और चूंकि दिल्ली का पतन हो चुका था और अंग्रेजों ने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर ली थी, इसलिए सभी संशयवादियों के लिए यह स्पष्ट हो रहा था कि अब वफादार रवैया अपनाने का समय आ गया है। इसलिए, हर आपात स्थिति के लिए निर्देशों के साथ 'टेम्पल' छोड़कर, श्री ब्रैंडन देश भर में आगे बढ़े, न केवल लोगों को छोटे-मोटे स्थानीय उत्पीड़कों से मुक्त कराया, बल्कि सरकार के अधिकार को सुदृढ़ और संतोषजनक ढंग से पुनः स्थापित किया; और यह देखकर उन्हें बहुत तसल्ली मिली कि लोग पुराने कानूनों और रीति-रिवाजों की वापसी से कितने प्रसन्न थे। वे कठोर हो सकते थे, वे सहानुभूतिहीन हो सकते थे; लेकिन वे न्यायसंगत थे। उन्होंने व्यक्तिगत और सामूहिक सुरक्षा प्रदान की, और बलवानों का निर्दयी शासन समाप्त हो गया था। सिरिल की यात्रा वास्तव में एक विजय जुलूस जैसी थी। हर गाँव में उनका स्वागत स्त्रियों द्वारा किया जाता था, जो भजन गाती थीं, जलपात्र और मालाएँ लिए होती थीं, और उनके ऊपर जलते हुए दीपक और भेंट से सजी थालियाँ लहराती थीं। जहाँ संगीतकार होते थे, वे उनके सामने ऐसे संगीत बजाते थे जैसे किसी विवाह भोज में। कहीं-कहीं थोड़ा-बहुत प्रतिरोध हुआ, या छोटी-मोटी झड़पें हुईं; लेकिन उन्होंने यात्रा के मुख्य उद्देश्य में कोई बाधा नहीं डाली, जो प्रभावी और उत्साहवर्धक था। नूरपुर से भी समाचार संतोषजनक था। श्री नोबल ने अपने देशी सहायक हॉब्सन और पुलिस एवं सिपाही दल के कुछ

स्वयंसेवकों के साथ मिलकर दो सफल आक्रमण किए और जिले के उस हिस्से में, जो पहले श्री नोबल के अधिकार क्षेत्र में था, नवाब की चौकियों को कई महत्वपूर्ण स्थानों से खदेड़ दिया। फिर ब्रिगेडियर ने स्वयं नवाब की सेना के अधिकांश भाग पर आक्रमण किया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया; क्योंकि जब तक उनके चारों ओर सैनिक हलचल मचा रहे थे, अंग्रेजी सैनिकों को निष्क्रिय स्थिति में रखना आसान नहीं था; और एक अच्छा अवसर मिलते ही, उन्होंने पांडियों पर आक्रमण किया और उसमें उन्हें सफलता मिली। हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता था कि नवाब की सेना अभी भी मजबूत थी; और फिलहाल फतेहपुर पर हमला करना या यह दिखाना उचित नहीं समझा गया कि जमीनी अभियानों के लिए कितने कम सैनिक उपलब्ध कराए जा सकते हैं। लेकिन नागरिक सत्ता की शीघ्र पुनर्स्थापना एक ऐसी आकस्मिक स्थिति थी जिसके लिए नवाब दिल खान तैयार नहीं थे; और इसका व्यावहारिक प्रदर्शन उनके लिए एक चुनौती थी।

श्री ब्रैंडन ने जिस 400 शेटा का सहारा लिया, वह जितना अप्रत्याशित था, उतना ही बेहद अप्रिय भी था। उस समय सभी नागरिक अधिकारियों के पास मौजूद कार्रवाई की स्वतंत्रता के तहत, जिले के आयुक्त के लिए नवाब की गिरफ्तारी के लिए भारी इनाम की घोषणा करना पूरी तरह से उचित था; और स्थानीय भाषा में एक घोषणा प्रसारित की गई, जिसका आशय यह था कि 'फुटतेहपुर के नवाब दिल खान बहादुर ने अंग्रेजों के खिलाफ जानबूझकर विद्रोह करते हुए नूरपुर पर हमला किया, जिसका उद्देश्य वहां मौजूद सभी अंग्रेजों को नष्ट करना और कुछ महिलाओं को अगवा करना था; ब्रिटिश जिलों पर कब्जा कर लिया, उनके खजाने लूट लिए, और कई मामलों में (विस्तार से) उनके प्रभारी स्थानीय अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया"—और इसी तरह के कई और विवरण हैं, जिन्हें विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है —"इसलिए वह एक विद्रोही था: और उसकी गिरफ्तारी के लिए" (बाबा साहब की राय थी कि "उसके सिर के लिए" शब्द जोड़े जाने चाहिए) "पांच हजार रुपये का इनाम रखा गया था, साथ ही उन सभी को क्षमादान की पेशकश की गई थी—जब तक कि उन्होंने हत्या न की हो—जो भी उसे गिरफ्तार करके नूरपुर ले आए।" यह लिखे जाते ही, बुलदेव और फुरसुत, जो किसी भी जोखिम भरे काम के लिए हमेशा तैयार रहते थे, नवाब के किले के द्वार पर इसकी प्रतियां चिपकाने के लिए स्वेच्छा से आगे आए; और उन्होंने यह कारनामा पूरी तरह से डाकुओं के अंदाज में अंजाम दिया।

फुरसुत कुएं से जाने वाली गुप्त सीढ़ी को अच्छी तरह जानता था, और रात में बुलदेव को उसी सीढ़ी से ऊपर ले गया, जब तक कि वे नवाब के दरबार कक्ष में नहीं पहुंच गए, और उन्होंने एक कागज को दीवार पर एक प्रमुख स्थान पर चिपका दिया, और बाकी को बाहर के द्वारों पर चिपका दिया; और निस्संदेह उनके पुराने पेशे के अभ्यास ने उनकी सफलता में बहुत योगदान दिया। जब दोनों भाई मिस्टर ब्रैंडन के शिविर में लौट रहे थे, तब फतेहपुर में भारी अफरा-तफरी मची हुई थी। जब वह सुबह उठा—क्योंकि नवाब अपनी हार के बाद कुछ दिन पहले ही अपने महल में लौट आया था—तो एक सेवक उसके पास घोषणा लेकर आया, जिसने सुबह जल्दी दरबार कक्ष में झाड़ू लगाने के लिए प्रवेश किया था, और नवाब की customary सीट के ऊपर दीवार पर चिपका हुआ दस्तावेज पाया था, और वह बुरी तरह से भयभीत हो गया था। नवाब भी इससे अचंभित नहीं था। ऐसा कम ही था। इसकी प्रामाणिकता पर कोई संदेह नहीं था। नूरपुर प्रांत के कमिश्नर की मुहर स्वयं कमिश्नर के "सिरिल ब्रैंडन" द्वारा प्रमाणित थी, जिसमें कोई संदेह नहीं हो सकता था। हर कोई उन साहसी लेकिन नाजुक चरित्रों को जानता था। सबसे बढ़कर, नवाब को अब विशेष रूप से परेशान करने वाले दो विचार थे: पहला, यह दृढ़ विश्वास कि अज़राएल पांडे को दिया गया उनका वचन पत्र श्री ब्रैंडन के कब्जे में आ गया है, और इसका इस्तेमाल उनके खिलाफ किया जा सकता है। बचाव में वे केवल यही कह सकते थे कि नवाबों का आतंक। 401 अज़रील ने सोते समय उन तक पहुँचकर उनसे जबरन लिखवाया था, और उनके दिल पर खंजर रखकर उन्हें अपनी बात मनवाकर लिखने के लिए मजबूर किया था। लेकिन दुर्भाग्य से, कोई इसे साबित नहीं कर सका, इसलिए इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। फिर उनके महल के गुप्त द्वार किसी ने खोज लिए थे, और दिल खान को लगा कि किसी भी क्षण, यहाँ तक कि खुद मिस्टर ब्रैंडन भी, हाथ में पिस्तौल लिए, सीढ़ियों से ऊपर आकर उन्हें मार सकते हैं। नवाब द्वारा अज़रील पांडे द्वारा खोले गए मेहराब को फिर से बंद करने का आदेश देना भी कोई खास राहत नहीं दे सका: वह भयानक घोषणा एक वास्तविक आतंक में बदल गई, जिसने उन्हें रात-दिन जकड़ लिया और उनकी नींद उड़ा दी; एक ऐसा आतंक जिसे कोई शांत नहीं कर सका, कोई कम नहीं कर सका। ऐसा लग रहा था मानो उनकी पत्नी, "महिलाओं की सितारा," के शब्द सच हो रहे हों; कि वह एक भगोड़ा होगा, और उसकी मुसीबत की घड़ी में कोई उसकी मदद नहीं करेगा। उसकी मदद

करो! अब ऐसा करने वाला कौन था? कर्नल गोर बक्स ने बहुत पहले ही उसके हाथों से सारी सैन्य शक्ति छीन ली थी। वह, विद्रोही सेना का सूबेदार मेजर और घुड़सवार सेना का रिस्डलदार, अपनी मनमर्जी करते थे, मनचाहा पैसा लेते थे और मनचाहा खर्च करते थे। वास्तव में, दिल्ली से आ रही खबरों और लगातार आ रही अन्य खबरों के मद्देनजर, उदारता के अलावा, उनके लिए अपने सैनिकों को एकजुट रखना मुश्किल था। वे नवाब को छोड़कर विद्रोही सेनाओं के साथ जिलियानसी या कहीं और जाने के बारे में सोच रहे थे, बल्कि गंभीरता से सोच रहे थे। और अगर वे उसे छोड़ देते, तो ब्रिगेडियर या मिस्टर ब्रैंडन, जिनकी सेनाएं सबको खदेड़ रही थीं, के हमले का सामना करने की क्या संभावना थी? इस भयानक घोषणा से ज्यादा भयावह कोई राक्षस—भूत या जिन्न—उसके धर्म के जादूगर भी आत्माओं के लोक से नहीं बुला सकते थे। उसे कोई सांत्वना नहीं मिली थी। उनकी एक पत्नी पहले ही डेलिली जा चुकी थीं, ताकि वे अपने स्वामी के स्वागत के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकें, जैसा कि उन्होंने कहा था, "राजाओं के राजा" द्वारा। दूसरी पत्नी, जो अधिक वफादार और अपने स्थानीय प्रभाव में आश्वस्त थीं, ने उनसे कहा था कि वे यहीं रहें और अंग्रेजों से संरक्षण मांगें; और उन्होंने कई प्रार्थनाओं और आंसुओं के साथ नवाब से भी ऐसा ही करने का आग्रह किया। लेकिन नवाब, अफसोस! इसके लिए बहुत दूर—बहुत गहराई से प्रतिबद्ध—थे; और उनके सामने पड़ी घोषणा, आत्मसमर्पण के विचार को भी असंभव बना रही थी। ऐसा प्रतीत होता था कि केवल एक ही विकल्प था—नूरपुर प्रांत की सीमा पर तैनात अपनी सेना में फिर से शामिल होना और उसका नेतृत्व करते हुए झांसी जाकर केनियो से मिलना! वे जानते थे कि "कर्नल" गोरक्स इस मामले में उनसे सहमत होंगे, क्योंकि यही उनके लिए सबसे अच्छा रास्ता था; और अब उनके पास कोई अन्य सलाहकार नहीं था। मौलवी मर चुका था; उसकी सारी योजनाएँ विफल हो चुकी थीं। जिस प्रांत की सत्ता उसने संभाली थी, वह नवाब के लिए एक भ्रम मात्र था।

402 सीता क्षीण होती जा रही थी। मामा जुमीला मर चुकी थीं। अजरील पांडे मर चुके थे: लेकिन उनके खौफनाक रहस्य अभी भी जीवित थे, और एक घोषणापत्र था जो खुद ही उनकी गवाही दे रहा था। पाँच हज़ार रुपये के लिए कोई भी उन्हें धोखा दे सकता था और उन्हें बंदी बनाकर नूरपुर ले जा सकता था, जहाँ एक गद्दार का अंजाम उनका इंतज़ार कर रहा था—सफेद चेहरों का जुलूस, भरी हुई तोप, या फांसी का

फंदा! क्या वह इसकी तुलना उस स्थिति से कर सकते थे जो उनके साथ हो सकती थी, अगर वह अंग्रेजों के प्रति वफादार रहते, और क्या वह अंदर तक कांप नहीं उठते? उनकी पैतृक संपत्ति सुरक्षित होती, और उनके उदार मित्रों द्वारा और भी समृद्ध होती! उन पर सम्मान और बधाइयाँ बरसतीं। ब्रिगेडियर और मिस्टर मोस्टिन से मिलना, इस विश्वास के साथ कि उन्होंने मिस्टर ब्रैंडन या मिस्टर नोबल की मदद की थी—कि उन्होंने विद्रोहियों को उनके द्वार से खदेड़ दिया था—उस स्थिति से बहुत अलग होता जो उन्हें अब सहनी पड़ेगी, अगर वह अपनी जान बचाने के लिए एक तुच्छ याचनाकार बनकर जाते! मैं कहता हूँ, इन तमाम विपत्तियों से उसका हृदय त्रस्त था, ऐसे में यह स्वाभाविक ही था कि नवाब ने अपने क्रोधित लोगों से मिलने के बजाय वर्तमान भय से बचने का मार्ग चुना। एक सुबह, भोर में अपने महल से निकलते ही, कुछ दिनों बाद नूरपुर में उन्हें खबर मिली कि उसकी पूरी सेना प्रांत छोड़कर विद्रोही सेना के मुख्यालयों में से एक की ओर जा रही है। तब, वास्तव में, वह क्षेत्र एक बार फिर विद्रोही प्रभाव से मुक्त हो गया, हालाँकि अभी पूरी तरह नहीं; और धीरे-धीरे चौकियाँ पुनः स्थापित हो गईं, और कई स्थानों से खबरें आने लगीं, जिनसे नूरपुर में लोगों को पता चला कि लीन ने अन्यत्र क्या किया था, और महान युद्ध में क्या हो रहा था, और इससे उनके मन को अंतिम परिणाम के बारे में तसल्ली मिली। धीरे-धीरे सिरिल ब्रैंडन फतेहपुर की ओर बढ़ रहा था; और जब उसका शिविर महल से कुछ मील की दूरी पर था, तो उसे खानुम साहिबा, "महिलाओं में सितारा", का एक पत्र मिला, जिसमें उसने अंग्रेजी संरक्षण में लिए जाने की प्रार्थना की थी। नवाब चले गए थे—कहाँ, यह वह नहीं जानती थी—और वहाँ न तो कोई सिपाही था और न ही कोई सेना—वास्तव में, उस जगह की देखरेख में उसके निजी सेवकों के अलावा कोई नहीं था, जो अंग्रेजों के प्रति वफादार थे, जैसे वह खुद थी, और शुरू से ही वफादार रहे थे। इस बात की सच्चाई पर कोई संदेह नहीं था; और चूंकि बाबा साहब ने अन्य स्रोतों से इसकी सत्यता की पुष्टि कर ली थी, इसलिए सिरिल तुरंत महल की ओर चल पड़ा और उसे दरबार में प्रवेश दिया गया, जिसके एक दरवाजे पर, एक पर्दे के पीछे, वह बेचारी महिला रो रही थी और ज्यादा कुछ बोल नहीं पा रही थी; लेकिन, श्री ब्रैंडन द्वारा सांत्वना दिए जाने पर, वह अभी पूरी तरह से निराश नहीं हुई थी। उसके अनुरोध पर, सिरिल ने कुछ सिविल अधिकारियों और घर के कर्मचारियों को स्थानीय रोजगार में बनाए रखा, जो

नवाब का आतंक। 403 महिलाएं अपनी मालकिन के प्रति वफादार रहीं और पहले जैसी ही रहीं। लेकिन एक घोषणा जारी की गई कि नवाब की संपत्ति कुर्क कर ली गई है और सरकार की इच्छा ज्ञात होने तक उस पर अधिकार नूरपुर के आयुक्त के पास रहेगा। कस्बे के कोतवाल ने कहा, "श्री ब्रैंडन, दो आदमी हैं जिन्हें मैंने लंबे समय से एक गुप्त तहखाने में कैद रखा है। वे आपसे मिलना चाहते हैं। वे मुझे बताते हैं कि वे डाकू थे, जिनका सरदार अजरील पांडे था। उन्हें नहीं पता कि वह जीवित है या मृत; लेकिन वे आपको उसके बारे में और गोकुलपुर में हुई डकैती के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दे सकते हैं। क्या आप उनसे मिलना चाहेंगे? नवाब ने लगभग दो साल तक उनकी अच्छी देखभाल की है और उन्हें छिपाकर रखा है; इसलिए मैं अनुमान लगाता हूं कि वे कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति थे।" उनसे मिलना चाहेंगे? बेशक, वह उनसे मिलना चाहेंगे! यह उस समय की एक और अद्भुत घटना थी! और बुलदेव को कोतवाल के साथ उन आदमियों को लाने के लिए भेजा गया। थोड़ी देर में बुलदेव एक बच्चे की तरह रोते-हंसते हुए लौटा। "ये सुम्भो और गोविंदा हैं," उसने कहा; "इतने लंबे समय से खो गए! आह, आखिरकार ये तुम्हें हरी दास की हत्या के बारे में सब कुछ बता देंगे!" जैसे ही उसने ये कहा, वे आदमी अंदर आए, उनके भारी लोहे के बंधन खटक रहे थे, और वे दरबार में बैठे सिरिल के सामने गिर पड़े। "वे लंबे समय तक कैद और निष्क्रियता के कारण पीले पड़ गए थे, और दिन के उजाले से उनकी आंखें चौंधिया गई थीं; लेकिन वे पूरी तरह से संयमित थे, और उन्होंने अपनी कहानी इतनी सरलता और सच्चाई से सुनाई कि उसमें कोई संदेह नहीं था। हम उस दुखद मामले के बारे में पहले से ही सब कुछ जानते हैं, और इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। ये वे दो जासूस थे जिन्हें अजराइल ने नियुक्त किया था; जो रात में राम दास को झरने तक लाए थे, उन्होंने उसका प्रस्ताव सुना था और अजराइल ने उसे स्वीकार कर लिया था; जो उसके साथ गोकुलपुर लौट आए थे, और उसकी सहायता से कपास की गांठों के पीछे छिप गए थे, और समय आने पर डाकुओं के लिए द्वार खोल दिए थे। इस प्रकार, वह सब कुछ उजागर हो गया जो इतने लंबे समय से छिपा हुआ था! यह कितना विचित्र, दर्दनाक नाटक था! अंधकार में केवल सीता का जीवन ही चमक रहा था, मानो किसी भयानक सपने में एक उज्ज्वल रत्न की झलक हो। वे नूरपुर में सिरिल से मिलने के लिए तरस रहे थे, और उसने क्रिसमस पर उनके साथ रहने की व्यवस्था की थी। श्री मोस्टिन ने अपने घर पर नई छत बनवा ली थी, और वह रहने योग्य और

आरामदायक था; लेकिन सिरिल का घर अभी भी खंडहर था। क्या हमें पिछला क्रिसमस याद है? मुझे लगता है, नहीं भूला होगा; और दोस्तों के बीच हुई बातचीत, और कई अन्य घटनाएँ जो तब घटीं, जब सीता भी वहाँ थी, और वे सभी उसे जानने लगे। खैर, एक साल बीत गया - उथल-पुथल और आतंक का एक साल। लेकिन हालांकि एक

 एक पीड़ित की जान जा चुकी थी, 1914 के भयानक साये का साया छंट रहा था, और यद्यपि इस विचित्र वर्ष को अपने रक्तपात के स्वरूप को अवश्य ही पूरा करना था, फिर भी यह उन क्रूर शत्रुओं का रक्त होगा जिन्होंने कई घिनौने हत्याओं के लिए स्वयं को दंड दिया था; न कि उन लोगों का जिन्हें अज़रील पांडे ने बैरकपुर में चौंतीसवीं बटालियन को संबोधित करते हुए मौत के घाट उतारने की बात कही थी। युद्ध के सामान्य क्रम में मारे जाने वालों को छोड़कर, वे सभी अब सुरक्षित थे। ईश्वर का धन्यवाद, अब और कोई असहाय महिलाएँ और बच्चे इस भयानक नरसंहार में नहीं मरेंगे! जब साइल ब्रैंडन क्रिसमस की सुबह नूरपुर में दाखिल हुए, तो क्या उन्हें उस सड़क पर अपनी पिछली सवारी और उस समय के अपने साथी की याद आई? मुझे नहीं लगता कि वह दोनों को भूले होंगे; लेकिन आखिरी घाव अभी भी खुला था और उससे खून बह रहा था, और ग्रेस मोस्टिन अब बहन जैसी ही थीं। कई मायनों में वह भी काफी बदल चुका था। स्वतंत्र कार्रवाई और जिम्मेदारी निभाने में दृढ़ संकल्प निहित होता है, या शायद यह दृढ़ संकल्प को जन्म देता है—वह स्वयं में अधिक आत्मविश्वासी था, और उसे बचाने में इतनी दयनीय रूप से जान गंवाने वाली सीता के महत्व के ज्ञान और दृढ़ विश्वास से परिपूर्ण था। क्या वे उसे भूल गए होंगे? नहीं, उसने सोचा; और वह गलत भी नहीं था। सीता की स्मृति उसके मित्रों के बीच बहुत अनमोल थी, और उनकी बातचीत अक्सर उसके जीवन की विचित्र घटनाओं और उसके अंतिम प्रेम और समर्पण के कार्य पर केंद्रित होती थी। हाँ, यह एक बहुत ही स्नेहपूर्ण, सुखद मुलाकात थी, मैं कह सकता हूँ कि एक बहुत ही सुखद मुलाकात थी, हालाँकि सिरिल ब्रैंडन के लिए यादें अकथनीय रूप से पीड़ादायक थीं, और वे दिन-ब-दिन उस पर हावी होती जा रही थीं, जो उसके लिए अच्छा नहीं था। वह अपने बगीचे में टहल नहीं सकता था, या सीता की सुंदर कुटिया के जले हुए खंडहरों को नहीं देख सकता था, वह न्यायाधीश के घर के ड्राइंग रूम में नहीं रह सकता था—बिना सीता के भोजन कक्ष से अचानक भागने की घटना को याद किए, जब उसकी चीख

उसके कानों में गूंजती हुई प्रतीत होती थी; सामने की सीढ़ियों से नीचे उतरना भी उसके लिए उस भयानक दृश्य के बार-बार सामने आने से पहले असंभव था। किले तक जाना तो पहले और भी बुरा होता था; लेकिन कुछ दिनों बाद उसे लगा कि सीता की मृत्यु के स्थान पर रहना मोस्टिन परिवार के साथ रहने से बेहतर है, क्योंकि मोस्टिन परिवार के साथ रहना उसके लिए एक तरह का बंधन जैसा था। और अब वह अकेले रहकर अपना काम भी अधिक स्वतंत्र रूप से कर सकता था। सीता के जीवित रहने तक ग्रेस मोस्टिन के साथ उसका भाई-बहन जैसा रिश्ता था। अब यह बदल गया था, क्योंकि साझा हित और प्रेम का वह पात्र अब नहीं रहा था, और जो हृदय कभी प्रलोभन का विरोध करता था, वह अब पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया था, मानो दुःख की दीवार के पीछे छिपा हो, जो न तो विकृत थी और न ही दखल देने वाली, फिर भी आसानी से टूट नहीं सकती थी।

नवाब का आतंक। 405 नूरपुर उस क्रिसमस पर किसी भी तरह से खुशनुमा स्टेशन नहीं था; वास्तव में, मैं यह लिखने की ज़रा भी परवाह नहीं करता कि वह कितना नीरस था। कुछ निवासी छावनी में अपने बंगलों में चले गए थे; अन्य, जिनके घर जल गए थे, ब्रिगेडियर और उनके कर्मचारियों के साथ किले में ही रहे। नोबल मोस्टिन परिवार के साथ अपना क्रिसमस डिनर करने आए। सभी निस्संदेह आभारी थे; लेकिन उदासी छाई हुई थी, क्योंकि रोमांचक कारणों की कमी और घर की खबरों के अभाव में छोटी-मोटी कहा-सुनी भी थम सी गई थी। और जब आखिरकार वह खबर आई, तो वह एक अविस्मरणीय घटना थी। नूरपुर में घिरे लोगों को महीनों से पत्र नहीं मिले थे। अब बच्चों, पत्नियों, माता-पिता, दोस्तों की खबरें थीं; कुछ खुशी भरी, कुछ दुख भरी, कुछ पीड़ादायक और सहन करना कठिन, लेकिन पहले के अनिश्चितता से बेहतर थीं; और उन्हें अक्सर इंग्लैंड द्वारा सभी के लिए किए जा रहे प्रयासों और विद्रोह और नरसंहार की बुरी खबरों के बारे में भी सुनने को मिलता था। सिरिल के पत्र बहुत विविध थे। पहले तो उनके भाई के स्वास्थ्य के बारे में शिकायत थी; लेकिन बाद के पत्रों में उनके भाई और बहन दोनों की ओर से बहुत चिंता थी। वे अब कान्स में थे, और उन्होंने नवंबर से मार्च तक के लिए वहाँ एक विला किराए पर लिया था। लेडी हिल्टन ने लिखा, "मेंटोन बहुत आरामदेह माना जाता था, और जॉन को यह पसंद नहीं है। यह जगह उसके लिए बहुत व्यस्त है। वैसे भी, हमारे बहुत सारे दोस्त हैं, और वह अपनी इच्छानुसार घुड़सवारी कर सकता है; और वास्तव में यह बहुत सुखद है,

हालाँकि मैं चिंतित हूँ, क्योंकि डॉक्टरों ने मुझे और उसे स्पष्ट रूप से बताया है कि उसे इंग्लैंड में एक और सर्दी बिताने का जोखिम नहीं उठाना चाहिए। काश हम आपके बारे में भी इतनी ही कम चिंतित होते।" लेकिन मुझे इस बात से तसल्ली मिलती है कि आप भारत के अशांत क्षेत्रों में नहीं हैं और सिपाहियों के विद्रोह से प्रभावित नहीं होंगे। अगर मुझे लगता कि तुम ऐसा कर रहे हो, तो मुझे यकीन है कि मैं कभी सो नहीं पाती," इत्यादि। दो हफ्ते बाद, उनकी माँ का आखिरी लिफाफा एक अलग तरह का था। मुझे पूरा पत्र उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन जो खबर उन्हें मिली थी, उसके सच होने के संदेह और भारत से बढ़ती बुरी खबरों के बीच, बेचारी लेडी हिल्टन ने स्पष्ट पीड़ा में लिखा था। "मुझे आखिरी डाक से संलग्न पत्र मिला," लेडी हिल्टन ने लिखा, "और तुम केवल हल्के से ही अंदाजा लगा सकते हो कि इसने मुझे कितना दुखी और आहत किया है। लेखक का यह संकेत कि तुमने जो भारतीय संबंध बनाया है वह स्थायी है, सच है या नहीं, इसका मुझे कोई अंदाजा नहीं है। एक पुराने दोस्त, जो भारतीय रीति-रिवाजों को अच्छी तरह जानता है, का कहना है कि यह स्थायी नहीं हो सकता, और अस्थायी संबंध तो बहुत आम हैं; लेकिन, हे मेरे प्यारे बेटे, तुम्हारे बारे में इस तरह की कोई बदनामी फैलना मेरे दिल को बहुत दुख पहुंचाता है, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

406 सीता। इसे सहन करो। मैं ऑगस्टा को यह बात बताने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूँ, और जब मैंने तुम्हारे भाई से इसका ज़िक्र किया, तो वह बहुत शर्म से लाल हो गया और कहा कि वह तुम्हें नहीं लिखेगा, लेकिन मैं लिख सकती हूँ, क्योंकि इससे ज़्यादा असर होगा। हे सिरिल! जब से तुमने मुझे छोड़ा है, मैंने तुम पर बहुत भरोसा किया है, और तुम्हारे बारे में मैंने कभी कोई ऐसी बात नहीं सुनी जिससे मुझे दुख हुआ हो। मैं इस भयानक खबर को सहन कर सकती हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि तुम जहाँ भी होगे, अपना कर्तव्य निभाओगे; लेकिन अगर यह घिनौना घोटाला सच है, तो मेरा दिल टूट जाएगा। उसके भाई की ओर से भी कुछ पंक्तियाँ थीं:—"माँ तुम्हें मेरे बारे में सब कुछ बताएँगी, और मुझे लगता है कि मुझे वसंत तक यहीं रहना होगा ताकि मैं उनकी और डॉक्टरों की सेवा कर सकूँ। जहाँ तक ऑगस्टा की बात है, वह पूरी तरह खुश है, और जितना हो सके उतने प्रेम प्रसंगों में लिप्त रहती है। तुम देखोगे कि तुम्हारे किसी खास दोस्त ने माँ को उस बात के बारे में लिखा है जो तुमने मुझे बताई थी। उसे संतुष्ट कर देना, एक प्रिय मित्र की तरह, क्योंकि मुझे लगता है कि अगर तुमने ऐसा

नहीं किया तो वह बहुत दुखी होगी—और वह भी तुरंत पत्र लिखकर। अपना ख्याल रखना; और मुझे लगता है कि अगर तुम्हें उन पांडियों को सबक सिखाने का मौका मिल गया, तो तुम इसे जाने नहीं दोगे। किसी भी तरह से, मुझे तुम्हारे बारे में ज़रा भी चिंता नहीं है।" सिरिल ने अपनी माँ के पत्र में संलग्न लिफाफे को देखा। डाक टिकट कलकत्ता का था, और पता लिखने का तरीका उसे समझ नहीं आया; लेकिन अंदर का पत्र बिल्कुल अलग था। श्रीमती स्मिथ के विशिष्ट तीखे चरित्र थे, जिनकी नकल करना किसी के लिए भी असंभव था, और पत्र का भाव सत्य और असत्य, धर्मपरायणता (श्रीमती स्मिथ के अंदाज़ में) और अनादर का ऐसा विचित्र, द्वेषपूर्ण मिश्रण था कि मैं इसे साहित्य की एक अनोखी कृति के रूप में छापने के लिए लगभग प्रलोभित हो रहा हूँ, लेकिन कई कारणों से मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। संभवतः मेरे कुछ पाठक ऐसे हैं जो "काले लोगों" से घृणा करते हैं और श्रीमती स्मिथ की उनके बारे में राय का आनंद ले सकते हैं, और ऐसा करने से ऐसा प्रतीत होगा कि मैं ऐसे लोगों को खुश कर रहा हूँ। भारतीय महिलाओं की नैतिकता पर, और विशेष रूप से बेचारी सीता की नैतिकता पर भी एक विषयांतर था, जो इतना कामुक है कि उसे लिखना शालीनता की दृष्टि से उचित नहीं है, और जिसे, निश्चित रूप से, "अत्यंत गोपनीयता" में लिखा गया था। सिरिल अष्टकोणीय कमरे में इसे पढ़ रहा था जब फिलिप मोस्टिन अंदर आया, जिसने तुरंत अपने मित्र के गालों पर गुस्से की लाली देखी, और मेज पर पड़े अंग्रेजी पत्रों के ढेर को देखकर सोचा कि यह कोई पारिवारिक मामला हो सकता है; लेकिन सिरिल ने तुरंत उसका भ्रम दूर कर दिया। "इसे पढ़ो," उसने कहा, "मेरी प्यारी बेटी के बारे में, मैंने श्रीमती स्मिथ को पहले भी एक बार खोजा था, और मूर्खता से उसे माफ कर दिया था; लेकिन इस बार वह मुझसे बच नहीं पाएगी। सोचो, फिलिप, इसे पढ़ना मेरे लिए कितना कष्टदायक रहा होगा, यहाँ जहाँ मेरी प्रियतमा की पवित्र आत्मा का निधन हुआ।" फिलिप मोस्टिन ने पत्र को धीरे-धीरे पढ़ा, और सिरिल ने देखा कि

 ऐसा करते हुए उसकी आँखों में आँसू भर आए। "सीता उसे भी वैसे ही माफ़ कर देती जैसे उसने उस बदमाश को माफ़ किया था जिसने सीता का खून किया था, सिरिल," उसने अंत में गंभीरता से कहा। "अगर सीता जीवित होती, तो मैं कुछ नहीं कहता; लेकिन चूंकि वह अब इस दुनिया में नहीं है, मैं उसके लिए प्रार्थना करता हूँ कि झूठ के इस घिनौने जाल को माफ़ कर दिया जाए, भले ही इसे

भुलाया न जा सके।” सिरिल ने खिड़की से बाहर शांत झील की ओर देखा, जो नीली थी और उस पर बहने वाली हल्की हवा से और भी चमकदार लग रही थी, और दूर, पहाड़ियाँ हल्की धुंध में धुंधली दिखाई दे रही थीं। कुछ देर तक वह चुप रहा, लेकिन उसकी सहेली की कोमल भावनाओं से भरी अपील उस पर गहरी छाप छोड़ गई थी। "उसकी प्यारी याद में, फिलिप," उसने अंत में कहा, "* जिसे एक विचार से भी धुंधला नहीं होना चाहिए—भगवान मेरी मदद करें—मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ, मैंने इसे लेखिका के पति को भेजने का सोचा था, लेकिन..." और उसने पत्र उठाया और उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ दिया, जो सफेद फुहार बनकर पानी में गिर गए। "बस अब इसे जाने दो—अब जब मेरी प्रियतमा शांति से है।" अध्याय 19. झांसी की रानी। जब नवाब दिल खान और उनकी सेना झांसी पहुँची, तो सर ह्यू रोज (लॉर्ड स्ट्रैथनेयरन) के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना दक्षिण की ओर बढ़ते हुए अपने सामने के सभी क्षेत्रों को ध्वस्त कर रही थी, जबकि जनरल व्हिटलॉक के नेतृत्व में मद्रास की सेना पूर्व की ओर बानपुर के राजा और बांदा के नवाब के क्षेत्रों में युद्ध कर रही थी। उत्तर-पश्चिम से, मजबूत टुकड़ियाँ यमुना नदी के किनारे-किनारे कल्पीस की ओर भागते हुए दुश्मन का पीछा कर रही थीं; और अन्य टुकड़ियाँ लखनऊ पर अंतिम हमले के लिए पूर्व से ही एकत्रित हो रही थीं। इस प्रकार, जैसा कि मैंने पहले कहा है, यह वृत्तांत इतिहासकारों द्वारा दिए गए काल के संपूर्ण इतिहास का वर्णन नहीं करता है, फिर भी विद्रोही सिपाही सेना और उसके सहयोगियों को घेरने के लिए जो कुछ किया जा रहा था, उसका संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है; और उन प्रयासों के बीच, झांसी जल्द ही युद्ध के उस बेहद रोमांचक काल की सबसे शानदार उपलब्धियों में से एक का स्थल बनने वाला था। मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता कि नवाब दिल खान का किसी भी प्रकार का कोई इरादा था। झांसी की ओर मार्च करके डिग्री ने अपनी स्थिति में सुधार किया। वह अपनी आशाओं के बजाय अपने भय से वहाँ पहुँचा था। उसके पीछे अपमान और विनाश, बल्कि मृत्यु भी थी, जो वहाँ निश्चित थी। 408 सेल्टा। बचने का कोई स्पष्ट रास्ता नहीं था; उसके सामने—खैर, किस्मत या भाग्य, जो भी हो। मैंने पहले ही कहा है कि नवाब कोई योद्धा नहीं था; उसे सेनाओं का नेतृत्व करने या युद्ध लड़ने का कोई अनुभव नहीं था; और वह पहले ही देख चुका था कि मुट्ठी भर अंग्रेज़ और देशी ब्रिटिश सैनिकों ने उसकी अपनी सेना को एक मजबूत स्थिति से खदेड़ दिया था, और उसकी कुछ तोपों को बड़ी मुश्किल से बचाया गया था।

उसकी सेना के नेताओं के बीच कोई अच्छा तालमेल नहीं था; और, जैसे ही वह अपने गंतव्य के निकट पहुंची, नूरपुर के विद्रोहियों ने अलग-अलग गुट बना लिए, जिनमें से अधिकांश, रिसिलदार और सूबेदार मेजर के नेतृत्व में, तांतिया टोपी के नेतृत्व में कल्पी में तैनात नाना साहब की सेना में शामिल होने की तैयारी कर रहे थे, जो रानसे का समर्थन करने की तैयारी कर रहा था। इसलिए, कर्नल गोर बक्स और नवाब, तोपों और अनियमित सैनिकों के साथ, अपने गंतव्य पर विधिवत पहुंच गए; और पूर्व का हार्दिक स्वागत किया गया; इसमें कोई शक नहीं था कि वह एक बहादुर और कुशल अधिकारी थे, अपने पेशेवर कर्तव्य से भली-भांति परिचित थे, और रानी के मजबूत किले पर हमले की स्थिति में उनकी बहुत आवश्यकता थी। लेकिन दिल खान के पास उन्हें स्वीकार करने लायक कोई योग्यता नहीं थी; न ही उनके पास कोई पद या धन था जिससे वे रानी की किसी भी तरह से मदद कर सकें। नूरपुर जिले में, जहाँ ब्रिटिश सेनाएँ अब अदम्य बल से आगे बढ़ रही थीं, वे अपनी स्थिति बनाए रखने में बुरी तरह विफल रहे थे; लेकिन वे कुछ तोपें लाए थे, जो शायद रानी के पास पहले से ही पर्याप्त थीं, और जब उन्होंने अपनी तलवार का मूठ उस निडर महिला को भेंट किया और अंग्रेजों, उनके आपसी शत्रुओं के खिलाफ अपनी सीमित सेवाएँ देने की पेशकश की, तो उनके स्वागत का लहजा उन्हें प्रोत्साहित नहीं कर पाया। रानी, लक्ष्मी बाय, एक मराठा ब्राह्मण थीं, उनमें व्यक्तिगत गोपनीयता का कोई दिखावा नहीं था; और वे प्रतिदिन अपने दिवंगत पति की गड्डी पर बैठकर रिपोर्टें सुनती थीं, निर्देश देती थीं, याचिकाएँ सुनती थीं और एक बहादुर और दृढ़ निश्चयी महिला के रूप में अपने पद पर रहते हुए अपना कर्तव्य निभाती थीं। देखने में वह सुंदर और आकर्षक थी: एक गरिमामय व्यक्तित्व और कद-काठी वाली, और एक गंभीर और दृढ़, बल्कि सख्त चेहरे के भाव, जिसने मानो उस विशेष कोमलता की जगह ले ली थी जो उसके युवावस्था में, जब उसे एक समृद्ध जीवन की अच्छी उम्मीद थी, उसकी पहचान हुआ करती थी। दिल खान उसकी खूबसूरत आँखों के कभी स्वप्निल, कभी उग्र भाव को मुश्किल से समझ पा रहा था। उसने उसे अलग बैठने के लिए कहा था, क्योंकि वह दूसरों से बात कर रही थी; और यह भी कहा था कि वह थोड़ी देर में उससे बात करेगी। दिल खान उस व्यस्त जगह में खुद को बहुत अकेला महसूस कर रहा था। कोई उससे बात करने नहीं आया; लोग आते-जाते रहे, और चांदी के गदाधारी लोग उसके अपने गदाधारियों पर भी चिल्ला रहे थे।

जितांसी की रानी। 400 हालाँकि उन्हें वहाँ प्रकट होने का कोई अधिकार नहीं था। कुछ देर बाद एक हट्टा-कट्टा मुसलमान, घनी काली दाढ़ी और खुरदुरे हाथों वाला, जो किसी क्रूर कसाई जैसा दिखता था, लेकिन जिसने खुद को अंग्रेजों के अधीन "डॉक्टर" बताया, उसके पास आकर बैठ गया और बताने लगा कि कैसे सभी अंग्रेजों, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को एक बगीचे में ले जाकर मार डाला गया, जिनमें से कई को उसने खुद मारा था: और कैसे उसने "काफिरों" को तब तक काटा जब तक उसकी बांह थक नहीं गई, और मरने वाले पचहत्तर लोगों में से कई, शायद अधिकांश को, "नरक में भेज दिया।" नवाब को नूरपुर की सुंदर महिलाएं याद आ गईं, और उसने वहां कई गोरे अंग्रेज बच्चों को अक्सर देखा था: और डॉक्टर के इस भयानक, घिनौने वर्णन को सुनकर, अपने विद्रोही स्वभाव के बावजूद, उसने मन ही मन ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसने उनमें से किसी को नहीं मारा। वहां ज्यादा मुसलमान मौजूद नहीं थे। जो लोग प्रणाम करने आए थे, उनमें से अधिकांश विभिन्न जातियों के हिंदू थे, जिनमें से किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया: वास्तव में, अधिकांश लोग उसे एक घुसपैठिया समझ रहे थे। कुछ नहीं किया, कुछ कर ही नहीं सका, और जिसे रानी साहिबा नहीं चाहती थीं। शायद फतेहहूर छोड़ने के बाद से नवाब के मन में कभी भी उसकी पिछली शांति और सुरक्षा की यादें इतनी स्पष्ट रूप से नहीं आई थीं। जैसे ही उसने अपनी आँखें बंद कीं, उसे मानो अपनी ओरिकल खिड़की में बैठे हुए अपने बगीचे और गन्ने के समृद्ध खेत, और दूर तक फैली नीली पहाड़ियाँ दिखाई देने लगीं, जो सूर्य की रोशनी में कोमल और स्वप्निल रूप से चमक रही थीं। उसे वह संगीत सुनाई देता था जो दिन के निश्चित समय पर उसके महल के द्वार पर बजता था और आंगनों और हॉलों से होकर धीरे-धीरे ऊपर आता था। उसे अपने परिचित गपशप करने वालों, शहर के मौलवियों, और कुछ बैंकरों और जमींदारों की याद आती थी, जो उससे मिलने और बातचीत करने आते थे। तब शांति थी, अब युद्ध था; लेकिन उसने कोई यश नहीं जीता था, और न ही उसे कोई यश मिलने की संभावना थी, और वह हर तरह से एक भगोड़ा था। उसने स्वयं से वादा किया था कि वह दिल्ली जाकर अपने पूर्वजों की तरह अपने सिंहासन पर शान से बैठे "राजाओं के राजा" को प्रणाम करेगा। अब उसे एक "काफ़िर" रानेक को सलाम करना था, जिसका पद उसके अपने जितना ऊँचा नहीं था। अंग्रेजों ने बेशक हमला करके उसके राज्य पर कब्ज़ा कर लिया था। क्या अब वह उन्हें वापस जीत सकता था? क्या यह रानी उसकी मदद कर सकती थी? आह, नहीं!

अब तो बिल्कुल नहीं, क्योंकि अंग्रेज पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत लग रहे थे, उनके देश से आए हज़ारों अंग्रेज़ सैनिकों के साथ। रानी के लिए अपने राज्य को बचाना ही सबसे बड़ी चुनौती होगी: और, वास्तव में, इसकी बहुत कम संभावना दिख रही थी, अगर उसके नौकरों ने उसे जो बताया था वह सच था। रानी के महल के विशाल हॉल में अकेले बैठे हुए इन बातों के बारे में सोचते हुए, उसकी आँखों में आँसू, बहुत कड़वे आँसू, उमड़ आए, और उसके गले में एक दर्दनाक गाँठ सी बन गई जो कम नहीं हो रही थी; लेकिन आखिरकार उसकी बारी आई, और
410 सीता। एक राजदंडधारी, जो उनकी समझ से कुछ अधिक कठोर था, ने उन्हें "उठने" के लिए कहा, यह कहते हुए कि रानी उन्हें उनसे बात करने की अनुमति देंगी, और उन्हें शाही मंच पर ले गया, जहाँ वे बैठ गए। उन्होंने अपनी तलवार की मूठ को फिर से भेंट के रूप में अर्पित किया, जिसे रानी ने अपने कोमल, सुंदर हाथ से हल्के से छुआ। "आराम से रहिए, नवाब साहब," उन्होंने अच्छी हिंदी में कहा, क्योंकि उन्होंने दरबारी उर्दू न बोलने का दिखावा किया, हालाँकि वे इसे भली-भांति समझती थीं। "मुझे अपने बारे में बताइए। मैंने अक्सर अपने पति को आपके वीर पिता के बारे में बात करते सुना है। अंग्रेजों ने आपके साथ ऐसा क्या किया है कि आप यहाँ मेरे साथ हैं, जो उनकी शत्रु हूँ, और अपना सुंदर राज्य छोड़कर आए हैं? आपके बच्चे कहाँ हैं?" "मेरे कोई बच्चे नहीं हैं, महोदया," उन्होंने उदास होकर उत्तर दिया। रानी ने उस व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी। "मेरे कोई बच्चे नहीं हैं।" "देखा," उन्होंने आगे कहा। "तो फिर उन्होंने, अंग्रेजों ने, आपको गोद लेने नहीं दिया, और आप मेरी तरह हैं?" “मैंने उनसे नहीं पूछा, महोदया।” “नहीं, तो पवित्र माता गंगा की कसम!” वह तीखे स्वर में बोली, “तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं हुआ। क्या सत्ता का लालच ही तुम्हें विद्रोह की ओर ले गया, न कि सम्मान की हानि?” “मैंने अपने पूर्वजों की तरह, धर्म के लिए और ‘विश्व के आश्रय’ के लिए लड़ाई लड़ी, जिसने मुझे पद और मेरा अपना प्रांत प्रदान किया,” दिल खान ने दृढ़ता से उत्तर दिया। “सहारा लेने के लिए एक कमजोर सहारा, नवाब,” उसने तिरस्कारपूर्वक कहा; “एक कमजोर सरकंडा; एक टिमटिमाती मशाल, जो दुर्गंध के साथ बुझ गई है और फिर कभी नहीं जलेगी। आह, श्रीमान! बिना किसी अन्याय के, बिना किसी सम्मान के, उन लोगों के प्रति निष्ठा के साथ जिनके लिए आपके पूर्वजों ने लड़ाई लड़ी और सेवा की; एक सुंदर पैतृक महल और जागीर के साथ—मुझे लगता है कि उन्हें एक प्रेत के लिए छोड़ना एक गद्दार का

काम था। अगर मैं आपकी तरह होती, तो अंग्रेजों का लाल झंडा, जो उनके स्वामी साहब ने मेरे पति को दिया था और जो अंग्रेजों के खून से लथपथ है, अब हमारे ऊपर किले पर लहरा रहा होता; और मैं, एक कमजोर स्त्री होते हुए भी, उनके लिए लड़ती। उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचता जिसे मैं, लक्ष्मी बाय, रोक सकती थी। मैं उन अंग्रेज स्त्रियों और उनके बच्चों को अपनी गोद में ले लेती और उन्हें वहाँ सुरक्षित रखती; जबकि उनके पति उन्हें और मुझे सभी दुश्मनों से बचाते। हाँ, मैं ऐसा करती, नवाब, अगर वे सच्चे होते।" "लेकिन यहाँ जितने भी लोग हैं—वे सब मर चुके हैं—उनकी हत्या कर दी गई है—देवी—।" यह एक खतरनाक स्थिति थी; लेकिन नवाब का मनोबल बढ़ गया था। उन्हें इससे पहले कभी इस तरह संबोधित नहीं किया गया था। झांसी की रानी। 411 एक महिला द्वारा निंदा की गई। यदि वह देशद्रोही था, तो वह प्रतिशोधी हत्यारी थी। "हत्या? हाँ," उसने आँखों में चमक और होंठों में कंपन के साथ कहा, "मैं तुम्हारी तरह निःसंतान थी, और मैंने किसी को नहीं बख्शा—नहीं, एक को भी नहीं! क्या तुम हमारे घराने का इतिहास जानते हो? नहीं? अच्छा, सुनो। जब अंग्रेजों ने दख़ान के मराठों को पीछे धकेल दिया, तब हमने अंग्रेजों का साथ दिया। उन्होंने देहली को कुचल दिया था, और वे उस उच्च पद को बनाए नहीं रख सके। हम झांसीवासी तब सब कुछ खो सकते थे; लेकिन उस समय के अंग्रेज न्यायप्रिय और दयालु थे, और उन्होंने हमारे घराने को वह सब कुछ दिया जो उसने हासिल किया था। उन्होंने हमें सम्मानित किया, और हम वफादार रहे। हमने अंग्रेजों से प्रेम किया; हमने अपने झंडे के ऊपर उनका झंडा फहराया; और अगर उनका पुराना न्याय हमारे प्रति जारी रहता, तो वह आज भी वहीं होता। मेरे प्रिय स्वामी का निधन हो गया, और उनकी कोई संतान नहीं थी। मैंने उनके अंतिम शब्दों में विनती की कि एक लड़के को गोद लिया जाए जो उस विरासत का उत्तराधिकारी बने जो कभी स्वेच्छा से दी गई थी; लेकिन इसे अस्वीकार कर दिया गया; हमारी छोटी सी याचिका ठुकरा दी गई। अंग्रेजों ने, जिनके पास देहली का पूरा साम्राज्य था, हमें जो कुछ उन्होंने कभी हमें उदारतापूर्वक दिया था, उसे वे अब भी जारी रखना चाहते हैं। लेकिन ये लोग अब अपने पूर्व शाही नायकों जैसे नहीं रहे; ये एक नीच, लालची नस्ल हैं; ये हमारे देश को अपनी सरकार से छीन रहे हैं, हर एक ज़मीन, हर एक रुपया राजस्व पर कब्ज़ा कर रहे हैं, ताकि वे अपने विशाल लाभ को और बढ़ा सकें। जब हमने नागपुर और सत्तरा के बारे में सुना, तो हमें अपने शाही घरानों के भाग्य पर दुख हुआ; लेकिन हमने अपने

भोले-भाले, अंधविश्वास में कहा, 'ये महान कार्य हमें प्रभावित नहीं कर सकते, क्योंकि हम वफादार और सच्चे रहे हैं, और अंग्रेजी झंडा हमारे किलों पर लहराता है।' और फिर भी—और फिर भी—उन्होंने हमें नहीं बख्शा। उन्होंने मुझे और मेरे परिवार को पेंशन की पेशकश की। पेंशन! मैं कहता हूँ कि यह एक अपमान था: नीच, क्रूर और जानबूझकर किया गया। क्या पेंशन मिलने पर हमारा सम्मान रह जाएगा? क्या हमारा आत्मसम्मान रह जाएगा? मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं! मैं अपना सिर मुंडवाकर एक गरीब बैरागिन की तरह भटकना पसंद करूँगा, हिंद भर में दरगाह-दरगाह भीख माँगते हुए, इन अंग्रेजों को अत्याचारी और उत्पीड़क बताते हुए, इससे कहीं बेहतर है कि मैं ऐसा करूँ। मैंने उनके फेंके हुए टुकड़े को एक टोकरे की तरह ले लिया। लेकिन मेरे दिल में एक बात आई—एक बात जिसका मैं इंतज़ार कर रहा था, नवाब साहब—कि हम बदला ले सकते थे; और इसलिए मैंने उन्हें मरवा दिया। वे वहाँ राज कर रहे थे जहाँ मैं राज करता था; वे मेरा पैसा हड़प रहे थे, वे मेरे लोगों के पुराने रीति-रिवाजों को कुचल रहे थे, वे हमारी पुरोहित जाति को भ्रष्ट कर रहे थे। “एक बार, 1914 के संबुत शुरू होने से पहले,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, “एक पवित्र ब्राह्मण आया, एक ऐसा व्यक्ति जिसने ‘काली माता के रहस्य’ का पाठ किया, जिसने हमें सत्य बताया; हाँ, इसी हॉल में उसने निडर होकर सत्य बताया। वह कई वर्षों तक भटकता रहा था।” 412 सीता। _—_ उसी तक पहुँचते हुए; परन्तु मेरे पति का हृदय मेरी ओर नहीं मुड़ा। परन्तु जब वह मेरे पास, मेरे दुःख और दुख में, आए और मुझे बताया कि अंग्रेजों ने क्या किया है—वे क्या कर रहे हैं, वे समस्त हिंद के साथ क्या करने का इरादा रखते हैं—सभी राजशाही और सभी जातियों को मिटा देने का—मैं, एक अकेली और निःसंतान ब्राह्मण स्त्री, अपने आँसुओं और प्रार्थनाओं को उनके साथ मिला दिया। वे रोए, ‘कोई अंग्रेज नहीं रहेगा! काली माँ ने उन्हें हमें सौंप दिया है, ताकि वह उनका रक्त पी सकें।’ और जब समय आया और संकेत मिला, तो यहाँ सब मर गए—हर एक। युद्ध में सम्मान के साथ नहीं, बल्कि भेड़ों की तरह, ‘माँ’ को दी गई बलि के शिकार। मैं कहती हूँ कि वे सब मर गए, उनका रक्त बहा, और उनका अंग्रेजी झंडा उसमें डूब गया, और दीवारों पर काला और सख्त लटका हुआ है। क्या अब तुम समझते हो, नवाब, कि उन्हें क्यों मारा गया? “मेरे साथ वही ब्राह्मण था, महोदया। उसका नाम था—” “इसका ज़िक्र मत कीजिए, महोदय,” उसने अधीरता से हाथ हिलाते हुए और कांपते हुए कहा। “जब मैं उसे बुलाती हूँ, वह मेरे पास आता है और

खून मांगता है। उसने मुझे जो भी रीति-रिवाज सिखाए हैं, उन सब में खून की मांग होती है—खैर, 'माँ' को मेरा खून मिल सकता है और अंत में मेरा भी ले सकती है; लेकिन अपमान से मृत्यु मीठी है; और अगर मैं जीत गई, खान साहब!—अगर हम मराठा जीत गए, तो पूना में एक पेशवाह होगा, भले ही दिल्ली में कोई सम्राट न हो। अब जाइए, महोदय; आपके क्वार्टर आपको आवंटित कर दिए गए हैं, और आपके आदमियों का कर्तव्य भी। आप स्वयं अपने पद के अनुसार दैनिक राशन प्राप्त करेंगे जब तक आप यहाँ रहेंगे।" "मुझे उम्मीद थी कि मैंने अज़रील की 'व्रिम! हर्रिम! हर्रिम!' की चीख सुनी होगी," नवाब ने बाद में गोर बक्स से कहा। "क्या वह भी उसकी तरह पागल है? खून की प्यासी?" "यह उसकी आदत नहीं है," "कर्नल" ने उत्तर दिया। लोग उसे कभी कोमल और प्रेममयी कहते थे; लेकिन अंग्रेजों ने उसके साथ बहुत अन्याय किया है, और उसने अपनी तलवार फेंक दी है। कभी-कभी वह फूट-फूट कर रोती है; लेकिन अक्सर, जैसा कि आपने उसे आज देखा, वह अपने साथ हुए अन्याय और अपने बदले के बारे में सोचती रहती है, उदास और प्रतिशोधी, दिल से एक शेरनी; इसलिए, उससे सावधान रहो! लुक्शमी बाय का इंतज़ार ज़्यादा देर तक नहीं चला। 23 मार्च, 1858 को, जैसे ही संबत 1914 समाप्त हुआ, जिस अंग्रेजी सेना के बारे में इतने लंबे समय से सुना जा रहा था, उसने उसके किले के सामने डेरा डाल दिया, सभी चौकियों को ध्वस्त कर दिया, और घेराबंदी शुरू हो गई। कर्नल गोर बक्स अंग्रेजी तोपों और गोले-गोले के बारे में अच्छी तरह जानते थे; और यद्यपि उनकी अपनी युद्ध सामग्री साधारण थी, उन्होंने एक अच्छे सैनिक की निष्ठा के साथ अपनी लड़ाई लड़ी, जो एक बेहतर उद्देश्य और भाग्य के योग्य था। अब किसी के लिए छिपने की कोई जगह नहीं थी; और दिल खान को अंग्रेजों की चालें दिखने और महसूस होने लगीं। झांसी की रानी। 413 युद्ध का मतलब पूरी गंभीरता से था। दीवार का एक हिस्सा उसे रक्षा के लिए सौंपा गया था, और उसने पूरी लगन से अपना कर्तव्य निभाया, क्योंकि वहाँ न तो कोई आश्रय था और न ही पीछे हटने का रास्ता। अंग्रेज़ तोपें लगातार नज़दीक आती गईं; और गोलियों की बौछार से दीवार ढह गई, जबकि किले की दीवारों पर लगी लगभग हर तोप बारी-बारी से बेकार या निष्क्रिय होती गई। रानी के अधिकारियों ने कहा, "चाहे हम कुछ भी खो दें, अगर हम अपने दोस्तों के आने तक मोर्चा संभाले रख सकें; तब, दो तरफ से आ रही आग के बीच, हमारी बारी आएगी, और वे हमसे बच नहीं पाएंगे।" रात-दर-रात, लुक्शमी ब्यो किले के सबसे ऊंचे टावर

से देखती रही; लेकिन कोई संकेत नहीं मिला। क्या उन्होंने उसे मरने के लिए छोड़ दिया था? ऐसा नहीं था; वे उसे बचाने की पूरी कोशिश कर रहे थे। बीस हज़ार सैनिक बीस अंग्रेज़ी तोपों के साथ पूरी तेज़ी से झांसी की ओर बढ़ रहे थे। रानी के पास किले के भीतर कम से कम दस हज़ार सैनिक थे, और युद्ध की योजना बड़ी कुशलता से बनाई गई थी। जब तांतिया टोपी ब्रिटिश स्थिति के पीछे से हमला कर रही थी, तब रानी की सेना को उनके सामने से हमला करना था; और धड़कते हुए लेकिन उत्साहित दिल के साथ लुक्शमी ब्यो उस आग की लपट का इंतज़ार कर रही थी जो यह साबित करने वाली थी कि उसकी मदद आ गई है। और वह निराश नहीं हुई। जैसे ही उसके दोस्तों ने बेतवा नदी पार की, आकाश में एक तेज़ रोशनी उठी, जिसने हर उम्मीद की पुष्टि की, और उसे शहर के पास पहले संघर्ष के लिए प्रेरित किया, जिसमें वह अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए विजय का नारा लगाएगी! लेकिन ऐसा नहीं होना था। एक अनुभवी खुफिया जानकारी, वह किसी भी सेना से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी, जो घेराबंदी का नेतृत्व कर रही थी; और विद्रोहियों की योजना एक साहसिक कदम से विफल हो गई, जिसके युद्ध में बहुत कम उदाहरण मिलते हैं। घेराबंदी की कार्रवाई सामान्य रूप से चल रही थी, तभी रात में 1200 सैनिकों की एक टुकड़ी, जो उस समय उपलब्ध थी, को नदी की ओर जाने वाली सड़क पर तैनात कर दिया गया, और जैसे ही विद्रोही टुकड़ियां आगे बढ़ीं, युद्ध शुरू हो गया। कुछ समय तक संघर्ष भयंकर रहा; लेकिन परिणाम कभी भी संदेह से परे नहीं था। विद्रोही सेना न केवल 1500 अनुशासित सैनिकों की भारी क्षति के साथ पराजित हुई, बल्कि उनके सभी तोपों को भी खो दिया गया, और उन्हें तब तक खदेड़ दिया गया जब तक कि थके हुए सैनिक आगे नहीं बढ़ सके। फिर झांसी की घेराबंदी पहले से कहीं अधिक कड़ी कर दी गई। 3 अप्रैल, 1858 को शहर पर धावा बोल दिया गया, और अंग्रेजी सैनिकों ने इलाके के एक हिस्से में अपनी स्थिति संभाल ली, और अगले दिन किले पर अंतिम हमले की तैयारी करने लगे। क्या रानी के पास कोई उम्मीद थी? शायद शर्तों के लिए भेजे गए उनके दूतों ने उन्हें बताया होता कि कोई उम्मीद नहीं है, अगर वे वापस लौट आए होते। लेकिन जब अतीत को याद किया गया तो झांसी में कुछ ही लोग बचे थे; और जब कोई दूत वापस नहीं लौटा, तो वह उनके भाग्य को जान गई।

414 सीता., अब भागने के सिवा कोई रास्ता नहीं था। कुछ समर्पित सैनिक अभी भी चट्टानी किले की दीवारों की रक्षा कर रहे थे, जिन्होंने कहा कि वे अपनी प्रिय मालकिन

की वापसी में अपनी जान दे देंगे; और 38 अप्रैल की रात भर अंग्रेज़ों के गोले शहर और किले के उस हिस्से पर बरसते रहे जिस पर दुश्मन का कब्ज़ा था। सुबह होते-होते सब कुछ तय हो जाना था, और बचाव की कोई उम्मीद नहीं थी। क्या दिल खान रुकता या भाग जाता? वह अपने चारों ओर हो रही घटनाओं, गोलियों की गड़गड़ाहट, सैकड़ों, बल्कि हजारों, मरे और मरते हुए लोगों को देखकर स्तब्ध प्रतीत हो रहा था; दीवारों के भीतर अंग्रेज़ों के चेहरों को देखकर—वह अपने नौकरों के हाथों में निष्क्रिय पड़ा था, जो देख रहे थे कि क्या किया जा सकता है; और पहले से ही अफवाहें थीं कि रानी भाग जाएगी। नवाब के घोड़े पर काठी कस दी गई थी, और वह स्वयं कमर कसकर बैठा था, प्रार्थना कर रहा था कि उसे गोलियों और मानवीय पीड़ा के उस नरक से बाहर निकाल दिया जाए। अंततः, जब रात का काफी समय शेष था, किलेबंदी के एक एकांत हिस्से में स्थित द्वार खोला गया और एक दुखद जुलूस बाहर निकला। रानी और उसकी बहन या साथी, पुरुषों के वेश में, अपने कुछ चुने हुए सेवकों के साथ, चुपचाप द्वार से निकलकर अंधेरे में चले गए। उनके पीछे दिल खान और उसके कुछ बचे हुए आदमी चल पड़े। किसी ने भी फुसफुसाहट के अलावा कुछ नहीं कहा, और जैसे ही आखिरी आदमी बाहर निकला, द्वार बंद कर दिया गया। उस रात यह जीवन-मरण का संघर्ष था, क्योंकि 14वीं ड्रैगून और हैदराबाद टुकड़ी के अंग्रेजी घुड़सवार दस्ते हर जगह सतर्क थे; और उनमें से किसी से भी सामना होना निश्चित मृत्यु थी। वे कैसे बच निकले, यह कभी पता नहीं चल पाया; लेकिन रानी के पास कुशल मार्गदर्शक थे, वह एक निडर घुड़सवार थी, और वह तेजी से उस ऊबड़-खाबड़, जंगली इलाके की ओर बढ़ती रही, जहाँ उसकी सबसे अच्छी सुरक्षा थी। लेकिन पीछा करना बंद नहीं हुआ: क्योंकि उसके भाग जाने की खबर जल्द ही उस बर्बाद शहर से भाग रहे सैनिकों की भीड़ में से घुड़सवार गश्ती दल को मिल गई, जिनका हर तरफ से पीछा किया जा रहा था और तलवारों से हमला किया जा रहा था। इन्हीं गश्ती दलों में से एक ने रानी का पता लगा लिया; और एक समय वह अपने भूरे घोड़े पर कुछ अनुयायियों के साथ दिखाई दी; लेकिन पीछा करने वाले पहले ही इक्कीस मील की दूरी तय कर चुके थे; उनके घोड़े थक चुके थे, उनका अधिकारी बुरी तरह घायल था, और बहादुर हैदराबाद घुड़सवार सेना को वह काम छोड़ना पड़ा जिसे वे जारी नहीं रख सकते थे, और लक्ष्मी बाय बच निकली। उस भीषण गर्मी और भयानक रात में, दिल खान का हाल बुरा रहा। वह कुछ समय तक रानी के साथ कुछ घुड़सवार अनुयायियों

के साथ रहा, जो धीरे-धीरे एक-एक करके पीछे छूटते गए। उसका अपना मोटा, लाड़ला घोड़ा, जुलूस में झूमता हुआ देखने में वाकई शानदार था,
झांसी की रानी (415) की हालत ऐसी सवारी के लिए ठीक नहीं थी। रानी और उसके साथी बार-बार उसे आगे आने के लिए बुलाते रहे, पर व्यर्थ। अंत में, उसने पाया कि सबने उसे छोड़ दिया है। फिर वह किसी जंगल में रास्ता भटक गया और सुबह होने तक इधर-उधर भटकता रहा। ऐसा लगा कि वह झांसी की ओर लौट रहा है; क्योंकि जब वह एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ा, तो उसने कुछ ही मील की दूरी पर चट्टानी किला देखा और किले की सबसे ऊंची मीनार पर इंग्लैंड का लाल झंडा तेज धूप में लहरा रहा था। झांसी अब उसके लिए रहने की जगह नहीं थी, जब तक कि वह आत्मसमर्पण न कर दे; और फिर, आह! अब कोई आशा नहीं थी, कोई शरण नहीं थी! केवल ईश्वर में ही शरण थी! और वह बेचारा हांफते हुए घोड़े से उतरा और अपनी कमरबंद जमीन पर फैलाकर, अपनी आस्था की सुबह की प्रार्थना करने के लिए बेमन से घुटने टेक दिए। वह शारीरिक और मानसिक रूप से थका हुआ था और प्यास से बेहाल था। प्रार्थना के बाद जब वह लेटा, तो उसे बेचैन नींद आ गई, और उसके शांत महल, उसकी कोमल पत्नी और क्रूर डाकू के उपहास भरे दृश्य उसके सामने आने लगे; और उसके अपवित्र अनुष्ठानों की "ह्रडम! हर्रम! हर्रम!" की गूंज उसके कानों में गूंजने लगी। अचानक उसके घोड़े ने हिनहिनाया और वह जाग गया: और अपने हाथ के बल उठकर उसने देखा कि भागे हुए रानी की तलाश में देश भर में घूम रही घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी उस पर टूट पड़ी है। उसने अपनी तलवार निकाली, लेकिन पहले सिपाही पर उसका वार नाकाम रहा, और एक क्षण बाद ही उसे एक कृपाण के वार से गिरा दिया गया, और अपने घोड़े के पैरों पर गिरकर वह बिना कराह के मर गया। यह स्पष्ट था कि वह एक उच्च पदस्थ व्यक्ति था, और यदि अंग्रेज अधिकारी पास होता तो उसकी जान बच सकती थी। लेकिन झांसी में किसी को बख्शा नहीं गया, और दिल खान ने भी बख्शने की गुहार नहीं लगाई थी। वह एक सैनिक की तरह, हाथ में तलवार लिए, मर गया। फिर उसके शरीर की तलाशी ली गई, कागजात और शायद कीमती सामान भी। लेकिन उसके पास कुछ भी नहीं था। उसका सारा सामान बेचारे मेती के थैलों में था, जिसे ले जाया गया और महारानी के ड्रैगून सैनिकों में विधिवत भर्ती कर लिया गया। मिले हुए कागजात महत्वहीन थे, सिवाय इसके कि उनसे पता चला कि वह कौन था, और कुछ समय बाद, श्री ब्रैंडन

को नवाब दिल खान की मृत्यु की आधिकारिक सूचना मिली। मुझे झांसी की रान के भाग्य का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, जिसका इस कहानी से नवाब के अलावा कोई और संबंध नहीं है। लेकिन वह तांतिया टोपी से मिल गई, जो कूंच में फिर से पराजित हुई, और बाद के अभियानों में सबसे अथक और शायद विद्रोही नेताओं में सबसे सक्षम साबित हुई, जिन्होंने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया और उसके शासक, सिंधिया को भागने पर मजबूर कर दिया। लेकिन उसकी जीत अल्पकालिक थी; और 17 जून को गुआलियोर में विद्रोही सेना पर सफल हमले में, वह और उसकी बहन या साथी, पुरुषों की तरह कपड़े पहने होने के कारण, मारी गईं।
416 सीता। 8वीं हुसार रेजिमेंट द्वारा किए गए हमले के बारे में सर ह्यू रोज़ ने लिखा: "एक महत्वपूर्ण परिणाम झांसी की रानी की मृत्यु थी, जो एक महिला होते हुए भी विद्रोहियों की सबसे सक्षम और बहादुर सैन्य नेता थीं।" अध्याय 1. विदाई। नूरपुर में रुकने का समय नहीं था; और जब क्रिसमस का सप्ताह बीत गया और नए साल की शुभकामनाएँ दे दी गईं, तो सिरिल अपने दोस्तों को छोड़कर अपने ज़िले के काम के लिए निकल पड़े, जिसके लिए वास्तव में उनके पूरे समय और क्षमता की आवश्यकता थी। उनके आधिकारिक संचार फिर से शुरू हो गए थे, और युवा टेंपल को अतिरिक्त सहायक आयुक्त के रूप में उनकी नियुक्ति की पुष्टि हो गई थी। बाबा साहब को भी नहीं भुलाया गया था, क्योंकि उसी सूचना के साथ उन्हें भी "अतिरिक्त सहायक" के रूप में नियुक्त किया गया था; जबकि सरकार को एक अत्यंत नाजुक समय में दी गई उनकी उत्कृष्ट सेवाओं को उनके मित्र द्वारा सिरिल को भेजे गए एक राजकीय विवरण में प्रभावशाली ढंग से दर्ज किया गया था, जिनके पूर्व पत्रों के बारे में हम जानते हैं, और जिसके लिए उच्च अधिकारी ने अपनी हार्दिक क्षमा याचना की थी। "मेरे प्रिय ब्रैंडन," उन्होंने लिखा, "मुझे इस बात से सबसे अधिक दुख होता है कि मैं इतना भ्रमित हो गया कि मैंने उन्हें जन कल्याण के लिए उतना ही आवश्यक समझा जितना कि आपका; और हमारे साझा मित्र मोस्टिन से मुझे अब सच्चाई और उसके परिणामस्वरूप घटी भयावह विपत्ति का पता चला है, जिसमें, मेरा विश्वास कीजिए, मेरी हार्दिक सहानुभूति आपके साथ है।" मैंने पहले भी कहा है कि 1858 के जनवरी से पहले का सप्ताह नीरस था; हमारे अधिकांश मित्रों के लिए तो बहुत ही नीरस। संगीत का कोई नामोनिशान नहीं था, क्योंकि न्यायाधीश के घर में लगी आग की गर्मी से पियानो क्षतिग्रस्त हो गया था और उस समय अनुपयोगी था, इसलिए उसे मरम्मत

के लिए घर भेजा जाना था। अगर वह ठीक भी होता, तो मुझे लगता है कि जो लोग उस पर गाना चाहते थे, वे भी बेसुरा गा रहे थे, क्योंकि पुरानी मधुर परंपराओं को फिर से शुरू करने का कोई प्रयास नहीं किया गया था; और यद्यपि अन्य पियानो पेश किए गए, लेकिन किसी ने भी स्वीकार नहीं किया। अब हर जगह प्रगति कर रही विजय के साथ उन खतरों की यादें भी नहीं मिटी थीं जिनसे हम सब बच निकले थे। लेकिन सौ साल पहले की पुरानी विचित्र भविष्यवाणी के अनुसार, 1914 का अंत खून-खराबे में ही होना था। जहाँ तक बेचारी ग्रेस की बात है, वह वहाँ से दूर जाने के लिए तरस रही थी। उस पुराने किले में उस थका देने वाले समय के दौरान उसे जिन प्रस्तावों को ठुकराना पड़ा, उनसे वह कितनी दुखी हुई थी, यह मैं प्रकट नहीं करूँगा;
विदाई: 417 और उन लोगों का ज़िक्र करना भी उचित नहीं है जिन्होंने उसका हाथ पाने का दावा किया था। क्या यह उसके लगातार चाहने वालों के प्रति आपत्ति के कारण था, या उसके इनकार के पीछे कोई और गहरी वजह थी? अगर ऐसा था, और मेरा मानना है कि ऐसा ही था, तो उसे कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। सिरिल ब्रैंडन दयालु और स्नेही भी था; लेकिन ग्रेस जानती थी कि उसे उस व्यक्ति के खोने के गम से उबरने में समय लगेगा, शायद लंबा समय, जिसे वे दोनों बहुत प्यार करते थे; और वह केवल धुंधली सी ही सही, लेकिन उम्मीद कर सकती थी। हालाँकि, नूरपुर से दूर रहने से किसी भी तरह के बदलाव की कोई संभावना नहीं थी। श्री मोस्टिन ने अपनी पत्नी और ग्रेस पर आने वाले गर्म मौसम में पहाड़ियों पर जाने के लिए फिर से दबाव डाला, लेकिन व्यर्थ; और जिस दिशा में उन्हें यात्रा करनी थी, उस दिशा में देश की स्थिति इतनी स्थिर नहीं थी कि इतनी लंबी यात्रा करना उचित हो; और सच कहें तो, श्रीमती मोस्टिन स्वयं भी इतनी सक्षम नहीं थीं, इसलिए वे वहीं रहीं। और जब सिरिल ब्रैंडन उन्हें छोड़कर गया, तो उसे पूरा यकीन था कि वे फिर मिलेंगे। शायद मुझे सिरिल ब्रैंडन के ज़िला प्रशासन के कार्यों का विस्तृत वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। वे कार्य अपरिवर्तित थे, न ही उनकी कड़ी मेहनत और लगन की आदतें, जिनका पहले ही उल्लेख किया जा चुका है। बहुत कुछ सुधारना था, कुछ अभी भी व्याप्त अराजकता पर काबू पाना था, और नाराज़ लोगों को समय की मौजूदा आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना था; लेकिन उनके सौम्य स्वभाव और सच्ची लोकप्रियता के प्रभाव का विरोध करना बहुत मुश्किल था। दृढ़, न्यायप्रिय और अपने शासन में प्रजा के सर्वोत्तम हितों के प्रति समर्पित; आत्मविश्वासी, फिर भी अपने कार्यों और निर्णयों में विचारशील, वे

वफादारों द्वारा एक साथ प्यार और सम्मान पाते थे, जबकि उनका नाम दुष्टों के लिए भय का कारण था। उनकी सफलता का रहस्य, यदि इसे सफलता कहा जा सकता है, तो सभी वर्गों के प्रति उनकी सच्ची सहानुभूति और उनके समय और धैर्य की सभी मांगों पर तत्परता में निहित था। कई पुराने झगड़े फिर से भड़क उठे थे, कई विवाद, जो बहुत पहले सुलझ गए थे, उस समय व्याप्त अराजकता में उग्र रूप से फिर से शुरू हो गए थे; भूमि या उत्तराधिकार के बंटवारे को लेकर कई पारिवारिक मुकदमे, जो वर्षों से शांत पड़े थे, फिर से शुरू हो गए, क्योंकि सत्ता ही न्याय थी, और सब कुछ फिर से व्यवस्थित करना पड़ा। केवल वही लोग जानते हैं जिन्होंने इन्हें अनुभव किया है कि सार्वजनिक भावनाओं और सुरक्षा में इस तरह की अशांति भारत की ग्रामीण आबादी को कितनी गहराई से और कष्टदायी रूप से प्रभावित करती है, और पूर्वाग्रह और शत्रुताएँ कितनी हठी होती हैं जिन्हें सुलझाना या दूर करना पड़ता है; फिर भी, कुछ मायनों में, सिरिल ब्रैंडन ने लोगों की वास्तविक राय, स्वभाव और आवश्यकताओं का अधिक सच्चा और गहरा ज्ञान प्राप्त किया, उन पिछले वर्षों की तुलना में जब सब कुछ सुचारू और घटनाहीन था और अक्सर कई घाव छिपे रहते थे। श्री ब्रैंडन स्पष्ट रूप से देख सकते थे कि कई

 स्थानीय क्षेत्रों का वास्तव में अस्तित्व था, और उन्हें जो वर्तमान अनुभव प्राप्त हो रहा था, वह कई विवादित मुद्दों के नए समाधान में अत्यंत सहायक होगा; लेकिन हालांकि उन्होंने असंतोष के सभी कारणों को दूर कर दिया जो उनके अधिकार क्षेत्र में थे, फिर भी अधिक व्यापक और संपूर्ण पुनर्गठन केवल सरकार के आदेशों के तहत ही संभव हो सकता था, जो वर्तमान में, उस समय के उभरते राजनीतिक मामलों में अत्यधिक व्यस्त होने के कारण, शायद आने वाले कई वर्षों तक अपने स्वयं के प्रांत पर, जो कई प्रांतों में से एक था और जिसकी लंबे समय से उपेक्षा की गई थी, आवश्यक ध्यान नहीं दे पाएगी। इसलिए उन्होंने अथक परिश्रम किया: रिपोर्ट के लिए नोट्स बनाए जो वे समय समाप्त होने पर प्रस्तुत करेंगे, तथ्य जुटाए, और देश के सबसे सम्मानित और प्रभावशाली लोगों के विचार और सलाह ली, और प्रशासन में सुधार और संशोधन के लिए अपने स्वयं के व्यावहारिक सुझाव जोड़े। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मेरे कई पाठक भारतीय प्रशासन के नीरस विवरणों का अनुसरण करना चाहेंगे, हालांकि वे उस विशाल निकाय की आत्मा का निर्माण करते हैं जिसे वे नियंत्रित करते हैं; और यह सभी के लिए अच्छा होगा यदि वे अधिक सहानुभूति और

रुचि दिखाएँ, या अंग्रेज़ जनता यह समझने की परवाह करे, या समझने का प्रयास करे, कि कैसे, कुछ सहायकों के साथ, जैसा कि हम जानते हैं—सिरिल ब्रैंडन, कई अन्य लोगों की तरह, वेल्स या स्कॉटलैंड जितने बड़े प्रांत या स्कॉटलैंड के किसी एक भाग पर लाखों, शायद करोड़ों लोगों का शासन करते थे; और कैसे ऐसे ही लोगों का समूह भारत की विशाल जनसंख्या पर शासन करता है, और प्रयास करता है, और आशा है कि सफल भी होता है, उसकी सद्भावना प्राप्त करने में, और कुछ मामलों में, हालांकि दुर्लभ मामलों में, उसका स्नेह प्राप्त करने में। मेरा तात्पर्य सिरिल ब्रैंडन को पूर्णता के रूप में प्रस्तुत करना नहीं है। उनमें कमियाँ और खामियाँ थीं, उनके संघर्ष थे, और कुछ मामलों में, उन्हें पूर्वाग्रहों पर काबू पाना था; उन्हें इस बात का अफसोस था कि उन्होंने बहुत कुछ अधूरा छोड़ दिया, और अंततः वे बहुत कम कर सके: लेकिन मैं चाहता हूँ कि उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में समझा जाए जिन्होंने स्वयं को अपने काम के प्रति समर्पित कर दिया था; जिन्होंने देशी चरित्र में कई गंभीर दोष देखते हुए भी, कई उत्कृष्ट गुणों को पहचानने में सक्षम थे। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिनकी सद्भावना और व्यावहारिक, सादगीपूर्ण परोपकारिता ने उनके शासितों का प्रेम आकर्षित किया और उसे सुरक्षित रखा—एक ऐसा प्रेम जिसने अक्सर उन कठिनाइयों को दूर किया जो अन्य उदासीन और कम सहानुभूति रखने वालों के हाथों में लगभग दुर्गम हो सकती थीं। और मैं उन्हें उन लोगों से अलग करना चाहता हूँ जो अपने शासित लोगों के प्रति सहानुभूति न रखते हुए, अभिमानी या घमंडी, व्यवहार में असभ्य, निडर और दिखावटी आत्मविश्वास वाले, देशी क्लर्कों और प्रशासनिक अधिकारियों के पीछे छिपे रहते हैं, और इसलिए शायद ही कभी अपनी आँखों से देखते या सुनते हैं। ऐसे लोग देशी लोगों का तिरस्कार करते हैं।

विदाई। 418 जान-पहचान बनाओ, और दोस्त मत बनाओ। वे ऐसा कैसे कर सकते हैं? कई लोग नियमित कार्यों के उत्कृष्ट अधिकारी और प्रशासक हैं; लेकिन वे ऐसे लोग हैं, जैसा कि किसी ने बुद्धिमानी से कहा है, जो मूल निवासियों को केवल "जब वे उनकी परीक्षा ले रहे हों या उन पर कर लगा रहे हों" तभी जानते हैं, और इसलिए उनके चरित्र के सबसे बुरे पहलुओं को जानने और उन पर विश्वास करने से आगे कुछ नहीं जानते। ऐसे लोग न तो बदल सकते हैं और न ही बदले जा सकते हैं; लेकिन मुझे विश्वास है कि इन पंक्तियों को पढ़ने वाले कई लोग सिरिल ब्रैंडन के उदाहरण का अनुसरण करने में शर्म महसूस नहीं करेंगे, जो अपने अधीन लोगों में विश्वास व्यक्त

करते हैं, जिससे वाणी और व्यवहार में दयालुता और शिष्टाचार आता है। एक समय था, जब भारत में प्रार्थना करने वाले किसी भी व्यक्ति को तिरस्कारपूर्वक "नया प्रकाश" कहा जाता था, जो एक अपमानजनक शब्द था; लेकिन आजकल लोग पहले की तुलना में अधिक खुले तौर पर प्रार्थना करते हैं, और उन्हें निंदा का सामना नहीं करना पड़ता, और न ही उन्हें डर लगता है अगर ऐसा होता है। अतः, इस प्रकार, मैं शायद आशा कर सकता हूँ कि अंग्रेज़ राष्ट्र की ओर से उनके तात्कालिक शासकों और उनके द्वारा शासित जनता के बीच कोई झूठी शर्म या कड़वा पूर्वाग्रह न आए; और यह भी कि बहुत से लोग, यदि सभी नहीं, तो महान एडमंड बर्क के इस आशय को असत्य ठहराने में संकोच न करें कि “युवा पुरुष समाज और मूल निवासियों के प्रति सहानुभूति के बिना भारत पर शासन कर रहे हैं: शिकारी पक्षियों की नई उड़ानें लगातार उनकी आँखों के सामने से गुजरती रहेंगी, जो एक अंतहीन, निराशाजनक संभावना है।” मैं यह भी आशा करूँगा कि एल्फिंस्टन, मेटकाफ, मुनरो, मैल्कम और अन्य असंख्य लोगों के गौरवशाली उदाहरण, जिनके नाम आज भी घर-घर में जाने जाते हैं, शाम को दीपक जलाते समय याद किए जाते हैं या सुबह-सुबह गाए जाते हैं, जब “दो स्त्रियाँ चक्की पर पीस रही हैं”—स्थायी बने रहें। लेकिन यह प्रतियोगी परीक्षाओं का अहंकार नहीं है जो ऐसा करेगा। ये वे पुरुषोत्तम, सरल और दयालु मन हैं, जो शायद बहुत विद्वान न हों, और न ही उन्हें विद्वान होने की आवश्यकता है: लेकिन जो, मैंने जिन पुरुषों का उल्लेख किया है, उनकी तरह संकीर्ण पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर, अपनी स्वतंत्र सोच या एक अंग्रेज सज्जन के रूप में अपनी स्थिति खोए बिना, लोगों की भावनाओं और इच्छाओं को समझ सकते हैं। अपने वर्तमान चिंताजनक कार्य में, सिरिल ब्रैंडन के लिए सीता की सहायता अमूल्य होती। क्योंकि उनसे बेहतर कौन लोगों की वास्तविक जरूरतों को जानता था? और कौन उन्हें उनके सामने इतनी स्वतंत्रता से, इतनी सच्चाई से और इतने प्रेम से रख सकता था? नूरपुर में अशांत काल के दौरान, उन्होंने अक्सर इन मामलों पर चर्चा की थी और उस समय की प्रतीक्षा की थी जब स्थानीय परेशानियाँ समाप्त हो जाएँगी और वे स्वतंत्र रूप से सुधार कार्य कर सकेंगे। जैसे-जैसे सीता का मन विकसित हुआ और उनकी समझ की गरिमा बढ़ी, वे सर्व-शिक्षा की कितनी वाक्पटु समर्थक बन गईं।

420 सीता। कक्षाएँ और क्लास! उसने शाहगंज में लड़कियों के लिए एक स्कूल भवन बनाने और उसे दान देने का संकल्प लिया था; उसके मन में विभिन्न शहरों में

लड़कियों और लड़कों के लिए स्कूल स्थापित करने की सौ योजनाएँ थीं; और सचमुच, उनका निर्देशन करने की आशा उसके लिए निरंतर आनंद का स्रोत थी! खैर, वह सब अब बीत चुका था; और दैनिक जीवन में—पढ़ाई—सुखद गपशप भरी शामें —सुबह की घुड़सवारी, और "थोड़ा सा शिकार"—स्वयं में डूबने से बचने के सभी उपायों के बावजूद, सिरिल के लिए भी सब कुछ खत्म हो चुका था; और वह खालीपन, जिसे कुछ भी नहीं भर सकता था, सहना बहुत कष्टदायक था। बेचारा छोटा मफ भी नहीं भूल पाया था; और अक्सर, जब सिरिल शाम को बाहर बैठा होता, तो वह प्यारा सा जीव तंबू में दौड़कर आता, चारों ओर देखता, और रोते हुए लौट आता, मानो पूछ रहा हो—जैसा कि वास्तव में लगता भी था—कि उसकी प्यारी मालकिन कहाँ चली गई! घर से डाक और पत्र अब नियमित रूप से आने लगे थे। लेडी हिल्टन ने गुमनाम पत्र का आगे कोई जिक्र नहीं किया था; लेकिन जाहिर तौर पर वह इसकी कोई व्याख्या ढूंढ रही थीं। सिरिल ने अपनी माँ के पत्र के उत्तर में जो पत्र लिखा था, उसमें उसने यह बात पूरी तरह और बिना किसी संकोच के कह दी थी; और उसका उत्तर भी जल्द ही आने वाला था। सिरिल को इस बात का बहुत अफसोस था कि उसने पहले अपनी माँ को स्पष्ट रूप से पत्र क्यों नहीं लिखा; लेकिन सच तो यह था कि उसे डर था कि उसकी माँ को उसके द्वारा एक ऐसे व्यक्ति से विवाह करने पर घृणा होगी जिसे वह 'विधर्मी' कहती थी, और अपने भाई को अपने किए की सूचना देते हुए, वह उस समय की आशा कर रहा था जब सीता ईसाई बन जाएगी और वह ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार उससे विवाह कर सकेगा। मुझे लगता है कि वह इस बात को भी बहुत हद तक समझता था कि अपनी माँ को अपने किए पर मनाना कितना मुश्किल, अगर असंभव नहीं तो, होता, कम से कम लंबे समय तक तो नहीं; और क्या वह वास्तव में कभी सीता की सच्चाई पर विश्वास कर पाती, जब तक कि वह उसे देख न ले? इसलिए कई तरह से संघर्ष हुए थे, लेकिन वे भी अब बीत चुके थे। उसके भाई के स्वास्थ्य के बारे में खबर अच्छी थी; उनकी मां की अपेक्षा से कहीं अधिक: और उन्हें गर्मियों में हिल्टन लौटना चाहिए था, इस उम्मीद के साथ कि टल गया खतरा अब टल गया है। इसलिए काम धैर्यपूर्वक और निरंतर चलता रहा, और उनके प्रांत के हर काउंटी में बहुत कुछ व्यवस्थित और पुनर्गठित करना था, जिसके लिए श्री ब्रैंडन अभी भी पर्याप्त रूप से सक्षम थे। उन्होंने सोचा कि शायद बारिश में उन्हें अधिक फुर्सत मिलेगी और वे अपने दोस्तों की संगति का आनंद ले सकेंगे; लेकिन

ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही गर्म मौसम शुरू हुआ, मोस्टिन और उनकी पत्नी दोनों कमजोर पड़ते दिखाई दिए। श्रीमती मोस्टिन को बच्चे के जन्म के बाद कोई फायदा नहीं हुआ; और बारिश के दौरान, और किले में कैद रहने के दौरान, श्री मोस्टिन को बार-बार हल्का बुखार आता रहा, जो एक पुरानी बीमारी का रूप ले चुका था, जिस पर दवा का कोई असर नहीं हुआ।

विदाई। 421 उनमें कोई शक्ति नहीं बची थी; और उनकी ताकत वापस नहीं लौटी। नूरपुर के डॉ. होम और एक अन्य कुशल सर्जन ने श्री मोस्टिन के मामले पर विचार-विमर्श किया था: और उनका फैसला था कि श्रीमती मोस्टिन और उनके लिए तुरंत इंग्लैंड लौटना अनिवार्य था, और यह स्पष्ट था कि इसमें देरी नहीं की जा सकती थी। यदि वे तुरंत चले जाते, तो वे मानसून से बच जाते, और मई तक भूमध्य सागर पहुँच जाते और इंग्लैंड में ग्रीष्मकाल बिताते। श्री मोस्टिन लगभग बीस वर्षों में, बाहर आने के बाद से केवल एक बार ही घर लौटे थे; और उनके स्वास्थ्य में अचानक आई गिरावट एक चेतावनी थी जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। उन्हें लगा कि उनमें रोज़ाना काम पर बैठने, अपील मामलों पर विस्तृत निर्णय लिखने या अपने विभाग के आँकड़े संकलित करने की शक्ति नहीं है; और वे कई मित्रों के उदाहरण से जानते थे कि 'पहाड़ों' की यात्रा केवल एक अस्थायी उपाय था, जो उनके मामले में व्यर्थ था। लेकिन अगर वह खुद को लेकर चिंतित थे, तो रोज़ और ग्रेस को लेकर उनकी चिंता दोगुनी थी, जो दोनों कमजोर थीं और अपनी पहले की सेहत की परछाईं जैसी लग रही थीं। भारत में सेवा करने वालों के लिए ऐसी घटनाएं आम बात हैं। तेज बुखार, अत्यधिक काम, लगातार बढ़ती कमजोरी, लिवर की खराबी, या वास्तव में कोई भी ऐसी बीमारी जो पहले अच्छे और हर मौसम में स्थिर रहने वाले स्वास्थ्य को धीरे-धीरे बिगाड़ देती है और जिसे तुरंत ठीक नहीं किया जा सकता—पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चे, प्रेमी और दोस्त, सभी को भयानक और कष्टदायक ढंग से अलग कर देती है। और सिरिल ब्रेंडन ने श्री मोस्टिन और उनकी पत्नी के साथ-साथ नोबल और मोस्टिन से यह सुनने के बाद कि उनके दोस्त का स्वास्थ्य गंभीर रूप से बिगड़ रहा है, उन्हें अचानक अलविदा कहने के लिए बुलाए जाने पर आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें कुछ ही दिनों में नूरपुर छोड़ना था। और वह अपने शिविर से उनसे मिलने गया, और जो कुछ उसने देखा उसे देखकर वह बहुत चिंतित और दुखी हुआ, क्योंकि यह परिवर्तन नि:संदेह अत्यावश्यक था। फिलिप मोस्टिन की धंसी हुई आँखें और

दुबला-पतला शरीर उसके कष्टों का प्रतीक थे; और उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उन दोनों महिलाओं के रूप-रंग में इतना बड़ा बदलाव आ सकता है। हालाँकि, उन सभी के लिए अलग होना आसान नहीं था, जो कई बंधनों से इतने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। मुझे लगता है, अगर सिरिल को छुट्टी मिल जाती, तो वह उनके साथ चला जाता; लेकिन यह केवल उन्हीं के लिए संभव था जिन्हें अपने जीवन के लिए भारत भागना पड़ा था—और वह स्वस्थ और मजबूत था; अभी भी अपना कर्तव्य निभाने में सक्षम था, और वास्तव में सरकार की संतुष्टि के अनुसार सब कुछ व्यवस्थित करने तक इसे निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित था।

- 499 सीता. न्यायाधीश द्वारा सुना गया अंतिम महत्वपूर्ण आपराधिक मामला गोकुलपुर निवासी राम दास का था, जिस पर हुरे दास की हत्या के लिए उकसाने का आरोप था। मुझे इस मुकदमे के विवरण में जाने की आवश्यकता नहीं है, बस इतना कहना काफी है कि उसके खाते की किताबों, डकैत के शव से मिले बांड और ज्ञापनों, फतेहपुर में रिहा किए गए दो गवाहों और कई नौकरों के बयानों से, जिन्होंने डकैती से एक दिन पहले और डकैती की रात गवाहों को उनके मालिक के साथ देखा था, उसकी दोषसिद्धि के लिए पर्याप्त सबूत मिले। श्री मोस्टिन ने उसे फांसी की सजा सुनाई थी; लेकिन इसे आजीवन कारावास में बदल दिया गया और उसे अंडमान द्वीप समूह भेज दिया गया, जो उस समय नवस्थापित दंड बस्ती थी; लेकिन मुझे संदेह है कि उस बेचारे को अपने प्रति दिखाई गई दया कोई वास्तविक वरदान लगी होगी। सिरिल उसके अनुरोध पर उससे मिलने गया; और अगर इससे कोई संतोष मिला, तो उसने उसके मुंह से अपने अपराध की स्वीकारोक्ति और अपनी सजा की न्यायसंगतता को सुना। भोजन-पानी के संबंध में कुछ अनुरोध किए गए। नरेंद्र ने अपनी पत्नी और बच्चों के लिए प्रार्थना की, और श्री ब्रैंडन ने आश्वासन दिया कि वे उनके लिए हर संभव प्रयास करेंगे। कुछ दिन बीत गए, और मेरा उनके बारे में लिखने का मन नहीं कर रहा। कई मायनों में वे बहुत कष्टदायक थे, तो कुछ मायनों में संबंधित लोगों के लिए आशा से भरे भी। फिलिप और रोज़ अपने बच्चों को देखने के लिए तरस रहे थे, और सभी के अच्छे स्वास्थ्य की कामना कर रहे थे। ग्रेस भी शायद अपने मन में आशावान थी, हालाँकि उसने यह बात अपनी बहन से भी नहीं कही। और इस तरह आखिरी शाम आ गई, और दोस्त बरामदे में बैठे थे जबकि महिलाएं रात के सफर के लिए तैयार हो रही थीं। फिलिप मोस्टिन अपने अंतिम निर्देश दे रहे थे, और उन्होंने

सिरिल की सहमति प्राप्त कर ली थी कि जब तक उन्हें घर की आवश्यकता होगी, वे उसमें रह सकते हैं। फिलिप ने कहा, "मुझे यकीन है कि हम इंग्लैंड में मिलेंगे। नियमित अवकाश शुरू होने के बाद आपको ज़रूरत से ज़्यादा समय तक यहाँ नहीं रहना चाहिए। मुझे यह भी यकीन है कि आपकी माँ और भाई को आपकी उपस्थिति की ज़रूरत है, और यह उनके लिए बहुत सुकून की बात होगी। लेकिन जब मैं आपके भाई से मिलूंगा, तो मैं उनके स्वास्थ्य के बारे में अपने विचार लिखूंगा, और आपको वादा करना होगा।" "मुझसे वादा कीजिए," श्रीमती मोस्टिन और गैस के यात्रा के कपड़ों में आते ही उन्होंने आगे कहा, "हम सभी से वादा कीजिए कि आप यहाँ किसी भी कारण से देरी नहीं करेंगे, जबकि घर लौटने का रास्ता खुला है।" "मैं वादा करता हूँ, आप सभी से वादा करता हूँ, प्यारे दोस्तों," सिरिल ने उत्तर दिया, "जहाँ तक हो सकता है, क्योंकि मैं इस समय स्वतंत्र नहीं हूँ। मैं वास्तव में उनसे मिलने के लिए तत्पर हूँ; और आपके जाने के बाद, यहाँ मेरे पास अपने काम के अलावा और क्या सहारा होगा? और आप मेरी माँ और हिल्टन को जो कुछ हुआ है उसके बारे में बहुत कुछ समझा सकते हैं; बहुत कुछ जो
"बीते हुए दिन की कोमल कृपा।" 428 लिख नहीं सका, और जो आप सभी से मुझसे कहीं अधिक स्वाभाविक और सशक्त रूप से निकलेगा, मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे इस विषय पर और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। मैं बस इतना चाहता हूँ कि वे विश्वास करें कि मैंने कोई गलती नहीं की, और मैं सच्चा था; और मुझे बहुत राहत मिलेगी, जितनी मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता, जब मुझे पता चलेगा कि आप हिल्टन गए थे। क्या आप सब मुझसे वादा करेंगे कि हम भी जाएँगे?" "जी हाँ, जी हाँ, हम जाएँगे," श्रीमती मोस्टिन ने आँसुओं के बीच गंभीर स्वर में कहा; "और हम आपके और सीता के प्रति सच्चे रहेंगे, जैसा कि आपको बाद में पता चलेगा; है ना, ग्रेस? और मैं सब कुछ लिखूँगी भी। मुझे यकीन है कि ग्रेस, कम से कम, मुझे तब तक चैन से नहीं बैठने देगी जब तक मैं ऐसा नहीं कर देती, इसलिए आप हम पर पूरा भरोसा कर सकते हैं।" बेचारी ग्रेस तब कुछ बोल नहीं पाई, क्योंकि उसके आँसू और कई विचार उसे लगभग अभिभूत कर रहे थे। लेकिन मुझे लगता है, जब सिरिल उसे उसकी पालकी तक ले गया और सिसकते हुए उससे विदा ली, और कहा कि वह सीता के प्रति उसकी दया और प्रेम को कभी नहीं भूल सकता, और उसकी कमी उसे बहुत खलेगी, तो उसके हाथ को थामने में उसे उम्मीद से कहीं अधिक सुकून मिला।

फिर, सभी ने कहा, "ईश्वर आपका भला करे! अलविदा! अलविदा!" और वे चले गए। अध्याय 11। "बीते दिन की कोमल कृपा।" ट्यूरी सुरक्षित घर लौट आई, और सिरिल को हर चिट्ठी से उनके स्वास्थ्य में तेजी से हो रहे सुधार की खबर मिलती रही। फिलिप मोस्टिन ने लिखा कि वह लगभग पहले की तरह ही तंदुरुस्त महसूस कर रहा था: और रोज़ और ग्रेस के बारे में, उनके किसी भी दोस्त को विश्वास नहीं हो रहा था कि वे भारत में हुए विद्रोह और युद्ध की जलवायु और चिंताओं से पीड़ित थीं। लेकिन उन्होंने लॉर्ड हिल्टन के बारे में बहुत ही निराशाजनक जानकारी दी, जिनके साथ वे दक्षिणी फ्रांस से लौटने के बाद हिल्टन हॉल में एक महीने तक रहे थे। श्री मोस्टिन ने सितंबर के पत्र में लिखा, “इंग्लैंड स्पष्ट रूप से उनके लिए उपयुक्त जगह नहीं है; और आपकी माँ और बहन उनके बारे में और आपके उनके पास लौटने के लिए बहुत चिंतित होने लगी हैं; लेकिन मैंने उन्हें समझा दिया है कि अत्यंत अत्यावश्यक स्थिति को छोड़कर आपके लिए छुट्टी मिलना कितना असंभव है, और मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि आपके भाई के मामले में अभी तक ऐसी कोई स्थिति नहीं आई है। वास्तव में, चिकित्सकों का मत है कि दक्षिणी फ्रांस में एक और सर्दी बिताने से उनका स्वास्थ्य सुधर सकता है। हालाँकि, मैं आपसे यह नहीं छिपा सकता कि वे कमजोर हैं, और उन्हें कई बार घर लौटना पड़ा है।”

समय उनकी समझ को धुंधला कर रही है। ग्रेस ने आपकी प्यारी बेटी की जो भी यादें सहेज कर रखी हैं, उसके छोटे-छोटे नोट्स और अभ्यास, ग्रेस की किताबों में सीता के निशान और सीता के उसके अपने रेखाचित्र, उन सभी ने उन्हें सीता के बारे में वैसा सोचने में मदद की है जैसा आप और हम सब चाहते हैं कि वे सोचें, जितना कि हम कुछ कह सकते थे या आप लिख सकते थे: और मुझे यकीन है कि वे अंत में हमारी राय से सहमत हो जाएँगे। देखिए, मैंने खुलकर अपनी बात कह दी है, लेकिन ऐसा करना आपके लिए ज़रूरी था। शुरू में, मैं यह नहीं कहूँगा कि आपकी माँ और बहन के मन में सीता का ज़िक्र करने को लेकर कोई रूखापन या कुछ हद तक अरुचि नहीं थी; लेकिन यह ज़्यादा देर तक नहीं रहा, और मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि उनके दिलों में सीता के लिए प्यार और सम्मान पैदा हो गया था, और वह हमेशा बना रहेगा। इसलिए, फिलहाल आपको इतना ही संतोष करना होगा। मुझे पूरा यकीन है कि जो भावनाएँ और पूर्वाग्रह मौजूद थे, उनमें से काफ़ी हद तक उन हाल की घटनाओं के कारण हैं जिन्होंने यहाँ के ज़्यादातर लोगों के मन पर गहरा असर डाला है, जो भारत के लोगों को उतना नहीं जानते जितना आप, मैं और दूसरे लोग जानते हैं: और जो उन्हें, सभी या उनमें से ज़्यादातर को, कानपुर और अन्य जगहों पर नरसंहार करने वाले राक्षसों जैसा मानते हैं। ये दुखद धारणाएँ समय के साथ मिट जाएँगी; लेकिन फिलहाल इन्हें दूर करने की कोशिश करना लगभग नामुमकिन है। यदि सिरिल ब्रैंडन ने शुरू में सीता के विषय पर अपने परिवार के संदेह पर आपत्ति जताई थी, तो गहन चिंतन के बाद वे अपने मित्र की टिप्पणियों के महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं कर सके; और अपनी माँ को लिखे पत्रों में उन्होंने इस विषय का उल्लेख केवल उन लोगों के संदर्भ में किया जो सीता के सबसे अच्छे मित्र थे। उनके मामले में सीता की वापसी से अधिक उपयुक्त समय और कुछ नहीं हो सकता था।

“बीते दिन की कोमल कृपा।” 425 मोस्टिन्स से इंग्लैंड। भारत में न्यायाधीश का उच्च पद, रोज़ और ग्रेस का परिष्कार और कोमलता, सेक्टा के पद और चरित्र की प्रतिष्ठा के प्रमाण थे, जो उनके पत्रों से संभव नहीं थे; और उनके जीवन के अंतिम कार्य की भक्ति, जो अब पूरी तरह से ज्ञात हो चुकी थी, वह जानती थी कि उनकी मधुर स्मृति के प्रेमपूर्ण संजोए में अपना फल छोड़ेगी। अपनी माँ को लिखते हुए, वह अंततः उन्हें विश्वासपूर्वक आश्वस्त कर सके कि वह जितनी जल्दी हो सके उनसे मिलने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं: निश्चित रूप से अगले वर्ष के अंत तक, जब वह अपना काम पूरा कर

लेंगे। बाकी बातें तभी पूरी हो सकती थीं जब वह उनसे आमने-सामने मिलते और उन्हें बहुत कुछ बता पाते जो उनके प्रिय सच्चे मित्रों द्वारा उन्हें सुनने के लिए तैयार की गई सभी बातों की पुष्टि करता। सिरिल उनके प्रति, और विशेष रूप से ग्रेस के प्रति, कितना गहरा कृतज्ञ महसूस करते थे, मुझे लगता है कि मुझे उन लोगों को बताने की आवश्यकता नहीं है जिन्होंने इन पृष्ठों में उनके चरित्र का अनुसरण किया है। समय बीतने के साथ, सिरिल ब्रैंडन को वह मिल गया जिसकी उन्हें आशा थी—लोगों में एक स्वस्थ मनोबल का उदय। पुराने शासकों और शासन प्रणालियों की यादों से चिपके रहने का कोई लगाव नहीं रह गया था। 1914 के संबुत के अशांत समय के दौरान जो भी व्यवस्थाएँ सामने आई थीं, वे हर जगह व्यापक दुख और निराशा का कारण बनी थीं; और जहाँ कहीं भी विद्रोह और बगावत हुई थी, वहाँ सभी उद्यम रुक गए थे, और आपसी विश्वास और सुरक्षा पूरी तरह से नष्ट नहीं तो कमज़ोर पड़ गई थी। यह विचित्र भविष्यवाणी कि कुम्पानी बहादुरों का शासन केवल सौ वर्षों तक चलेगा, वास्तव में अक्षरशः पूरी हो गई थी; क्योंकि 1 नवंबर, 1858 को, महारानी विक्टोरिया की उदार घोषणा इलाहाबाद में गवर्नर-जनरल लॉर्ड कैनिंग द्वारा जारी की गई, और यह अशांत जल पर तेल की तरह फैल गई। कंपनी वास्तव में समाप्त हो गई थी: लेकिन इंग्लैंड की रानी और उनकी सरकार जीवित रही; और इसके आधिकारिक अस्तित्व और न्यायपूर्ण एवं दयालु शासन करने के दृढ़ संकल्प की पहली घोषणा को उच्च से निम्न स्तर तक उस श्रद्धापूर्ण विश्वास के साथ स्वीकार किया गया, जिसे इसके प्रभावों को देखने वाले सर्वथा सबसे अधिक महत्व देने वाले लोगों ने माना। इस बीच, युद्ध समाप्त हो रहा था; और 1858 के अंत से पहले, विद्रोही सेना के बचे हुए सैनिकों को अवध में राप्ती नदी के पार निपेल के तेर्देई के जंगलों में खदेड़ दिया गया था। वहाँ नाना, अज़ीम ओल्ला, उनके घृणित सलाहकार और कई अन्य सरदार और विद्रोही अधिकारी मारे गए, जिनमें माना जाता है कि राजा हुरपेल सिंह भी शामिल थे, जिनके बारे में कभी कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिली। सिपाही युद्ध के प्रख्यात इतिहासकार* ने इन घटनाओं का विवरण प्रशंसनीय जोश और स्पष्टता के साथ दिया है: और मैं इनका जितना संक्षिप्त उल्लेख कर सका, उतना ही कर पाया। * सर जॉन केय, के.8.एल. 426 सीता। यहाँ इसका उल्लेख करना, मुझे लगता है, अनुचित और अनुचित होगा। नूरपुर प्रांत में प्रतिद्वंद्वी देशी शक्तियों का उल्लेख करने का मुझे अब कोई और अवसर नहीं है। दोनों विद्रोही के रूप में मारे गए थे, और उनकी संपत्तियाँ न्यायसंगत रूप से

जब्त कर ली गई थीं। लेकिन जहाँ उनके किलों की किलेबंदी उड़ा दी गई थी, वहीं फतेहपुर का महल सुरक्षित रखा गया था, और उस बेचारे नवाब की पत्नियों को उसमें रहने की अनुमति दी गई थी, साथ ही उन्हें जागीर से जीवनयापन के लिए पर्याप्त भत्ता मिलता रहा था, और अधिकांश वृद्ध परिवार के सदस्यों को, जिन्होंने विद्रोह में भाग नहीं लिया था, पेंशन दी गई थी। श्री ब्रैंडन ने अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान कई बार शाह गुंजे का दौरा किया था, और यद्यपि सीता की मृत्यु के बाद उनकी पहली यात्रा उनके लिए, नरेंद्र और आंटी एला के लिए अत्यंत पीड़ादायक थी, उन्होंने उन्हें शायद स्वयं से अधिक शांत पाया था, और उन्होंने उनसे विनती की थी कि वे उस बात पर शोक न करें जिसका कोई उपाय नहीं है, और जो ईश्वर की इच्छा है। अच्छे पादरी के उपदेश भी अपनी सरल बुद्धि और गंभीरता में कम प्रभावशाली नहीं थे। चाची एला वास्तव में बहुत कम बोल सकीं, क्योंकि उनका मन अब संसार के मामलों और भावनाओं से पूरी तरह विमुख हो चुका था, जो उनके लिए मृत समान थे। उन्होंने सिरिल से कहा, “अगर मैं मरने से पहले अपने प्रिय के बच्चे को देख पाती, तो मैं बहुत आभारी होती; लेकिन इसकी अनुमति नहीं थी, और मेरा सबसे बड़ा संतोष यही है कि वह अपने पवित्र विश्वास में पूर्ण रूप से मरीं, और उनकी आत्मा की शांति के लिए सभी रस्में विधिवत निभाई गईं।” हालांकि, नरेंद्र और उनके साथ पादरी का विचार बिल्कुल अलग था। उन्होंने कहा, “हम उन्हें आपके लोगों के बीच अपना स्थान ग्रहण करते देखना चाहते थे, क्योंकि वह हमारे बीच से आपके पास आई थीं, और किसी भी तरह से उनकी जाति की पवित्रता को बनाए रखना संभव नहीं था।” वे सिरिल से यह भी जानते थे कि वह ईसाई धर्म में अंतिम प्रतिज्ञा के कितनी करीब थीं; और जो बात उन्हें सम्मान दिलाती, वह उनके लिए किसी भी प्रकार से अपमान नहीं होती। एक बार मुलाक़ात के दौरान, बैंकर ने सिरिल को सीता की संपत्ति का विवरण प्रस्तुत किया, जो काफी बड़ी थी, और उनसे आग्रह किया कि वे उस पर कब्ज़ा कर लें, क्योंकि उन्हें इस पर निर्विवाद अधिकार था; लेकिन उन्होंने कुछ भी स्वीकार नहीं किया और नरेंद्र और पुजारी को सीता की इच्छा के बारे में बताया कि वे शाहगंज में लड़कियों और लड़कों के लिए स्कूल स्थापित करना और उन्हें आर्थिक सहायता देना चाहती हैं, साथ ही गरीब और असहाय व्यक्तियों के समर्थन के लिए एक संस्था भी स्थापित करना चाहती हैं। नरेंद्र ने सहर्ष यह ज़िम्मेदारी स्वीकार कर ली; और एक विधिवत विलेख द्वारा, सीता की सभी संपत्ति इन उद्देश्यों के लिए समर्पित कर दी गई

और सार्वजनिक प्रतिभूतियों में निवेश कर दी गई, जिसकी आय का प्रबंधन स्थानीय सज्जनों और व्यापारियों के एक बोर्ड द्वारा किया जाना था। स्कूल भवनों के डिज़ाइन सिरिल ने स्वयं तैयार किए।

“द टेंडर ग्रेस ऑफ़ अ डे दैट इज़ डेड” 427 और जब वे पूरे हो जाएँगे, तो उन्होंने स्वयं आकर उन्हें खोलने का वादा किया। हालाँकि उनके भाई ने सर्दियों के लिए कान्स में उनका पुराना विला ले लिया था, लॉर्ड हिल्टन सिरिल को नियमित रूप से पत्र नहीं लिखते थे, लेकिन उनकी माँ और ऑगस्टा लिखती थीं, और जैसे-जैसे मौसम आगे बढ़ता गया, उनके पत्रों में उदासी और चिंता का स्वर बढ़ता गया, जो किसी राहत का संकेत नहीं दे रहा था। गर्मियों में इंग्लैंड लौटना बहुत ही संदिग्ध था, अगर असंभव नहीं तो। पिछली यात्रा से कोई लाभ नहीं हुआ था - वास्तव में, नुकसान ही हुआ था - और चिकित्सा सलाहकार ने स्विट्जरलैंड या अर्काशॉन को कहीं अधिक बेहतर बताया था। उनके पत्रों में कोई स्पष्ट चिंता नहीं थी, क्योंकि शायद, सभी के लिए इतने प्रिय व्यक्ति के मामले में, यह धीरे-धीरे ही आती है; लेकिन, जैसा कि मैंने सोचा था, अगर उस पूर्ण शक्ति की बहाली की कोई अच्छी उम्मीद थी जिसके लिए सभी प्रार्थना कर रहे थे, तो कमजोरी और मनोबल और भूख में कमी के बारे में बेचैनी के बजाय, इसका आश्वासन क्यों नहीं था? एक बार उनके भाई ने गिड़गिड़ाते हुए लिखा था: “अगर आपने इस साल हमारे पास आने का आश्वासन न दिया होता, तो प्यारे सिरिल, मुझे लगता है मैं जल्दी ही मर जाता; लेकिन इसी आश्वासन ने मुझे हिम्मत दी है, हालाँकि मैं बहुत दुबला-पतला और कमज़ोर हूँ, और थोड़ी सी सवारी भी मुझे थका देती है। ध्यान रहे, मैं नहीं चाहता कि आपके बारे में यह कहा जाए कि आपने अपना काम पूरा होने से पहले ही छोड़ दिया! यह बात मुझे आपसे न मिलने से कहीं ज़्यादा दुखी करेगी; लेकिन मोस्टिन ने मुझे लिखा है कि आपकी छुट्टी जल्द ही मिल जाएगी, और अगर हो सके तो क्रिसमस से पहले मेरे पास आ जाइए। मैं आपका बहुत-बहुत आभारी रहूँगा, और माँ और ऑगस्टा भी। इस गर्मी में मैं कहाँ जाऊँगा, यह अभी तय नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि कहाँ जाना है, इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, और मुझे अरकाचोन से ज़्यादा स्विट्ज़रलैंड पसंद है। मुझे यकीन है कि हम लॉज़ेन में बस जाएँगे, और जब अंगूर पकेंगे तो मॉन्ट्रो में उन्हें खाएँगे। अब हम सीता के बारे में सब जानते हैं, और उनकी यादें हमारे दिलों में बहुत अनमोल हैं। मुझे पता है कि आपको यह सुनकर खुशी होगी कि माँ और ऑगस्टा अब मुझसे कितनी बातें

करती हैं, उन सभी बातों के बारे में जो ग्रेस मोस्टिन ने बताई थीं। और, अगर वह न होती, तो हमें सच्चाई का कितना कम पता चलता! हम बस यही सोच सकते हैं कि उसके बिना आप कितने अकेले होंगे।" यह सिरिल के लिए एक बड़ा झटका था; लेकिन यूरोप से सितंबर की चिट्ठी से लॉर्ड हिल्टन की खबर आखिरकार चिंताजनक साबित हुई। लॉज़ेन में उनकी सेहत में काफी सुधार हुआ था और वे वहाँ बने एक क्लब के कुछ अंग्रेज़ सज्जनों के साथ झील में नौका विहार का आनंद ले रहे थे; और हल्का व्यायाम और रोमांच उनके लिए सबसे कारगर उपाय साबित हुए थे। लेकिन एक दिन, भयंकर आंधी और उफनती लहरों में, वे पूरी तरह भीग गए और ठंड से कांपने लगे, और उनकी खांसी, जो लगभग ठीक हो गई थी, अचानक बहुत तेज़ी से लौट आई, साथ ही उन्हें थूक भी आ रहा था।

 उन सभी को तुरंत, या जैसे ही वह चलने-फिरने के लिए तैयार हो सकें, मेंटोन के लिए प्रस्थान करना था; और मोस्टिन परिवार ने उनसे वहाँ मिलने का वादा किया था, क्योंकि श्री मोस्टिन के लिए दक्षिणी फ्रांस में शीतकाल बिताने की सलाह दी गई थी, क्योंकि इंग्लैंड में बीते शीतकाल से उन्हें काफी कष्ट हुआ था; लेडी हिल्टन ने अब सिरिल से अपना वादा निभाने का आग्रह किया, और ऐसा करना इतना आवश्यक था कि इसमें संदेह या देरी की कोई गुंजाइश नहीं थी। इसलिए उन्होंने अत्यावश्यक निजी कार्यों के लिए अवकाश हेतु आवेदन भेजा, और अपनी माँ को लिखा कि उन्होंने ऐसा कर लिया है, और यदि संभव हो तो नवंबर की डाक से भारत छोड़ देंगे। उनके पास अपने सभी पुराने मित्रों से मिलने के लिए भी बहुत कम समय था; लेकिन यह करना ही था; और उनकी पहली चिंता शाहगंज थी, जहाँ मंदिर के पास के उपवन में टेंपल के तंबू उनके लिए लगाए गए थे। जैसे ही उन्हें अवकाश मिला, सिरिल ने नरेंद्र को लिखा कि वह आकर उन्हें और आंटी एला को विदाई दें; और टेंपल और बाबा साहब से सभी प्रमुख लोगों को इकट्ठा करने के लिए कहा, ताकि वह उनसे विदा ले सकें। लेकिन बाबा साहब और नरेंद्र, बुलराम सिंह और अन्य लोगों के साथ, यह तय कर चुके थे कि यह विदाई महज़ औपचारिक नहीं होनी चाहिए। उन्होंने एक विशेष पत्र तैयार किया, जो सुनहरे धब्बों वाले कीमती कागज़ पर छपा था और एक अनोखे और सुंदर ढंग से सजाया गया था। आसपास के कस्बों और गांवों के लोग शाहगंज में आकर उस पर हस्ताक्षर करने के लिए उमड़ पड़े, और लगभग दो हज़ार हस्ताक्षर प्राप्त हुए। नरेंद्र ने अपने एक प्रमुख कारीगर से उसके लिए एक सुंदर

चांदी का बक्सा और एक थाली बनवाई, जिस पर उसे सौंपा जाना था। स्कूल के कमरे भी तैयार थे, और उन छात्रों का प्रवेश भी हो चुका था जो वहां पढ़ने वाले थे और जिन्हें समारोह में सिरिल से मिलवाया जाना था। पिछले भयानक वर्ष में सभी ने कितना कुछ सहा था, यह हम आंशिक रूप से जानते हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं: लेकिन इस विदाई समारोह ने यह साबित कर दिया कि दुख ने उन्हें, शासक और शासित को, एक दूसरे से कितनी गहराई से जोड़ दिया था। उनके आगमन के तुरंत बाद, नरेंद्र और बाबा साहब, प्रमुख लोगों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ, तंबुओं में गए और श्री ब्रैंडन से दोपहर में स्कूलों में आने का अनुरोध किया, जब सभी उनका स्वागत करने के लिए तैयार होंगे। मुझे नहीं लगता कि इसके आगे और कुछ कहा गया होगा, क्योंकि संदेश लाने वालों के दिल इतने भरे हुए थे कि वे उस समय ज्यादा कुछ कह नहीं पाए; और वास्तव में, सिरिल को ऐसा लग रहा था जैसे विदाई समारोह समाप्त होने पर उन्हें खुशी होगी। तय समय पर, वह और टेंपल शहर की ओर चल पड़े, और जब उन्होंने स्कूलों को देखा, तो सिरिल ने गौर किया कि उनके सुंदर गोथिक डिजाइन को कितनी कुशलता से समझा और निष्पादित किया गया था। मुख्य प्रवेश द्वार के ऊपर एक आले में सफेद संगमरमर की एक पट्टिका थी, जिस पर अंग्रेजी, हिंदी और फारसी में यह लिखा था:—

“उस दिन की कोमल कृपा जो बीत चुका है।” 429 एई ई ई “शाहगंज के लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के लिए ये स्कूल-कक्ष माननीय सिरिल ब्रैंडन, नोवरपुर के आयुक्त की पत्नी सीता बाय का उपहार थे। आरंभ 1858; समापन 1859।” तह वाले दरवाजों से एक-दूसरे में खुलने वाले ये कमरे बड़े थे; लेकिन अंदर का स्थान खचाखच भरा हुआ था। सिरिल मुश्किल से अपने चारों ओर देख पा रहे थे, क्योंकि सभा में शायद ही किसी की आँखें सूखी थीं: और जो लोग उन्हें निर्मित मंच तक ले जाने के लिए आए थे, उनकी आँखें भी उदास थीं; लेकिन कार्यवाही में थोड़ी ही देरी हुई, जिसकी शुरुआत बाबा साहब ने एक सरल भाषण से की, जिसमें उन्होंने सभी द्वारा तैयार किए गए भाषण को पढ़ने की अनुमति मांगी। “मैं खुद पर ज्यादा बोलने का भरोसा नहीं कर सकता,” उन्होंने घबराते हुए कहा, “लेकिन मुझे उम्मीद है कि मैं इसे पढ़ पाऊंगा, महोदय, हालांकि यह आपको विदाई देने के लिए है; और उन्होंने कांपती हुई आवाज़ में, आँखों से आँसू बहते हुए, अंत तक लिखा हुआ पढ़ा। शायद मुझे पूरा अनुवाद करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन कुछ अंश ऐसे हैं जिन्हें मैं

नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। "हम क्या कहें? आप लोगों के लिए एक अभिभावक के समान थे: एक दयालु और करुणामय अभिभावक; क्योंकि 1914 के सुम्बुत काल के अशांत समय में, आपने अपनी जान की परवाह किए बिना, हमारे पास तब आए जब हम बहुत दुखी थे, और इस जिले को विद्रोहियों, डाकुओं और लुटेरों से मुक्त कराया, और उनका कोई नामोनिशान नहीं बचा। इस सुरक्षा और हमारी वर्तमान सुरक्षा के लिए, हम आपके बहुत-बहुत आभारी हैं। हम, जो इस जिले में सरकार के सेवक हैं, और साथ ही सभी लोग, अच्छी तरह जानते हैं कि आपका हमारे प्रति व्यवहार हमेशा कैसा रहा है: और यह भी जानते हैं कि आपकी दयालुता कभी कम नहीं हुई। आपने हमारी देखभाल अपने बच्चों की तरह की है। अगर हम यह बता पाएं कि आपने हमारे लिए कितना कुछ किया है, तो यह कभी खत्म नहीं होगा। आपने गरीबों की शिकायतें सुनीं; और जैसे मक्खियाँ शहद पर टूट पड़ती हैं, वैसे ही सभी वर्गों के लोग बिना किसी भय के आपके दरबार में एकत्रित और मिलजुल कर बैठे: लेकिन हमने कभी नहीं सुना या देखा कि आप अधीर हुए हों या किसी के प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग किया हो। हमारी भाषा के आपके पूर्ण ज्ञान ने शिकायतकर्ताओं को आश्वस्त किया, क्योंकि वे जानते थे कि उनकी बात समझी जा रही है, और वे संतुष्ट थे; और हमने कभी भी, किसी भी अवसर पर, यह नहीं देखा कि सबसे गरीब व्यक्ति के साथ भी अपमानजनक व्यवहार किया गया हो या उसे अपमानित किया गया हो। अब आप हमसे विदा ले रहे हैं, और हम जानते हैं कि आप तभी जाएंगे जब आपको अपने प्रतिष्ठित परिवार को देखने की बहुत आवश्यकता होगी। ऐसा ही हो। आप जहाँ भी जाएँ, ईश्वर आपको समृद्ध करे और आपकी रक्षा करे। हमारा हृदय भरा हुआ है, और हम इससे अधिक कुछ नहीं कह सकते। यदि आप हमारे पास लौटते हैं, तो हम ईश्वर के प्रति आभारी होंगे।

430 सीता। हम आपको भेजेंगे; अगर नहीं भी भेजा तो आपको भुलाया नहीं जाएगा; और आज से आपका नाम प्रशंसा के साथ गाया जाएगा, जैसे हमारी महिलाएं अपनी चक्कियों पर अनाज पीसती हैं और अपने दीपक जलाती हैं। "अब हमारी अंतिम विनती यह है: कि आपने हम पर इतना एहसान और इतना प्यार बरसाया है, इसलिए हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए इस विनम्र निवेदन पर हस्ताक्षर कर रहे हैं, जो वास्तव में आपको प्रस्तुत करने के योग्य नहीं है, सिवाय हमारे स्नेह और भक्ति की अभिव्यक्ति के; और हम प्रार्थना करते हैं कि आप इसे हमसे स्वीकार

करें और हमें हमेशा अपनी याद में रखें।" सिरिल ने जवाब देने की कोशिश की; और जब उसका पुराना दोस्त अपनी आँखें पोंछता हुआ और बच्चे की तरह रोता हुआ खड़ा था, तो उसने उतने ही शब्द कहे जितने उसके पास थे। शाह गुंजे की सारी यादें और सीता के लिए उसका प्यार उस पर इतनी स्पष्ट और पीड़ादायक रूप से उमड़ आया कि उसके लिए अपने मन में शब्दों को व्यवस्थित करना मुश्किल था ताकि सुनने वालों को वह अपने मन की बात बता सके; लेकिन वे सहज रूप से समझ गए कि वह क्या सोच रहे हैं, क्योंकि उन्होंने उस व्यक्ति के अंतिम उपहार का जिक्र किया जिसे उन्होंने अपनी पत्नी के समान प्यार और सम्मान दिया था, और जिसके नाम पर वे स्कूल बनाए गए थे और दान दिए गए थे जिनका उन्होंने उस दिन पहली बार उपयोग किया था। फिर उन्होंने उनके प्यार, आज्ञाकारिता और वफादारी के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि यदि ईश्वर की इच्छा हुई, तो वह उनके पास फिर लौटेंगे। शायद यह एक मामूली सांत्वना थी, और उन्हें विश्वास था कि यदि संभव हुआ तो वह लौटेंगे; लेकिन उनके बोलते ही जो तीव्र शोक का विस्फोट हुआ, उसे कोई शांत नहीं कर सका, और उन्होंने "अलविदा" कहा, और उनसे उन्हें न भूलने का आग्रह किया। "हम आपको नहीं भूलेंगे," सैकड़ों लोगों ने पुकारा: "कभी नहीं! कभी नहीं!" और जैसे ही वह मंच से नीचे उतरे, लोग उनके चारों ओर जमा हो गए, उनके हाथों, पैरों, कपड़ों को चूमने लगे, या उन्हें छूने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए: और इस तरह वे उनके पीछे नरेंद्र के घर तक गए और उन्हें वहीं छोड़ दिया। शायद कहने को कुछ खास नहीं था, और बूढ़ा बैंकर इतना भावुक था कि कुछ ही शब्द बोल पाया। उसका गोद लिया हुआ साथी भी वहाँ मौजूद था, और सिरिल को लगा कि उसने उस बुद्धिमान और अच्छे युवक को चुनकर अच्छा किया है, जिसका उससे परिचय कराया गया था, और जो उसके सिर पर हथकड़ी पहनाते समय उसके सामने झुक गया था। अंत में नरेंद्र ने कहा, "हमें अकेला छोड़ दीजिए, श्रीमान ब्रैंडन, क्योंकि यह बिछड़ना हम सबके लिए बहुत कड़वा और दर्दनाक है, जिसे हम लंबे समय तक सहन नहीं कर सकते। मुझे अपनी कुशलक्षेम लिखिएगा, और मैं भी आपको लिखूंगा, जब तक ईश्वर मुझे जीवित रखेगा। हमारे बीच एक ऐसी स्मृति है जो कभी मिट नहीं सकती, और उसके प्रति आपके प्रेम और मुझ पर आपके विश्वास के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मुझे आशा है कि मुझे जल्द ही आपकी शादी की खबर मिलेगी, महोदय, क्योंकि आपको ऐसे ही नहीं रहना चाहिए; और यदि आप श्रीमान मोस्टिन की बहन को चुनते हैं, तो मुझे यह

जानकर खुशी होगी कि आप
“बीते दिन की कोमल कृपा” 481 आपकी पत्नी वह है जिसने हमारे प्रियतम से इतना प्रेम किया। बाकी सब मैं आपके लोगों का ख्याल रखूंगा। बुलदेव और उसका भाई मेरी सुरक्षा में रहेंगे और अभी मेरे साथ रहना उनके लिए बेहतर होगा। आपके सिखों का पहले से ही अच्छा इंतजाम है। अब आइए और आंटी एला से मिलिए, लेकिन सच में वह मुश्किल से बोल पाएंगी, और आप उन्हें माफ कर देंगे। लेकिन मेरी दुआ स्वीकार कीजिए, श्रीमान ब्रैंडन; एक बार फिर, और! मुझे लगता है कि आखिरी बार, मैं आपको उनकी देखरेख में सौंपता हूं जिनके सामने कोई भेद नहीं है।” बेचारी आंटी एला! वह सिरिल से लिपटकर सिसकियाँ भर रही थी और बुरी तरह हांफ रही थी, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद बोल नहीं पा रही थी। शायद यही अच्छा हुआ कि वह बेहोश हो गईं और सिरिल उन्हें उनकी सहेलियों के भरोसे छोड़कर चला गया। इसके बाद, भले-बुरे पुजारी वामुन भूत और आंगन में जमा हुए कई दोस्तों को विदाई दी गई। सिरिल अपने साथ केवल सीता का पुराना "टुम्बोरा" ले गया, जिसे उसने ऊपरी कमरे में दोबारा जाते समय उसी कोने में रखा हुआ पाया जहाँ उसने उसे पहली बार देखा था, और जब सीता ने उसे वही पुराना हिंदी गीत सुनाया जिसे हम जानते हैं। "आज का काम मेरे लिए एक सबक होगा, ब्रैंडन, जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा," टेंपल ने कहा, जब सब चले जाने के बाद वे अकेले बैठे थे। "काश मुझे भी जनता का उतना ही प्यार मिलता जितना तुम्हें मिलता है!" “इसे आसानी से हासिल किया जा सकता है,” सिरिल ने उत्तर दिया। “न्यायी बनो, धैर्यवान बनो, दृढ़ और सच्चे बनो: हमेशा सुलभ और विनम्र रहो, अपनी स्थिति को कभी मत भूलो, और वे तुम्हें प्यार करेंगे। वे लगभग बच्चों की तरह होते हैं, तुम देखो, एक बार विश्वास करने के बाद आसानी से बहकावे में आ जाते हैं।” सुबह सूरज उगने से पहले ही वे अलग हो गए, क्योंकि सिरिल को नूरपुर वापस जाना था। वह अपनी प्रिय खिड़की को नहीं देख सका, लेकिन कमरे में एक दीपक जल रहा था जो एक चमकदार तारे की तरह टिमटिमा रहा था। नूरपुर में भी उसके लिए ऐसा ही एक समारोह आयोजित किया गया था। भाषण के शब्द भी उतने ही भावपूर्ण और उसके प्रति उतने ही कृतज्ञतापूर्ण थे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मुझे विवरण दोहराने की आवश्यकता है। फिर मेस में विदाई भोज हुए, और ब्रिगेडियर के यहाँ एक सार्वजनिक भोज हुआ, जिसमें सभी ने उसके सम्मान में भाषण दिए, और उसकी सुरक्षित घर वापसी और शीघ्र वापसी के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

दीं। शायद कैप्टन हॉब्सन सिरिल के साथ गए होते; लेकिन उस समय वह एक नई रेजिमेंट खड़ी कर रहा था, और वह यह भी सोच रहा था कि लूसी होम उसके लिए कितनी आरामदायक और सुखी पत्नी साबित होगी, जबकि देखने में तो ऐसा लग रहा था कि एक संभावित पति के रूप में लूसी की राय भी उससे पूरी तरह मेल खाती है। आखिर, क्या सिरिल ब्रैंडन अपनी प्रजा के बीच उतना ही लोकप्रिय था जितना कि उन लोगों के बीच जिन पर उसने शासन किया था? शायद नहीं।

432 सीता। निश्चित रूप से श्री मोस्टिन जितने लोकप्रिय नहीं थे, और इसके कुछ कारण हैं जो मुझे स्पष्ट हैं, जिन्हें मैं छुपाऊंगा नहीं। फिलिप मोस्टिन हमेशा मौजूद रहते थे, और उनके मिलनसार स्वभाव का कोई विरोध नहीं कर सकता था; सिरिल ब्रैंडन ज्यादातर अपने जिले से बाहर रहते थे, और कौन जानता था या परवाह करता था कि वे वहां क्या करते थे? एक उत्साही शिकारी होने के नाते, वे उन युवाओं में लोकप्रिय थे जो शिकार के लिए उनके शिविर में जाते थे, लेकिन वे समाज का हिस्सा नहीं थे। बाकी लोगों में से, कई, शायद अधिकांश, सिरिल की अपने शासन के अधीन लोगों के प्रति देखभाल, बल्कि स्नेह का उपहास करते थे। वे यह समझने में असमर्थ थे कि एक अंग्रेज सज्जन खुद को "मूल निवासियों" के साथ इतना कैसे जोड़ सकता है, वास्तव में वह उनके साथ कैसे रह सकता है, और उनसे दोस्ती कैसे कर सकता है। और शायद यह अक्सर होता है कि पूर्ण असंवेदनशीलता के कारण सिरिल ब्रैंडन जैसे चरित्रों को लगभग सर्वत्र गलत समझा जाता है, और शायद अक्सर गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन उन्हें उनका प्रतिफल मिल ही जाता है, जैसा कि सिरिल ब्रैंडन को मिला था, जिन्होंने अपने लोगों के स्नेह और स्टेशन के सदा बदलते और अस्थिर समाज की राय के बीच संकोच नहीं किया, एक के प्रेम और कृतज्ञता की स्मृति को अपने जीवन भर के लिए संजोए रखा, जबकि दूसरा उनकी स्मृति से पूरी तरह मिट गया। अंतिम दिन आ गया; और सुबह-सुबह सिरिल न्यायाधीश के बगीचे से अपने बगीचे की ओर चले, और अपने घर और सीता की कुटिया के खंडहरों से होते हुए जलद्वार के नीचे झील के किनारे तक गए, जहाँ सीता की स्मृति में एक छोटी सी वेदी बनाई गई थी। उस पर अंग्रेजी और हिंदी अक्षरों में "सीता" शब्द और उनकी मृत्यु की तिथि के अलावा कोई शिलालेख नहीं था। ऊपर से मीठी तुलसी या तुल्सी का एक पौधा उगा हुआ था, जिसे अभी भी बूढ़े ब्राह्मण और उनकी पत्नी द्वारा सावधानीपूर्वक पानी दिया जाता था और उसकी देखभाल की जाती थी, जो नरेंद्र की

ओर से आवश्यक अनुष्ठान करते थे और हर शाम वेदी के आले में एक दीपक जलाते थे। 'दीपक बुझ चुका था, क्योंकि रात बीत चुकी थी; और जैसे ही सिरिल उस छोटे स्मारक के पास बैठा, सूरज निकला और शांत झील, शहर और ऊपर स्थित पुराने किले पर सुनहरी रोशनी बिखेर दी। सिरिल के दिल में उस बिछड़ी हुई महिला की कई मीठी यादें उमड़ आईं, जिन्हें वह अपने भविष्य के लिए मदद और मार्गदर्शन की प्रार्थना करते हुए भी भुला नहीं पाया। वह लौट सकता था, लेकिन उसे लगभग यह एहसास था कि उसे नहीं लौटना चाहिए; और आखिरी बार चारों ओर देखते हुए, वह आगे बढ़ा और पौधे से एक शाखा तोड़ ली, जिसे वह सुरक्षित रखना चाहता था। फिर वह मीनार के अष्टकोणीय कमरे में गया, लेकिन वहाँ अब सीता द्वारा प्रवेश द्वार के पास लगाए गए फूलों के अलावा कुछ नहीं था, जिनमें से उसने कुछ फूल तोड़ लिए। "अंतिम दृश्य।" 433 पालतू पक्षियों को बहुत पहले शाहगंज भेज दिया गया था और वे सुरक्षित थे। इसलिए उन्होंने उन सभी चीजों से विदा ली जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता था। कभी नहीं! # s * 2 ® "मैं तो बस एक प्रतियोगिता-वाला हूँ," नोबल ने शाम को सिरिल को अलविदा कहते हुए कहा, 'और मैं मानता हूँ कि मेरे भी कुछ अहंकार और प्रबल पूर्वाग्रह थे; लेकिन ब्रैंडन, मैं उनसे काफी हद तक उबर चुका हूँ, और जिन लोगों का मैं पहले उपहास करता था, उनके बारे में अब मैं आपकी राय से सहमत हूँ: और यद्यपि मैं कभी आपकी लोकप्रियता या उनके द्वारा आपके प्रति दिखाए जाने वाले प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकता, फिर भी मैं भी आपके उदाहरण का अनुसरण करने का प्रयास करूँगा, और आपको इस बात की कोई चिंता नहीं होनी चाहिए कि आपने जो कुछ भी किया और योजना बनाई है, वह मेरे हाथों में विफल हो जाएगी। हाँ, आप शुरू से ही सही रहे हैं: और मुझे आशा है कि आप उस चिड़चिड़ेपन को माफ कर देंगे जिसके साथ मैं लोगों को 'नीग्रो' कहता था, और यह सोचता था, जैसा कि मैं पहले सोचता था, कि उन्हें संभालने का एकमात्र तरीका निश्चित रूप से उनका स्नेह प्राप्त करना नहीं था। मैं अक्सर सोचता हूँ कि आपने मेरे साथ कितना धैर्य रखा है, और सच में, ब्रैंडन, मैं अब असफल नहीं होऊंगा।" "और आप सफल भी होंगे," सिरिल ने उत्तर दिया। "मैं तो स्वयं उस पर विश्वास करता हूँ जो स्वयं पर विश्वास रखता है, और मैं पूर्ण विश्वास के साथ सब कुछ आपके हाथों में सौंपता हूँ। अगर मैं किसी भी मामले में आपकी मदद कर सकता हूँ तो आपको बस लिखना है, और मुझे आशा है कि आप लिखेंगे ही। अब, अलविदा! चलो, मफ, हमें चलना होगा!

%) “अलविदा, और ईश्वर आपका भला करे, ब्रैंडन,” श्री नोबल ने कहा। अपने स्वभाव से ही संशयवादी, उनकी आँखों में आँसू आ गए जब उन्होंने सिरिल की पालकी को द्वार से बाहर जाते हुए देखा, जिसके साथ कुछ दुखी नौकर भी थे, जो अपने दयालु और उदार स्वामी के पीछे-पीछे छावनी की सीमाओं से बाहर निकल गए। अध्याय 11 “अंतिम दृश्य।” मैं पृथ्वी पर मेंटोन से अधिक सुंदर स्थान बहुत कम जानता हूँ, जो कभी कोमल तो कभी भव्य होता है; पहाड़, जंगल और समुद्र का एक दुर्लभ संयोजन—रंग और भाव, प्रकाश और छाया, और अपने कोमल, मधुर, स्वप्निल वातावरण के हवाई प्रभावों में निरंतर परिवर्तनशील। क्रिसमस लगभग आ चुका था, फिर भी बगीचे फूलों से खिले हुए थे; हवा संतरे और नींबू के फूलों, गुलाबों, वायलेट और कंदगुला की सुगंध से भरी हुई थी, और एक सौम्य अंग्रेजी वसंत की तरह कोमल और गर्म थी। 'वहाँ रहने वालों के अपने पूर्व 2F
434 सीता। स्थिति के संबंध में न्यायाधीशों की राय अलग-अलग है, और पश्चिम खाड़ी के उतने ही प्रबल समर्थक हैं जितने पूर्व खाड़ी के; लेकिन मुझे पूर्व खाड़ी सबसे सुंदर लगती है। मोनार्क "बर्सेउ", अपनी नंगी चूना पत्थर की खड़ी चट्टानों के साथ, भूरे जैतून के जंगलों से उठती हुई, और इसकी टूटी हुई चोटियाँ नीचे की ओर ढलान पर उतरती हुई चमकते "रोशर रूज" में समाप्त होती हैं, जो खाड़ी के पूर्वी छोर का निर्माण करती है; सुरम्य पुराना शहर जिस चट्टान पर बना है, उससे सटा हुआ है, और होटलों, गेस्ट हाउसों और विलाओं की कतारें, चमकीले और खुशमिजाज, घने जैतून के जंगलों से घिरी हुई, नीले समुद्र में प्रतिबिंबित होती हैं: और, सबसे बढ़कर, सेंट एग्नेस की चट्टानों के विशाल समूह, और "ग्रैन मोंडो" की ऊँची नुकीली चोटी - इस मौसम में बर्फ से ढकी हुई - निरंतर परिवर्तनशील और अलौकिक सुंदरता के चित्र बनाती हैं, शायद रिवेरा के अन्य सभी स्थानों से ऊपर। जैतून के जंगलों के ठीक किनारे पर, होटलों की कतार के ऊपर स्थित एक विला की खिड़की के पास, जहाँ से होटल पूरी तरह से दिखाई देते थे और खाड़ी, शहर और मोनाको तक फैली पर्वत श्रृंखलाओं का अबाधित दृश्य दिखता था, लॉर्ड हिल्टन लेटे हुए थे, जो अब लगभग मृत्यु के कगार पर थे। कमरे में तेज़ धूप आ रही थी और खिड़की से आती हवा बेहद कोमल और सुहावनी थी: फिर भी बेचारे बीमार व्यक्ति को कंबल में अच्छी तरह लपेटा गया था और जब उन्होंने अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरा तो वे कांपते हुए प्रतीत हुए। "क्या तुम्हें ठंड लग रही है, बेटा?" उनकी माँ ने चिंता से पूछा, जो उनके पास बैठकर पढ़ रही थीं।

"क्या मैं खिड़की बंद कर दूँ?" "नहीं, माँ," उन्होंने उत्तर दिया; "मुझे ठंड नहीं लग रही थी। मैं बस सोच रहा था—सोच रहा था कि क्या मैं सिरिल के आने तक जीवित रह पाऊँगा। मैं आज बहुत कमजोर महसूस कर रहा हूँ—बहुत कमजोर, माँ!" लेडी हिल्टन ने अपने आँसू छिपाने के लिए अपना सिर दूसरी तरफ कर लिया। आह! वे सचमुच कमजोर थे, और अब कोई उम्मीद नहीं थी। पिछले साल एक रैली हुई थी, और जब वे लुसाने से लौटे, तो लॉर्ड हिल्टन कुछ समय के लिए फिर से स्वस्थ हो गए थे; लेकिन फिर गंभीर लक्षण दिखने लगे, और दयालु डॉक्टर बी— ने उन सभी को चेतावनी दी थी कि अंत अब अपरिहार्य है, और केवल समय की बात है। “वह आएंगे, प्रिय,” उसने उत्तर दिया। “डरें नहीं। यह उनकी चिट्ठी है, और मार्सिले में हमारी चिट्ठियाँ उनका इंतज़ार कर रही हैं, जिनमें उन्हें निर्देश दिए गए हैं कि क्या करना है; लेकिन वह अभी तीन दिन तक नहीं आ सकते, इसलिए आपको धैर्य रखना होगा!” “हाँ, माँ,” उन्होंने एक उदास आह के साथ कहा। “लेकिन ओह, मैं उनके लिए इतना तड़प रहा हूँ कि भगवान के सिवा किसी से कह नहीं सकता; और बहुत सी अनिश्चितताएँ भी हैं। यहाँ तक कि अंतिम समय में भी वे कलकत्ता में उनसे कह सकते थे, ‘आप बहुत उपयोगी हैं, हम आपको नहीं छोड़ सकते।’ वास्तव में, मैं इन सभी आकस्मिकताओं के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता, और फिर वह पूरी तरह से नज़रों से ओझल होते हुए प्रतीत होते हैं।” “लेकिन तुम्हें उनके बारे में नहीं सोचना चाहिए, मेरे प्रिय; तुम्हें विश्वास करना चाहिए।”

“अंतिम दृश्य।” | 435 वह आएगा, और वह ज़रूर आएगा, मुझे पूरा यकीन है। श्री मोस्टिन ने आज सुबह ही कहा था कि उन्होंने पिछले गजट में उसके छुट्टी के आदेश देख लिए हैं, और बनारस से सिरिल का जल्दबाज़ी में लिखा पत्र आपको संतुष्ट कर देगा।” “मैं कोशिश करूँगा, माँ,” उसने और भी प्रसन्नता से कहा। “और अब आगे पढ़ो; जब तुमने पिछली बार पढ़ा था तब मैं ऊंघ रहा था, और तुम्हें एक-दो पन्ने पीछे जाना होगा।” हर जगह बहुत शांति और सुकून था; खिड़की के शीशे पर कुछ मक्खियाँ भिनभिना रही थीं; बाहर जंगल की हल्की, बहुत हल्की सरसराहट या आह सुनाई दे रही थी; घर के सामने ऊँचे सरू के पेड़ बहुत धीरे से हिल रहे थे, और किनारे से टकराती लहरों की धीमी आवाज़ सुकून दे रही थी। खाड़ी नीली और चमकदार थी, और पुराना भूरा शहर धूप में सोता हुआ सा लग रहा था, जबकि उसके ऊपर ज़मीन और समुद्र की धुंधली नीली दूरियाँ दिखाई दे रही थीं। लेडी हिल्टन धीरे-धीरे पढ़ रही

थीं, और सन्नाटे को तोड़ने वाली एकमात्र आवाज़ जेरेमी टेलर की "होली लिविंग एंड डाइंग" के एक अंश के भव्य और प्रेमपूर्ण शब्दों की थी, जो अब लॉर्ड हिल्टन की पसंदीदा किताब थी। * "वह समुद्र से आएगा, वहाँ," लॉर्ड हिल्टन ने स्वप्निल फुसफुसाहट में कहा, मानो स्वयं से कह रहे हों, जैसे ही उन्होंने मोनाको की दिशा में इशारा किया; और जैसे ही वह देखने के लिए मुड़े, वह एक बच्चे की तरह गहरी नींद में सो गए, जबकि उनकी माँ उनके पास बैठी रहीं। "आह! भगवान का शुक्र है," उनकी माँ ने कहा; "जब वह जागेगा तो बेहतर होगा।" जैसे ही वह खिड़की बंद करने के लिए धीरे से उठीं, उन्होंने एक पल के लिए बाहर देखा, और एक लंबे, सांवले रंग के आदमी को, बड़ी दाढ़ी के साथ, और उसके आगे दौड़ते हुए एक छोटे भूरे स्काई टेरियर को, नीचे सड़क से एक रास्ते पर चलते हुए देखा। वह चेहरे के हाव-भाव नहीं देख सकीं, और मन ही मन बोलीं, "शायद कोई पर्यटक होगा, लेकिन मुझे उम्मीद है कि वह यहाँ नज़ारे के लिए नहीं आया होगा, क्योंकि हिल्टन को परेशान नहीं किया जाना चाहिए।" और वह फिर से बैठ ही रही थी कि बाहर बजरी पर किसी के तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी और एक लंबा-चौड़ा आदमी खिड़की के पास से तेज़ी से गुज़रा; लॉर्ड हिल्टन नींद से चौंक गए और जैसे ही वह आदमी दूसरी खिड़की पार कर गया, उन्होंने अपनी बाहें फैलाकर पुकारा, “सिरिल! ओ सिरिल, मेरे पास आओ!” वह सही थे। एक और पल में, सिरिल, जो खुली खिड़की से अपनी माँ का चेहरा देखकर खुले हॉल से अंदर आया था, अपने मज़बूत कदमों से ड्राइंग रूम पार कर गया और अपनी माँ के उससे लिपटते ही, आँसुओं से भर कर, अपने भाई के पास घुटनों के बल बैठ गया और अपने तगड़े हाथों से उसे प्यार से गले लगा लिया। लॉर्ड हिल्टन कुछ बोल नहीं सके, लेकिन उनके पतले सफेद हाथ अपने भाई के सांवले चेहरे को सहला रहे थे, उसकी घनी घुंघराली दाढ़ी में फिर रहे थे, उसके बालों में फिर रहे थे, जबकि उनके आँसू बह रहे थे।

436 सीता। मजबूत भूरे हाथों पर चुपचाप और आनंद से गिर रही थीं। दोनों भाइयों में कितना अंतर था! एक स्वस्थ, ऊर्जावान और शक्ति से भरपूर था; दूसरा इतना कमजोर, इतना दुर्बल, फिर भी उसके गाल और आँखें असाधारण चमक से दमक रही थीं। * ओयरिल! सिरिल!” वह बस इतना ही कह पा रहा था, क्योंकि वह बार-बार अपना सिर उस चौड़ी छाती पर टिका रहा था। ‘माँ, मैं ईश्वर का शुक्रगुजार हूँ कि मैंने उसे देख लिया।’ तभी ऑगस्टा अंदर आईं, जो शहर में किसी काम से गई थीं, और

उन्होंने सिरिल को गले लगा लिया, जो अभी भी अपने भाई के सोफे के पास घुटनों के बल बैठा था। "और तुम मुझे गली में देखकर चले गए, बदमाश लड़के," उन्होंने कहा, "और मेरी तरफ देखा तक नहीं, हालाँकि मैं तुम्हें घूरती रही। मुझे यकीन था कि वह वही था, माँ, हालाँकि मैं उससे बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। और क्या तुम मफ हो?" उन्होंने उस छोटे बच्चे से पूछा, जो विनम्रता से बैठकर भीख माँगकर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था। 'आओ, तुम सच में एक लाडले हो!' और मफ उसकी गोद में कूद पड़ा, और अपने कुत्ते जैसे अंदाज़ में उसे चूमने लगा। वे बैठे रहे, जबकि लॉर्ड हिल्टन सिरिल की यात्रा का वृत्तांत सुन रहे थे; लेकिन वह ज़्यादा बोल नहीं पा रहे थे, क्योंकि उत्तेजना के कारण उन्हें भयानक खांसी हो गई थी, और सिरिल को अच्छी तरह समझ आ गया था कि उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। ऑगस्टा ने श्रीमती मोस्टिन को जल्दी से एक पत्र लिखा, "क्या वे रात के खाने पर आएंगे, क्योंकि सिरिल आ गया है, और वे उसे पहले जैसे ही लग रहे हैं?" मोस्टिन परिवार के कमरे नीचे के बड़े गेस्ट हाउस में थे, और वास्तव में, ग्रेस, जो खिड़की पर बैठी थी, ने सिरिल और मफ को विला की ओर जाते देखा था, और अपनी बहन को बताने के लिए दौड़ी थी। वे औपचारिकता निभाने वाले नहीं थे, और वे खुशी-खुशी ऊपर आए और पार्टी में शामिल हो गए। उन्हें कितना कुछ कहना था! जबकि बेचारा सिरिल बैठा रहा, और शांत, मुस्कुराते हुए, कृतज्ञ चेहरे के साथ सुनता रहा, जो उन सभी को लगा कि लंबे समय बाद अपने असली चेहरे जैसा लग रहा था। इस तरह दिन और सप्ताह खुशी-खुशी बीतते गए, हालांकि उनमें से एक पर उदासी की छाया मंडरा रही थी, जो सभी को स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। काफी समय तक—वास्तव में कई हफ्तों तक—सिरिल की उपस्थिति ने उसके भाई को नई ऊर्जा प्रदान की थी; और सिरिल की भारतीय जीवन, विद्रोह के दौर और सरकारी कामकाज की कहानियों में एक नवीनता और ताजगी का आकर्षण था, जिसमें वह मग्न रहता था। सीता का भी जिक्र नहीं छोड़ा गया; लेकिन मुझे लगता है कि सभी ने कुछ संकोच के साथ उसका उल्लेख किया। सिरिल के उनके बीच होने की खुशी ने कुछ समय के लिए इस बात की याद को धुंधला कर दिया था कि सीता की भक्ति के बिना वे उसे कभी देख ही नहीं पाते। हालांकि, यह केवल शुरुआत में ही था; और जल्द ही, सिरिल की बड़ी राहत और खुशी के लिए, वे सीता के बारे में वैसे ही बात करने लगे जैसे वह योग्य थी, और जैसा कि उसने और मोस्टिन परिवार ने सबसे अच्छी उम्मीद की थी।

फिर गोरबियो, सेंट एग्नेस, सोस्पेलो और बोर्डिघेरा की सुखद यात्राएँ हुईं, जो सभी पास ही थीं।

¥ “समापन दृश्य।” 437 दिन, क्योंकि वे लॉर्ड हिल्टन को लंबे समय तक अकेला छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकते थे; और एक शाम उन्होंने उनसे अपने लिए गाने को कहा, जैसा कि वास्तव में ग्रेस और श्रीमती मोस्टिन किया करती थीं, क्योंकि उन्हें उनकी मधुर आवाजों को एक साथ मधुर सामंजस्य में घुलते हुए सुनना बहुत पसंद था। लंदन में रहते हुए वे नए सबक ले रही थीं, और अब उनका प्रदर्शन लगभग परिपूर्ण था। एक शाम सिरिल अपने कमरे में गया, और उस युगल गीत की पुरानी प्रति ले आया जिसे हम याद करते हैं, उस आखिरी दुखद रात के साथ जिस पर यह गीत बुरी तरह से बाधित हुआ था। ग्रेस ने इसके लिए नहीं कहा था, और उसका चेहरा लाल हो गया जब उसने पीले धुएं से सने संगीत को खोला और पियानो पर उसके सामने फैला दिया। मैं यह नहीं कहूंगा कि उसने जो प्रयास किया उसमें उसे दर्द नहीं हुआ: लेकिन उसने उस पर काबू पा लिया था, क्योंकि वह अब बहुत प्यारी थी, और उसने सोचा कि वह आभारी लग रही थी, जब उसने पुरानी घिसी हुई प्रति उठाई और उसे देखा। “ Dimmi che m’ ami, ancor.” उनकी आवाज़ कांप रही थी, और रोज़ का साथ भी स्थिर नहीं था; लेकिन लॉर्ड हिल्टन ने बड़ी खुशी से सुना जिसे वे छिपा नहीं सके। "इसे फिर से गाओ," उन्होंने कहा; "तुम दोनों ने मुझे जितने भी गीत सुनाए हैं, उनमें से यह मुझे सबसे अच्छा लगा।" और उन्होंने ऐसा किया, शायद अब और भी स्थिर रूप से, क्योंकि अब बर्फ पिघल चुकी थी। हाँ, यह वही पुरानी कहानी थी। मैं इसे क्यों छिपाऊँ? 'एक शाम, विला के पीछे भव्य पुराने जैतून के पेड़ों के बीच, हमने एक-दूसरे को यह कहानी सुनाई, बिना किसी संदेह या भय के, और केवल बेचारी, खुशमिजाज मफ ही गवाह थी। ग्रेस अब कितनी सुंदर लग रही थी! अधिक स्त्रीत्वपूर्ण, अधिक परिपूर्ण रूप में, अधिक आकर्षक, और फिर भी उसके स्वाभाविक सौम्य स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया था। लॉर्ड हिल्टन लंबे समय से अपने भाई से ग्रेस के सामने अपने प्रेम का इज़हार करने के लिए आग्रह कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने पहले ही देख लिया था कि कोई वास्तविक बाधा नहीं है; और जहाँ तक ऑगस्टा की बात है, उसने बहुत पहले ही ग्रेस का रहस्य जान लिया था, और अपने भाई को चिढ़ाया था - वास्तव में, इसे बताकर नहीं, बल्कि उसे अपनी बहन के रूप में स्वीकार करने के लिए कहकर। लेडी हिल्टन शायद पहले इतनी उत्साहित नहीं थीं;

उन्होंने सोचा, हालाँकि उन्होंने यह कहा नहीं, कि सिरिल को मेंटोन से परे अंग्रेजी समाज को और अधिक देखना चाहिए, और अधिक सोच-समझकर निर्णय लेना चाहिए। और फिर भी, आखिर वह उस प्यारी, कोमल ग्रेस मोस्टिन जैसी किसे जानती थी, जो जीवन के किसी भी पद को सुशोभित करने के लिए उपयुक्त थी? और इस प्रकार उस प्रिय वृद्ध महिला ने ग्रेस को अपने दिल में जगह दी और उसे बेटी की तरह प्यार किया। संभवतः वे ग्रेस की इच्छा के अनुसार, इंग्लैंड लौटने तक प्रतीक्षा करते; लेकिन लॉर्ड फिल्टन अब घबरा रहे थे और अधीर हो रहे थे कि विवाह उनकी उपस्थिति में हो, जब तक कि वह इसे देखने के लिए सक्षम थे; और वह समय अब तेजी से समाप्त हो रहा था, क्योंकि डॉ. बी—— ने उन सभी को, और अपने मरीज को भी, चेतावनी दी थी कि सभी सांसारिक मामले

 सीता। इस बात को शांत कर देना चाहिए, क्योंकि अंतिम विदाई बहुत कठिन थी। “ऐसा होना ही चाहिए, और जल्द ही, प्रिय सिरिल,” दयालु डॉक्टर के एक दौरे के बाद हिल्टन ने कहा था। “वह मुझसे कह रहे हैं कि सभी सांसारिक चीजें व्यवस्थित हो जानी चाहिए, ताकि मैं केवल उनकी दया के बारे में सोचकर ईश्वर की ओर देख सकूँ। और वास्तव में, सिरिल, यह जानना—यह महसूस करना कि तुम और प्रिय ग्रेस खुश थे, मेरे तुच्छ जीवन का सबसे बड़ा आनंद होगा। जैसे तुमने मेरे पास वापस आने की मेरी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं किया, वैसे ही तुम्हें मुझे इस अंतिम महान संतोष और आशीर्वाद से वंचित नहीं करना चाहिए। जब से तुम आए हो, ऐसा लगता है जैसे मैंने तुम्हारे साथ वर्षों तक अटूट विश्वास में जीवन बिताया है, और मैं तुम्हारे सभी विचारों को जानता और उनका सम्मान करता हूँ; लेकिन यह मेरी अंतिम प्रार्थनाओं में से एक है।” क्या सिरिल अपनी माँ, बहन और रोज़ के समर्थन से की गई इस अपील को ठुकरा सकते थे? रोज़ की सबसे बड़ी इच्छा, जो उन्होंने बहुत पहले से संजो रखी थी, अब पूरी होने वाली थी। यह बिल्कुल असंभव था; और ग्रेस भी अपने खिलाफ बने जनसमूह के आगे झुक गईं। इसलिए, एक दिन लॉर्ड हिल्टन को झूले में बिठाकर समुद्र किनारे बने छोटे से गिरजाघर तक ले जाया गया, वेदी के पास एक आरामकुर्सी पर बैठाया गया, और वे उस समारोह में शामिल हो सके जिसने उन्हें कृतज्ञ और संतुष्ट हृदय से एक कर दिया। यह एक शांत समारोह था; ऑगस्टा और उनकी तीन सहेलियाँ दुल्हन की सहेलियाँ थीं, और चार्ल्स ग्राहम, एक उत्तम युवक, जिससे ऑगस्टा की सगाई हुई थी, सिरिल के दूल्हे का दोस्त बना। यहाँ तक कि बेचारा बीमार भी अपने

शांत स्वभाव में प्रसन्न और आनंदित था, और समारोह के बाद दोपहर के भोजन के समय, वह उठा और अपने प्रियजनों के स्वास्थ्य के लिए कुछ कृतज्ञता भरे शब्द कहे। लॉर्ड हिल्टन अब खुश थे; खुश और संतुष्ट कि जीवन के अपने इस अंतिम कार्य में उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया था। वे एक छोटी सी सैर पर चले गए। दो सप्ताह तक रिवेरा के शांत कस्बों की यात्रा के बाद, जब वे लौटे, तो सिरिल अपने भाई में इतना बदलाव देखकर स्तब्ध रह गया। यह वही था जिसके बारे में उसे बताया गया था, लेकिन जब वास्तविकता सामने आई, तो यह असहनीय रूप से दर्दनाक था। लॉर्ड हिल्टन की जीने की कोई इच्छा नहीं थी, उनकी दो अंतिम इच्छाएँ दयापूर्वक पूरी हो चुकी थीं, और उनकी कमजोरी से मुक्ति, जो निरंतर दर्द बन गई थी, का उन्हें स्वागत था। और अप्रैल के अंत में एक शाम, वह पवित्र और विनम्र आत्मा शांति से इस दुनिया से विदा हो गई। खिड़की के पास, उसी जगह पर जहाँ उन्होंने पहली बार सिरिल को देखा था, वे स्वप्निल आँखों से समुद्र और कस्बे को देख रहे थे, और कुछ बुदबुदाए जो सिरिल सुन नहीं सका; लेकिन एक पुराना विचार वापस आ गया, और समुद्र की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, 'देखो, देखो। भगवान का शुक्र है!' और सिरिल ने उन्हें थोड़ा उठाया, और उनका सिर अपनी छाती पर रख लिया। एक-दो बार लॉर्ड हिल्टन ने कृतज्ञतापूर्वक ऊपर देखा और मुस्कुराए, जैसे ही उन्होंने अपने सीने को दबाया।

* समापन दृश्य” 439 हाथ जो उसने पकड़ा था; फिर एक हल्की सी कंपकंपी हुई, एक आह भरी, और वह चला गया! उन्होंने उसे शहर के ऊपर पेड़ों से घिरे छोटे से शांत कब्रिस्तान में दफनाया, जहाँ सभी अंतिम संस्कार पूरे किए गए। मेंटोन में रुकने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और वे कुछ समय के लिए अलग हो गए। लेडी हिल्टन और ऑगस्टा चार्ल्स ग्राहम के मार्गदर्शन में सीधे इंग्लैंड चली गईं, और मोस्टिन परिवार उनके साथ गया; जबकि सिरिल, जो अब लॉर्ड हिल्टन थे, अपनी पत्नी को इटली ले गए, और जर्मनी होते हुए घर लौटकर, अपने पूर्वजों के भव्य पुराने घर, हिल्टन परिवार में फिर से मिले। मुझे उनके नए जीवन पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। हम जानते हैं कि वह भारत में कैसे थे, और यद्यपि इंग्लैंड उन्हें लोगों और उनके हितों के साथ उस तरह का घनिष्ठ, और, अगर मैं कहूँ तो, पितृवत संबंध नहीं दिलाता जैसा कि उनके भारतीय पद ने दिलाया था, फिर भी उनके पास करने के लिए बहुत कुछ है। वह बहुत मेहमाननवाज, एक सक्रिय मजिस्ट्रेट और एक कुशल खिलाड़ी हैं,

जो उनके काउंटी में स्वीकार्य गुण हैं, और उनकी नियुक्ति की प्रशंसा के पात्र हैं। उनके भाई के स्थान पर उन्हें तुरंत डिप्टी-लेफ्टिनेंट का पदभार दिया गया। जब उन्होंने हाउस ऑफ लॉर्ड्स में अपनी सीट ग्रहण की, तो भारत में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं का गर्मजोशी से उल्लेख किया गया, और उन्हें आज भी भारतीय मामलों में एक विशेषज्ञ के रूप में देखा जाता है, जिनमें उनका कोई मुकाबला नहीं है। इन मामलों पर वे धाराप्रवाह और प्रभावशाली ढंग से बोलते हैं, और उनके अनुभव से प्राप्त एक निश्चित गंभीरता और अधिकार के साथ बोलते हैं। शायद, जब उन्हें अंग्रेजी राजनीति का अधिक अनुभव हो जाएगा, तो वे एक अंग्रेजी राजनेता बन सकते हैं, लेकिन यह अभी बाकी है। उन्हें ऑर्डर ऑफ द स्टार ऑफ इंडिया प्राप्त करना बेहद संतोषजनक लगा, और यह जानकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई कि उसी श्रेणी में उनके पुराने वफादार मित्र और निरंतर साथी बाबा साहब का नाम भी शामिल किया गया था। जब उनकी छुट्टी समाप्त हुई, तो लॉर्ड हिल्टन को उस सेवा से इस्तीफा देना पड़ा जिससे वे जुड़े हुए थे; लेकिन ऐसा करना उनके लिए एक कठिन निर्णय था, जिसका दर्द, मैं जानता हूँ, अभी तक कम नहीं हुआ है, और वास्तव में कभी पूरी तरह से दूर नहीं होगा; और मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं होगा कि किसी दिन वे ग्रेस को ठंड के मौसम में भारत वापस ले गए। उन्होंने अपने दौरे के दौरान उन लोगों से अंतिम मुलाकात की जिन पर उन्हें पूरा भरोसा था और जिनसे उन्होंने बड़े प्यार से विदाई ली थी। यदि आप, प्रिय पाठक, भारतीय नीति के बारे में उनके विचार जानना चाहते हैं, तो मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप 1858 में महारानी द्वारा जारी की गई घोषणा पढ़ें, जिसमें वे पूरी तरह से विश्वास करते थे। वे शिक्षा के क्षेत्र में और वास्तव में हर दूसरे क्षेत्र में लोगों की उन्नति के लिए किए गए कार्यों को देखते हैं और वर्तमान स्थिति पर बारीकी से नज़र रखते हैं। हालाँकि, उन्हें एक चिंता है, जिसके बारे में उन्हें उम्मीद है कि वह दूर हो जाएगी; कि मैनचेस्टर स्कूल के सिद्धांत

 इससे वास्तविक जनहित से अधिक स्थानीय व्यय हो सकता है, और अत्यधिक व्यय से जनता पर अतिरिक्त बोझ पड़ सकता है जिसका विरोध होगा और सरकार की लोकप्रियता खतरे में पड़ सकती है। इसलिए वह चाहेंगे कि सार्वजनिक व्यय को आय के भीतर ही रखा जाए, जो अब काफी बढ़ चुकी है और लगातार बढ़ रही है, ताकि हर साल किसी भी संभावित और अप्रत्याशित स्थिति के लिए अधिशेष बचा रहे। लॉर्ड हिल्टन (क्या मैं उन्हें अभी भी सिरिल कह सकता हूँ?) अपने पुराने

दोस्तों से लगातार संपर्क में हैं, और उनकी शादी की खबर ने उन्हें बहुत खुशी दी। नरेंद्र, जिन्होंने इसके सम्मान में एक भव्य भोज दिया, ने ग्रेस को शुद्ध सोने की एक शानदार कमरबंद या ज़ोन भेजने पर जोर दिया है, जो लगभग अदृश्य जोड़ों से बनी है, जिसमें एक समृद्ध नक्काशीदार कुंडी लगी है, जो उसके पहनने के लिए लगभग बहुत भारी है। आंटी एला ने उन्हें एक कीमती कश्मीरी शॉल और मोतियों का हार भेजा है, जिसे उनके पति सीता का मानते हैं; और लगभग हर छह महीने में अचार, करी पेस्ट, प्यारी चाची की मशहूर सेवई और पापड़ से भरा एक डिब्बा आता है, साथ ही अन्य मसाले भी। दोनों अभी भी स्वस्थ और खुश हैं, क्योंकि चाची एला अब पहले की तरह संयमी नहीं रहीं, बल्कि अधिक सहज हो गई हैं। नरेंद्र को गोद लेने से सभी संतुष्ट हैं, यहाँ तक कि चाची एला भी, और कारोबार पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है; और टेंपल, क्योंकि वह एक ट्रस्टी हैं, हालांकि लॉर्ड हिल्टन नहीं जानते, कि "महान बुजुर्ग", जैसा कि टेंपल उन्हें कहते हैं, ने अपने तीनों बच्चों में से प्रत्येक के नाम पर पाँच हज़ार पाउंड निवेश किए हैं, और अगर और बच्चे होते हैं, तो उन्हें भी, उनके विचार से, समान रूप से अच्छी तरह से रखा जाएगा। "मैं सीता के प्रति उनके सम्मान को कभी नहीं भूलूंगा," उन्होंने टेंपल से कहा; "और मेरी सारी दौलत भी सीता और हमारे प्रति उनके कोमल प्रेम का बदला नहीं चुका सकती।" लेडी हिल्टन, ग्रेस का चरित्र उनकी स्थिति से बहुत विकसित हुआ है, और उनकी सुंदरता आज भी हर किसी को मोहित कर लेती है। अपने दायरे में वह हमेशा एक सच्ची महिला के रूप में रहती हैं—उदार, दयालु, सौम्य, आतिथ्यवान और वास्तव में परोपकारी। शायद उनमें एक खास तरह की झिझक है जो उन्होंने कभी नहीं खोई, और वह नहीं चाहतीं कि हर कोई उन्हें जाने जिनसे उनका संपर्क होता है; लेकिन जिन्हें वह जानती हैं, उनके लिए वह सबसे प्यारी सहेलियों में से एक हैं। कभी-कभी बूढ़ी लेडी हिल्टन अपने बेटे के साथ रहती हैं, कभी-कभी ऑगस्टा के साथ, जिनके पति स्कॉटलैंड में एक बड़े व्यापारी हैं, और मुझे कहना होगा कि प्यारी दादी अपने पोते-पोतियों के बीच सबसे लोकप्रिय हैं। मोस्टिन परिवार ने हिल्टन हॉल में आखिरी बार लंबे समय तक प्रवास किया, और फिलिप ने अपने पुराने दोस्त के साथ शिकार का भरपूर आनंद लिया। इसके तुरंत बाद वे भारत लौट गए, लेकिन नूरपुर नहीं;

“अंतिम दृश्य।” 441 श्री मोस्टिन को सर्वोच्च न्यायिक पदों में से एक प्राप्त हुआ है: और वे आशा से उनके शीघ्र और अंतिम घर वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। * & ®

® @ ® और क्या सीता को भुला दिया गया है? ऐसा नहीं है। आइए, मैं आपको एक चित्र दिखाता हूँ। इसे ध्यान से देखिए, और यदि आप अपने मन में समूह की कल्पना कर सकते हैं, तो मुझे लगता है कि यह एक ऐसा चित्र है जो मार्मिक और सुंदर दोनों है! हिल्टन हॉल में एक कमरा है जिसे मेरे लॉर्ड के अध्ययन कक्ष के रूप में जाना जाता है; लेकिन जिसे सिरिल अपना "मठ" कहता है, जो भारतीय शिकार की ट्राफियों, भारतीय हथियारों और सूअर के भालों, उनके चांदी के बक्सों में रखे पते, और भारतीय परिदृश्यों और आकृतियों के कई रेखाचित्रों और तैयार चित्रों से घिरा हुआ है। अब, जैसे ही मैं धीरे से दरवाजा खोलता हूँ, हम देखते हैं कि दो आकृतियाँ चिमनी के सामने खड़ी हैं, ऊपर दीवार पर टंगी एक तस्वीर को देख रही हैं। यह जलरंग में बना एक बड़ा, उत्कृष्ट चित्र है, जिसमें एक सुंदर भारतीय महिला सफेद मलमल के वस्त्र में सादे ढंग से सजी हुई है। इसके भव्य फ्रेम के नीचे एक और अंडाकार फ्रेम है जो एक बड़े लॉकेट जैसा दिखता है और गहरे लाल मखमल से जड़ा हुआ है। इसमें लहराते हुए गहरे भूरे बालों की एक लंबी लट है, जो लगभग काली है, लेकिन जहाँ प्रकाश पड़ता है, वहाँ सुनहरे रंग की झलक दिखाई देती है। इसके साथ ही, मीठी सुगंध वाले एक छोटे से सूखे हुए भारतीय पौधे की शाखा और रिबन से बंधे कुछ सूखे फूल हैं, जो हमारे हैं। इन वस्तुओं को देख रही हैं ग्रेस, लेडी हिल्टन, जिनकी सुंदरता अद्भुत है, लेकिन चित्र की सुंदरता से अधिक नहीं, हालांकि उनका चरित्र बिल्कुल अलग है। उनके बगल में खड़ा लंबा, मजबूत व्यक्ति, भूरी घुंघराली दाढ़ी और आकर्षक मर्दाना चेहरे वाला, उनका पति है, और एक प्यारी बच्ची, तीन साल की, सुनहरे घुंघराले बालों से लथपथ, अपनी माँ के आँचल से चिपकी हुई है, जबकि एक बूढ़ा, कमजोर स्काई टेरियर उसका हाथ चाट रहा है, और वह रोती है, 'मम्मी देखो! रोज़ी देखो!' जब तक उसे ले जाया नहीं जाता। फिर उसकी माँ ताबूत खोलती है, और मुस्कुराते हुए, हालाँकि उसकी आँखों में आँसू भरे हैं, अपने पति की ओर मुड़कर कहती है, "पत्तियाँ अभी भी मीठी हैं, सिरिल, पहले की तरह ही मीठी।" "हाँ, प्रिय," वह उत्तर देता है, "उतनी ही मीठी जितनी उसकी यादें हम दोनों के लिए हैं।" और वह उसे अपने दिल से लगा लेता है। करीब—और करीब—जबकि वह अपना सिर उसकी छाती पर टिका देती है, और रोज़ अपने पिता के चेहरे को सहलाती है, क्योंकि वह सामान्य से अधिक गंभीर है। आप देख रहे हैं, वे अभी भी सच्चे प्रेमी हैं; और हमें और देखने की ज़रूरत नहीं है। चलो चलें! पृथ्वी पर ऐसी कोई खुशी नहीं है जिसकी उन्हें

कमी हो, सिवाय उनके विचारों के।
442 सीता। ये स्मारक देखकर वे हमेशा मृतकों के साथ हैं, क्योंकि सीता की मृत्यु की दसवीं बरसी है। चुप रहो! चले जाओ! और मुझे धीरे से दरवाजा बंद करने दो, कहीं हम उन्हें परेशान न कर दें! भुला दी गई! आह, नहीं! क्योंकि उस छोटी सी वेदी पर—दूर—ब्राह्मण आज फूल चढ़ाते हैं और भजन गाते हैं। और कई लड़कियां वहां माला चढ़ाती हैं और उस मधुर आत्मा से प्रार्थना करती हैं, जिसकी मृत्यु की वे स्मृति मनाती हैं।

***** समाप्त *****

sjeet